

दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थमाला-२६

श्रीहेरुकाभिधानं
चक्रसंवरतन्त्रम्

भवभट्टकृतया विवृत्या समेतम्

༢༡། །སྤྱད་ཀྱི་སྤྱལ་པོ་དཔལ་བདེ་མཆོག་ཉུང་ཏུ་དང་།

གྲུབ་གྲུབ་ཡིས་མཛད་པའི་དཀར་འགྲེལ་དང་བཅས་པ།

ཐོད་དང་ཐོ།

प्रथमो भागः



भोट विद्या संस्थानम्

सम्पादकः

जनार्दनशास्त्री पाण्डेयः

दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध अनुभाग

केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ, वाराणसी

बुद्धाब्द-२५४६

ख्रीस्ताब्द-२००२

RARE
BUDDHIST
TEXTS
SERIES

26

CAKRASAMVĀRA-TAṆTRAM
with the VIVĀRTI COMMENTARY

Vol. I



CIHTS
SARNATH

2002

दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थमाला-२६

श्रीहेरुकाभिधानं
चक्रसंवरतन्त्रम्

भवभट्टकृतया विवृत्या समेतम्

ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥
सुखं सुखं येषां भवति तेन तेन ॥ सुखं सुखं ॥

संस्कृत-भाषा

प्रथमो भागः



सम्पादकः

जनार्दनशास्त्री घाण्डेयः

दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध अनुभाग

केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ, वाराणसी

मुद्रांक-२५४६

ख्रीस्ताब्द-२००२

RARE
BUDDHIST
TEXTS
SERIES
26

CAKRASAMVARATANTRAM
with the VIVRITI COMMENTARY

Vol. I



CHIT'S
SARNATH

2002

चक्रसंवरतन्त्रम्

भवभट्टकृतया विवृत्या समेतम्

प्रथमो भागः

ཐུད་ཀྱི་ཐུལ་པོ་དཔལ་བདེ་མཆོག་ཉུང་ཏུ་དང་།

ལྷབ་ལྷུ་ཡིས་མཛད་པའི་དཀར་འགྲེལ།

པོད་དང་པོ།

RARE BUDDHIST TEXTS SERIES - 26

ŚRĪHERUKĀBHIDHĀNAM
CAKRASAMVARATANTRAM
with the
VIVṚTI COMMENTARY
of
BHAVABHAṬṬA
[Vol. I]



Editor
Janardan Shastri Pandey

RARE BUDDHIST TEXTS RESEARCH UNIT
CENTRAL INSTITUTE OF HIGHER TIBETAN STUDIES
SARNATH, VARANASI

B.E. 2546

C.E. 2002

Co-Editors

Thakur Sain Negi
Thinlay Ram Shashni
Vijaya Raj Vajracharya

Banarsi Lal
Tsering Dolkar
Ranjan Kumar Sharma

Chief Editor : *Prof. Geshe Ngawang Samten*

Publication Incharge : *Sri Samten Chhosphel*

First Edition : 550 copies, 2002

Price : H.B. Rs. 400.00 (set of 2 vols.)
P.B. Rs. 300.00 (set of 2 vols.)

© Copyright by Central Institute of Higher Tibetan Studies, Sarnath,
Varanasi -221007, India, 2002. All rights reserved.

Publisher :

Central Institute of Higher Tibetan Studies,
Sarnath, Varanasi-221007, India.

Printed at Surabhi Printers, Maldahiya, Varanasi

दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थमाला-२६

श्रीहेरुकाभिधानं
चक्रसंवरतन्त्रम्

भवभट्टकृतया विवृत्या समेतम्

ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥
ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

ॐ नमः ॥
प्रथमो भागः



भारतीय शिक्षा संस्थानम्

सम्पादकः

जनार्दनशास्त्री पाण्डेयः

दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध अनुभाग

केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ, वाराणसी

बुद्धाब्द-२५४६

ख्रीस्ताब्द-२००२

सम्पादक-मण्डल

ठाकुरसेन नेगी

ठिनलेराम शाशनी

विजयराज वज्राचार्य

बनारसी लाल

छेरिङ्ग डोलकर

रञ्जनकुमार शर्मा

प्रधान सम्पादक : प्रो० गेशे डवड समतेन

प्रकाशन प्रभारी : श्री समतेन छोस्फेल

प्रथम संस्करण : ५५० प्रतियाँ, २००२

मूल्य : (सेट) सजिल्द : रु० ४००.००

अजिल्द : रु० ३००.००

© केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ, वाराणसी - २२१००७
२००२, प्रकाशन सम्बन्धी सभी अधिकार सुरक्षित ।

प्रकाशक : केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ, वाराणसी-२२१००७

मुद्रक : सुरभि प्रिन्टर्स, मलदहिया, वाराणसी ।



THE DALAI LAMA

༡༡། རྒྱལ་པོ་མཁའ་ལ་སྐྱེས་པའི་ཆོས་ལོ་དང་ལྷན་པའི་སྒྲོན་པ་བཀའ་བྱིན་ཅན་དེས། གདུལ་བྱའི་
ཁམས་དང་བསམ་པ་བཀའ་ལ་ཉལ་ཇི་ལྟ་བུ་བཞིན་དུ་མཁའ་ཕྱིན་ཅིང་གཟིགས་པའི་སྒྲོན་པ། བྱང་སྒྲོགས་
སོ་བདུན་གྱི་ལམ་གྱིས་བསྐོད་པའི་ཆགས་བྱལ་གྱི་སྒྲོན་པ་དང་། ས་དང་པ་རོལ་དུ་བྱིན་པའི་སྒྲོན་
པའི་ལམ་བསྐོད་ཚུལ་རྣམས་བསྟན་ནས། ཟབ་མོ་ལ་ལྷག་པར་མོས་པ་རྣམས་ལ་བྱང་ཆུབ་གྱི་
སེམས་གྱིས་ཟིན་པའི་སྒྲོང་ཉིད་ཉོགས་པའི་གཟུང་རྣམ་ལྟར་གར་པའི་ཐུན་མོང་དང་ཐུན་མོང་མ་ཡིན་
པའི་ཟབ་གསལ་གཉིས་མེད་གྱི་རྣལ་འབྱོར་གསར་སྒྲགས་དོ་རྩེ་ཐོག་པའི་ཆོས་སྒྲོར་བྱ་ཆེར་སྦྱལ་
ཁོངས། དྱིན་རྒྱལ་གྱི་ཆོན་ཁ་མདུ་བྱང་བ། རྣལ་འབྱོར་མ་རྒྱུད་དུ་རྒྱུར་བྲག་གཅིག་དང་། རྩེ་བ་
དུག་གསུངས་པའི་ནང་གི་རྒྱུད་མཆོག་ དཔལ་འཁོར་ལོ་སྒྲོམ་པ་ཞེས་ཡོངས་སུ་བྲགས་པའི་ཅ་རྒྱུད།
ལེགས་སྦྱར་གྱི་སྒྲོན་དུ་བཞུགས་པའི་བྱ་དཔེ། ད་ལམ་སྐུ་ཁ་དབུས་བོད་གྱི་ཆོས་མཐོའི་གཙུག་ལག་
སྒྲོབ་གཉེར་ཁང་ནས་དཔེ་རྒྱུན་དཀོན་རིགས་འཛོམ་ཞིབ་བྱས་ཁོངས་སུ་རྟེན་སོན་བྱུང་བར་མ་ཟད།
བོད་དཔེ་དང་ཞིབ་བསྒྱུར་བྱས་ཏེ། དཔལ་འཁོར་ལོ་སྒྲོམ་པའི་ཅ་རྒྱུད་ལེའུ་ ༡༢ ཅན་ཆ་ཆར་སྒྲོད་
གཉིས་ཐན་སྦྱར་དུ་དཔར་སྦྱར་བྱ་རྒྱུར་ཡི་རང་དང་། དོ་འཁྱར་འབྲེལ་ཡོད་ཆར་མར་བསྒྲགས་བཞིན་
གྱི་མེ་ཉོག་འཐོར་བ་དང་བཅས། འདིའི་དགོངས་བཅུད་མདོ་སྒྲགས་ཐུན་མོང་གི་སྒྲོང་ཉིད་སྦྱིང་རྩེའི་
སྒྲོང་བོ་ཅན་གྱི་ལམ་གཞི་མར་བཞག་པའི་ཐུན་མིན་འོད་གསལ་བདེ་ཆེན་ལྷན་ཅིག་སྒྲེས་པའི་ཡེ་ཤེས་
གྱི་སྦྱང་བས་རང་གཞན་གྱི་རྒྱུད་གྱི་བདེན་འཛིན་བཀའ་ཆགས་དང་བཅས་པའི་ཐུན་པ་ཀུན་ནས་བསལ་
ཏེ། བྱུང་བདག་ཉེ་རུ་ཀའི་གོ་འཕང་རྒྱར་དུ་ཐོབ་པའི་སྒྲོན་ལམ་བཅས། རྒྱུའི་དཔེ་སྒྲོང་བསྟན་འཛིན་
བྱ་མཆོམ། རབ་བྱུང་བཅུ་བདུན་པའི་ཆུ་རྟ་ ༢ ཆོས་ ༢༡ གྱི་ལོ་ ༢༠༠༢ ལྷ་ ༧ ཆོས་ ༧ ལ།



आशीर्वचन

उपायकुशल एवं महाकारुणिक शास्ता भगवान् बुद्ध ने विनेयजनों के धातु, आशय एवं अनुशय को यथावत् जानकर एवं अवलोकन कर सैंतीस बोधिपाक्षिक मार्ग के द्वारा अनुष्ठेय विराग-चर्या तथा पारमिता-चर्या के अनुसार मार्गनय की देशना की, गम्भीर एवं गुह्य धर्म के प्रति अधिमुक्ति वालों को विस्तृत वज्रयानीय गुह्य तान्त्रिक देशनाएं दीं, जिन में बोधिचित्त से गृहीत शून्यता-ज्ञान के द्वारा ग्राह्याकार देवता के रूप में प्रकटित करने की साधारण तथा गम्भीर और प्रस्फुट अद्वययोग की असाधारण व्यवस्था की है। इसके अन्तर्गत अद्भुत अधिष्ठान से युक्त एक अर्बुद और छह करोड़ योगिनी-तन्त्रों में सर्वश्रेष्ठ श्रीचक्रसंवर के नाम से प्रसिद्ध मूलतन्त्र, जो संस्कृत में उपलब्ध था, वह सम्प्रति केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान के द्वारा दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थों के अन्वेषण की प्रक्रिया में न केवल उपलब्ध हुआ, अपितु उसका संस्कृत की विभिन्न पाण्डुलिपियों एवं भोटपाठ से सम्यक्तया मिलान कर सम्पूर्ण ५१ पटलात्मक श्रीचक्रसंवर मूलतन्त्र का संस्कृत एवं भोट दोनों भाषाओं में प्रकाशन किया जा रहा है। इस कार्य के सम्पादन के लिए मैं अनुमोदन करता हूँ और सभी सम्बद्ध कार्यकर्ताओं को प्रशंसा-पुष्प बिखेर कर साधुवाद देता हूँ। इसका आभिप्रायिक सार सूत्र एवं तन्त्र के शून्यता-करुणात्मक साधारण मार्ग को आधार बनाकर असाधारण प्रभास्वर एवं महासुख सहज ज्ञान के प्रकाश से प्राणिमात्र की संतति में स्थित वासना सहित सद्-ग्राह रूपी अन्धकार का सर्वथा विनाश कर विभु हेरुक-पद की शीघ्र प्राप्ति के लिए प्रणिधान करता हूँ।

१७वाँ प्रभव, जल-अश्व वर्ष
फाल्गुनमास, २५ तिथि;
ईसवी सन् ७ अप्रैल, २००२

शाक्यभिक्षु तेनजिन ग्याछो
दलाई लामा

प्रकाशकीय

शास्ता मुनीन्द्र ने गम्भीरतम एवं अनुत्तर धर्मनय (मन्त्रनय) की ही देशना सभी विनेय जनों के लिए नहीं दी, बल्कि विनेय जनों के बुद्धि-सामर्थ्य के अनुरूप ही अनन्त धर्मदेशनाएं दीं। यही उपायकुशल महाकारुणिक तथागत की अद्भुत विशेषता है।

भगवान् बुद्ध ने सांसारिक दुःखों के शमन और निर्वाण के इच्छुकों (अर्थात् हीनाधिमुक्तिकों) के लिए विरागचर्या, विस्तृत अध्याशय (अर्थात् पारमितानय) वालों के लिए भूमि एवं पारमिता-चर्या तथा गम्भीरनयाधिमुक्तिकों (अर्थात् मन्त्रनय) वालों के लिए सरागचर्या की देशना दी है।

समस्त दुःखों के शमन के लिए क्लेशमूलों का निःशेष प्रहाण करने की आवश्यकता होती है, जो धर्मों के यथार्थ स्वभाव का अवगमन किये बिना सम्भव नहीं। अतः श्रावकयान और बोधिसत्त्वयान में दर्शन की दृष्टि से भेद नहीं है। तथापि जगत् की यावत् स्थिति तक सत्त्वों के हित करने में परायण रहने के लिए मैत्री और महाकरुणा से प्रेरित बोधिचित्त तथा भूमि और पारमिताचर्या के कारण बोधिसत्त्वयान श्रावकयान से विशिष्ट है। पारमिताचर्यानय में भी यद्यपि फल-रूपकाय के सदृश हेतु-अवस्था में मार्ग की भावना होने पर भी, रूपकाय के धर्मकाय के सदृश मार्ग की भावना नहीं है। जबकि मन्त्रनय में न केवल धर्मकाय की, अपितु रूपकाय की सिद्धि के उपाय के फल-बुद्धभूमि की चार सम्पदाओं के मार्गीकरण के लिए देवतायोग की भावना का विधान है। अतः परार्थ रूपकाय सिद्धि के उपाय के आधार पर महायान में पारमितायान और वज्रयान के नाम से दो साधना पद्धतियाँ हैं।

मन्त्रनय में चार तन्त्र वर्ग हैं। इनमें क्रियातन्त्र, चर्यातन्त्र और योगतन्त्र इन तीनों में सनिमित्त-योग और अनिमित्त-योग के द्वारा शून्यता और देवतायोग का अनुशीलन होता है। अनुत्तरयोगतन्त्र में उत्पत्तिक्रम और निष्पन्नक्रम योग के द्वारा अनुत्तरबोधि प्राप्त की जाती है। उत्पत्तिक्रम में फल बुद्धभूमि की चार-सम्पदाओं के सदृश भावनामात्र ही नहीं, अपितु सांक्लेशिक जन्म, मृत्यु और अन्तराभव तीनों भवों के सदृश मार्गीकरण की भावना की जाती है। निष्पन्नक्रम में मूल एवं

सभी अङ्ग-वायुओं का अवधूती में प्रवेश, स्थिति और लय तथा इससे उद्भूत सुखशून्यज्ञान तथा उससे उत्पन्न देवकाय और इन दोनों का उन्नायक असाधारण-उपाय कायमर्मभेदकयोग भावना के द्वारा चार काय एवं पाँच ज्ञान से युक्त बुद्धत्व प्राप्त किया जाता है।

आजकल तन्त्र की गम्भीरता एवं विशेषता को नहीं जानने वाले अनेक लोग इसे बौद्ध आध्यात्मिक साधना के अनुसार उत्तम-पुरुषों के द्वारा किये जाने वाले साधना-मार्ग के रूप में सम्बन्ध तो दूर, मध्यम एवं अधम पुरुषों के साधना-मार्ग से भी असम्बद्ध कामचर्या तथा मायाविद्या के रूप में समझ रहे हैं। ऐसी मिथ्यादृष्टि रूपी मेघों से आच्छन्न इस काल में तन्त्र के वास्तविक स्वरूप एवं गम्भीर विशेषताओं का परिचय तथा प्रत्येक तन्त्र का मूलतन्त्र, व्याख्यातन्त्र और उन की टीका एवं भाष्य तथा इतिहास का सही अध्ययन लोगों के समक्ष पहुँच पाए तो उपर्युक्त मिथ्यादृष्टियों को क्रमशः समाप्त करने में सहायक होगा।

अनुत्तरतन्त्र के तीन भेद हैं— मातृतन्त्र, पितृतन्त्र और अद्वयतन्त्र। मातृतन्त्रों में प्रमुख चक्रसंवरतन्त्र का मूलतन्त्र भी विस्तृत, मध्यम और लघु (संक्षेप) भेद से तीन प्रकार का है। श्रीलघुचक्रसंवरतन्त्र के पाँच व्याख्यातन्त्र हैं। भोट तनग्युर-संग्रह में इस तन्त्र पर रचित बारह टीकाओं का अनुवाद प्राप्त होता है, इनमें से चार टीकायें मूल संस्कृत में भी उपलब्ध हैं। यहाँ आचार्य भवभट्ट(द्र) विरचित श्रीलघुचक्रसंवरतन्त्र की विवृति को मूल के साथ सम्पादित कर प्रस्तुत किया जा रहा है। आचार्य जयभद्र एवं भवभट्ट(द्र) रचित दो टीकायें इंस्टीच्यूट फॉर एडवांस स्टडीज ऑफ वर्ल्ड रिलिजन्स, न्यूयार्क से प्राप्त हुई हैं, जो संस्थान के ग्रन्थालय में माईक्रोफिश के रूप में प्राप्त है। इनका विवरण शोध-पत्रिका धीः के पूर्व अंकों में दिया जा चुका है।

संस्थान के दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध अनुभाग के कुछ कार्यकर्ता जब बडौदा स्थित ओरियण्टल इंस्टीच्यूट के ग्रन्थालय में दुर्लभ ग्रन्थों का सर्वेक्षण कर रहे थे तो उन्हें वहाँ हेरुकाभिधान नाम से एक पुरानी ताड़पत्रीय और एक कागज पर लिखित पाण्डुलिपि प्राप्त हुई। इस ग्रन्थ के परिच्छेदों को विवृति से मिलाकर परीक्षण करने पर विदित हुआ कि यही श्रीलघुचक्रसंवरतन्त्र है। अज्ञात पाण्डुलिपि के रूप में पड़े इस महत्त्वपूर्ण तन्त्र का भोटपाठ के साथ भी मिलान

किया गया। बाद में केसर पुस्तकालय काठमांडू से भी इसकी एक और प्रति मिली, परन्तु इन सभी का मूल ताड़पत्रीय प्रति ही था, शेष दोनों प्रति उसी की प्रतिलिपियाँ थी।

संस्कृत मातृकाओं में चक्रसंवरतन्त्र (श्रीलघुचक्रसंवरतन्त्र) के ५१ पटलों में से लगभग १५ पटल अनुपलब्ध थे। इनका आचार्य भवभट्ट(द्र) की विवृति (संस्कृत) में लिये गये मूल पाठ के प्रतीकों एवं भोटानुवाद (मूल तथा विवृति) को आधार मानकर पुनरुद्धार किया गया है। इसी प्रकार आचार्य भवभट्ट(द्र) की विवृति के अपूर्ण अंशों का भी भोटपाठ की सहायता से पुनरुद्धार किया गया है। इस प्रकार मूल और विवृति को भोटपाठ से मिलान कर तथा भोटपाठ को भी विभिन्न संस्करणों से मिलान कर सम्पादित किया गया है। चक्रसंवरतन्त्र-मूल के पाठों में पाठान्तर के सम्बन्ध में विवृति में भी उल्लेख मिलता है। प्रस्तुत संस्कृत अंश के मूलपाठ का निर्णय करते समय टीका को आधार माना गया है।

सम्प्रति अत्यन्त दुर्लभ श्रीलघुचक्रसंवरतन्त्र और उस पर आचार्य भवभट्ट(द्र) द्वारा विरचित विवृति का भोटपाठ सहित सम्पादन कर प्रकाशन हो रहा है। इसके लिए मैं दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध अनुभाग के मुख्य सम्पादक पण्डित जनार्दन पाण्डेय और उनके सहयोगियों को साधुवाद देता हूँ। साथ ही उन संस्थानों एवं ग्रन्थालयों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ, जहाँ से हमें पाण्डुलिपियाँ हस्तगत हुई हैं। सुरुचिपूर्ण प्रकाशन के लिए संस्थान के प्रकाशन विभाग के अधिकारी एवं कर्मचारियों को भी साधुवाद देता हूँ।

अत्यन्त महत्त्वपूर्ण श्रीलघुचक्रसंवरतन्त्र विवृति सहित का संस्कृत एवं भोट-पाठ के साथ प्रकाशित परिष्कृत संस्करण से तन्त्रशास्त्र के अध्येताओं को अत्यन्त लाभ मिले और तन्त्र-शासन का सर्वत्र विशुद्ध रूप से प्रचार एवं प्रसार हो, ऐसी परिणामना करता हूँ।

११ सितम्बर, २००२
सारनाथ

प्रो० गेशे डवङ्ग समतेन
निदेशक

དཔར་སྐྱོན་པའི་ཆེད་བཟློག།

སྐྱོན་པ་ཐུབ་པའི་དབང་པོས་ཆོས་ཚུལ་ཟབ་ཤོས་དང་སློན་མེད་པའི་རྒྱ་མཚན་
གྱིས་དེ་ཉིད་གདུལ་བྱ་ཡོད་དོ་ཅོག་ལ་མ་བསྟན་པར་གདུལ་བྱའི་སློ་ཡི་རྣམས་པ་དང་བསྟན་
དེ་ཆོས་ཚུལ་མཐའ་ཡས་པ་གསུངས་པ་ནི་ཐབས་མཁས་ལ་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་མངའ་
བའི་སྐྱོན་པའི་བྱུང་ཆོས་མད་དུ་བྱུང་བ་ཞིག་ཡིན།

དེས་ན་འཁོར་བའི་སྐྱག་བསྐྱེལ་ནི་བའི་མུང་འདས་འདོད་པ་རྣམས་ལ་ཆགས་
བྱལ་གྱི་སྦྱོད་པ། རྒྱ་ཆེན་པོ་ལ་མོས་པ་ལ་ས་དང་ས་རོལ་དུ་སྤྱིན་པའི་སྦྱོད་པ། ཟབ་མོ་ལ་
ལྷག་པར་མོས་པ་རྣམས་ལ་ཆགས་བཅས་གྱི་སྦྱོད་པ་བསྟན། སྐྱག་བསྐྱེལ་ཐམས་ཅད་
རབ་དུ་ནི་བ་ལ་ཉན་མོངས་མ་ལུས་པ་དུང་ནས་འབྱིན་དགོས་པས་དེ་ལ་ཆོས་རྣམས་གྱི་
གནས་ལུགས་མཐར་ཐུག་དོགས་པ་མེད་དུ་མི་རུང་བ་དེས་ན་ཉན་ཐོས་གྱི་ཐེག་པ་དང་
བྱང་སེམས་གྱི་ཐེག་པ་གཉིས་ལ་ལྷ་བའི་བྱུང་པར་མི་འབྱེད་ཀྱང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་
ཐེག་པ་འཁོར་བ་ཇི་སྤྱིད་པར་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་གྱི་དོན་བྱེད་པ་ལ་གཞིལ་བ་བྱམས་
པ་དང་སྤྱིང་རྗེ་ཆེན་པོས་བྱངས་པའི་བྱང་ཆུབ་གྱི་སེམས་དང་། ས་དང་ས་རོལ་དུ་སྤྱིན་
པའི་སྦྱོད་པའི་སློན་པ་ཉན་ཐོས་གྱི་ཐེག་པ་ལས་བྱུང་པར་དུ་འཕགས་པ་ཡིན། ས་རོལ་དུ་
སྤྱིན་པའི་ཐེག་པའི་ལུགས་ལ་འབྲས་བུ་ཆོས་གྱི་སྐྱུ་དང་རྣམ་པ་མཐུན་པའི་ལམ་རྒྱ་དུས་
སྐྱོམ་པ་ཡོད་ཀྱང་། གཟུགས་སྐྱུ་དང་རྣམ་པ་མཐུན་པའི་ལམ་སྐོམ་པ་མེད། ལུགས་གྱི་
ཐེག་པར་ཆོས་སྐྱུ་མ་ཟད་གཟུགས་སྐྱུ་སྐྱབ་བྱེད་གྱི་ཐབས་འབྲས་བུ་སངས་རྒྱུས་གྱི་སའི་
ཕུན་སུམ་ཆོགས་པ་བཞི་པོ་ལམ་དུ་བྱེད་པའི་ལྷའི་རྣལ་འབྱོར་སྐོམ་པ་ཡོད་པས། གཞན་

རོན་གཟུགས་སྐྱུ་སྐྱུ་བ་པའི་ཐབས་མི་འདྲ་བའི་སྒོ་ནས་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་ཚུལ་ལ་རྒྱ་པ་
 རོལ་དུ་བྱིན་པའི་ཐེག་པ་དང་། འབྲས་བུ་གསང་སྤྲུགས་ཀྱི་ཐེག་པ་གཉིས་ཡོད། སྤྲུགས་
 ཀྱི་ཐེག་པ་ལ་རྒྱུད་སྤེ་བཞི་ཡོད་པ་ལས་བུ་རྒྱུད། སྦྱོད་རྒྱུད། རྣལ་འབྱོར་རྒྱུད་བཅས་རྒྱུད་
 སྤེ་འོག་མ་གསུམ་དུ་མཆན་བཅས་དང་མཆན་མེད་ཀྱི་རྣལ་འབྱོར་གྱི་སྒོ་ནས་སྦྱོར་པ་ཉིད་
 དང་ལྷན་རྣལ་འབྱོར་ལ་གཞིལ། རྣལ་འབྱོར་སྤྲ་མེད་ཀྱི་རྒྱུད་ལ་བསྐྱེད་རིམ་དང་རྫོགས་
 རིམ་གྱི་རྣལ་འབྱོར་གྱི་སྒོ་ནས་འཐོབ་བུ་སྤྲ་ན་མེད་པའི་བྱང་ཆུབ་མངོན་དུ་བྱེད། དེ་ཡང་
 བསྐྱེད་རིམ་ལ་འབྲས་བུ་སངས་རྒྱས་ཀྱི་སའི་ཕུན་སུམ་ཆོགས་པ་བཞི་དང་རྣམ་པ་མཐུན་
 པ་སྒོམ་པ་ཙམ་དུ་མ་ཐད་ཀྱན་ནས་ཉོན་མོངས་སྤོགས་ཀྱི་སྤྱེ་མི་བར་དོའི་སྤྱིད་པ་གསུམ་
 དང་རྣམ་པ་མཐུན་པར་ལམ་དུ་བྱེད་པ་སྒོམ་པ་ཡིན། རྫོགས་པའི་རིམ་པར་རྩ་བ་དང་
 ཡན་ལག་གི་རྒྱང་ཐམས་ཅད་རྒྱ་ཉི་ཤང་དུ་ཞུགས་གནས་ཐིམ་གསུམ་བྱས་པ་ལས་བྱུང་
 བའི་བདེ་སྦྱང་གི་ཡེ་ཤེས་དང་། དེ་ལས་བྱུང་བའི་ལྷན་སྐྱུ་དང་དེ་གཉིས་འབྲེན་པར་བྱེད་
 བའི་ཐབས་ཕུན་མོང་མ་ཡིན་པ་ལུས་ལ་གནད་དུ་བསྐྱུན་པའི་རྣལ་འབྱོར་སྒོམ་པའི་སྒོ་
 ནས་སྐྱུ་བཞི་ཡེ་ཤེས་ལྷ་ལྷན་གྱི་གོ་འཕང་མངོན་དུ་བྱེད་པ་ཡིན་ནོ།

དེང་སང་གསང་སྤྲུགས་ཀྱི་ཐབས་བྱེད་སྒོ་ཡུལ་དུ་མ་གྱུར་པ་མང་པོ་ཞིག་གིས་
 གསང་སྤྲུགས་ཀྱི་ཉམས་ལེན་ཞེས་པ་སྤྱེས་བུ་ཆེན་པོའི་ལམ་ལྷ་ཞོག་སྤྱེས་བུ་འབྲིང་དང་
 རྒྱང་དུ་འུམ་གྱི་ཉམས་ལེན་གྱིས་ཀྱང་ཟིན་མི་དགོས་པར་ཆགས་སྦྱོད་དང་མིག་འབྲུལ་
 རམས་ཀྱི་རིག་གནས་ལྷ་བུ་ཞིག་ལ་ངོས་འཛིན་པའི་ལོག་རྟོག་གི་སྤྱིན་རུམ་འཐིབ་པའི་
 སྐབས་འདིར། གསང་སྤྲུགས་ཀྱི་ངོ་བོ་དང་ཐབས་བྱེད་ཀྱི་ངོ་སྤྱོད། དེ་བཞིན་རྒྱུད་སྤེ་སོ་སའི་
 རྩ་རྒྱུད་དང་བཤད་རྒྱུད། དེ་དག་གི་འགྲེལ་པ། འགྲེལ་བཤད། ཡོ་རྒྱས་དང་བཅས་པ་

མང་ཆོགས་ཀྱི་མདུན་དུ་སླེབས་ཐུབ་ན་དེ་ལྟ་བུའི་ལོག་དོག་རིམ་བཞིན་སེལ་རྒྱུར་ཡང་
ཕན་ངེས།

ནལ་འབྱོར་སྤྱི་མཐུན་གྱི་རྒྱུད་ལ་པ་རྒྱུད་མ་རྒྱུད་གཉིས་མེད་ཀྱི་རྒྱུད་བཅས་ཡོད་
པ་ལས་མ་རྒྱུད་ཀྱི་གཙོ་བོ་དཔལ་འཁོར་ལོ་བདེ་མཆོག་ལ་ཙ་རྒྱུད་རྒྱས་འབྲིང་བསྐྱས་
གསུམ་བཞུགས་ཤིང་། བསྐྱས་པ་ཉུང་དུ་འཛིན་ཙ་རྒྱུད་ལ་བཤད་རྒྱུ་ལྡོག་པོ་བདེ་མཆོག་
ཉུང་དུ་འཛིན་ཙ་རྒྱུད་ལ་འགྲེལ་བ་བོད་སྐད་དུ་བསྒྱུར་བ་བཅུ་གཉིས་ལས་རྒྱ་དཔེ་བཞུགས་པ་
བཞིའི་སློབ་དཔོན་བླ་བླ་མ་མཛད་པའི་དཔལ་འཁོར་ལོ་སྤྱི་མཐུན་པའི་དཀའ་འགྲེལ་ད་རེས་
འདིར་ཙ་རྒྱུད་དང་ལྷན་དུ་སློབ་པ་བསྐྱོགས་ཞུ་མཆན་ཞུས། བདེ་མཆོག་རྒྱུད་ཀྱི་མཆན་
བྱང་འཁོད་པའི་སློབ་དཔོན་རྒྱལ་བ་བཟང་པོ་དང་བླ་བླ་མ་མཛད་པའི་དཀའ་འགྲེལ་
གཉིས་བཅས་ཨ་རིའི་གྲོང་འབྲེར་ནེུ་ཡོ་ཏཱ་ནང་ཡོད་པའི་འཛམ་གླིང་ཆོས་ལུགས་ཀྱི་
མཐོ་རིམ་སློབ་གཉེར་ཁང་ (Institute for Advanced Studies Of World
Religions) ནས་ཐོབ་པ་འདི་ག་མཐོ་སློབ་དཔེ་མཛད་ཁང་དུ་སྦྱོན་སྒྲིག་ཐོག་ཡོད་ཅིང་།
འདི་སྐོར་ལོ་ཤས་སྤྱོན་འདི་གའི་དུས་དེབ་རྒྱུ་ནང་དོ་སྤྲོད་ཞུས་ཟིན། སྐབས་ཤིག་དུ་འདི་
ག་དཔེ་རྒྱན་དཀོན་རིགས་ཉམས་ཞིབ་སྡེ་ཆན་གྱི་ཉམས་ཞིབ་པ་ཁག་ཅིག་རྒྱ་གར་
གུང་རྒྱུ་མངའ་སྡེའི་ཁོངས་བརྡོ་ལ་ཡོད་པའི་ཤར་སློབ་སློབ་གཉེར་ཁང་ (Oriental
Institute) དུ་བསྐྱོད་སྐབས་ཉེ་ཅུ་ཀློང་རྒྱུན་ (ཉེ་ཅུ་ཀ་ངེས་པར་བཛྲོད་པ་)ཞེས་པའི་མཆན་
བྱང་འཁོད་པའི་རྒྱ་དཔེ་ཡིག་རྙིང་ཤིང་ལོར་བྲིས་པ་ཞིག་དང་། ཐོག་ཐོག་བྲིས་པ་ཞིག་
ཐོག། དེའི་ལེའུའི་གྲངས་དང་བཀོད་པ་སོགས་དཀའ་འགྲེལ་དང་མཐུན་པས་ཞིབ་
འཇུག་སྐབས་བདེ་མཆོག་ཉུང་དུ་འཛིན་ཙ་རྒྱུད་ཡིན་པ་ཐག་ཆོད་པས་ཆེས་ཤིན་དུ་གལ་ཆེའི་

ཙ་རྒྱུད་རྒྱ་དཔེ་ཡིག་རྟིང་སྤྲུལ་ཀྱང་ཙ་རྒྱུད་དྲུ་ར་བྲོད་མ་བྱུང་བར་ལྷས་པ་འདི་བོད་དཔེ་
 དང་མཚུངས་བསྐྱར་གྱིས་ཉམས་ཞིབ་བྱས། སྤྲིས་སྤྲུ་བལ་ཡུལ་ཀེ་སར་དཔེ་མཛོད་ནས་
 ཀྱང་ཙ་རྒྱུད་འདིའི་རྒྱ་དཔེ་ཞིག་ཐོབ་ཀྱང་མ་སྤྱོད་མ་གྲིང་ཡོར་བྲིས་པའི་ཡིག་རྟིང་དེ་
 ཉིད་ལས་གཞན་གཉིས་དེ་ལས་བསྐྱས་པའི་ཡིག་གསར་ཐོག་བྲིས་པ་ཡིན་འདུག ཙ་རྒྱུད་
 རྒྱ་དཔེར་ལེའུ་༥༡ ལས་ལེའུ་༡༥ ཙམ་མ་ཚང་བ་ནམས་དཀའ་འབྲེལ་དུ་ཙ་ཆོག་བཞོད་
 པ་དང་། འབྲེལ་བ་ཁག་ལ་གཞི་བཙུག་ཏེ་ལེགས་སྐྱར་སྐྱད་དུ་བསྐྱར་གསོ་བྱས། དེ་
 བཞིན་ཟུབ་ཟུབ་འདི་དཀའ་འབྲེལ་རྒྱ་དཔེ་ཆ་གས་འགའ་མ་ཚང་བ་ནམས་བོད་དཔེ་ནས་
 བསྐྱར་གསོ་བྱས། སྤྲོགས་མཚུངས་ཙ་འབྲེལ་གྱི་རྒྱ་དཔེ་དང་བོད་དཔེ་མཚུངས་བསྐྱར་
 དེ་བཞིན་བོད་དཔེ་དཔར་མ་ཁག་དང་མཚུངས་བསྐྱར་ཞིབ་འཇུག་བྱས།

གཞི་ཙ་རྒྱུད་ཀྱི་མ་སྤྱོད་ནམས་སྤྲུ་ཕན་བྱ་མི་འདྲ་བ་ཡོད་པ་ནི་དཀའ་འབྲེལ་
 ཉིད་དུ་ཡང་ཙ་ཆོག་མི་མཐུན་པ་ཁག་གི་སྐོར་འབྲེལ་བཙོད་གནང་ཞིང་། ད་ལྟའི་རྒྱ་དཔེ་
 ཞིབ་འཇུག་སྐབས་དཀའ་འབྲེལ་ཉིད་ལ་ཙ་འཛིན་བྱས།

ད་རེས་ཆེས་དཀོན་པའི་ཙ་རྒྱུད་བསྐྱས་པ་དང་དེའི་འབྲེལ་བ་སྟོབ་དཔོན་
 ཟུབ་ཟུབ་མཛོད་པའི་རྒྱ་དཔེ་དེ་བཞིན་བོད་དཔེ་ཁག་རྒྱ་དཔེ་དང་མཚུངས་བསྐྱར་གྱིས་
 དཔར་སྐྱན་སྐྱབ་པ་ལ་ནང་པའི་དཔེ་རྒྱན་དཀོན་རིགས་ཉམས་ཞིབ་སྡེ་ཆོན་གྱི་འགན་
 འཛིན་པ་རྒྱུ་ཏེ་རྒྱ་རྒྱ་སྤྲུ་མཆོག་གཙོ་བོར་གྱུར་པའི་ཉམས་ཞིབ་ལས་རོགས་ནམས་ལ་
 སྤྲོགས་བཙོད་རྒྱ་ཆེ་ཞུ་རྒྱ་དང་། དེ་མཚུངས་མ་སྤྱོད་ཡིག་རྟིང་གང་ལས་བྱུང་བའི་སྟོབ་
 གཉིར་ཁང་དང་། དཔེ་མཛོད་ཁང་དེ་བཞིན་འབྲེལ་ཡོད་མཐུན་འགྱུར་གནང་མཁན་
 ནམས་ལ་བཀྲིན་ཆེ་ཞུ་གྱི་ཡིན། འདི་ག་དཔར་སྐྱན་སྡེ་ཆོན་གྱི་འགན་འཛིན་དང་ལས་བྱེད་

བ་ནྟམས་ལ་ལེགས་སོ་དང་བཅས་ད་རེས་རྩ་ཆེའི་དཔལ་ལའོར་ལོ་བདེ་མཆོག་གི་རྩ་
 རྒྱུད་ཉུང་ཏུ་བསྐྱུས་པ་དཀའ་འབྲེལ་དང་སྤྲུགས། རྒྱ་དཔེ་དང་བོད་དཔེ་གཉིས་ཀ་ཞུ་
 དག་གྲིས་དཔར་བསྐྱུན་སྐབ་པ་འདིས་དོན་གཉེར་ཅན་ནྟམས་ལ་ཕན་ཐོག་ཅི་ཆེ་ཡོང་བ་
 དང་། སྤྲུགས་ཀྱི་བསྐྱུན་པ་ནྟམ་པར་དག་པ་དར་ཞིང་རྒྱས་པའི་རྒྱར་འགྲོ་བའི་སྟོན་ལམ་
 བཅས། ཨ་ཁ་དབྱས་བོད་ཀྱི་ཆེས་མཐོའི་གཙུག་ལག་སྟོབ་གཉེར་ཁག་གི་ངེས་སྟོན་པ་
 དག་བཤེས་ངག་དབང་བསམ་གཏན་གྲིས། བོད་རྩ་རྟ་བུ་བ་༥ ཆོས་༥ ཕྱི་ལོ་༢༠༠༢ ཟླ་བ་
 ༧ ཆོས་༡༡ ལ་སྐྱར་བ་དག་བར་བྱར་ཅིག །

प्रस्तावना

भगवान् बुद्ध ने मृद्विन्द्रिय, मध्येन्द्रिय और तीक्ष्णेन्द्रिय विनेयजनों की श्रद्धा, रुचि और योग्यता को लक्ष्य करके तीन यानों का अवतारण किया है। ये तीन यान हैं— १. श्रावकयान २. प्रत्येकबुद्धयान ३. बोधिसत्त्वयान या महायान। ये तीनों अपने बोधिप्राप्ति के उद्देश्य के कारण भिन्न हैं। अर्थात् तत्त्व की प्राप्ति बोधि-सत्त्वयान (महायान) से होती है और शेष दो यान वहाँ तक पहुँचने के लिए सोपान (सीढ़ी) की तरह हैं। आचार्य नागार्जुन ने निरौपम्यस्तव में कहा है—

धर्मधातोरसंभेदाद् यानभेदोऽस्ति न प्रभो ।

यानत्रितयमाख्यातं त्वया सत्त्वावतारतः ॥ (नि० स्त० २१)

यद्यपि धर्मधातु (तथता) में कोई भेद नहीं होने से यानों में भी कोई भेद नहीं है। तथापि तीन यानों का उपदेश शास्ता ने सत्त्वों के चित्त की उच्चावचता को ध्यान में रखकर बुद्धत्व के मार्ग में प्रवेश कराने की दृष्टि से किया है।

महायान के दो भेद हैं। पारमितानय और मन्त्रनय। इसे पारमितायान या मन्त्रयान भी कहा जाता है। उद्देश्य एक होने पर भी महायान के दो भेद क्यों किये गये जबकि दोनों में साधक बोधिचित्त का उत्पाद कर समस्त प्राणियों के कल्याण के लिए बुद्धत्व प्राप्त करना चाहते हैं। उनके द्वारा प्राप्त संबोधि में किसी प्रकार का अन्तर नहीं है। सर्वधर्मनिःस्वभावता या शून्यता की स्थापना में दोनों मत समान हैं। पारमिताओं की साधना में भी इनमें कोई मतभेद नहीं है। इस संदर्भ में नयत्रयप्रदीपकार का यह वचन ध्यातव्य है जिसमें उन्होंने पारमितानय से मन्त्रनय की विशेषता किन कारणों से है, प्रतिपादित किया है। जैसे कहा है—

एकार्थत्वेऽप्यसंमोहाद् बहूपायाददुष्करात् ।

तीक्ष्णेन्द्रियाधिकाराच्च मन्त्रशास्त्रं विशिष्यते ॥

अर्थात् उद्देश्य (बुद्धत्व फल) में समानता होने पर भी निम्नलिखित चार विशेषताओं के कारण मन्त्रयान पारमितायान से विशिष्ट है। जैसे— १. असंमोह २. उपायबहुलता ३. अदुष्करचर्या, और ४. तीक्ष्णेन्द्रियता।

मन्त्रयान में लक्ष्यप्राप्ति के लिए जिन साधनाओं की भगवान् शास्ता ने समय समय पर देशनाएँ दीं उनका संकलन जिन ग्रन्थों में हुआ वे ग्रन्थ तन्त्र कहलाते हैं। तन्त्र शब्द की निरुक्ति 'तन्नि संस्करणे' धातु से अच् प्रत्यय होकर धातु के इदित होने से नुमागम होने से होती है। इसीलिए चक्रसंवरतन्त्र के टीकाकार भवभट्ट(भद्र) ने "तन्त्र्यते संस्क्रियते आत्मा चित्तं येन तत् तन्त्रम्" यह व्युत्पत्ति की है। अर्थात् जो चित्त की विशुद्धि का मार्ग बताता है उसे तन्त्र कहते हैं। इन तन्त्रों को विद्वानों ने यद्यपि कई भागों में विभक्त किया है किन्तु चार भाग प्रसिद्ध हैं और शेष का चौथे भाग में ही अन्तर्भाव हो जाता है। ये चार हैं— क्रियातन्त्र, चर्यातन्त्र, योगतन्त्र और अनुत्तरयोगतन्त्र, जो सिद्धि के लिए उत्तरोत्तरसोपानमार्ग की तरह श्रेष्ठ हैं। यद्यपि क्रिया आदि चारों तन्त्रों का भेद करने में फल बुद्धत्व, मार्गविस्था में बोधिचित्तोत्पाद, दस पारमिताओं का आचरण, शून्यता दर्शन और देवयोग की भावना आदि में कोई भेद नहीं है।

क्रियातन्त्र— इस तन्त्र में देवयोग-उपाय की साधना करते समय बाह्य विधि-विधानों (स्नान, पूजा, मण्डल, होम, व्रत और जाप आदि) पर अत्यधिक आश्रित होना पड़ता है तथा आन्तरिक समाधि और बाह्य क्रिया में बाह्य क्रिया ही प्रधान होती है, इनमें बाह्य शारीरिक क्रियाओं द्वारा कायशुद्धि, मन्त्रावृत्ति आदि द्वारा वाक्शुद्धि तथा चित्त द्वारा देवभावना से चित्तशुद्धि पर अधिक ध्यान दिया जाता है।

चर्यातन्त्र— इस तन्त्र में देवयोग-उपाय की साधना करते समय बाह्य विधि-विधानों और आन्तरिक समाधि दोनों को समान महत्त्व दिया जाता है, किन्तु बाह्य कर्मों पर कुछ विशेष निर्भर रहा जाता है तथा दिव्य ज्ञानमुद्राओं के साथ हास्य, ईक्षण आदि राग की सहायता से उत्पन्न सुख संवित्ति से उस सुख का उपभोग करते हुए सप्रपञ्चचर्या से बाह्यशुद्धि के साथ आभ्यन्तर शुद्धि की भी साधना की जाती है। अतः यह उभयतन्त्र भी कहलाता है।

योगतन्त्र— इस तन्त्र में देवयोग-उपाय की साधना में बाह्य विधि-विधानों एवं आन्तरिक समाधि इन दोनों में आन्तरिक समाधि को अधिक महत्त्व दिया जाता है, फिर भी सीमित बाह्य कर्म भी अनिवार्य समझे जाते हैं तथा इनमें मनोमय

सुखरूप विषयी ज्ञान द्वारा विषयशून्यता का साक्षात्कार कर पञ्चाभिसंबोधि द्वारा बुद्धत्व प्राप्ति का प्रयास किया जाता है।

अनुत्तरयोगतन्त्र— इस तन्त्र में बाह्य विधानों पर कभी आश्रित नहीं रहा जाता, बल्कि आन्तरिक समाधि के अनुत्तरयोग को ही अधिक महत्त्व दिया जाता है। समापत्तियोग में स्थित होकर अद्वयतत्त्व का साक्षात्कार करने के लिए क्रमद्वय की साधना करते हुए बाह्य विषयों पर आश्रित न होना, यह अनुत्तरयोगतन्त्र का विषय है।

अनुत्तरयोगतन्त्र के भी तीन भेद हैं— पितृतन्त्र (उपायतन्त्र), मातृतन्त्र (प्रज्ञा-तन्त्र) और अद्वयतन्त्र। पितृतन्त्र में गुह्यसमाजतन्त्र, यमारितन्त्र आदि प्रधान ग्रन्थ हैं। मातृतन्त्र में ६ कुल हैं— हेरुक, वैरोचन, वज्रसूर्य, पद्मनर्तेश्वर, परमाश्व और वज्रधर। इनके अपने-अपने स्वतन्त्र ग्रन्थ भी हैं। मातृतन्त्र के अन्तर्गत चक्रसंवर-तन्त्र, बुद्धकपालतन्त्र और हेवज्रतन्त्र आदि प्रधान ग्रन्थ हैं। अद्वयतन्त्र का प्रधान ग्रन्थ कालचक्रतन्त्र है।

इन चारों भेदों के भी कुलों के आधार पर कई उपभेद हैं। जैसे क्रियातन्त्र के तथागत, वज्र और पद्म ये तीन प्रकार हैं। चर्यातन्त्र तीन कुलों और कई उपकुलों में विभक्त हैं। योगतन्त्र के पञ्चतथागत कुल के रूप में पाँच तथा प्रत्येक के चार पुनः प्रत्येक के पाँच इसप्रकार कुल १०० भेद हैं।

चक्रसंवरतन्त्र

मातृतन्त्र में हेरुककुल के अन्तर्गत ५ तन्त्र हैं— १. हेरुक=चक्रसंवरतन्त्र २. हेवज्रतन्त्र, ३. बुद्धकपाल तन्त्र ४. महामाया तन्त्र और ५. अरल्लि (रिगि-अरल्लि और वज्रारल्लि) तन्त्र। इनमें चक्रसंवरतन्त्र प्रधान है क्योंकि ऐसी प्रसिद्धि है कि इस तन्त्र की देशना भगवान् ने स्वयं चक्रसंवर रूप में प्रकट होकर दी थी। चक्रसंवर शब्द की निरुक्ति करते हुए टीकाकार भवभट्ट (भद्र) ने लिखा है—

“चक्रं धर्मचक्रम्, श्रीमच्चक्रं श्रीचक्रम्, तेन कापथात् सत्त्वानां मनः संवृणो-तीति श्रीचक्रसंवरः श्रीहेरुकः, तदभिधायित्वात् तन्त्रमपि तथोच्यते।” अर्थात् चक्र का अर्थ है धर्मचक्र, जो चक्र श्री (शक्ति=वज्रवाराही) से युक्त है वह हुआ

श्रीचक्र, यह श्रीचक्र जो प्राणियों के मन को कुमार्ग में जाने से रोकता है वही श्रीचक्रसंवर यानी हेरुक, श्रीचक्रसंवर द्वारा दी गई देशना के कारण ग्रन्थ का नाम भी श्रीचक्रसंवर तन्त्र हुआ। इसलिए इस ग्रन्थ के प्रत्येक पटल की पुष्पिका में 'इति श्रीहेरुकाभिधाने' पद दिया गया है।

कहा जाता है कि यह मूल में एक लाख पटलों (परिच्छेदों) वाला था फिर उसका संग्रहतन्त्र (संक्षेप) एक लाख श्लोकों का हुआ किन्तु ये दोनों दुर्लभ हैं अतः इसका यह उत्तरतन्त्र ५१ पटलों वाला है। इसकी पटल संख्या के विषय में भी कल्पना है कि आलि-कालि (स्वर-व्यञ्जन) की संख्या को उद्देश्य करके यह संख्या निश्चित की गई है। क्योंकि आलि= १६, कालि= ३३ (१६+३३=४९), बीजाक्षरों में क्ष का भी प्रयोग होता है किन्तु वह स्वतन्त्र नहीं क् ष २ वर्णों के योग से बना है, अतः ४९+२=५१।

पहले बता चुके हैं कि इसके एकलक्ष परिच्छेदात्मक और श्लोकात्मक संस्करण दुर्लभ हैं केवल यही ५१ पटलात्मक संक्षिप्त संस्करण तोहुकू सं० ३६८ में 'तन्त्रराजश्रीलघुसंवरतन्त्रनाम' इस नाम से उपलब्ध है। प्रख्यात लेखक बुस्तोन रिनपोछे ने तन्त्रों के वर्गीकरण में इसी को चक्रसंवर का मूलतन्त्र स्वीकार किया है और वज्रपाणि ने भी अपने पिण्डार्थ विवरण में 'तेन श्रीहेरुकभगवता मूल-तन्त्राल्लक्षाभिधानात् सारं सप्तशतश्लोकात्मकं तन्त्रं देशितम्' कह कर इसकी पुष्टि की है।

चक्रसंवर के व्याख्यातन्त्र योगिनीसञ्चारतन्त्र के टीकाकार ने जहाँ जहाँ मूलतन्त्रे कहकर उद्धरण दिये हैं प्रायः वे सभी इसमें प्राप्त होते हैं, इससे भी उक्त कथन की पुष्टि होती है। भोट भाषा में इस मूलग्रन्थ का अनुवाद भारतीय आचार्य पद्माकर तथा भोट आचार्य लोचावा रिन्छेन जङ्पो ने किया है तथा देगे संस्करण के अनुसार उसे भारतीय आचार्य प्रज्ञाकीर्ति तथा भोट लोचावा मरपा छोस्-क्यी-वङ्छुग् ने पुनरीक्षित किया है।

इस मूलतन्त्र के ५ व्याख्यातन्त्र माने जाते हैं— वज्रडाक, डाकार्णव, योगिनी-सञ्चार, संवरोदय और चतुर्योगिनी संपुट। अभिधानोत्तरतन्त्र को भी इस तन्त्र का व्याख्यातन्त्र के रूप में कई भोट आचार्यों ने माना है।

इस तन्त्र पर लिखी गई १२ टीकाओं का उल्लेख तन्त्रुर संग्रह में प्राप्त होता है और इसके प्रथमटीकाकार इन्द्रभूतिपाद कहे जाते हैं।¹ यहाँ यह उल्लेख करना आवश्यक है कि तन्त्रग्रन्थ कोई काव्य या उपन्यास नहीं हैं जिन्हें पढ़कर अभिधा, लक्षणा या व्यञ्जना के आधार पर उसमें प्रयुक्त शब्दों या वाक्यों का अर्थ कोई पण्डितमानी लगाकर उसके अनुसार साधना करे और सिद्धि न मिली तो उसे असत्य या कल्पना समझ ले। तन्त्रविद्या एक गूढ़ और रहस्यमयी विद्या है। इसे समझने के लिए ऐसे गुरु की आवश्यकता होती है जो साधना कर चुका हो और उसके रहस्य को जानता हो। एक छोटा सा उदाहरण देखें— चक्रसंवर में एक यन्त्र के विषय में लिखा है ‘अनामिकारजसा लेख्यम्’ यहाँ कितना ही बड़ा विद्वान् हो इसका अर्थ समझेगा अनामिका अंगुली के रक्त से लिखे किन्तु व्याख्याकार ने स्पष्ट किया है— ‘अनामिका=अनपत्या स्त्री, तस्याः रजसा=रजो-दर्शनकालिकरक्तेन’। इसी प्रकार गोकुदहन, माता, भगिनी, डोम्बी, रजकी आदि शब्दों की व्याख्याएँ हैं। इनमें आई हुई औषधियों के प्रयोग विना निर्दिष्ट मन्त्रों की साधना किये सफल नहीं होते। अतः विना गुरु के निर्देश के केवल ग्रन्थ पढ़कर सफलता नहीं मिलती।

चक्रसंवरतन्त्र की वर्ण्यवस्तु

इस तन्त्र के प्रथम पटल में— ग्रन्थावतारण प्रतिज्ञा, हेरुक की श्रेष्ठता का प्रतिपादन है और टीका में रहस्यपद के विविध अर्थ तथा संवरशब्द की व्युत्पत्ति। फिर भगवान् की सामर्थ्य और उनके स्वयम्भूत्व का प्रतिपादन है। इसकी व्याख्या में सत्-असत् के उत्पाद-विगमत्व पर विचार, शक्ति का विवेचन, सविकल्प-निर्विकल्प विवेक, अर्थोत्पत्ति का इन्द्रिय ज्ञान से सम्बन्ध और अर्थ की प्रत्यक्षा-प्रत्यक्षता पर विस्तृत विचार किया है। हेरुक की संभवता का प्रतिपादन, प्रस्तुत

1. इस सम्बन्ध में संस्थान की शोधपत्रिका ‘धीः’ के अंक १७, पृ० ७५-९० में डॉ० बनारसी लाल की ‘बौद्ध तन्त्र वाङ्मय का परिचय’ लेखमाला के अन्तर्गत ‘चक्रसंवर’ का विस्तृत ऐतिहासिक विवरण प्रकाशित हुआ है। जिज्ञासु पाठक चक्रसंवर की टीका, उपटीका, संवर परिवार, तद्विषयक अन्यविस्तृत विवरण प्राप्त कर सकते हैं। भोट देश में चक्रसंवरतन्त्र की विभिन्न परम्पराओं का विस्तृत विवरण डॉ० वङ्छुग दोर्जे नेगी के ग्रन्थ “वज्रयान दर्शन एवं साधना” पृ० १९२-१९५ तथा गोस्-लोचावा ज्योन-नु-पल रचित “ब्ल्यू एनाल्स” पृ० ३८०-३८९ में देख सकते हैं।

तन्त्र के वर्णनीय विषयों की गणना, कुलिकाओं की चतुर्विध (बहिः, मनोमय, साक्षात् और गुह्य) पूजा का विधान बताकर अन्त में मण्डललेखन के लिए उचित स्थान गिनाये हैं।

पटल २ में— मण्डल की रचना और उसमें देवताओं के न्यास की विधि बताई गई है।

पटल ३ में— गुरु (आचार्य) और मण्डल की पूजा, पुष्पपातन द्वारा शिष्य के कुल और नाम का निर्णय, आचार्य द्वारा शिष्य को देवता दर्शन, गुरुदक्षिणा तथा अन्त में मण्डलानुशंसा वर्णित है।

पटल ४ में— २४ वीरान्विता और १२ अद्वया (वीररहिता) योगिनियों के नाम और स्वभाव का वर्णन है।

पटल ५ में— श्रीहेरुक के मूल मन्त्रोद्धार की विधि बताई गई है।

मन्त्रोद्धार— मन्त्र ऐसी वस्तु है जिसमें एक भी वर्ण या मात्रा में विकृति हुई तो पूरा मन्त्र निष्फल हो जाता है।¹ इसलिए विद्वानों ने एक ऐसी विधि बनाई है जिसके अनुसार बने हुए मन्त्र में कोई विकृति नहीं आने पाती। इसी को मन्त्रोद्धार कहते हैं। मन्त्र आलि-कालि (स्वर-व्यञ्जन) वर्णों से बनते हैं, उन्हें ८ वर्गों में बांटा जाता है—

१. अवर्ग— (१६ स्वर) २. कवर्ग— क ख ग घ ङ। ३. चवर्ग— च छ ज झ ञ। ४. टवर्ग— ट ठ ड ढ ण। ५. तवर्ग— त थ द ध न। ६. पवर्ग— प फ ब भ म। ६. अन्तःस्थ— य र ल व। ७. ऊष्म— श ष स ह।

अब उदाहरण देखें— चतुर्थस्य (चौथे तवर्ग का) पञ्चमं (पाँचवां अक्षर 'न') पञ्चमस्य (पाँचवें पवर्ग का) च पञ्चमम् (पाँचवां अक्षर 'म') स्वराणां त्रयोदशेन (स्वरों में तेरहवें स्वर 'ओ' से) द्वितीयाक्षर योजितम् (मिला हुआ दूसरा अक्षर अर्थात् म = मो) इस प्रकार एक पद 'नमो' बन गया। इसी प्रकार पूरे मन्त्रों की विधि बताई जाती है।²

1. मन्त्रो हीनः स्वरतो वर्णतो वा मिथ्याप्रयुक्तो न तदर्थमाह। स वाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति यथेन्द्रशत्रुः स्वरतोऽपराधात्— (निरुक्त)।

2. हेरुक मन्त्रों के मन्त्रोद्धार के लिए धीः पत्रिका के ३० वें अंक पृ० ४३-७२ में डॉ० बनारसी लाल का 'मन्त्रोद्धार विमर्श' शीर्षक निबन्ध देखें।

यह विधि केवल बौद्ध तन्त्रों में ही नहीं बौद्धेतर तन्त्रों में भी पाई जाती है। इस पञ्चम पटल में केवल स्वररहित व्यंजनों की ही गणना है, स्वरसंयोजन आगे सातवें पटल में बताया गया है।

पटल ६ में— ३२ और ८ अक्षरों वाले षड्वीर कवच के हृदय और उपहृदय कवचों की मन्त्रोद्धारविधि वर्णित है।

पटल ७ में— पाँचवें पटल में वर्णित मन्त्राक्षरों में स्वर संयोजन बताया है।

पटल ८ में— विपरीतयोगिनी मन्त्र के मन्त्रोद्धार की विधि वर्णित है।

पटल ९ में— कर्मविधि अर्थात् मूलमन्त्र की सामर्थ्य का वर्णन है।

पटल १० में— हेरुकाद्वययोग से कायत्रय (धर्मकाय, संभोगकाय और निर्माणकाय) की सिद्धि और उसके प्रभाव का वर्णन है।

पटल ११ में— ३२ अक्षरवाले हृदयमन्त्र का साधक किस प्रकार भैषज्य प्रयोग कर सकता है और उससे क्या-क्या सिद्धि प्राप्त कर सकता है, इसका वर्णन है।

पटल १२ में— ८ अक्षर वाले उपहृदयमन्त्र की विधि और प्रभाव वर्णित है।

पटल १३ में— कवचमन्त्र, उसके जप और औषधि के साथ प्रयोग की विधि और उसका प्रभाव बताया है।

पटल १४ में— गर्दभाकारयोग की विधि और उसका प्रभाव वर्णित है।

गर्दभाकारयोग— कामरूपिणी योगिनियों की चार जातियाँ हैं— लामा, रूपिणी, डाकिनी और खण्डरोहा। इनमें डाकिनी जाति (काकास्या, उलूकास्या, श्वानास्या और शूकरास्या) को छोड़कर शेष सबको गर्दभ स्वरूप वाली, मुख से खून उगलती हुई, खट्वाङ्ग को छोड़कर त्रिशूलधारण की हुई तथा श्रीहेरुक की भी खून उगलते गर्दभ के रूप में भावना करते हुए स्वयं अपने को उसी रूप में समझे। इस प्रकार हृदयमन्त्र का सात लाख जप करे और आधार मण्डल में बताये हुए क्रम से विधिवत् उनकी पूजा होम और बलि से यह गर्दभाकार हेरुकीकरण योग सिद्ध होता है।

पटल १५ में— अक्षर छोम्मक बताये गये हैं।

छोम्मक— १छोम्मक शब्द का अर्थ है संकेत। भिन्न भिन्न जाति की योगिनियाँ भिन्न भिन्न प्रकार के संकेत करती हैं उन्हें समझकर साधक को उसका संकेत द्वारा ही प्रत्युत्तर देना होता है। इससे योगिनी शीघ्र प्रसन्न होकर इच्छित फल देती है। इस पटल में केवल अक्षर छोम्मक वर्णित हैं। जैसे योगिनी 'डा' अक्षर कहती है तो उसका अर्थ है पुरुष। 'डी'=स्त्री, 'सु'=भोजन आदि। शेष छोम्मक २०वें पटल से आगे बताये हैं।

पटल १६ में— योगिनियों के लक्षण और उनकी परीक्षाविधि बताई है।

पटल १७ में— सातयोगिनियों के चिह्न और मुद्राएँ बताई हैं, जिनसे उन्हें पहचाना जा सके।

पटल १८ में— सभी योगिनियों के सामान्य रूप से वर्ण, चिह्न और लक्षण बताये हैं।

पटल १९ में— लामा जातीय योगिनियों की पहचान बताई गई है और उनके समक्ष की जानेवाली पद्म, कूर्म, अजिन, कमण्डलु, घण्टा, शंख, शक्ति और नाग नामक मुद्राओं को टीकाकार ने स्पष्ट किया है जो अन्यत्र प्राप्त मुद्राओं से भिन्न है।

पटल २० में— सभी योगिनियों द्वारा हस्तमुद्रा छोम्मक अर्थात् हाथ से शरीर के किसी अंग को छूकर किये गये संकेत-प्रतिसंकेत बताये गये हैं।

पटल २१ में— साधक और योगिनियों के द्वारा शरीर के किसी अंग को दिखाकर किये गये संकेत प्रतिसंकेत वर्णित हैं।

पटल २२ में— कुछ विशेष प्रकार की मुद्राओं से, जो अंगुलियों द्वारा बनाई जाती हैं, किये गए संकेत बताये हैं।

पटल २३ में— विशेष डाकिनियों की वे अङ्ग-चिह्नादि मुद्राएँ बताई हैं जिन से वे शीघ्र प्रसन्न होती हैं। पृष्ठ १२३ पर व्याख्या में योगसंवर शब्द की व्युत्पत्ति पठनीय है।

1. छोमा के सम्बन्ध में विशेष परिचय के लिए धीः पत्रिका के १५वें अंक के पृ० ३११-३२० में डॉ० अरुण कुमार सिन्हा का 'छोमा परिचय और विश्लेषण' शीर्षक निबन्ध देखें।

पटल २४ में— डाकिनी, लामा, रूपिणी और खण्डरोहा इन चारों जातियों द्वारा विभिन्न भाषाओं के शब्दों द्वारा किये गये संकेत व मुद्राओं के नाम बताये हैं। जैसे पोतङ्गी=अभिवादन, प्रतिपोतङ्गी=प्रत्यभिवादन आदि।

पटल २५ में— अष्टपदात्मक मूलमन्त्र को स्पष्ट किया गया है।

पटल २६ में— मूलमन्त्र की अनुशंसा की गई है। चौथे पटल में कही हुई महावीर्यादि योगिनियों के अनुलोम-विलोम क्रम से न्यास विधि, आठ प्रकार के समयाचार और तीन प्रकार से शिष्यपरीक्षा की विधि बताई है।

पटल २७ में— मन्त्रसिद्ध योगी की चर्या, व्रत, पूजा और बलि का विस्तार से वर्णन है और तत्त्वसंग्रह, गुह्यतन्त्र, परमाश्व और महावज्रभैरव तन्त्रों का नाम लेकर बताया है कि इनमें बताई हुई विधियों से जो फल प्राप्त होता है वह चक्रसंवर के ध्यान मात्र से हो जाता है।

पटल २८ में— अध्यात्म होम और वर्णैकत्व की विधि बताई है। अध्यात्म अर्थात् विरमानन्द ही निर्वाण है उससे निर्गत सहजानन्द में स्थित आत्मा (चित्त) की पूजा ही सर्व तथागतों की पूजा है। जो इस प्रकार के व्यक्ति हैं उन्हें भ्रातृचार कहा है। उनके साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए यह बताया है। जो रत्नत्रय का विरोध करते हैं उनके विनाश के लिए गोमांसादि होम तथा सभी वर्णों को एक समझकर चरुभक्षण आदि में भेद का निषेध आदि का निर्देश है।

पटल २९ में— प्रसन्न हुई दूती के लक्षण बताये गये हैं और कहा है कि ऊष्म क्रिया (प्रबल सामर्थ्य) के विना सिद्धि नहीं मिलती अतः मूलमन्त्र का जप और मुद्रा की भावना सदा करनी चाहिए। जो इस महायोग की निन्दा करते हैं वे नीचयोनि को प्राप्त होते हैं। जिस स्थान में इस योग की साधना होती है वह म्लेच्छादि द्वारा अशुचि होने पर भी सिद्धिप्रद होता है क्योंकि वहाँ हेरुक का वास होता है।

पटल ३० में— चतुष्पदमन्त्र की मुरजबन्ध में उद्धारविधि बताई है।

पटल ३१ में— पूर्व के २७, २८वें पटलों में पूजा, होम और बलि का निर्देश किया था उसी प्रसङ्ग में यहाँ गुरु, बुद्ध, बोधिसत्त्व आदि के अपकारी जनों के

विनाश के लिए महामांसादि का हवन और वामहस्त छोम्मक मुद्रामन्त्रों का विधान है।

पटल ३२ में— उपर्युक्त पूजा के साधन रूप में जिन पशु-पक्षियों का मांस ग्राह्य है उनकी परिगणना करके महाप्रेतसाधन और वेतालसाधनकी विधि बताई है।

पटल ३३ में— गुह्यपूजा सत्कार विधि बताई है जिससे साधक पाताल, खेचर, आदि १२ प्रकार की सिद्धियाँ प्राप्त कर सकता है।

पटल ३४ में— खण्डरोहा आदि अद्वयदूतियों को आकृष्ट करने की विधि बताई है।

पटल ३५ में— शान्तिकादि कर्म, क्रूरकर्म तथा कालमृत्युवञ्चन कर्मों में अद्वयदूती खण्डरोहा के भिन्न भिन्न स्वरूपों की भावना और भिन्नमन्त्रों से होम की विधि बताई है।

पटल ३६ में— योगिनी की तत्त्वपूजा का विधान है।

इसके दो भेद हैं— १. अद्वयसमापत्ति पूजा और २. वीर पूजा। त्र्यक्षरमन्त्र को प्रज्ञोपायरूप से अद्वय मानकर हूँकार से वज्र और पद्म का, प्रणव से वज्रमणि का और आःकार से किंजल्क का निष्पादन कर उसका शुद्धकाय में न्यास करना अद्वयसमापत्ति है इसके बाद महामांसादि से वीरपूजा होती है।

पटल ३७ में— अध्यात्मवश्याधिकार अर्थात् मूलमन्त्र, विद्याराजमन्त्र और डाकिनीमन्त्र को एक में मिलाकर उसकी साधना करके विभिन्न औषधियों के साथ उसके प्रयोग से होने वाले वशीकरण प्रयोग दिये गये हैं।

पटल ३८ में— पूर्ववर्णित छोम्मकों (संकेतों) को गुप्त रखने का निर्देश है और जो उन्हें दूसरों पर प्रकट करता है उसे योगिनी खा जाती है और स्वयं बुद्ध भी उसे बचा नहीं पाते। आगे योगिनियों के स्थानों का निर्देश है।

पटल ३९ में— अट्टहासमन्त्र की साधना का वर्णन है।

अट्टहास— योगिनी जब साधक के सम्मुख प्रकट होती है तब उसे भयभीत करने के लिए भीषण अट्टहास करती है, यदि उससे डरकर साधक साधना छोड़ देता है तो नरक में जाता है। इस मन्त्र की साधना से वह निडर होकर रहता है

तो प्रसन्न हुई योगिनी उसे अपने साथ सुखावती तक ले जाती है जहाँ वह जरामरण से रहित हो आनन्द से रहता है।

पटल ४० में— राजा, राजपुरुष या अन्य किसी भी वर्ण के व्यक्ति को वश में करने के लिए विशेष होम की विधि बताई है।

पटल ४१ में— वशीकरण से लेकर रूपपरिवर्तन तक १२ आभिचारिक कर्म गिनाये हैं, उनमें सिद्धि पाने के लिए मण्डल में पुल्लीर से कुलता पर्यन्त २४ पीठों की उनके आद्यक्षरों से स्थापना, उसी मन्त्र से जप और जिस पीठ में जितनी योगिनियाँ रहती हैं उनकी भावना करना बताया है। ये २१ हजार कुलनायिकाएँ हैं। इनकी पूजा सदा नग्न होकर रात्रि में करने का विधान है।

पटल ४२ में— इदमामन्त्र (ॐ इदमस्तु सुखावहं हूँ) से कुसुमोदक पीकर हासमन्त्र (हा हा हे है हो हौ हूँ हूँ) से योगिनी के साथ नृत्य करने का विधान है।

पटल ४३ में— योगिनी का दर्शन होने पर नग्न होकर उसकी पूजा करने और सप्ताक्षर उपहृदय मन्त्र की साधना से अदृश्य होने जैसी सिद्धियों को प्राप्त करने का विधान है।

पटल ४४ में— सप्ताक्षरस्वरूपा षड्योगिनियों की साधना से आकर्षणादि सभी सिद्धियों की प्राप्ति का विधान है।

पटल ४५ में— षडक्षरात्मक षड्योगिनी मन्त्र की साधना से वाक्सिद्धि आदि की सामर्थ्य का विधान है। इसमें टीकाकार ने जो मन्त्र बताया है वह ८ अक्षरों वाला है किन्तु भोटपाठ में १२ अक्षरों वाला है।

पटल ४६ में— अपने हाथों में पञ्चकोणात्मक चिह्न बनाकर उसमें लिखे हकारपञ्चक (हा ही है हौ हः) मन्त्र की साधना जप होम बलि आदि का विधान है। अभिचारात्मक यह प्रयोग मारण के लिए बताया है।

पटल ४७ में— सर्वबुद्धडाकिनी उपहृदय मन्त्र की साधना विधि है।

पटल ४८ में— डाकिनीहृदयमन्त्र की साधना है और सर्वश्रेष्ठ मन्त्र के रूप में उसकी अनुशंसा है।

पटल ४९ में— पशुकर्म की साधनाविधि वर्णित है। पशुकर्म का अर्थ है सात-जन्मों तक साधक अपने को जब जिस पशु के रूप में परिवर्तित करना चाहे कर सकता है। ये पशु हैं— हाथी, घोड़ा, गदहा, ऊँट, कछुवा, वाराह और जम्बुक।

पटल ५० में— पहले होमविधि अर्थात् किस वस्तु का कितनी संख्या में कैसे हवन करने से क्या सिद्धि प्राप्त होती है, यह बताकर योगिनियों के पीठ स्थानों को गिनाया है जिन्हें श्रीहेरुक के अंग या अंगावयव मानकर होम किया जाता है।

पटल ५१ में— १४ तत्त्व गिनाये हैं जिनके आचरण से साधक जन्म-जन्मान्तरों तक सिद्ध बना रहता है। इसके बाद इस तन्त्र के माहात्म्य का वर्णन है। इसकी साधना करने वाला व्यक्ति यदि बीच में ही मर जाता है तो उसे भी वीरयोगिनियाँ स्वर्ग में ले जाती हैं। इसके बाद तथता, धर्मता या शून्यता को अचिन्त्य और हानिवृद्धि विवर्जित कहकर ग्रन्थ समाप्त किया है। यही संक्षेप में इस ग्रन्थ के प्रत्येक पटल की वर्ण्यवस्तु है।

चक्रसंवरतन्त्र के विवृतिकार भवभट्ट (भद्र)

इस तन्त्र के विवृतिकार का वास्तविक नाम क्या है, यह निर्णय करना कठिन है क्योंकि कहीं भवभट्ट लिखा है और कहीं भवभद्र। यद्यपि भवभट्ट नाम से किसी आचार्य का उल्लेख बौद्ध वाङ्मय में नहीं मिलता किन्तु विवृति की सभी उपलब्ध संस्कृत मातृकाओं में भवभट्ट ही लिखा है तथा भोटानुवाद के देगे और चोने संस्करणों में भवभद्र और सेरडी तथा पीकिंग संस्करणों में भवभट्ट है।

लामा तारनाथ ने “भारत में बौद्धधर्म का इतिहास”¹ नामक ग्रन्थ में विक्रमशील महाविहार के १२ तान्त्रिक आचार्यों के नाम दिये हैं, वे हैं—

ज्ञानपाद, दीपङ्करभद्र, जयभद्र, श्रीधर, भवभ(द्र), भव्यकीर्ति, लीलावज्र, दुर्जयचन्द्र, समयवज्र, तथागत रक्षित, बोधिभद्र और कमलशील।

इनमें भवभद्र भी हैं जो श्रीधर के बाद विक्रमशील महाविहार के अध्यक्ष बने। ये सभी शास्त्रों के प्रकाण्ड विद्वान् थे। इन्होंने प्रायः ५० तन्त्र ग्रन्थों का और विशेषरूप से विज्ञानवाद का गहन अध्ययन किया था। इन्हें स्वप्न में चक्रसंवर

1. हिस्ट्री आफ बुद्धिज्म इन इंडिया, पृ० १८

और तारा का दर्शन हुआ था। इन्होंने गुटिकासिद्धि और रसायन सिद्धि की साधना में भी सफलता प्राप्त की। तन्युर संग्रह में भवभद्र नाम से इनके निम्नांकित ग्रन्थ उपलब्ध हैं—

- (१)– श्रीहेवज्रव्याख्याविवरणनाम- (तो० ११८२)
- (२)– श्रीचक्रसंवरपञ्जिकानाम- (तो० १४०३)
- (३)– श्रीवज्रडाकनाम महातन्त्रराजविवृति- (तो० १४१५)
- (४)– श्रीचतुष्पीठतन्त्रराजस्मृतिनिबन्धनाम टीका- (तो० १६०७)
- (५)– श्रीचतुष्पीठसाधन- (तो० १६१६)
- (६)– संक्षिप्ततारामण्डलावतारविधि- (तो० ३६७४)
- (७)– आर्यतारामण्डलावतारकृत्यनाम- (तो० ३६७५)
- (८)– चिन्तामणितारासाधननाम- (तो० ३६७६)
- (९)– ताराधावनविधि- (तो० ३६३७)
- (१०)– पोषधविधि- (तो० ३६७८)

प्रस्तुत संस्करण

चक्रसंवरतन्त्र नाम से इस ग्रन्थ का मूल संस्कृत पाठ कहीं उपलब्ध नहीं था। इधर इंस्टीच्यूट फॉर एडवांस स्टडीज ऑफ वर्ल्ड रिलीजन्स, न्यूयार्क से २ मातृकाएँ शान्तरक्षित ग्रन्थालय में आई थीं— जयभद्रकृत चक्रसंवर पञ्जिका और भवभट्ट(भद्र)कृत चक्रसंवरविवृति। इन दोनों का विवरण हमने अपनी शोध पत्रिका धीः १२वें अंक के 'दुर्लभ ग्रन्थ परिचय' स्तम्भ में दिया जिसमें ५१ पटलों की पुष्पिकाएँ भी थीं। हमारी पाण्डुलिपि सर्वेक्षण टीम जब बड़ौदा गई तो वहाँ ओरियण्टल इंस्टीच्यूट में २ मातृकाएँ 'हेरुकाभिधान' नामक ग्रन्थ की मिलीं, उनकी पुष्पिकाएँ देखकर ज्ञात हुआ कि ये वे ही पुष्पिकाएँ हैं जो चक्रसंवरविवृति में हैं। वह ग्रन्थ जीराक्स करके मंगाया गया, फिर इसी नाम से १ मातृका केसर

पुस्तकालय काठमांडू से भी प्राप्त हुई। मिलाने पर देखा कि तीनों प्रतियाँ ताड़पत्र पर लिखी एक मातृका की ही प्रतिलिपि हैं और अपूर्ण हैं। जो अंश उसमें नष्ट हुआ या खंडित है वह शेष दोनों में भी नहीं है। इस प्रकार निम्नलिखित भाग किसी में नहीं था—

१८वें पटल के श्लोक ४ से १९वें पटल के श्लोक ८ तक कुल ३१ श्लोक, २२वें पटल के श्लोक ४ से २९वें पटल के अन्त तक पूरे ८ पटल, ३८वें पटल के श्लोक १४ से ४४वें पटल के अन्त तक पूरे ६ पटल तथा ४९वें पटल के श्लोक ८ से ५०वें पटल के १५वें श्लोक तक कुल २३ श्लोक।

इस प्रकार प्रायः १५ पटल अनुपलब्ध थे। हम अत्यन्त ऋणी हैं विवृतिकार आचार्य भवभट्ट(भद्र) के कि उन्होंने मूलपाठ के प्रत्येक प्रतीक को विवृति में ग्रहण किया है जिससे हमें इसे पूर्ण करने में सहायता मिली। बौद्ध तन्त्र ग्रन्थों में एक ही परिवार या कुल से सम्बद्ध तन्त्रों की विशेषता है कि इनमें कुछ विषय प्रायः समान होते हैं केवल प्रक्रिया में अन्तर होता है अतः टीका में स्थित प्रतीकों के आधार पर हमें जो पाठ अभिधानोत्तरतन्त्र तथा सम्पुटतन्त्र में उपलब्ध हुआ उसे ग्रहण किया और शेष पाठ को भोटानुवाद से संस्कृत में रूपान्तर करके पूर्ण किया। यह पाठ [] इस प्रकार कोष्ठक के अन्दर रखा गया है और टिप्पणी में उसका निर्देश किया गया है। इनका विवरण इस प्रकार है—

(१) १८वें पटल के श्लोक ४ से १९वें पटल के श्लोक ८ तक भोट पाठ से रूपान्तरित किया है। इसमें विवृति के प्रतीकों के आधार पर कहीं-कहीं अभिधानोत्तर और सम्पुट का पाठ भी ग्रहण किया है।

(२) २२वें पटल के श्लोक ४ से २९वें पटल के अन्त तक भोटपाठ से रूपान्तरित किया है। इसमें भी कहीं-कहीं टीका के पाठ के अनुरूप अभिधानोत्तर और सम्पुटतन्त्र से सहायता ली है।

(३) ३८वें पटल के श्लोक १४ से ४४ पटल के अन्त तक का पाठ पूरा भोटपाठ और विवृति से रूपान्तरित किया है।

(४) ४९वें पटल के श्लोक ८ से ५०वें पटल के १५वें श्लोक तक भोटपाठ तथा विवृति से रूपान्तरित किया है।

इस प्रक्रिया से निम्नलिखित मातृकाओं के आधार पर यह संस्करण प्रस्तुत हुआ है—

- (क) हेरुकाभिधानम्— ओरियण्टल इंस्टीच्यूट बड़ौदा, संख्या १३२९०, पत्र संख्या- ३५, ताड़पत्र, लिपि- नेवारी (भुजिमोल) अपूर्ण।
- (ख) हेरुकाभिधानम्— ओरियण्टल इंस्टीच्यूट बड़ौदा, संख्या १३२८५, पत्र संख्या- २६, देवनागरी, अपूर्ण।
- (ग) केसरपुस्तकालय काठमांडू, संख्या सी ४१०, देवनागरी, पत्र सं० २५।
- (भो०) भोट संस्करण तो० ३६८

ऐसे ही विवृति की भी निम्नलिखित मातृकाएँ प्राप्त हुई—

- (क) चक्रसंवरविवृति— इंस्टीच्यूट फॉर एडवांस स्टडीज ऑफ वर्ल्ड रिलीजन्स, न्यूयार्क। संख्या M B B -I-33, (१९७१), पत्र संख्या- १५३, ताड़-पत्र, लिपि- नेवारी (भुजिमोल)।
- (ख) चक्रसंवरविवृति— इंस्टीच्यूट फॉर एडवांस स्टडीज ऑफ वर्ल्ड रिलीजन्स, न्यूयार्क। संख्या M B B -I-70, पत्र संख्या- १३९, नेपाली कागज।
- (ग) चक्रसंवरविवृति— राष्ट्रीय अभिलेखालय काठमांडू, लगत संख्या ३/७२०, पत्र संख्या १५३, नेपाली कागज।
- (भो०) भोट संस्करण तो० १४०३

उपर्युक्त ६ मातृकाओं (मूल एवं टीका) और भोट पाठ के आधार पर इसका सम्पादन किया है उनमें भी मूल और व्याख्या में क. मातृकाओं को आधार माना है। ख. ग. प्रतियां उसी की प्रतिलिपि थीं अतः अस्पष्ट या सन्दिग्ध स्थलों पर ही उनसे सहायता ली है।

प्रस्तुत ग्रन्थ का भोट-अनुवाद भी सम्पादित कर प्रकाशित किया जा रहा है। इसमें कन्युर एवं तन्युर के निम्नलिखित संस्करण भोट अंश के सम्पादन में प्रयोग किये गये—

(क)- चक्रसंवरतन्त्र (मूल) में (कन्युर)- देगे, पेकिङ्ग, ल्हासा, तथा नरथङ्ग संस्करण।

(ख)- चक्रसंवरतन्त्र विवृति में (तन्युर)- देगे, पेकिङ्ग, चो-ने, तथा सेरडी संस्करण।

ऐसा प्रतीत होता है कि इस तन्त्र का प्राचीन काल में पर्याप्त प्रचार रहा इसलिए इसमें कई जगह पाठान्तर होना स्वाभाविक है। विवृतिकार ने जिस मातृका के आधार पर व्याख्या की है और जो मातृका हमें उपलब्ध हुई उनमें पर्याप्त पाठभेद मिलता है। स्वयं व्याख्याकार ने भी पाठान्तरों का निर्देश किया है। प्रस्तुत संस्करण में हमने व्याख्याकार के पाठ को ही प्रामाणिक मानकर शेष को टिप्पणी में रखा है। भोट पाठ की भी यही स्थिति है। इसका प्रथम भोटानुवाद भारतीय आचार्य पद्माकर और तिब्बती लोचावा रिन्छेन जङ्पो ने काश्मीर से प्राप्त मातृका के आधार पर किया तथा उसका संशोधन बाद में भारतीय आचार्य प्रज्ञाकीर्ति और तिब्बती लोचावा आचार्य मरपा ने मध्यभारतीय मातृका के आधार पर किया है और विवृति का भोटानुवाद पूर्वीभारत के आचार्य अतुल्यवज्र और लोचावा भिक्षु वरी रिन्छेन ड्रगस ने। हमने पूरे मूल के भोट-पाठ तथा विवृति-पाठ को कन्युर एवं तन्युर के विभिन्न संस्करणों से मिलान करके संगृहीत किया है। यहाँ भी टिप्पणी में इस का निर्देश किया गया है।

इस महनीय ग्रन्थ के सम्पादन पर पूज्यपाद परमपावन दलाईलामा जी ने जो शुभाशंसा एवं आशीर्वचन प्रदान किये हैं, उसके लिये हम कृतज्ञता पूर्वक उन्हें नमन करते हैं।

अन्त में जिन ग्रन्थों, ग्रन्थकारों और उन संस्थाओं का हम आभार व्यक्त करते हैं, जिनसे हमें पाण्डुलिपियाँ प्राप्त हुई तथा संस्थान के पूर्व निदेशक प्रो० एस० रिन्पोछे तथा वर्तमान निदेशक गेशे डवङ्ग समतेन जी के कृतज्ञ हैं जिनकी सतत प्रेरणा से दुर्लभ ग्रन्थों के सम्पादन में अनुभाग समर्थ हो रहा है। इस महान् ग्रन्थ के प्रतिलिपिकरण, सम्पादन, पाठमिलान, कम्प्यूटरीकरण तथा संशोधन में मेरे सहयोगी डॉ० बनारसी लाल, ठिनलेराम शाशनी तथा भोटपाठ की समग्र प्रक्रिया

की निर्वाहक डॉ० छेरिङ्ग डोलकर का साधुवाद करता हुआ मैं इनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ जिन्होंने अथक परिश्रम में सहयोग दिया।

कई समस्याओं से जूझते हुए इस ग्रन्थ के सम्पादन में मेरी अल्पज्ञता एवं अनवधानता वश अनेक त्रुटियाँ होना असंभव नहीं है अतः सुधी विद्वज्जनों से क्षमा याचना करता हुआ निवेदन करता हूँ कि त्रुटियों से मुझे अवगत करा कर अनुगृहीत करें ताकि अगले संस्करण में उन्हें सुधारा जा सके।

भगवान् तथागत को शतशः प्रणाम।

विद्वदनुचर

जनार्दन पाण्डेय



སྟོན་སྒྲུང་།

༡༡། ཁདག་ཅག་གི་སྟོན་པ་བཅོམ་ལྡན་འདས་ནི་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་ཉེ་དྲིང་
 མེད་པར་ཆ་མཉམ་དུ་གཟིགས་ཤིང་སེམས་ཅན་གདུལ་བའི་ཐབས་ལ་ཆེས་མཁས་པས་
 ཁམས་དང་། དབང་པོ་དང་། མོས་པ་མི་འབྲ་བ་སྣ་ཆོགས་པའི་སེམས་ཅན་རྣམས་གདུལ་
 བའི་དོན་དུ་ཐབས་མི་འབྲ་བ་སྣ་ཆོགས་སྟོན་པའི་ཆོས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་རིམ་པར་བསྐྱོར།
 དེའང་བསྟུན་ཉན་ཐོས་ཀྱི་ཐེག་པ་དང་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་གཉིས་སུ་སྟུང་བ་ཡིན། ཐེག་པ་
 ཆེན་པོའི་ཆོས་ལའང་རྒྱ་པ་རོལ་དུ་བྱིན་པ་དང་འབྲས་བུ་གསང་སྟགས་དོན་ཐེག་པ་
 བཅས་གཉིས་ཡོད། དེ་དག་གི་མཐར་མཐུག་གི་འཐོབ་བྱ་ནི་འབྲས་བུ་སངས་རྒྱས་ཀྱི་སྐུ་
 བཞི་ཡིན་པ་ལ་བྱད་པར་མེད་ཀྱང་། ཐབས་ལམ་བུལ་བ་དང་སྟུར་བའི་བྱད་པར་ཡོད།
 དེ་ཡང་དབང་པོ་རྣམས་པོའི་དབང་དུ་བྱས་པས་གསང་སྟགས་ཀྱི་ཐེག་པ་ནི་མཆོག་དང་
 བྱད་པར་འཕགས་པ་གསུངས་ཏེ། དྲེང་གཉིས་མེད་རྣམ་རྒྱལ་(ཉོ་རྟུ་ཀྱ་ ཡང་ ༡༧༢
 རྒྱུ། “ཆ” ༡༥༦ན) ལས།

དོན་གཅིག་ན་ཡང་མ་སྟོངས་དང་།

ཐབས་མང་དཀའ་བ་མེད་པ་དང་།

དབང་པོ་རྣམས་པོའི་དབང་བྱས་པའི།

སྟགས་ཀྱི་བསྟན་བཅོས་བྱད་པར་འཕགས། ཞེས་གསུངས་སོ།

འོ་ན་གསང་སྟགས་ཀྱི་ཐེག་པ་ལའང་བྱ་རྒྱུ། སྟོང་རྒྱུ། རྣལ་འབྱོར་རྒྱུ་དང་།
 རྣལ་འབྱོར་སྒྲ་མེད་ཀྱི་རྒྱུ་བཅས་བཞིར་བསྟན་པ་ལ་དགོས་པ་ཅི་ཡོད་ཅེ་ན། དེ་ཡང་
 དཔལ་ནམ་མཁའ་དང་མཉམ་པའི་རྒྱུ་(ཉོ་རྟུ་ཀྱ་ ཡང་ ༢༤༦ རྒྱུ། “ག” ༢༠༧ན) ལས།

དམན་པ་རྣམས་ལ་བྱ་བའི་རྒྱུ།

བྱ་མིན་རྣལ་འབྱོར་དེ་ལྷག་ལཱོ།

སེམས་ཅན་མཆོག་ལ་རྣལ་འབྱོར་མཆོག།

སྤྲ་མེད་རྣལ་འབྱོར་དེ་ལྷག་ལཱོ།

ཞེས་གསུངས་པ་ལྟར་ཐེག་ཆེན་རིགས་ཅན་གྱི་གང་ཟག་དབང་པོ་མཆོག་དམན་ལ་
བསྟོས་ནས་དེ་ལྟར་བསྟན་པཱོ། །

རྒྱུ་བཞི་པོ་དེ་དག་སོ་སོ་ལའང་ནང་གསེས་དབྱེ་བ་ཡོད་དེ། །བྱ་རྒྱུ་ལ་དེ་བཞིན་
གསེགས་པ་དང་། རོ་རྩེ་དང་པར་བཅས་གསུམ་མོ། །སྤྱོད་རྒྱུ་ལ་རིགས་གསུམ་དང་།
རྩེས་སུ་མཐུན་པའི་རིགས་བཅས་དབྱེ་བ་བྱེ་ཚུལ་འགའ་ཤས་ཡོད། །རྣལ་འབྱོར་རྒྱུ་ལ་
དེ་བཞིན་གསེགས་པ་རིགས་ལྟ་དང་། དེ་དག་རེ་རེ་ལའང་བཞི་རེ་དང་། ཡང་དེ་དག་སོ་
སོ་ལའང་ལྟ་རེ་བྱེ་བས་རིགས་བརྒྱར་བྱེ་བཱོ། །རྣལ་འབྱོར་སྤྲ་མེད་ལའང་པ་རྒྱུ། བ་
རྒྱུ་དང་། གཉིས་མེད་ཀྱི་རྒྱུ་བཅས་གསུམ་དུ་དབྱེ་ཞིང་། དེ་དག་ལ་ཐབས་ཀྱི་རྒྱུ།
ཤེས་རབ་ཀྱི་རྒྱུ་དང་གཉིས་རྒྱུ་ཅེས་ཀྱང་བྱཱོ། །པ་རྒྱུ་སྟོན་པའི་གཞུང་གཙོ་བོ་ནི་
གསང་བ་འདུས་པ་དང་། གཤིན་རྩེ་གཤེད། མཆོན་བརྩོད་བཅས་ཡིན། བ་རྒྱུ་ལ་རིགས་
དུག་སྟེ་ཉེར་ཀ་དང་། རྣམ་པར་སྣང་མཛད། རོ་རྩེ་ནི་མ། པར་གར་དབང་། ཏ་མཆོག་དང་
རོ་རྩེ་འཛིན་པཱོ། །དེ་དག་སོ་སོར་སྟོན་པའི་གཞུང་རང་མཆོན་པ་ཡོད་པ་ལས་གཙོ་བོ་ནི་
དཔལ་ཉེར་ཀའམ་འཁོར་ལོ་བདེ་མཆོག་ཡིན། གཉིས་མེད་ཀྱི་རྒྱུ་གཙོ་བོར་སྟོན་པའི་
གཞུང་ནི་དཔལ་དུས་ཀྱི་འཁོར་ལོའི་རྒྱུ་ཡིན།

དཔལ་འཁོར་ལོ་བདེ་མཆོག་

མ་རྒྱུད་ཉེ་རྒྱུག་འི་རིགས་ལ་ནང་གསེས་རྒྱུད་གཞུང་ལྔ་ཡོད་པ་ནི་ཀྱི་དོ་རྩེ་དང་།
 དཔལ་འཁོར་ལོ་བདེ་མཆོག་ སངས་རྒྱས་ཐོད་པ། སྤྱི་འབྲུལ་ཆེན་མོ་དང་ ཡུ་མེ་ཡི་རྒྱུད་
 བཅས་ཡིན། མ་རྒྱུད་ཀྱི་གཙོ་བོ་ཙ་རྒྱུད་དཔལ་འཁོར་ལོ་བདེ་མཆོག་ཡིན། བདེ་མཆོག་
 འདི་ལའང་རྒྱས་པ་ལ་སྟོག་འབྲུམ་ཕྲག་གསུམ་པ་དང་། འབྲིང་བ་ལ་སྟོག་འབྲུམ་པ་
 དང་། བསྐྱུས་པ་ཉུང་ཏུ་འི་རྒྱུད་སྟོག་བདུན་བརྒྱུ་པ་ལེ་ཏུ་ལྔ་བཅུ་དང་གཅིག་ཅན་བཅས་
 གསུམ་ལས། ད་ལྟ་ལོགས་སྤྱར་སྤྱད་དུ་ཐོབ་པ་ནི་ཐ་མ་དེ་ལས་མེད། བདེ་མཆོག་ཙ་
 རྒྱུད་ཉུང་ཏུ་བསྐྱུས་པ་ཉིད་ལ་བཤད་པའི་རྒྱུད་ལྔ་སྟེ། དོ་རྩེ་མཁའ་འགྲོ་མ་དང་། རྣལ་
 འབྱོར་མ་ཀུན་དུ་སྦྱོད་པ་དང་། སྡོམ་པ་འབྲུང་བའི་རྒྱུད་དང་། མངོན་བརྗོད་སྤྱི་མ་དང་།
 སུལ་བཅས་ཡིན།

རྒྱུད་གཞུང་འདིའི་མཆོན་ལ་དཔལ་འཁོར་ལོ་བདེ་མཆོག་ཅེས་འདོགས་པའི་རྒྱ་མཆོན་ནི།
 སྟོབ་དཔོན་གྲུབ་གྲུབ་མཛད་པའི་དཔལ་འཁོར་ལོ་སྡོམ་པའི་དཀའ་འབྲེལ་ལས། “དཔལ་
 ནི་བསོད་ནམས་དང་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཆོགས་སོ། །འཁོར་ལོ་ནི་ཆོས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་འོ། །དཔལ་
 དང་ལྡན་པའི་འཁོར་ལོ་ནི་དཔལ་འཁོར་ལོ་སྟེ།” ཞེས་གསུངས་པ་ལྟར་འཁོར་ལོ་ནི་ཆོས་
 ཀྱི་འཁོར་ལོ་འོ། །དཔལ་ནི་དོ་རྩེ་ཕག་མོ་དང་། དེ་དང་ལྡན་པ་ནི་དཔལ་འཁོར་ལོ་སྡོམ་པ་
 ཡིན་ནོ། །དེས་སེམས་ཅན་གྱི་ཡིད་ཉོན་མོངས་པ་དག་ལས་སྤྱང་བར་བྱེད་པའོ། །དེ་ལྟ་
 བུའི་དཔལ་འཁོར་ལོ་སྡོམ་པའི་ཙ་རྒྱུད་འདི་ཉེ་རྒྱུགས་སྟོན་པར་མཛད་པས་ན་གཞུང་གི་
 མཆོན་ལའང་དཔལ་འཁོར་ལོ་སྡོམ་པ་ཞེས་ཐོགས་པ་ཡིན། དེ་བས་ན་ལེ་ཏུ་སོ་སོའི་

དཔལ་འཁོར་ལོ་བདེ་མཆོག་གི་ལེའུ་སོ་སའི་བསྐྱུས་དོན།

ལེའུ་ལྷ་བཙུ་ཙ་གཅིག་དང་ལྷན་པ་དེ་དག་གི་དོན་མདོར་བསྐྱུ་ན་བསྐྱེད་རིམ་དང་
 རྫོགས་རིམ་གཉིས་སམ་ཡང་ན་ལམ་དང་འབྲས་བུའི་གསང་བ་གཉིས་ཀྱི་དོན་བསྐྱུས་
 ནས་བསྟན། དེ་ཡང་ལེའུ་དང་པོས་དེ་དག་ཐམས་ཅད་ཀྱི་དོན་བསྐྱུས་ཏེ་བསྟན་ནས་ལེའུ་
 གཉིས་པ་ནས་ལྷ་བཙུའི་བར་དེ་དག་གི་དོན་རྒྱས་པར་བསྟན། ཐ་མས་ལེའུ་ལྷ་མ་རྣམས་
 ཀྱི་དོན་མདོ་དང་རྒྱས་པར་བསྟན་པའི་སྟོན་ནས་ལེའུ་མཚུག་བསྐྱུས་པ་བསྟན།

ལེའུ་དང་པོས་རྒྱུད་དོན་གླེང་བ། གསང་བའི་དོན་དང་། དྲང་བའི་དོན་བསྐྱེད་རྫོགས་
 ལམ་གྱི་རིམ་པ་གཉིས་དཔེ་ལ་སྦྱར་ནས་རིམ་བཞིན་བསྟན། ལམ་གྱི་རིམ་པ་གཉིས་
 ཉམས་སུ་སྒྲངས་པ་ལས་འབྲས་བུ་ལ་སྦྱར་མོང་དང་མཆོག་གི་དངོས་གྲུབ་གཉིས་བསྟན་
 ནས་ཉེར་ཀའི་འགྲེལ་བཤད། བདེ་མཆོག་ཙ་རྒྱུད་འདིའི་བརྗོད་བྱའི་གྲངས། རིགས་ལྷན་
 ཀྱི་མཆོད་པ་རྣམ་པ་བཞི་དང་དེའི་ཕན་ཡོན། དམ་ཆོག་བསྐྱེད་ཚུལ་དང་ཉམས་པའི་ཉེས་
 དམིགས་བསྟན། མཐར་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་བའི་གནས་རྣམས་བསྟན།

ལེའུ་གཉིས་པས་སྟོན་དུ་འགྲོ་བ་དཀྱིལ་འཁོར་བཞེངས་ཚུལ། དེར་ལྷ་རྣམས་འགོད་
 ཚུལ་དང་མཆོད་པའི་ཚུལ་བསྟན།

ལེའུ་གསུམ་པས་སྟོབ་མ་དཀྱིལ་འཁོར་དུ་འཇུག་ཚུལ། དབང་བསྐྱར་བ་དང་དེའི་
 ཕན་ཡོན་བཅས་བསྟན།

ལེའུ་བཞི་པས་དབང་བསྐྱར་བའི་དོན་གྱི་ངོ་བོ་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་དེ། རྣལ་འབྱོར་ཡབ་ཡུམ་
 ཉི་ཤུ་ཙ་བཞི་དང་གཉིས་སུ་མེད་པའི་རྣལ་འབྱོར་མ་བཙུ་གཉིས་ཀྱི་མཆོད་དང་རང་

བཞིན་དགོད་ཚུལ་བསྟན་པའི་སྒོ་ནས་བསྐྱེད་རིམ་བསྟན། དེ་ལྟར་ལེའུ་གཉིས་པ་ནས་བཞི་
པ་བར་གྱིས་ལམ་གྱི་གསང་བར་འཇུག་པ་བསྐྱེད་པའི་རིམ་པ་བསྟན།

ལེའུ་ལྷ་པས་དཔལ་ཉེར་ཀའི་ཙ་བའི་སྒྲགས་བརྟུ་ཚུལ་གྱི་ཆོ་ག་བསྟན།

ལེའུ་བརྟུ་པས་ཡབ་གྱི་སྟོང་པོ་དང་ཉེ་བའི་སྟོང་པོའི་མིང་། དེའི་གོ་ཆ་བརྟུ་བ་བསྟན།

ལེའུ་བརྟུན་པས་ཙ་བའི་སྒྲགས་ཡིག་གི་དབྱངས་ཡིག་བརྟུ་ཚུལ་བསྟན།

ལེའུ་བརྟུན་པས་ལྷགས་བསྐྱོག་གི་སྒོ་ནས་ཡུམ་གྱི་སྟོང་པོའི་སྒྲགས་བརྟུ་ཚུལ་དང་

དེའི་གོ་ཆ་བསྟན་པས་ལེའུ་ལྷ་པ་ནས་བརྟུན་པ་བར་གྱིས་འབྲས་བུའི་གསང་བ་ལ་

འཇུག་པར་བྱེད་པ་སྒྲགས་བརྟུ་ཚུལ་བསྟན།

ལེའུ་དགུ་པས་ཙ་བའི་སྒྲགས་གྱི་སྒོ་ནས་སྟན་མོང་གི་དངོས་གྲུབ་སྐྱབ་པ་བསྟན།

ལེའུ་བརྟུ་པས་ཉེར་ཀའི་ནལ་འབྱོར་ལས་གསང་བ་མཆོག་གི་དངོས་གྲུབ་འབྲས་བུ་སྐྱ་
གསུམ་དང་སྟོང་པོའི་སྒོ་ནས་སྐྱབ་ཚུལ་བསྟན།

ལེའུ་བརྟུ་གཅིག་པས་སྟོང་པོའི་སྒྲགས་གྱི་སྐྱབ་པ་པོས་སྐྱེ་བ་བརྟུན་གྱི་བཏག་པ་

མདོར་བསྟན་ནས་སྟན་སྟོར་ཇི་ལྟར་བྱངས་པ་དང་དེ་ལས་འབྲས་བུའི་གསང་བའི་དངོས་
གྲུབ་ཐོབ་པའི་སྟོར་བསྟན།

ལེའུ་བརྟུ་གཉིས་པས་ཡབ་གྱི་ཉེ་བའི་སྟོང་པོའི་ཆོ་ག་དང་དེའི་འབྲས་བུའི་གསང་

བའི་དངོས་གྲུབ་བསྟན།

ལེའུ་བརྟུ་གསུམ་པས་དཔལ་པོ་དང་དཔལ་མོའི་གོ་ཆའི་བསྐྱས་བརྗོད་དང་སྟན་སྟོར་

གྱི་ཆོ་ག་དང་འབྲས་བུའི་གསང་བའི་དངོས་གྲུབ་བསྟན།

ལེའུ་བཅུ་བཞི་པས་འབྲས་བུའི་གསང་བའི་དངོས་གྲུབ་བསྟན་པ་ལས་བོང་བུའི་
ནལ་འབྱོར་གྱི་སྒོ་ནས་སྦྱོར་བ་བདུན་པའི་སྦྱབ་པ་བསྟན། དེ་ལྟར་ལེའུ་དགུ་པ་ནས་བཅུ་བཞི་
པ་བར་གྱིས་འབྲས་བུའི་གསང་བའི་དངོས་གྲུབ་བསྟན།

ལེའུ་བཙོ་ལྷ་པས་ནལ་འབྱོར་མ་མཉེས་པར་འགྱུར་པ་ལས་འཇིག་རྟེན་དང་འཇིག་
རྟེན་ལས་འདས་པའི་དངོས་གྲུབ་སྦྱར་བར་སྦྱོལ་བ་ཡིན། དེ་ཡང་བདེ་ལ་རགས་ལས་
པས་འདིར་ཡི་གེའི་བདེ་ཁོ་ན་བསྟན་ཅིང་བདེ་ཐ་དད་པ་སོ་སོ་ལས་ནལ་འབྱོར་མའི་
རིགས་ཐ་དད་པའི་དབྱེ་བ་བསྟན།

ལེའུ་བཅུ་དྲུག་པས་མཚན་པར་བྱ་བའི་ནལ་འབྱོར་མ་རིགས་དྲུག་གི་དབྱེ་བ་མཚན་
ཉིད་དང་དེ་བཞག་པའི་ཚོ་ག་བསྟན།

ལེའུ་བཅུ་བདུན་པས་ལྷའི་བྱེ་བྲག་གང་འདོད་པ་དེ་དག་ལ་མཚན་པར་བྱ་བའི་དོན་
དུ་མཁའ་འགྲོ་མ་སུམ་ཅུ་བདུན། འཇིག་རྟེན་དང་འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པའི་མིང་གི་
རྣམ་གྲངས་རྣམས་བསྟན། རིཾ་བདུན་པོ་རེ་རེའི་རྟ་སམ་མཚན་ཉིད་རྒྱས་པར་བཤད།

ལེའུ་བཙོ་བརྒྱད་པས་མཚན་པར་བྱ་བའི་མཁའ་འགྲོ་མའི་རིགས་ཀྱི་ནང་ཚན་གྱི་
དབྱེ་བ་དང་མཚན་ཉིད་བསྟན།

ལེའུ་བཅུ་དགུ་པས་ལྷ་མའི་རིགས་ཀྱི་ནང་ཚན་གྱི་དབྱེ་བ་དང་མཚན་ཉིད་བསྟན།

ལེའུ་ཉི་ཤུ་པས་བདག་ལ་བྱིན་གྱིས་སྒྲོབ་པར་ཤེས་པས་རྗེས་སུ་འཇིན་པར་བྱ་བའི་
ཐུར་ལག་པའི་བདེ་དང་བདེའི་ལན་གཙོ་བོར་བྱས་པ་བསྟན།

ལེའུ་ཉེར་གཅིག་པས་ནལ་འབྱོར་མ་དང་སྦྱབ་པོས་ལུས་ཀྱི་ཡན་ལག་གང་རུང་སྟོན་
པའི་སྒོ་ནས་བདེ་དང་བདེའི་ལན་ཉེ་ལྟ་བུའི་སྤྱག་རྒྱ་བསྟན།

ལེའུ་ཉེར་བཞི་ས་པས་སོར་སོས་བད་བྱེད་པ་སྟེ་ཡན་ལག་གི་བྱུག་གྱུ་བསྟན།
 ལེའུ་ཉེར་བཅུ་མ་པས་མཁའ་འགྲོ་མའི་རིགས་ཀྱི་བྱེ་བྱུག་གིས་ཡན་ལག་གི་མཚན་
 མའི་བྱུག་གྱུ་བསྟན་པ་ལས་སྤྱར་བར་མཉེས་ཚུལ་བསྟན།
 ལེའུ་ཉེར་བཞི་པས་མཚོན་བྱའི་རིགས་ལྟན་མའི་རིགས་བཞི་པོས་ངག་གི་སྒྲ་སྒྲ་
 ཚོགས་པའི་སྟོན་ས་བད་དང་བྱུག་གྱུའི་མིང་རྣམས་བསྟན། དེ་ལྟར་ལེའུ་བཙོ་ལྷ་ནས་ཉེར་
 བཞིའི་བར་གྱིས་སྒྱུ་བ་བྱེད་ཡན་ལག་ལས་མཚོན་བྱའི་རིགས་ལྟན་བཟླ་བར་བྱ་བ་བསྟན་
 པ་ཡིན།

ལེའུ་ཉེར་ལྷ་པས་འབྲས་བྱའི་གསང་བར་འཇུག་པར་བྱེད་པ་ཙ་བའི་སྒྲགས་གསལ་
 བར་བཀོད་ནས་རྟོག་པར་བསྟུ་ཚུལ་བསྟན།

ལེའུ་ཉེར་བྱུག་པས་དོན་རྫོགས་པར་བྱ་བའི་བྱིར་ཕྱར་བསྟན་པའི་པོ་ཉ་པོ་རྣམས་
 མཉེས་པར་བྱེད་པ་བསྐྱར་བའི་དམ་ཚིག་རྣམ་པ་བརྒྱུད་དང་སྟོབ་མ་བཟླ་ཚུལ་བསྟན།

ལེའུ་ཉེར་བདུན་པས་ཐོབ་པའི་བྱུག་གྱུ་མཉེས་པ་དེའི་བཀའ་སྟོན་པ་བྱ་སྟེ་རྣལ་
 འབྱོར་པ་ཉིད་ཅས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པའི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་དོན་རྫོགས་པར་བྱས་པས་སྟོས་
 བཅས་ཀྱི་སྟོན་པ་བསྟན།

ལེའུ་ཉེར་བརྒྱད་པས་སྟོས་བཅས་ཀྱི་སྟོན་པ་སྟེ་སྒྲུབ་པ་པོའི་གང་ཟག་དེ་ཉིད་ཀྱི་
 མཚོན་པར་བྱ་བའི་མཚན་ཉིད་ལ་བཟླ་བ་བསྟན།

ལེའུ་ཉེར་དགུ་པས་ལྟན་ཅིག་སྟེས་པའི་ཡེ་ཤེས་སྟེ་བའི་པོ་ཉའི་མཚན་ཉིད་དང་ཙ་
 བའི་སྒྲགས་ཀྱི་བཟླས་པ་དང་། བྱུག་གྱུ་ཉག་ཏུ་བསྟོམ་པ་ལས་མཉེས་ན་རྟོན་དམན་པས་

ཀྱང་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་པ་དང་དེ་ལས་ཐོག་སྡེ་སྡོད་པས་ནི་སྡེ་གནས་དམན་པར་སྡེ་བ་
བསྟན།

ལེའུ་སྐུམ་ཅུ་པས་འབྲས་བུའི་གསང་བར་འཕྱག་པར་བྱེད་པ་ནི་ལ་བཞིའི་གསང་
ཐུགས་བདུ་ཚུལ་བསྟན།

ལེའུ་སོ་གཅིག་པས་ཐུར་བསྟན་པའི་ལེའུ་ཉེར་བདུན་དང་ཉེར་བརྒྱད་ལས་འབྲོས་ཏེ་
འདིར་སྡོད་པ་ཐམས་ཅད་ལ་མཁོ་བ་བཟའ་བའི་དམ་ཆོག་ལ། ལག་པའི་མཆོད་པ་དང་
རྫས་ཀྱི་བྱེད་པར་གྱི་མིང་དང་བཟས་ཀྱི་ཆོ་ག་དབྱེ་བས་གསུམ་དུ་མདོར་བསྡུས་ནས་
བསྟན།

ལེའུ་སོ་གཉིས་པས་མཆོད་པའི་སྐབ་ཐབས་ལ་མཁོ་བའི་རྫས་རྣམས་ཀྱི་སྟོར་རྒྱས་
པར་བསྟན་ནས་ལམ་གསང་བར་འཕྱག་པ་བསྟེད་པའི་རིམ་པ་བསྟན།

ལེའུ་སོ་གསུམ་པས་གསང་བ་དང་བསྟན་བཀྱར་གྱི་མཆོད་པ་དང་དེར་དངོས་སུ་
བསྟན་པ་དང་མ་བསྟན་པའི་རྫས་ཀྱི་ཕན་ཡོན་དངོས་གྲུབ་རྣམས་པ་བརྒྱ་གཉིས་དང་ཉེས་
དམིགས་བསྟན།

ལེའུ་སོ་བཞི་པས་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་སྟེ་དུམ་སྟེས་མ་ལ་སོགས་གཉིས་སུ་མེད་པའི་པོ་
ཉ་མའི་སྦྱིན་སྟེག་དང་ལས་ཀྱི་ཆོ་ག་བསྟན།

ལེའུ་སོ་ལྔ་པས་ཆོས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་སྟེ་གཉིས་སུ་མེད་པའི་ལས་དང་དུས་མ་ཡིན་པ་
འཆི་བ་བསྟེད་པའི་ཆོ་ག་བསྟན།

ལེའུ་སོ་དྲུག་པས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱི་མཆོད་པ་དང་ལས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱའི་ཆོ་ག་བསྟན།

ལེའུ་སོ་བདུན་པས་ཙ་བའི་སྒྲགས་དང་རིག་པའི་བྱལ་པོ་དང་མཁའ་འགྲོ་མའི་
སྒྲགས་གསུམ་པོ་གཅིག་ཏུ་བྱས་ནས་པོ་ཉ་གནོན་པ་སྟེ་ལས་ཀྱི་ཕྱག་ཏུ་དབང་དུ་བྱ་བ་
བསྟན། དེ་ལྟར་ལེའུ་སོ་བཞི་ནས་སོ་བདུན་བར་གྱིས་བྱ་ཆེན་ཆོས་ཀྱི་ཕྱག་ཏུ་སོགས་རིམ་
བཞིན་ལས་ཀྱི་གསང་བ་བསྟན།

ལེའུ་སོ་བཅུད་པས་དོན་རྫོགས་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་སྤར་བསྟན་པའི་བད་དང་སྒྲགས་
རྣམས་བག་མེད་པས་གཞན་གྱི་མདུན་དུ་འདོན་མི་རུང་བ་དང་རྣལ་འབྱོར་མའི་གནས་
རྣམས་ཀྱི་སྒོ་ནས་སྒྲོས་མེད་དང་གིན་དུ་སྒྲོས་མེད་ཀྱི་སྒྲོད་པ་བྱས་པར་བསྟན།

ལེའུ་སོ་དགུ་པས་བལྟ་བ་དང་ཉ་ཉར་སོགས་དགོད་པ་བཅུད་ཀྱི་སྒོ་ནས་དངོས་གྲུབ་
ཀྱི་མཆན་མ་བརྟག་པ་བསྟན།

ལེའུ་བཞི་བཅུ་པས་རིགས་ལྔའི་སྒྲུབ་བྱ་དགུག་པ་དང་དབང་དུ་བྱེད་པ་ཆོ་ག་དགུས་
བསྟན་པ་དང་ཕྱག་ཏུ་ཆེན་པོའི་སྒྲུབ་ཐབས་བརྗོད་པའི་ཆོ་ག་བསྟན།

ལེའུ་ཞེ་གཅིག་པས་སུམ་ལྟེ་ཡིས་བསྒྲུབས་པའི་མཆན་མ་དང་སུམ་ཙ་ཙ་བདུན་
རྣལ་འབྱོར་མ་དུག་དང་ཉེར་ཀ་ཡིས་མཆན་པའི་པག་པོ་དང་བདུན་གྱིས་བསྒྲུས་པའི་སྒོ་
ནས་དེ་དག་གི་བསྒོམ་ཚུལ་དང་དཀྱིལ་འཁོར་འགོད་ཚུལ་བསྟན།

ལེའུ་ཞེ་གཉིས་པས་བྱང་སེམས་སྟེལ་བྱིར་ལུས་བྱངས་བསྐྱེད་དགོས་པ་བསྟན། དེ་
ལྟར་སོ་དགུ་ནས་ཞེ་གཉིས་བར་གྱིས་འབྲས་བྱའི་གསང་བ་བཤད་པའི་དངོས་གྲུབ་ཀྱི་
མཆན་མ་བརྟག་པ་བསྟན།

ལེའུ་ཞེ་གསུམ་པས་འབྲས་བྱའི་གསང་བ་ཐུན་མོང་གི་དངོས་གྲུབ་སྟེ་འཕོ་ཐབས་
དཀའ་ལ་རྣམ་སྟོན་ཆེ་བ་ཉེ་བའི་སྤྱིང་པོའི་ལས་སྒྲུབ་པ་བསྟན།

ལེའུ་ཞེ་བཞི་པས་ཡུམ་གྱི་གོ་ཆ་དང་ཡབ་གྱི་ཉེ་སྤྱིང་གི་སྒོ་ནས་སྤྱན་མོང་བའི་དངོས་
གྲུབ་ཐམས་ཅད་སྐྱབ་པ་བསྟན།

ལེའུ་ཞེ་ལྔ་པས་ནལ་འབྱོར་མ་དུག་དང་ཆོག་གི་དངོས་གྲུབ་བསྟན་པའི་སྒོ་ནས་
འབྲས་བུའི་གསང་བ་སྤྱན་མོང་བའི་དངོས་གྲུབ་བསྟན།

ལེའུ་ཞེ་དུག་པས་ཉ་ལྔའི་འཁོར་ལོ་དང་བཟླས་བཟོད་དང་སྤྱིན་སྤྲེག་དང་གཏོར་མ་
ལ་སོགས་པའི་ཆོག་དང་མངོན་སྲོད་ལས་གྱི་སྒྲོར་བས་འཆི་བ་འབྱུར་བ་སྤྱན་མོང་གི་
དངོས་གྲུབ་བསྟན།

ལེའུ་ཞེ་བདུན་པས་འབྲས་བུའི་གསང་བའི་དངོས་གྲུབ་སྟེ་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་
གྱི་ཡུམ་གྱི་ཉེ་བའི་སྤྱིང་པོའི་ལས་ཆོགས་བསྟན།

ལེའུ་ཞེ་བརྒྱད་པས་ཡུམ་གྱི་སྤྱིང་པོ་སྐྱབ་པ་དང་སྤྲེགས་མཆོག་འདི་བཟླགས་པའི་
པན་ཡོན་བསྟན། དེ་ལྟར་ལེའུ་ཞེ་གསུམ་ནས་ཞེ་བརྒྱད་པ་བར་གྱིས་འབྲས་བུའི་གསང་
བའི་དངོས་གྲུབ་བསྟན།

ལེའུ་ཞེ་དག་པས་ཡུམ་གྱི་ཉེ་བའི་སྤྱིང་པོ་སྐྱབ་པ་དང་དེའི་པན་ཡོན་བསྐྱོམ་ལ་སྟོས་
པར་བསྟན་པ་སྟེ་འདིར་སྤྲེག་ལེའུ་བཅུ་བཞི་པའི་ནང་བསྟན་པའི་འབྲས་བུའི་གསང་བའི་
དངོས་གྲུབ་གྱི་བརྟག་ཐབས་རྒྱས་པར་བསྟན།

ལེའུ་ལྔ་བཅུ་པས་དབང་གི་སྤྱིན་སྤྲེག་དང་འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པའི་འབྲས་བུའི་
གསང་བ་མཆོག་གི་དངོས་གྲུབ་དང་ཉེར་ཀའི་ཡན་ལག་ཏུ་བྱུར་པ་སྤྱིན་སྤྲེག་གི་ཡུལ་
ནལ་འབྱོར་པའི་གནས་ནམས་བསྟན།

ལེའུ་ལྷ་བཅུ་ར་གཅིག་པས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་བཅུ་བཞི་ལྟོ་ནས་བསྐྱེད་པའི་རིམ་པས་
 ལམ་གྱི་གསང་བའི་སྤྱད་པ་དང་པན་ཡོན་གྱི་སྐོ་ནས་འབྲས་བུའི་གསང་བ་བསྐྱ་བ་དང་
 གཞན་ལས་བྱུང་པར་དུ་འཕགས་པ་རྒྱུད་ཀྱི་ཆེ་བ་དང་། ཆོས་ཐམས་ཅད་བསམ་གྱིས་མི་
 བྱ་བ་ཅིང་རྟོགས་པར་དཀའ་བས་གང་ལ་ཡང་སྤྱད་པར་མི་བྱ་བ་དང་མདོ་རྒྱུད་ཀྱི་གོ་
 རིམ་བསྟན། དེ་ལྟར་མདོ་དང་རྒྱས་པའི་སྐོ་ནས་ལེའུ་གོང་མ་རྣམས་ཀྱི་དོན་བསྐྱས་ནས་
 བསྟན།

རྒྱུད་འདིར་ལེའུ་ལྷ་གོང་ལོག་རྣམས་དཀྱགས་ནས་འཆོལ་པར་བསྟན་པའི་དགོས་པ་
 བློ་བྱ་དཔོན་མེད་པར་སྤྲུགས་ཀྱི་བསྐྱེས་པ་དག་དགག་པའི་དོན་ཡིན་པས་རྒྱུད་ལ་རང་
 དགར་འཇུག་པར་མི་རིགས་པར་རྟོགས་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་ཡིན་པར་གསུངས།

སྤྱིར་བསྟན་འབྱུང་དཀའ་ཆག་ནང་བདེ་མཆོག་ཙ་རྒྱུད་འདི་ལ་འབྲེལ་བ་ཁག་བཅུ་
 གཉིས་ཙམ་མཇལ་རྒྱ་ཡོད་ཀྱང་ད་ཆ་ལེགས་སྤྱར་གྱི་མ་དཔེའི་ཐོག་དངོས་སུ་མཇལ་རྒྱ་
 ཡོད་པའི་རྒྱུད་འབྲེལ་བཞི་ཡོད་པ་ནི། སྤོབ་དཔོན་ལྷ་ཐབས་མཛད་པའི་དཔལ་འཁོར་ལོ་
 སྤྲོམ་པའི་དཀའ་འབྲེལ་སྤྱབ་པའི་ཐབས་ཀྱི་སྐྱེང་གཞི་དང་། སྤོབ་དཔོན་སྤྲུག་ན་དོ་རྩེས་
 མཛད་པའི་མདོན་པར་བཛོད་པ་འབྲུམ་པ་ལས་བྱུང་བ་ཉུང་དུ་ལྷུང་གྱི་བསྐྱས་པའི་དོན་
 རྣམ་པར་བཤད་པ། སྤོབ་དཔོན་རྒྱལ་བ་བཟང་པོས་མཛད་པའི་དཔལ་འཁོར་ལོ་སྤྲོམ་
 པའི་ཙ་བའི་རྒྱུད་ཀྱི་དཀའ་འབྲེལ་དང་། སྤོབ་དཔོན་སྐབ་སྐད་མཛད་པའི་དཔལ་འཁོར་
 ལོ་སྤྲོམ་པའི་དཀའ་འབྲེལ་བཅས་ཡིན།

ད་ལྟ་ཙ་འབྲེལ་མཉམ་སྤྱར་དཔར་སྤྱན་ཞུས་པའི་ཐོད་འབྱུར་བདེ་མཆོག་ཙ་རྒྱུད་ནི་
 མེ་དགོ ལྟ་ས། ལྟར་ཐང་དང་པེ་ཀིང་གི་དཔར་མ་མི་འདྲ་བ་ཁག་བཞི་དང་ལེགས་སྤྱར་

གྱི་མ་དཔེ་ལའང་གང་ཐུབ་མཆོངས་བསྐྱར་བྱས། དེའི་འགྲེལ་པ་སློབ་དཔོན་ཐུབ་ཐུབ་ས་
 མཛད་པའི་དཔལ་འཁོར་ལོ་སྟོམ་པའི་དཀའ་འགྲེལ་དེ་ཡང་སྡེ་དགེ་ ཅོ་ནེ། པེ་གིང་དང་
 གཤེར་གྱིས་བཅས་དཔར་མ་མི་འདྲ་བ་ཁག་བཞི་དང་གཞན་ཡང་ལེགས་སྐྱར་གྱི་མ་དཔེ་
 བཅས་ལ་མཆོངས་བསྐྱར་བྱས་ནས་གང་ཐད་པར་སྤང་བ་རྣམས་གོང་དུ་བཞག་གཞན་
 རྣམས་འོག་མཆན་དུ་བཀོད་ཡོད། རྒྱུད་གཞུང་འདིའི་ནང་གསལ་བའི་གཟུངས་སྐབས་
 རྣམས་དང་ལེགས་སྐྱར་གྱི་སྐད་དོད་དུ་འཁོད་པའི་ཆོག་པལ་མོ་ཆེ་ལེགས་སྐྱར་གྱི་མ་
 དཔེར་ཇི་ལྟར་གསལ་བ་ལྟར་བཞག་པ་ ཅུམ་ལས་མཐའ་ཅིག་དུ་དེ་དག་འོས་མཆོམས་
 དང་དག་པ་ཇི་ཡིན་བཟྃ་ད་ཐབས་བྲལ།

ལེགས་སྐྱར་གྱི་བདེ་མཆོག་ཙ་རྒྱུད་དང་དེའི་འགྲེལ་པར་གསལ་བའི་ཙ་ཆོགས་
 ལའང་བྱད་པར་ཅུང་ཟད་སྤང་བ་ལྟར་བོད་འགྱུར་ལའང་དེ་མཆོངས་སྤང་བས་བྱད་པར་
 ཆེ་རིགས་ལ་དག་ཞུས་ཐུན་བྱ་བྱས། དེ་བས་ན་ཙ་འགྲེལ་གྱི་ཙ་ཆོགས་ལའང་དེ་སྡེ་ནས་
 འཕགས་ཡུལ་དུ་བྱད་པར་ཅི་རིགས་ཡོད་པ་རྟོགས་ནུས། དེ་ལྟར་ཡིན་པའང་བདེ་མཆོག་
 ཙ་རྒྱུད་འདིའི་འགྱུར་བྱང་དུ་རྒྱ་གར་གྱི་པཱིཏ་དང་བོད་གྱི་ལོ་ལྔ་བས་གཞུང་བསྐྱར་
 སྐབས་རྒྱ་གར་ཁ་ཆེའི་དཔེ་དང་རྒྱ་གར་ཡུལ་དབྱས་གྱི་དཔེ་ལ་གཏུགས་ཏེ་བསྐྱར་ཞུས་
 མཛད་ཅེས་པ་ལས་ཀྱང་རྟོགས་པར་ནུས་སོ།

ཙ་རྒྱུད་གཞུང་འདི་ལྟ་བུ་ལ་མཆོན་ན་ལེགས་སྐྱར་མ་དཔེ་ཁག་གསུམ་ཐོབ་ཅིང་།
 དེ་དག་དུ་གཞུང་འདིའི་མཆན་ལ་འཁོར་ལོ་བདེ་མཆོག་གི་དོད་དུ་“ཉེར་ཀའི་ངས་པར་
 བཟྃ་པ་”ཞེས་གསལ་ཞིང་། ལེགས་སྐྱར་མ་དཔེ་ཁག་གཉིས་བརྟོད་ཤར་སྟོགས་སློབ་
 གཉེར་ཁང་ནས་ཐོབ་ཅིང་། དེ་གཉིས་ཀའི་ནང་གཞུང་ཆ་མ་ཆང་བ་ཤིང་ལའི་སྟེང་གི་

རེ་ཕྱེད་ཀྱི་ལྷ་མོ་ལྷ་མོ་གྲུག་པས་དང་ཅིག་ཤོས་དེ་ཕྱེད་ཀྱི་ལྷ་མོ་གྲུག་པས་ཐོག་ཡོད་
 པའི་མ་དཔེ་ཡིན། བལ་ཡུལ་རྒྱལ་ཡོངས་ལྷ་མོ་ཆ་ཁང་ནས་ཀྱང་དེ་ཕྱེད་ཀྱི་ལྷ་མོ་
 གྲུག་པས་ཐོག་ཡོད་པ་ཞིག་ཐོབ་པ་ལྷ་མོ་སྟོན་ཀྱང་བའི་མ་དཔེ་ལའང་མ་ཆང་བ་ཇི་སྟེད་
 ཅིག་སྟེད། དཔེར་ན་ཅ་ཆེན་ལྷ་མོ་ལ་མཆོན་ན་ལེའུ་བཙུང་གི་སྟོག་བཞི་པ་ནས་
 ལེའུ་བཙུང་གི་སྟོག་བཙུང་པ་བར་སྟོག་སོ་གཅིག་བོད་འགྱུར་དང་ལེགས་སྐྱར་དུ་
 ཐོབ་པའི་འགྲེལ་བར་གཏུགས་ཏེ་བསྐྱར་གསོ་བྱས། དེ་བཞིན་དུ་ཡང་ལེའུ་ཉི་ཤུ་ཅ་
 གཉིས་ཀྱི་སྟོག་བཞི་པ་ནས་ལེའུ་ཉེར་དགུའི་ཚྭ་གས་མཆོམས་བར་བཅས་ལེའུ་བཙུང་ཆ་
 ཆང་དང་། ཡང་ལེའུ་སོ་བཙུང་གི་སྟོག་བཙུང་བཞི་པ་ནས་ལེའུ་ཞེ་བཞིའི་ཚྭ་གས་མཆོམས་
 བར་བཅས་ལེའུ་དུག་ཆ་ཆང་དང་། ཡང་ལེའུ་ཞེ་དགུའི་སྟོག་བཙུང་པ་ནས་ལེའུ་ལྷ་བཙུང་
 ཐམ་པའི་སྟོག་བཙུང་ལྷ་མོ་བར་གྱི་སྟོག་ཉེར་གསུམ་བཅས་བོད་སྟོས་བཞིན་ལེགས་སྐྱར་དུ་
 བསྐྱར་གསོ་བྱས། ཚུལ་དེ་བཞིན་དུ་སྟོབ་དཔོན་ལྷ་བཙུངས་མཛད་པའི་དཀར་འགྲེལ་གྱི་
 བཙུམ་པར་དམ་བཅའི་གཞུང་ཆེན་མཐའ་མ་ཡན་ཆོད་ཀྱི་ཐོག་གྲངས་གསུམ་ཅམ་
 ལེགས་སྐྱར་དུ་བསྐྱར་གསོ་བྱས། གཞན་ཡང་གཞུང་དེ་ཉིད་ནང་སྐབས་འགར་བོད་སྟོན་
 དུ་ཡོད་ལ་ལེགས་སྐྱར་དུ་མ་གསལ་བ་ཇི་སྟེད་ཅིག་ཡོད་པ་དག་ཀྱང་བསྐྱར་གསོ་བྱེད་
 བཤུ་བྱས།

འགྲེལ་པའི་ཅ་བའི་མ་དཔེ་ཡང་ཁག་གསུམ་ཐོབ་ཅིང་དེ་དག་ནི་ཨ་རི་ནེའུ་ཡོ་ཀླ་
 འཛམ་གླིང་ཆོས་ལུགས་ཁག་གི་མཐོ་རིམ་སྟོབ་གཉེར་གྱི་གཙུག་ལག་ཁང་ནས་
 དེ་ཕྱེད་ཀྱི་དང་རེ་ཕྱེད་ཀྱི་ལྷ་མོ་གྲུག་པས་ནང་ཉིད་སྟོན་ཀྱང་། ཅིག་ཤོས་ནི་བལ་ཡུལ་རྒྱལ་
 ཡོངས་ལྷ་མོ་ཆ་ཁང་ནས་ཉིད་སྟོན་ཀྱང་།

བདེ་མཆོག་ཙ་རྒྱུད་འདིའི་འགྲེལ་པ་རྒྱ་གར་གྱི་མཁས་པ་ཁག་གིས་མཛད་
ཅིང་། བོད་སྐད་དུ་པཎ་བསྐྱར་ཞུས་པ་བཅུ་གཉིས་བསྟན་འགྲུར་ཁོངས་སུ་
བཞུགས་པ་གཤམ་གསལ།

- ༡ རྟོག་ཀུ་ཨང་ ༡༩༠༡ "བ" ༡༧༡-༧༤ནལ སྟོབ་དཔོན་ལམ་པས་མཛད་པའི་དཔལ་
འཁོར་ལོ་སྟོམ་པའི་དཀའ་འགྲེལ་སྟུབ་པའི་ཐབས་ཀྱི་སློང་གཞི།
- ༢ རྟོག་ཀུ་ཨང་ ༡༩༠༢ "བ" ༧༤༧༡-༡༩༡ན༢ སྟོབ་དཔོན་བྲག་ན་དོ་རྩེས་མཛད་པའི་
མཛོན་པར་བཛོད་པ་འབྱུང་པ་ལས་སྤྱང་བ་ཉུང་དུ་འཛིན་ཀྱང་གྱི་བསྐྱུས་པའི་དོན་ནམ་
པར་བཤད་པ།
- ༣ རྟོག་ཀུ་ཨང་ ༡༩༠༣ "བ" ༡༩༡ན༢-༢༩༩༧༡ སྟོབ་དཔོན་རྩལ་རྩལ་པས་མཛད་པའི་
དཔལ་འཁོར་ལོ་སྟོམ་པའི་དཀའ་འགྲེལ།
- ༤ སྟོབ་དཔོན་རྒྱལ་དཀའ་མི་རྩལ་སྟོབ་པས་མཛད་པའི་རིན་པོ་ཆེའི་ཆོགས་ཞེས་བྱ་བའི་
དཀའ་འགྲེལ།
- ༥ རྟོག་ཀུ་ཨང་ ༡༩༠༥ "མ" ༡༧༡-༩༡ན༡ སྟོབ་དཔོན་སྐལ་ལྷན་གྲགས་པས་མཛད་
པའི་དཔལ་འཁོར་ལོ་སྟོམ་པའི་དཀའ་འགྲེལ་དཔལ་བའི་ཡིད་དུ་འོང་བ།
- ༦ རྟོག་ཀུ་ཨང་ ༡༩༠༥ "མ" ༩༡ན༢-༩༩ན༣ སྟོབ་དཔོན་ལྟ་རྒྱལ་བ་བཟང་པོས་
མཛད་པའི་དཔལ་འཁོར་ལོ་སྟོམ་པའི་ཙ་བའི་རྒྱུད་ཀྱི་དཀའ་འགྲེལ།
- ༧ རྟོག་ཀུ་ཨང་ ༡༩༠༧ "མ" ༩༩ན༣-༡༥༩༧༡ སྟོབ་དཔོན་ལྷ་སྟེན་གྱིས་མཛད་པའི་
དཔལ་འཁོར་ལོ་སྟོམ་པའི་སྟུབ་ཐབས་གནས་ཐམས་ཅད་རྒྱ་ཆེར་འགྲེལ།

- ༤ ཉེ་ཏུ་ཀུ་ཡང་ ༡༩༠༤ “མ” ༡༥༩བཟ-༣༠༧ནམ སློབ་དཔོན་དཔལ་པོ་དོ་རྩེས་མཛད་
པའི་ཡོན་དན་མ་ལུས་པའི་གནས་ཞེས་བྱ་བའི་འབྲེལ་བ།
- ༥ ཉེ་ཏུ་ཀུ་ཡང་ ༡༩༠༥ “མ” ༣༠༧ནམ-༣༥༣ནམ སློབ་དཔོན་ཏཱ་ལའ་ཏཱ་ལྷི་ཏས་མཛད་
པའི་གཉིས་ཀའི་བཤད་ལྟར།
- ༦ ཉེ་ཏུ་ཀུ་ཡང་ ༡༩༡༠ “མ” ༣༥༣ནམ-༣༥༣ན ༣ སློབ་དཔོན་ཏཱ་ལའ་པའི་དོ་རྩེས་མཛད་
པའི་དཔལ་འཁོར་ལོ་སྟོམ་པའི་འབྲེལ་བ་དཔལ་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་མཁས་པ།
- ༧ ཉེ་ཏུ་ཀུ་ཡང་ ༡༩༡༢ “མ” ༣༥༣བཟ-༣༥༣ན ༧ སློབ་དཔོན་དཔལ་པོ་དོ་རྩེས་མཛད་
པའི་དཔལ་བདེ་མཆོག་གི་རྒྱ་ཆེར་བཤད་པའི་ཆོག་དོན་རབ་ཏུ་གསལ་བ།
- ༨ ཉེ་ཏུ་ཀུ་ཡང་ ༡༩༡༣ “ཙ” ༡བཟ-༡༡༥བཟ སློབ་དཔོན་ཨི་རྩུ་བྱུ་ཏིས་མཛད་པའི་
དཔལ་འཁོར་ལོ་སྟོམ་པའི་རྒྱ་ཆུང་གི་རྒྱལ་པོ་བདེ་མཆོག་བསྐྱུས་པ་ཞེས་བྱ་བའི་ནམ་
པར་བཤད་པ།

པོད་ཀྱི་མཁས་གྲུབ་ནམས་ཀྱིས་མཛད་པའི་བདེ་མཆོག་ཙ་རྒྱུད་ཀྱི་འབྲེལ་
བ་ཁག

ཀུན་མཁྱེན་པད་དཀར་གྱི་དཔལ་འཁོར་ལོ་སྟོམ་པའི་རྒྱུད་ཀྱི་ནམ་པར་བཤད་པ་
མཁའ་འགྲོ་དགའ་བརྒྱུད་སྒྲིལ་སྒྲིལ་པོ། པོད་“པ” ༥-༣༠༡ གནམ་འབྲུག་སེ་བ་བྱང་
ཆུབ་སྒྲིལ་དཔར་མ།

ཀུན་མཁྱེན་པད་དཀར་གྱི་བདེ་མཆོག་ཙ་བའི་རྒྱུད་ཀྱི་འབྲེལ་འཁོར་གྱི་བཛུད་བྱང་།
པོད་“པ” ༣༥༣-༣༥༥ གནམ་འབྲུག་སེ་བ་བྱང་ཆུབ་སྒྲིལ་དཔར་མ།

ཀུན་དགའ་སྒྲིང་པོའི་དཔལ་འཁོར་ལོ་བདེ་མཆོག་གི་ཙ་བའི་རྒྱུད་ཀྱི་རྒྱུ་ཕྱིན་གྱི་
སྒྲིང་བཞུགས་པོ་དང་། རྒྱུ་ཕྱིན་གྱི་སྒྲིང་བཞུགས་པོ་དང་། རྒྱུ་ཕྱིན་གྱི་སྒྲིང་བཞུགས་པོ་དང་།
ལོ་ ༡༩༩༧།

ཀུན་དགའ་སྒྲིང་པོའི་བདེ་མཆོག་གི་ཙ་བའི་རྒྱུད་ཀྱི་དཔལ་འཁོར་ལོ་བདེ་མཆོག་གི་
གཞུགས་པོ་དང་། རྒྱུ་ཕྱིན་གྱི་སྒྲིང་བཞུགས་པོ་དང་། རྒྱུ་ཕྱིན་གྱི་སྒྲིང་བཞུགས་པོ་དང་།
ལོ་ ༡༩༩༧།

ཀུན་དགའ་སྒྲིང་པོའི་བདེ་མཆོག་གི་ཙ་བའི་རྒྱུད་ཀྱི་བཞུགས་པོ་དང་། རྒྱུ་ཕྱིན་གྱི་སྒྲིང་བཞུགས་པོ་དང་།
ལོ་ ༡༩༩༧། རྒྱུ་ཕྱིན་གྱི་སྒྲིང་བཞུགས་པོ་དང་། རྒྱུ་ཕྱིན་གྱི་སྒྲིང་བཞུགས་པོ་དང་།
ལོ་ ༡༩༩༧།

སྒྲིང་བཞུགས་པོ་དང་། རྒྱུ་ཕྱིན་གྱི་སྒྲིང་བཞུགས་པོ་དང་། རྒྱུ་ཕྱིན་གྱི་སྒྲིང་བཞུགས་པོ་དང་།
ལོ་ ༡༩༩༧། Materials for a History of Tibetan literature,
Part-3, page-552, Lokesh Chandra, Published by International
Academy of Indian Culture, New Delhi, 1963.

དགའ་སྒྲིང་པོའི་བདེ་མཆོག་གི་ཙ་བའི་རྒྱུད་ཀྱི་དཔལ་འཁོར་ལོ་བདེ་མཆོག་གི་
ལོ་ ༡༩༩༧། Published by Zigar Drukpa Kargyud Institute,
Rivalsar, Manali, 1985.

ཙ་བའི་རྒྱུད་ཀྱི་སྒྲིང་བཞུགས་པོ་དང་། རྒྱུ་ཕྱིན་གྱི་སྒྲིང་བཞུགས་པོ་དང་། རྒྱུ་ཕྱིན་གྱི་སྒྲིང་བཞུགས་པོ་དང་།
ལོ་ ༡༩༩༧། རྒྱུ་ཕྱིན་གྱི་སྒྲིང་བཞུགས་པོ་དང་། རྒྱུ་ཕྱིན་གྱི་སྒྲིང་བཞུགས་པོ་དང་།
ལོ་ ༡༩༩༧།

ཙ་བའི་རྒྱུད་ཀྱི་སྒྲིང་བཞུགས་པོ་དང་། རྒྱུ་ཕྱིན་གྱི་སྒྲིང་བཞུགས་པོ་དང་། རྒྱུ་ཕྱིན་གྱི་སྒྲིང་བཞུགས་པོ་དང་།
ལོ་ ༡༩༩༧། རྒྱུ་ཕྱིན་གྱི་སྒྲིང་བཞུགས་པོ་དང་། རྒྱུ་ཕྱིན་གྱི་སྒྲིང་བཞུགས་པོ་དང་།
ལོ་ ༡༩༩༧།

ཅག་རི་ཆོས་ཀྱི་རྒྱལ་མཚན་གྱི་བདེ་མཆོག་རྒྱུད་རྒྱུ་ ཆོས་ཚན་ཨང་། ༡༢༡༩༤

Materials for a History of Tibetan literature, Part-3, page-552,
Lokesh Chandra, Published by IAIC, New Delhi, 1963.

རྩེ་ཙང་ཁ་པ་སློབ་ཐང་གྲགས་པའི་འཁོར་ལོ་སློམ་པ་བདེ་མཆོག་བསྐྱུས་རྒྱུད་ཀྱི་རྒྱ་
ཆེར་བཤད་པ་སྤྲུལ་དོན་ཀུན་གསལ། བོད་“ཉ” ༡ - ༢༣༤ ལྷ་ས་དཔར་མ།

གཉན་བྱལ་བྱང་གི་བདེ་མཆོག་ཙ་རྒྱུད་ཀྱི་རྒྱུ་ ཆོས་ཚན་ཨང་། ༡༢༡༩༥

Materials for a History of Tibetan literature, Part-3, page-552,
Lokesh Chandra, Published by IAIC, New Delhi, 1963.

བདེ་མཆོག་ཙ་རྒྱུད་ཀྱི་རྒྱུ་དང་བསྐྱུས་དོན། ཆོས་ཚན་ཨང་། ༡༢༡༩༥ Materials
for a History of Tibetan literature, Part-3, page-552, Lokesh
Chandra, Published by IAIC, New Delhi, 1963.

བྱ་སྟོན་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པའི་བདེ་མཆོག་ཙ་བའི་རྒྱུད་ཀྱི་བསྐྱུས་དོན་གསལ་བ་
འབྱེད་པ། བོད་“ཆ” ༡-༡༡བ། ལྷ་ས་དཔར་མ།

བྱ་སྟོན་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པའི་བདེ་མཆོག་ཙ་རྒྱུད་ཀྱི་ནམ་བཤད་གསལ་བའི་དེ་ཁོ་
ན་ཉིད་གསལ་བར་བྱེད་པ། བོད་“ཆ” ༡-༢༤༠ ལྷ་ས་དཔར་མ།

བོ་དོང་གི་བདེ་མཆོག་ཙ་བའི་རྒྱུད་བཤད། བོད་“ཨ” ༡ ༡༤༩ (Vol.76, 1-373)
ལྷ་ས་བོད་ཁང་དཔེ་སྐྱན་ཁང་། ཕྱི་ལོ་ ༡༩༧༣།

སློབ་ཐང་ན་དབྱངས་ཀྱི་བདེ་མཆོག་བསྐྱུས་པའི་རྒྱུད་ཀྱི་མཚན་འགྲེལ་འབད་དོན་ལྷ་
བའི་མིག་འབྱེད། བོད་“ཉ” ༢༣༧-༢༣༩ Published by Mongolian Lama
Gurudeva, New Delhi, 1975.

མར་དོ་ལོ་རྩེ་བ་ཆོས་ཀྱི་དབང་ཕྱག་གི་བདེ་མཆོག་ཙ་ལྷན་གྱི་བསྐྱུས་དོན་དང་རྟེན་གྱི་
 རྒྱས་པ། ཆོས་ཚན་ཨང་། ༡༢༡༩ Materials for a History of Tibetan
 literature, Part-3, page-552, Lokesh Chandra, Published by IAIC,
 New Delhi, 1963.

མེར་གན་མཁན་པོ་འཛིགས་མེད་རིག་པའི་དོ་རྩེའི་བདེ་མཆོག་ཙ་ལྷན་ལེའུ་དང་
 བོད་འབྲེལ་པ། དཀར་ཆག་ བོད་གྱི་བསྐྱུས་བཅོས་ཁག་ཅིག་གི་མཚན་བྱང་བྲི་མེད་ཤེལ་
 དཀར་བྱེད་པ། མཚོ་སྒྲོན་མི་རིགས་དཔེ་སྐྱུར། སྤེལ་ ༡༩༧༡།

སྤེལ་བྱང་སྤྱོད་བཟང་འཕྲིན་ལས་ཀྱི་དཔལ་འཁོར་ལོ་སྤྲོམ་པའི་ཟབ་དོན་འགའ་ཞིག་གི་
 གནད་གྲོལ་བ་སྤྲས་དོན་ཡང་གསལ་ཉིན་འབྲེད་ལ། བོད་དང་བོ་ག་ རྒྱུ་གྲངས་༧
 དཀར་ཆག་ བོད་སྤྱོད་ས་མི་དམངས་དཔེ་སྐྱུར་ཁང་། སྤེལ་ ༡༩༩༡།

གསེར་དོག་སྤྱོད་བཟང་ཚུལ་བྲིམས་ཀྱི་མཆོད་དཔལ་འཁོར་ལོ་སྤྲོམ་པ་སྤྲས་དོན་ཀྱན་
 གསལ་བ་ཞེས་བྲ་བའི་ཀྱ་ཆེར་བཤད་པའི་བསྐྱུས་དོན་ལྷན་སྤྲོས་བདེ་ཆེན་སྤེར་བའི་བོ་ཉ་
 མོ། བོད་ག་ རྒྱུ་གྲངས་༧༢ ཨ་མདོ་སྤྱ་འབྲུམ་དཔར་མ།

གསེར་མདོག་པཎ་ཆེན་ཤུག་མཆོག་ལྷན་གྱི་དཔལ་འཁོར་ལོ་སྤྲོམ་པ་ལ་ཀྱན་ཆགས་
 གྱི་སྤེལ་སྤྱོད་གྱི་སྤྲོ་ནས་བསྒྲོད་པ་དང་བདེ་མཆོག་རྣམ་བཤད་དཔལ་དང་བོད་སངས་
 རྒྱས་རབ་དུ་གྲུབ་པ། བོད་ག་ ༡-༡༩༩ འབྲུག་ཐིམ་བྱ། ཀྱན་བཟང་སྤྱོད་ས་རྒྱས་ནས་
 དཔར་སྐྱུར་ཞུས་པ། སྤེལ་ ༡༩༧༡།

ཀྱ་གར་དུ་གསང་སྤྲགས་ཀྱི་བསྐྱུས་པའི་ཡ་ལྱལ་མ་ལྷན་གྱི་གཙོ་བོ་དཔལ་འཁོར་ལོ་
 བདེ་མཆོག་གི་བཤད་སྐྱབ་འཆད་ཉན་གྱི་སྤེལ་སྤྲོས་ཆེན་བྱང་བ་ལྷན། བོད་དུ་ཡང་བོད་

གྱི་མཁས་བྱུ་ནམས་གྱིས་ཙ་རྒྱུད་བཤད་རྒྱུ་དེ་བཞིན་རྒྱ་གར་གྱི་པཌ་བྱུ་ནམས་
 གྱིས་མཛད་པའི་འབྲེལ་པ་ཁག་པོད་སྐད་དུ་བསྐྱར་བ་ཙམ་དུ་མ་ཟད་འབྲེལ་པ་དུ་མ་
 མཛད་དེ་བཤད་སྐབ་གྱི་སྟོལ་རྒྱན་རྒྱ་གར་ནང་དར་བ་དང་སྟོགས་མཚུངས་བྱུང་ཡོད།
 དེ་རེས་དཔལ་བདེ་མཆོག་ཙ་རྒྱུད་བསྐྱར་བ་དང་དེའི་འབྲེལ་པ་སྟོབ་དཔོན་ལྷ་ལྷན་ས་
 མཛད་པའི་དཔལ་འཁོར་ལོ་སྟོལ་པའི་དཀར་འབྲེལ་ལེགས་སྐྱར་དང་བོད་དཔེ་མཚུངས་
 བསྐྱར་ཉམས་ཞིབ་བཞིས་པ་དཔར་བསྐྱན་ཞུ་བྱུང་བར་རང་རེ་ལས་ལ་ཞུགས་པ་ནམས་
 ལ་དགའ་སྟོབ་ཆེན་པོ་བྱུང་བས། འདིས་སངས་རྒྱས་ཀྱི་བསྐྱན་པ་སྟེ་དང་ལྷག་པར་
 གསང་སྟགས་ཀྱི་བསྐྱན་པ་བྱི་མ་ཐེད་པ་དར་བའི་རྒྱ་ཏུ་སྟོན།

དཔེ་རྒྱན་དཀོན་རིགས་ཉམས་ཞིབ་སྟེ་ཆེན་ནས།



विषय-सूची

आशीर्वचन	
भोट	V
हिन्दी	VI
प्रकाशकीय	
हिन्दी	VII-IX
भोट	X-XIV
प्रस्तावना	
हिन्दी	XV-XXXI
भोट	XXXII-LI
विषय-सूची	
संस्कृत	LII-LV
भोट	LVI-LVII
विषयः	पृष्ठे
प्रथमपटले	१-२७
ग्रन्थावतारप्रतिज्ञा	१
चक्रसंवरे प्रवर्तमानानां प्रवृत्त्यङ्गानां विवेचनम् (टी०)	२
श्रीहेरुकशब्दस्य व्युत्पत्तिः (टी०)	४
श्रीहेरुकस्योत्तरोत्तरत्वप्रतिपादनम् (टी०)	५
रहस्यपदस्य व्याख्या (टी०)	६
श्रीहेरुकस्य माहात्म्यप्रतिपादनम्	७
सदसतोरुत्पादविगमनिरूपणम् (टी०)	८
हेरुकस्वरूपस्य (सविकल्पस्य) दुर्लभत्वप्रतिपादनम्	१५
हेरुकसंयोगस्तदभिधेयस्य च प्रतिपादनम्	१७
तन्त्रे वर्णनीयविषयनिरूपणम्	१८
अहोरात्रभेदेनादौ कुलिकायाः बाह्यपूजाविधानम्	२०
मण्डले कालविशेषेषु योगिनीनां न्यासविधिः (टी०)	२०
कुलिकानां संख्यापरिगणनम्	२२
कुलिकानां साक्षात्पूजा-गुह्यपूजा-भावपूजाः, फलकथनं च	२३

पञ्चामृतविधानं विचिकित्सानिषेधो मण्डलावतारणं च	२४
द्वितीयपटले	२८-३७
मण्डलनिर्माणप्रकारः	२८
आचार्यपरिभाषा, आत्मनो हेरुकीकरणप्रकारश्च	२९
सूत्रणप्रकारः	३१
मण्डले देवतानां स्वरूपवर्णनम्, न्यासः, पूजाप्रकारश्च	३३
तृतीयपटले	३८-४३
दक्षिणादानं घण्टाभिषेकविधिश्च	३८
मण्डलप्रवेशनप्रकारो गुह्याभिषेकविधिश्च	३३
गुरवे दक्षिणादानं मण्डलानुशंसा च	४०
चतुर्थपटले	४४-४७
मण्डले न्यस्तव्ययोगिनीनां नामानि, स्थापनमन्त्राः, स्वरूपम्, ज्ञानादिचक्रस्थानां तासां स्वभाववर्णनं च	४४
पञ्चमपटले	४८-५९
एकोनपञ्चाशत्कोष्ठात्मके भुवने मूलमन्त्राक्षरविन्यासविधि- (मन्त्रोद्धार)वर्णनम्	४८
षष्ठपटले	६०-६४
संक्षिप्तरुचीनां कृते संक्षिप्तमन्त्रदेशनायां द्वाविंशत्यक्षरात्मकस्य षड्वीरकवचमन्त्रस्य मन्त्रोद्धारः	६०
सप्तमपटले	६५-७२
मन्त्रोद्धारप्रकरणोक्तविद्याराजमन्त्रस्य सम्पूर्णस्य वर्णेषु स्वरसंयोजनम्	६५
अष्टमपटले	७३-७४
विपरीतहृदयषड्योगिनीमन्त्रोद्धारविधिः	७३
नवमपटले	७५-८१
पूर्वोक्तमन्त्रस्य सामर्थ्यवर्णनम्	७५

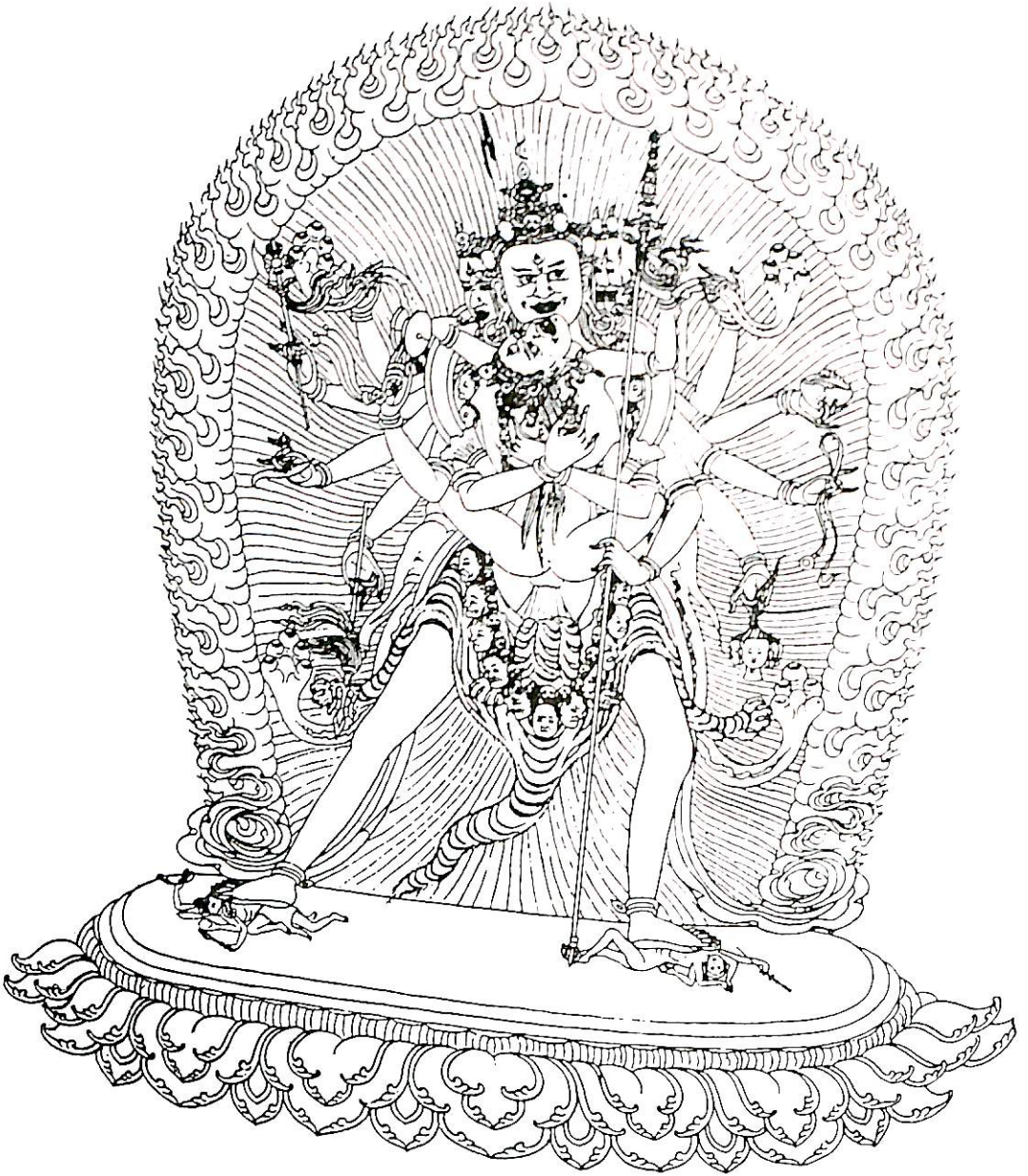
अन्यथाव्याख्यानम् (टी०)	७७
भैषज्यसहकारिणो मन्त्रस्य व्याख्यानम्	८०
दशमपटले	८२-८४
कायत्रयसिद्धिविधानम्	८२
हृदयमन्त्रस्य कर्मविधिनिरूपणम्	८४
एकादशे पटले	८५-८६
सप्तजन्मसहकारिणो हृदयमन्त्रस्य सामर्थ्यवर्णनम्	८५
द्वादशे पटले	८७-९०
उपहृदयमन्त्रस्य विधिः सामर्थ्यं च	८७
त्रयोदशे पटले	९१-९३
कवचमन्त्रस्य प्रयोगविधिः सामर्थ्यवर्णनं च	९१
चतुर्दशे पटले	९४-९६
मनोवेगनिवृत्तये पुनर्हृदयमन्त्रस्य गर्दभाकारयोगेन हेरुकीकरण- विधिद्वारा सप्तजन्मसाधननिरूपणम्	९४
पञ्चदशे पटले	९७-९९
अक्षरछोम्मकविधिवर्णनम्	९७
षोडशे पटले	१००-१०३
त्रयोदशविधानां योगिनीनां लक्षणपरीक्षानिर्दर्शनम्	१००
सप्तदशे पटले	१०४-१०७
योगिनीगुणानुवर्तिनीनां मानुषडाकिनीनां चिह्नमुद्रादि- लक्षणान्तरवर्णनम्	१०४
अष्टादशे पटले	१०८-१११
सर्वयोगिनीनां वर्णलक्षणचिह्नादिवर्णनम्	१०८
एकोनविंशे पटले	११२-११५
सर्वयोगिनीनां मुद्रा-प्रतिमुद्रानिर्देशः	११२

विंशे पटले	११६-११८
सर्वकुलयोगिनीनां हस्तमुद्रासंकेतविधिः	११६
एकविंशे पटले	११९-१२०
विशेषेण अङ्गमुद्रासङ्केतविधिनिदर्शनम्	११९
द्वाविंशे पटले	१२१-१२२
शिखास्पर्शादि विशेषमुद्रानिदर्शनम्	१२१
त्रयोविंशे पटले	१२३-१२५
डाकिनीविशेषचिह्नमुद्रासंकेतविधिवर्णनम्	१२३
चतुर्विंशे पटले	१२६-१२९
अन्यभाषाछोम्मकविधिनिदर्शनम्	१२६
पञ्चविंशे पटले	१३०-१३१
मूलमन्त्रस्य सर्वगोप्यविधिवर्णनम्	१३०
भोट-संस्करण	१३५-४८२

དཀར་ཆག

ལེའུ།	མཚན་བྱང་།	ཤོག་གྲངས།
༡	དཀྱིལ་འཁོར་དུ་འཇུག་པའི་ལེའུ།	༢༣༣
༢	འཁོར་ལོ་མཚན་པའི་ཆོག་པའི་ལེའུ།	༢༠༩
༣	ཡོན་དང་བཅས་པའི་དབང་བསྐྱར་བའི་ཆོག་པའི་ལེའུ།	༢༣༣
༤	དཔལ་བོ་དང་རྣལ་འབྱོར་མ་གཉིས་སུ་མེད་པར་དགོད་པའི་ལེའུ།	༢༣༢
༥	ཙ་བའི་སྤྲུག་གི་ཡི་གེ་བདུ་བའི་ཆོག་པའི་ལེའུ།	༢༤༢
༦	དཔལ་བོ་དུག་གི་གོ་ཆ་བདུ་བའི་ལེའུ།	༢༩༢
༧	སྤྲུག་བདུ་བའི་ཆོག་པའི་ལེའུ།	༢༩༤
༨	གོ་བསྐྱོག་པའི་སྤྲིང་བོ་དང་རྣལ་འབྱོར་མ་དུག་གི་སྤྲ་བདུ་བའི་ཆོག་པའི་ལེའུ།	༢༤༤
༩	ཙ་བའི་སྤྲུག་གི་ལས་ཀྱི་ཆོག་པའི་ལེའུ།	༢༣༤
༡༠	སྤྲུག་སྤྲུམ་གྱུ་བའི་སྤྲིང་བོའི་སྤྲུག་གི་ཆོག་པའི་ལེའུ།	༢༣༣
༡༡	སྤྲི་བ་བདུན་བའི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་ཆོག་པའི་ལེའུ།	༢༤༢
༡༢	ཉི་བའི་སྤྲིང་བོའི་ལས་ཀྱི་ཆོག་པའི་ལེའུ།	༢༤༤
༡༣	གོ་ཆའི་སྤྲུག་གི་ལས་ཀྱི་ཆོག་པའི་ལེའུ།	༢༧༤
༡༤	དཔལ་ཉེར་ཀ་བོང་བའི་རྣམ་པར་མཛད་པའི་ཆོག་པའི་ལེའུ།	༢༤༣
༡༥	ཡི་གེའི་བཅའི་ཆོག་པའི་ལེའུ།	༢༩༢
༡༦	རྣལ་འབྱོར་མའི་མཚན་ཉིད་ངེས་པར་བཅུག་པའི་ལེའུ།	༢༩༩

- ༡༧ རྣལ་འབྱོར་མ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་གཟུང་ཡོངས་སུ་བཟེ་བ་དང་ཕྱག་མཚན་དང་
ཕྱག་སྐྱ་བསྟན་པའི་ཆོ་གའི་ལེན། ༧༡༡
- ༡༨ རྣལ་འབྱོར་མ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཁ་དོག་གི་མཚན་ཉིད་དང་མཚན་མའི་
ངེས་པའི་ཆོ་གའི་ལེན། ༧༡༢
- ༡༩ རྣལ་འབྱོར་མ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཕྱག་སྐྱ་དང་ཕྱག་སྐྱའི་ལན་བསྟན་པའི་ལེན། ༧༡༣
- ༢༠ རྣལ་འབྱོར་མ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ལག་པའི་ཕྱག་སྐྱའི་བདའི་ཆོ་གའི་ལེན། ༧༡༤
- ༢༡ ཡན་ལག་གི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་ཆོ་གའི་ལེན། ༧༡༥
- ༢༢ བྱད་པར་གྱི་ཕྱག་སྐྱའི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་ཆོ་གའི་ལེན། ༧༡༦
- ༢༣ མཁའ་འགྲོ་མའི་བྱད་པར་གྱི་མཚན་མའི་ཕྱག་སྐྱའི་མཚན་ཉིད་
ཀྱི་ཆོ་གའི་ལེན། ༧༡༧
- ༢༤ སྡེ་བཞིའི་མཚན་ཉིད་ཐམས་ཅད་ཀྱི་བདའི་ཆོག་གི་བདར་བཏགས་
པའི་ཆོ་གའི་ལེན། ༧༡༨
- ༢༥ ཅུ་བའི་ཐུགས་ཀྱི་གསང་བའི་ཆོ་གའི་ལེན། ༧༡༩



श्रीचक्रसंवर

श्रीहेरुकाभिधानं
चक्रसंवरतन्त्रम्
भवभट्टकृतया विवृत्या समेतम्

मण्डलावतारविधिपटलः प्रथमः

ॐ नमः श्रीचक्रसंवराय¹ ।

अथातो रहस्यं वक्ष्ये समासान्न तु विस्तरात् ।
श्रीहेरुकसंयोगं सर्वकामार्थसाधकम् ॥ १ ॥

श्रीचक्रसंवरविवृतिः

नमः श्रीचक्रसंवराय ।

मा ध्वङ्क्षी रागसिन्धौ मदनहर हरे मा जुषो द्वेषसर्प
मा स्थाः सम्मोहजाले द्रुहिण बलरिपो गूह मा मत्सराग्निम् ।
नैरात्म्याहेतुभूते प्रणिधिविगमने चित्तमात्रे रमध्वं
वक्त्रैरेवं चतुर्भिर्जगदवतु दिशन् हेरुकः श्रीशरीरः ॥

क्षयं कुष्ठादयः क्लेशाः शारीरा मानसा गदाः ।
श्रद्धायुक्तिमतां यान्ति तन्त्रेणानेन योगिनः(नाम्) ॥

तन्त्रोपादेयरत्नानि परिमातुं क ईश्वरः ।
अम्भोधिजलबिन्दूनां कः क्षमो गणनाविधौ ॥

मन्दिरं धनदस्येव लेखोऽगम्योऽर्थमन्दिरम् ।
तन्त्रं वज्रधरेणेदमुद्गीर्णमिव मानसम् ॥

निक्षिप्तो मयि तस्यार्थो गुरुभिर्मन्दमेधसि ।
यथा संनिधितो भस्मकूटेऽपि प्राप्यते निधिः ॥

यदि सोऽसंप्रजन्येन विस्मृत्यायुधधारिणा ।
चोरेणेव हता न स्याद् विभ²[ज्य विवृणोम्यतः ॥

1. नमो भगवते श्रीवज्रसत्त्वाय- भो०

2. अत्रैवं विशेषेणावधातव्यम्— मूलमातृकायां यः पाठोऽनुपलब्धो यश्च खण्डितः, सोऽस्माभिः प्रायः सर्वत्र [] कोष्ठकान्तर्निहितो भोटपाठमनुसृज्य संस्कृते रूपान्तरित इति ।

दुर्ग्रहश्चैव शब्दार्थो दृढमुच्छेदबुद्धिना ।

उपदेशं विना तन्त्रस्वाध्यायो घटवद्विवत् ॥

यतः सर्वत्र प्रयोजनदर्शनं विना प्रवृत्तिर्न दृश्यते । तथा च—

सर्वस्य चैव शास्त्रस्य कर्मणो वापि कस्यचित् ।

यावत्प्रयोजनं नोक्तं तावत्तर्को न गृह्यते ॥

मन्दबुद्धेरपि हि प्रयोजनमपश्यतो नोपाये प्रवृत्तिः । “नहि कार्यमनुद्दिश्य मनो-
(मन्दोऽपि हि प्रवर्तते” इति वचनात् । ततः श्रीचक्रसंवरे प्रवर्तमानानां प्रवृत्त्यङ्ग-
तया व्याख्यातृभिस्तद्वाच्यम् । तथा चाह—

प्रयोजनं सपिण्डार्थः पदार्थः सानुसन्धिकः ।

संचोद्य परिहारश्च वाच्यः सूत्रार्थवादिभिः ॥ इति ।

तच्चाभिधानादिकथनपुरःसरं सुकथम् । किञ्च, अथात इत्यादिपदैर्भगवतैवोक्तम् ।
तत इह तावद् द्वयद्रुतानि पदानि व्याख्यास्यन्ते तत् कथयिष्यामः । पिण्डार्थस्तु पक्षात्
सूत्रेत्यादिसाधनोक्त एव विमर्शाद् विस्तारयितव्यः, पदार्थादिकथनं च व्याख्यान-
क्रमेण । भाविचतुर्मुखादिरूपो महावज्रधरो देशकः । स च साक्षादेव निर्माणाव-
स्थितः । तन्त्रं चेदमनादिकालदेशयत्वेनावस्थितं सत्त्वानामपुण्यात्कदाचित्तिरोधत्ते,
कदाचित् पुण्यात् प्रतिभाति । तच्च देश्यदेशकादिमायोपममिदं तथागतानां चरित-
मचिन्त्यम् । इतश्च भगवती वज्रवाराह्याध्येषिका, वज्रपाणिः संगता । सामान्येन प्रत्यर्पितं
शासनत्वात्तस्य । अथवा चतुर्मुखादि क[ाय]देशकदेश्यदेशनादिसकलार्थाभिधायि
तन्त्रं सिद्धम् । सुगता देशयन्ति न तु कुर्वन्ति, यथा कार्यकारणादि सुखदुःखादि
रागद्वेषादि सुकृतदुष्कृतादि च । उक्तं चेह—

सुभाषितं बुद्धकोटीनां वीराणां कोटिमेव च ॥ इति । (च० सं० ४७.१७)

अन्यत्र—

यातीतैर्भाषिता बुद्धैर्भाषिष्यन्ते ह्यनागताः ।

प्रत्युत्पन्नाश्च संबुद्धा यां भाषन्ते पुनः पुनः ॥

मायाजाले महातन्त्रे या चास्मिन् संप्रगीयते । इति । (ना० सं० १.१२-१३)

भाषणश्चेह देशनैव । अर्थतो ग्रन्थतश्च समानपदादिबुद्धेरनवधिकालं देश्यमानं
श्रीचक्रसंवरतन्त्रमवतरति । तदेवं देशयितुकामो भगवानाह— अथात इत्यादि ।

भगवान् श्रीचक्रसंवराधिमुक्तानामर्थाय लक्षपरिमाणान्मूलतन्त्रात् तदाकृष्य देशयते हि संक्षेपरुचय इति वज्रवाराह्यध्येषितस्य भगवतः प्रतिवचनमेतदथात इत्यादि। अथ-शब्द आनन्तर्ये। अत इति ल्यब्लोपे पञ्चमी। मूलतन्त्रदेशनाया अनन्तरं मूलतन्त्रमेवा-करीकृत्य रहस्यं वक्ष्ये इति सम्बन्धः। ततो हि भाषान्तरीकर्तुं श्रीचक्रसंवरतन्त्रं शक्यम्, अत्रैव तदर्थपरिसमाप्तेः। भेदस्तु ग्रन्थसंक्षेपमात्रेण। अथवा यतो वज्र-वाराह्यध्येषितोऽहमतः ¹कारणाद्रहस्यं वक्ष्ये इति योज्यम्। तन्त्रे निगदितं शृण्वति वचनादध्येषणामेव, अनध्येषितस्य नहि धर्मदेशना श्रेयसी, ²उन्नत्यै धर्मदेशनाया एवाऽगौरवसम्भवात्।

अध्येषिका देवीति ³को नियम इति चेत्, गुरुपरम्परातो हि श्रूयते मूलतन्त्रे सैवाध्येषिकेति, तत इहापि सैवेति गम्यते। भगवानध्येषको भगवती देशिकेति ⁴केचित्। अचिन्त्यरूपो हि तथागतानामभिप्रायः। ⁵रहस्य इति। कालदेशस्वभावा असर्वजनगोचराः। कालोऽतीतादिः, स च कालविशेषः तु-इत्यादि⁶शब्देन वाच्यः। देशः ⁷प्रदेशः, स 'रहस्य' इत्यादिपदवाच्यः। स्वभावो ⁸निजरूपम्, तच्च श्रीहेरुक-भावनस्थानसमयाचाराध्येषणपूजादिलक्षणम्। अथवा महावज्रधरो रहःशब्दवाच्यः, तस्यासर्वजनगम्यस्वभावत्वात्। अतोऽस्य विगतसामान्यजनाधिगमत्वे विजनत्वम्। तत्र भवं रहस्यम्। तच्च चतुर्विंशतिवीरसप्तत्रिंशद्द्वीरिणीसमन्वितश्रीहेरुकभावन-स्थानसमयाचारादि यत्किञ्चित् ⁹तत्र वाच्यम्, अत एवैतदेवाभिधेयम्। एतदेव च श्री¹⁰चक्रसंवरार्थशरीरम्।

वक्ष्ये इति। अभिधानशरीरीकरिष्ये। अभिधानशरीरीकरणमेवाभिधेयप्रकाशनम्, अत एवाभिधानाभिधेययोर्वाच्यवाचकलक्षणः सम्बन्धः। अत्र चाभिधानप्रयोजन-

-
1. इतः 'ख. ग.' मातृके प्रारभ्येते।
 2. उत्पत्त्यै- ख. ग.
 3. क्व- ख. ग.
 4. कोविदः- ख. ग.
 5. रह इति- भो०
 6. 'शब्देन'- नास्ति भो० क.
 7. 'प्रदेशः' नास्ति- ख. ग.
 8. बीजमयं- ख. ग.
 9. तन्त्र- भो०
 10. चक्र- नास्ति क. ख. ग. गृहीतस्तु भोटानुसारी।

मविपरीताभिधेयप्रतिपादनम्, अभिधेयप्रयोजनमस्यैव परिज्ञातस्य साक्षात्करणम्, तस्य च प्रयोजनं देशनादिना जगदर्थकरणम् । १रहःसाक्षात्कृतं परम्मे प्रतिपादयितुं शक्यम् । उपायोपेयलक्षणो वा सम्बन्धः । उपाय इह उक्तमण्डलचक्रादिलक्षणः । स चानुकूलो यथारुचि २विषयोपभोग्यानामभ्यस्यमानत्वात् । उपेयमप्रतिष्ठितं निर्वाणम् ।

तथा चाह—

सम्बन्धानुगुणोपायं पुरुषार्थाभिधायकम् ।

परीक्षाधिकृतं वाक्यमतोऽनधिकृतं परम् ॥ इति । (प्र० वा० ३.२१५)

मया तावत् संक्षेपा[र्थमध्येपणायां कृतायां वज्रवागह्याः मन्देहनिराकरणार्थं तदेवोक्तमिति चेत् तदाह— समासादिति । सर्वसमुच्चयः समासस्त्वल्पार्थे । तत्र अर्थतो ग्रन्थतो वा किमिति चेदाह— न तु विस्तरादिति । न इत्यवधारणार्थं न त्वर्थ-संग्रहयोः । अर्थे विचिकित्सानिवारणार्थं शब्दस्य समासः कृतो नार्थग्यः । ग्रन्थसमास-मात्रमभीष्टमित्यभिप्रायः । नार्थसमास इति कथं ज्ञायत] इत्याह— विस्तरादिति । अस्मिन् विस्तरोऽभ्युपेतः, यद्यर्थ इह संक्षिप्यते तदा नाभिमतार्थसिद्धिः । ३खसमतन्त्रं नानुकृष्टं स्यात् । खसम एव ग्रन्थतः संक्षिप्तं श्रीचक्रसंवरतन्त्रं तदधिमुक्तानां मन्त्रम् । विषयाद्विमुक्तिवशेन हि शास्तृदेशना । तथा हि रागादिविनेयेभ्यो रागादिदेशनैव ।

तथा चाह—

यथा पावकदग्धाश्च स्विद्यन्ते वह्निना पुनः ।

तथा रागाग्निदग्धाश्च स्विद्यन्ते रागवह्निना ॥ इति । (हे० त० २.४.४९)

नान्यद् विरागसदृशं पापमस्ति त्रैधातुके ।

तस्माद् हि विरागित्वं न कार्यं भवता सदा ॥

रहस्यपदेन पूर्वोक्तार्थस्तमेव कियता विस्तरेण विवृण्वन्नाह— श्री इत्यादि । संवृत्या भुजमुखादिरूपयोगस्तु संयोगः । कर्मणि घञ् । श्रीकारमद्वयस्थानमभिधत्ते, हेकारो हेत्वादिशून्यताम्, रुकारोऽप्रणिधानम् । ककारो [न] क्वचित् स्थितमे(मि)ति श्रीहेरुक इति स्थितम् । तदाह—

1. 'रहः' नास्ति- भो०

2. 'विषयोपभो-----हेरुकस्तेन' पर्यन्तं पत्रमेकं (पत्र सं० ४) नास्ति 'क' मातृकायाम् ।

3. खसमतन्त्रे नानुकृष्टम्- भो०

श्रीकारमद्वयं ज्ञानं [हेति] हेत्वादिशून्यता ।

क(रु)कारोऽपगतव्यूहं क इति न क्वचित् स्थितम् ॥ इति ।

(यो० सं० ९.७-८)

भूयश्च— श्रीकारमद्वयं ज्ञानं हेकारो हेतुवर्जितम् ।

रुकारो रूपनिर्मुक्तं ककारो करणाजितम् ॥

रूप्यत इति रूपम् । करणमिन्द्रियादि । अथवा—

हेरनिर्जितमारारी¹कम्भिः पूरितदिङ्मुखः ।

कल्पनाजालनिर्मुक्तो हेरुकस्तेन कीर्तितः ॥

इति हेरुकः । श्रीवज्रवाराही, तथा युक्तो हेरुकः श्रीहेरुक इति । मध्यमपदलोपी समासः । यथा ज्वरहरो मन्त्रो ज्वरमन्त्रः । संयोग एव विशेष्यविवक्षातो हि विशेष्यविशेषणभावः । श्रीहेरुकश्चासौ संयोगश्चेति स तथा । श्रीहेरुको रहस्यशब्द-स्याभिधेयैकदेशः । तं वक्ष्ये इति प्राक् क्रिययैव सम्बन्धः ।

स्वार्थसम्पन्नं श्रीहेरुकं निर्दिश्य परार्थसम्पदद्वारेण तं विशेषयन्नाह— सर्वेत्यादि । सर्वेषां शत्रुमित्रोदासीनानां देवासुरादीनां वा सत्त्वानां कामा अभिलाषाः, इच्छा इति यावत् । तेषामर्थो विषयः । स चाभूतस्य सुखस्य लाभोऽभूतस्यावियोगस्याभूतस्य चाभवनमिति । तस्य साधकः साक्षात्कर्ता ॥ १ ॥

उत्तरादपि चोत्तरं डाकिनीजालसंवरम् ।

रहस्ये परमे रम्ये सर्वात्मनि सदा स्थितः ॥ २ ॥

किमयमसाधारणः साधारणो वा साधक इत्याह— उत्तरादित्यादि । श्रेष्ठादपि श्रेष्ठः श्रीहेरुकसंयोगः । प्रवृत्त्यङ्गं हि श्रेष्ठत्व²प्रसरम् । अश्रेष्ठे तदधिमुक्तानामपि ³श्रेष्ठत्वप्रतिपादनादप्रवृत्तिः । न च तेषां तत्र श्रेष्ठत्वबुद्धिः, श्रेष्ठेऽपि तदधिमुक्तानामपि श्रेष्ठत्वप्रतिपादनात् प्रवृत्तिः । धर्मता ह्येषां यदसाधारणं कथ्यते । सन्त्येव ह्यन्या देवता उत्तरभूताः, ताभ्य उत्तरभूतेयं श्रीहेरुकदेवतेति भावः । अथवा अतिशयपुण्यज्ञान-सम्भारयोगात् श्रावकादिभ्य उत्तरो भगवानित्यनेन स्वार्थसम्पदुपायसम्पत् प्रतिपादिता ।

1. रुकारेण- भो०

2. प्रकाशनं- ख. ग. भो०

3. अश्रेष्ठत्व- भो०

उत्तरोत्तरत्वमेव कुत इत्याह— डाकिनीत्यादि। डा¹तुं निरालम्बनं ज्ञानमात्मी-
कर्तुं शीलमस्या इति 2डाकिनी। नैरुक्तेन ककारेण डाकिनीति स्यात्। यतो 'डै
वैहायसगमने' धातुरत्र विकल्पित इति विहायसः पक्षिणस्तत्साम्योपायवन्तो
विहायसः। ते चेह निरालम्बं मार्गं 3पक्षेण क्राम्यन्ति। निरालम्बनं च ज्ञानं योगिन
उपायेन साक्षात्कुर्वन्ति। तेषां ज्ञानं वैहायसम्। तत्र गमनं स्थितिः। गर्भरिह
स्थित्यर्थः, स च विश्रामः। निरालम्बनं ज्ञानं साक्षात्कृत्यान्यत्र सञ्चारनिरोधः,
तदानीमन्यस्यैवाभावात्, तस्य ज्ञानस्य प्रज्ञास्वभावत्वात्। डाकिनी शून्यता,
जालमुपायः। जालेन हि मत्स्यादिवन्धनसिद्धिः, उपायेन हि क्लेशमीनादिनिर्णयम्या-
किञ्चित्करः क्रियते। ताभ्यां 4सं सुखम् अवद्येभ्यो वहिष्ठेभ्यो वृणोतीति डाकिनी-
जालसंवरः। संस्कारस्य सुखवाचकत्वात् सं सुखम् "सुखं समिति चाख्यातम्" इति
वचनात्। योऽयं लौकिकः शंशब्दः स तालव्य एव। अथवा डाकिनीनां लामादीनां
निर्माणं स्वस्मिन् दधाति इति धातुः। अनेन परार्थसम्पदुपायसम्पदद्वारेण विशेषणम्।
विशेषणत्रयविशिष्टं श्रीहेरुकसंयोगं वक्ष्ये इति सम्बन्धः। इत्थं सुप्तिङन्तस्य पदस्य
सर्वत्रानुव्याख्या।

अत्र सन्धिरभिप्रायः श्रुतचिन्ताद्यावर्तनं च चोद्यम्। विपक्षत्वेन प्रश्नः, परिहार-
श्चोद्यनिराकरणम् उक्ते वक्ष्यमाणे प्रस्तावे स्वयमूहनीयम्। सर्वमिदं कुत्र स्थितोऽहं
वक्ष्ये इत्याह— रहस्यमित्यादि। रहःशब्देन ज्ञानचित्तवाक्कायश्मशानसंज्ञकाः पञ्च-
चक्रवर्तिन्यः सवीरा निर्वीराश्च सप्तत्रिंशद्योगिन्यः। तत्र रहसं(सि) साधु रहस्यम्,
योगिनीनां स्थितौ योग्यमित्यर्थः। तच्च कूटागारम्। किमनेन इत्याह— परम इति।
परमं निर्वाणम्। यथाकथञ्चित् कार्यत्वेन 5मात्यस्मिन्निति परमम्। अथवा परे
शत्रवः, ते तु क्लेशाः। ततश्च परे मीयन्ते परिमीयन्ते लघूक्रियन्ते येन तत्परमम्।
रम्यति(रम्यते) अनेनेति रम्यम्, मायावत् प्रतिभासमानत्वात्। अस्यैकदेशत्वाद् रम्य-
त्वेऽपि तत् साक्षात्कारेऽपि च न सर्वतः सुखमित्याह— सर्वात्मनीति। सर्वेषु

1. तुं- नास्ति भो०
2. डायिनी- भो०
3. पक्षिणः- क. ख. ग.
4. संवरं सुखं- भो०
5. मार्गयन्निति- भो०

स्थिरचलादिषु आत्मा यस्य तत् सर्वात्मेति कूटागारम् । तत्र स्थितस्ततोऽन्यत्र गते-
निवृत्तः, तदन्यगन्तव्याभावात् । सदेत्यासंसारम् ॥ २ ॥

सर्वडाकिनीमयः सत्त्वो वज्रसत्त्वः परं सुखम् ।

असौ हि स्वयम्भूर्भगवान् वीरो डाकिनीजालसंवरम् ॥ ३ ॥

स्थितिः स्थानम् । सम्पन्नेऽपि न स्थान्यं सम्पदित्याह— सर्वडाकिनीत्यादि ।
सर्वडाकिन्यो डाकिनीलामादयस्तदवयवभूताः, तासां कायानुस्मृत्युपस्थानादिस्वभा-
वात् । तदवयवत्वेन तस्य माहात्म्यम् । अथवा “समा(सा)क्षिकं वदन् वक्ता प्रामा-
ण्यमधिगच्छति” इति सर्वडाकिनीत्यादिना परिषदमाह । अपरार्थकारित्वान्न देशक-
माहात्म्यमित्याह— सत्त्व इति । सत्त्वार्थकरणे प्रवृत्तत्वात् सत्त्वः । तथाप्यनिश्चितार्थस्य
न तदित्याह— वज्रसत्त्व इति । अभेद्याशयः, अभेद्याधिमुक्तिरिति भावः । ¹अभेद्याधि-
मोक्षोऽपि न शोभत इत्याह— परमेति । परार्थे रमत इति परमम् । क्रियाविशेषणमि-
दम् । परं यथा स्यात्तथा वज्रसत्त्व इत्यर्थः । “परमार्थविकल्पोऽपि नालमर्थप्रसिद्धये”
इत्याह— सुखमिति । सुष्ठु खं शून्यम्, परमार्थापरमार्थसङ्गाभ्यां रहितत्वात् । एतदपि
क्रियाविशेषणम् । स्थानादिसम्पन्नोऽहं श्रीहेरुकसंयोगं वक्ष्य इति सम्बन्धः । यदि
श्रीहेरुकसंयोगो ²न त्वया साक्षात्कृतः, तं कथं वक्ष्यस इत्याशङ्क्याह— असा-
वित्यादि । हिरवधारणे, असावेव श्रीहेरुकसंयोगः । स्वयमात्मनाऽहं श्रीहेरुकसंयोगं
वक्ष्य इति । श्रीहेरुकसंयोगरूपे साक्षात्कृते तस्यैवोपदेशेनेति भावः । तथा च सति न
त्वं गुणस्थानमित्याह— [स्वयं]भूरिति । दशबलवैशारद्यादीनां बुद्धगुणानां भूरहं
कथमेवं स्यामित्याह— भगवानिति ।

ऐश्वर्यस्य समग्रस्य रूपस्य यशसः श्रियः ।

ज्ञानस्याथ प्रयत्नस्य षण्णां भग इति स्मृतिः ॥ इति ।

भगयोगाद् भगवान³हम् । भगवत्त्वमेव कुत इत्याह— वीर इति । क्लेशसन्त्रास-
जेतृत्वाद् वीरः । तथा चाह— “चतुर्णां क्लेशादिमाराणां भञ्जनात् भगवान्” इति ।

-
1. अभावा- भो०
 2. ‘न’- नास्ति भो०
 3. अहं- नास्ति भो०

क्लेशस्कन्धमृत्युदेवपुत्राणां भङ्गः। भूयश्च “भङ्गनं भगमित्याह क्लेशमार्गादिभङ्गनात्”।
क्लेशभङ्ग एव कुत इत्याह— डाकिनीत्यादि। डाकिनी प्रजा, सा च धर्मप्रविचयरूपा
तथतारूपा च। जालं क्लेशाः, ततो मनसः संवरो रक्षणं डाकिन्या करणभृतया जालं
संवरो यत्तद् डाकिनीजालसंवरम्। डाकिनीजालसंवरं यथा स्यात् तथाह— वीरः।
स च श्रीहेरुकसंयोगं वक्ष्य इत्यर्थः। तथा चाह— “प्रज्ञावाध्याश्च ये क्लेशास्तस्मात्
प्रज्ञा भगोच्यते” इति। क्लेशजयश्च तेभ्यो मनोरक्षणम्, जालस्य मोहार्थत्वेऽपि सर्व-
क्लेशाः संगृह्यन्ते। यतः क्लेशानां मूलमात्मदृष्टिः। तथा चाह—

सर्वासां दोषजातीनां जातिः सत्कायदर्शनात् ।

सा चाविद्या ततः ¹स्नेहस्तस्मादोषादि²सम्भवः ॥

मोहो निदानं दोषाणामेतदेवाभिधीयते ।

सत्कायदृष्टेरन्यत्र तत्प्रहाणे प्रहाणतः ॥ इति ।

समर्थकारणसत्त्वे कार्यसत्त्वमिति भावः। सर्वडाकिनीपर्यद्भूतं श्रीहेरुकसंयोगं
तादृश एवाहं वक्ष्ये इति समुदायार्थः। स्वयम्भूरिति कार्यकारणभावादिना स्वयमेव
सन्निति केचित् न च कार्यकारणादिति भावः। परमार्थतः सन्न तावत् कार्यं प्रत्युत्पन्नं
सदसतोरुत्पादविगमात्। यतः सतो नोत्पत्तिः, विद्यमानत्वात्, कारणाभिमतभाववत्।
पुनरुत्पादश्चेत्, भावानिवृत्तिः प्रसज्येत। अथ निवृत्तिः, पूर्वभावविनाशादपूर्वोत्पत्तौ न
सत उत्पादः। तत्र पूर्वस्य विनाशोऽपूर्वस्योत्पादोऽस्तु नाम, तथापि सत उत्पत्तिः।
अपूर्वस्य सत उत्पत्तिरिति चेत्, न; सतः पूर्वत्वस्य हानात्। हानौ हि पूर्वस्य ³सतो
विद्यमानत्वादविद्यमानवदुत्पादायोग इत्यपि न सत उत्पादः। न च यदि सत उत्पत्ति-
र्नास्ति सदेव तत्कथम्? न ह्यनुत्पन्नाः शशविषाणादयः सन्तः। सामर्थ्यलक्षणं हि
सत्त्वम्। अर्थक्रियायामनुपयोगे नित्याः पदार्था नरविषाणादिवन्न कस्यचिदर्थक्रिया-
र्थिन उपादेयाः। उत्पत्तौ वा सतस्तेभ्यो(स्तस्याः) नोत्पादः, निषिद्धत्वात्। नाप्यसतः,
निषेध्यमानत्वात्। न च सदसतः, परस्परपरिहारावस्थितेरेकानेकत्वाभावात्। अनु-
भयपक्षस्य च युगपत् सदसत्प्रतिषेधरूपत्वात्। सदसद्विपरीतत्वे न (च) सदसद्रूप एव

1. तृष्णा- भो०

2. संबन्धः-क. गृहीतस्तु भो०

3. संवि०- ख. ग.

पातेन पृथगसम्भवात् । सम्भवे च तस्यानित्याभिमतहेतुकार्यतायां नियमेन सत्त्वप्रस-
ङ्गात् । सत्कार्यवादनिषेधस्य प्रस्तुतत्वात् । सतश्चोत्पादयोगादर्थक्रियोपयोगाभावे सामा-
न्येन सर्वभावानामेकानेकस्वभाववियोगेनोत्पादनिषेधेन च निःस्वभावत्वस्य प्रतिपाद-
यिष्यमाणत्वादनुत्पत्तिस(म)न्तोऽसन्त एव नित्याः ।

अत्र प्रतिसमाधीयते— प्रागुत्पादात् सतोऽसतो वा स्यादुत्पादः? यदि सतस्तदा
न, सतः? सर्वात्मना तस्य सिद्धसत्ताकत्वात् । नाप्यसतस्तस्यापि निषेध्यमानत्वात् ।
अथ शक्तिरूपेण कारणात्मनि सतो व्यक्त्यात्मतयोत्पादः? सा व्यक्तिरुत्पादात्मिका
किं सत्यसती वा? कारणव्यापारात् पूर्वं यदि सती, शक्तिवन्न जन्येत हेतुना पूर्वोक्तया
रीत्या । अथासती, तदा सत्कार्यवादः प्रहीयेत, असत्कार्यवादश्च प्रसज्येत । शक्ति-
व्यक्त्योरेकात्मकत्वे सदसत्पक्षभावी दोषः स्यात् । भिन्नात्मकत्वे तु पूर्वोक्त एव ।

अथ केयं शक्तिः? किं कारणस्यात्मा कार्यस्य वा? कारणात्मकत्वे तदेवोत्पत्तेः
प्राक् सत् कार्यमिति सत्कार्यवादहानिः । कार्यात्मकत्वे न कार्यकाले शक्तिः, तदात्म-
कत्वान्न प्रागिति कुतः कारणात्मनि शक्त्यात्मना सत्कार्यम्, अतो न शक्तिः । नापि
व्यक्तिः संभाविनी । शक्तेः कार्यकारणाभ्यामर्थान्तरभूतत्वे तत्त्वा¹न्यत्वाभ्यामवाच्यत्वे
न शक्तिर्न ²कार्यं न च कारणं स्यात् । यच्च न कार्यं न कारणं तन्न कस्य-
चिद³वग्राहकं प्रतिघातकं चेति । न मुमुक्षूणामपरस्यापि भावजातस्य सर्वस्य कार्य-
कारणभावननिषेधेन प्रतिघाततया विषयत्वसिद्धौ चेतसोऽविपर्यासान्मुक्तिसिद्धेरिष्टत्वात् ।
न च शक्तिः शक्तिमतोऽर्थान्तरभूता स्वरूपेण घटादिवदुपलब्धिलक्षणप्राप्ता भेदेन
नो(उ)पलभ्यते, नाप्यनुपलब्धिलक्षणप्राप्ता तत्कार्येण समग्रकारणेन शक्त्यभावे
तद्भावे च भवता चक्षुरादिवद्विज्ञानकार्येणोन्नीयमानसत्ताका शक्यते प्रतिपादयितुम्,
सद्रूपस्यैव कार्यस्य कर्तुमशक्यत्वात्, तदभावेन दृष्टान्तासिद्धेः । तत्त्वान्यत्वावाच्यापि
सामान्यन्यायत्वादनेनैव क्रमेण प्रतिक्रिया वेदितव्या । तथा सर्वेऽप्यनुपलब्धिलक्षण-
प्राप्ता वेदितव्याः ।

ननूत्पादे सति सत्त्वं भावस्यात्मेति कथं सद्भावः? अथोत्पादमन्तरेण सत् परि-

-
1. अतत्त्वा- भो०
 2. कारणं कार्यं च- ख. ग.
 3. न च विधिनिषेधात्- भो०

कल्प्यते, तदोत्पादात् प्रागनुत्पन्नाभावः सन्नुक्तः स्यात्। सत्त्वार्थो हि भावानामुत्पाद इष्यते। यदि चोत्पादमन्तरेण सत्त्वं¹ सिद्ध्यते, तदा किमुत्पादेन? भवत्वनुत्पन्नो भाव इति चेत्, न; तत्र पूर्वाभिहिताद् दोषात्पुनरभिधास्यमानत्वाच्च। अथोत्पादात् पूर्वस्य सतः कश्चिदसन्न भागः, तदर्थतोत्पादो न निष्कल इत्ययमपि पक्षो न घटते, सत्कार्य-वादप्रसङ्गात्। सदसतोरेकत्वासम्भवे सत्त्वस्यासत्त्वस्य च प्रसङ्गात्, तत्र दोषस्य प्रति-पादितत्वात्, व्यक्तिपक्षस्य पूर्वमेव निराकृतत्वात्। अथोपादेयः सत्तस्यासत् उत्पाद इति चेत्, अस्यापि पक्षस्यायुज्यमानत्वात्, तथा हि प्रथमोत्पादादेव सिद्धसर्वात्म-रूपस्य सतो द्वितीयोत्पादस्य वैयर्थ्यात्, सत्कार्यवादस्य प्रकृतत्वात्। पूर्वोत्पादादपि पूर्वसतः पूर्वोत्पादायोगात्, अनुत्पन्नपक्षस्य प्रागेव निराकृतत्वादिति सर्वथा सत् उत्पादो न युज्यते।

यदि सत् उत्पादो नास्त्यसतस्तर्हि किं भविष्यति? तथा हि कललादिषु कारणेषु शतशो विकीर्यमाणेष्वपि पाणिपादाद्यवयवसमुदायात्मकं शरीरं कार्यमुपलब्धि-लक्षणप्राप्तं यन्नोपलभ्यते तदसदेव। तथाहि रूपालोकचक्षुर्मनस्कारेषु पुरोवर्ति-नीलादिरूपाकारं चक्षुर्विज्ञानमन्यत्, श्रोत्रशब्दमनस्कारेषु वेणुवीणादिनीललोहिता-दिवाचकावाचकमनोज्ञामनोज्ञादिशब्दनिर्भासं न श्रोत्रविज्ञानं सत्। चम्पकवकुलादि-मनोज्ञामनोज्ञमध्यमगन्धाभासं नासिकाज्ञानं न नासागन्धमनस्कारेषु विद्यमानम्। रस-नारसमनस्कारेषु कटुतिक्तकषायादिरसाभासं रसनाज्ञानमसत्। न मनःकायस्प्रष्टव्येषु मृदुकर्कशादिस्पर्शप्रतिभासि कायविज्ञानमस्ति। तथा “षण्णामनन्तरातीतं विज्ञानं यद्धि तन्मनः” (अभि० को० १.१७) इति वचनाद्, अनन्तरातीतमनस्कारापरनाम-नीलादिरूपप्रतिभासेन परज्ञानं पृष्ठभावि नीलमेतदित्यादि विकल्पकं ज्ञानम्, न निर्वि-कल्पनीलादिरूपाकार एव ज्ञाने नीलादिरूपविषयमस्ति; तथा पृथक् पृथग् जनक-शब्दगन्धरसस्पर्शप्रतिभासिकर्णनासारसनाकायज्ञानानन्तरभावीनि शब्दादिकमवस्त्वे-तदिति विकल्पकानि ज्ञानानि निर्विकल्पशब्दादिप्रतिभासिश्रोतादिज्ञानेषु न विद्यन्ते। विकल्पज्ञानं नीलं² पीतमेतदित्यादिरूपं जायते। न च तत्रास्ति कारणे निर्विकल्पा-दपि पुरोवर्तिनीलादिरूपप्रतिभासिनः पूर्वस्मात् पूर्वस्माद् विज्ञानात् तदुत्तरमुत्तरमेक-

1. सिद्ध्येत- भो०

2. पीतम्-नास्ति भो०

सन्तानसंगृहीतद्वितीयादिक्षणभाविपुरोवर्तिनीलादिरूपक्षणपरम्पराविषयम¹विकल्पकं च ज्ञानमुत्पद्यते । न च कारणे तदस्ति । एवमन्यत्रापि विषये द्रष्टव्यम्, यत्रास्ति समानजातीयैकसन्तानलक्षणपरम्परासंभवः । यत्र तु नास्ति सन्तानैकप्रवृत्तिः, तत्रापि सर्वथा विच्छिन्नस्यैकस्याभावेऽन्यस्य चाव्यवधानेन सन्निधानेन निर्विकल्पकमिन्द्रियज्ञानम् । शब्दादिविषयसमूहेन शब्दादिसमानाकारं पूर्वशब्दादिग्राहिणो निर्विकल्पादिन्द्रियज्ञानादुत्तरं निर्विकल्पकं सविकल्पकं च तद्विषयं जायते । न च तदस्ति कारणे यथानुमतं घण्टाकंसनादवज्जलतरङ्गवच्च शब्दानां सन्ता²नेन प्रवृत्तिरिति तन्मते न पूर्वशब्दक्षणग्राहिणः श्रोत्रेन्द्रियज्ञानादविकल्पकादुत्तरशब्दक्षणग्राहि निर्विकल्पकं श्रोत्रेन्द्रियज्ञानमन्यच्च सविकल्पकं शब्दविषयमन्यद्वा ज्ञानमुत्पद्यते । व्याख्यानकाले च पूर्वपूर्वविकल्पादुत्तरोत्तरं विकल्पकं चेतः प्रवर्तते ।

ननु प्रथममेव विकल्पकं कुतो न जातम्, यतोऽपरं सविकल्पकं जायते । नात्र नियमोऽस्ति, कदाचिदिन्द्रियज्ञानादेकस्मात् सर्वतो वा । यथा गाढप्रसुप्स्यापातपतितदण्डसम्पर्कादुपजातस्पर्शविषयककायेन्द्रियज्ञानस्य पुरुषस्य कायेन्द्रियज्ञानाद् भवति, कदाचिद् महाशानिसन्निपाते³ च बुद्धस्य श्रोत्रेन्द्रियज्ञानात्, कदाचिदगरुकपूरचन्दनादिपरिमलासादितनासापुटविवृद्धघ्राणेन्द्रियज्ञानाद् गन्धगोचरात्, कदाचित् कटुतिक्तकषायादिद्रव्येण जिह्वायाः संपर्कादुत्पन्नरसनेन्द्रियज्ञानाद्रसविषयादविकल्पकात्, कदाचित् स्पर्शज्ञानानन्तरमुन्मीलितलोचनस्य गुरुजनादिरूपमभिवीक्ष्य चक्षुरिन्द्रियज्ञानादुत्पद्यते, कदाचिदस्तमितसमस्तेन्द्रियज्ञानस्य पूर्वसविकल्पमनोराज्यादिज्ञानानुकारि सविकल्पकं ज्ञानं पुनर्विकल्पयतो जायते । तदेव युगपदिन्द्रियज्ञानतः पञ्चभ्यः षड्भ्यो वा । यथा षड्विज्ञानानन्तरं निद्रावतः पूर्वचिन्तितस्वप्ने जल्पतः कथं शशविषाणादेरिवासत उत्पत्तिः, सर्वतः सर्वोत्पत्तिप्रसङ्गात् । जगतो ह्युत्पत्त्यादिकं मायोपमम् ।

ननु कथमवसीयते निर्विकल्पमिन्द्रियज्ञानं न सविकल्पमिति । अत्र तावद् बहिरर्थदर्शने सौत्रान्तिकानां स्थितिपक्षे बालव्युत्पत्त्यर्थं यथास्मरणं दिङ्मात्रं किञ्चि-

1. विकल्पकं- भो०

2. ०नैक- भो०

3. अबुद्धस्य- भो०

दाख्यायते। तत्र ज्ञानं ज्ञेयं चेति द्वौ भावौ व्यवस्थितौ, तृतीयादिविद्यते नापरः, कर्तृकरणादीनां तत्रैवान्तर्भावात्। तथा हि ते कल्प्यमानाः प्रमाणावसायादिपूर्वकं कल्पनीयाः, प्रमाणनिबन्धनत्वात् पदार्थव्यवस्थायाः। अन्यथेदमेवं नेदमिदानीं नेदानीमिदमिति देशकालस्वभावान्तरपरिहारेण देशान्तराद्यवगमाभावाद् गाढस्वाभावस्थानात् पूर्वमेव हिताहितपरिहानात्मकव्यवहारविरहितं जगत् स्यात्। ये तु नार्थक्रियाकारिणः शशविषाणादिवत्, तेऽपि न बहिरवस्थिताः। केवलमनादिविकल्पवासनोद्भूता विकल्पानुविधायिनो न ¹परार्थिका ज्ञेय(या) एवेति द्वावेव भावौ। तत्र ज्ञानज्ञेययोरेकात्मकत्वं नास्ति। तदात्मकत्वे तु ज्ञानमेव, ज्ञेयमेवाद्वयम्। तदपि वा न स्यादुभयापेक्षत्वाद् द्वयोः। ज्ञेयपक्षे अन्धमूकं जगत् स्यात्। ज्ञानस्यानन्यत्वे ज्ञानपक्षे तु ज्ञेयस्य ज्ञानत्वे बहिरर्थदर्शनमुत्सीदेत, न चैतदिष्टं बाह्यार्थवादिनाम्। तत्र तयोः परस्परपरिहारेणावस्थाने ज्ञानात्मनि ज्ञेयस्याप्रवेशाज्ज्ञानमेवापरप्रकाश्यतया प्रकाशते न ज्ञेयम्, तस्याप्रकाशात्मकत्वात्। तदात्मकत्वे पूर्वदोषप्रसङ्गात्। ज्ञानस्याऽप्यप्रकाश्यत्वे ज्ञेयभावी दोषः। परप्रकाश्यत्वेन परेऽप्यधिकं तस्य प्रकाशत्वम्। परोऽप्यपरप्रकाश्यः स्यादितरो वा। अन्यथा परेण प्रकाशितमिदमिति न स्यात्। प्रकाशितमित्येतदपि न स्यात्। स्वयं प्रकाशरूपमित्येव स्यात्, तत्प्रकाशकाग्रहणे प्रकाशितत्वात्। अन्यथानुपपत्त्या तत्प्रकाशत्वप्रतीतिरपि दुर्लभा, प्रकाशकाग्रहणे प्रकाशित्वाप्रतिपत्तेः। प्रकाशितत्वग्रहणे हि तदन्यथानुपपत्त्या प्रकाशकप्रतीतिः, तत्प्रतीत्या च प्रकाशितत्वप्रतीतिरित्यन्योन्याश्रयदोषः।

किञ्च, यो हि यत्स्वभावो भावः स स्वभावेनान्यानुपरञ्जयति। यथा रागद्रव्येण संयोगाद् धवलं द्रव्यं भवति रक्तम्, एवं कृष्णद्रव्येण कृष्णं हरितेन हरितमित्यादि। प्रदीपतेजसाप्रकाशं प्रकाशसहितं रूपं भवेत्। यत्पुनः स्वयमप्रकाशात्मकं तत्कथमात्मनोऽपरमप्रकाशात्मकं प्रकाशयेत्। नहि दण्डेनाप्रकाशात्मना तमसि घटादयः प्रकाश्यन्ते, प्रदीपादीनामनुपादानप्रसङ्गात्। परस्मात् प्रकाशभावमासाद्यापरं प्रकाशयेदिति चेत्, न; ततः प्रकाशभावयोगात्। तथाहि यः सोऽपरः स तावत् स्वयं प्रकाशात्मा न भवति परं कथं प्रकाशयेत्। तस्यापरतः प्रकाशभावे तस्याऽप्यपरत इत्यनवस्थानान्न किञ्चित् प्रकाश्यं प्रकाशकमित्यन्धमूकं जगत् स्यात्। ततश्चायमेवं

नेदमित्यादिदेशकालस्वभावविधिनिषेधात्मव्यवहाराभावात् सर्वमेवास्तमितं स्यात् । न चैवम् । एतेनेतरपक्षो निराकृतः ।

भवतु तर्हि स्वयंप्रकाशात्मकं ज्ञानम्, तथापि कथं तेन ज्ञेयं प्रकाशितं स्यात् । न हि ज्ञानस्वरूपं ज्ञेयमावहति ज्ञेयस्वरूपं वा ज्ञानम्, तयोरत्यन्तभेदादिति पूर्वं प्रतिपादितम् । अथात्यन्तभेदेऽपि यथा रागद्रव्येण शुक्लद्रव्यस्य संयोगाद् रक्तता, तमसि स्थितानां पटादीनां यथा वा दीपादिप्रभास्वरद्रव्येण सन्निधानात् प्रभास्वरता, तथा ज्ञानवतः सन्निधानाद् ज्ञेयस्य प्रकाश्यतेति चेत्, न; ज्ञानज्ञेययोरत्यन्तभेदे दृष्टान्तासिद्धिः । तथा हि दृष्टान्तो नाम ज्ञेयात्मको न ज्ञानात्मकः । तयोरत्यन्तभेदे ज्ञानात्मनि प्रकाशात्मके प्रतिभासमाने तदनात्मस्वभावो दृष्टान्तः कथं प्रतिभासेत, येन दृष्टान्तः स्यात् । सिद्धो हि प्रमाणेनार्थः स्याद् दृष्टान्तः । स च प्रमाणाद् भिन्नतया स्थितः । तस्मिन् प्रकाशमाने तदनात्मा कथं प्रकाशेत । ततो दृष्टान्तासिद्ध्या न किञ्चिदिष्टं सिद्धमिति सर्वसत्त्वबधिरादिजगत् स्यात् ।

तथा हि ज्ञानमुत्पन्नमनुत्पन्नं वा? उत्पत्तिपक्षे रूपादिकारणसद्भावः स्यात्, तदभावे च साकारं निराकारमन्याकारं [वा] स्यात् । तत्राद्ये पक्षे तादात्म्यतदुत्पत्तिभ्यां ज्ञेयेन ज्ञानस्य सम्बन्धो नास्ति भेदात्प्रकाशात्मना ज्ञेयस्य इति कथं कस्यचित् प्रतीतिः स्यात् । तथा ज्ञेयादनुत्पन्नस्य ज्ञानस्य नास्ति तदाकारतेति न तदाकारज्ञानवेदनमप्यर्थवेदनमौपचारिकं सिद्ध्यतीति सर्वथा नार्थप्रतीतिः स्यात् । नित्यानित्यसत्त्वासत्त्वपक्षास्तादात्म्यतदुत्पत्त्यभावे भेदात्तदाकारतां विहाय पूर्ववन्नार्थप्रतिपत्त्यङ्गमिति न चिन्तनीयाः । तादात्म्यतदुत्पत्त्यभावे सम्बन्धान्तरकल्पना नोपपद्यते, तस्योपकारप्रभावितत्वात्, अनुपकारे पूर्वदोषप्रसङ्गात्, उपकारे वा तदुत्पत्तिपक्षप्रसङ्गात्, पश्चान्निरूपयिष्यमाणत्वात् । सर्वथाऽनुत्पन्नपक्षो नान्यप्रतिपत्तावङ्गम् ।

तदभावपक्षस्तदुत्पन्नपक्ष एव । केवलं तत्र नार्थो बाह्यं कारणम् । ज्ञानमेवार्थाभासं विनाप्यर्थेनोत्पद्यते । अनादिज्ञानसन्तानप्रभावितात् समनन्तरप्रत्ययात्, स्वप्नविज्ञानवदिति विज्ञानवादिनः । तथा हि द्वारं पिधाय गृहोदरे शयितस्य निमीलितलोचनस्य गृहातिरिक्तप्रमाणमातङ्गतुरङ्गमाद्याकारं विज्ञानं विनापि मातङ्गादिभिरर्थैरुत्पद्यते । न च ते स्वप्रतिभासिनोऽर्थाः करितुरङ्गादयो युज्यन्ते, चक्षुर्व्यापाराभावे तेषां प्रतिभासनात् । नहि निमीलितचक्षुषोऽन्धस्येव रूपप्रतिभासोऽस्ति । चक्षुर्व्यापारस्यापि तत्रोप-

लम्भ इति चेत्, सत्यमस्ति तदुपलम्भः, नहि तत्रोपलम्भाभावः साध्यतेऽपि तु चक्षु-
रिन्द्रियाभावः। कथमन्धस्य सुप्तस्य तदभावे स्वप्ने नीलादिरूपं प्रतिभासते, रहिते
स्वप्नेऽन्यत्र वा विद्यन्ते, तेषां वह्निदग्धदेहत्वात्। कथं वा स्वल्पागारांदरे महाप्रमाण-
मेदिनीनभोमण्डलस्थितास्तरुगिरिसागररविविम्बादयः प्रतीयन्ते। न हि ते तत्र
प्रविष्टाः स्थिता वा, सुप्तावस्थायां प्रतिभासाभावात्। अविकलोपलम्भकरणा हि
साधारणमर्थजातमुपलम्भन्त एव पुमांसः सर्वे। यदि च स्वप्नेऽर्थाः सन्ति, कथमु-
पाध्यायादयो व्याख्यायां विकुर्वाणा तत्रोपलब्धाः प्रवृद्धावस्थायां पृष्टाः परिहरन्ति?
तत् सर्वं तैस्तस्याविस्मृतित्वादिति चेत्, न; सर्वदा विस्मरणाभावात्। यदि नाम
व्यर्थोऽस्ति स्वापावस्थायाम्, किमियता दृष्टान्तमात्रेण जाग्रदशायां शून्यं विज्ञानं
सिद्ध्यति। नहि तैमिरिकज्ञानं मिथ्येति वितिमिरं ज्ञानं मिथ्या स्यात्। तथा हि यद्वि-
ज्ञानमभ्रान्तं नार्थशून्यमविसंवादात्। अविसंवादश्चार्थोत्पत्तेरन्यथार्थमन्तरेण भवतो
1ज्ञानार्थप्राप्तिरविसंवादलक्षणा मिथ्या2ज्ञानादि न स्यात्। सा चार्थोत्पत्तिरन्वय-
व्यतिरेकाभ्यां साक्षादिन्द्रियज्ञानस्य। तथा हि तिमिरादिदोषविरहिणि चक्षुषि सति
ज्ञानं तदभावे न भवति। निमीलितलोचनस्य सत्स्वपि रूपालोकमनस्कारेषु 3पुन-
रुन्मीलितो भवति। तथा सत्यालोके भवति तदभावे न भवति। सत्स्वपि अन्येषु
चक्षुरादिषु करणेषु पुनः प्रदीपादिप्रकाशे भवति तथा पुरोवर्तिघटादिरूपसद्भावे
भवति। तदपसारे न भवति। सत्स्वन्येष्वालोकादिषु पुनस्तद्भावे भवति तथा मन-
स्काराभिधाने विज्ञाने सति जायते तदभावे न भवति। सत्स्वपि घटादिष्वतिगाढ-
निद्रावस्थायां पुनस्तत्प्रबोधे भवति। तत्रैकैकापाये न तद्भूत4ज्ञानस्योत्पत्तौ सर्वेषां
सामर्थ्यमुन्मील्यते।

तथा चक्षुषस्तस्य रूपप्रवृत्तिर्न शब्दादौ, न चक्षुषा शब्दादयः प्रतीयन्ते। श्रोत्रे-
न्द्रियादीनां परिकल्पनायां वैयर्थ्यप्रसङ्गाद् बधिरादीनामभावप्रसङ्गाच्च। न च शब्दा-
दयस्तस्य जनकाः, येन तत्र ते प्रतिभासेरन्। अजनकानामपि प्रतिभासे सर्वेऽर्थाः
प्रत्यक्षा इति सर्वः सर्वदर्शी स्यात्। सर्वत्रेन्द्रियज्ञानव्यवस्थेयमेवेति रूपादिबिम्बाकारं

1. ज्ञानार्थोऽप्रा०- ख. ग. भो०
2. ज्ञानादिव- ख. ग.
3. तदभावे न भवति- इत्यधिकं भो०
4. तद्भूतो विज्ञानस्योत्पत्तौ- भो०; तद्भूतो ज्ञान०- क.

चक्षुरादिविज्ञानं जायते, न निराकारमन्याकारं वा, ताभ्यामर्थवेदनाऽऽसम्भवात् । तथाहि यथा स्वमुखं पुरुषस्य सर्वदाऽप्रत्यक्षम्, आलोकादर्पणे तत्प्रतिबिम्बदर्शनात्तदनुभवः । प्रतिबिम्बानुभव एव स्वमुखरूपानुभवस्तस्य पुरुषस्य, न प्रतिबिम्बानुभवादन्त्यः साक्षादनुभवस्तस्य कश्चित् । तथाऽर्थवादिनां सर्वेषामेवार्थः कदाचिदपि न स्वयं प्रत्यक्षः । तस्य ज्ञानादर्शप्रतिबिम्बानुभव एव तदनुभवः । तद्दर्शनमेवार्थदर्शनम् । नहि स्वयमर्थः प्रत्यक्षः । तस्य प्रत्यक्षत्वे प्रत्यक्षात्मकत्वाद् विज्ञानस्य विज्ञानमेव स्यान्नार्थः, तस्य ¹प्रत्यवेक्षत्वेन ज्ञानत्वापत्तेः ।

अथ अर्थ एव प्रत्यवेक्षा न विज्ञानम्, तदप्रत्यक्षत्वे सर्वाप्रत्यक्षत्वप्रसङ्गः । प्रतिबिम्बाप्रत्यक्षत्वे स्वमुखाप्रत्यक्षत्ववत् तत्प्रत्यक्षत्वायोगात् । तस्मान्नार्थः प्रत्यक्षः । तत्र यदि नीलाकारादन्याकारं विज्ञानं स्यान्न नीलाकारं तदा सद्रूपमेव तद्विज्ञानम् । तस्यैव ²तत्संवेदनं न नीलस्य नीलाकारविभक्तत्वात्, संवेदनस्य सदसदाकारविविक्तं न नीलविज्ञानं पीतविज्ञानं वा । यत्र यद्रूपं न तत्तस्य संवेदनं यथा पीतज्ञानं कृष्णस्य । यथा दर्पणे स्वमुखप्रतिबिम्बं स्वमुखाकारं परमुखाकारविविक्तं स्वमुखस्यैव संवेदकम्, न परमुखस्य, तदाकारविविक्तत्वात्तस्य । तथान्याकारं संवेदनं न नीलाकारस्य अर्थस्य वेदनकातिप्रसङ्गात्, असंवेदनाच्च । नापि निराकारवेदनं नीलार्थवेदकम् । तद्धि सर्वार्थाकारविविक्तं सर्वप्रतिबिम्बविविक्तमिवादार्शमण्डलं कथमर्थस्य वेदकम् । नहि दर्पणतलं निखिलप्रतिबिम्बरहितं प्रतिबिम्बविरहितानां स्वमुखादीनां वेदकम् । तद्विज्ञानमपि कस्यचिदर्थस्य रूपमात्मन्यप्रतिबिम्बयेत् (यन्), कथमिवार्थावबोधकं स्यात् । न चार्थः स्वमुखमिव स्वयं प्रत्यक्षः, पूर्वोक्तदोषात् । तस्मान्नान्याकारनिराकाराभ्यामर्थसंवेदनसंभव इत्यलमतिप्रसङ्गेन, दिङ्मात्रं तु दर्शितम् । इतः परं ग्रन्थविस्तरभयान्न लिखितम् ॥ ३ ॥

संभवान्नादरूपाद् विनिष्क्रान्ताः समयाचारगोचराः ।

दुर्लभं त्रिषु लोकेषु आदिमध्यान्तसंस्थितम् ॥ ४ ॥

कुत एवंभूतः संभूतस्त्वमित्याह— संभवादित्यादि । संविभज्य देवता भवन्त्यनेन संभव आलिकालिसमवायः । तत्रापि कुत इत्याह— नादरूपादिति । नादः शब्द

1. प्रत्यक्षत्वेन ज्ञानत्वसिद्धेः— भो०
2. स्वसं०— भो०

मात्रम्। तस्य ¹प्रतिनिधिर्दण्डमात्रम्। तस्य रूपं स्वरूपं यथा ²स्वासने स्वरव्यञ्जन-
समूहस्तदुपरि हँकारः, तन्निष्पन्नं विश्ववज्रं वरटकोपरि नस्थ(न्यस्य) हँकारं तदुपरि
नान्तरेण(अव्यवहित)कृष्णहँकारस्तदुपरि रक्त आःकारस्तदुपरि शुक्ल ॐकारो
भाव्य इति। प्रणवादेर्निःस्वभावीक्रियमाणस्य यन्नादमात्रम्, तन्नादमात्रे तद्विन्दावसा-
वर्धचन्द्रः। स ³ॐकारे, स ⁴आःकारस्य पार्श्वविन्दुद्वये तद्वहिः पार्श्वदण्डे, स
⁵तकारपृष्ठलग्ने पार्श्वदण्डे, स ⁶तकारे, स मस्तके, तद् ⁷हँकारस्य नादमात्रम्।
तत्रादं स विन्दौ सोऽर्धचन्द्रे स मस्तके, ततः विन्दौ स हकारे स हकारपूर्वार्धे स
हकारो(रा)ऽपरार्धे पार्श्वदण्डयोस्तद् उकारे स विश्ववज्रस्थस्य हँकारस्य नादमात्रम्।
तन्नादं स विन्दौ स मस्तके स हकारपूर्वार्धे स हकारो(रा)ऽपरार्धे पार्श्वदण्डयोः। स
उकारे स विश्ववज्रस्य पूर्वपार्श्वस्य मध्यशूके स वामशूके, स दक्षिणपार्श्वस्य
दक्षिणशूके स मध्यशूके स वामशूके, स पश्चिमपार्श्वस्य दक्षिणशूके स मध्यशूके स
वामशूके, स उत्तरपार्श्वस्य दक्षिणशूके स मध्यशूके स वामशूके, स पूर्वपार्श्वस्य
दक्षिणशूके स मध्यकर्णिके स शून्यतास्वरूपे प्रविष्ट इति विचिन्त्य, ततः पुनः
पूर्वपार्श्वस्य दक्षिणशूके, तत उत्तरपार्श्वस्य वामस्ततो मध्ये, ततो दक्षिणे, ततः
पश्चिमपार्श्वस्य वामः, ततो मध्यस्ततो दक्षिणः, ततो दक्षिणपार्श्वस्य वामस्ततो
मध्यस्ततो दक्षिणः, ततः पूर्वपार्श्वस्य वामस्ततो मध्यस्ततो वरटकस्थस्य हँकार-
स्योकारस्ततो हकारस्यापरार्धपार्श्वदण्डौ ताभ्यां हकारस्य पूर्वार्धम्, ततो मस्तके
ततोऽर्धचन्द्रः ततो विन्दुः, ततो नादः, ततो नादमात्रम्। तत उकारस्ततो हकारो-
(रा)ऽपरार्धे पार्श्वदण्डौ, ताभ्यां पूर्वार्द्धम्, ततो मस्तकम्, ततोऽर्धचन्द्रः, ततो विन्दुः,
ततो नादः, ततो नादमात्रम्। ततस्त⁸कारस्य मस्तकम्, ततस्त⁹कारः, ततः

-
1. प्रति आधारभूतं सूक्ष्ममात्रं- भो०
 2. स्व- नास्ति भो०
 3. ओकारे- भो०
 4. अकारस्य- भो०
 5. ओकार- भो०
 6. अकारे- भो०
 7. आद्य- इत्यधिकः भो०
 8. अकारस्य- भो०
 9. अकारः- भो०

पार्श्वदण्डः, ततोऽपरपार्श्वदण्डः, ततो बिन्दुद्वयम्, तत ओकारः, ततोऽर्धचन्द्रः, ततो बिन्दुः, ततो नादः, ततो नादमात्रम्। तदुद्धृता आसनस्थमूला मृणालसूत्रसूक्ष्मस्थिता भाव्यमानदेवता । चाष्टहस्तपरिमाणा शुक्ला विशुद्धकर्मक्लेशवासनाधारभूता विज्ञानालम्बनप्रज्ञापारमितास्वभावप्रज्ञोपायात्मवज्रसत्त्वस्वभावा भाव्या बुद्धरेखेति । नादरूपमिति द्वयतो मायोपमत्वेन जातोऽहमिति भावः । हिरवधारणे । इत्थं द्वादेव निष्क्रान्तो द्वादशाङ्गप्रतीत्यसमुत्पादविशुद्ध्या द्वादशभुज एव प्रकृतः । चिह्नान्युपदेशात् । वक्ष्यति वा “हस्तिचर्मविरुद्धं च” इत्यादि । न केवलमहं ततो निष्क्रान्त इत्याह — **विनिष्क्रान्ता** इत्यादि । समयो गोकुदहनादि, तस्याचारः सेवा । स एव गोचरो यासां डाकिनीलामादीनां ताः **समयाचारगोचराः** । गोचरो विषयः समयो निर्माणम् । तच्च सत्त्वार्थप्रतिबद्धमिति **केचित्** । निष्क्रान्तशब्दो बहुवचनान्तोऽप्ययमेकवचनान्तो वज्रधरेण सम्बन्धनीयः, विभक्तिविपरिणामात् ।

किं त्वं परमार्थज्ञानस्वरूप इत्याशङ्क्याह — **दुर्लभमित्यादि** । प्रज्ञोपायौ द्वौ विकल्पस्तृतीय इमे त्रयः । तयोर्द्वेधेन विकल्पितत्वेन सान्निध्याद् विकल्पस्तृतीयः । यदि पश्चाद् विकल्पो न भवति प्रज्ञोपाययोरिव सुलभोऽहमिति भावः । ताभ्यामभ्यस्यमानाभ्यामनासक्तत्वेन सकलक्लेशविविक्तरूपसहजज्ञानसाक्षात्करणात् । ततो विज्ञानस्वरूपोऽहं निर्विकल्पकत्वादेव । अत आह — **लोकेष्विति** । लोकनं लोको दर्शनमुपलम्भ इति यावत् । ते च प्रज्ञोपायग्राह्यादुपलम्भात् । लोकशब्दादेव विकल्पो लभ्यते, उपलम्भस्य तत्प्रसूतत्वात् । अथवा आनन्दपरमविरमेषु दुर्लभः । “न विद्यते सहजं त्रिष्वे(षु)” इति **वचनात्** । शेषं पूर्ववत् । अत आह — **आदीत्यादि** । सविकल्पकत्वादादिमध्यान्तेषु संविभज्य स्थितो येनाहं दुर्लभः । सुलभत्वमन्वयेन बुद्धिस्थीकृत्य दुर्लभत्वमुक्तम् । भावश्चायम् — नेदं मदीयं रूपं यदुत सविकल्पं नाम, यतो निर्विकल्पमेव मे रूपम्, तादृग्ज्ञानात्मकत्वात् । तच्च दुर्लभं विकल्पेनेति, अथवा विचित्रविपाकविमर्दक्षणेऽसंस्थितेषु नष्टोऽदर्शनीभूत इति² यावत्, अनुभवाभावात्, ततोऽहं दुर्लभः । विलक्षणक्षणे हि सर्वोपलम्भविविक्तस्य सहजाख्यस्य ज्ञानस्यानुभवात् ॥ ४ ॥

1. सार्धचतुर्हस्त- भो०

2. इत्यर्थः- भो०

मन्थमन्थानसंयोगं यथा तथा मन्त्रजापध्यानादिभिर्युक्तम् ।

योगं चैव विधिज्ञानं तन्त्रे निगदितं शृणु ॥ ५ ॥

अर्थाक्षिप्तेन प्रज्ञोपाययोगेन सुलब्धं सिद्धम्, तथापि तदेव कथमित्याह— मन्थ-
मन्थानसंयोगमिति। मन्थः प्रज्ञाभागो मन्थान उपायभागः, धर्मसंकेतात्। तौ सम-
रसत्वेन युज्येते यत्र तत्तथा। मन्थमन्थानसंयोगं यथा भवति तथाहं सुलभः। स
श्रीहेरुकसंयोगे वक्ष्य इति सम्बन्धः। सहजज्ञानस्वरूपो भगवान्। तदेव कीदृशि-
त्याह— यथा तथेति । एतच्चतुरक्षरं वाक्यं सर्वथा—

आइ ण अन्त ण मज्झ नहिं णो भव णो निव्वाण ।

एहु सो परम महासुह णो पर णो अप्पाण ॥ (दो० को०, पृ० २१)

स्वसव्येतरपाणेस्तु वृद्धा चानामिका तथा ।

ताभ्यां [नि]पीडयेद् योगी संभोगे लहरीद्वयम् ॥

पश्चादुत्पद्यते ज्ञानं कुमारीसुरतं यथा ॥

इति यथाशब्दार्थः। “चतुर्थं तत्पुनस्तथा” (गु० तं० १८.११२) इति तथाशब्दार्थः।
ग्रन्थभागद्वयार्थो गुरूपदेशतो बोद्धव्यः। नेह छन्दःशब्दादि विवेचनीयमार्षत्वात्।
रहस्यशब्दाभिधेयं सविशेषणम्। श्रीहेरुकसंयोगमभिधाय तस्यैवाभिधेयं योगादिप्रति-
पादयितुमाह— मन्त्रेत्यादि। मन्त्रा अष्टपदादयः, तेषां जप एव जापः, आवर्तनम्।
ध्यानं देवताकृतिचिन्तनम्। आदिशब्दात् कुलिकापूजा, दूत्यः, कामसिद्धिः, बोधि-
चित्तबिन्दुबोधिसत्त्वादिपूजा, सर्वपापविमुक्तिः, योगित्वसाधनम्, समयपालनम्, सम-
यरक्षणम्, पञ्चामृतभक्षणम्, गणचक्रे सोमपानवत्पञ्चामृतास्वादः, द्वीन्द्रियसमापत्तिः,
दिव्यसौख्यम्, प्रशंसा, गिरिगह्वरादिस्थानम्, मण्डलादीनि तत्त्वानि दश, गुरुवीरवीरे-
श्वरीमण्डलपूजा, शिष्यमण्डलप्रवेशः, ततोऽभिषेकदानम्, मुद्रा, आचार्यपूजा,
डाकिनीभुवनविजृम्भणम्, मन्त्रोद्धारः, विद्याराजकर्मप्रसरः, लौकिकाष्टसिद्धिसाधनम्,
छोम्मकविधिः, कर्ममुद्रालक्षणम्, ताभ्यां भाषणगमनागमनक्रिया, डाकिनीलक्षणम्,
मुद्राप्रतिमुद्रादर्शनम्, समयनामकथनम्, लौकिकलोकोत्तरा अष्टौ महासमयाः, एकत्र
चरुभोजनम्, बलिदानम्, सुम्भराजमन्त्रोद्धारः, तस्य कर्मप्रसरसाधनम्, मन्त्रबिम्ब-

ध्यानम्, निर्विकल्पतत्त्वभावना, लोकोत्तरोत्तमः, ततश्चतुर्वक्त्रमन्त्रपदसहितवीरवीरेश्व-
रीनामान्तर्गतचित्तवज्रादिमन्त्रजापः, पीठादिदशभूमिचतुर्विंशतिस्थाननिर्देशः, निशा-
दिगवासादि, सप्तत्रिंशद्बोधिपाक्षिकधर्माः, ततः खण्डकपालादिचतुर्विंशतिधातुवि-
शुद्धिः, देवीभूचरखेचररूपपरिवर्तनम्, सप्तत्रिंशत्कुलनाडीचक्रसञ्चारभोगलयाधिकाः,
धर्मचक्रप्रवर्तनम्, ततो निर्माणसंभोगधर्मशुद्धिकायस्वभावता, शून्यताकरुणाभिन्न-
स्वभावता चेत्येतेषां ग्रहणम्। योगः शान्तिकपौष्टिकवश्याभिचारादिकर्मसमाधिः।
विधिज्ञानमिति। विधीयत इति विधिः, सुकृतादि कर्म, तस्य ज्ञानं ज्ञातव्यत्वम्, तद-
स्तीति। एतच्च सूचयिष्यति—

घृतपूर्णं यथा भाण्डं स्थापितमग्निमध्यके ।

द्रवन्तं द्रवते सर्पिः । कालं नश्यति भाण्डयोः ।

तथा नश्यति पापं च श्रीहेरुकेति नामतः ॥ (च० सं० ५१. ७-८)

इति वचनेन। अथवा विधिरिहातीतानागतप्रत्युत्पन्नरूपः कालः। ज्ञानमष्टौ ज्ञान-
कायाः। विधिश्च ज्ञानं चेति विधिज्ञानम्। योगं विधिज्ञानं रहस्यमित्यादिपदाभिधेयं
वक्ष्य इति सम्बन्धः। तन्त्रे खसमाख्ये निगदितं निखिलसंग्रहेण गदितं यत्तद्रहस्यादि-
पदाभिधेयम्। ततश्च तच्छृणु वज्रवाराहि! तस्य साध्यत्वादिति भावः। संक्षिप्तश्च
ग्रन्थस्तस्य तन्त्रस्यान्यत्सति का क्षतिः। एवमित्यादि तत्रैवोक्तत्वान्नोक्तम्। अपूर्व-
ग्रन्थसंक्षेपे कथमेतदपूर्वत्वात् तस्येति चेत्, न; मूलतन्त्राभिधेयसम्बन्धेनापूर्वत्वा-
भावात्। “एवं मया श्रुतमिति भिक्षवो मम धर्माः संगतव्याः” इति वचनात् संगतु-
रेवेदानीं तेन सम्बन्ध इति चेत्, न; संगतुश्च भगवदुक्ताभिधानाभिधेयरूपेण तन्त्र-
संगानात्। यदि भगवती देशिका तदा कथं स्थित इत्यादि पदयोग इति चेत्, स्थित
इत्यादिपदैः श्रीहेरुकसंयोगं वक्ष्ये। स कीदृश इत्याह— “रहस्ये परमे” (च० सं० १.२)
इत्यादि योज्यम्। तन्त्र्यतेऽनेनार्थ इति शब्दसंदोहः। अर्थ इह त्रिधा भिन्नः 2फलहेतु-
पायरूपेण। फलं वैपुल्यरूपं समन्तभद्रत्वम्। हेतौरेवाभ्यासावस्थाविशेषापन्नत्वम्।
हेतुस्तु माण्डलेयदेवतासमूहः। उपायश्चतुर्भूतसमेरुकूटागारादिः। इत्थमस्य तन्त्रता।
तथा चाह—

1. मलं- भो०

2. हेतुफलोपायरूपेण- भो०

प्रबन्धस्तन्त्रमाख्यातं स प्रबन्धस्त्रिधा भवेत् ।

आधाराकृत्युपायैश्च त्रिभिस्तन्त्रार्थसंग्रहः ॥ इति (गु० त० १८. ३३-३४)

रहस्यमितिपदेनातिसंक्षेपात् सकलतन्त्राभिधेयमुक्तम् । ततः श्रीहेरुकसंयोगमित्यादिना विस्तराद् विवृतिभावेनोक्तम् । इदानीमतिविस्तरादाह आतन्त्रसमासेः ॥ ५ ॥

मध्यमोत्तमश्वासेन गन्धोदकसहितेन तु ।

कुलिकां पूजयेन्नित्यं कालविशेषेण तु ^१दूतिकाः ॥ ६ ॥

तदेवाह— मध्यमेत्यादि । मध्यम उत्तमः श्वसित्यस्मिन्ननेनेति वा श्वासः । स्थानं कालो वा । मध्यमो वह्निः, “पृथिव्यप्तेजोवायवः” इति वचनेन मध्यमोद्भूतत्वात् । मध्यमोद्भूतत्वेऽप्युपायग्रहणं यतस्तं वक्ष्यति— उत्तमो माहेन्द्रो देवराजत्वात् । मध्यमोत्तमयोः श्वासः स्थानं कालो वेत्यर्थः । तेन कुलिकां पूजयेदिति सम्बन्धः । किं भूतेनेत्याह— गन्धेत्यादि । गन्धोऽस्यास्तीति गन्धो गन्धवाहत्वाद्वायुः । उदकमस्यास्तीत्युदको वरुणः । तयोः स्थानेन सहितो गन्धोदकसहित इति मध्यपदलोपी समासः । घृतपूर्णं घटो घृतघटो यथा । तुशब्दः पादपूरणे । ततोऽयमर्थः— कुलिका योगिनी, तां पूजयेदाराधयेत् । नित्यं सर्वकालं प्रतिदिनमित्यर्थः ।

कालविशेष इति । कालविशेषेषु शुक्लप्रतिपदादिप्रहरार्धभागेषु यथोपदेशम् । शुक्लप्रतिपदमारभ्य प्रातरर्धप्रहरे पुंकारजे शिरसि ॐ कर कर प्रचण्डे हूँ हूँ ३फट् फडिति मन्त्रजां प्रचण्डां भावयेत् । द्वितीये जांकारजायां शिखायां ॐ कुरु कुरु ४चण्डाक्षि हूँ हूँ फट् फडिति मन्त्रजां चण्डाक्षीम् । तृतीये ओंकारजे दक्षिणकर्णे ॐ बन्ध बन्ध प्रभावति हूँ हूँ फट् फडिति मन्त्रजां प्रभावतीम् । चतुर्थे अंकारजे मस्तकपृष्ठे ॐ त्रासय त्रासय महानासे हूँ हूँ फट् फडिति मन्त्रजां महानासाम् । पञ्चमे गोंकारजे वामकर्णे ॐ क्षोभय क्षोभय वीरमति हूँ हूँ फट् फडिति मन्त्रजां

1. नास्ति संस्कृतमातृकासु, गृहीतस्तुभोटानुसारी ।

2. यत्साधारणत्वेन ग्रहणत्वात्— भो०

3. अत्रेदं विशेषेण ज्ञातव्यं यत् संस्कृतमातृकासु मन्त्रेष्वेव फट् फडिति फट्कारस्य द्विरुक्तिर्वर्तते किन्तु भोटमातृकासु फडिति एकैव ।

4. चतुर्विंशतिदेवतानामसु सर्वत्र इकारान्तेषु भोटपाठे ‘ईये’ प्रयुज्यते यथा चण्डाक्षीत्यत्र चण्डाक्षीये, खर्वरीत्यत्र खर्वरीये, इत्यादि । संस्कृतमातृकासु सर्वत्र सम्बोधनरूपस्यैव प्रयोगः ।

वीरमतीम्। षष्ठे रांकारजे भ्रूमध्ये ॐ हौं हौं खर्वरी हूँ हूँ फट् फडिति मन्त्रजां खर्वरीम्। सप्तमे देंकारजयोः चक्षुषोः ॐ हः हः लङ्केश्वरि हूँ हूँ फट् फडिति मन्त्रजां लङ्केश्वरीम्। अष्टमे माँकारजे स्कन्धद्वये ॐ फें फें द्रुमच्छाये हूँ हूँ फट् फडिति मन्त्रजां द्रुमच्छायामिति चित्तचक्रम्। देवीनामासनं वह्निमण्डलमिति दिन-भागः।

रात्रेः प्रथमार्धप्रहरे काँकारजे कक्षद्वये ॐ फट् फट् ऐरावति हूँ हूँ फट् फडिति मन्त्रजाम् ऐरावतीं भावयेत्। द्वितीये ओंकारजे स्तनद्वये ॐ दह दह महाभैरवे(वि) हूँ हूँ फट् फडिति मन्त्रजां महाभैरवा(वी)म्। तृतीये त्रिंकारजां(जे) नाभौ ॐ पच पच वायुवेगे हूँ हूँ फट् फडिति मन्त्रजां वायुवेगाम्। चतुर्थे कोंकारजे नासाग्रे ॐ भक्ष भक्ष वसरुधिरान्त्रमालावलम्बिने सुराभक्षि हूँ हूँ फट् फडिति मन्त्रजां सुरा-भक्षीम्। पञ्चमे कैंकारजे मुखे ॐ ग्रिह् ग्रिह् सप्तपातालगतभुजङ्गं सर्पं वा तर्जय तर्जय श्यामादेवि हूँ हूँ फट् फडिति मन्त्रजां श्यामादेवीम्। षष्ठे लँकारजे कण्ठे ॐ आकड् आकड् सुभद्रे हूँ हूँ फट् फडिति मन्त्रजां सुभद्राम्। सप्तमे काँकारजे हृदि ॐ 1हीं हीं हयकर्णे हूँ हूँ फट् फडिति मन्त्रजां हयकर्णाम्। अष्टमे हिंकारजे मेढ्रे ॐ ज्णों ज्णों खगानने हूँ हूँ फट् फडिति मन्त्रजां खगाननामिति वाक्चक्रम्। देवीनामासनं वारुणमण्डलमिति रात्रिभागः।

द्वितीयायां तिथौ प्रातरर्धप्रहरे प्रेंकारजे लिङ्गे ॐ क्ष्माँ क्ष्माँ चक्रवेगे हूँ हूँ फट् फडिति मन्त्रजां चक्रवेगां भावयेत्। द्वितीये गुँकारजे गुदे ॐ 2हां हां खण्डरोहे हूँ हूँ फट् फडिति मन्त्रजां खण्डरोहाम्। तृतीये सौंकारजे ऊरुद्वये ॐ हीं हीं शौण्डिनि हूँ हूँ फट् फडिति मन्त्रजां शौण्डिनीम्। चतुर्थे सुंकारजे जंघायुगे ॐ हूँ हूँ चक्र-वर्मिणि हूँ हूँ फट् फडिति मन्त्रजां चक्रवर्मिणीम्। पञ्चमे नँकारजे पादाङ्गुलीसञ्चये ॐ किलि किलि सुवीरे हूँ हूँ फट् फडिति मन्त्रजां सुवीराम्। षष्ठे सिंकारजे पादपृष्ठद्वये ॐ सिलि सिलि महाबले हूँ हूँ फट् फडिति मन्त्रजां महाबलाम्। सप्तमे मँकारजे पादाङ्गुष्ठद्वये चिलि चिलि (हिलि हिलि) चक्रवर्तिनि हूँ हूँ फट् फडिति मन्त्रजां चक्रवर्तिनीम्। अष्टमे कैं(कुँ)कारजे जानुद्वयोः(ये) ॐ धिलि धिलि महा-

1. हिं हिं- भो०

2. हं हं- भो०

वीर्ये हूँ हूँ फट् फडिति मन्त्रजां महावीर्यामिति कायचक्रम् । देवीनां माहेन्द्रमण्डल-
मासनमिति दिनभागः ।

तस्यामेव रात्रौ प्रथमप्रहरद्वये प्रचण्डा-चण्डाक्षी-प्रभावती-महानासानां समीपे
यथाक्रमं काकास्या-उलूकास्या-श्वानास्या-शूकरास्याः । द्वितीयप्रहरद्वये वीरमती-
खर्वरी-लङ्केश्वरी-द्रुमच्छायाणां समीपे यथाक्रमं यमदाढी-यमदूती-यमदंष्ट्रिणी-यम-
मथन्यो भाव्याः । एवं पुनस्तृतीयायास्तिथेश्चित्तवाक्चक्राभ्यामहोरात्रः । ततश्चतुर्थ्याः
कायश्मशानचक्राभ्यां यातीति द्वात्रिंशद्योगिनीसंचारः । एवं पञ्चम्यादिषु ज्ञेयः ।
श्रीहेरुको डाकिन्यादयश्चतस्रो योगिन्यो विज्ञानचक्रम् । आसां च संचारो नास्त्युप-
देशाभावात् । षण्मासान् यावद्भावनाजपौ विधाय निमित्तमासाद्य ततो योगिनीसंचारः
साप्तमासिको योगिना विधेयः । एवं यद्यसिद्धिस्तदा पुनस्तथैव भाव्यः । इत्थं षट्त्रिंश-
न्मासैर्नियमेन सिद्ध्यतीत्युपदेशः । सादरनिरन्तराभ्यासो वार्षिकः । ततः षण्मासा-
द्यभ्यास इति क्रमः । अग्न्यादियोगोऽप्यभिचारादेस्तथैव ज्ञेयः । यथा अभिचारे चित्त-
चक्रस्य वह्निक्षणे, शान्तिके वाक्चक्रस्य वरुणक्षणे, पौष्टिके कायचक्रस्य माहेन्द्र-
क्षणे, उच्चाटने श्मशानचक्रस्य वायुक्षणे योगिनीनामन्यतमा भाव्या । आग्नेयश्चतुर-
ङ्गुलो वायुः, माहेन्द्रो दशाङ्गुलो वायुः, वायव्यः षडङ्गुलः, वारुणो द्वादशाङ्गुलः ।
“अग्नीन्द्रवायुवारुणानां चतुः-दश-षड्-द्वादशभिरङ्गुलिभिर्निर्गमस्थाननियमः” इति
वचनात् । किञ्च, ऊर्ध्व उष्णो वह्नेर्वायुः, नातिशीतो नात्युष्णः पूरितनासांपुटो माहेन्द्र-
स्य, तिर्यगूक्षश्च वायोः, वारुणस्यातिशीतोऽधो वहति । अग्न्यादिमण्डलं तु तत्राग्ने-
स्त्र्यस्त्रं रक्तं सप्तशिखाङ्गम्, माहेन्द्रस्य चतुरस्त्रं पीतं वज्राङ्गम्, वायोर्धन्वाभं नीलं
पता[का]ङ्गम्, वरुणस्य परिमण्डलं घण्टाङ्गं शुक्लं वायोर्निर्गमेनाग्न्यादिक्षणाः ।
कुलिकापूजां दर्शयता सिद्धिरादौ दर्शिता, तस्या एव साध्यत्वेन प्राधान्यात् ॥ ६ ॥

दूतयः सहजाः सिद्धा अधमोत्तममध्यमाः ।

अन्तर्गतेन मनसा काम^१सिद्धिं तु भावयेत् ॥ ७ ॥

कुलिकाः कियत्य इत्याह— दूतय इत्यादि । पूर्वकुलिकामिति जातिमात्रेणैक-
वचनम् । ततश्च दूयन्ते सत्त्वदुःखेन तप्यन्त इति दूतय इति बहुवचनम् । कुलिका दूतय

इति पर्यायकथनम् । ताः सहजा भगवतः प्रकृतिसमा डाकिन्यादयश्चतस्रः । ता इति तस्य ज्ञानस्वभावाः । सिद्धा इति यमदाढ्यादयोऽष्टौ योगिन्यः । अधमाः काय-चक्रगाः पातालवासिन्यः । मध्यमा वाक्चक्रगा भूचर्यः । उत्तमाश्चित्तचक्रगाः खेचर्यः । इत्येताः षट्त्रिंशद् योगिन्य एव पूज्या इति भावः । कायबहिर्मण्डलाभ्यां साध्यः श्रीहेरुक इति सिद्धम् । किमभ्यासवता भाव्या इत्याह — अन्तरित्यादि । कामा रूप-शब्दादयः, तेभ्यस्तैर्वा श्रीहेरुकसिद्धिः । भावयेद् भावं स्वसत्तां करोतीत्यर्थः । काम-सिद्धिः सती भवतीति यावत्, “रूपशब्दादयः कामाः” (गु० त० १८.८५) इति वच-नात् । कथमेवमित्याह — मनसेति । विज्ञानेनेत्यर्थः । “चित्तं मनोऽथ विज्ञानं विज्ञप्तिः” इति वचनात् । अन्तर्गतेनेति । स्वाभिन्नश्रीहेरुकरूपेण चित्तेनेत्यर्थः । सर्वकामोपभोगेन श्रीहेरुकयोगी सिद्ध्यतीत्याशयः । तथा चाह — “सर्वकामोपभोगैस्तु सेवयंश्चाथ (शु) सिद्ध्यति” (गु० त० ७.३) इति । अतस्तुशब्द एवकारार्थः, निष्क्रियस्य साध्यसिद्धेर-भावात् । भावनारूपा मनोमयी । रूपादिविषयोपभोगलक्षणा बहिःपूजा ॥ ७ ॥

स्वरेतोबिन्दुभिर्बुद्धान् बोधिसत्त्वांश्च पूजयेत् ।

दर्शनस्पर्शनाभ्यां च श्रवणस्मरणेन च ॥ ८ ॥

साक्षात्पूजामाह — स्वरेत इत्यादि । बहिःप्रज्ञायां तन्त्रान्तरोक्तलक्षणायां पूजार्थं बोधिचित्तमुत्पादयेत् । तस्योभयसमापत्तिं तस्य बिन्दुभिरमृतास्वादरूपेण विशोध्य भुक्तेर्बुद्धान् रूपवेदनादीन् पञ्चस्कन्धान् बोधिसत्त्वांश्चक्षुरादिरूपान् पूजयेत् । एवं त्रिसन्ध्यमनुष्ठेयमिति साक्षात्पूजा । तदाह —

१ गुह्यशुक्रं विशालाक्षो भक्षयेद् दृढबुद्धिमान् ।

इदं तत्सर्वमन्त्राणां कायवाक्चित्तपूजनम् ॥ इति ।

गुह्यपूजा तु सहजसंवेदनम्, चतुःपूजासंपत्त्या सिद्ध्यतीति भावः । अनेन योगेन पूर्वोपचित्तस्य पापस्य पुण्यस्य च ग्राह्याद्यभिनिविष्टस्य नाशादपूर्वमेवानभिनिवेशसम्पन्नं पुण्यम् । ततः सिद्धिराह — दर्शनेत्यादि । दर्शनं चक्षुषोपलम्भः, स्पर्शनं कायेन्द्रियेण, श्रवणं श्रवणेन्द्रियेण, स्मरणं मन इन्द्रियेणेति ॥ ८ ॥

मुच्यते सर्वपापैस्तु एवमेव न संशयः ।

योगित्वं परमं पुण्यं पवित्रं पापनाशनम् ॥ ९ ॥

एभिः श्रीहेरुकसम्बन्धिभिः करणभूतैः पुरुषोऽन्योऽपि मुच्यते त्यज्यते, सर्वपापै-
र्निशेषकायादिदुश्चरितैः कर्तृभूतैः । निष्पापयोगा निष्पापता । एवमेवेति । एतदेव
1 पर्यायोक्तमित्यर्थः । एतत् किं सत्यमित्याह — न संशय इति । नात्र द्वैधमित्यर्थः ।
दर्शनादिना ग्राह्याद्यभिनिविष्टेन मुच्यते, सहजगुह्यवेदनक्षणयोगात् । इतीयं गुह्यपूजा ।
तत्र चैवमेवेति त्रैधातुकमेव न किञ्चिदित्यर्थः । न संशय इति कल्पनाया अभावा-
दिति केचित् । योगिदर्शनादेव कथमिदमित्याह — योगित्वमिति श्रीहेरुकयोगित्वम् ।
परममिति दर्शनमात्रादेव सर्वपापहारित्वात् । अत एव पुनातीति पुण्यम् । पवित्रमिति
क्लेशमलरहितत्वात् । पापनाशनमिति पञ्चानन्तर्यादिविनाशकत्वात् ॥ ९ ॥

सिद्ध्यते जपमन्त्रेण 2 जापेन ध्यानेन च ।

समयान् पालयेन्नित्यं साधकः सुसमाहितः ॥ १० ॥

भावयेदित्युद्दिष्टस्य निर्देशमाह — सिद्ध्यत इत्यादि । सिद्ध्यत इतीकारस्थान
एकारो विकृतः, साक्षाद्भवतीत्यर्थः । जपेति तृतीयालोपे, स च मानसो व्यापारः, तेन
मन्यते धर्मधातुं त्रायते लोकधातुमिति प्रज्ञोपायात्मकः श्रीहेरुको मन्त्रः सिद्ध्यति ।
मन्त्रेणेति प्रथमार्थे तृतीया । जापेनेति वाचो व्यापारो दर्शितः । ध्यानेनेति चेतसो
व्यापारः, प्रज्ञोपायात्मकत्वेन कायस्य व्यापारः । जपादिकं केन सहकारिणा सफल-
मित्याह — समयानित्यादि । समया उक्ताः, नित्यभावेऽपि तेषां भावनयाऽप्युपयोग इति
भावः । तथा चोक्तम् —

इदं ते नारकं वारि समयातिक्रमाद् दहेत् ॥ इति ।

समयाचारगोचरा इत्यस्य निर्देशः । साधक इति । साधको हि नित्यं भावनां च
कुर्वाणो गोकुदहनानां पञ्चामृतस्य च वटिकां भावनारम्भे भक्षयेत् । तेन हि
निर्विघ्नता [भवति] । सुसमाहित इति । सुष्ठु समेन वैषम्यरहितेन प्रज्ञोपायात्मकेन
योगेन समन्ताद्धितः पुष्टः । समयश्चान्यत्रोक्तः । तथा चाह —

1. क्रम- भो०

2. सुखेन- भो०

नादिं गादिं तथा हादिमन्तश्चमादिश्वं च [वा] ॥ इति । १० ॥

(हे० त० 1.11.8)

भेदेन समयानां तु न दीक्षामण्डले सिद्धिरवाप्यते ।

मधु^१ रक्तं सकर्पूरं रक्तचन्दनयोजितम् ॥ ११ ॥

तत्रापि कथमेवं गूढसंकेत इत्याह— भेदेनेत्यादि । भेदोऽसमयज्ञप्रतिपत्तिः । तुर्यस्मादर्थः । भेदेन हि वस्तुतत्त्वापरिज्ञातृणां प्रतिक्रियादुभयावद्यम् । ततो न सिद्धिर्न साधकः । तन्त्रमन्त्रनयसंदोहेन सिद्धिरिति भावः । “न मन्त्रमण्डले सिद्धिरवाप्यते” इति पाठे मन्त्रेण तत्त्वचोदनभाषणेन मण्डलं (मण्डं) बोधिं लाति येन तत्तथा । मन्त्रमहायानमिति व्याख्येयम् । सर्वत्र च समयः सेव्यः, तद्भेदश्च न कार्य इतीयं साक्षात्पूजा ।

अपरां पञ्चामृतसेवारूपां साक्षात्पूजामाह— मध्वित्यादि । मधु साधर्म्यात् मधु शुक्रम्, संयोगे त्रिदोषघ्नत्वेन संकेतितत्वात् । रक्तं प्रसिद्धम् । कं सुखं शरीरे पूरयतीति कर्पूरम् । वर्णागमविनाशाभ्यां सिद्धिः (द्धिः), तच्च मांसम् । रस्यतेऽन्नादीति रक्तं मूत्रम् । चन्दनमाह्लादकरत्वाद्वैरोचनः ॥ ११ ॥

गणमध्ये प्रतिष्ठं तु सर्ववज्राङ्गचिह्नधृक् ।

अनामाङ्गुष्ठवक्राभ्यां लेहयेद्योगवित् सदा ॥ १२ ॥

गणमध्ये गणचक्रमध्ये । मध्येशब्दः सामान्यसम्बन्धप्रतिपादकः । प्रतिष्ठत इति प्रतिष्ठम् । तुरेवार्थः । किमाधारं तदित्याह— सर्वेत्यादि । सर्वं वज्रं विश्ववज्रम्, तदेवाङ्गचिह्नमस्येति सर्ववज्राङ्गचिह्नम्, तच्च कपालम्, तत्र ध्रियत इति तत्तथा । कथमुपयोक्तव्यमित्याह— अनामेत्यादि । वक्त्रे लिह्यत इति लेहम् । तत्कुर्यात्, लेहयेत् । योगविदिति अमृतास्वादयोगवित्, चित्तमात्रसमापत्तिमानिति वा । सदेति । मण्डलेयदेवतापरिषदा सह पञ्चामृतं भक्षयेदित्यर्थः ॥ १२ ॥

सोमपानवदास्वाद्य सिद्धिमाप्नोति शाश्वतीम् ।

पञ्चामृतं भवेदत्र सर्वसिद्धिप्रवर्तकम् ॥ १३ ॥

इह विचिकित्सा न कार्येत्याह— सोमेत्यादि । विप्राणां यागकाले कालिङ्गलतारसं कपिलगौचर्मणि निधापयेत् । स च सोमः, तस्य पानं तच्चायुष्यं पुण्यवर्धनम् । विप्रैर्यथा निःसंशयैः सोम आस्वाद्यते, तथा पञ्चामृतमास्वाद्य योगी सिद्धिमाप्नोति शाश्वतीम् । शाश्वत¹फलदात्मकत्वान्निर्विचिकित्सास्वादनमात्रेण दृष्टान्तः, न तु फलेन । यथाह—

विष्णुमूत्रशुक्ररक्तानां जुगुप्सां नैव कारयेत् ।

भक्षयेद् विधिना नित्यमिदं ²कार्यं त्रिगुह्यजम् ॥ इति । (गु० त० १७.४७)

एतन्मध्वादि किमुच्यत इत्याह— पञ्चेत्यादि । पञ्चानाममृतानां समाहारः पञ्चामृतम् । देवतायोगेन विचिकित्सारहितत्वेनामृतास्वादविधिना चास्वाद्य सर्वमन्नपानादिकममृतं भवेदिति समुदायार्थः । कथमेतच्छाश्वतसिद्ध्यावाहकमित्याह— सर्वेत्यादि । सर्वलौकिकलोकोत्तराः सिद्धीः प्रवर्तयतीति तत्तथा ॥ १३ ॥

चतुष्पूजा ³तथा ⁴वीरा मनसेप्सितयोगिन्यः ।

⁵वीराद्वयसमापत्ति समापन्नं च तत्त्वधृक् ॥ १४ ॥

उद्देशनिर्देश⁶पिण्डार्थमाह— चतुरित्यादि । चतस्रः पूजाश्चतुष्पूजा इत्यस्यार्थः, बाह्यगुह्यमनोमयसाक्षाद्भावभेदेन ता उक्ताः । अत आह— तथेति । “मध्यम्” (१.६) इत्यादिना प्रकारेण निर्दिष्टा इत्यर्थः । योगिन्य इति डाकिन्यादयश्चतस्रः काकास्यादयोऽष्टौ च । वीरैरद्वयेन रूपेण समापत्तिर्यासां ता वीराद्वयसमापत्तिशब्दार्थः, विभक्ति-लोपात् । समापन्नं यथा भवति तथा । तत्त्वं वज्रवाराह्यभिन्नं स्वभावं धारयतीति तत्त्वधृक् । तुकस्तकारेण ककारे चणः । श्रीहेरुकसंयोग इति स उद्दिष्टः ॥ १४ ॥

दिव्यमानुष्यतासौख्यं पिण्डीकृत्य तदेव च ।

तदेव वज्रकणिकया कलां नार्घन्ति षोडशीम् ॥ १५ ॥

1. फलोदयात्मक- भो०
2. गुह्यं त्रिवज्रजम्- गु० त० १७.४७
3. महा०- भो०
4. ‘वीरा मनसेप्सित’ नास्ति संस्कृतमातृकासु, गृहीतस्तु भोटानुसारी ।
5. द्वयेन्द्रियसमा०- भो०
6. सामान्यार्थमाह- भो०

दिवि भवं दिव्यम्, तच्च सुखम्, मानुष्यमस्यास्तीति प्रकृतिर्मानुष्यता, सा च सुखस्वभावेऽद्वये सति सिद्धा। कथं सुखं लभ्यत इत्याह— सौख्यमिति। सुखं चेतसः सौस्थित्यं तदेव सौख्यम्, तच्च नरकप्रेततिर्यग्गतिगतानां सामान्यम्। पिण्डमभिनम्। वज्रं निर्मला बुद्धिः, तदेव कणिका सूक्ष्मत्वात्। वज्रं च कणिका चेति वज्र-कणिका, सहजं ज्ञानमित्यर्थः। दिव्यं मानुष्यतां सौख्यं चाभित्रीकृत्य स्थितया करण-भूतया वज्रकणिकया षोडशीं कलामपि। नार्घन्ति न पूजयन्ति, क्लेशा इति शेषः। अस्योपायस्य क्लेशविजयसाध्यत्वाद् यथा तथेत्युद्दिष्टस्य पिण्डत्वेन निर्देशः॥ १५॥

गिरिगह्वरकुञ्जेषु महोदधितटेषु वा ।
आदिसिद्धे श्मशाने च तत्र मण्डलमालिखेत् ॥ १६ ॥

इति हेरुकाभिधाने मण्डलावतार[विधि]पटलः प्रथमः ॥ १ ॥

अभिषेकमन्तरेण न सिद्धिः। स च मण्डलप्रवेशं विना नास्तीत्याह— गिरीत्यादि। गिरिः पर्वतः। गह्वरशब्देन तद्भित्तिद्वयान्तरम्। कुञ्जशब्देन लतादिपिहितः प्रदेशः। महोदधितटा द्वीपाः। आदिसिद्ध इति। आदौ सिद्धा यत्र प्रदेशे स तथा। श्मशानं शवनिलयः। तत्रेति निमित्तसप्तमीयम्। अभिषेकार्थं मण्डलमालिखेदिति ॥ १६ ॥

इतिशब्दः पटलार्थसमाप्तौ। श्रीहेरुकस्य साङ्गोपाङ्गस्याभिधीयतेऽनेनेत्यभिधानं तन्त्रं शब्दशरीरम्। तत्र मण्डलावतारविधिपटलः। अवतरत्यनेनेत्यवतारः, स एव विधीयत इति विधिः श्रीहेरुकादिमण्डलावतारविधिः, तदभिधायकः पटलो ग्रन्थ-परिच्छेदः प्रथम एकः।

इति श्रीचक्रसंवरविवृतौ प्रथमः पटलः ॥ १ ॥

*

चक्रपूजाविधिपटलो द्वितीयः

तत्रापातगोमयेन मण्डलभूमिं प्रलेपयेत् ।
श्मशानभस्मना युक्तं पञ्चामृतसमन्वितम् ॥ १ ॥

मण्डलमाह— तत्रेत्यादि ।

यस्मिन् कर्मणि विद्यन्ते न कर्मविधयः स्वकाः ।
तत्र सामान्यतन्त्रोक्तो विधिराश्रीयते बुधेः ॥

इति सामान्यतन्त्रोक्तो न्यायः । इह तु कश्चित् ¹साधारणो विधिरुक्त इति, तत्रेत्यादि-
नाह— तत्रेति । मण्डलवर्तनार्थमपातगोमयेन वैरोचनेन गिरिगह्वरादिषु मण्डलार्थं भूमिं
मण्डलभूमिं स्थानमुपलेपयेत्, शिष्येणाचार्यः । पुनस्तदुपरि श्मशानभस्मादिना लेप-
येदित्याह— श्मशानभस्मना युक्तं पञ्चामृतसमन्वितं च यथा स्यात् तथा ॥ १ ॥

उपलिप्य ततो² भूमिं तत्र मण्डलमारभेत् ।
[ततस्तद्भावनां कृत्वा] श्मशानं तु ³समाचरेत् ॥ २ ॥

अपातगोमयलेपानन्तरं भूमिमुपलिप्य मण्डलमारभेदितिसम्बन्धः । अपात-
गोमयलेपानन्तरं श्मशानभस्मादिलेपः । तथापि कुतोऽनन्तरं मण्डलारम्भ इत्याह—
तत इति । रक्षाचक्राद्यनन्तरम् । श्मशानं तु समाचरेदिति । श्मशानादेरन्यत्र यदि
मण्डलवर्तनं तदा तत्र श्मशानं भावयेदिति भावः ॥ २ ॥

चित्यङ्गारचूर्णेन श्मशानेष्टकसंयुतम् ।
आलिखेन्मण्डलं दिव्यमाचार्यः ⁴सर्वलक्षणम् ॥ ३ ॥

रज आह— चित्यङ्गारेत्यादि । श्मशानेष्टकमिति । चितिः मृत्तिका श्मशानेष्टका-
भावनयापि तत्सम्पादनम् । चित्यङ्गारश्मशानेष्टकरजसा श्मशानमारभेदिति केचित् ।

-
1. साधारणासाधारणो- भो०
 2. मण्डलं- भो०
 3. परीक्षयेत्- भो०
 4. पुण्य- भो०, सुल०- क.

इष्टकायां ह्रस्वत्वम् । कृष्णं पीतञ्च रजोद्वयम् । असर्वजनगोचरत्वाद्विव्यम् । आचार्य इति—

सद्धर्माध्यापको यश्च व्याख्याता चोपदेशदः ।

अभिषेक्ता कर्मकर्ता चान्यः (चाचार्यः) सदुदाहृतः ॥

इत्युक्तलक्षणः । विशेषेण गुरुरेव । “गुरुराचार्यशब्देन पण्डितैः परिगद्यते” इति¹ यावत् । इदं चाभिषेकार्थं पुण्यत्वं वा । यदि मण्डलवर्तनं सिद्ध्यर्थं चेदालिखेद् योगी । स च सुष्ठु सर्वलक्षणम् ॥ ३ ॥

सम्यग्ज्ञान²तन्त्रज्ञः श्रीहेरुक³गुह्यमन्त्रवित् ।

अक्रोधश्च शुचिर्दक्षो योगज्ञो ज्ञानपारगः ॥ ४ ॥

विशेषणद्वारेण लक्षणमाह— सम्यगित्यादि । सम्यगविपरीतं ग्राह्यादिरहितं ज्ञान-मस्येति सम्यग्ज्ञानः । स चासौ संवरादितन्त्रज्ञश्चेति सम्यग्ज्ञानतन्त्रज्ञः । श्रीहेरुक-मन्त्रज्ञ इति । श्रीहेरुकश्चाष्टपदादयो मन्त्राश्च, तान् यथोपदेशं जानातीति स, तथा । श्रीहेरुकस्य सततमन्त्रजापी वा । वर्तमानमपकारमार्गस्य चेतस आध्यातः क्रोधः, तदभावादक्रोधः । शुचिरिति कौकृत्यमलरहितः । दक्षः कुशलोत्साही । योगः शान्ति-कादिस्तस्य पारः पर्यन्तस्तद्गतवानिति योगपारगः ॥ ४ ॥

कपालकृतमूर्धजो [भस्मानुलिप्ताङ्गकः] सम्भवान्⁴मात्रैर्विभूषितगात्रः, अस्थि⁵मलास्थिसंस्थितश्च एकखण्डीकृतमूर्धजः ॥ ५ ॥

कपालैः पञ्चभिः कृतं शेखरं येन स कपालकृतमूर्धजः । भस्मना श्मशानिकेन चानुबन्धिकेनानुलिप्तमङ्गं येन स भस्मानुलिप्ताङ्गः । संभवान्मात्रैर्विभूषितगात्रस्थितिः । विद्यमानत्वान्निरंशुकैः विशेषेण भूषितं गात्रं येन स तथा । अस्थीनि मलन्त इति अस्थिमलाः सत्त्वाः, तेषामस्थीनि तेषु संस्थित उपविष्टः । किञ्च सम्भवान्मात्र-

-
1. न्यायात्- भो०
 2. तत्त्वज्ञः- क.
 3. मन्त्रज्ञः- टी०, सर्वज्ञः- क.
 4. मुद्रै- भो०
 5. माला- भो०

शब्देन रत्नसम्भवमिश्रोऽमिताभ उच्यते, तेन कृताङ्गराग इति केचित् । तत्रास्थीत्या-
दिना आभरणमेवोच्यते । एकखण्डीकृतमूर्धज इति । खण्डः प्रदेशः । एकः खण्डो
येषां ते तथा । एकखण्डीकृता मूर्धजा येन स तथा । अन्यकेशकृतमुकुट इत्यर्थः ॥ ५ ॥

अस्थिमालावलम्बी च खट्वाङ्गकरसंस्थितः ।

आत्मानं श्रीहेरुकं ¹ध्यात्वा श्रीहेरुकं ततः स्मरेत् ॥ ६ ॥

अस्थिमालाया अवलम्बो यज्ञोपवीतं सोऽस्यास्तीत्यस्थिमालावलम्बी । चकारः
समुच्चये । खट्वाङ्गधारिणा वामेन करेण सम्यक् स्थित इति खट्वाङ्गकरसंस्थितः ।
इत्याभरणादिद्वारेण विशेषेण जातम् । एवंभूतो यथोपदेशं समाण्डलेयदैवतं श्रीहेरुक-
मात्मानं ध्यात्वा श्रीहेरुकं स्मरेत् ॥ ६ ॥

[एवं प्रदर्श्य समयं] चक्रमस्य हृदि न्यसेत् ।

एवं सन्नह्यमात्मानं प्राकारं ²दिक्षु भावयेत् ॥ ७ ॥

एवमिति । समाण्डलेयदैवतं श्रीहेरुकं ज्ञानात्मकं तादृशं समयं श्रीहेरुके
³प्रदर्शयेत् । चक्रमस्य हृदि न्यसेदिति । अस्येति हेरुकीभूतस्यात्मनः । हृदि काये ।
ततोऽयमर्थः— प्रचण्डादिदेवीः खण्डकपालादींश्च वीरान् स्वकाये पुल्लीरमलयादौ
नखदन्तादौ च न्यसेदिति । असतिर्गत्यर्थो भौवादिकः । एवं संनह्येति । आत्मानं
श्रीहेरुकं कृत्वा वर्तितव्यस्य रजोमण्डलस्य बहिः प्रागेव प्राकारं दिक्षु भावयेत् ।
मनुते ज्ञानमात्रीभवतीति निरुक्तविधिना मकारो हल् । एतदात्मनो विशेषणम् ।
ज्ञानमात्रमात्मानं श्रीहेरुकीकृत्येत्यर्थः । परमार्थतो ज्ञानमात्रमेवेदमिति भावः ॥ ७ ॥

⁴एवं सन्नह्यमात्मानमधो ह्यस्त्रं विनिवेशयेत् ।

⁵चक्रमस्य सममात्मानमूर्ध्वं तु शरजालकम् ॥ ८ ॥

-
1. कृत्वा- क. भो०
 2. प्राकारं तु दिशा न्यसेत्- भो०
 3. प्रवेशयेत्- भो०
 4. नास्ति- भो०
 5. चक्रास्त्रमाला- भो०

श्रीहेरुकमेव कथं भावयेदित्याह— एवं संनह्यमात्मानमिति । मकारः पूर्ववत् । स्कन्धादिशुद्ध्यादिनाऽऽत्मानं लब्धारम्भं कृत्वा श्रीहेरुकम् विनिवेशयेदिति क्रिया । अधो ह्यस्त्रमिति । अधो ह्यस्त्रमपि विनिवेशयेत् । ऊर्ध्वं शरजालकं चक्रस्य । ततः समाण्डलेयदेवतां श्रीहेरुकं निवेशयेत् ॥ ८ ॥

१ आत्मनः खेचरं पञ्जरं कृत्वाऽऽत्मानं सुसमाहितः ।

एवं सन्नह्य सकवचमभेद्यस्त्रिदशैरपि ॥ ९ ॥

आत्मन उपरि खेचरं वज्रं तन्मयं पञ्जरं च कृत्वा श्रीहेरुकं निवेशयेदिति सम्बन्धः । सकवचत्वं च श्रीहेरुकनिष्पत्तौ षड्वीरादिमन्त्रकवचविधिः ॥ ९ ॥

एवं सुरक्षमात्मानं मुद्रामन्त्रैरलङ्कृतम् ।

आलिखेन्मण्डलं घोरं महासिद्धिप्रदायकम् ॥ १० ॥

एवं सुरक्षमात्मानमिति । नैरुक्तो मकारः पूर्ववत् । मुद्रा वज्रवाराही । मन्त्रा मूलमन्त्रादयः । अथवा मुद्रा चिह्नमुद्रा । मन्त्राः करकरादिमन्त्रस्य ॐ कर-कर हूँ हूँ फट् फडित्यादयो विभक्तावयवाः । एवमात्मानं सुरक्षामण्डलमालिखेदिति सम्बन्धः । श्रुतिस्मृत्यादिव्यवहारविमुखत्वाद् घोरम् । महेत्यादिना सिद्धयर्थमपि मण्डलं वर्तयेदिति दर्शयति । पूर्वोक्तेन विधिना सादनिरन्तरभावनापर्यन्तेन मण्डल-पूर्वकमहोरात्रेण जापादिना सिद्धिं साधयेदिति भावः ॥ १० ॥

ततो मृतकसूत्रेण महारुधि^२रार्चितेन वा ।

सूत्रयेन्मण्डलं घोरं हेरुकस्य परं पुरम् ॥ ११ ॥

एकहस्तं चतुरष्टं चतुरस्त्रं^३ समन्ततः ।

चतुर्द्वारसमाकीर्णं चतुस्तोरणभूषितम् ॥ १२ ॥

घोरत्वनिमित्तमाह— तत इत्यादि । पान(अपात)गोमयलेपवज्रपञ्जराद्यनन्तरम् ।

1. पुनः- इत्यधिकम् भो०

2. रञ्जितेन- क. भो०

3. ंस्त्रं तु- क.

महारुधिरार्चितेन वेति । मृतकखट्वाङ्गवेष्टितस्वभावत्वात् । घोरमिति । श्मशान-
परिवृतत्वात् । श्रीहेरुकशब्दार्थविवृत्या मण्डलनैरात्म्यदर्शनाद्वालानां भयजनकत्वाद्
वा । परं पुरमिति । श्रीहेरुकस्य निजत्वात् । चतुरष्ट्रं चेति । चत्वारोऽष्टौ वा हस्ताः
परिमाणमस्येति तत्तथा । शेषं सुगमम् ॥ ११-१२ ॥

विचरेद् द्विगुणं मन्त्री १ पूजयेद् डाकिनीजालसंवरम् ।
तस्य मध्ये २ पद्मं प्रतिष्ठाप्य सपत्रं कर्णिकोज्ज्वलम् ॥
३ पुष्करैश्च केसरान्वितम् ॥ १३ ॥

विचरेद् द्विगुणमिति । द्विहस्तमष्टहस्तं षोडशहस्तं चेति । सूत्रस्य विशेषण-
मिदम् । चक्रद्विगुणत्वं सूत्रस्येति प्रतिपादितम् । मन्त्रीति जप्तविद्यः । तस्य मण्डलस्य
मध्ये डाकिनीजालसंवरं पूजयेदित्यर्थः । किं कृत्वेत्याह — प्रतिष्ठाप्येत्यादि । सह
विश्ववर्णैः पत्रैर्वर्तत इति सपत्रम् । किं तदित्याह — कर्णिकोज्ज्वलमिति । इयं विश्व-
पद्मस्य संज्ञा । पुष्करैर्बीजकोशैर्लक्षितम् । बहुवचनं स्फरणेन बहुत्वात् । चकारात्
सुविकसितत्वादि । केसरं किञ्जल्कम्, तेनानुरूपवेष्टनं तेनेदं प्राप्तम् । परिपूर्णकेसर-
मिति भावः । शेषं सुबोधम् ॥ १३ ॥

कर्णिकायां न्यसेद्वीरं महाभैरवभीषणम् ।
तेजस्कं तु सुदीप्ताङ्गमट्टहासमहारवम् ॥ १४ ॥

महारौरवादिनरकपालादिभ्योऽपि भयजनकत्वाद् भीषणः । तेजस्करोतीति तेज-
स्कः । तुर्यस्मादर्थः । तेजस्कत्वात्सुदीप्तः । सुदीप्तं चेति पाठे चकारः पादपूरणे । अट्ट-
हासमहारवमिति । ४ अलीकनिर्माणेन कुतूहलादट्टाट्टहासरूपो महारवो गगनव्यापको
मुखरवो यस्य स तथा ॥ १४ ॥

कपालमालाभरणं दिव्यं त्रिनेत्रं चतुर्मुखम् ।
हस्तिचर्मावरुद्धं च वज्रसम्भिन्नसुभ्रुवम् ॥ १५ ॥

1. जपेद्- क.
2. नास्ति- क.
3. नास्ति- भो०
4. आलिकालिनिर्माणेन- भो०

कपालमालां विभर्तीति कपालमालाभरणः। क्लेशकपालग्रहणविशुद्धिरेषा। दिवि सुखरूपायां भवं दिव्यम्। त्रिविमोक्षविशुद्ध्या प्रत्येकमुखं त्रिनेत्रम्, चतुर्विमोक्षविशुद्ध्या चतुर्मुखम्। हस्तिचर्मावरुद्धं चेति। भुजद्वयेन तत्प्रावरणत्वात्। हस्तिसाधर्म्यात् क्लेशसमूहो हस्ती। तथा चाह— “गजचर्मपटार्द्रधृग्” (ना० सं० ७.३) इति। तस्य हि भिन्नस्यापि मायोपमावस्थानं चर्म, तेन प्रावरणं संवृतिर्मायोपमा, अत एव तत्पृष्ठतो धृतं न हृदि। तुच्छत्वेनानवग्रहादिति हस्तिचर्मप्रावरणम्। चकार एतदेवावृतं व्यनक्ति। वज्रवत्सम्यग्भिन्ने नानात्वं गते सत्यौ भुवौ यस्य स वज्रसंभिन्नसुभूः भुवोर्मध्यं वरटकम्। भुवौ नेत्रे तयोरधः त्रिशूकमिति सिद्धं वज्रं तदुक्तं “भूमध्यं वज्रवरटकम्” इति ॥ १५ ॥

१खट्वाङ्गकृतहस्तं तु शतमालार्धभूषितम् ।
तस्यालिङ्ग्यं स्थिता देवी वज्रवाराही सुघोरा ॥ १६ ॥

खट्वाङ्गकृतहस्तं त्विति। कृतं सत्त्वार्थकरणमस्यास्तीति कृतस्तृतीयो हस्तः। ततश्च खट्वाङ्गं कृतो हस्तो यस्य स तथा। सत्त्वार्थकरणविशुद्ध्या खट्वाङ्गधारिणमिति भावः। न्यसेदिति क्रियायां सर्वत्र द्वितीया। मालारूपेणार्धं मालार्धं शतस्य मालार्धं शतमालार्धं तेन भूषितः। आलिकालिसम्बद्धा मन्त्रमाला कण्ठगतेति भावः। तस्याऽग्रतः स्थितामिति। संमुखमालिङ्ग्य तिष्ठतीति स्थिता। दीव्यति भगवता सहेति देवी। वज्रेण वराकान् क्लेशानाहन्तीति वज्रवाराही। सुघोरा दुष्टतर्जनादिना ॥ १६ ॥

श्रीहेरुकदेवाभिमुखां कृत्वा तु त्रिनेत्रां रौद्ररूपिणीम् ।
२कपालं त्वन्त्रसंपूर्णं स्रवन्तीं रुधिरं मुखात् ॥ १७ ॥

सम्मुखालिङ्गनस्योद्दिष्टस्य निर्देशमाह— श्रीहेरुकाभिमुखामिति। कृत्वेति क्रियाव्याप्तत्वात् सर्वत्र द्वितीया। तस्याग्रतो देवीं विशिनष्टि कपालान्तर्गतमन्त्रं कपालमन्त्रं तेन सम्पूर्णा भर्तुरन्यूना। कपालमन्त्रं च माराणाम्। स्रवन्तीं रुधिरं मुखादिति। रागविशुद्ध्या ॥ १७ ॥

1. नृकपाल- भो०
2. कपालमन्त्र- टी०

तर्जयन्तीं दिशः सर्वान् सदेवासुरमानुषान् ।

डाकिन्यश्च [च]तुर्विंशा वाराह्याः कुलसम्भवाः ॥ १८ ॥

तर्जयन्तीं दिशः सर्वान् दिक्पतीनित्यर्थः । सदेवासुरमानुषानिति । लोकानिति भावः । दिशान् सर्वानिति पाठे दिशाऽस्ति येषां ते दिक्पतय इति ज्ञेयम् । डाकिन्यश्च चतुर्विंशा इति । प्रचण्डादि चतुर्विंशति । चकागत् काकास्यादयो द्वादश, ता अपि सर्वाः पूजयेत् । वाराह्याः कुलसम्भवा इति । वाराह्या सह चित्तादिकुलसम्भवाः । एतेन कुलनियमः कथितः ॥ १८ ॥

चक्रगर्भे पूजयेत् तु दिशासु विदिशासु च ।

वीरांश्च तथैवेह चक्रसंस्था तु पूजयेत् ॥ १९ ॥

चक्रगर्भे त्विति । मण्डलं वर्तयित्वा तत्र श्रीहेरुकं समण्डलेयदेवीकं भावयित्वा पूजयेदित्याकूतम् । कथं देवतान्यास इत्याह — दिशासु विदिशासु चेति । वीरांश्चैव तथैवेहेति । इहेति चक्रगर्भे । कुलसम्भवानित्यर्थः । सर्वदेवताचक्रं पूजयेदिति संक्षेपः । चक्रसंस्था इति द्वितीयावहुवचनान्तं पदं नकारलोपात् । एतेन चक्रगर्भ इति दृढीकृतम् । तु-शब्दो देहस्थत्वनिषेधे पुनः पूजयेदिति पूजानियमार्थम् ॥ १९ ॥

[पूजयेदद्वयं वीरं] यदिच्छेत् सिद्धिसाधकः ।

कलशांश्च ततः कुर्यान्मूलकालादिवर्जितान् ॥ २० ॥

एतेन कस्य पूजेत्याह — वीरमद्वयमिति । विसदृशं ग्राह्यादिरूपमीरयतीति वीरः, स च चित्तमात्रम् । अत आह — अद्वयम् । ततो वीरम् अद्वयमेव पूजयेदिति भावः । कुत इत्याह — यदिच्छेत् सिद्धिसाधक इति । सिद्धीति द्वितीयालोपे । यतः सिद्धि साधक इच्छेत् ततः पूजयेत् । चित्तमात्रं मण्डलमिति ज्ञेयम् । कलशांश्चेत्यादि सुबोधम् । मूलकालादिवर्जितान् । मूलं चक्रात् कुलालेन कृतो भागः । कालः कृष्णो भागः । आदिशब्दात् कर्बुरत्वादि ॥ २० ॥

मौक्तिकैर्हैमरत्नैश्च

प्रवालरजतैस्ताम्रैः ।

सर्वभक्ष्यैस्तु सम्पूर्णान् कपालोपरि संस्थितैः ॥ २१ ॥

हेमानि च तानि रत्नानि चेति हेमरत्नानि । रत्नेति सर्वत्र । एतेन पञ्चरत्नानि दर्शितानि तानि ताम्रैरित्यन्तेन । सर्वाणि च भक्ष्याणि चेति सर्वभक्ष्याणि । सर्वपदेन पञ्चव्रीहयः पञ्चौषधयश्च । भक्ष्यशब्देन पञ्चामृतानि । कपालोपरि संस्थितैरिति पञ्चामृतविशेषणम् । अतस्तुशब्दो विशेषार्थः । पञ्चरत्नानि पञ्चौषध्यः कलशगर्भे पञ्चामृतानि तु कपालस्थानि तन्मुखे निदध्यात् । कपालोपरि संस्थितैरिति तृतीयान्तेन कलशविशेषेण वा । रजोनिर्मितकपालोपरिसंस्थितैरिति केचित् ॥ २१ ॥

सूत्रेण ^१वेष्टितान् कण्ठे पल्लवाग्रसमन्वितान् ।
अष्टौ(ष्ट)द्वारेषु विनि(न्य)स्य वस्त्रयुग्मेन सुवेष्टितान् ॥ २२ ॥
नवमं मध्यतः कलशं वस्त्रयुग्मेन वेष्टितम् ।
कृत्वा रजतं हिरण्यं वा रत्नमौक्तिकशोभितान् ॥ २३ ॥

तेषां कलशानां कण्ठस्तत्कण्ठः । पल्लवाग्रसमन्वितानिति मुखे । कृत्वेत्यादिना नवमे विजयाख्ये कलशे पञ्चरत्नप्रक्षेपं दर्शयति— कृत्वा रजतं हिरण्यं वेति । तृतीयार्थे प्रथमैकवचनम् । रत्नमौक्तिकेति । तृतीयाद्विवचनलोपः । रजतादिशोभितं नवमं कलशं मध्यतः कृत्वा पुरवरं पूजयेदिति सम्बन्धः ॥ २२-२३ ॥

विकिरेन्मण्डले सर्वान् रत्नसौवर्णशोभनान् ।
पूजयेत् पुरवरं रम्यं सिद्धिरेव न संशयः ॥ २४ ॥
गन्धोदकेन संसिच्य चात्मानं सर्वतोमुखम् ।
दीपानां [तु] शतं दद्याद् यदिच्छेत् सिद्धिमुत्तमाम् ॥ २५ ॥

कैरित्याह— विकिरेद् मण्डले सर्वैरित्यादि । रत्नानि मौक्तिकादीनि । सुवर्णमेव सौवर्णम् । शोभित एभिरिति शोभनानि भूषणानि । रत्नसौवर्णानि च भूषणानि चेति तानि तथा सर्वैर्यथोपलब्धैरेभिः । कुतः पूजां विकिरेत्, मण्डले तानि यतस्ततः पूजा । हस्तिरत्नम्, अश्वरत्नम्, मणिरत्नम्, खड्गरत्नम्, चक्ररत्नम्, परिणायकम्, स्त्रीरत्नं चैते(तानि)सप्तरत्ना[नि] । तानि सुवर्णे सगुणे भवानि सौवर्णानीति केचित् । आत्मानं सर्वतो मुखमिति । आत्मानं श्रीहेरुकं पुरमध्ये पूजयेदिति सम्बन्धः ॥ २४-२५ ॥

आकाशे डाकिन्यः सर्वा मनसा ऊर्ध्वतो न्यसेत् ।

भूर्लोकं डाकिन्यो याश्च मण्डले सर्वतो न्यसेत् ॥ २६ ॥

पाताले डाकिन्यो याः काश्चित् पाताले तान् परिन्यसेत् ।

दिशासु मातराः सर्वा विदिशासु च नियोजयेत् ॥ २७ ॥

भूर्लोके पृथिव्याम् । पाताले डाकिन्यो याः काश्चिदिति । चतुर्विंशति । क्वचि-
न्मातर इति पाठे स एवार्थः । मातृशब्देन काकास्यादयो द्वादश ॥ २६-२७ ॥

पुष्पैः गन्धैस्तथा धूपैर्दीपानां तु शतं दद्यात् ।

[पूजयेद्विधिवदेवं] यदिच्छेत् सिद्धिसाधकः ॥ २८ ॥

पूजयेद् वीरयोगिन्यः श्रीहेरुकस्य मण्डले स्थितान् ।

ध्वजै रक्तैस्तथा पीतैः श्वेतैश्च कृष्णापिङ्गलैः ॥ २९ ॥

स्नग्दामैर्विविधैश्चैव वस्त्रैर्नानाविधैस्तथा ।

वितानैश्च काण्डपट्टकैः सुशोभनैस्तथा ।

भक्ष्यभोज्यखाद्यपानैश्च ^१कुर्यात् सुसमाहितः ॥ ३० ॥

इति श्रीहेरुकाभिधाने चक्रपूजाविधिपटलो द्वितीयः ॥ २ ॥

प्राग्दीपानामिति सामान्येन तैलदीपशतमुक्तं दीपानां तु शतमिति । महातैलभवम् ।
अतस्तुशब्दो विशेषार्थः । शेषं सुस्थम् । भक्ष्यं पिष्टकादि, भोज्यमन्नादि, खाद्यं
व्यञ्जनम्, पानं पेयं पीयत इति दधिमण्डादि । कुर्यादिति पूजामिति शेषः । इति बाह्य-
पूजा दर्शिता ॥ २८-३० ॥

चक्रं तत्पूजा च तयोर्विधिः करणं तदभिधायकः पटलः, स च द्वितीयः ।

श्रीचक्रसंवरविवृतौ द्वितीयः पटलः ॥ २ ॥

*

1. पूजयेत्- भो०

दक्षिणाभिषेकपटलस्तृतीयः

ततः—

आचार्यं तोषयेत् पूर्वं सर्वभावेन साधकः ।

यथाशक्त्या पूजयेद् गुरुं सिद्धिकामः सुसमाहितः ॥ १ ॥

गुरूपदेशमन्तरेण न किञ्चिन्मन्त्रसाधनम्, अतः स एवाराधनीय इति सेककाले तत्पूजेत्याह— तत इति । यत आचार्योपदेशं विना न सिद्धिः, ततो गुर्वाराधनम् । तत इति भिन्नं पदम् । एतदेवाह— आचार्यमित्यादि । पूर्वमित्याचार्यविशेषणम् । सम्यग् ज्ञानतन्त्रज्ञेत्यादिविशेषणविशिष्टम् । यद्वा कालविशेषणम् । प्रथममाचार्यं तोषयेदध्येष-येदित्यर्थः । सर्वभावेनेति । आत्मादिपदार्थेन । यथाशक्त्या तु पूजयेद् गुरुं सिद्धि-कामः सुसमाहित इति । तु-शब्दो विशेषार्थः ।

अत इह तावद् गुरुमेवाचार्यं सर्वभावेन पूजयेत् शिष्यः । पश्चाद् मण्डलकरणम् । तत्र प्रवेशाद्यर्थं पूजयेत् । मया लब्धाभिषेकादिना सिद्धिः साध्येति कामोऽस्येति सिद्धिकामः कृतमन्त्रजपादिः सुसमाहितः ॥ १ ॥

घण्टानादमालम्ब्य पुष्पधूपैरलङ्कृताम् ।

घण्टां^१ नादयेत् सुस्वरां पटहिकां वापि साधकः ।

हाहाकारं च कारयेत् ॥ २ ॥

घण्टानादमित्यादिना घण्टाभिषेकः प्रतिपाद्यते । घण्टां नादयेत् साधक इति सम्बन्धः । पुष्पधूपैरलङ्कृतामिति पूजितामित्यर्थः । सुस्वरामित्युपलक्षणत्वेन सर्वं लक्षणं सूचितम् । किं कृत्वा नादयेदित्याह— घण्टेत्यादि । घण्टा संवृतिः, तस्या नादः । यथा—

स्वभावशुद्धाः सर्वधर्माः स्वभावैर्विभवीकृताः ।

स्वभावशुद्धैः सन्सत्त्वैः क्रियते परमो भवः ॥

इति गाथापाठस्तदर्थबुद्धिश्च ।

इयं सा सर्वबुद्धानां प्रज्ञा घोषानुगा स्मृता ।

त्वयापि हि सदा धार्या वोधिरग्रा जिनैर्मता ॥

इति गाथापाठेन गुरुभट्टारकदत्तां घण्टां घण्टानादमालम्ब्य वादयेदिति भावः । पटहिका-
कामिति मङ्गलकारिणीम् । वाशब्दो लक्षणान्तरसमुच्चये । अपि व्यक्तक्रमेण साध-
कोऽपि तां वादयेत् । गुरुणा १ सर्वं सा दत्तेति, यतो नाददानक्रियासिद्धेत्यापिशब्दो
बोधयति । हाहाकारश्च कारयेदिति । हाहाकारो नामाभिषेकः, तं गुरुभट्टारकेणात्मनः
कारयेत् । भक्तिरेवास्य तादृशी यया २ शतं कुर्यादिति । कारयेदिति व्यपदेशः । ततोऽस्य
भूयसी गुरुभक्तिः सूचिता । हाहाकारो नाम च “द्वयं शब्दात्मकमिति साम्यान्नाम
तथोच्यते” । तत उदकमौलिवज्राधिपत्यभिषेकाणां ग्रहणं तत्पूर्वकत्वात्तयोः । अर्था-
न्तरं च घण्टां नादयेद् गुरुरिति ज्ञेयम् । किं कृत्वेत्याह— दशसु दिक्षु सूक्ष्मघण्टा-
ध्वनिकरणं घण्टानाद इत्युपदेशः । यद्वा स पूर्ववत् गाथापाठः पटहिकां हाहाकारं च
साधकोऽपि कारयेत् । हाहाकारो झंकारः । चशब्दादन्योऽपि वाद्यविशेषो गीतं चेति
ज्ञेयम् । घण्टानादः स्वलिङ्गावस्थितः । पञ्चविंशतिकाभिधानम् । घण्टाद्वादशाब्दिका ।
पटहिका षोडशाब्दिका । घण्टानादो वज्रकुलम्, घण्टा रत्नकुलम्, पटहिका पद्म-
कुलम्, हाहाकारस्तथागतकुलम्, चकारादन्यच्च घण्टानादादीनामन्यतमानो(न्) वा
सेवयेत् । घण्टानादं चाहो सुखमिति मन्त्रं साधकः शिष्यः कारयेदुच्चारयेदित्यर्थः ।
कुतोऽनन्तरमित्याह— अनामेत्यादि ।

अनामाङ्गुष्ठवक्राभ्यां लेहयेद् योगवित्सदा ।

सोमपानवदास्वाद्य सिद्धिमाप्नोति शाश्वतीम् ॥ (च० सं० १.१२-१३)

इति गाथेह योजयितव्या । ततोऽस्या इदमर्थान्तरम्— पूर्वोक्तप्रज्ञासेवया य[दु]द्धूतं
तदनामाङ्गुष्ठवक्राभ्यामाचार्यः शिष्यं लेहयेत् । स च शिष्यः तत् सोमपानवदास्वाद्य
सिद्धिमाप्नोतीति गुह्याभिषेकोऽयम् । अत एवाचार्याभिषेकः सिद्धः, तत्पूर्वकत्वात्
तस्य ॥ २ ॥

एवं विधिवत् सम्पूज्य मण्डलं सर्वकामिकम् ।

३ प्रच्छाद्य पटवस्त्रेण मुखं तेषां तु पुत्रकान् ॥ ३ ॥

1. प्रथमं- भो०
2. नास्ति- भो०
3. संछाद्य- क. भो०

कुतोऽनन्तरमेतत्सर्वमित्याह— एवमित्यादि । पुष्पादिना पूर्वोक्तेन । मण्डलं पूर्वोक्तं रजोनिर्मितं पटगतं वा । पूज्येति संपूज्योपसर्गक्षये तत्र प्रवेशयेदिति सम्बन्धः । कानि-
त्याह— पुत्रकानिति । पुनन्ति त्रायन्त इति पुत्राः । अतः प्रशंसायां कविकृतेः पुत्रकाः
शिष्याः । जसविद्यत्वादिना कुलीनत्वादिना च तथाभूताः । किं कृत्वेत्याह— प्रच्छा-
द्येत्यादि । पटवस्त्रेण काषायवस्त्रेण । तेषां पुत्राणां सामान्येन बहुवचनम्, तत्त्वतः
एकैकं प्रवेशयेदिति ॥ ३ ॥

पुष्पपूर्णाञ्जलिं [कृत्वा ततः सम्यक् ¹प्रक्षिपेत्] ।
प्रदक्षिणं च ततः कृत्वा साधकः सुसमाहितः ॥ ४ ॥
२[मनः समाधाय सुमतिः पुरं रम्यं प्रवेशयेत्] ।
दक्षिणां मूर्तिमाश्रित्य पुष्पाञ्जलिं ततः क्षिपेत् ॥ ५ ॥

एतदेवाह— पुष्पपूर्णेत्यादि । प्रवेशानन्तरं प्रदक्षिणावर्तेन पुष्पपूर्णमञ्जलिं साधकः
प्रक्षिपेत् । दक्षिणां मूर्तिमाश्रित्य पुष्पाञ्जलिं ततः क्षिपेदिति । दक्षिणाभिमुखः क्षिपे-
दित्युपदेशः । भगवतो दक्षिणावर्तेन चैत्यवन्दनाक्रमेण वा ॥ ४-५ ॥

मण्डलोपरि पतेद् यत्र तत्कुलं तस्य निर्दिशेत् ।
दर्शयेत् श्रीहेरुकादिपीठा आचार्यो नाम निर्दिशेन् ॥ ६ ॥
ततः पूजयेन्मुद्रामाचार्यः सुसमाहितः ।
शिष्याणां तु द्वितीयेऽह्नि ³[सम्यक्कर्म समाचरेत्] ॥ ७ ॥
रक्तेन [च] त्रिजप्तेन तिलकं तस्य कारयेत् ।
मुखमुद्घाट्य शिष्यं च दर्शयेन्मण्डलं ततः ॥ ८ ॥

श्रीहेरुकादिपीठेति द्वितीयालोपे । मुखमुद्घाट्य दर्शयेन्मण्डलं तत इति योज-
नीयम् । मण्डलदर्शनानन्तरं श्रीहेरुकाद्युपलक्षितं पीठादि दर्शयेदित्यर्थः । तत इत्यादिना
प्रज्ञाभिषेकं दर्शयति । ततो गुह्याभिषेकानन्तरमाचार्य इति धैर्यादिगुणयोगात् । तत्र

1. प्रवेशयेत्- भो०
2. 'क' मातृकायां 'प्रवेशयेत् तत् पुरवरं रम्यम्' इति पाठः, गृहीतस्तु भो०
3. नास्ति- क.

रजस्वलारुधिरेण करकरादिमन्त्रजप्तेन तिलकं कुर्यात्। तस्येति तेषां मध्ये यस्य कस्यचित्। प्रवेशितस्योद्घाटितमुखस्य तिलकस्तेन करणीय इत्यर्थः ॥ ६-८ ॥

यो यस्य देवतास्थानं तु तत्र तान् संदर्शयेत् ।

ततः सम्यक्प्रणिपत्य पञ्चादाचार्यसहितं पुरम् ॥ ९ ॥

यस्या देवताया यत् स्थानं तत्र तां देवतां दर्शयेदिति भावः। पीठादिषु श्री-
हेरुकादिदेवतां दर्शयेदिति। कायानुस्मृत्युपस्थाने डाकिनी, वेदनानुस्मृत्युपस्थाने
लामा, धर्मानुस्मृत्युपस्थाने खण्डरोहा, चित्तानुस्मृत्युपस्थाने रूपिणीत्यादिमण्डलतत्त्वं
देवतातत्त्वं प्रतिपादयेत्। सम्यक् प्रणिपत्य ततः कृत्वा आचार्यसहितः। पुर इति।
ततः शिष्यमुखोद्घाटनानन्तरं मण्डलं प्रणिपत्य कृत्वा च तिलकं मण्डलमग्रतो
दर्शयेत् ॥ ९ ॥

प्रदक्षिणं च पुनः कृत्वा प्रत्यारम्भेण वामतः ।

मण्डलं गुरवे [सम्यक्] प्रणिपत्य यथाविधि ॥ १० ॥

ततस्तु गुरवे दद्यात् तथागतोक्तदक्षिणाम् ।

निर्जात्यसुवर्णं शतसहस्रं रत्नानि विविधानि च ॥ ११ ॥

वस्त्रयुगमशतं चैव गज वाजी राष्ट्रमेव च ।

कर्णाभरणं कटकं च कण्ठिकाङ्गुलिकैश्च समुत्तमम् ॥ १२ ॥

प्रदक्षिणं च पुनः कृत्वा प्रत्यारम्भेण वामत इति। पुनः प्रदक्षिणं कृत्वा
प्रत्यारम्भेण वामतो भ्रमणेन दक्षिणावर्तेन च मण्डलं वेष्टयित्वा। मण्डलं गुरवे च
प्रणिपत्य गुरवे तथागतोक्तां दक्षिणां दद्यात्। मण्डलदेवतातत्त्वकथनानन्तरं शिष्यस्य
गुरवे दक्षिणादानम्, ततोऽपि पञ्चामृतदानपुरःसरमुदकादिसेका आचार्यान्ताः। ततो
गुह्याभिषेक इति। व्यस्तस्य ग्रन्थस्य समुदायार्थः।

दक्षिणामाह— निर्जात्येत्यादि। जातौ भवं जात्यम्, निःशेषजात्यं निर्जात्यम्,
निर्जात्यं च तत् सुवर्णं शतसहस्रं चेति तत्तथा। लक्षपलसंख्यं सुवर्णम्। गजेति

1. °लिकां च समुत्तमाम्- क.

लुप्तविभक्तिकं पदम् । अङ्गुलिकैरित्यङ्गुलीयकैः । सहार्थे तृतीया । समुत्तमं मकुटम् ॥
१०-१२ ॥

यज्ञोपवीतं सौवर्णं ^१स्वभार्या दुहितामपि ।
दास दासीं भगिनीं वा प्रणिपत्य निवेदयेत् ॥ १३ ॥

यज्ञोपवीतं सौवर्णं सुवर्णयज्ञोपवीतम् । दासेति निर्विभक्तिकम् । सर्वमेतन्निवेदयेद्
गुरवे—

नित्यं सुसमयाचार्यं प्राणैरपि निजैर्भजेत् ।
अदेयैः पुत्रदाराद्यैः किं पुनर्विभवैश्चलैः ॥ इति वचनात् ॥ १३ ॥

२आत्मानं सर्वभावेन निवेदयेद्बुद्धिमान् गुरोः ।
अद्य प्रभृति दासोऽहं समर्पित मया तव ॥ १४ ॥

आत्मानं च सर्वभावेन निवेदयेत् बुद्धिमान् गुरोरिति । सर्वभावः कायादि-
व्यापारः । अक्षयमिदमीदृशापर्यन्तमिति बुद्धिः । आत्मदानमाह— आत्मेत्यादि । सम-
र्पितेति निर्विभक्तिकम् ॥ १४ ॥

एवं विधिं ततः कृत्वा साधकेन सुनिश्चितः ।
ततस्तस्य तुष्यन्ति डाकिन्यो योगमातराः ॥ १५ ॥

एवमित्यादिना पृष्ठपूरणमाह— अनन्तरोक्तः सुवर्णादिदानविधिः साधकेन सुष्ठु
निश्चितः शोभनत्वेन स्वीकृतोऽनुमोदित इत्यर्थः । तत इति विधेः । अनुष्ठितविधि-
फलमाह— डाकिन्य इत्यादि । डाकिन्य इति डाकिनीजातयः । विशेषमाह— योगे-
त्यादि । योगमातराश्चतुर्विंशति ॥ १५ ॥

डाकिन्यो लामयश्चैव खण्डरोहा तु रूपिणी ।
एतैर्विचरेज्जगत्सर्वं डाकिन्यैः सह साधकः ॥ १६ ॥

1. सुभार्या- भो०

2. इतः पूर्वं “यथोक्तं च तथा शिष्यः” इत्यधिकम्- भो०

सर्वाः किङ्करीस्तस्य साधकस्य न संशयः ।

योगसिद्धिर्भवेदेषां त्रैलोक्यमनिवारितम् ॥ १७ ॥

अन्तर्धानविलोत्तिष्ठरेचरत्वं पादलेपोऽथ रसायनम् ।

जायते तु सदा नित्यमिच्छया साधकस्य तु ॥ १८ ॥

रूपाण्यनेकानि कुरुते आकाशेन तु गच्छति ।

डाकिनी विशेषतः निषुम्भयति च सर्वजन्तूनाम् ॥ १९ ॥

डाकिन्यः काकास्यादयश्च लामयो लामाजातीयाः । लामापर्यायो लामशब्दः । आकारक्षये यकारागमे बहुवचनान्तपदमिदं वा । एतैरित्यादि । ईदृशे मण्डले प्रवेशात् पूजाकरणादभिषेकग्रहणात् तद्वर्तनपूर्वकं सिद्धिसाधनार्थं डाकिनीभिः करणभूताभिर्जगत् सर्वं विचरेत् । अगम्यमपि गम्यीकरोतीत्यर्थः । एतैर्डाकिन्यैरित्यादिकं वर्णागमविनाशविपर्ययविकारैर्निरुक्तविहितैः साध्यम् । आर्पस्य तत्प्राधान्येन साध्यत्वात् । एवं सर्वत्र । अनास्थया वा शब्दापशब्दौ नाशङ्कनीयौ । उत्तिष्ठेति मृतोत्थापनम्, निपूदन-ज्ञानं मारणम्, शेषं सुबोधम् ॥ १६-१९ ॥

सकृद्दृष्टेन योगेन योगित्वं जायते क्षणात् ।

अदृष्टमण्डलो योगी योगित्वं यः समीहते ॥ २० ॥

हन्यते मुष्टिनाऽऽकाशं पिबति मृगतृष्णिकाम् ।

एष योगवरः श्रेष्ठः सर्वयोगेषु चोत्तमः ॥ २१ ॥

अदृष्टमण्डल इत्यादि मण्डलानुशंसा । यथा आकाशं मुष्टिना हन्ति न ताः घात-लक्षणार्थक्रिया निष्पद्यन्ते । पिबति मृगतृष्णां न च पानलक्षणा तृष्णाशान्तिलक्षणा चार्थक्रियास्ति । तथाऽदृष्टमण्डलो योगित्वं समीहते । न स योगफलं लभते । २०-२१ ॥

यः काङ्क्षिष्यते ^१कश्चित् सदेवासुरमानुषान् ।

अभिभूय गमिष्यत्यत्र ^२मण्डले योऽभिषिक्तः ।

सर्वतन्त्रोक्तसाधकः

॥ २२ ॥

१. नित्यं- भो०

२. तन्त्रे- भो०

१गोप्य ईक्षण पाणिं तु आलिङ्गं द्वन्द्वमादिकम् ।
 अभिषिक्तो भवेत्तत्र सर्वतन्त्रैकमुत्तरम् ॥ २३ ॥
 तत्त्वसंग्रहे संवरे वापि गुह्ये वा वज्रभैरवे ।
 अयं मण्डलराजा न भूतो न भविष्यति ॥ २४ ॥
 उक्तानुक्तं च यत् किञ्चित्तत्सर्वं श्रीहेरुके स्थितम् ॥ २५ ॥

इति श्रीहेरुकाभिधाने दक्षिणाभिषेकविधिपटलस्तृतीयः ॥ ३ ॥

यः काङ्क्षिष्यते कश्चिदिति । एवं श्रीहेरुकं वरं यः काङ्क्षिष्यति स देवादीन-
 भिभूय गमिष्यति । गमिरिह स्थित्यर्थः । स्थास्यतीति भावः । नैव भूतो भावीत्युत्पन्नो
 वेति दर्शयितुं काङ्क्षिष्यतीत्यादि भविष्यन्निर्देशः । उक्तानुक्तं चेति । उक्तं चानुक्तं
 चान्यत्र यत्तत् सर्वं श्रीहेरुके चक्रसंवरे स्थितं मण्डलविधानम् ॥ २२-२५ ॥

दक्षिणा गौरवातिशयेन दानम्, अभिषेकः क्लेशमलापनयनम्, तयोर्विधिः, तद-
 भिधायकः पटलः स च तृतीयः ।

इति श्रीचक्रसंवरविवृतौ तृतीयः पटलः ॥ ३ ॥

*

-
1. हास्य- भो०
 2. मुत्तमम्- भो०

वीरयोगिन्यद्वयं नाम विधिपटलश्चतुर्थः

ततो डाकिन्यो भुवनानि विजृम्भयन्ति ।
महावीर्या चक्रवर्तिनी महाबला सुवीरा ॥ १ ॥
चक्रवर्मिणी शौण्डिनी खण्डरोहा चक्रवेगा ।
खगानना हयकर्णा सुभद्रा च श्यामादेवी तथैव च ॥ २ ॥
सुराभक्षी वायुवेगा तथा महाभैरवा ।
ऐरावती द्रुमच्छाया लङ्केश्वरी खर्वरी तथा ॥ ३ ॥
वीरमती महानासा प्रभावती चैव ।
चण्डाक्षी प्रचण्डा च एताः सिद्धास्तु साधकः ।
१ प्रचण्डादिं तु वै पूर्व चतुर्विंशति डाकिन्यः ॥ ४ ॥
२ [कायवाक्चित्तमध्ये तु यथा बाह्ये तथात्मनि] ।
स्वनामोच्चारणमन्त्राणां हूँ हूँ फट्कारान्तयोजिताः ॥ ५ ॥

आधारमण्डलकथनानन्तरं तदाधेया योगिनीर्दर्शयितुं चतुर्थपटलमाह — तत इत्यादि । याः समयाचारगोचरा डाकिन्य उक्ताः कायवाक्चित्तस्वरूपनिर्माणसंभोग-धर्मकायात्मिका यतः, ततः कारणाद् डाकिन्यश्चतुर्विंशतिर्भुवनानि त्रीणि कायादि-चक्राणि विजृम्भयन्ति व्याप्नुवन्ति । ता एवाह — महावीर्येत्यादि ।

चक्रवेगा, खण्डरोहा, शौण्डिनी, चक्रवर्मिणी, सुवीरा, महाबला, चक्रवर्तिनी, महावीर्येत्येताः सर्वाः शुक्ला इति कायचक्रम् ।

ऐरावती, महाभैरवा, वायुवेगा, सुराभक्षी, श्यामादेवी, सुभद्रा, हयकर्णा, खगाननेत्येता रक्ता इति वाक्चक्रम् ।

प्रचण्डा, चण्डाक्षी, प्रभावती, महानासा, वीरमती, खर्वरी, लङ्केश्वरी, द्रुम-च्छायेत्येताः कृष्णा इति चित्तचक्रम् ।

1. क. भो० मातृकयोर्नास्ति, गृहीतस्तु टीकानुरोधात् ।

2. [] अयमंशो मूलमातृकायां भोटनरथङ्संस्करणे च नास्ति ।

पूर्वत्र तन्त्रे व्यतिक्रम एव क्रम अत आह— प्रचण्डादिं त्विति । प्रचण्डामादिं कृत्वा चण्डाक्ष्यादयो द्रष्टव्याः । स्वस्य स्वस्य नाम्न उच्चारणं तेन पूर्वत्र संयुक्तः साधनोक्तक्रमेण करकरादिमन्त्राः यासां ताः स्वनामोच्चारणमन्त्रा इति प्रथमार्थे षष्ठी । हूँ हूँ फट्कारान्तयोजिता इति । हूँ हूँ फट्कारो नामान्ते योजितो यासां तास्तथा ॥ १-५ ॥

दृष्ट्वा योगवरं श्रेष्ठं घुणमन्यत् पलालवत् ।

ॐकारदीपिकाः सर्वसिद्धिदं सर्वकामिकम् ॥ ६ ॥

ॐकारदीपिका इति । करकरादिमन्त्रेण पूर्वत्र ॐकारो दीपको यासां तास्तथा । ततोऽयमर्थः । ॐ क्ष्माँ क्ष्माँ चक्रवेगे हूँ हूँ फट् फडित्यादि चक्रवेगादीनामष्टानाम् । ॐ फट् फट् ऐरावती हूँ हूँ फट् फडित्यादि ऐरावत्यादीनामष्टानाम् । ॐ कर कर प्रचण्डे हूँ हूँ फट् फडित्यादि प्रचण्डादीनामष्टानाम् । इति मण्डले शरीरे च न्यासः । अत एव चित्तचक्रम्, ततो वाक्चक्रम्, ततः कायचक्रं च । उपदेशार्थं तु तन्त्रे तद् व्यतिक्रमः । किञ्च हूँ हूँ फट्कारान्तयोजिता इत्यस्यार्थान्तरम् । हूँ हूँ हूँ फडिति मन्त्राऽन्ते योजितानामिति षष्ठ्यर्थे प्रथमा । अन्तभूतत्वादन्तयोजिताः काकास्या-दयोऽष्टौ । डाकिन्यादयश्चतस्रो मध्यस्थाः । कालविशेषेणैतन्मन्त्रजास्ता द्रष्टव्याः । यस्य ॐ हूँ हूँ फट् फट् काकास्ये हूँ हूँ फट् फडित्यादि । प्रचण्डादयो द्रुमच्छायान्ता-श्चित्तचक्रस्थाः । तच्च कृष्णम् । ऐरावत्यादयः खगाननान्ता वाक्चक्रस्थाः । तच्च रक्तम् । चक्रवेगादयो महावीर्यान्ताः कायचक्रस्थाः । तच्च शुक्लम् । डाकिन्यादय-श्चतस्रो यथाक्रमं वामावर्तेन कृष्णश्यामरक्तगौर्यो यमदाढ्यादयो वर्णद्वयं द्वयं प्राप्ताः । सिद्धिदं सर्वकामिकमिति । एता मिलिताः श्रीहेरुकाधिपतयो मण्डलमित्यस्य विशेषणद्वयम् ॥ ६ ॥

वीरत्वं गताः सिद्धा गृहे दृष्ट्वा च मण्डलम् ।

ततो ज्ञात्वा भावयेन्नित्यं सिद्धिस्तथागतवचो यथा ॥ ७ ॥

इति श्रीहेरुकाभिधाने वीरयोगिन्या^१द्वयं नाम विधिपटलश्चतुर्थः ॥ ४ ॥

1. ०द्वयन्यासपटलः- भो०

वीरत्वं गता इति चतुर्विंशतियोगिनीनां विशेषणम् । एता वीरत्वं वीराङ्गत्वं गता लब्धाः, वीरालिङ्गनयुक्ता इत्यर्थः । वीरास्तु खण्डकपालादयोः । ते चैकवक्त्राश्चतुर्भुजास्त्रिनेत्रा जटामकुटपटका व्याघ्रचर्माम्बरा वज्रवज्रघण्टाधारिवामदक्षिणभुजद्वयालिङ्गना अपरवामदक्षिणभुजखट्वाङ्गडमरुका आलीढासनाश्चक्रीकुण्डलादिमुद्रान्विताश्चक्रानुरूपदेवीवर्णाः । प्रचण्डादयोऽप्यालिङ्गितभुजद्वया अपरवामदक्षिणभुजभृतरक्तपूर्णकपालतर्जनीकाः । डाकिन्यादयो वामभुजद्वयेन खट्वाङ्गकपालधरा दक्षिणेन डमरुकतीधराः । काकास्यादयो डाकिन्यादिचिह्नधराः । यमदाढ्यादयो वामतो भुजद्वयेन डमरुकतीचिह्नधरा दक्षिणेन खट्वाङ्गकपालधराः । डाकिन्यादयः षट्त्रिंशद्योगिन्यस्त्रिनेत्रा एकवक्त्रा मुक्तकेश्यो नग्ना आलीढपदस्था रौद्ररूपाः कण्ठिकाद्याभरणाः । किञ्च ललाटस्थवज्रमाला वीरवीरिण्यश्च । देवतास्वभाव उच्यते— कायानुस्मृत्युपस्थानस्वभावा डाकिनी । वेदनानुस्मृत्युपस्थानस्वभावा लामा । धर्मानुस्मृत्युपस्थानस्वभावा खण्डरोहा । चित्तानुस्मृत्युपस्थानस्वभावा रूपिणीति ज्ञानचक्रम् ।

छन्दऋद्धिपादस्वभावा प्रचण्डा । वीर्यऋद्धिपादस्वभावा चण्डाक्षी । मीमांसाऋद्धिपादस्वभावा प्रभावती । चित्तऋद्धिपादस्वभावा महानासा । श्रद्धेन्द्रियस्वभावा वीरमती । वीर्येन्द्रियस्वभावा खर्वरी । स्मृतीन्द्रियस्वभावा लङ्केश्वरी । समाधीन्द्रियस्वभावा द्रुमच्छायेति चित्तचक्रम् ।

प्रज्ञेन्द्रियस्वभावा ऐरावती । श्रद्धाबलस्वभावा महाभैरवा । वीर्यबलस्वभावा वायुवेगा । स्मृतिबलस्वभावा सुराभक्षी । समाधिबलस्वभावा श्यामादेवी । प्रज्ञाबलस्वभावा सुभद्रा । समाधिसंबोध्यङ्गस्वभावा हयकर्णा । वीर्यसंबोध्यङ्गस्वभावा खगानना, इति वाक्चक्रम् ।

प्रीतिसंबोध्यङ्गस्वभावा चक्रवेगा । प्रश्रब्धिसंबोध्यङ्गस्वभावा खण्डरोहा । धर्मप्रविचयसंबोध्यङ्गस्वभावा शौण्डिनी । स्मृतिसंबोध्यङ्गस्वभावा चक्रवर्मिणी । उपेक्षासंबोध्यङ्गस्वभावा सुवीरा । सम्यग्दृष्टिस्वभावा महाबला । सम्यक्संकल्पस्वभावा चक्रवर्तिनी । सम्यग्वाक्स्वभावा महावीर्येति कायचक्रम् ।

सम्यक्कर्मान्तस्वभावा काकास्या । सम्यगाजीव[स्वभावा] उलूकास्या । सम्यग्वायामस्वभावा श्वानास्या । सम्यक्स्मृतिस्वभावा शूकरास्या । अनुत्पन्नकुशल-

धर्मोत्पादनस्वभावा यमदाढी । उत्पन्नकुशलधर्मसंरक्षणस्वभावा यमदूती । उत्पन्ना-
कुशलधर्मप्रहाणस्वभावा यमदंष्ट्रिणी । अनुत्पन्नाकुशलधर्मानुत्पादनस्वभावा यममथ-
नीति श्मशानचक्रम् ।

सम्यक्समाधिस्वभावः श्रीहेरुकः । सिद्धा इति । चतुर्विंशति योगिन्यः । गृहे दृष्ट्वा
च मण्डलमिति । स्वदेहे मण्डलं दृष्ट्वा । ततो मण्डलभावेनातः सिद्धिं ज्ञात्वा भाव-
येदित्याशयः । तथागतवचो यथेति । तथागतवचनेन भावयेदित्याकूतम् ॥ ७ ॥

वीरान्विता योगिन्यो वीरयोगिन्यः चतुर्विंशति । अद्वया वीररहिता द्वादश । ह्रस्व-
त्वमार्षत्वात् । तासां न्यासस्तस्य विधिस्तदभिधायकः पटलः, स च चतुर्थः ।

इति श्रीचक्रसंवरविवृतौ चतुर्थः पटलः ॥ ४ ॥

*

मूलमन्त्रस्याक्षरोद्धारविधिपटलः पञ्चमः

ततः—

सर्वधर्मोदये विश्वं कर्णिकेऽनाहतं शिवम् ।

¹आलिखेद् विधिवन्मन्त्री सर्वधर्मैकसंग्रहम् ॥ १ ॥

न केवलं भावनामात्रेण सिद्धिसाधनं किं तर्हि कथ[ने]नापीत्याह— तत इत्यादि । ततः कारणान्मन्त्र उद्धरणीयः । उद्धारमाह— सर्वेत्यादि । सर्वेषां धर्माणाम् उदयः । उदेत्यस्मादिति कृत्वा । विश्वं विश्ववर्णत्वात् । कर्णिकेति कर्णिकया । अनाहतमा- समन्तादाप्तं शिवं कल्याणावाहकत्वात् । एवंभूतं पद्ममित्यर्थः । 'नागृहीतविशेषणा विशेष्यबुद्धिः प्रवर्तते' इति कर्णिकया विशेषितत्वात् । अथवा धर्मोदयो भग इत्यन- र्थान्तरम् । विश्वं विश्वपद्मान्वितं कर्णिकाहतत्वात् । न केवलविश्वपद्मधर्मोदयान्त- विश्वपद्मे वा प्रस्तरेदिति सम्बन्धः । किं कृत्वेत्याह— आलिख्येत्यादि । सर्वधर्मा अकारादिककारादिरूपा एकत्वेन संगृह्यन्ते अनेनेति । तदेवोनपञ्चाशतकोष्ठकं भुवनं प्रस्तार इति पर्यायौ ॥ १ ॥

अत्र मन्त्रपदानि भवन्ति—

²आलिकालिसमां कृत्वा वर्गेभ्यः परिणामिताम् ।

चतुश्चतुर्विज्ञेयं प्रस्तरे मुनिसत्तमः ॥ २ ॥

अत्र मन्त्रपदानि भवन्तीति । अत्रैकोनपञ्चाशत्कोष्ठके भुवने मन्त्रस्थानानि सन्ति । तान्यष्टौ, भगवतो मूलमन्त्रश्चायं भावि सर्वावयवत्वात् । अक्षरजातेर्मन्त्रव्यपदेशो यथा सूत्रसन्ताने पटस्य । किं तत्पुनः प्रस्तरेदित्याह— आलीत्यादि । आलीति द्वितीयैक- वचनलोपे कालीति च । सममिति । एकस्याप्यक्षरस्यापरिवारात् । अन्यत्र डञ्जननम- वर्जितमिति दर्शनात् । एवम्भूतामालिं कालिं च कृत्वा प्रस्तरेत् प्रस्तृणीयात् । परि- णामितां साक्षात्परिणामाम् । अवस्थाविशेषः परिणामः । कोऽसावित्याह— वर्गेभ्य इति । ल्यब्लोपे पञ्चमी । अष्टौ वर्गानासाद्य परिणामिता सा । अष्टवर्गरूपोऽवस्थाविशेष

1. आलिख्य- टी०

2. द्र०- अभिधानोत्तरतन्त्रे चतुःपञ्चाशत्तिमः पटलः ।

इत्यर्थः। अत आह— चतुरित्यादि। चतुर्भिश्चतुर्भिर्वर्गैर्ज्ञेयं ज्ञातव्यं यत्र तद्यथा भवति तथा प्रस्तरेत्। मननान्मुनिः। पारमितानयिकमन्त्रनयिकयोः सतोर्मध्ये अयं श्रेष्ठो मन्त्रनयिकः प्रस्तारज्ञो मन्त्रनयिको मुनिसत्तमः। तत्र अकारादयः षोडशस्वरा एको वर्गः। पञ्चभिः पञ्चभिर्वर्गैः ककारादिभिर्मकारपर्यन्तैः पञ्चवर्गाः। यरलवैश्चतुर्भिरेको वर्गः। शषसहैरपरः। इहानुपयोगात् ककारपकारसंयोगजत्वात् क्षकारो न दर्शितः। इत्थमष्टौ वर्गा विज्ञेयाः॥ २॥

तत्रस्थमुद्धरेद्वीरं सर्वकामार्थसाधकम् ।

चतुर्थस्य यः पञ्चमं पञ्चमस्यापि पञ्चमम् ॥ ३॥

तत्रस्थमुद्धरेद्वीरमिति। आलिकालिस्थं वीरमष्टपदमन्त्रमुद्धरेद् दधिस्थं नवनीत-
मिव। शेषं सुस्थम्। चतुर्थस्य यः पञ्चममिति। चतुर्थस्य वर्गस्य नकारः पञ्चमः।
पञ्चमस्यापि पञ्चमः मकारः॥ ३॥

पञ्चमस्य यश्चतुर्थं प्रथमस्य तु यस्तृतीयम् ।

एकोनत्रिंशत्तथैव च चतुर्थस्य यः प्रथमः ॥ ४॥

पञ्चमस्य यश्चतुर्थं भकारः। प्रथमस्य यस्तृतीयं गकारः। तु-शब्दः स्तुत्या
विशेषयति। भनक्तिक्लेशाननेनेति भः, स च भगार्थः। गकारः पश्चाद् वाच्यः। तथा
चाह— “भकारो भग इत्याहुः” इति। एकोनत्रिंशत्तथैव चेति वकारः। स तथैव
चेति सत्त्वार्थं दर्शयति। प्रज्ञोपायौ वाति सम्बध्नातीति २वः। चतुर्थस्य यः प्रथम-
स्तकारः। कवर्गमारभ्य चतुर्थवर्गादित्वम्॥ ४॥

अन्तःस्थानां यश्चतुर्थं तस्यैव यद् द्वितीयं तु ।

त्रिंशमं तु समादाय तथा षड्विंशमेव च ॥ ५॥

अन्तःस्थानां यश्चतुर्थं वकारः। दन्तौष्ठ्य इत्यर्थः। तस्यैव यद् द्वितीयं त्विति।
तस्यैवान्तःस्थवर्गस्य यद् द्वितीयमक्षरं तत् समादाय वीरमुद्धरेदिति सम्बन्धः। त्रिंशमं

1. त्रयोविंशत्तथैव-क.

2. भावः- भो०

त्विति। शकारस्तालव्यः। स च शान्त्यर्थ इति तु-शब्दार्थः। तत् त्रिंशत्तममित्यर्थः।
तथा षड्विंशमेव चेति। षड्विंशतितमो यकारः। तथैव वाय्वर्थः॥ ५ ॥

एतत्सर्वं समुद्धृत्य शतार्धार्धं तु तथा पुनः ।
त्रयस्त्रिंशं ततो ¹गृह्य प्रथमस्य तु प्रथमम् ॥ ६ ॥

शतार्धार्धं मकारः। तथा पुनरिति। ²अमरणोपगता सर्वधर्मा इति प्रतिपादकोऽय-
मित्यर्थः। त्रयस्त्रिंशत् ततो गृह्येति। हकारमकारानन्तरं गृहीत्वा वीरमुद्धरेदिति
सम्बन्धः। प्रथमस्य प्रथमं त्विति। व्यञ्जनाधिकारे कवर्गः प्रथमः। तस्य प्रथमः
ककारः। न क्वचित् स्थित इति। ककारस्यार्थ इति तु-शब्दार्थः॥ ६ ॥

अन्तःस्थानां तृतीयं चैव प्रथमस्य तृतीयं तु ।
द्वात्रिंशमेव च चतुर्थस्य यः पञ्चमम् ॥ ७ ॥

अन्तःस्थानां तृतीयञ्चैवेति लकारः। पार्थिवत्वं प्रतिपादयति। प्रथमस्य तृतीयं
त्विति गकारः। तस्य गम्भीरधर्मार्थत्वं तु-शब्दार्थः। द्वात्रिंशमेव चेति। सकारं
द्वात्रिंशत्तममित्यर्थः। तस्य दन्त्यत्वं सूचयत्येव च-शब्दः। चतुर्थस्य यः पञ्चममिति
नकारः॥ ७ ॥

पञ्चमस्यापि यश्चतुर्थम् आन्तस्थस्य यः प्रथमम् ।
द्वितीयस्य यस्तृतीयकं तृतीयस्य यः प्रथमम् ॥ ८ ॥

पञ्चमस्यापि यश्चतुर्थमिति भकारः। आन्तस्थस्य यः प्रथममिति। अन्तः-
स्थानामयं वर्ग आन्तस्थः। तस्य प्रथमं यकारः। द्वितीयस्य यः तृतीयकमिति
जकारः। जपार्थकत्वे । तृतीयस्य यः प्रथममिति टकारः॥ ८ ॥

पञ्चमस्य पञ्चमं प्रथमस्य प्रथमं तु ।
तथा एकादशं चैव षोडशं तथा विदुः ॥ ९ ॥

पञ्चमस्य पञ्चममिति मकारः। प्रथमस्य प्रथमं त्विति ककारः। रेफककारादि-

-
1. ग्राह्य- भो०
 2. अमरणो- भो०

संयोगे कामदीपकत्वं तु-शब्दः सूचयति । तथा एकादशं चैवेति । तथेति फट्कारा-
वयवभूतत्वेन पातनार्थत्वं सूचयति । एकादशं टकारम् । चकारात्तस्य प्राग्भूतं फकारं
नियमेन मन्त्रान्ते सहयोगिनमाह— अत एवकारः । षोडशमं तथा विदुरिति । षोडश
एव षोडशमः । स्वार्थे मः । द्रुमवत् । स च तकारः । तं विदुरिति क्रियाव्याप्तत्वात्
द्वितीया । पञ्चमस्यापि पञ्चममित्यादौ किञ्च चतुर्थस्य यः पञ्चममित्यादि । एवञ्च बोद्धव्यं
चतुर्थस्य वर्गस्य यो वर्णस्तं पञ्चमं पञ्चमस्य पञ्चमं समादाय वीरमुद्धरेदिति विदुरिति
1 वा । एवं पञ्चमस्य यो वर्णस्तं चतुर्थमित्यादि । तथेति षोडशशून्यताप्रतिपादकत्वमस्य
प्रतिपादयति ॥ ९ ॥

2 तृतीयस्य [यः] प्रथमं षड्विंशतिमं तथा ।

चतुर्थस्य तृतीयं तु ऊष्माणं द्वयमेव च ॥ १० ॥

तृतीयस्य यः प्रथमं टकारः । षड्विंशतितमं यकारं विदुरिति क्रियया द्वितीया ।
एवं सर्वत्र । षड्विंशतितमादीनां तकारलोपः । तथेति वायुबीजत्वमस्य । चतुर्थस्य
तृतीयं त्विति दकारम् । तु-शब्दोऽस्य पापदहनार्थत्वं सूचयति । ऊष्माणं द्वयमेव
चेति । शषसहा ऊष्माणः । ऊष्माणामिति वर्णागमात् । द्वयमिति द्वितीयं षकारम् । एव
चेति । अन्यद्वितीयं चावधारणार्थम् ॥ १० ॥

प्रथमस्य यः प्रथमं सप्तविंशतिमं तथा ।

अष्टाविंशतिमं पुनः प्रथमस्य तृतीयं तु ॥ ११ ॥

प्रथमस्य यः प्रथममिति ककारम् । सप्तविंशतिमं रेफम् । अग्निबीजत्वमस्य
तथा-शब्दः सूचयति । अष्टाविंशतिमं लकारम् । पुनरिति तस्य पृथिवीबीजत्व-
प्रतिपादकम् । प्रथमस्य तृतीयं त्विति गकारम् । तु-शब्दो विशेषेण गच्छति सदाव-
तिष्ठत इति शून्यता, तद्वाचकत्वाद् गत्यर्थः ॥ ११ ॥

पञ्चमस्यापि चतुर्थकं एकत्रिंशत्ततो गृह्य ।

तथा पञ्चदशं चैव पञ्चविंशतिमं तथा ॥ १२ ॥

1. रितिभावः- भो०

2. इतः पूर्वं “प्रथमस्य प्रथमं” इत्यधिकम्- क.

पञ्चमस्यापि चतुर्थं भकारम् । अपि शब्दोऽस्य पूर्वोक्तार्थसूचकः । एकत्रिंशत्ततो गृह्येति । कालेरेकत्रिंशदक्षरं षकारं गृहीत्वा । तथा पञ्चदशं चैवेति । तथेति कालेः पञ्चदशं णकारम् । एवेति कालिसम्बन्धावधारणे । पञ्चविंशतिमं तथेति मकारम् । तथैव तथाशब्दार्थः ॥ १२ ॥

प्रथमस्य द्वितीयं तु तथा षड्विंशतिमं पुनः ।

द्वात्रिंशदक्षरं चैव ऊष्माणामन्तमेव च ॥ १३ ॥

प्रथमस्य द्वितीयं त्विति । खकारम् । तु-शब्दः शून्यतार्थत्वमस्य प्रत्याययति । तथा षड्विंशतिमं पुनरिति । तथेति पूर्ववद् यकारम् । पुनःशब्दो वाक्यालङ्कारे । द्वात्रिंशदक्षरं चैवेति । द्वात्रिंशत्तममक्षरं सकारम् । चकारो जलस्वरूपत्वमस्य सूचयति । एवकार इहावधारणे । ऊष्माणामन्तमेव चेति हकारः । एव चेति काल्यन्तसम्बन्धावधारणे ॥ १३ ॥

द्वात्रिंशं पुनश्चैव पञ्चमस्य चतुर्थं तु ।

द्वितीयस्य तृतीयं चैव पञ्चमस्य चतुर्थं तु ॥ १४ ॥

द्वात्रिंशं पुनश्चैवेति । द्वात्रिंशदक्षरं सकारम् । पुनश्चैव वाक्यं पूर्ववाक्यार्थं सूचयति । पञ्चमस्य चतुर्थं त्विति । भकारम् । तु-शब्दो भयहारित्वमस्य दर्शयति । द्वितीयस्य तृतीयं चैवेति । जकारम् । चैव शब्दो जयार्थत्वमस्यावधारयति । पञ्चमस्य चतुर्थं त्विति । भकारम् । तु-शब्दोऽस्य पूर्वोक्तार्थसूचकः ॥ १४ ॥

ऊष्माणां तृतीयं चैव सप्तविंशतिमं परम् ।

अन्तःस्थानां प्रथमं चैव तथा एकविंशतिमं पुनः ॥ १५ ॥

ऊष्माणां तृतीयं चैवेति । सकारः पूर्ववत् । सप्तविंशतिमं परमिति । रेफम् । परं वह्निजनकत्वात् । अन्तःस्थानां प्रथमं चैवेति । यकारम् । चैवेति समुच्चयावधारणयोः । तथा एकविंशतिमं पुनरिति । तथेति तथागतोक्तत्वसूचनाय । पकारमेकविंशति-तमम् । पुनर्गुणविस्तरे ॥ १५ ॥

अन्तःस्थानां यद्द्वितीयं त्रिंशतिं पुनस्तथा ।

पञ्चमस्य यः प्रथममूष्माणां प्रथमं चैव ॥ १६ ॥

अन्तःस्थानां यद् द्वितीयमिति । यद् द्वितीयमक्षरं रेफम् । त्रिंशतिं पुनस्तथेति । त्रिंशत्तमं शकारम् । पुनःशब्दः पुनरुक्तत्वमस्य दर्शयति । तथेति शान्तिं शास्तीति श इत्यर्थसूचकम् । पञ्चमस्य यः प्रथमं पकारम् । ऊष्माणां प्रथमं चैवेति । शकारम् । चकार एवकारश्च शान्त्यर्थप्रथमत्वावधारणयोः ॥ १६ ॥

तथा द्याकारमेव च चतुर्थस्य यः प्रथमम् ।

ऊष्माणां तु यः प्रथममष्टाविंशतिं तथा ॥ १७ ॥

तथाद्य(द्या)कारमेव चेति । द्याकारं समादाय वीरमुद्धरेदिति सम्बन्धः । चतुर्थस्य यः प्रथमं तकारम् । ऊष्माणां यः प्रथमं शकारम् । अष्टाविंशतिं तथेति । लकारम् । तथेति पूर्वोक्तार्थत्वमस्य सूचयति ॥ १७ ॥

प्रथमस्य द्वितीयं तु तृतीयस्य प्रथमोच्यते ।

प्रथमस्यापि यस्तृतीयं चतुर्थस्य चतुर्थं तु ॥ १८ ॥

प्रथमस्य द्वितीयं त्विति । खकारं पूर्ववत् । तृतीयस्य प्रथमोच्यते । टकारम् । प्रथमस्यापि यः तृतीयं गकारम् । चतुर्थस्य चतुर्थं त्विति । धकारम् । धमति पापमिति ध इतिसूचकः तु-शब्दः ॥ १८ ॥

अन्तःस्थानां यो द्वितीयं तृतीयस्यापि पञ्चमम् ।

1 व्याकारं वीरमित्याहुः प्रथमस्य यश्चतुर्थं ।

तु तथा चाष्टमेव च

॥ १९ ॥

अन्तःस्थानां यो द्वितीयं रेफम् । तृतीयस्यापि पञ्चममिति । अपिरवधारणे । एवं सर्वत्र । पञ्चमं णकारम् । व्याकारं वीरमित्याहुरिति । विशेषमाप्नोतीति व्या । तं वीरं श्रीहेरुकमाहुः । प्रथमस्य यश्चतुर्थं घकारम् । तथा चैवाष्टमेव चेति । तथाशब्दो

1. व्याकरणं- क., व्याकारं तत उद्धृत्य- भो०

जयार्थानुसूचकः। एवकारस्तदवधारणे। अष्टमष्टमं जकारः। एव चेति कालेरष्ट-
शब्दसूचकः ॥ १९ ॥

चतुर्थस्य यः पञ्चमं पञ्चमस्यापि पञ्चमम् ।

सप्तविंशतिमं तथा चतुर्थस्य चतुर्थं तु ॥ २० ॥

चतुर्थस्य यः पञ्चममिति नकारम्। पञ्चमस्यापि पञ्चमं मकारम्। सप्तविंशतिमं
तथेति। रेफम्। तथाशब्दः पूर्वोक्तार्थसूचकः। चतुर्थस्य चतुर्थं त्विति। धकारम्। तु-
शब्दः पुनरर्थे ॥ २० ॥

सप्तविंशतिमं पुनश्चैव तथा वै षड्विंशतिमेव च ।

पञ्चविंशं समादाय त्रयस्त्रिंशमेव च ॥ २१ ॥

सप्तविंशतिमं पुनरिति। सप्तविंशतिमं रेफम्। पुनःशब्दस्तथैव। तथा वै षड्-
विंशतिमेव चेति। तथाशब्दस्तथैवेति तमभागलोपे। षड्विंशतितमं यकारम्। एव
चेति पूर्वोक्तार्थत्वमस्य सूचयति। पञ्चविंशं समादायेति। मकारं समादाय वीरमुद्धरे-
दिति सम्बन्धः। समादायेत्यन्यत्रापि त्रयस्त्रिंशमेव चेति। हकारम्। सत्त्वानां पापं
हन्तीति ह इत्यर्थमवधारयत्येव च-शब्दः ॥ २१ ॥

चतुर्थस्य चतुर्थं तु पञ्चमस्य पञ्चमम् ।

चतुर्थस्यापि पञ्चमम्

प्रथमस्यापि प्रथमं चैव सप्तविंशतिमं तथा ॥ २२ ॥

अन्तःस्थानां चतुर्थं तु एकविंशतिमं तथा ।

ऊष्माणाम् द्वितीयं चैव तथा षड्विंशमेव च ॥ २३ ॥

चतुर्थस्य चतुर्थं त्विति। धकारम्। तु-शब्दः पुनरर्थे। पञ्चमस्य पञ्चमं
मकारम्। चतुर्थस्यापि पञ्चमं नकारम्। अपि-शब्दः पञ्चमसमाहारे प्रथमस्यापि
प्रथमं चैवेति। ककारम्। चैव-शब्दोऽस्य पूर्वोक्तार्थसूचकः। सप्तविंशतिमं तथेति
रेफम्। तथा-शब्दो वह्निजनकत्वसूचकः। अन्तःस्थानां चतुर्थं त्विति। वकारम्। तु-
शब्दो वारुणबीजत्वसूचकः। एकविंशतिमं तथेति। पकारम्। तथा-शब्द आलि-

सम्बन्धं दर्शयति । ऊष्माणां द्वितीयं चैवेति । षकारम् । चैव-शब्दोऽस्यात्रस्थाने नियमं कथयति । तथा षड्विंशमेव चेति । यकारम् । अयं मूलमन्त्रस्याक्षरोद्धारः ॥ २२-२३ ॥

¹कर २ कुरु २ बन्ध २ त्रासय २ क्षोभय २ हौं २ हः २ फैं २ फट् २ दह २ पच २ भक्ष २ वसरुधिरान्त्रमालावलम्बिने ग्रिह २ सप्तपातालगतभुजङ्गं

1. अत्रेदं ज्ञातव्यं भवति— मूलमातृकायां संस्कृतपाठे १९८ अक्षरात्मकस्यष्टापदमन्त्रस्य मन्त्रोद्धार-प्रकरणे पञ्चमपटले केवलं त्र्यशीत्यक्षराणामेवोद्धारः प्रदर्शितः, अवशिष्टानां (८४-१९८) मक्षराणां कृते 'कर कर कुरु कुर्वि'त्यादि मन्त्र एव लिखितः सप्तमे च पटले कर करेत्यादिषु तस्यै-वाक्षरस्योद्धारः प्रदर्शितो यस्मिन् स्वरः संयोज्यते । किन्तु भोटपाठेऽभिधानोत्तरतन्त्रे च सम्पूर्ण-मन्त्रस्योद्धारः प्रदत्तः । अत्रेदमप्यवधेयं यत् पञ्चमपटले वर्गाक्षरक्रमेण अक्षराणां संख्या गृह्यते किन्तु सप्तमे मन्त्रस्याक्षरक्रमेण । भोटपाठेऽभिधानोत्तरे च गृहीतः पाठोऽस्माभिः टिप्पण्यां प्रदर्श्यते—

*[प्रथमस्य प्रथमं चैव अन्तःस्थानां द्वितीयमेव च ।

द्वितीयस्य प्रथमं तथा षष्ठस्यापि द्वितीयकम् ॥ १ ॥

प्रथमस्य प्रथमं चैव अन्तःस्थानां द्वितीयं तथा ।

द्वितीयस्य प्रथमं तथा षष्ठस्यापि द्वितीयकम् ॥ २ ॥

षष्ठस्यापि चतुर्थं तु चतुर्थस्य पञ्चमम् ।

चतुर्थेन तु आसनम् अन्तःस्थानां चतुर्थं तु ।

चतुर्थस्यापि पञ्चमं चतुर्थेन तु आसनम् ॥ ३ ॥

चतुर्थस्यापि प्रथमं वह्निनाऽधोत्तेजितम् ।

ऊष्माणां तृतीयं तथा अन्तःस्थानां च प्रथमम् ॥ ४ ॥

चतुर्थस्य प्रथमं चैव तेजसेन तु आसनम् ।

सप्तमस्य तृतीयकं षष्ठस्यापि यः प्रथमम् ॥ ५ ॥

क्षाख्यं प्रथमं गृह्य पञ्चमस्य चतुर्थकम् ।

अन्तःस्थानां यः प्रथमं पुनस्तत्पिण्डं गृह्य ॥ ६ ॥

ऊष्माणां चतुर्थं गृह्य सप्तमस्य चतुर्थकम् ।

वज्रसत्त्वेन भेदितम् ॥ ७ ॥

ऊष्माणां चतुर्थं चैव भास्करेण तु आसनम् ।
 सप्तमस्य चतुर्थं वह्निना अधोतेजितम् ।
 विसर्गेण समायुक्तम् ॥ ८ ॥

पञ्चमस्य द्वितीयं च तथा द्वाविंशमेव च ।
 पञ्चमस्य द्वितीयं तथा एकादशमं चैव ।
 द्वाविंशतिमं पुनः गृह्य तृतीयस्य प्रथमं तथा ॥ ९ ॥

चतुर्थस्य तृतीयं तु ऊष्माणां चतुर्थं चैव ।
 चतुर्थस्य तृतीयकं सप्तमस्य चतुर्थकम् ॥ १० ॥

एकविंशतिं ततोह(द्ध)त्य द्वितीयस्य तु प्रथमम् ।
 पञ्चमस्य प्रथमं चैव द्वितीयस्य षष्ठमक्षरम् ॥ ११ ॥

पञ्चमस्य चतुर्थं तु तथा क्षाख्यमेव च ।
 चतुर्विंशतिं ततोह(द्ध)त्य पुनः पिण्डं तु कथ्यते ॥ १२ ॥

पञ्चमस्य तृतीयकं तु ऊष्माणां तु तृतीयकम् ।
 अन्तःस्थानां द्वितीयं वै चतुर्थस्य चतुर्थकम् ।
 भास्करं च पुनर्दद्यात् ॥ १३ ॥

विंशत्यक्षरं समादाय षोडशेनासनं ततः ।
 वह्निनाऽधो दीपितं पञ्चमस्य तु पञ्चमम् ।
 अन्तःस्थानां तृतीयकम् ॥ १४ ॥

पञ्चमस्य तृतीयकं षष्ठस्यापि तृतीयकम् ।
 अन्तःस्थानां चतुर्थं तु पञ्चविंशतिभेदितम् ।
 चतुर्थस्य तु पञ्चमम् ॥ १५ ॥

द्वितीयस्य तृतीयं तु सूर्यपुत्रेण भेदितम् ।
 ऊष्माणां चतुर्थं चैव प्रथमस्य तृतीयकम् ।
 तेजासनं तथा सप्तमस्य चतुर्थकं पञ्चदशेनासनौ द्वौ ॥ १६ ॥

ऊष्माणां तृतीयं चैव पञ्चमस्य प्रथमम् ।
षोडशेन तु आसनम् एकविंशति ततो गृह्य ।
चतुर्थस्य प्रथमं तथा अन्तःस्थानां तृतीयं चैव ॥ १७ ॥

प्रथमस्य तृतीयं चैव चतुर्थस्यापि प्रथमं तथा ।
चतुर्विंशति तथा पुनः द्वितीयस्य तृतीयकम् ।
प्रथमस्य तृतीयम् ॥ १८ ॥

ऊष्माणां तृतीयं चैव एकविंशतिं तथा ।
भास्करेण समाक्रान्तं पञ्चमस्य तृतीयकम् ।
चतुर्थस्य यः प्रथमं द्वितीयस्य तृतीयकम् ।
तेजेन तु दीपितं अन्तःस्थानां प्रथमं विदुः ॥ १९ ॥

ततः षोडश समादाय द्वितीयस्य तृतीयकम् ।
वह्नि[ना मूर्ध्नि] दीपितं तथा षड्विंशतिमेव च ॥ २० ॥

प्रथमस्य प्रथमं द्वितीयस्य प्रथमं तृतीयस्य चतुर्थं तु त्रयोदशेनासनौ द्वौ
प्रथमस्य प्रथमं तथा द्वितीयस्य प्रथमं तथा चतुर्दशमं चैव ॥ २१ ॥

ऊष्माणां तु चतुर्थकं सप्तविंशेनासनम् ।
यकारस्याष्टमं बीजं भास्करेण तु दीपितम् ॥ २२ ॥

द्वितीयस्य तृतीयं तु पञ्चदशेन आसनम् ।
द्वितीयस्य तृतीयं तु तृतीयस्य पञ्चमारूढम् ॥ २३ ॥

क्षाण्यबीजसंहृत्य पञ्चविंशति आसनम् ।
पिण्डं संहृत्य शोभनं मकारकृतासनम् ॥ २४ ॥

ऊष्माणां चतुर्थं चैव सप्तमस्य च चतुर्थकम् ।
यवर्गाच्चाष्टमं बीजं तथा त्रयस्त्रिंशमेव च ॥ २५ ॥

पञ्चात्मकं समुद्धृत्य पुनः तृतीयं द्वितीयं तु ।
अत्र वै द्वितीयस्य प्रथमं अन्तःस्थानां तृतीयं तु ।

सर्पं वा तर्जय २ आकड्ड २ ह्रीं २ ज्यों २ क्ष्माँ २ हाँ २ ह्रीं २ हूँ २ किलि २
सिलि २ चि(हि)लि २ धिलि २ हूँ २ ॥ २४ ॥

कर कर कुरु कुरु बन्ध बन्ध त्रासय त्रासय क्षोभय क्षोभय ह्रीं ह्रीं हः हः फैं फैं
फट् फट् दह दह पच पच भक्ष भक्ष वसरुधिरान्त्रमालावलम्बिने ग्रिह्ण ग्रिह्ण सप्त-
पातालगतभुजङ्गं सर्पं वा तर्जय तर्जय आकड्ड आकड्ड ह्रीं ह्रीं ज्यों ज्यों क्ष्माँ क्ष्माँ
हाँ हाँ ह्रीं ह्रीं हूँ हूँ किलि किलि सिलि सिलि चिलि चिलि (हिलि हिलि) धिलि
धिलि हूँ हूँ इति मन्त्रः। अस्य चान्ते फट्कारद्वयमुपदेशतो ज्ञेयम् ॥ २४ ॥

विद्याराजस्य मन्त्रः १सर्वसाधनवर्जितः ।

नातः परतरं किञ्चित् त्रिषु लोकेषु विद्यते ॥ २५ ॥

विद्याराजः श्रीहेरुकः तस्य मन्त्रः। अष्टपदस्य मन्त्रत्वेना^२सिद्धत्वान्नायं वर्णो-
द्धारमात्रात्मकत्वाद्विद्याराजस्य मन्त्र इत्युच्यते सांप्रतम्। अथवा विद्या डाकिन्यादयो
राजन्ते जायन्तेऽने[नेति] विद्याराजो मन्त्रः करकरादिः। प्रथमार्थे षष्ठी। बुद्ध^३-
रेखायामस्य ग्रथनादस्यैव विद्याराजत्वमित्युपदेशः। सर्वसाधनवर्जित इति। होमादि-
साधनवर्जितः। जपमात्रेण साध्यत्वात्। नातः परतरं किञ्चिदिति। किमप्यन्यत् सिद्धेः
साधनम् ॥ २५ ॥

ज्ञात्वा श्रीहेरुकं मन्त्रं त्यजेत् सर्वं घुणमन्यत् पलालवत् ।

मूलमन्त्रः प्रकीर्तितः ॥ २६ ॥

ऊष्माणं तु तृतीयकम्

॥ २६ ॥

तथा अष्टाविंशतिमं सप्तमस्य चतुर्थकम् ।

षष्ठस्य तृतीयं चतुर्थस्य चतुर्थकम् ।

षष्ठस्य तृतीयं द्वौ द्वौ पदचतुष्टयम् ॥ २७ ॥]

१. सर्वकर्मप्रसाधकः- भो०, संत्रासवर्जितः- क.
२. मन्त्रत्वेन सिद्ध- भो०
३. बुद्धकुले- भो०

इति श्रीहेरुकाभिधाने मूलमन्त्रस्याक्षरोद्धारविधिपटलः पञ्चमः ॥ ५ ॥

अत आह— ज्ञात्वेत्यादि। श्रीयुक्तो हेरुको येन सिद्ध्यति स श्रीहेरुको मन्त्रः। तं ज्ञात्वा सिद्धिप्रभवं बुद्ध्वा ततोऽन्यत् मन्त्रपदम्। पलालवत् इति। क्रियाधारोपः। एतत् साध्यफलापेक्षया निष्फलत्वात्। घुणः कीटविशेषः। तेन खादितं काष्ठं च घुणः ततोऽयमर्थः घुणखादितकाष्ठमिवार्थक्रियाशून्यमन्यं मन्त्रजातं पलालमिव निष्फलं च मन्यते योगी। मूलमन्त्रः प्रकीर्तित इति। अक्षरोद्धारात् प्रविभज्य कीर्तितः प्रकीर्तितः ॥ २६ ॥

कोसावित्याह— मूलमन्त्र इति। मूलं सर्वसिद्धीनां तच्चासौ मन्त्रश्चेति स तथा। विद्याराजादन्यो मूलमन्त्र इति भावः। स चाष्टविमोक्षविशुद्ध्याष्टपदः। अक्षराणि व्यञ्जनानि।

इति चक्रसंवरविवृतौ पञ्चमः पटलः ॥ ५ ॥

*

षड्वीरकवचोद्धारविधिपटलः षष्ठः

अतः परं द्वाविंशत्यक्षरं हृदयं सप्ताक्षरमुपहृदयम् ।

यवर्गाच्चाष्टमं बीजं मात्रैर्द्वादशभिस्तथा ॥ १ ॥

संक्षेपरुचीनामर्थे संक्षिप्तो मन्त्रोद्देश्य इत्याह— अत इति । यतः संक्षेपरुच्यर्थं संक्षिप्तमन्त्रदेशना, अतः कारणात् द्वाविंशत्यक्षरं हृदयम्, सर्वसिद्धीनां कारणभूतत्वात् । उपशब्दो हीनार्थः । हीनत्वमक्षरैर्न तु फलेन । तच्च द्वयं परं वक्ष्यमाणमित्यर्थः । किञ्च संक्षिप्तं कवचमन्त्रं तावदाह— यवर्गाच्चाष्टमं बीजमित्यादि । यवर्गाच्चाष्टमं बीजं हकारः । चकार एवकारार्थो विशेषार्थो वा । मात्रैर्मात्राभिर्नपुंसकवर्जिताभिः । तथेत्यर्थविशेषवर्तिनीभिः । लक्षणे तृतीया ॥ १ ॥

अक्षरान्तरितं कृत्वा षडङ्गः श्रीहेरुकोच्यते ।

षड्वीरसमायोगैरेकैकाक्षरसंस्थिताः ॥ २ ॥

अक्षरान्तरितं कृत्वेति । तद्वीजमक्षरान्तरितं कृत्वा । श्रीहेरुकोच्यते इति विभक्तिलोपे सति । स च षडङ्गः षडवयवः । यथा— ह हा हि ही हु हू हे है हो हौ हं हः, इति । अक्षरेणाक्षरेणान्तरितं व्यवहितं कृत्वा श्रीहेरुक उच्यते इति सम्बन्धः । करोति ग्र[ह]णार्थे हकारतो हाकारेण हिकारो व्यवहितः । ततोऽपि हिकारतो हीकारेण हुकारः । ततोऽपि हुकारतो हूकारेण हेकारः । ततोऽपि [हेकारतो] हैकारेण होकारः । ततोऽपि होकारतो हौकारेण हंकारः । इत्युभयव्यवधानमित्युपदेशत एषां षण्णां ग्रहणम् । एतान्यक्षराणि तानि यथा— ह हि हु हे हो हमिति षट् । कदैतानि श्रीहेरुकाद्वयवज्रभूतानि इत्याह— षडित्यादि । यथा(दा) षड्वीरा मन्त्रा एकैकाक्षरसंस्थिता भवन्ति तदा श्रीहेरुकषडङ्गत्वम् । वीरेति प्रथमाबहुवचनलोपात् । एवम्भूताः कथमेते इत्याह— समायोगैरिति । सम्यगादौ योगाः समायोगास्तैः । हकारादेः पूर्वस्मिन् ॐकारादयः षड्वीरादय इत्यर्थः ॥ २ ॥

ॐ नमः स्वाहा वौषट् हूँ हूँ फट्कारसंयुक्तं ज्ञेयं हृदयानि तु साधकः ॥ ३ ॥

ॐ कारादीनाह — ॐ नमः स्वाहा वौषट् हूँ हूँ फट्कारेति प्रथमा बहुवचन-लोपे । संयुक्तं यथा भवति तथा । ज्ञेयम् ज्ञेयानि हृदयानि षण्णां वीराणामिति । तु-शब्दात् केन ज्ञेयानीत्याह — साधक इति । तृतीयार्थे प्रथमा ॥ ३ ॥

प्रथमं तु हृदयं चैव द्वितीयं तु शिरःस्मृतम् ।
तृतीयं तु शिखां दद्याच्चतुर्थं कवचं भवेत् ।
पञ्चमं तु भवेन्नेत्रं षष्ठस्यास्त्रमुच्यते ॥ ४ ॥

इति श्रीहेरुकाभिधाने षड्वीरकवचोद्धारविधिपटलः षष्ठः ॥ ६ ॥

प्रथमं तु हृदयञ्चैवेति । तु-शब्दः स्वदेवतां समुच्चिनोति । एवमुत्तरत्रापि । ॐ हृदयम् । वज्रसत्त्वः प्रथमः । हृदयमिति सप्तम्यर्थे प्रथमा । द्वितीयन्तु शिरःस्मृतिमिति ।¹ नमः हि वैरोचनः शिरसि । स्मृतं चिन्तित इत्यर्थः । तृतीयन्तु शिखां दद्यादिति । स्वाहा हूँ पद्मनर्तेश्वरः । चतुर्थं कवचं भवेदिति । तु-शब्दोऽनुवर्तने । वौषट् हे । कवचं श्रीहेरुकः स्कन्धद्वय इत्युपदेशतो ज्ञेयम् ।

पञ्चमं तु भवेन्नेत्रमिति । हूँ हूँ हो वज्रसूर्यश्चक्षुर्द्वये । षष्ठस्यास्त्रमुच्यतेति । फट् हं हयग्रीवः । सर्वेष्वङ्गेष्वस्त्रम् । षष्ठस्येति प्रथमायां षष्ठी । हृदयादिषु सप्तम्यर्थे प्रथमाया द्वितीया । सर्वत्रैव हृदयानीति हृदयानुवर्तनम् ॥ ४ ॥

एते मन्त्रा एतन्निष्पन्ना वा वीरा एषु स्थानेषु । षड्वीरकवचम् । मारैर्दुर्भेद्यत्वात् । तस्योद्धारः, तदभिधायकः पटलः षष्ठः । षष्ठमपाठे स्वार्थे मकारः ।

इति श्रीचक्रसंवरविवृतौ षष्ठः पटलः ॥ ६ ॥

*

1. अत्र हृदये नमः, शिरसि स्वाहा, शिखायां वषट्, कवचे हुम्, नेत्रयोः वौषट्, अस्त्रे फट्, इत्ययं क्रमोऽन्यत्र दृश्यते ।

मन्त्रोद्धारविधिपटलः सप्तमः

ततः—

स्वराणां त्रयोदशेनैव द्वितीयाक्षरयोजितम् ।

एकादशस्वरसंयुक्तं षष्ठमाक्षरभूषितम् ॥ १ ॥

पूर्वमष्टपदमन्त्राक्षरोद्धारः कृतः। इदानीं तान्यक्षराणि स्वरैर्योजयितुं प्रक्रममाण आह— स्वराणामित्यादि। तत्रैवेत्यक्षरोद्धारावधारणे षष्ठी। त्रयोदशमोकारम्। चकारोऽर्थविशेषे। सूर्यप्रभः सहस्रकिरणोज्ज्वलः मूर्द्धललाटहृदयेषु ध्यातो वशंकरोतीत्येवकार एतमर्थमवधारयति। द्वितीयाक्षरयोजितमिति। द्वितीयमक्षरं नकारात् परो मकारस्तेन योजित ओकारस्तं विदुः। ततो मो-रूपं स्यात्। एवमष्ट(षष्ठ)मादि हि प्रथमान्नकारादेव। एकादशस्वर एकारः। स चासौ संयुक्तश्चेति स तथा। अतः षष्ठमेनाक्षरेण तकारेण भूषितः। ततः ते रूपं स्यात् ॥ १ ॥

स्वराणां चतुर्थेनैव संयुक्तं सप्तमाक्षरम् ।

एकादशस्वरसंयुक्तमष्टमं चाक्षरं विदुः ॥ २ ॥

स्वराणां चतुर्थ ईकारः। एवकारो ह्रस्वनिषेधे। तेन लक्षितं सप्तममक्षरं वकारम्। तेन वी-रूपं स्यात्। अष्टमाक्षरं रेफमेकादशस्वरसंयुक्तं विदुः। तेन रे-रूपं स्यात्। क्रियेयं सर्वत्र ॥ २ ॥

नवमं ततो गृह्याक्षरं द्वितीयस्वरसंयुक्तम् ।

स्वराणां द्वितीयेनैव संयुक्तं द्वादशाक्षरम् ॥ ३ ॥

नवमं ततो गृह्येति। शकारम्। तत इति उद्धृतात् प्रथमान्नकारात्। द्वितीयस्वर आकारः। तेन शा-रूपं स्यात्। द्वादशाक्षरं हकारम्। द्वितीयस्वरसंयुक्तं विदुः। तेन हा-रूपं स्यात् ॥ ३ ॥

एकविंश^१ततो गृह्य द्वितीयस्वरसंयुक्तम् ।

चतुर्दशाक्षरं मतं विंशत्यक्षरसमायुक्तम् ॥ ४ ॥

1. विंशत्येन- क., विंशच्चैव ततो गृह्य- भो०

पञ्चदशाक्षरं गृह्य तृतीयस्वरयोजितम् ।

स्वराणां पञ्चदशं चैव शोभनं षोडशाक्षरम् ॥ ५ ॥

एकविंशत्ततो गृह्येति । एकविंशतितममक्षरं पकारम् । द्वितीयस्वरसंयुक्तं गृहीत्वा तेन युक्तं चतुर्दशाक्षरं लकारं विदुः । ततो ल्पा-रूपं स्यात् । विंशत्यक्षरमिति । विंशतितममक्षरं नकारः । तेनाधः संयुक्तं पञ्चदशाक्षरं गकारम् । स्वराणां तृतीयः स्वर इकारः, तेन लक्षितं विदुः । तेन ग्नि-रूपं स्यात् । एवकारो दीर्घनिषेधे । पञ्चदश-स्वरोऽनुस्वारः । तेनार्चितं षोडशमक्षरं सकारं विदुः । तेन सं-रूपं स्यात् ॥ ४-५ ॥

तृतीयस्वरसंयुक्तं सप्तदशमाक्षरम् ।

स्वराणां द्वितीयेनैव अष्टादशाक्षरसंयुक्तम् ॥ ६ ॥

सप्तदशं नकारं तृतीयस्वरसंयुक्तं विदुः । परमं हितमिति । गुरुबुद्ध्याद्यपकारिणा-मुच्चाटनकारित्वात् तस्य । यथा वायुमण्डलारूढः धूमपुञ्जोपमं साध्यस्य हृत्कण्ठना-भिपादद्वयभावितं तच्च [त]मुच्चाटयति नकाराक्षरमिति । तेन नि-रूपं स्यात् । अष्टा-दशाक्षरं पुनर्भकारम् । द्वितीयस्वरसंयुक्तं विदुः ॥ ६ ॥

आकारस्वरसंयुक्तमेकविंशतिमाक्षरम् ।

मातृकापञ्चमेन संयुक्तं त्रयोविंशत्यक्षरम् ॥ ७ ॥

आकारस्वरसंयुक्तमिति । एकविंशतिमम् । एकविंशतितमं टकारं विदुः । मातृ-कापञ्चम उकारः । तेन संयुक्तं त्रयोविंशत्यक्षरं ककारं विदुः ॥ ७ ॥

स्वराणां त्रयोदशमं तेन संयुक्तं चतुर्विंशत्यक्षरम् ।

प्रथमस्य प्रथमं गृह्य संयोगाक्षरं पञ्चविंशत्यक्षरसंयुक्तम् ॥ ८ ॥

स्वराणां त्रयोदशमं त्रयोदशमोकारमादाय तेन संयुक्तं चतुर्विंशत्यक्षरं टकारं विदुः । प्रथमस्य प्रथमं ककारं विदुः । चकारोऽनुक्तसमुच्चये । सूर्यसमप्रभो बिन्दुयुक्तः साध्यस्य हन्नाभिमूर्धसु न्यस्तस्तं ककारो वशीकुरुत इति । एवकारः समुच्चितार्थाव-धारणे । किं भूतं तं विदुरित्याह— पञ्चविंशत्यक्षरसंयुक्तमिति । पञ्चावशतीति पञ्च-विंशतितममक्षरं तकारः । तेनोपरि संयुक्तम् । तेन त्क्-रूपं स्यात् ॥ ८ ॥

१तृतीयस्य प्रथमं तु द्वितीयस्वरसंयुक्तं षड्विंशत्यक्षरं भवेत् ।
अष्टाविंशतिमं चैव पञ्चदशेनार्चितम् ॥ ९ ॥

तृतीयस्य प्रथमं त्विति टकारं विदुः । इन्द्रायुधसमप्रभष्टकारः साध्यस्य ललाट-
हृत्कण्ठे न्यस्तो वशीकुरुत इति तु-शब्दार्थः । द्वितीयस्वरसंयुक्तमिति । टकाराक्षरं
द्वितीयस्वरसंयुक्तं यत्तत् षड्विंशत्यक्षरं भवेत् । टा-रूपमित्यर्थः । तृतीयस्य प्रथमं तु
द्वितीयस्य सा भवेदिति पाठान्तरे । द्वितीयस्य तु द्वितीयैव मात्रा सा । संयोगेन टा-
रूपमेव । अष्टाविंशतिमं चैवेति । दकारं विदुः । चकारोऽनुक्तसमुच्चये । दकारो मेघ-
समप्रभः साध्यशिरसि चिन्तितः स्तब्धनाति । एवावधारणे । पञ्चदशस्वरोऽनुस्वारः ।
तेनार्चितं विदुः । तेन दं-रूपं स्यात् ॥ ९ ॥

तृतीयस्य प्रथमेन संयुक्तमधोभागेन वह्निसंयुक्तम् ।
तथैव च द्वितीयस्वरयोजितमेकोनत्रिंशतिमं चाक्षरं भवेत् ॥ १० ॥

तृतीयस्य प्रथमेन टकारेणाधोभागे संयुक्तम् । तदधो वह्निना रेफेण संयुक्तम् ।
तथैव च-शब्दाद् द्वितीयस्वरेण च योजितमेकोनत्रिंशत्तमञ्चाक्षरं भवेत् । तेन ष्टा-
रूपं स्यात् । चकारः संयोगसमुच्चये ॥ १० ॥

२एकत्रिंशत्तममक्षरं द्वितीयस्वरयोजितम् ।
द्वात्रिंशत्यक्षरं त्रयोदशस्वरयोजितम् ॥ ११ ॥

एकत्रिंशत्तममक्षरं रेफः । द्वितीयस्वरयोजितं भवेत् तेन रा-रूपं स्यात् । द्वात्रिंश-
त्तममक्षरं लकारः । ३त्रयोदशस्वरयोजितं लो^४-रूपं स्यात् ॥ ११ ॥

भास्करेण समायुक्तं त्रयस्त्रिंशत्यक्षरं भवेत् ।
मातृकाचतुर्थेनैव चतुस्त्रिंशत् समायुक्तम् ॥ १२ ॥

भास्करेण समायुक्तं त्रयस्त्रिंशदक्षरं भवेदिति । भास्करो रेफः । त्रयस्त्रिंशत्तम-

-
1. तृतीयस्य प्रथमं तु - नास्ति भो०
 2. एकत्रिंशत्यक्षरं- क.
 3. द्वितीय- टी०
 4. ला- भो०, गृहीतपाठस्तु मूलानुसारी ।

मक्षरं गकारं संयोगे ग्र-रूपं स्यात्। मातृका चतुर्थ ईकारः। एवकारो ह्रस्वनिषेधे। चतुस्त्रिंशति(दिति)। चतुस्त्रिंशत्तममक्षरं भकारः। तेन भी-रूपं स्यात् ॥ १२ ॥

सर्वकामार्थसाधकं मातृकापञ्चमेनैव।
सप्तत्रिंशत् समायुक्तं साधनं डाकिनीस्मृतम् ॥ १३ ॥

मातृकापञ्चम उकारः। एवकारो दीर्घनिषेधे। सप्तत्रिंशदिति। सप्तत्रिंशत्तममक्षरं मकारः। संयोगे मु-रूपं स्यात्। साधनं डाकिनीति। डाकिनीनां साधनं समग्रो मन्त्रः। अथवा सप्तत्रिंशन्मकारः केवलश्च सम्यगर्कसंकाशः साध्यशिरसि ध्यातो यक्षादीन् वस(शय)तीति साधनं डाकिनीस्मृतम्। डाकिनीसम्मतम् ॥ १३ ॥

अष्टत्रिंशतिमं चैव द्वितीयस्वरयोजितम्।
साधनं सर्वदेवानामेवमेव न संशयः ॥ १४ ॥

अष्टत्रिंशतिमं चैवेति। अष्टत्रिंशत्तममक्षरं खकारः। तस्य द्वितीयस्वरयोगे खा-रूपं स्यात्। इह च सर्वत्र प्रथमा। भवेदिति क्रियायोगे। साधनं खकाराक्षरं भवेद्वि-दुर्वा। एवमन्यत्रापि। इन्द्रगोपसमप्रभः साध्यमूर्द्धादौ चिन्तितो वशयति सर्वदेवादीन् ख इति। चकारं समुच्चितमेवकारोऽवधारयति। अत आह— साधनमित्यादि ॥ १४ ॥

द्वाचालीशतिमं चैव दहनेन तु संयुक्तम्।
अधोभागेन साधकः त्रयश्चालीशतिमक्षरम् ॥ १५ ॥

द्वाचालीशतिममिति द्वाचत्वारिंशत्तममक्षरं सकारः। पूर्वोक्तार्थावधारणे चैव-शब्दः। दहनो रेफः। तु-शब्दोऽवधारणे। स चाधोभागोऽस्येत्यधोभागः। तेन युक्तं द्वाचत्वारिंशतिममक्षरं तेन स्त्र-रूपं स्यात्। तच्च साधको जानीयादीति क्रिया-ध्याहारः। त्रयश्चालीशतिममिति त्रयश्चत्वारिंशत्तममक्षरं भकारः ॥ १५ ॥

स्वराणां पञ्चमेनैव योजितं पञ्चचालीशतिमं चैव।
द्वितीयस्वरयोजितम् ॥ १६ ॥

तत्स्वराणां पञ्चमेन योजितम्। तेन तु भु-रूपं स्यात्। एवकारो दीर्घनिषेधे। पञ्चचालीशतिमम्। पञ्चचत्वारिंशत्तमम्। भकाराक्षरम्। चैव-शब्दः पूर्वोक्तसमुच्चि-

तार्थावधारणे । द्वितीयस्वरयोजितं भा-रूपं स्यात् ॥ १६ ॥

स्वराणां पञ्चमेनैव षट्चालीशसमायुक्तं सर्ववीरप्रपूजितम् ।

सप्तचालीशतिमं चैव द्वितीयस्वरयोजितम् ॥ १७ ॥

स्वराणां पञ्चमेनैवेति पूर्ववत् । षट्चालीशसमायुक्तमिति । षट्चत्वारिंशत्तमं सका-
राक्षरमुकारसंयुक्तं सु-रूपं स्यात् । सप्तचालीशतिमं चैवेति सप्तचत्वारिंशत्तमं रेफा-
क्षरम् । चैवशब्दः पूर्वोक्तार्थसमुच्चितावधारणे । द्वितीयस्वरयोगे रा-रूपं स्यात् ॥ १७ ॥

१वज्रसत्त्वः परमं हि तदेकपञ्चाशकं तथा चैव ।

स्वराणां पञ्चमेन तु शोभनं परमं मतम् ॥ १८ ॥

वज्रसत्त्वः परमं हि तदिति । तदेव रेफाक्षरं वज्रसत्त्वः । एकपञ्चाश एकपञ्चा-
शत्तमः शकारः । तथा चैवेति पूर्वोक्तार्थत्वमस्य सूचयति । पञ्चमेन त्विति । तु-शब्दो
विशेषे । इन्द्रायुधसमप्रभः साध्यगले ध्यात उकारस्तं वशयतीति । ततश्च शु-रूपं
स्यात् । शोभनं परमं मतमिति ॥ १८ ॥

द्वापञ्चाशतिमं चैव द्वितीयस्वरयोजितम् ।

साधनं सर्वदेवानामेवमेव न संशयः ॥ १९ ॥

द्वापञ्चाशतिमं चैवेति । द्वापञ्चाशत्तममक्षरं पकारम् । चैवकारोऽनुक्तार्थसमुच्चया-
वधारणे । वायुना प्रेयमाणोऽम्बुधरारूढो धूम्रवर्णः साध्यस्य कण्ठे हृदि कट्यां पाद-
तले ध्यातस्तमुद्वर्णयन् पकार उच्चाटयतीति । द्वितीयस्वरयोगे पा-रूपं स्यात् ॥ १९ ॥

त्रिपञ्चाशस्तथा पुनः त्रयोदशस्वरयोजितम् ।

२चतुर्थवर्गादकारं समुद्धृत्य चतुःपञ्चाशेन योजितम् ॥ २० ॥

त्रिपञ्चाशः त्रिपञ्चाशत्तमः शकारः । तथा पुनरिति पूर्वोक्तार्थसूचने । तमेव त्रयो-
दशेन स्वरेण योजितं विदुरिति क्रियानुवर्तनम् । तेन शो-रूपं स्यात् । चतुर्थवर्गाद्

1. एतद् वज्रसत्त्वं परं मतम्- भो०

2. 'चतुर्थ-----योजितम्' नास्ति- भो०, 'चतुःपञ्चा-----योजितम्' नास्ति- क., गृहीतस्तु
टीकानुसारी ।

दकारमुद्धृत्येति । चतुर्थवर्गात् तृतीयमुद्धृत्येति वक्तव्ये यदकारमित्युक्तं तत्कवर्गाच्चतुर्थ-
त्वसूचनाय । अन्यथा अवर्गात् कवर्गाद्वेति सन्देहः स्यात् । ततो दकारे लिपिभ्रान्त्या
किमिदमुकारयुगं दकारयुगं वेति संदिह्येत । चतुःपञ्चाशेति । चतुःपञ्चाशत्तमो यकारः ।
तेन योजितं विदुः । तेन द्य-रूपं स्यात् ॥ २० ॥

षट्पञ्चाशदक्षरं षष्ठस्वरयोजितम् ।
ध्रुवं शत्रुनिकृन्तनमन्तःस्थानां चतुर्थेन ॥ २१ ॥

षट्पञ्चाशदक्षरं षट्पञ्चाशत्तममक्षरं शकारः । षष्ठस्वर ऊकारस्तेन योजितं
विदुः । तेन शू-रूपं स्यात् । ध्रुवं शत्रुनिकृन्तनमिति क्लेशशत्रुजयात् । अन्तःस्थानां
चतुर्थो वकारः । सहार्थे तृतीया ॥ २१ ॥

द्वितीयस्वरयोजितं तथा पञ्चदशान्वितम् ।
साधनं सर्वसिद्धीनां ऊनषष्टि चाक्षरं भवेत् ॥ २२ ॥

ऊनषष्टितममक्षरं द्वितीयस्वरयुक्तेन वकारेण तथा योजितं पञ्चदशान्वितं साधनं
सर्वसिद्धीनां भवति । विदुरिति क्रियाया वा द्वितीया । तेन ट्वां-रूपं स्यात् । अनुशंसा
चेयं टकारमात्रस्य समग्रस्य मन्त्रस्य वा ॥ २२ ॥

एकषष्टिमाक्षरसंयुक्तं स्वरेण द्वितीयेन तु ।
एवमेव विदुर्वरा^१ द्वाषष्टिस्तथा चैव ॥ २३ ॥

एकषष्टिमाक्षरेति धकारम् । द्वितीयस्वरयुक्तं धा-रूपं विदुः । तु-शब्दो धकारस्य
केवलस्य पूर्वोक्तार्थाभिधायी । एवमेव विदुर्वरा इति बुद्ध्याः । द्वाषष्टीति द्वाषष्टितम-
मक्षरं रेफं विदुः । तथा चैवेति पूर्वो[क्ता]र्थप्रकारसमुच्चयावधारणे ॥ २३ ॥

तृतीयस्वरयोजितं [डाकिनीनां] परमं मतम् ।
त्रिषष्टिः पुनश्चैव एकादशस्वरसंयुक्तम् ॥ २४ ॥

तत्तृतीयस्वरयोगे रि-रूपं स्यात् । त्रिषष्टीति । त्रिषष्टितमो म(ण)कारः । पुनश्चै-
वेति पुनरुद्धरणं समुच्चयावधारणे । तमेकादशस्वरसंयोगे णे-रूपं विदुः ॥ २४ ॥

1. बुधा:- क.

शोभनं वर्णोत्तमं पञ्चषष्टिस्तथा चैव ।
वज्रसत्त्वेन भेदितं ¹द्वितीयस्वरयोजितम् ॥ २५ ॥

पञ्चषष्टीति घकाराक्षरम् । वज्रसत्त्वो रेफः । तथा चैवेति पूर्वोक्तार्थप्रकारसमुच्च-
यावधारणे । तेन घ्रा-रूपं विन्ध्यात् ॥ २५ ॥

इदं बीजं परं दिव्यं सिद्धिदं मोक्षदं महत् ।
षट्षष्टि अक्षरं तु तृतीयस्वरयोजितम् ॥ २६ ॥

२[सिद्धिदं] सर्वकार्येषु तथागत इदं ब्रवीत् ।
सप्तषष्टिमाक्षरसंयुक्तं द्वितीयस्वरयोजितम् ॥ २७ ॥

षट्षष्टीति । षट्षष्टितममक्षरं जकारम् । तथागतोऽब्रवीत् । चकारः पूर्वोक्तार्थ-
समुच्चये । तृतीयस्वरयोगे जि-रूपं स्यात् । सप्तषष्टिमाक्षरेति सप्तषष्टिममक्षरं नकार-
मब्रवीत् । द्वितीयस्वरयोजितं ना-रूपं स्यात् । तच्च संयुक्तमर्थेन ॥ २६-२७ ॥

योगिनीनां सर्वकार्येषु एवमेव न संशयः ।
अष्टषष्टि पुनश्चैव बकारं तत्र योजयेत् ॥ २८ ॥

३[अनेन बीजाक्षरेण] अधोभागे प्रकल्पयेत् ।
एकसप्तत्यक्षरं चैव द्वितीयस्वरयोजितम् ॥ २९ ॥

अष्टषष्टीति । अष्टषष्टितममक्षरं मकारमब्रवीत् । पुनश्चैवेति पूर्वोक्तार्थसमुच्चयाव-
धारणे । बकारं तत्र योजयेदिति मकारेऽधोभागे प्रकल्पयेत् । तेन म्ब-रूपं स्यात् ।
एकसप्तत्यक्षरम् । एकसप्ततिममक्षरं रेफमब्रवीत् । चैव-शब्दः पूर्वोक्तार्थसमुच्चयाव-
धारणे । द्वितीयस्वरयोगे रा-रूपं स्यात् ॥ २८-२९ ॥

शोभनं सर्ववर्णानामेवमेव न संशयः ।
चतुःसप्ततिमं चैव द्वितीयस्वरयोजितम् ॥ ३० ॥

-
1. द्वितीयस्वरयोजितं- नास्ति भो०
 2. सिद्धिदं- नास्ति क., गृहीतस्तु भोटानुसारी ।
 3. नास्ति-क., गृहीतस्तु भोटानुसारी ।

चतुःसप्ततीति । चतुःसप्ततिममक्षरं हकारमब्रवीत् । चैव-शब्दः पूर्ववत् । द्वितीय-स्वरयोगे हा-रूपं स्यात् ॥ ३० ॥

आदिसिद्धिदं तथागतमुखोद्गतम् ।
पञ्चसप्ततिमं चैव मात्रिकाषष्ठमेव च ॥ ३१ ॥

पञ्चसप्ततीति । पञ्चसप्ततिममक्षरं धकारमब्रवीत् । चैव पूर्ववत् । मात्रिकाषष्ठयोगे तच्च धू-रूपं स्यात् ॥ ३१ ॥

एष योगवरः श्रेष्ठः सर्वयोगेषु चोत्तमः ।
षट्सप्ततिं चैव मातृकाद्वितीयेन तु ॥ ३२ ॥

षट्सप्ततिमं षट्सप्ततिममक्षरं मकारं मात्रिकाद्वितीयेन भेदयेत् । चैवशब्दः पूर्ववत् ॥ ३२ ॥

सूर्येण भेदयेच्चैव वकारं तत्र योजयेत् ।
नान्यत् परमं शोभनं सप्तसप्तत्यक्षरसंयुक्तम् ॥ ३३ ॥

सूर्येण भेदयेच्चैव वकारं तत्र तयो रूपं त्वधोभूतयोर्मध्ये योजयेत् । तेन म्वा-रूपं स्यात् । नान्यत् परमं शोभनमिति । म्वा-बीजात् । सप्तसप्तत्यक्षरेति । सप्तसप्ततित-ममक्षरं नकारं संयुक्तं पूर्वोक्तेनार्थेनाब्रवीत् ॥ ३३ ॥

धकारं तत्र योजयेत् शोभनं डाकिनीमतम् ।
अष्टसप्ततिं चैव द्वितीयस्वरयोजितम् ॥ ३४ ॥

धकारेणाधोभागयोगे न्ध-रूपं स्यात् । अष्टसप्ततीत्यष्टसप्ततिममक्षरं ककारः चैव पूर्ववत् । द्वितीयस्वरयोगे का-रूपं स्यात् ॥ ३४ ॥

¹[एतद्वीजं परं दिव्यं] कारणं परमं मतम् ।
एकाशीत्यक्षरं चैव चतुर्थान्तस्वरभेदितम् ॥ ३५ ॥

1. [] पाठो नास्ति- क., गृहीतस्तु भोटानुसारी ।

एकाशीत्यक्षरमेकाशीतितममक्षरं प-रूपं (पकारं) चतुर्थान्तस्वरभेदे पु-रूपं स्यात्। चैव पूर्ववत् ॥ ३५ ॥

आदिसिद्धिकरं ह्येतत् सर्वसिद्धिप्रवर्तनम् ।

द्वाशीत्यक्षरं चैव तथा द्वितीयस्वरयोजितम्^१ ॥ ३६ ॥

1. इतः परं भोटपाठे अभिधानोत्तरे (पृ० २७८-२८१) च अधिकः पाठः, स चेत्थम्—

[मातृकापञ्चमेनैव तथाऽष्टाशीत्यक्षरम्। मातृकापञ्चमेनैव नवाशीत्यक्षरम्। मातृकापञ्चमेनैव तथा नवति अक्षरम्। मातृकापञ्चमेन तु एकनवत्यक्षरम् ॥ १ ॥

मातृकाद्वितीयेनैव षण्णवत्यक्षरम्। स्वराणां द्वितीयेन तु एकोनशतमक्षरम्। त्रासनं सर्वदुष्टानां मातृणां (मन्त्रिणां) च सुखावहा (हम्) ॥ २ ॥

स्वराणां त्रयोदशेनैव संयुक्तं द्वितीयाक्षरम्। मातृकात्रयोदशेनैव संयुक्तं पञ्चम-मक्षरं क्षोभणं सर्वदुष्टानां डाकिनीनां सुखावहम् ॥ ३ ॥

स्वराणां चतुर्दशेनैव संयुक्तमष्टमाक्षरं पञ्चदशेन पूजितम्। स्वराणां चतुर्दशेनैव युक्तं नवमाक्षरं बिन्दुना मूर्ध्नि लाञ्छितम्। हर्षणं साधकानां तु डाकिनीनां विशेषतः ॥ ४ ॥

स्वराणामेकादशेन संयुक्तं द्वादशाक्षरम्। बिन्दुना मूर्ध्नि लाञ्छितं स्वराणामेकादशेन संयुक्तं त्रयोदशाक्षरं बिन्दुना च विभूषितम्। त्रासनं सर्वभूतानां साधकानां हितावहम् ॥ ५ ॥

स्वराणां पञ्चमेनैव संयुक्तं द्वात्रिंशत्यक्षरम्, स्वराणां तृतीयेन संयुक्तं त्रयस्त्रिंशत्यक्षरम्। मात्राद्वितीयेन संयुक्तं चतुस्त्रिंशत्यक्षरम्, स्वराणां द्वितीयेन तु संयुक्तं षड्त्रिंशत्यक्षरम्, आद्यद्वितीयेन तु संयुक्तं सप्तत्रिंशत्यक्षरम् ॥ ६ ॥

स्वराणां तृतीयेन तु संयुक्तं चालीशाक्षरम्, मातृका-एकादशेन संयुक्तं एक-चालीशमक्षरम् ॥ ७ ॥

स्वराणां तृतीयेन संयुक्तं द्वाचालीशाक्षरम् । स्वराणां तृतीयेन संयुक्तं चतुश्चालीशाक्षरम् ॥ ८ ॥

मातृकाद्वितीयेनैव संयुक्तमष्टचालीशाक्षरं स्वराणां द्वितीयेन संयुक्तं एकोनपञ्चाशमक्षरम् ॥ ९ ॥

मातृकापञ्चमेनैव संयुक्तं त्रिपञ्चाशमक्षरम्, चतुःपञ्चाशमक्षरं बिन्दुना विभूषितम् । पञ्चपञ्चाशमक्षरं मूर्ध्नि बिन्दुना लाञ्छितम् ॥ १० ॥

सप्तपञ्चाशमक्षरं बिन्दुना मूर्ध्नि लाञ्छितम् । द्वितीयस्वरयोजितमष्टपञ्चाशमक्षरम् ॥ ११ ॥

स्वराणां द्वितीयेन संयुक्तं पञ्चषष्ठ्यक्षरम् । मातृकाद्वितीयेनैव संयुक्तं अष्टषष्ठ्यक्षरम् । आकर्षयेत्सर्वसिद्धीनां [साधकानां] श्रियं ददः ॥ १२ ॥

मातृकाचतुर्थेनैव संयुक्तमेकसप्तत्यक्षरं बिन्दुना विभूषितम् ॥ १३ ॥

स्वराणां चतुर्थं चैव संयुक्तं द्वासप्तत्यक्षरं सर्वसत्त्ववशीकारं बिन्दुना समाक्रान्तम् ॥ १४ ॥

मातृकाचतुर्दशं तु युक्तं त्रिसप्तत्यक्षरम् । तथा पञ्चदशान्वितम् ॥ १५ ॥

स्वराणां द्वितीयेनैव संयुक्तं चतुःसप्तत्यक्षरम् । मातृकाद्वितीयेनैव संयुक्तं पञ्चसप्तत्यक्षरं बिन्दुना विभूषितम् । मातृकाद्वितीयेनोक्तं (न युक्तं) षट्सप्तत्यक्षरम् । बिन्दुना च द्वौ लाञ्छितौ । मातृकाद्वितीयेनोक्तं (न युक्तं) सप्तसप्ततिमक्षरम् ॥ १६ ॥

मातृकाचतुर्थेनैव (द्वितीयेनैव) अष्टसप्ततिमक्षरं बिन्दुनाक्रान्तमस्तकम् । स्वराणां चतुर्थेनैव ऊनाशीति [अशीतिः] तथैव च । [बिन्दुना विभूषितम्] ॥ १७ ॥

स्वराणां षष्ठमेन [युक्तं] उत्पत्तिर्वाजिराजस्य बिन्दुना विभूषितम् । स्वराणां तृतीयेनैव संयुक्तं षोडशाक्षरम् ॥ १८ ॥

1[इमं तु परमं दिव्यं] मूलमन्त्रं विदुर्वराः ।

आलयं सर्वसिद्धीनां डाकिनीनां हृदयमर्दनम् ॥ ३७ ॥

द्वाशीतितममक्षरमिति । द्वाशीतितममक्षरं षकारं चैव पूर्ववत् । द्वितीयस्वरयोगे षा-रूपमब्रवीत् । मूलमन्त्रोऽयमष्टपदः । अत आह— मूलमन्त्रं विदुर्वरा इति ॥ ३६-३७ ॥

श्रीहेरुकदेवस्य विद्याराजपठितसिद्धिरयं मन्त्रः । ॐकारादि हूँ २ फट्कारान्तयोजि²तो मूलमन्त्रः सर्वकामार्थसाधकः³ ॥ ३८ ॥

इति श्रीहेरुकाभिधाने मन्त्रोद्धारविधिपटलः सप्तमः ॥ ७ ॥

श्रीहेरुकैर्दीव्यतीति श्रीहेरुकदेवः । तस्य विद्याराजो मन्त्रः करकरेत्यादि । ॐकारादि हूँ हूँ फट्कारान्तयोजिता इति निर्विभक्तिकं प्लुतोच्चारणम् । मन्त्रप्रभावलोचने एतद्विशेषणं मूलमन्त्रस्य विद्याराजस्य च । अत आह— अयं मन्त्र इति । न केवलं मूलमन्त्र ॐइत्यादिपदविशिष्टः किं तर्ह्ययं विद्याराजोऽपीत्यर्थः । सर्वसाधनवर्जिता इति । हृदयोपहृदयक⁴वचमन्त्रा मूलमन्त्रो विद्याराजश्च सर्वैः साधनैर्लिखनादिभिर्वर्जिताः ॥ ३८ ॥

मूलमन्त्रस्य सर्वभावेन विद्याराजस्य चांशेनोद्धारस्तद्विध्यभिधायकश्चासौ पटलश्चेति स तथा सप्तम इति ।

इति श्रीचक्रसंवरविवृतौ सप्तमः पटलः ॥ ७ ॥

*

शत ऊर्ध्वं त्वक्षराणां अष्टनवतिसंख्यया ।

श्रीहेरुकनाथेन कोष्ठादिदं समुद्धृतम् ॥ १९ ॥]

1. [] पाठो नास्ति- क.

2. 'योजिता मूलमन्त्रा सर्वसाधनवर्जिताः' इति टीकासम्मतः पाठः ।

3. क.मातृकायामयमंशोऽधिकः— तत्सर्वे वीरस्वमात्मानं सर्ववीरसमायोगं डाकिनीजालसंवरम् ।

4. विधि०- भो०

विपरीतहृदयषड्योगिनीमन्त्रोद्धारविधिपटलोऽष्टमः

ततः स्वमात्मानं सर्ववीरसमायोगम् ।

¹सर्वसिद्धिसमावहं डाकिनीजालसंवरम् ॥ १ ॥

हृदयोपहृदयमन्त्रौ प्रागुद्दिष्टौ, षड्योगिनीकवचमन्त्रो वज्रवाराह्या ²हृदयमन्त्र-
शानुद्दिष्टः । ते सर्वे क इत्याह— तत इत्यादि । तत एवालिकालिसमुदायात् सर्ववीर-
समायोगडाकिनीजालसंवरं समुद्धरेदिति द्रष्टव्यं सर्वेत्यादिना । श्रीहेरुकस्तन्मन्त्रोऽपि
तथोच्यते यथैते वर्णा हास्वारमित्यादयः सिद्धा मन्त्रगता दृश्यन्ते तथाऽऽलि[कालि]-
भ्यामेवैवंभूताः पृथक्कृता इति समुद्धारः, विलोमरूपेण गोपादुद्भ्रियमाणत्वात् । किं
भूतमित्याह— स्वात्मानमिति । निजं चित्तमित्यर्थः ॥ १ ॥

हा स्वा रं व सं ल जा नी कि डा ट्फ हूँ हूँ कं रु रु हे हे ज्रव श्री ॐ ॥ २ ॥

विद्याराजस्य हृदयं न भूतो न भविष्यति ॥ ३ ॥

ॐ श्रीवज्र हे हे रु रु कं हूँ हूँ फट् डाकिनीजालसंवर स्वाहेत्यनुलोमेन
लिखनं समुद्धारः । हृदयमन्त्रो द्वाविंशत्यक्षरोऽयम् । कस्य हृदयमित्याह— विद्ये-
त्यादि । ॐ कर करेत्यादि विद्याराजस्य हृदयमष्टपदस्य च हृदयं संक्षिप्तमुच्यते ।
अस्य सामर्थ्यमाह— न भूत इत्यादि । अतीतानागतयोः कालयोर्न मया कस्मैचिदयं
मन्त्रः कथितः कथयिष्यते चेति भावः ॥ २-३ ॥

³ट्फ हूँ २ ह ह ह्रीं ॐ । ट्फ हूँ हूँ ह्रीं हाँ ॐ ॥ ४ ॥

षड्योगिनीकवचमन्त्रोद्धारमाह—ट्फेत्यादि । ॐ हाँ ह्रीं हूँ हूँ फडिति प्रगुणी-
कृतोऽयं ट्फ हूँ हूँ ह्रीं हाँ ॐ इति वर्णराशिः ॥ ४ ॥

वँकार-यौँकार-मौँकार-ह्रीँकारमेव च ।

हूँकार-फट्कारः समाख्यातः षड्योगिन्यः प्रकीर्तिताः ॥ ५ ॥

1. चक्रसंवरं मतं- भो०

2. उपहृदय- भो०

3. भोटपाठे एकवारमेवायं मन्त्रो लिखितः किन्तु टीकाकारेणानुलोमविलोमक्रमेण प्रगुणीकृतः ।

क. मातृकायां “ट्फ हूँ हूँ ह ह ह्रीं ॐ” इति गृहीतः पाठो नास्ति- भो० टी० ।

वंकारश्च यौंकारश्च मौंकारश्च हौंकारश्च हूँकारश्च फट्कार एव चेति । ॐ-
कारादयो वँकारादीनामादौ योज्याः । ॐ वँ वज्रवाराही नाभौ । हाँ यौ यामिनी
हृदये । हौं मौं मोहनी वक्त्रे । हूँ हौं संचारिणी शिरसि । हूँ हूँ त्रासनी शिखायाम् ।
फट् फट् चण्डिका सर्वाङ्गेष्वस्त्रम् । चकारः सर्वत्र परस्परसव्यपेक्षश्च । एवकारः
स्वार्थावधारणे । षड्योगिन्यः प्रकीर्तिता इति वज्रवाराह्यादयः ॥ ५ ॥

हा स्वा ये नी च रो वै ज्र व ॐ ।

डाकिनीनां तु महाविद्या न भूतो न भविष्यति ॥ ६ ॥

षड्योगिनीकवचमन्त्र उद्धृतोऽयम्— ॐ वज्रवैरोचनीये स्वाहेति । वज्रवाराह्या
उपहृदयमन्त्रोऽयं गोपादुद्धृतः । यत ॐ वज्रवैरोचनीये स्वाहेति स्थिते हूँ हूँ फट्-
कारौ गोपितौ, तौ च स्वाहाकारात्प्राक् । डाकिनीति । वज्रवाराह्यादीनां मन्त्रो डाकिनी ।
तु-शब्दो माहात्म्यप्रदर्शने । न भूत इति । मन्त्रविशेषणत्वात् जात्यैकवचनम् ॥ ६ ॥

पृथिव्यां चतुरो रत्ना मन्त्रमाला तु चोत्तमा ।

डाकिनी¹ तु महाविद्या विद्याराजा च हेरुकम् ॥ ७ ॥

इति श्रीहेरुकाभिधाने विपरीतहृदयषड्योगिनी²मन्त्रोद्धार-
विधिपटलोऽष्टमः ॥ ८ ॥

पृथिव्यामित्यादि । यावन्तो लोकधातवस्तावत्सु याः पृथिव्यास्तासु जात्यैक-
वचनम् । चतुरो रत्ना इति । चत्वारि रत्नानि । रतिं तन्वन्तीति कृत्वा । कानि तानी-
त्याह— मन्त्रमालेत्यादि । मन्त्रमाला मालामन्त्रः स चाष्टपदः । अतस्तुशब्दो विशेषे
मकारो व्याख्यातः । अत एवोत्तमा । डाकिनी तु महाविद्येति । वज्रवाराह्यादिमन्त्रः ।
तुशब्दोऽवधारणे । विद्याराजा ॐ कर करेत्यादिः । चकारः समुच्चये । श्रीहेरुकम् ।
एतदर्थज्ञानं भुजमुखादिरूपं च ॥ ७ ॥

विपरीतहृदयषड्योगिनीवज्रवाराहीमन्त्रोद्धारविधिपटलोऽष्टम इति पटलस्यास्य
पिण्डार्थः ।

इति श्रीचक्रसंवरविवृतौ अष्टमः पटलः ॥ ८ ॥

*

1. डाकिनीनां च- क.

2. विपरीतयोगिनी- क., गहीतस्तु भोटानुसारि

मूलमन्त्रस्य कर्मविधिपटलो नवमः

अथातो मूलमन्त्रस्य कर्मवरं वक्ष्ये यथावदनुपूर्वशः ।

त्रैलोक्ये यद्भवेत् किञ्चित्तत्सर्वं साधयेत् क्षणात् ॥ १ ॥

सामर्थ्यश्रवणं विना न मन्त्रप्रवृत्तिरिति, तत्कथनाय नवमं पटलमाह— अथे-
त्यादि । अथेति मन्त्रोद्धारानन्तरम् । कर्म वक्ष्ये इति सम्बन्धः । तच्च वरमीप्सितम् ।
कुत इत्याह— अत इति । यतः फलदर्शनं विना नोपाये प्रवृत्तिः, मूलमन्त्रस्य प्रथमो-
क्तत्वात् । कर्म कार्यम् । एतच्च स्वयमेव उक्तवान् भगवान् यथावदितिप्रचयेन । अनु-
पूर्वश इत्यानुपूर्व्या । मन्त्रस्य कर्तृत्वमाह— त्रैलोक्ये यद्भवेद् विद्यते, किञ्चित् किमपि
तत्सर्वं निःशेषं साधयेत् । क्षणाल्लक्षणजापानन्तरम् ॥ १ ॥

सर्वा[कर्माणि करोति] सर्वनागान् सर्वदेवान् सर्वयक्षान् ¹[सर्वगन्धर्वान्]
सर्वयोनयः सकृत् स्मरणान्मारयति ।

मेघान् त्रासयति वर्षापयति निवारयति । समुद्रान् शोषयति । नदीं कूल-
मुपनयति । इन्द्रं निवारयति । अस्य मन्त्रलक्षजापेन पृथिवीं चालयति ।

वृक्षमारुह्य यत्रेच्छति तत्र गच्छति । सर्वमन्त्रानपहरति सर्वसिद्धिमपहरति ।
²रुचितमाकर्षयति, पुनर्विसर्जयति ।

रूपसहस्राण्यनेकानि कुरुते । इच्छया दृश्यते, इच्छया न दृश्यते । प्रासाद-
द्रुमशिखरादींश्चूर्णयति । विषममृतं करोति । अमृतं विषं करोति । सोमं पयः
करोति । पयः सोमं करोति ।

सर्वगन्धानपहरति । यत्रेच्छति तत्र संक्रामति । मुखगरुडो यानसृष्टिकृत्
सोमसंगमे स्त्रीणां यः समाचरति नरः श्रेष्ठः । तत्र हस्तगता लक्ष्मीर्न के[न]चित्
प्रतिहन्यते ।

1. नास्ति- क.

2. रुधिर- क.

एवं विधिसमायुक्तं सर्वसिद्धिफलभाग् भवेत् । स्मरणान्मारयति । अग्नि-
मुत्पादयति । पातालं ¹विदारयति ²अस(श)निं च पातयति ³[पुनर्निवारयति] ।
विद्युत् स्मरणादुत्पादयति । सर्वदेवप्रतिमां नर्तापयति । यस्य सिद्धिर्नामग्रहाय सकृ-
ज्जप्तेन तत्क्षणादेव ⁴प्रियते । अशेषाणां तु भुवनानां भोक्ता भवति । इच्छया संग्रहति
एष भगवान् ।

न व्रतं न चर्या नोपवासो विधीयते ।

अनेन कल्पोपचारेण कर्म कुर्याद्यथेप्सितम् ॥ २ ॥

साधकव्यापारमाह — सर्वमित्यादि । वैरवधारणे । कर्माह — सर्वेत्यादि । सर्वना-
गान् दृष्टिविषादीननर्थकर्तृन्, अतस्तेषां प्रागुक्तत्वात् । सर्वदेवान् हरिहरहरिण्यगर्भा-
दीन् । सर्वयक्षानोजोहारादीन् । सर्वयोनय इति । क्रूरा मानुषाः । कर्मणि प्रथमा । देवान्
प्राणातिपातादिना देवनकारिणः । मारयति प्राणैर्वियोज[य]ति साधकः । मध्यस्थान-
क्रूरंश्च प्रति सामर्थ्यमुक्तम् । पुनरुत्पादनसामर्थ्यमप्युन्नेयम् अन्यथा कारुणिकस्या-
सामर्थ्यमेव प्रसज्येतेति ।

इदानीमचेतनान् प्रति सामर्थ्यमाह — मेघानित्यादि । त्रासयति चालयति । खण्ड-
खण्डीकरोतीत्यर्थः । वर्षमाप्नोतीति वर्षापः । वर्षापं करोतीति वर्षापयति मेघान् ।
सुबोधं शेषम् । नदीमिति । वेगवतीम् । एतेन किमित्याह — इन्द्रं निवारयतीति । इन्द्रं
जात्यैकवचनम्, इन्द्रन्तीतीन्द्राः । चेतनाचेतनाधिपतीनकार्यकारणान् निषेधयतीत्यर्थः ।
चालयतीति स्फोटयति ।

वृक्षमित्यादिना निश्चेतनं सचेतनवत् करोतीति दर्शयति । सर्वमन्त्रानिति । अव-
तारितानप्यपहरति । इतो वागपहारो दर्शितः । सर्वेषां रसादीनां सिद्धिर्निष्पत्तिः सर्व-
सिद्धिः । सिद्धिमपि द्रव्यादिकमपहरतीति भावः । आहारं रुचितमपकर्षयतीति ।
रुचितमिष्टमन्यतो गृह्णाति । पुनर्विसर्जयतीति मन्त्रादि ।

कायगतं मन्त्रसामर्थ्यमाह — रूपेत्यादि । अनेन बहुभुजमुखादित्वं दर्शितम् ।

-
1. विद्रावयति- क.
 2. करकं- भो०
 3. नास्ति- क.
 4. मारयति- क.

इच्छयेति । योगिन इच्छया योगी दृश्यते न दृश्यते चेत्यदृश्यतासिद्धिरितिरूपगोपन-
सामर्थ्यम् । अथवा यद्रूपं योगिनो द्रष्टादि द्रक्षति तत्तस्यानेयं ज्ञात्वा स दर्शयतीतीच्छा-
दर्शनम् । प्रासादेत्यादिना सुघटितस्यापि विघटनं दर्शितम् । आदिशब्दात् पाषाणशैल-
प्राकारादयो दर्शिताः । इति सुघटितविघटनसामर्थ्यम् । विषमित्यादिना वस्तुस्वरूपा-
ऽन्यथात्वकरणसामर्थ्यम् । सोमं मद्यम् । पयो जलम् । सर्वेत्यादिना मद्यादिगन्धापहारो
दर्शितः । एतेन योगेन विनेय[स्य] तं प्रति तत्र सामर्थ्यं प्रतिपाद्यमिति सूचितम् ।

अन्यथा व्याख्यानं चास्ति— सर्वनागान् सर्वक्लेशान् । सर्वे दीव्यन्त [ए]भिरिति
सर्वदेवा विषयरूपादयः । सर्वथा जयत्येभिरिति । सर्वयक्षाः । जकारे यकारो नैरुक्तः ।
ते चेन्द्रियाणि सर्वेषाम् । योनय उत्पत्तिहेतवः सर्वयोनयः सर्वसिद्धिकर्माणि । स्मर-
णात् मन्त्रचिन्तनात् । मारणं विशोधनम् । मेघान् डाकिनीनाडीसन्धीन् ¹त्रासयति
द्रावयति वर्षापयति । बोधिचित्तं च्यावयति । निवारयति तेषु तत्पुनः स्थिरीकरोति ।
समुद्रान् पापान् । नदी बीजमूर्ध्वीकरोति । इन्द्रं चित्तम् । सर्वाधिपत्यान्निवारयति
स्थिरयति । अस्य मन्त्रलक्षजापेनेति । मन्त्रस्येति षष्ठीलोपे । लक्षत इति लक्षः
श्रीहेरुकः । पचाद्यच् । तस्य जापो मानसो व्यापारो भावनेत्यर्थः । सर्वमिदं मन्त्रजाप-
श्रीहेरुकभावनाभ्यामिति भावः । मण्डलवर्तनकाले पृथिव्यभ्यर्थना पृथिवीचालनम् ।
वृक्षः पञ्चाकारो योगस्तमारुह्य यत्रेच्छति यमिच्छति लब्धुं, तं प्राप्नोति । इष्ट इह
श्रीहेरुक एवेत्याहूतम् । साधनोक्तेन विधिना प्रणवादिनिःस्वभावीकरणं नादादे-
र्बिन्द्वादौ प्रवेशादिति सर्वेत्यादिना प्रतिपादितम् । पुनस्सर्वेत्यादिना नादादिप्रवेश-
सिद्धिर्नादादिनिर्गमात् सर्वसिद्ध्युपहारः । रुचितमित्यादिना स्फरणादि । रूपेत्यादिना
ॐ कर करेत्यादिना मन्त्रविभागः । इच्छयेत्यादिना प्रणिधिः । नेत्यनभिनिवेशात् ।
प्रसीदत्यस्मिन् मन इति प्रासादः कायः । द्रवतीति द्रुः । आगमशासनमनित्यमिति न
तुक् । द्रुरेव द्रुमो वेदना । शिखरं चित्तम् । आदिशब्दाद् धर्माः । चूर्णयति प्रज्ञाशस्त्रेण
विभज्यते । इतश्चतस्रोऽनुस्मृतय उक्ता इति शून्यता दर्शिता । विषं विषयममृतम-
मृतोपमम् । अमृतमप्रसादविषयं करोति सेवते । अमृतं प्रद्योतस्येव निर्वाणं विमोक्ष-
स्तस्य चेतस इति निर्वाणं विषमिव करोति असेव्यत्वात् । रूपादीन् विशोध्य भुंक्त
इति भावः । सोममिति । सह उमाभ्यां वर्तत इति सोम ॐकारः । उश्च मश्चेत्युमौ

विलोमेन संधानम्। अर्द्धचन्द्रनादावुपदेशात्। पकारो जलं वारुणत्वात्। करोतीति द्वयेऽपि। पुनः पयः सोममिति पूर्ववत्। ततोऽयं मन्त्रः। ॐ व व ॐ इति वारुणे मण्डले कुन्देन्दुधवलाश्चतुरो मन्त्राश्चतसृषु दिक्षु शुचिवस्त्रादिभूषितं साध्यश्चेत्तन्मध्ये विचिन्त्य पुरतस्तन्मन्त्रं क्षरद्भिरमृतविन्दुभिस्तं सिञ्चेत् जपेत्।

तत्किमित्याह— सर्वेत्यादि। गन्धो रोगविषादि। शेषं सुस्थम्। मुखं द्वारमुपाय इति पर्यायः। मुखाभ्यां गमनोपायाभ्यां पक्षाभ्यामिव गरुडो मुखगरुडः। अथवा मुखेति तृतीयालोपे। गरुडो गरुडवद् बाहुद्वयस्य पक्षवच्चालनात्। यानस्य गमनस्य सृष्टिर्निष्पादनं करोतीति यानसृष्टिकृद् योगी। सोमयोः प्रज्ञोपायसम्भवयोर्वोधिचित्तयोः सङ्गमस्तं समाचरति। यः स्त्रीणां पुष्पवतीनां नरो विवेकित्वात्। श्रेष्ठोऽसाधारणः। एतेन तद्वोधिचित्तं मुखेनादाय गरुडवत्पक्षद्वयमुच्चालयन् प्रज्ञामुखे दत्त्वा शेषं स्वयमभ्यवहरेत्। एतच्च जप्तलक्षाष्टपदमन्त्रोच्चारणसमं साध्यम्। तत्र गता स्थिता लक्ष्मीर्विभूतिर्भवन्ती न केनापि देवपुत्रमारेण प्रतिहन्यते विघ्नादिति यावत्। उपदेशस्त्वयं 'कूटयोर्हानियोगेन मुर्मुकुटमिति स्मृतम्' इति मुर्मुकुटं खो मूलं मुखमद्वयज्ञानविशुद्धः। ग उत्तरं हेत्वादिशून्यताविशुद्धः। रु पश्चिमं प्रणिधाननिर्मुक्तिविशुद्धः। डो दक्षिणं न क्वचित् स्थितिविशुद्धः। समुदायेन मुखगरुडाः सन्त्यस्येति मुखगरुडः श्रीहेरुकः। सोमसङ्गमं यः समाचरति स मुखगरुड इति योज्यम्। किम्भूत इत्याह— यानसृष्टिकृदिति। यानं प्रज्ञोपायज्ञानम्, तेन सृष्टिरुत्पादस्तत्कृत्। केषामित्याह— स्त्रीणामिति योगिनीनाम्। सकारोऽर्धचन्द्रोऽमृतबीजत्वात्। तत उकारः। ततः खण्डमकारोऽनुस्वारवाचकः। अकारोऽधः पार्श्वदण्डवाचकः। सोमैः संगच्छत इति सोमसङ्गमो हकारः। समुदायेन हूँकारः। नाद उपदेशात्। तं समाचरति जानाति भावयतीति यावत्। नर इति। नृ नय इति भौवादिको धातुः। नरति यथास्थानं देवीं पश्यतीति नर इति पचाद्यच्। श्रेष्ठो नायकत्वात्। हूँकारजवरटकस्थं हूँकारवज्रं ततो जातः श्रीहेरुकः। सृष्टिकृदिति समुदायार्थः। तत्र हस्तगता लक्ष्मीर्वज्रवाराही न केनचित् कवचयोर्मध्ये केनापि प्रतिहन्यते प्रत्यङ्गं न प्राप्यते।

एवं पूर्वोक्तेन विधिना समायुक्तं यथा भवति तथा सर्वसिद्धिफलभागभवेत्। स्मरणादित्यादिना मनुष्यतिर्यग्नरकगतं सामर्थ्यम्। अग्निं रेफम् आग्नेयमण्डले रेफं त्र्यस्रं विभाव्य वायुमण्डलप्रेरणादग्निं जनयति, अकस्माद्वा, मन्त्रशक्तेरचिन्त्यत्वात्।

पातालं विदारयतीति । पातालस्थमुरगसमूहं पातालं विदारयतीति यूयमकिञ्चित्करा इति विडम्बयतीत्यर्थः । भीषयत इति वा । अशनिं च पातयतीति । चकारादन्यच्च शस्त्रविशेषम् । अशनिं भोजनमिच्छया कुतोऽप्यानयतीत्यर्थान्तरम् । विद्युदिति । कर्मणि प्रथमा । विना मेघं विद्युदुत्पादः । विद्युच्छोभा दीप्तिः । स्मरणाच्चिन्तनात् । तामुत्पादयति वा । विद्युद्वसुधारा तां स्मरणाद् हूँकारादुत्पादयतीत्यर्थान्तरम् । शेषं सुस्थम् । यस्य सिद्धिर्नामग्रहणायेति । नामग्रहणार्थं यस्य मन्त्रादिसिद्धिर्भवति, योऽतिशयेन मन्त्रसिद्धोऽपीत्यर्थः । नामग्रहणेन मन्त्रसिद्धिरिति समुदायार्थः । सोऽपि सकृज्जप्तेन मन्त्रेण प्रियते । अतिशयतीर्थिकमन्त्रसिद्धिसामर्थ्यम् । कामधात्वादीनां भुवनानां भोक्ता पालयिता । अथवा भुवनानां विस्तारयिता निर्मातेत्यर्थः । अत आह— इच्छयेत्यादि । नियमादिना विना सिद्ध्यतीत्याह— एष इत्यादि । एष इहाष्टपदो ¹मन्त्रः, स यथेप्सितं कर्म कुर्यादिति सम्बन्धः । व्रतं महाव्रतादि । चर्या अवधूतादिरूपता । आहारं विना अहोरात्रस्थितिरुपवासः । अत एवोक्तं पठितसिद्ध इति । कल्पशास्त्रम्, तत्रोक्त उपचारो विधानम् । यथेष्टविहारः ॥ २ ॥

यदि क्रुद्धः सकृदावर्तयति कोटिं मारयति । शान्तेन वर्तितो जीवापयति । श्मशानाङ्गारेण सकृज्जप्तेन यमाहनति स तत्क्षणात् पतति । भस्म परिजप्य यमाहनति स तत्क्षणात् पिशाचेन गृह्यते । श्मशानाङ्गारेण ² फलके भित्तौ वा रात्रौ यस्य नाम लिखति स महाग्रहेण गृह्यते ।

अतिमुक्तिकलतया सकृज्जप्तया यमाहनति स तत्क्षणात् पवनवेगेनागच्छति । स(श)र्करया सकृज्जप्तया यं ताडयति स स्तम्भितो भवति । यत्रेच्छति तत्र संक्रामति । गुग्गुलं सकृत् परिजप्य धूपं प्रयोजयति, स सर्वसत्त्वानावे[श]यति । हस्तं सकृत् परिजप्य ³मुखं प्रच्छाद्य कालदष्टमुत्थापयति । डाकिनीमुद्रामुद्रितस्य सकृज्जप्तेनोदकेन ⁴स्तम्भयति । सकृज्जप्तया करवीरलतया यत्रेच्छति तत्र संक्रामयति गर्भम् ॥ ३ ॥

-
1. मूलमन्त्रः- भो०
 2. सकृज्जप्तेन- इत्यधिकं भो०
 3. नास्ति- भो०
 4. विसृजति- भो०

इदानीं भैषज्यसहकारिणो मन्त्रस्य सामर्थ्यमाह— यदीत्यादि । लोहमलममुकस्य मुण्डमद्भीति चर्व[य]न् क्रुद्धः सकृदावर्तयन्मन्त्रं सत्त्वानां कोटिं मारयति । शान्ते-
नाक्रोधेन चित्तेन मूर्ध्नि जीवन्तीं परिधायवर्तनात्प्रत्यानयनं जीवस्यापः प्राप्तिः जीवापः
तं करोतीति जीवापयति । अरिष्टवृक्षस्य दक्षिणदिग्गतां शाखां चण्डालादिकुठार-
च्छिन्नामादाय कृष्णाष्टम्यां चतुर्दश्यां रात्रौ श्मशाने दग्ध्वा तस्य पत्ररसेन निर्वाप्या-
ङ्गारो भस्म च ग्राह्यम् । अथवा श्मशानेति । श्मशानगतं भस्म । तृतीयालोपे सति ।
अङ्गारेणेति । मङ्गलवारे मङ्गलवारगृहीतेन तेन भस्मनायं विधिरिति समुदायार्थः ।
मन्त्रलक्षजापानन्तरमित्यतिमुक्तकलतामण्डलो(मनुसृत्यो)पवेशनात् कन्याकर्तितसूत्रं
त्रिगुणीकृतहरिद्रारसरञ्जितपश्चिमदिग्गतां तच्छाखां संवेष्ट्य विवसनो मुक्तकेशः
सोमग्रहे मोक्षपर्यन्तं वामेन हस्तेन गृहीत्वा निरन्तरं जपेत् । ततः सा ग्रहीतव्या । अग्रे-
णागच्छति मूलेन निवर्तते । सकृज्जप्तेनेति भावे क्तः । स्तम्भित इति पीतभावनया ।
शेषं सुबोधम् ॥ ३ ॥

न ज्ञात्वा श्रीहेरुकं ज्ञानं सिद्धिं त्वभिकाङ्क्षति ।

तुषाणां कण्डयति स तु मन्त्रेणानेन रहितः ॥ ४ ॥

नैरात्म्यानुविद्धमेव भावनादित्याह— न ज्ञात्वेत्यादि । श्रीकारमद्वयं ज्ञानमित्यादि-
ज्ञानं श्रीहेरुकज्ञानम् । सिद्धिरिति द्वितीयार्थे प्रथमा । तुरतिशयार्थः । विशिष्टां सिद्धि-
मभिमतं कांक्षतीत्यर्थः । तुषाणां कण्डयति स त्विति । असारकण्डनमेव तस्य ।
सारकण्डनेन हि असारपरिहारात् सारावस्थानम् । आदावेव सारग्रहणान्न तस्य
सिद्धिरिति भावः । नैरात्म्यामन्त्रमन्तरेण सिद्धिरित्याह— मन्त्रेणानेन रहित इत्यादि ।
मूलमन्त्रेण । अतो मन्त्रस्यासाधारणरूपमुक्तम् ॥ ४ ॥

न च सिद्धिं न च सौख्यं लभते नरः ।

अविदित्वा इदं मन्त्रं ¹योगित्वम²भिकाङ्क्षति ॥ ५ ॥

सिद्ध्यति साक्षाद्भवतीति सिद्धिः सम्यक् संबोधिः । सौख्यं लोकोत्तरादिसुखम् ।
नर इति नयस्थोऽपि । प्रज्ञोपायाद्वययोगं विना न सिद्ध्यतीत्याह— अविदित्वेत्यादि ।

1. योगीयोगि- क.

2. इहा०- क.

मन्त्रं प्रज्ञोपाययोगम् ॥ ५ ॥

वृथा परिश्रमं तस्य नैव तत्फलमाप्नुयात् ।
कामाचारोऽयं मन्त्रः सर्वसिद्धि¹प्रदायकम् ॥ ६ ॥

2[न व्रतं न तपो ध्यानं मन्त्रं मुद्रां च साधकः] ।
सुगतवर्णितं यं ज्ञात्वा खानपानादि चरु³भोज्यभोजनम् ।
रसाद्याः सर्वसिद्धिश्च [प्राप्नोत्येव हि] साधकः ॥ ७ ॥

इति श्रीहेरुकाभिधाने मूलमन्त्रस्य कर्मविधिपटलो नवमः ॥ ९ ॥

वृथापरिश्रमो भावनादिलक्षणोऽस्येति तत्तथाचेष्टितम् । कामाचारोऽयं मन्त्र इति । पञ्चकामोपभोगेन सिद्ध्यति । अत एवोक्तम्— न व्रतमित्यादि । कोऽसौ मन्त्र इत्याह— सुगत इत्यादि । सुगतैर्वर्णितो निरूपितः । तादृशं यं ज्ञात्वा । मन्त्रमुद्रा-मन्त्रजाश्च देवताः साधको भवति । खानेत्यादि । खानं खादनं पानं समदमदञ्च पेयम् । आदिशब्दाल्लेह्यचोष्यादिकम् । चरु रूत्सृष्टम् । भोज्यं भक्ष्यम् । तस्य भोजनं भोगः । रसः शब्दः । आद्यशब्दाद्रूपगन्धरसस्पर्शा ग्राह्याः । एताः आत्मनः पूजा ज्ञात्वा साधकः सर्वसिद्धिर्भवति । सर्वाः सिद्धयो यतो भवन्ति स तथा । एतेन यथेष्टचेष्टा विषयोपभोगता नोत्फलिता । नैरात्म्यज्ञानञ्च भूषितम् ॥ ६-७ ॥

मूलमन्त्रकर्मविध्यभिधायको नवमः पटलः ।

इति श्रीचक्रसंवरविवृतौ नवमः पटलः ॥ ९ ॥

*

1. सिद्धिफल- क.

2. नास्ति- क., गृहीतं तु टीकानुरोधेन । 'न व्रतं न तपो ध्यानं'- नास्ति भो०

3. पानं- भो०

कायत्रयसिद्धिहृदयमन्त्रस्य कर्मविधिपटलो दशमः

अथ कायत्रयं वक्ष्ये श्रीहेरुकाद्वययोगतः ।

येन विज्ञातमात्रेण सिद्ध्यन्ते नात्र संशयः ॥ १ ॥

कायत्रयात्मकः श्रीहेरुकश्चेत् कायत्रयमेव किं तदिति स्वयं कृते प्रश्ने अथ-
शब्दः । ततोऽयमर्थः— कायत्रयं किं तदिति पृच्छसि चेत् , कायत्रयं वक्ष्ये इति
प्रतिवचनम् । किम्भूतमित्याह— श्रीहेरुकाद्वययोगत इति । श्रीहेरुकोऽद्वयेनासंशयेन
युज्यते यत्र तत्तथा कायत्रयम् । प्रथमान्तात्तसिल् । कायत्रयं विशिष्टकायत्रयमेवेह
साध्यमिति दर्शयति— येनेत्यादि । विज्ञातमात्रेणावबुद्धमात्रेण साक्षात्कृतेनेति यावत् ।
मात्रशब्दोऽवधारणे । सिद्ध्यन्ते सिद्ध्यन्ति धर्मकायादिकं योगिनोऽभिलषन्तीत्यर्थः ।
नात्रेति । नास्यां सिद्धौ भवति न भवतीति संशयः ॥ १ ॥

धर्मकायशरीराणां यदा भवति साधकः ।

[एवं सुविचारवतां] तदा ज्ञानं प्रवदाम्यहम् ॥ २ ॥

धर्मकायसाधनमाह— धर्मेत्यादि । धर्मश्चासौ कायश्चेति धर्मकायः शरीरं येषां ते
तथा, जिनाः । तेषां साधको निष्पादको यदा भवति सिद्ध्यति तदा ज्ञानं प्रवदा-
म्यहम् । ज्ञानं धर्मकायमेकानेकविरहितं तथागतगोचरं प्रकृतिनित्यं प्रकृतिप्रभास्वरं
प्रविभज्य निश्चिनोमि । स च धर्मकायो जिनस्वरूप इति समुदायः । तथा चाह—

यो नैको नाप्यनेकः स्वपरहितमहासम्पदाधारभूतो

नैवाभावो न भावः खमिव समरसो दुर्विभावस्वभावः ।

निर्लेपं निर्विकारं शिवमसमसमं व्यापिनं निष्प्रपञ्चं

वन्दे प्रत्यात्मवेद्यं तमहमनुपमं धर्मकायं जिनानाम् ॥

इति ॥ २ ॥

संभोगकायशरीराणां यदा भवति साधकः ।

[तदा समाहितानां च] संभोगं प्रवदाम्यहम् ॥ ३ ॥

सम्भोगमाह— सम्भोगेत्यादि । असेचनकविग्रहादियुक्तो धर्मदेशनां यदा करोति

तदा संभोगकायो बोधिसत्त्वगोचरः। प्रवाहनित्यः संभोग इति। बुद्धबोधिसत्त्वः सम्य-
क्प्रतिपत्त्या भुज्यत आत्मसात् क्रियत इति स, तथा। तथा चाह—

लोकातीतामचिन्त्यां सुकृतसफला(लता)मात्मनो यो विभूतिं
पर्षन्मध्ये विचित्रां प्रथयति महतीं धीमतां प्रीतिहेतोः।
बुद्धानां सर्वलोकप्रसृतमविरतोद्धारसद्धर्मघोषं
वन्दे संभोगकायं तमहमिहमहाधर्मराज्यप्रतिष्ठम् ॥

इति ॥ ३ ॥

निर्माणकायशरीराणां यदा भवति साधकः।
तदा [चित्तैकाग्रं] निर्माणकायं प्रवदाम्यहम् ॥ ४ ॥

निर्माणमाह— निर्माणेत्यादि। सर्वसत्त्वसाधारणः प्रबन्धनित्यो निर्माणकायः।
तथा चाह—

सत्त्वानां पाकहेतोः क्वचिदनलमिवाभाति यो दीप्यमानः
संबोधौ धर्मचक्रे क्वचिदपि च पुनर्दृश्यते यः प्रशान्तः।
नैकाकारप्रवृत्तं त्रिभवभयहरं विश्वरूपैरुपायै-
र्वन्दे निर्माणकायं दशदिगनुगतं तं महार्थं मुनीनाम् ॥

इति ॥ ४ ॥

ज्ञानसंभोगनिर्माणं समाप्नोतीति न संशयः।
श्रीहेरुक^१स्वात्मानं सिद्ध्यन्ते नात्र संशयः ॥ ५ ॥

अस्य मन्त्रस्य हृदयं वक्ष्यामि शृणु त्वं गुह्यसाधकः ॥ ६ ॥

२[त्रिकायमेव साध्यत्वात् सिद्धम्। तेन किमुक्तमित्याह— ज्ञानमित्यादि। श्रीहे-
रुकस्वात्मानमिति। श्रीहेरुकः स्वमेवात्मानमाप्नोतीति सम्बन्धः। तत्कथमित्याह—
ज्ञानसंभोगनिर्माणमित्यादिज्ञानं धर्मकायः, समुच्चये एकवचनम्। इति तु प्राप्तव्यस्य
निष्पत्तिः। पुनः किंभूतमित्याह— आत्मानमिति।] आत्मधृतिस्तु हेतुत्वात् सुखमपि
तथोच्यते। सुखरूपं तदित्यर्थः। सिद्ध्यन्त इति। कायत्रययोगिनः सिद्ध्यन्तीत्युपसंहारः।
एवंभूतस्य श्रीहेरुकस्य यो मन्त्रः सोऽपि तथाभूत इत्याह— अस्येत्यादि। द्वाविंशत्यक्षरं

१. महात्मानं- क.

२. [] पाठो नास्ति- क.

हृदयमन्त्रः । तत्प्रयोजनमपि हृदयम् । यथा आयुर्धृतमिति । तत्किंभूतः सन् प्रवक्ष्यामीत्याह — **गुह्यसाधक** इति । चित्तादिस्वरूपं कायत्रयं गुह्यं साधयति योगिषु निष्पादयतीति स तथा । त्वं च तत्तथाभूतः शृणु ॥ ५-६ ॥

हृदयजापेन योजनकोटिमुत्पतति । गच्छत्यागच्छति । रूपसहस्राण्यनेकानि कुरुते । प्रासादद्रुमभुवनेष्वाह्वय योजनकोटिं डाकिन्या सह गच्छति । आकाशे गत्वा पुनरागच्छति । इच्छया दृश्यते इच्छया न दृश्यते । इच्छया बालवृद्धयौवनरूपधारी भवति । इच्छया गजमहिषगवल् (य) व्याघ्रसिंहवलीवर्दशशकमार्जारोष्ट्ररूपधारी भवति । इच्छया मयूरकुक्कुटहंसचक्रवाकबकोलूकसे (श्ये) नगृध्रकाकरूपधारी भवति । यस्येच्छति तस्यैव रूपं करोति । वाचमपहरति, श्रोत्रमपहरति, दृष्टिमपहरति, घ्राणमपहरति, जिह्वामपहरति । यस्येच्छति तस्य रुधिरमाकर्षयति स्तम्भयति वा ॥ ७ ॥

**इति श्रीहेरुकाभिधाने कायत्रयसिद्धिहृदयमन्त्रस्य
कर्मविधिपटलो दशमः ॥ १० ॥**

उत्पततीति ऊर्ध्वं गच्छति । गच्छत्यागच्छतीति । योजनकोटिमेव क्षणमात्राद् गच्छत्यागच्छतीति भावः । एतेन मनोजवत्क्रद्धिर्दर्शिता । **प्रासादद्रुमेति** । द्वितीया द्विचनलोपे सति । **भुवनेष्विति** । स्वर्गादिभुवनत्रये । **योजनकोटीति** द्वितीयालोपे । **डाकिन्येति** रतिं सूचयति । तथैवाकाशेन गत्वा पुनरायाति । शेषं सुबोधम् । १ [**रूपमित्यादि** नवमोद्दिष्टस्य निर्देशमाह — **इच्छया** बालेत्यादि । यौवनमस्यास्तीति युवैवेति वा **यौवनः** पुरुषः । एतच्च वयोगतसामर्थ्यम् । **इच्छया** गज इत्यादिना पशुरूपधारिता । **इच्छया** मयूर इत्यादिना पक्षिधारिता । अस्य तिर्यग्भूतं सामर्थ्यमुक्तम् । **यस्येत्यादिना** सामान्यरूपधारित्वम् । शेषं सुबोधम् ।] **स्तम्भयति** चेति । रागादिस्तम्भयति । अतो वा शब्दोऽनुक्तसमुच्चये ॥ ७ ॥

कायत्रयस्य सिद्धिः हृदयमन्त्रस्य च कर्मविधिः तयोरभिधायकः पटलो दशमः ।

इति श्रीचक्रसंवरविवृतौ दशमः पटलः ॥ १० ॥

*

1. रूपमित्यारभ्य सुबोधम् इति यावत् पाठो नास्ति- क.

सप्तजन्मनः लक्षणविधिपटलो एकादशमः

अथान्यतमं वक्ष्ये साधकः सिद्धिमाप्नुयात् ।

येन ¹प्राशितमात्रेणाशुसिद्धिः प्रवर्तते ॥ १ ॥

इदानीं सप्तजन्मसहकारिणो हृदयमन्त्रस्य सामर्थ्यमाह— अथेत्यादि । अथेति समुच्चये । अन्यतमं हृदयस्य सप्तजन्मप्रयोगं वक्ष्ये । अथवा हृदयस्य भैषज्यप्रयोगाः क इत्यध्येषिकावितर्कान्तरमित्यथशब्दार्थः । कीदृशः प्रयोग इत्याह— साधक इत्यादि । येन प्रयोगेण सिद्धिमाप्नुते तं वक्ष्ये इति सम्बन्धः । घ्राणितमात्रेण घ्राणमात्रेण । आशु सप्तजन्मपरिज्ञानसिद्धिर्जायते । संक्षेपेण तावत्तज्ज्ञानसिद्धिरिति भावः ॥ १ ॥

²यस्य पुरुषस्य सुगन्धगन्धः प्रस्वेदो निर्गच्छति, सत्यवादी चिरं निमेषयति, अक्रोधनश्च भवति, वक्त्रे सौरभ्यनिश्चासं भवति, स सप्तजन्म ³मानुषजातो भवति । ⁴तं ⁵भक्षयित्वा तस्य हृदये रोचना भवति । तां गृहीत्वा श्रीहेरुकस्य हृदयमन्त्रेण [अष्टोत्तर] शतजप्तेन तिलकं करोति, ऊर्ध्वमुत्पतति । ⁶लक्षजापोऽनुवर्तनीयः योजनकोट्यो गच्छति । तेन प्राशितमात्रेण त्रैलोक्यज्ञानी भवति । [योजन] पञ्चाशकोटीं गत्वा अहोरात्रेणागच्छति दिव्यकायं च भवति । श्रीहेरुकस्य हृदयं यो जानाति स यान् यान् कामानिच्छति, तांस्तान् ददाति ॥ २ ॥

इति श्रीहेरुकाभिधाने सप्तजन्मस्य(नः) लक्षणविधि-
पटल एकादशमः ॥ ११ ॥

यस्य पुरुषस्येति । पुरुषरूपेण पुण्यराशिरिति भावः । सुगन्धस्येव कस्तूर्यादे-
र्गन्धोऽस्येति स सुगन्धगन्धः प्रस्वेदः । शेषं सुस्थम् । सत्यवादी चिरं निमेषयति

1. घ्राणित- टी०, सेवित- भो०
2. इतः पूर्वं 'यावत् सप्तजन्मोद्भवति' इत्यधिकः पाठः- भो०
3. मानुष्यजन्मा- भो०
4. इतः पूर्वं 'सप्तच्छायो हंसगतिः करुणासंयुक्तः' इत्यधिकः पाठः- भो०
5. सेवयित्वा- भो०, घ्राणयित्वा- टी०
6. नास्ति- क. भो०, गृहीतस्तु टीकानुरोधात् ।

अक्रोधनश्च भवति स इति ज्ञेयम् । सौरभ्यान्वितो निश्वासमिति नपुंसकनिर्देशः । यस्य सौरभ्यनिश्वासो भवति स सप्तजन्ममानुषजातो भवति । सप्तजन्मस्वेकसन्तानेन मानि(नु)षजातो मानुषश्रेष्ठमित्यर्थः । मानुषे जात इति वा । गन्धलिङ्गे प्रयोजनमाह— तमित्यादि । तं घ्राणयित्वा ज्ञातव्यमिति ज्ञेयम् । किं तदित्याह— तस्येत्यादि । सौगन्धेन हि रोचनाकार्यत्वात् साऽनुमीयते । तत्र तस्य नान्यजन्मत्वात् । तामित्यादिना रोचना-प्रयोजनमाह— लक्षजापोऽनुवर्तनीयः । योजनकोट्या गच्छतीति । योजनकोटिपरिमाणं मार्गमूर्ध्वं गच्छतीत्यर्थः । पञ्चाशकोटीरिति । योजनानि । दिव्यः कायो यस्मात्तद्दिव्यकायं हृदयम् । यान् यान् कामानिच्छति दातुं साधकस्तान् ददाति ॥ २ ॥

सप्तजन्मनो लक्षणं विधिश्च तदभिधायकः पटल एकादशः ।

इति श्रीचक्रसंवरविवृतावेकादशः पटलः ॥ ११ ॥

*

उपहृदयस्य कर्मविधिपटलो द्वादशमः

अथोपहृदयमन्त्रं वक्ष्ये सर्वसिद्धिप्रसाधकम् ।

त्रैलोक्ये यद्भवेत् किञ्चित्तत्सर्वं साधयेत् क्षणात् ॥ १ ॥

अथेत्यादि । अथेति हृदयकर्म^१विधिकथनानन्तरम् । शेषं सुबोधम् ॥ १ ॥

ट्फ हूँ हूँ ह ह ह्रीः ॐ । एतद् हृदयस्योपहृदयम् । अस्य मन्त्रस्य लक्षजापेन त्रैलोक्यमपि कम्पयति । देवदानवयक्षराक्षसनागगन्धर्वकिन्नरानाकर्षयति । नदी-समुद्रतडागादीनि शोषयति स्तम्भयति च । यस्मिन् जपति तस्मिन् स्थाने सर्व-डाकिन्यः साधकस्य किङ्करीभवन्ति । अनयोदकं परिजप्यात्मनोऽक्षिणी प्रक्षाल-यति सप्तजन्मानि जानाति । गतायुषमपि मृतमिव पश्यति दीर्घायुषं सजीवं पश्यति । चक्षुरभिमन्त्र्य यं पश्यति स स्तम्भितो भवति ॥ २ ॥

ट्फ हूँ हूँ ह ह ह्रीः ॐ इति । ॐ ह्रीः ह ह हूँ हूँ फडिति प्रगुणीकृतोऽयं मन्त्रः । एतद् हृदयस्योपहृदयमिति । उपशब्दो हीनार्थः । हृदयमन्त्रादक्षरेण हीनत्वं न तु सामर्थ्येन । समीपार्थो वा । अस्येति उपहृदयस्याक्षरजापः । स च लक्षसंख्यो जापः । देवेत्यादिनाऽऽकर्षणसामर्थ्यमुक्तम् । तडागः सरः, स्तम्भयति चेति । जलस्तम्भनम् । तस्मिन् स्थान इति । यत्र सप्तलक्षसंख्यं मन्त्रं जपति । किङ्करीभवन्तीति । न विघ्न-न्तीति भावः । एतच्च जापमात्रगतं सामर्थ्यम् । अनयेति । सप्ताक्षरमन्त्रविद्यया । उदकमिति । जलभैषज्यसहकारिसामर्थ्यम् । सप्तजन्मेति । सप्तजन्मान्यतीतान्यनागतानि च । चक्षुरभिमन्त्र्येत्यत उदकमिति निवृत्तम् ॥ २ ॥

वीरमृतकपादतलचर्म गृह्य मनुष्यरुधिरेण पिण्ड्य गोलकमध्ये स्रोताज्जनं प्रक्षिप्य मनःशिलागोरोचनाकुङ्कुमरुधिरेण भावयेत् । छायाशुष्कं त्रिलोहवेष्टितं कृत्वा पुनरधिवास्य^२ पुष्येण च कारयेत् । श्रीहेरुकस्य मुखे प्रक्षिप्य वामहस्तेन

१. कर्मगणविधि- भो०
२. नास्ति- क. गृहीतस्तु भोटानुसारी ।
३. पुष्यसाधितं- भो०

मुखं प्रच्छाद्य भूयोऽष्टशतं जपेत् । स तत्क्षणादन्तर्हितो नष्टच्छायो भवति । देवैरपि न दृश्यते, किं पुनः क्षुद्रमानुषैः । एवं मुखादपनीय दृश्यते । अस्मिस्तन्त्रे इयं खेचर-सिद्धिगुलिका स्वयं वीरेण भाषिता । श्रीहेरुकस्य हृदयोपहृदयम् ॥ ३ ॥

गुलिकासाधनसामर्थ्यमाह— वीरेत्यादि । वीरं मृतकं पादतलचर्मेति । तस्मनुष्य-रुधिरेण पिंध्येति पिष्ट्वा गोलकमध्य इति । तत्पिण्डीकार्यमिति भावः । स्रोताञ्जनम्, स्रोतोऽञ्जनम् । मनःशिलारोचनाकुङ्कुमेति । द्वितीयालोपे । स्रोताञ्जनमनःशिलादि-रुधिरेण भावयित्वा तद् गोलकमध्ये प्रक्षिप्य छायाशुष्कीकृत्य त्रिलोहवेष्टितं च कृत्वा कारयेत् साधयेदिति समुदायार्थः । पुनः स इति । जप्तसप्तलक्षमन्त्रो योगी । अधिवास्येति । हेरुकमण्डलचक्रिणं तत्र गोलकत्रिलोहवेष्टिते भावयित्वा अष्टोत्तर-शतं मन्त्रं विकाले जपेदित्यधिवासना । पुष्येण चेति । अन्येनापि शुभनक्षत्रादिना । साधनमाह— श्रीहेरुकस्येत्यादि । श्रीहेरुकयोगी तामन्तर्गतां मण्डलचक्रां गुलिकां स्वमुखे प्रक्षिप्य यथोक्तं जपेत् । ततो यथोक्तं स्यात्—

१कनकशशिदिनकराणां वेदत्रिचतुःप्रमाणका माषाः ।

गुलिकाबन्धक्रमशो मुनित्रिशरक्तिकाभ्यधिकाः ॥

इति त्रिलोहनियमः । शेषं सुस्थम् । यस्येदमुपहृदयं तदेव कस्य हृदयमित्याह— श्री-हेरुकस्येत्यादि । श्रीहेरुकस्येति ॐ कर करेत्यादि ॥ ३ ॥

अनेन मन्त्रेण तर्जन्यग्रेण शिरःकपालं निर्मासोपधिं कृत्वा निर्मथति, तस्य रुधिरमाकर्षयति । अवसव्येन मथनात् पुनः प्रविशति ।

अभिमन्त्र्य शिरःकपाले मुष्टिप्रहारो देयः । यस्य नाम्ना ददाति तस्य शिरोवेदना भवति । मन्त्रमनुस्मृत्य कपालं दुग्धेन पूरयेत्, उपशमयति ।

गोरोचनया परिजप्य तिलकं कुर्यात्, यं पश्यति स मुद्रितो भवति । तर्जनीं परिजप्य यं तर्जयति, स तत्क्षणात् पतति । मन्त्रं जप्तं (प्त्वा) भूमिं पादेन ताडयति यस्य नाम्ना, तत्क्षणात् म्रियते । उदकमभिमन्त्र्य भूमिं सिञ्चयति, पुनर्जीवापयति ।

1. स्वर्ण-रौप्य-ताम्राणां क्रमशः वेद (४) त्रि (३) चतुः (४) माषाः मुनि (७) त्रि (३) शर (५) रक्तिकाश्च त्रिलोहात्मकगुलिकाप्रमाणमित्यभिप्रायः ।

मन्त्रजप्तेन तर्जन्यग्रेण सहस्रमपि तर्जयति, सर्वे द्रष्टारः स्तम्भिता भवन्ति, वाचया मोचयति ।

चण्डालभस्मशतजप्तं कृत्वा यमाहनति सत्त्वमनुस्मृत्य, तस्य रूपधरो भवति । होमाग्निभस्मशतजप्तं कृत्वा यमाहनति, स देवैरपि न दृश्यते । उदकेन सप्तजप्तेन हनेत्, पुनर्दृश्यते ।

कपालमुद्रासम्पुटं बद्ध्वा निरुस्वा(च्छा)सो जपेत्, ¹क्रुद्धो यस्य नाम्ना, स तत्क्षणात् उन्मत्तो भवति । जनसहस्रमपि उन्मत्तं भवति । मनसा मोचयति ।

यस्य नाम्ना शिखां दशाभिमन्त्रितां कृत्वा बध्नीयात्, सर्वडाकिन्यागच्छन्ति । शून्यायतनं गत्वा शतजप्तं शिखां बध्नीयात् । अक्षिण्युन्मील्य तावज्जपेद्यावददृशो-
(श्यो) भवति । मुक्तेन पुनर्दृश्यते ।

शर्करोटामभिमन्त्र्य ऊर्ध्वमधस्ताद् ²दिशासु विदिशासु क्षिपेत्, सर्वदेवासुर-
यक्षराक्षसगन्धर्वकिन्नरमहोरगाश्चैव बद्धा भवन्ति । डाकिनी सर्वयोगमपहरति । शयनासनशय्यागतं स्त्रीं पुरुषं वा दृष्ट्वा शतवारान् मन्त्रं जपेत्, लग्नापयति । मनसा मोक्षः । शर्करोटां परिजप्य नदीषु प्रक्षिपेत्, प्रतिकूलं वाहयति । तेनैव शर्करोटेन ऊर्मिं स्तम्भयति । मनसा मन्त्रमावर्तयति ।

ऊर्ध्वे निरीक्षमाणः सहस्रं जपेत्, महावृष्टिं निवारयति ।

परसैन्याभिमुखं सहस्रजप्तं कृत्वा संग्रामे वा ³प्रविशति । शस्त्रशतैर्हन्यमानस्य व्यथा नोत्पद्यते । न च शस्त्रसहस्रैर्भिद्यते । वज्रशरीरं भवति ॥ ४ ॥

इति श्रीहेरुकाभिधाने उपहृदयस्य कर्मविधिपटलो द्वादशमः ॥ १२ ॥

अनेनेत्यादि । शिरःकपालेति निर्विभक्तिकम् । तच्च कपालमेव । निर्विद्धं मांस-
मस्येति निर्मासं शिरावेधात् । उपधिः शरीरम्, निर्मासश्चासावुपधिश्चेति स तथा । तथा-
भूतं साध्यशरीरं कृत्वा कारयित्वा निर्मथति निर्मथ्नाति । कथमित्याह— तर्जन्येति ।

1. नास्ति- भो०

2. नास्ति- भो०

3. नास्ति- क. भो०, गृहीतस्तु टीकानुरोधात् ।

दक्षिण्या। तस्याश्चाग्रेण। एतच्च भावनया द्रष्टव्यम्। नरकपालमादाय वज्ररुद्रयोगी
स्वदक्षिणनासापुटान्तराद् हूँकारोच्चारणजां शस्त्र¹हस्तां² खण्डरोहां निर्गम्य यस्य
नामग्रहेण पञ्चशिरावेधं कारयित्वा तस्य रुधरेण पूर्यमाणं कपालं भावयंस्तर्जन्यग्रेण
3सप्तजसतन्मन्त्रेण तस्यान्तःशरीरं सर्वं निर्मासरुधिरमाकर्षयतीति समुदायार्थः। प्रत्या-
नयनमाह— अवेत्यादि। अवसव्यतर्जन्यग्रेण शान्तचित्ततया तदन्तःशरीरमथनात्
तत्परिपूर्णशरीरः साध्यो भवति। कुत इत्याह— प्रविशतीति। तस्यैव रुधिरस्य प्रवे-
शात्। अभिमन्त्र्येति साध्यशिरः। कपालभावनया मुष्टिप्रहारो देयः। कपाल इति
भावनया सोद्धातस्य कपालपूरणात् साक्षात्⁴ कपालान्तःपूरणाच्च। मन्त्रजसमिति
क्रियाविशेषणम्। शेषं सुगमम्। सर्वडाकिन्यागच्छन्तीति। डाकिनीति प्रथमाबहु-
वचनलोपे। शर्करोटेति। शर्करा द्वितीयालोपे। डाकिनीसर्वयोगमपहरतीति। दिग्वि-
दिक्क्षिप्तयैव शर्करया। शयनं मैथुनम्। तदर्थमासने शय्यायां वा गता स्थिता
शयनासनमप्यागता। तां स्त्रियं पुरुषं वेति समुच्चये। संग्रामे वेति।⁵ वा-शब्दः
शर्करोटमनुवर्तयति ॥ ४ ॥

उपहृदयेत्युपहृदयमन्त्रः, तत्कर्मविधिश्च तदभिधायकः पटलः उपहृदयकर्म-
विधिपटलो द्वादशमो द्वादशः।

इति श्रीचक्रसंवरविवृतौ द्वादशः पटलः ॥ १२ ॥

※

-
1. हस्तजां- भो०
 2. नास्ति- भो०
 3. बहु- भो०
 4. कमलान्तरपूरणात्- क., गृहीतस्तु भोटानुसारी।
 5. नास्ति- भो०

कवचमन्त्रस्य प्रयोगविधिपटलः त्रयोदशमः

अथ कवचस्य कर्मदं वक्ष्ये यथावदनुपूर्वशः ।

त्रैलोक्ये यद्भवेत् किञ्चित् तत्सर्वं यन्मनसेप्सितम् ॥ १ ॥

अथेत्युपहृदयमन्त्रतत्कर्मविधिकथनानन्तरं कवचस्य कवचमन्त्रस्य कर्म वक्ष्यते ।
'ॐ ह, नमः हि, स्वाहा हूँ, वौषट् हे, हूँ हूँ होः, फट् हं' इति मन्त्रः । अनुपूर्वश
इति । जपौषधादिसामर्थ्यप्रदर्शनानुक्रमेण । किं तदित्याह— त्रैलोक्येत्यादि । तत्सर्वं
यन्मनसेप्सितमिति । मनसा काङ्क्षितम् ॥ १ ॥

1[तत्र] कवचं जपमानोऽध्वानं व्रजेत् । चौरव्याघ्रेषु(घ्रादि) भयं न भवति ।

कवचं जपमानो राजकुल²मङ्गनाधिष्ठाने प्रविशन्न दृश्यते वा यद् रोचते तद्
गृहीत्वा निर्गच्छति, देवैरपि न दृश्यते ।

कवचं ³जप्तहस्तेन यं स्पृशति, स शूलमिव स्तम्भितो भवति । त्रिदशैरपि न
चाल्यते । मन्त्रं जप्त्वा पादेन हनेन्मोक्षः ।

स्वरक्तं ⁴स्वरेतो वा त्रिजप्तं तिलकं कृत्वा येन सह भाषते, यं पश्यति, ये च
[तं] पश्यन्ति, सर्वेषां रुधिरमाकर्षयति ।

यस्य गृहे क्रोधाविष्टः सहस्रं जपेत्, सर्वेषां ज्वरो भवति । उदकं पञ्चजप्तं
क्षिपेत्, प्रत्यानयनम् ।

यस्य मुखं निरीक्ष्य जपते तस्य वाचमपहरति ।

नदीतडागावस्थितः सहस्रं जपेत्, उदकोपरि व्रजेत् । यथा स्थले तथा
जलेऽपि गच्छति । उदकं प्रविश्य नद्यां समुद्रे चापि तिष्ठति । करद्वयेनोद्वर्तमानो
सहस्रं जपेत् । योगिनी वश्या भवन्ति ॥ २ ॥

1. नास्ति-क., गृहीतस्तु भोटानुसारी ।

2. मङ्गनास्थाने- क. भो०

3. शतजप्त०- भो०

4. नास्ति- भो०

कवचं जपनध्वानं व्रजेद् यस्तस्य चौरादिभ्यो भयं न भवतीति कवचमित्यादे-
स्यमर्थः। राजकुलं राज्ञो गृहं प्रविशेत्। स च न दृश्यते चेति। कुत्र न दृश्यते
इत्याह— अङ्गनाधिष्ठान इति। अन्तःपुर इत्यर्थः। अत्र हि मनुष्याणां परेषां सूक्ष्मे-
क्षिका क्रियते। अत्रापि न दृश्यते इति मन्त्रसामर्थ्यम्। यद् रोचते तद् गृहीत्वा
निर्गच्छतीति। भाण्डागाराद् यद्वस्तु रोचते तद्ग्रहेण निर्गच्छन्न दृश्यते वेति सम्बन्धः।
इहापि बहुसूक्ष्मदर्शित्वात् दुर्दर्शी भवितुमशक्त इति मन्त्रसामर्थ्यम्। देवैरपि न दृश्यत
इति। मांसचक्षुषापि देवानामव्याहतं दर्शनम्। तैरप्यदर्शनान्मन्त्रसामर्थ्यम्। शूल-
मिवेति। निखातवत्। तद् विदूरप्रवेशान्निश्चलीभवति। स्वरक्तमित्यादि सुबोधम्।
यस्य गृह इत्यत्र तत्रेत्यध्याहार्यम्। योगिनीति प्रथमावहुवचनलोपे ॥ २ ॥

१योगिनीश्चैव नानारूपिण्यो डाकिनीलामयस्तथा ।

खण्डरोहारूपिण्य इत्याद्याः प्रकीर्तिताः ॥ ३ ॥

सर्वे तस्य वश्यानुगा भवन्ति। पुष्ययोगेन पटं कृत्वा तेन प्रावृतशरीरो
२योगिनीसमापन्नो दशसहस्राणि जपेत्, ततः सिद्धो भवति। तेन प्रावृतशरीरो
योजनसहस्रमाकाशेऽदृश्यो भवति। यत्रेच्छति तत्र गच्छति, तेन पृथिवीं समुद्रान्तां
पर्यटति, ऊर्ध्वस्रोतगो वा गच्छति ॥ ४ ॥

योगिनीश्चैवेति प्रथमार्थे द्वितीया। चकारः प्रभेदसमुच्चये। एवावधारणे। नाना-
रूपित्वमाह— डाकिनीत्यादि। डाकिनीति डाकिनीजातयः। लामय इति लामा-
जातयः। रूपिणीति रूपिणीजातयः। ऊर्ध्वस्रोते ता गच्छन्तीति नैरुक्तः सकारलोपः।
विलोमेन नदीप्रवाहानतिक्रम्यागच्छतीत्यर्थः। मण्यन्तर्बोधिचित्ते स्थिरीकृते योगी
ऊर्ध्वं सहजं स्रोतेन साक्षादागच्छति प्रत्येतीत्यर्थान्तरम् ॥ ३-४ ॥

यद्यदिन्द्रियमार्गत्वं यायात् तत्तत्स्वभावतः ।

परमाहितयोगेन सर्वं बुद्धमयं वहेत्^३ ॥ ५ ॥

1. योगिनीनां चैव- क.
2. योगिनीसमापन्नो- नास्ति क., गृहीतस्तु भोटानुसारी।
3. भवेत्- भो०

पञ्चकामगुणोपभोगमुद्दिष्टं निर्दिशन्नाह— यदित्यादि। इन्द्रियाणां चक्षुरादीनां मार्गत्वं गोचरत्वं यायात्। यद् यज्जापादिकं तत्सर्वं बुद्धमयं वैरोचनादिमयं वहेदनु- भवेत्। स्वभावतोऽनुभवं क्रियातः कथमनुभवतीत्याह— परमाहितयोगेनेति। परमे श्रीहेरुक आहित आरोपितो योगः समाधिः। रूपे वैरोचनः शब्दे अक्षोभ्यो गन्धे रससंभवो रसेऽमिताभः स्पर्शोऽमोघसिद्धिरिति सर्वबुद्धात्मकत्वम्। पञ्चकामगुणोप- भोगेन मन्त्रो जपितव्य इति भावः ॥ ५ ॥

पारिजातयूषं करे संगृह्य सहस्रं जप्तं कृत्वा यस्य तिलकं करोति, स वृक्षो भवति। उदकेन सप्तजप्तेन सिञ्चयेत् प्रत्यानयनमेतत्। हस्तिपादतलस्थां¹ धूलिं गृह्य सहस्रं जप्तं कृत्वा यमाहनति, स हस्ती भवति ॥ ६ ॥

इति श्रीहेरुकाभिधाने कवचमन्त्रस्य २प्रयोगविधि-

पटलः त्रयोदशमः ॥ १३ ॥

पारिजातेति पारिजातो भद्रदलादिकम्। शेषं सुबोधम् ॥ ६ ॥

कवचमन्त्रस्य विभज्य योगः कवचमन्त्रयोगः। स एव विधीयते येन स चासौ पटलश्चेति स तथा। त्रयोदशमस्त्रयोदशः पटलः।

इति श्रीचक्रसंवरविवृतौ त्रयोदशः पटलः ॥ १३ ॥

*

1. साध्यधूलिं- भो०

2. कर्मविधि- भो०

गर्दभाकारयोगश्रीहेरुकीकरणविधिपटलः चतुर्दशमः

अथ [तत्] साधनं वक्ष्ये येन सिद्ध्यन्ति साधकाः ।

गर्दभाकारयोगात्मा

मनोवेगनिवृत्तये ॥ १ ॥

अथेति पुनरर्थे । पुनः साधनं हृदयमन्त्रस्य वक्ष्ये इति सम्बन्धः । किं तदित्याह — येनेत्यादि । येन साधकाः सिद्ध्यन्ति तत्साधनमित्यर्थः । किमर्थमित्याह — मन इत्यादि । मनोवेगो मनोराज्यं तस्य निवृत्तिः सिद्धत्वात् । कुत इत्याह — गर्दभाकारयोगात्मेति । गर्दभाकारयोगादित्यर्थः ॥ १ ॥

योगिनी लामा रूपिणी डाकिनी तथा खण्डरोहा योगिन्यः कामरूपिण्यः गर्दभाकाररुधिरवक्त्रा च, डाकिन्यः त्रिशूलकरवेष्टिता च साधिताः । गतायुषमपि पश्येद् दीर्घायुषं च । अस्मिन्स्तु सुगर्दभो योगी पश्येत् । तदा गर्दभं हस्तिनं चैव यः पूर्वं तं पश्येत् । यस्य यस्य तु यो जातिमावहेत् पूर्वजन्मनि तस्यैव तद् रूपं दृश्यते इह ¹योगिनः । स भवेत् सिद्धिदः पुरुषः स सप्तजन्मा²मानुषः पुरुषः । तेन बलि-होम कर्तव्यः साधकस्य सिद्ध्यति ॥ २ ॥

योगिनीत्यादिना माण्डलेयदेवता आह — योगिन्य इति त्रिचक्रवर्तिन्यः । काम-रूपिण्य इति । गर्दभाकाररुधिरवक्त्रत्वात् । अत आह — गर्दभाकाररुधिरवक्त्रा चेति । प्रथमाबहुवचनलोपात् । तथा डाकिनीति । डाकिन्यः काकास्यादयः । काका-स्यादिचतुष्टयं विहाय सर्वा एव गर्दभाकारविशिष्टाः । त्रिशूलकरवेष्टिता इति । खट्वाङ्गमुत्सृज्य तत्स्थाने त्रिशूलधारिण्यः पुनः षट्³त्रिंशदेवयोगिन्यो वर्णास्तु साधन-क्रमत एव । स्रवद्रुधिरगर्दभमुखश्रीहेरुकीयोगवान् स्वयम् । एतेनैतदुक्तं गर्दभस्रवद्रुधिर-मुखत्वमिति विशेषः । शेषं सर्वं साधनोक्तमेव । कदैवमित्याह — साधिता इति । हृदयमन्त्रजप्तसप्तलक्षसंख्ये साधनमेतत्करणीयमिति भावः । उपदेशात्तदुच्यते — आधा-रमण्डलं रजसोऽभिलिख्य तस्याऽष्टदलकमलमध्ये पञ्चाशद्वर्णपरावृतो हूँकारो भाव्यः ।

1. योगिनी- क.

2. नास्ति- भो०

3. पुनस्त्रिंशद्- क. गृहीतस्तु भो०

चतुर्षु दिग्दलेषु भगवतो भगवत्याश्च हृदयोपहृदयानि । कोणदलेषु रुधिरपूर्णानि चत्वारि कपालानि । चतुर्विंशत्यारेषु ॐ खण्डकपालिनि हूँ हूँ फट् फडित्यादयो मन्त्राश्चतुर्विंशति । ॐ कर कर प्रचण्डे हूँ हूँ फट् फडित्यादयश्चेति खण्डकपालादीनां प्रचण्डादीनां च मिलिता अष्टचत्वारिंशन्मन्त्रा भवन्ति । मूल¹सूत्राभ्यन्तरे काकास्यादीनामष्टौ, तदूर्ध्वद्वारचतुष्टये सुम्भमन्त्रपदचतुष्टयम्, ²प्राकाराद् बहिर्द्वारोपरि निर्यूहसन्धिषु च कवचद्वयम्, चक्रवाते(टे) भगवत्या हृदयमन्त्रः, बहिःपुल्लीरादि-बीजैः पुंकारादिभिर्वेष्टनं भाव्यम्, चक्रगर्भे शालिपिष्टकमयीं गर्दभाकारां प्रतिकृतिं तैलालक्तकाभ्यक्तकां साज्यां निधाय स्रवद्रुधिरगर्दभमुखहेरुकयोगवान्, कोणचतुष्टये प्रदीपान् प्रज्वाल्य हृदयमन्त्रमेकतानीभूयावर्त्य प्रतिकृतिं पश्येत् । ततो यथोक्तं पश्येदित्येतदेवाह — गतायुषमित्यादि । अपिः संभावनायाम् । अस्मिस्त्विति । नियमार्थ-स्तुशब्दः । अस्मिन्नेव विधाने कृते सतीत्यर्थः । सुगर्दभ इति । सुष्ठु यदि पूर्वं गर्दभो भवेद् योगी तदा गर्दभमात्मानं पश्येत् । हस्तिशब्द इकारान्तः । परस्यापि जातिदर्शी-त्याह — यस्येत्यादि । यस्य मनुष्यादेः इति सत्त्वः (भावः) । योगिन इति तृतीयार्थे षष्ठी । अनेन सप्तजन्मनो दर्शनं सुलभमित्याह — स इत्यादि । बलिहोमो भक्षणं कर्तव्यः करिष्यन् । तेन बलिहोमं करिष्यन् योगी भवति । कुत इत्याह — साधकस्य सिद्ध्यतीति । यत्र सप्तजन्मा साधकस्योक्तेन क्रमेण सिद्ध्यति । योगेति निर्विभक्तिकम् । एष गर्दभयोग इत्यर्थः ॥ २ ॥

तथा योजनानां शतसहस्रमूर्ध्वमाक्रमते क्षणात् ।

एष मन्त्रवरो योगः श्रेष्ठो डाकिनीयोगसाधकः ॥ ३ ॥

योगनिमित्तं जपेद्यस्तु मासेनैकेन सिद्ध्यति ।

रहस्यमेतत्तन्त्रस्य मन्त्रस्य हृदयं परम् ॥ ४ ॥

यो जानाति तत्त्वेन स योगी नात्र संशयः ।

³एष ते ⁴हेरुको वीरो डाकिनीजालसंवरम्⁵ ॥ ५ ॥

1. बिन्दुभ्यन्तरे- भो०

2. इतः पूर्वं 'प्राकारमध्ये मूलमन्त्रः' इत्यधिकम्- भो०

3. एता- टी०

4. हेरुको वीरो- नास्ति भो०

5. संवरे- भो०

इति श्रीहेरुकाभिधाने गर्दभाकारयोगश्रीहेरुकीकरण- विधिपटलश्चतुर्दशमः ॥ १४ ॥

मन्त्रो वरोऽस्येति मन्त्रवरो योगः । हृदयमन्त्रसहकारित्वात् । मन्त्रधर इति पाठे-
ऽपि तथैव । श्रेष्ठत्वमभिमतसाधकत्वात् । डाकिनी वज्रवाराही । तस्या योगस्तेन
पूर्वजन्मदर्शनसाधकः । तत्समापन्न इति भावः । योगेत्यादि सुबोधम् । रहस्यमिति ।
अस्य तन्त्रस्य सारम् । किमित्याह— हृदयमिति । हृदयमन्त्रः । कस्य हृदयमित्याह—
मन्त्रस्येति । विद्याराजस्य । तद् यो जानाति तत्त्वेन श्रीहेरुकाद् विद्याराजाच्चाऽभेदेन
स योगी । ज्ञानस्येति पाठे ज्ञानमात्रस्य योगी स यो जानाति हृदयम् । एता डाकिनी-
जालसंवरमिति श्रीहेरुकः, लिङ्गस्यातन्त्रत्वात् । स एवायं युज्यते समाधीयते चित्त-
मनेन भावः । एषत इति पाठे एष्य गत्यर्थो धातुः । एषते प्राप्नोति डाकिनीजालसंवरं
ज्ञानमिति व्याख्येयम् ॥ ३-५ ॥

श्रीहेरुकः क्रियतेऽनेनेति श्रीहेरुकीकरणं गर्दभाकारयोगेन श्रीहेरुकीकरणो
विधिः साधनं तदभिधायकः पटलश्चतुर्दशः ।

इति श्रीचक्रसंवरविवृतौ चतुर्दशः पटलः ॥ १४ ॥

*

अक्षरछोमविधिपटलः पञ्चदशमः

अथातः सर्वसंवरेषु छोम्मकान् वक्ष्ये^१ ।

यो जानाति तत्त्वेन स सिद्ध्यति न संशयः ॥ १ ॥

अथेति समुच्चये । अत इति हेतौ । न केवलं हृदयं यो जानाति स योगी किं तर्हि छोम्मकानपि । यतो योगसम्बद्धछोम्मकविधिः किमर्थमित्याह— सर्वसंवरेष्विति । सर्वेषां पुरुषादीनां श्रावकादिभ्यो गोपनीयानां संवरा रक्षणानि, तेषु तदर्थमित्यर्थः ॥ १ ॥

डा इति पुरुषः स्मृतः डी इति स्त्रीणां ततः ।

^२पु इति स्तम्भनं सु इति भक्षणं चैव ॥ २ ॥

तत्त्वेन प्रतिबन्धग्रहरूपेण? तानेवाह— डा इत्यादि । स्मृत इति । अनन्तैः तथा-गतैः संकेतितः । डी इति स्त्रीणां तत इति । डीङ् विहायसागतावितिधातोः प्रयोगः । तत इति यतस्तत्त्वतोऽन्वयः । डीरिति क्विपि सिद्धम् । डीयते सर्वं व्याप्नोतीति । ^३पु इति स्तम्भनं स्तम्भने संकेतितोऽयं शब्दः । ^४डिथो(त्था)दिवद् वृक्षविशेषे । सु इति भक्षणं चैवेति । संकेतितत्वमेवास्य चैवशब्दाभ्यां समुच्चितमवधारितं च ॥ २ ॥

मा इति माता वै स्मृता ये^५ इति भार्या तु वै ।

भी इति भगिनी तथा वी इति सखी प्रकीर्तिता ॥ ३ ॥

मा इति माता वै स्मृतेति । मातेवेत्यर्थः । ये इति भार्या तु वै इति । कलत्रं विशिष्टमेवेत्यर्थः । भी इति भगिनी स्मृतेति । यथार्थम् । वी इति सखी कीर्तितेति । प्रेयसी ॥ ३ ॥

लु इति दुहिता ^६स्त्री इति रुधिरं ज्ञेयम् ।

सो इति सोमपानं तु पे इति पेयं तथा ॥ ४ ॥

-
१. भवन्ति- क., गृहीतस्तु भो०
 २. पु- भो०
 ३. पु- भो०
 ४. डीपादिवद् हृदयविशेषे- भो०
 ५. यो- क.
 ६. श्री- भो०

लु इति दुहितेति। आत्मजा। स्त्री इति रुधिरं ज्ञेयमिति रक्तम्। सो इति सोमपानमिति। अमृतपानम्। पे इति पेयं तथेति पातव्यं द्रवद्रव्यमित्यर्थः। तथाशब्द एकदेशेन सङ्केतितत्वमेव प्रतिपादयति ॥ ४ ॥

१ही इति मांसं वै भ इति भक्षणम् ।
भू इति मेलापकं पी इति तथा श्मशानम् ॥ ५ ॥

ही इति मांसं वा इति पिशितमेव। भ इति भक्षणमिति। अभ्यवहरणम्। भू इति मेलापकमिति। योगिनीमेलस्थानविशेषः। पी इति श्मशानं भवेदिति शवनिलयः ॥ ५ ॥

२हू इति मृतकं विदु^३धी इति योगिनी स्मृता ।
ग इति लामयस्तथा त्री इति रूपिणी चैव ॥ ६ ॥

हू इति मृतकं विदुरिति। शवम् अनन्ता योगिन्यो विदुः। ४धी इति योगिनी स्मृतेति। समाधिमती द्व्यर्थत्वात्। ग इति लामयस्तथेति। लामि(मा)जातयः सङ्के-
तिताः। त्री इति रूपिणी चैवेति। रूपिणीजातय एव सङ्केतिता इति भावः ॥ ६ ॥

कु इति डाकिनी ^५स्मृता ^६हा इति खण्डरोहा वै ।
ज इति जङ्घायुगलं क इति बाहुयुगलम् ॥ ७ ॥

कु इति डाकिनी तथेति। डाकिनीजातयस्तथैव सङ्केतितत्वात्। डा इति खण्ड-
रोहा वायिति। खण्डरोहाजातय एव। डाशब्दोऽपि द्व्यर्थः। ज इति जङ्घायुगल-
मिति। जङ्घाद्वयम्। एकदेशेन सङ्केतः ॥ ७ ॥

-
1. पी- क.
 2. धू- भो०
 3. ही-क.
 4. ही-क.
 5. तथा- टी०
 6. डा- टी०

भ इति अभिवादनं सु इति स्वागतक्रिया¹ ।

एते एकैकाक्षरा छोम्मका वीरभगिन्यस्तु सा ज्ञेया² ॥ ८ ॥

इति श्रीहेरुकाभिधानेऽक्षरछोमविधिपटलः पञ्चदशमः ॥ १५ ॥

भ इत्यभिवादनमिति । वन्दना । भ शब्दो द्व्यर्थः । सु इति स्वागतक्रियेति । स्वा-
गतकरणम् । सर्वाण्यक्षराणि निर्विभक्तिकादीनि । एते चैकैकाक्षरा छोम्मका इति ।
एकमेकमक्षरं येषां ते तथा । वीरभगिन्यस्तु सा ज्ञेया इति । वीरा योगिनः । भगिन्यो
योगिन्यः । तुरवधारणे । सेति ते छोम्मकाः । अस्य बहुत्वे सङ्केतितत्वात् । तृतीयार्थे
प्रथमा । वीरैर्योगिनीभिश्चैव ते ज्ञेयाः । तदेकव्यवहाराङ्गत्वात् । अथवा छोम्मकाश्चतु-
र्विंशत्यक्षराणि चतुर्विंशतियोगिनीविशुद्ध्या ॥ ८ ॥

अक्षरछोम्मका एकाक्षरात्मका छोम्मकाः । तेषां निर्देशविधिरक्षरछोम्मकविधिः ।
तदभिधायकः पटलः पञ्चदशमः पञ्चदशः ।

इति श्रीचक्रसंवरविवृतौ पञ्चदशः पटलः ॥ १५ ॥

*

1. इतः परमधिकः पाठो भोटपाठेऽभिधानोत्तरे च—

अभि०— मी इति मीरणं भ इति भक्षणम् ।
भ्यो इति अभक्षं मो इति पेयापेयम् ॥
ग इति गम्यागम्यं स इति सभी(सखी) ।
र इति रण्डा दु इति दुश्चारिणी ॥
सु इति सुभगा ने इति दुर्भगी ।
स इति समयी अ इति असमयी ॥
आ इति आगतं ण इति अनागतम् ।
सो इति सज्जना आचार्याः ॥
भो०—मी इति मीनं व इति भक्षणम् ।
पे इति पेयापेयं घ इति गम्यागम्यम् ॥
का इति कामीस इति परागमनम् ।
र इति रण्डा दु इति दुश्चारिणी ॥
सु इति सुभगा न इति दुर्भगी(गा) ।
स इति समयी अ इति असमयी ॥
आ इति आगतं न इति अनागतम् ।
सो इति सङ्गा ॥

2. इतः परम् 'भक्त्याभक्त्या दातव्यं परमसमयमनोज्ञं हितकारी च भक्तेभ्यो दातव्यम्'— भो०

सप्तयोगिनीलक्षणपरीक्षाविधिपटलः षोडशमः

अथ गुह्य¹महासिद्धिं² प्रवक्ष्यामि ह साधकः ।

परमसमयं स्थिता भव्या मनोज्ञोपकारकाः ॥ १ ॥

अथेत्यक्षरछोम्मकानन्तरं गुह्यकानां योगिनीनां महासिद्धिर्महानिश्चयसिद्धिः गुह्य-
महासिद्धिः तां प्रवक्ष्यामि । प्रकारेण भेदेन वक्ष्यामीत्यर्थः । हशब्दो वाक्यालङ्कारे ।
अव्ययस्यानेकार्थत्वात् । साधक इति साधकाय । चतुर्थ्यर्थे प्रथमा । गुह्यशब्दवाच्या
योगिन्यः का इत्याह— परेत्यादि । परमः समयो वर्णगन्धादिः । स्थिताश्चिरावस्थिताः ।
किम्भूता इत्याह— मनोज्ञोपकारो येभ्यः साधकानां भवति ते मनोज्ञोपकारका
योगिनीजनाः ॥ १ ॥

भक्ताय प्रदातव्यं वर्णभेदं तु प्रगृह्य वीराद्वययोगिनः ।

येन विज्ञातमात्रेण साधकः सिद्धिमाप्नुयात् ॥ २ ॥

किम्भूतानामर्थाय त एवमित्याह— भक्तायेति । सेवया लक्षितानाम् । अत एव ता
ज्ञातुं यत्नः कार्य इति भावः । समयं विवृण्वन्नाह— वर्णेत्यादि । तुर्नियमार्थः । नियमं
प्रतिपादयन्नाह— वीरेत्यादि । वीराद्वयं विना योगिनीजनानां येन वर्णादिना ज्ञानेन
सिद्धिसाक्षात्कारमाप्नुयात् तत्प्रवक्ष्यामीति सम्बन्धः । बहिर्योगिना ज्ञातास्तादृशीं सिद्धिं
ददतीति भावः ॥ २ ॥

मृणालगौरा तु या नारी पद्मपत्रायतलोचना ।

सितवस्त्रप्रिया नित्यं नवचन्दनगन्धिनी ॥ ३ ॥

लक्षणमाह— मृणालेत्यादि । सुबोधम् । नवं प्रसिद्धं चन्दनं गोशीर्षमित्यर्थः ।
नवचन्दनगन्धोऽस्यास्तीति नवचन्दनगन्धिनी ॥ ३ ॥

सौगतगोष्ठीरता चैव सा ज्ञेया कुलगोत्रजा ।

या नारी तप्तहेमाभा रक्तपीताम्बरप्रिया ॥ ४ ॥

1. भव्यमभव्यं वै- भो०, क.

2. वक्ष्यामीह- ख.

जातिवत्येकगन्धा च सा वीरानुगा भवेत् ।
 सर्वेन्दीवरश्यामा नीलाम्बरधरप्रिया ॥ ५ ॥
 नीलोत्पलशुभगन्धा च ¹श्रीहेरुकानुगा हि सा ।
 या नारी [सुन्दरी चैव] पुण्डरीकदलच्छविः ॥ ६ ॥
 मृणालगन्धा च सततं सा तु वीरमती तथा ।
 रक्तगौरा च या नारी रक्तवक्त्रसुरूपिणी ॥ ७ ॥
 मल्लिकोत्पलगन्धा च सा वज्रकुलसम्भवा ।
 पीतश्यामा तु या नारी शुक्लाम्बरधरप्रिया ॥ ८ ॥
 शिरसि(शिरीष)पुष्पगन्धा च ²तथागत[कुला]नुगा ।
 आरक्तवर्णा च या नारी तद्वर्णाम्बरधारिणी ॥ ९ ॥
 कर्पूरगन्धा सततं वैरोचनकुलानुगा ।
 सप्तैतानि मयोक्तानि योगिनीनां कुलानि तु ॥ १० ॥

सौगतानां च गोष्ठ्यां रतैव । कुलं हयग्रीवस्तदेव गोत्रं यस्याः सा शौण्डिनी-
 कुलगोत्रा । तस्या जातेति ह्रस्वत्वे कुलगोत्रजा भवति । वीर आकाशगर्भस्तदनुगा
 चक्रवर्मिणी तत्कुलसंभवत्वात् सा तथा । श्रीहेरुकानुगेति । सुवीरानुगानुगा । वीर-
 मतीति । वीरमतीकुलानुगा । वज्रकुलं वाराहीकुलम् । तथागतः पद्मनर्तेश्वरः तेन
 कुल्यत इति तथागतकुला महाबला तदनुगा । मयेति मयैव । अभिसंप्रत्ययाय । तुर-
 नन्तरत्वसूचकः ॥ ४-१० ॥

वामाचाररता नित्यं ह्येते स्वमुद्रावर्ण³संकुलाः ।

कुलविद्याक्षराणि [च] षड्वर्णानि ⁴भवन्ति हि ॥ ११ ॥

वामा नार्यस्तासामाचारोऽतिक्रोधाहङ्कारादिकम् । हि समुच्चये । एते योगिनी-
 जनाः । पुनः कीदृशा इत्याह— स्वमुद्रा सितवर्णादि वर्णो मृणालगौरत्वादि । ताभ्यां

1. वीरस्मरणानुगा- भो०, वीररुद्रानुगा- क.
2. तथागतानुगा स्मृता- क.
3. लक्षणाः- क.
4. भवन्तीह सः- क.

संकुलाः सम्बद्धाः। कुलविद्याक्षराणि चेति। कुलं साधकस्तस्य विद्यास्ता एवा-
क्षराणि वज्राणि दृढाधिमोक्षत्वाद् योगिनीजनाः। एते चाविचलितरूपा देव्यो
भवन्तीतिभावः। षड्वर्णानि भवन्ति हीति। षड्वर्णाः प्रकाराः योगिनीनां ज्ञातव्याः।
हि समुच्चये ॥ ११ ॥

बध्नाति हि स्वकां मुद्रां वाचं वक्ति स्वगोत्रजाम् ।

वामेन याति या नारी योगिन्यो वामतः सदा ॥ १२ ॥

१महद्वाचा प्रभाषी वै२ वामदृष्ट्यावलोकिनः ।

स्त्रीणां ३हृष्ट४प्रहासी च समयी सोऽभिधीयते ॥ १३ ॥

तानाह— बध्नातीत्यादि। मुद्राबन्धमाह— वामेनेत्यादि। योगिनीनां वामेन।
योगिन्यो वामत इति। यस्या वामतो योगिन्यः। स्वगोत्रजां वाचमाह— वाचेत्यादि।
महद् यथा स्यात् तथा प्रभाषी प्रकृष्टभाषणशीलः। वै वार्थे समुच्चये वा। हृष्टप्रहास-
शीलत्वात् हृष्टप्रहासी। चकारः पूर्ववत्। समयोऽनतिक्रमणीयो विधिः, स यस्या-
स्तीति समयी सोऽभिधीयते। योगिनीजनापेक्षया पुंसोऽपि निर्देशः। प्रकारापेक्षया-
ऽनास्थया वा प्रकारश्चैकोऽयम् ॥ १२-१३ ॥

या (यः) स्त्रीणां प्रार्थितं कुर्यात् कुलबीजैः प्रभाष्य(ष)ते।

कुलक्रियां न परित्यजति स्वशास्त्रोक्तं न मुञ्चति ॥ १४ ॥

जपति स्वकुलां विद्यां समयी सोऽभिधीयते ।

नमस्कारं हि यो बद्ध्वा वामाङ्गं प्रणतः सदा ॥ १५ ॥

स्त्रीणां सम्भाषणं कुर्यात् सद्भावैस्तस्य ताः खलु ।

वामाङ्गुलिखन्या सुभूमौ संलिख्यते पदा ॥ १६ ॥

शिरःकण्डूयनं कुर्यात् तिर्यग्दृष्ट्या वामपाणिना ।

स्वविद्यास्मरणं तस्य साधकस्य विषये हितम् ॥ १७ ॥

1. वामहस्त- क.

2. च- क., भो०

3. दृष्ट- भो०

4. प्रभाषी- क., भो०

गण्डे चिबुके वापि नासिकायां कृताङ्गुलिः ।
तिर्यग्दृष्टिः सकृन्मन्त्रं¹ जपन् विद्यां निरीक्षयेत् ।
सद्भावं यान्ति योगिन्यः समयीभ्यस्तथा खलु ॥ १८ ॥

इति श्रीहेरुकाभिधाने² सप्तयोगिनीलक्षणपरीक्षा-
विधिपटलः षोडशमः ॥ १६ ॥

स्त्रीणामिति निर्धारणे षष्ठी । कुलानि साधकाः । तान्येव बीजानि प्रभाषणाय कारणानि । तैः प्रविभज्य भाष्य(ष)ते । कुलक्रिया समयाचारः । कुलविद्यां कुल-
देवीम् । स्वशास्त्रोक्तं मन्त्रनयोक्तम्, सोऽभिधीयत इति द्वितीयः । नमस्कारमित्यादि ।
सद्भावैस्तस्य ताः खल्विति । एतल्लक्षणप्रतीत्या तादृशीषु योगिनीषु तथैव नम-
स्कारादिकैः सद्भावैस्[³स्तस्य साधकेन खल्विति तृतीयः । वामाङ्गुष्ठेनेति । पदा
पादस्य । लिखन्त्येति । पुनः पुनर्यल्लिख्यते तद्योगिनीजनप्रकार इति ज्ञेयमिति भावः
इति चतुर्थः । शिरःकण्डूयनं कुर्यादिति पाणिना कर्तव्यम् । तद्योगिनीजनप्रकारेति-
ज्ञातव्यम् । सदानुगा ।] तस्य साधकस्य विषये हितमिति । एवंभूतां तां दृष्ट्वा विद्या-
स्मरणं साधकस्य तस्य युज्यते । स्वविद्यां स्वेष्टदेवतामिव तां पश्येदिति भावः । कुत
इत्याह— विषये हितमिति । तादृशो विषयो गौरवाय यतः । प्रथमार्थे सप्तमीत्यर्थ-
समुदाय इति पञ्चमः । मण्डलस्य गण्डो वा समुच्चये । अपिः संभावनायाम् । तिर्य-
ग्दृष्टिरिति । चिबुकादिषु कृताङ्गुलिस्तिर्यग्दृष्टिर्या स्त्री सा योगिनीजनप्रकार इति ज्ञेय-
मिति षष्ठः । ता एवं दृष्ट्वा किं कार्यमित्याह— सकृन्मन्त्रं जपन् विद्यां निरीक्षयेदिति ।
मन्त्रो विद्याराजः । एतेन किमित्याह— सद्भावमित्यादि सुबोधम् ॥ १५-१८ ॥

सप्तयोगिनीत्युपलक्षणम् । षण्णामपि लक्षणमपि । त्रयोदशयोगिन्यः । लक्षणं
चिह्नम् । सप्तानां षण्णां च योगिनीनां लक्षणपरीक्षा सप्तयोगिनीलक्षणपरीक्षेति मध्य-
पदलोपीसमासः । तद्विध्यभिधायकः पटलः षोडशमः षोडशः ।

इति श्रीचक्रसंवरविवृतौ षोडशः पटलः ॥ १६ ॥

*

-
1. जप्य- क.
 2. 'सप्त' नास्ति- भो०
 3. [] पाठः क. मातृकायां त्रुटितो गृहीतस्तु भोटानुसारी ।

सर्वयोगिनीरूपपरिवर्ते चिह्नमुद्राविधिपटलः सप्तदशमः

ततः—

दुर्लभा योगिनीनां तु डाकिनीनां तथैव च ।
पञ्चामृतसद्भावात् यामिनी त्रासनी [तथा] ॥ १ ॥

कामिनी¹ भीमा रूपा सञ्जारा भासुराः ।
डाकिन्यः सप्त संहताः स्वलक्षणमिहोच्यते ॥ २ ॥

लक्षणानन्तरं वक्तुं सप्तदशं पटलमाह— ततो दुर्लभा इत्यादि । योगिनीनां तु डाकिनीनामित्यादि प्रथमार्थे षष्ठी । ततो योगिन्यो देव्यः । तूर्विशेषार्थः । योगिनीना-मिति । डाकिन्यो ²मानुष्यो योगिन्यो योगिनीगुणानुवर्तिन्य इत्यर्थः । अतस्तथैव चेति ³पदम् । कुत इत्याह— ततो दुर्लभा इति । यतो देवीगुणवत्यो डाकिन्यस्ततो दुःखेनो-पलभ्यन्त इति भावः । यद्येवं कथमुपलभ्यन्त इत्याह— पञ्चामृतसद्भावादिति । तदुप-योगिने साधकाय तिष्ठन्त्येता इति भावः ।

डाकिनीनां लक्षणमाह— यामिनी-त्रासिनी-कामिनी-भीमा-रूपा-सञ्जारा-भासुरा-डाकिन्यः सप्त संहता इति । एता यामिन्यादयः संहताः संक्षेपेण सप्त व्याहृता इति भावः । स्वलक्षणमिहोच्यत इति । अन्वयेन तासां नाम एतल्लक्षणकथनद्वारे-णोच्यत इत्यर्थः ॥ १-२ ॥

रूपिका चुम्बिका लामा परावृत्ता सबालिका ।
अनिर्वृत्तिका ऐहिकी देवी डाकिन्यः सप्तधाः स्मृताः ॥ ३ ॥

⁴अविरक्तां निरीक्षेत या भ्रूभङ्गं करोति च ।
रूपं संहरति प्राक् पश्चान्नाशं करोति च ॥ ४ ॥

-
1. काननी- भो०
 2. नास्ति- भो०
 3. समयम्- भो०
 4. अभिरक्तां- भो०

रूपिका सा तु विज्ञेया वीराद्वयसेवितुम् ।
इष्टं वा यदि वानिष्ठा(ष्टं) शिशुमालिङ्ग्य चुम्बति ॥ ५ ॥

चुम्बिका सा तु विज्ञेया डाकिनी चाघनाशिनी ।
तिर्यग्दृष्टिभृकुटीवक्त्रा भ्रूक्षेपे तर्जयन्ति ह ॥ ६ ॥

अन्यथा निःश्वास^१ भैरवस्तु लामाऽसौ विनिर्दिशे]त् ।
वाराहशरभमार्जारशृगालाद्या ^२अजा हया ॥ ७ ॥

सर्वास्तान् त्रासयेत् ततः परावृत्ता हि सा [कथ्यते ।
प्रहृष्टा हसते गता भूयो न निवर्तते ॥ ८ ॥

अनुरक्ते ^३हसते स्पृष्टं खण्डरोहा हि सा स्मृता ।
मनोद्विग्ना करेणाथ लोष्ठेन चरणेन वा ॥ ९ ॥

पटान्तेन वा काष्ठेन तया स्पृष्टो न जीवति ।
अनिवर्ती विजानीयाद् असाध्या सा हि कीर्तिता ॥ १० ॥

तासां सान्वयं नामान्तरमप्याह—रूपिका-चुम्बिका-लामा-परावृत्ता-सबालिका-अनिर्वृत्तिका-ऐहिकी देवी डाकिन्यः सप्तधा स्मृता इति । रूपाया रूपिकाऽपराभिधानाया लक्षणमाह—अविरक्तमित्यादि । वीराद्वयसेवितुमिति । वीराद्वयसेविनीत्यर्थः ।

यामिन्याश्चुम्बिकापराभिधानाया लक्षणमाह—इष्टं वेत्यादि । डाकिनी चेति । डाकिन्यघनाशिनीति भावः । अत एव यमः संयमः, स एव यामः स्वार्थेऽण् । स यस्याऽस्ति सा यामिनी । नाशनं करोति यतः । भीमाया लामापराभिधानाया लक्षणमाह—तिर्यग्दृष्टिरित्यादि । तर्जयन्ति हेति । एकत्वे बहुवचनम् । अत एवार्थः । अन्यथा निश्वासः कामासक्तोऽपि भैरवो विशेषेण प्रयासात् । तुर्विशेषे । अतो विशेषेण रमत इति रामा । रेफे लत्वान्त्वामा । लक्षणद्वययोगाद् भीमैव लामा । त्रासन्याः परा-

-
1. भैरवो हि - क. भो० गृहीतस्तु टीकानुसारी ।
 2. शिवाहया- क.
 3. इच्छते- भो०

वृत्तापराभिधानाया लक्षणमाह— वराहेत्यादि। शरभः पशुविशेषः। शरमेति पाठे तु श्वा। सर्वास्तांस्त्रासयेदिति। तस्या दर्शनेन ते बिभ्यतीत्यर्थः। अतः परावृत्ता सा। हिर्यस्मादर्थे। परे परावर्तन्ते यस्याः सा तथा यस्मात्। सञ्चारायाः सबालिकापराभिधानाया लक्षणमाह— ग्रहष्टेत्यादि। भूयोऽनिवर्तितत्वात् सञ्चारः। कामिन्या ऐहिक्यपराभिधानाया लक्षणमाह— अनुरक्त इत्यादि। खण्डरोहा खण्डेऽभिन्नप्रदेशे पुनः पुनरारोहति तिष्ठतीति सा तथा। हिर्यस्मात्। इह प्रदेशे चिरमवतिष्ठति इत्यैहिकी। भासुराया अनिवर्तिकापराभिधानाया लक्षणमाह— मनोद्विग्नेत्यादि। या भासुराऽनिवर्तिकापरसंज्ञा सा मनसोद्विग्ना भवति। तथाभूतया च तया लोष्टादिना स्पृष्टः सत्त्वो न जीवति। अनिवर्त्या निवर्तयितुमशक्यत्वात्। कुत इत्याह— असाध्या हीति। हिर्यस्मात् ॥ ३-१० ॥

हसति जल्पति रुदति वा अकस्मात् प्रकुप्यते ।

ऐहिका सा ¹स्मृता [देवी पूर्वाभिलापिनी ॥ ११ ॥

सौगतगोष्ठीरता सैव वज्रकुलोद्भवा] ।

²डाकिनीनां कुलानीह महावादीनि लक्षयेत् ॥ १२ ॥

कपालपर्शुदंष्ट्राश्च³क्रकचध्वजखड्गसंत्रासनी ।

⁴शंखा चाष्टमी स्मृताः कुलमुद्राः प्रकीर्तिताः ॥ १३ ॥

इति श्रीहेरुकाभिधाने सर्वयोगिनीरूपपरिवर्ते चिह्नमुद्रा-

विधिपटलः सप्तदशमः ॥ १७ ॥

डाकिनीनां कुलानीह महावादीनि लक्षयेदिति। वायुवेगादयो महावीर्यान्ता योगिन्यो यामिन्यादीनामैहिकान्तानां कुलानि। डाकिनी योगिनीति समानार्थः। डाकिनीनां कुलमुद्रावीरसेवितुं लक्षयेदिति पाठान्तरे। डाकिनीनामुक्तानां कुलानि मुद्रा

1. नास्ति- क.

2. डाकिनीनां कुलमुद्रां वीरसेवितुं लक्षयेत्- भो०, क., गृहीतस्तु टीकानुरोधेन।

3. वज्र- भो०

4. संख्या- क., टी०

एव । योगिन्य एव वायुवेगादयः । ता लक्षयेज्जानीयात् । वीरसेवितुं वीरसेविनीत्यर्थः ।
 द्वितीया बहुवचनलोपात् । कपालपरशुदंष्ट्राश्चक्रकचध्वजखड्गसन्त्रासनी संख्या-
 शेति । चकारः समुच्चये । दंष्ट्रा वराहदन्ताः । कचध्वजेति मुक्तकेशता । अष्टमी अष्टौ
 मुद्राः । एतासां मुद्राणां मध्ये यां काञ्चिद् यस्याः कस्याश्चित् डाकिन्याः । कपाल-
 परशुदंष्ट्राश्च खड्गसन्त्रासनी चैवेति पाठान्तरे । खड्गेति निर्विभक्तिकं सन्त्रासनी
 कर्त्ती । पञ्चैव मुद्राः ॥ ११-१३ ॥

एतच्च योगिनीनां रूपपरिवर्तनमविरक्तनिरीक्षणादि कपालादिमुद्राश्च विधिः
 प्रयोजनं योगिनीज्ञानं लक्षणम् ।

इति श्रीचक्रसंवरविवृतौ सप्तदशः पटलः ॥ १७ ॥

*

सर्वयोगिनीवर्णलक्षणचिह्नविधिपटलोऽष्टादशमः

अथापरं प्रवक्ष्यामि डाकिनीनामपरं पदम् ।

येन सम्यग्विजानाति डाकिन्यः समये स्थिताः ॥ १ ॥

अथेति । रूपपरिवर्तनादिकथनानन्तरं ततोऽपरं पदं चिह्नं प्रवक्ष्यामि (मीति) सम्बन्धः । पद्यते गम्यते डाकिनी येन तेन पदम् । कीदृगित्याह — येनेत्यादि । डाकिन्य इति द्वितीयार्थे प्रथमा ॥ १ ॥

रक्तगौरा हि या नारी पद्मगन्धं विमुञ्चति ।

सौम्यदृष्टिः प्रकृत्यैव ¹संरक्तदर्शना तु या ॥ २ ॥

पदमाह — रक्तेत्यादि । पद्मगन्धं विमुञ्चतीति पद्मगन्धगात्रेत्यर्थः । सौम्यदृष्टिरिति । भृकुट्यादिरहितत्वात् । संरक्तदर्शना तु येति । अत्यन्तानुरागविशिष्टत्वात् । संरक्तनय-
नानुगेति पाठे संरक्तनेत्रान्विता ॥ २ ॥

नखा हि यस्या नार्या संरक्ते नयने तथा ।

गृहे च लिखितं पद्मं पद्मनर्तेश्वरकुलोद्भवा ॥ ३ ॥

नखा हीति । हिरधिकार्थे । अत्यन्तरक्ता नखा इत्यर्थः । संरागप्रकरणात् चिह्नं पद्मं लिखितं पद्ममिति सुगमः पाठः । पद्मनर्तेश्वरो ²ऽमिताभः तत्कुलोद्भवा इति ज्ञेयम् ॥ ३ ॥

भ्रूमध्यगतं त्रिशूलं श्यामा पाण्डुरशरीरं च ।

सततं वज्रकुले भावितं वज्रं तु गृहे लिखितमर्चयेत् ³ त् सदा ॥ ४ ॥

1. संरक्ता दर्शनानुगा- क. भो०

2. ०श्वरो वीरोऽमि- भो०

3. मूलमातृकायां पत्रमेकं नास्तीत्यतः परं १९ पटलस्याष्टमश्लोकस्य प्रथमपादं यावत् पाठो विवृतिमवलम्ब्य भोटपाठात् संस्कृते रूपान्तरितः क्वचिच्चाभिधानोत्तरतन्त्रात् सम्पुटतन्त्राच्च टीकामनुसृत्यैव गृहीतः ।

श्रीहेरुककुलोद्भूता ज्ञेया सा वज्रडाकिनी ।
 यस्याः ¹शूलं ललाटे वै शक्तिर्हि चापि दृश्यते ॥ ५ ॥
 रक्ताक्षी रक्तगौरा च रक्तपादकरा तथा ।
 छागले कुक्कुटे वापि रमते भाविता सदा ॥ ६ ॥
 चिह्नं तस्या गृहे वज्रमर्चयेत् सततं तथा ।
 श्रीहेरुक²कुलोद्भूता डाकिन्यो नात्र संशयः ॥ ७ ॥
 यस्याः ³चक्रं ललाटे तु करे चापि हि दृश्यते ।
 श्यामा जीमूतसदृशी नित्यं ललाटे पट्टधारिणी ॥ ८ ॥
 महासौभाग्यसम्पन्ना साध्वी परतरा च या ।
 लिखितं च गृहे चक्रं यस्या वै पूज्यते सदा ॥ ९ ॥
 वज्रवाराहीकुलोद्भूता डाकिनी बलदर्पिता ।
 या च कृष्णाञ्जनश्यामा सितदशनोन्नता च या ॥ १० ॥
 कूरा च सततं वामा सत्त्वयुक्ता च या भवेत् ।
 नित्यं स्नानरता या च वाचा न बहुभाषिणी ॥ ११ ॥
 वज्रं गृहे च सततं पूज्यते लिखितं शुभम् ।
 वज्रवाराह्याः कुलोद्भूता सहस्राणि दशपञ्चकम् ॥ १२ ॥

भूमध्ये गतं त्रिशूलं त्रिशूलाकारमङ्गम् । श्यामा पाण्डुरशरीरं चेति । यस्याः
 श्यामपाण्डुरं च शरीरम् । अस्याः स्वगृहे वज्रं लिखितम् । गृहमर्चयेत् । तुर्निश्चये ।
 सा नियमेन श्रीहेरुककुलोद्भूता ज्ञेया । वै वाक्यालङ्कारे पक्षान्तरे वा । अपिः संभा-
 वनायाम् । हिरतिशये । रक्तेत्यादि । छागल एव छागलः । सततता निरन्तरता । डाकि-
 नी इति डाकिनी । ललाट इति । ललाटमध्य इति ज्ञेयं तुशब्दात् । हिरवधारणे ।

-
1. त्रिशूलं- भो०
 2. रूपो- भो०
 3. वज्रं- अभि०

ललाटशब्देन वीरपटः । साध्वीत्येकपत्नी । परतरेति परमशोभना । दशनोन्नतेत्युन्नत-
दशना । वामेति । असत्पदे स्ता । वज्रवाराह्याः कुलोद्भूताः । कियत्य इत्याह — सह-
स्राणि दशपञ्चकमिति । पञ्चदशसहस्राणि योगिन्य इत्यर्थः ॥ ४-१२ ॥

गौरी कनकसङ्काशा तथा स्तब्धाक्षी या च लोमशा ।
यस्य ललाटे वज्रं वा करे चापि हि दृश्यते ॥ १३ ॥
राज्यारूढा तु नित्यं गर्विता सत्यवादिनी ।
मल्लिकामोदगन्धिनी ।
वज्रं च लिखितं यस्याः पूज्यते सततं महत् ॥ १४ ॥
खण्डरोहा कुलोद्भूता महायोगेश्वरी वरा ।
मांसप्रिया च या नित्यं तृषा कृष्णाञ्जनप्रभा ॥ १५ ॥
शूलाकारं ललाटं तु क्रूरकर्मरता च या ।
श्मशानं याति नित्यं निर्भया निर्घृणा च या ॥ १६ ॥
यस्या ललाटे ^१शूलं कपालं च लिखितं पूज्यते गृहे ।
श्रीहेरुकदेवस्य डाकिनी सा कुलोद्भवा ॥ १७ ॥
जीमूतवर्णा या नारी दशनैर्विषमैः स्थिता ।
सततं क्रूरकर्मा च वामदंष्ट्रोत्कटा च या ॥ १८ ॥
लिखितं परशुं यस्या गृहे नित्यं च पूज्यते ।
विनायककुलोद्भूता डाकिनी सा न संशयः ॥ १९ ॥

गौरीत्यादिना वरेत्यन्तेन खण्डरोहाकुलोद्भूता लक्षणम् । मल्लिकाया इवामोदो
यस्य स मल्लिकामोदो गन्धो यस्याः सा तथा । मांसप्रियेत्यादिना डाकिनी सा
कुलोद्भवेत्यन्तेन श्रीहेरुककुलोद्भवाया लक्षणम् । जीमूतेत्यादिना न संशय इत्यन्तेन
विना[य]ककुलोद्भूताया लक्षणम् । दशनैर्विषमस्थितेति विषमदशनेत्यर्थः । विनायको
विघ्नारिः ॥ १३-१९ ॥

एतद् डाकिनीगणस्य श्रीहेरुककुलोद्भवा ।
साधकानां हितार्थोप¹लक्षणं समुदाहृतम् ॥ २० ॥

इति श्रीहेरुकाभिधाने सर्वयोगिनीवर्णलक्षणचिह्नविधि-
पटलोऽष्टादशमः ॥ १८ ॥

एतद् डाकिनीगणस्य श्रीहेरुककुलोद्भवा साधकानां हितार्थोपलक्षणं समु-
दाहृतमिति । एतल्लक्षणं डाकिनीगणस्य सम्बन्धि । किम्भूतस्येत्याह— श्रीहेरुक-
कुलोद्भवेति निर्विभक्तिकम् । श्रीहेरुक एव कुलं तत्संभवस्य । प्लुतोच्चारणम् ।
चकारादिशब्दाः समुच्चयाद्यर्था ज्ञेयाः । लक्षणं कुलं च साङ्कर्येण न तु [मनसा यथा-
वतारितं षोडशे पटले ।] वर्णगन्धादिना कुलेन च सप्तयोगिन्य उक्ताः । २क्रियामात्रेण
षट् । सप्तदशे नामग्रहणादिना कपालादिना चिह्नेन च सप्त । इह च वर्णगन्धादिना
चिह्नेन कुलेन प्रतिबद्धेनाष्टौ । समुदायेनाष्टाविंशतिः । सर्वशब्दः प्रदेशकात्स्न्ये ॥ २० ॥

सर्वासामष्टानां योगिनीनां वर्णलक्षणचिह्नानि विधीयन्ते प्रतिपाद्यन्ते येन स चासौ
पटलश्चेति सर्वयोगिनीवर्णलक्षणचिह्नविधिपटलोऽष्टादशमोऽष्टादशः ।

इति श्रीचक्रसंवरविवृतौ अष्टादशः पटलः ॥ १८ ॥

*

-
1. हितार्थाय गुह्यलक्षणनिर्मितम्- भो०
 2. नास्ति- भो०

सर्वयोगिनीमुद्राप्रतिमुद्रानिर्देशविधिपटल ऊनविंशतिमः

अथापरं संप्रवक्ष्यामि लामानां तु विशेषतः ।

सम्यग्ज्ञावयवं जानीयाद् येन साधकः ॥ १ ॥

अथेति लक्षणसमुच्चये । अपरमिति लक्षणं लामानां लामाजातीयानां योगिनीना-
मित्यर्थः । तुर्वाक्यालङ्कारे । विशेषत इति लामादिकुलोद्भूतानां सामान्यं लक्षण-
मुक्तमिदानीं लामाजातीयानामेवोच्यत इति विशेषः । अवयवसद्भूतत्वादवयवं लक्षणं
तत्सम्यक्प्रवक्ष्यामीति सम्बन्धः । साधकेति चतुर्थीलोपे तादर्थ्यात् साधक इति
पाठेऽपि प्रथमा चतुर्थ्यर्थ एव ॥ १ ॥

मुखं यस्यास्तु विस्तीर्णं दृश्यते परिमण्डलम् ।

वक्त्रे श्मश्रूणि नित्यं भ्रुवौ दीर्घास्तु लोमशाः ॥ २ ॥

शुभ्रवस्त्रा शुचिः सौम्या अक्षोभ्या सत्यवादिनी ।

सद्धर्मरता नित्यं वीरभगिनी तु सा ज्ञेया ॥ ३ ॥

लक्षणमाह — मुखमित्यादि । परिमण्डलं वर्तुलम् । लोमशा लोमबहुला भव-
न्तीति । शुभ्रवस्त्रेति निर्मलवस्त्रा । शुचिर्निर्मला । अक्षोभ्या सुनिश्चया । वीरभगिनीति
योगिनीत्यर्थः । वीरभगिन्य इति पाठान्तरे एकत्वे बहुवचनम् ॥ २-३ ॥

^१पद्ममुद्रा दातव्या कूर्ममुद्राऽथवा पुनः ।

अजिनं कमण्डलुं चैव प्रतिमुद्रा विधीयते ॥ ४ ॥

तां दृष्ट्वा मुद्रा देयेत्याह — पद्मेत्यादि । अञ्जलिगताङ्गुलिकुञ्चनात्पद्ममुद्रा । अथ-
वेति पक्षान्तरे । पुनर्वाक्यालङ्कारे । दक्षिणं हस्तं प्रसार्योद्भूतां कृत्य च तदुपरि वामं
चाकुञ्चितं स्थापयेदिति कूर्ममुद्रा । अजिनं कमण्डलुं चैवेति । वामस्कन्धावलम्बि-
तस्य पटाञ्जलस्य वामकरेण धारणाभिनयादजिनम् । यज्ञोपवीतपरिधानाभिनयादिति
केचित् । कमण्डलुधारणाभिनयात् कमण्डलुः । चैवौ निश्चयावधारणयोः । अजिनं

पद्ममुद्रादायिने दर्शयेत् । कमण्डलुं च कूर्ममुद्रादायिने । योगिन्या मुद्रादर्शनाद् योगिनो
मुद्रा प्रतिमुद्रा ॥ ४ ॥

दशमी पर्वणी तस्याः पद्मं च लिखितं गृहे ।
 १श्रियाणां तु लामानामेतद्भवति लक्षणम् ॥ ५ ॥
 लम्बोष्ठी च विशालाक्षी रक्तपिङ्गलोचना ।
 आढ्या सुभगा धन्या गौरी चम्पकसन्निभा ॥ ६ ॥
 २नादीर्घा नातिदीर्घा च विचित्रवसनप्रिया ।
 तिस्रो रेखा ललाटे च ऊर्ध्वसीमान्तमाश्रिता ॥ ७ ॥
 हसते रमते*] चैव मार्गमाक्रम्य तिष्ठति ।
 संग्रामे मृतकानां तु कथासु रमते सदा ॥ ८ ॥
 ईदृशीं प्रमदां दृष्ट्वा शूलमुद्रां प्रदापयेत् ।
 आकुञ्चितवामपादं तु सनृत्यं चैव दर्शयेत् ॥ ९ ॥
 परिवर्तनं च वामेन प्रतिमुद्रा ३विधीयते ।
 चतुर्दशी चाष्टमी तु पर्वणी तस्या विधीयते ॥ १० ॥

श्रियाणामिति वर्णागमात् । श्रीर्वज्रवाराहीयुक्तः श्रीहेरुकः तदुद्भूता योगिन्यः
 श्रियः । लम्बोष्ठीत्यादि । अपरमाह — आकुञ्चितवामपादेति । अर्धपर्यङ्कं नाट्यं दर्श-
 येदित्यर्थः । परिवर्तनं विमुखीभावः । द्वयमिदं प्रतिमुद्रा । पर्वणी पुण्यकालः । चतु-
 र्दश्यादिपर्वणि तथागताचार्यादिषु पूजा ॥ ५-१० ॥

पूजयेत् सततं तस्याः ४शूलं वा लिखितं गृहे ।
 लोकेश्वरीणां तु लामानामेतद्भवति लक्षणम् ॥ ११ ॥

-
1. स्त्रियाणां- अभि०, भो० (मू०); प्रियाणां- भो० (टी०)
 2. दीर्घादीर्घकरा च- अभि०
 - * इतः परं मातृका पुनः प्रारम्यते ।
 3. 'विधीयते' इत्यस्य स्थाने अभिधीयते- भो० सर्वत्र ।
 4. त्रिशूलं वा- भो०

नित्यं च कूपकौ यस्या दृश्येते ¹गण्डसङ्गतौ ।

रक्तगौरा तथा नित्यं हरितपिङ्गललोचना ॥ १२ ॥

कुञ्चिताश्च तथा केशाः पट्टबन्धशिरा[स्तथा] ।

ललाटे दृश्यते चैव एकरेखा प्रतिष्ठिता ॥ १३ ॥

दीर्घग्रीवा तथा चोच्चा रक्तवस्त्रप्रिया नित्यम् ।

हसते गायते चैवाकस्माच्च प्रकुप्यति ॥ १४ ॥

चलचित्ता विशेषेण कलहेषु च रज्यते ।

ईदृशीं प्रमदां दृष्ट्वा ²शक्तिमुद्रां प्रदर्शयेत् ॥ १५ ॥

घण्टामुद्रा प्रदातव्या द्वितीया चैव यत्नतः ।

परिवर्तनं तु वामेन प्रतिमुद्रा विधीयते ॥ १६ ॥

ह्रस्वा चैव स्थूलजङ्घा च ।

पीतवस्त्रप्रिया नित्यं स्कन्धवस्त्रावलम्बिनी ॥ १७ ॥

ईदृशीं प्रमदां दृष्ट्वा ³मुखमुद्रां प्रदर्शयेत् ।

शङ्खमुद्रा प्रदातव्या द्वितीया चैव यत्नतः ॥ १८ ॥

परिवर्तनं [च] वामेन प्रतिमुद्रा विधीयते ।

चतुर्दशी पर्वणी तस्या वज्रं च लिख(ख्य)ते गृहे ॥ १९ ॥

श्रीहेरुकलामानामेतद्भवति लक्षणम् ।

लोमशा सर्वगात्रेषु कृष्णपिङ्गललोचना ॥ २० ॥

कराली विकृता घोरा स्थूलास्या स्थूलवक्त्रा(वित्रका) ।

⁴लम्बोष्ठी कृष्णवर्णा च कोटराक्षी भग्ननासिका ॥ २१ ॥

1. कपोलगण्डे- क.; संस्थितौ- भो०

2. वज्रं शक्तिं वा- क.

3. चक्रमुद्रां- भो०

4. लम्बोदरी- भो०

नित्यं गान्धर्वकुशला मेघवर्णा मनोहरा ।
 ईदृशीं प्रमदां दृष्ट्वा नागमुद्रां प्रदापयेत् ॥ २२ ॥
 शक्तिमुद्रा प्रदातव्या द्वितीयापि हि यत्नतः ।
 परिवर्तनं च वामेन प्रतिमुद्रा विधीयते ॥ २३ ॥
 एकादशी पर्वणी तस्या दंष्ट्रा च लिखितं गृहे ।
 वज्रवाराहीनां तु लामानामेतद्भवति लक्षणम् ॥ २४ ॥

इति श्रीहेरुकाभिधाने सर्वयोगिनीमुद्रा[प्रतिमुद्रा]निर्देश-
 विधिपटल ऊनविंशतिमः ॥ १९ ॥

लोकेश्वरीणाममिताभकुलानाम् । गण्डसङ्गतौ नित्यं कपोलयोः कूपकौ । कपो-
 लगण्डेति क्वचित्पाठः । तत्र कपोलगण्डः कपोलः । अङ्गुष्ठेन शेषसर्वाङ्गुलिसमा-
 क्रमणादूर्ध्वोक्तां तर्जनीं धारयेदिति शक्तिमुद्रा । घण्टावादनाभिनयेन घण्टामुद्रा ।
 मुद्रयोरेका देया । हस्वेत्यादिनाऽन्यदाह — स्कन्धादेकस्माद् वस्त्राञ्चलमवलम्बयितुं
 शीलं यस्याः सा स्कन्धवस्त्रावलम्बिनी । वज्राञ्जलिं कृत्वा मध्यमाद्वयमुत्थाप्य तर्ज-
 नीभ्यामनामिकाद्वयमावेष्ट्याङ्गुष्ठद्वयं प्रगुणीकृत्य तं मुखसमीपे धारयेदिति मुखमुद्रा ।
 उत्तानवामकरकनीयस्याद्यङ्गुलित्रयं संकोच्य तर्जन्यङ्गुष्ठौ संयोज्य प्रसारयेदिति शङ्ख-
 मुद्रा । वामं हस्तमुद्धृतीकृत्य तदुपरि दक्षिणं कफोणिं निधायङ्गुष्ठतर्जनीसमुत्थापना-
 दङ्गुलित्रयमाकुञ्च्य दक्षिणहस्तं धारयेदिति नागमुद्रा । द्वितीयेति प्रतिमुद्रा । अत
 आह — प्रतिमुद्रेति द्वितीया प्रतिमुद्रा चेति पर्यायौ । पञ्चानां लामाजातीयानां योगि-
 नीनां लक्षणमुक्तम् । समुदायेन द्वात्रिंशद्योगिनीनां लक्षणं तासां लक्षणमुद्रादर्शनात् ।
 प्रतिमुद्रा देयेति विशेषः । तु-शब्दादीनामनुक्तार्थः स्वयमभ्यूहनीयः ॥ ११-२४ ॥

मुद्राप्रतिमुद्राद्वारेण पटलपिण्डार्थमाह — सर्वेत्यादि । सर्वशब्दः पूर्ववत् । सर्वासां
 पञ्चानां योगिनीनां मुद्रास्तासु योगिनां प्रतिमुद्राश्च तासां निर्देशः कथनं स विधीयते
 येन चासौ पटलश्चेति स तथा । ऊनविंशतिमः । तकारलोपे सति ॥ १९ ॥

इति श्रीचक्रसंवरविवृतावूनविंशतितमः पटलः ॥ १९ ॥

सर्वयोगिन्यहस्तमुद्रासंकेतविधिपटलो विंशतिमः

अथान्यतमं वक्ष्ये वामहस्तं तु छोम्मकम् ।

येन विज्ञायते सम्यग् भ्राता च भगिनी तथा ॥ १ ॥

पञ्चदशेऽक्षरछोम्मक उक्तः। इह तु हस्तछोम्मकमाह— अथेत्यादि। अथेति मुद्राप्रतिमुद्राकथनानन्तरम्। अन्यतममिति। अक्षरछोम्मकानन्तरं हस्तछोम्मकं वक्ष्ये इति सम्बन्धः। वामहस्तं त्विति। वामेन हस्तेन साध्यत्वाद् वामहस्तछोम्मकः। तुशब्दादक्षिणहस्तसाध्यं च छोम्मकं वक्ष्ये इति ज्ञेयम्। अतः परं प्रवक्ष्यामि डाकिनीनां तु लक्षणमिति पाठान्तरं सुबोधम् ॥ १ ॥

वामहस्तं दर्शयेद् यस्तु(या तु) अभिवादयामीत्युक्तं भवति ।

अनामिकां दर्शयेद् या तु प्रत्यभिवादनमित्युक्तं भवति ॥ २ ॥

उदरं ताडयेद् या तु बुभुक्षिता वयमित्युक्तं भवति ।

ललाटं दर्शयेद् या तु आकाशादागतमित्युक्तं भवति ॥ ३ ॥

मुखादङ्गुलिं प्रक्षिपेद् या तु भुञ्जामीत्युक्तं भवति ।

जिह्वां लालयेद् या तु भुक्तास्मीत्युक्तं भवति ॥ ४ ॥

जानुं स्पृशते या तु श्रान्तास्मीत्युक्तं भवति ।

अङ्गुल्यग्रं स्पृशते या तु विश्रान्तास्मीत्युक्तं भवति ॥ ५ ॥

दन्तं किटकिटायते या तु भक्षयामीत्युक्तं भवति ।

¹भृकुटीं दर्शयेद् या तु बद्धास्मीत्युक्तं भवति ॥ ६ ॥

गरुडं दर्शयेद् या तु मुक्तास्मीत्युक्तं भवति ।

मुष्टिं दर्शयेद् या तु पट्टिशमस्याः प्रदर्शयेत् ॥ ७ ॥

केशान् दर्शयेद् या तु विकृतं च निरीक्षयेत् ।

²नखं दर्शयेद् या तु खट्वाङ्गं तस्या दर्शयेत् ॥ ८ ॥

1. इतः पूर्वं 'पट्टिशं दर्शयेद् या तु तथा कुर्वित्युक्तं भवति' - भो०

2. 'नखं दर्शयेद् या तु' - नास्ति भो०

अङ्गं विधूनते या तु द्विदंष्ट्रां तस्या प्रदर्शयेत् ।

हस्तेन हस्तं ¹वादयेद् या तु बलिर्भोक्तव्यमित्युक्तं भवति ॥ ९ ॥

छोम्मकमाह — वामहस्तमित्यादि । तुरवधारणे । अभिवादयामि नमस्करोमीति तयोक्तं भवति । अनामिकामिति । वामहस्तस्यैव । तुर्विशेषार्थः । ताडयेद् या त्विति । उदरं जिह्वां चेति तुशब्दार्थः । दर्शयेदित्यपि बोद्धव्यम् । तयोक्तमिति सर्वत्रैव योज्यम् । आकाशादागतमिति । उक्तं भवतीत्यनुवर्तते । अङ्गुलिं प्रक्षिपेदिति । मुख इति ज्ञेयमिति तुशब्दार्थः । जानुं स्पृशते या त्विति । तुर्विशेषे । कुतश्चिदागत्य जानुस्पर्शनाच्छ्रान्ताऽस्मीति तयोक्तं भवति । श्रान्तोऽस्मीत्यादि देशविशेषोक्तिनिबन्धात् । तथा च स्त्रीलिङ्गपुंलिङ्गयोः प्रायेण भगादौ समोक्तिः । अङ्गुल्यग्रमिति । अङ्गुल्याऽङ्गुल्यग्रं स्पृशतीति यत्र । तुशब्दार्थो विशेषेणोच्यते तेनेह स एवार्थः । गरुडमिति नासिकाग्रम् । पट्टिशमिति वीरपटबन्धाकारेण वामहस्तम् । ललाटे दर्शयेत् । केशानिति । तत्र वामहस्तव्यापारात् । विकृतं चेति । भृकुट्या निरीक्षणस्य विकृतत्वम् । चकाराद् हूँकारो ज्ञेयः । खट्वाङ्गधारणाभिनयेन खट्वाङ्गदर्शनम् । अङ्गविधूननसङ्केतः । इह वामहस्तव्यापाराभावः । कनीयसीद्वयमुच्छ्रित्याऽऽस्यबन्धद्वये वज्रमुष्टिद्वयं न्यसेदिति । दंष्ट्राद्वयम् । द्वे दंष्ट्रे यस्याः सा द्विदंष्ट्रा मुद्रा । बलिर्भोक्तव्यमिति । बलिः पूजा । बलिर्भोक्तव्य इत्यर्थः । वामहस्तस्यैव सर्वत्र व्यापारः ॥ २-९ ॥

दक्षिणहस्तं प्रदर्शयेद् या तु एवं कुरुष्वेत्युक्तं भवति ।

कर्णं स्पृशते या तु ²वशितव्यमित्युक्तं भवति ॥ १० ॥

नखैर्नखं संस्पृशते या तु मृता नीयतेत्युक्तं भवति ।

भूमिं विलिखते या तु अद्य मण्डलं प्रविशामीत्युक्तं भवति ॥ ११ ॥

³चिबुकं स्पृशते या तु पुत्रो मे रक्षितव्यमित्युक्तं भवति ।

वामाङ्गुष्ठेन भूमिं विलिखते या तु गुरुजनो मे रक्षितव्यमित्युक्तं भवति ॥ १२ ॥

1. दर्शयेत्- भो०

2. वस्तव्यं- भो०

3. कुचं- भो०

अक्षिणी उन्मीलयेद् या तु एवं कुरुष्वेति वक्तव्यं भवति ।

पर्वणी ¹लेहयेद् या तु सुखशयनमित्युक्तं भवति ॥ १३ ॥

यानि कानिचिद् दूतीनां तान् सर्वान् प्रदर्शयेत् ॥ १४ ॥

इति श्रीहेरुकाभिधाने सर्वयोगिन्य[हस्त]मुद्रासंकेत-
विधिपटलो विंशतिमः ॥ २० ॥

दक्षिणहस्तछोम्मकमाह— दक्षिणेत्यादि सुबोधम् । वामेत्यादि । वामहस्ताङ्गुष्ठेन । अक्षिणीति सङ्केतः । एतयोर्यथाकथञ्चिद् व्यापारः । यानीत्यादि । यानि कान्यपि दूतीनां मुद्रारूपाणि लक्षणान्युक्तानि तेषु योगिनीभिः कृतेषु योगिभिः प्रतिमुद्रा देया इत्यर्थः । [²तान् सर्वान् प्रदर्शयेदिति । प्रतिमुद्रा इत्यर्थः ।] यतो भावग्रस्तमिदं वाक्यं विशेषेण बोद्धव्यम् ॥ १०-१४ ॥

सर्वशब्दः सामान्यवचनः । सर्वासां योगिनीनां हस्तमुद्राः सङ्केताश्चैते विधीयन्ते येन स चासौ पटलश्चेति सर्वयोगिनीहस्तमुद्रासङ्केतविधिपटलो विंशतिमो विंशति-तमः ।

इति श्रीचक्रसंवरविवृतौ विंशतितमः पटलः ॥ २० ॥

*

1. स्पृशेत्- भो०

2. नास्ति- क.

दर्शनाङ्गमुद्रालक्षणविधिपटल एकविंशतिमः

अथ दर्शनमहागुह्यं लक्षणं प्रवदाम्यहम् ।
 या स्पृशते शिखां नारी शिरस्तस्याः प्रदर्शयेत् ॥ १ ॥
 ललाटं दर्शयेद् या तु गण्डं तस्याः प्रदर्शयेत् ।
 दशनं दर्शयेद् या तु जिह्वां तस्याः प्रदर्शयेत् ॥ २ ॥
 ओष्ठौ दर्शयेद् या तु चिबुकं तस्याः प्रदर्शयेत् ।
 ग्रीवां स्पृशते या तु उदरं तस्याः प्रदर्शयेत् ॥ ३ ॥
 हस्तौ दर्शयेद् या तु बाहुं तस्याः प्रदर्शयेत् ।
 त्रिकटिकां दर्शयेद् या तु पृथिवीं तस्याः प्रदर्शयेत् ॥ ४ ॥
 स्तनौ दर्शयेद् या तु चिबुकं तस्याः प्रदर्शयेत् ।
 उदरं दर्शयेद् या तु नाभिं तस्याः प्रदर्शयेत् ॥ ५ ॥
 गुह्यं दर्शयेद् या तु लिङ्गं तस्याः प्रदर्शयेत् ।
 ऊरुं दर्शयेद् या तु अपानं तस्याः प्रदर्शयेत् ॥ ६ ॥
 जानुं दर्शयेद् या तु जङ्घां तस्याः प्रदर्शयेत् ।
 पादौ दर्शयेद् या तु तलं तस्याः प्रदर्शयेत् ॥ ७ ॥

अथेति । हस्तमुद्रानन्तरं लक्षणं प्रवदाम्यहमिति सम्बन्धः । तच्च योगिनीनां किं
 भूतमित्याह — दर्शनमहागुह्यमिति । दर्शनार्थं महागुह्या योगिन्यो यतो भवन्ति तत्तथा ।
 लक्षणं शिखादिस्पर्शनस्वरूपम् । अथातो ह्यङ्गमुद्राणामिति हि के(क)चित्पाठे
 अथेति प्राग्वत् । यतो लक्षणेन ज्ञायन्ते योगिन्य इत्यत इति शब्दार्थः । हिरवधारणे ।
 अङ्गस्य स्पर्शनादि यासां ता अङ्गमुद्रायोगिन्यः । या स्पृशते शिखामिति । शिखाया-
 श्वूडायाः स्पर्शमात्रमेव लक्षणम् । शिर इति । हस्तस्पर्शनमेव प्रदर्शनम् । एवमन्यत्रापि ।
 दर्शितान् (दशनं) दर्शयेदिति । ओष्ठबुद्ध्या हस्तेन । जिह्वामिति । जिह्वाऽपि तथैव ।
 त्रिकटिकामिति । स्फिग्द्वयसम्बन्धिग्रन्थिः । पृथिवीमिति । भूस्पर्शमुद्रां दर्शयेदित्यर्थः ।
 गुह्यमिति धर्मोदयम् । अपानमधोमार्गम् । तलं पादतलमिति सुबोधम् ॥ १-७ ॥

१अङ्गुलिं दर्शयेद् या तु नखं तस्याः प्रदर्शयेत् ।

भूमिं प्रदर्शयेद् या तु आकाशं तस्याः प्रदर्शयेत् ॥ ८ ॥

आकाशं दर्शयेद् या तु सूर्यं तस्याः प्रदर्शयेत् ।

नदीं प्रदर्शयेद् या तु समुद्रं तस्याः प्रदर्शयेत् ॥ ९ ॥

एता अङ्गमुद्रा डाकिनीनां नात्र संशयः ।

एभिस्तु दर्शयेन्नित्यं सम्यग्दर्शनं यान्ति गुह्यकाः ॥ १० ॥

इति श्रीहेरुकाभिधाने २दर्शनाङ्गमुद्रालक्षणविधि-

पटल एकविंशतितमः ॥ २१ ॥

भूमिं भूस्पर्शमुद्रामेव दर्शयेत् । आकाशेऽधोमुखभ्रमणेन तत्प्रतिपादनम् । सूर्य-
मूर्ध्वनिरीक्षणात् । हस्तेनाकाशे नद्याकारेण रेखादानाभिनया नदीमुद्रा । आकाशे
वेपमानेन हस्तद्वयेन समुद्रमुद्रा ॥ ८-१० ॥

दर्शनेनाङ्गमुद्रालक्षणं दर्शनाङ्गमुद्रालक्षणम् । तद्विधीयते येन स चासौ पटलश्चेति
दर्शनाङ्गमुद्रालक्षणविधिपटल एकविंशतितमः ।

इति श्रीचक्रसंवरविवृतावेकविंशतितमः पटलः ॥ २१ ॥

*

1. पर्वणी- भो०

2. 'दर्शन' नास्ति- भो०

विशेषमुद्रालक्षणविधिपटलो द्वाविंशतिमः

१अतः परं प्रवक्ष्यामि अङ्गमुद्रां यथाविधि ।
येन विज्ञायते भ्राता भगिनी वा २विशेषतः ॥ १ ॥
एकाङ्गुलिं दर्शयेद् यातु स्वागतं [मित्युक्तं] भवति ।
द्व्यङ्गुलिं दर्शयेद् या तु सुस्वागतमित्युक्तं भवति ॥ २ ॥
एताः सर्वयोगिन्योऽङ्गमुद्राः प्रकीर्तिताः ।
नेत्रमुद्रां विजानीयाद् ३द्वाभ्यामङ्गुलिसूच्यं तु ॥ ३ ॥
किञ्चित् कुञ्चित्तर्जनीं ५मन्त्री दर्शयेत् तु ताम् ।
तत्क्षणाद् वशमायाति यावज्जीवं ६तु गुह्यक ॥ ४ ॥

अतः परमिति । शिखास्पर्शादिमुद्राकथनानन्तरम् । अङ्गमुद्राः प्रवक्ष्यामीति सम्बन्धः । ताः कथिता एव किमाभिरित्याह— विशेषत इति । विशेषेणाङ्गमुद्रा इत्यर्थः । अथातः संप्रवक्ष्याम्यङ्गमुद्रा यथाविधीति पाठान्तरेऽपि । अथेति समुच्चये । अत इति विशेषेण । द्वयोरङ्गुल्योः सुस्वागतमिति । तर्जनीमध्यमयोर्दर्शनेन । एताः सर्वयोगिन्योऽङ्गमुद्राः प्रकीर्तिता इति । अङ्गमुद्रा सर्वासां योगिनीनां साधारण्य इत्यर्थः । मुद्रा पोतङ्गीनामाङ्गमुद्राः प्रकीर्तिता इति पाठान्तरे पोतङ्गीनीति नाम्न्यो मुद्राः । ताश्चाह— नेत्रमुद्रां विजानीयाद् द्वाभ्यामङ्गुलिसूच्यन्तु किञ्चित् कुञ्चित्तर्जनी यस्य तां दर्शयेद् योगी स तत्क्षणाद् वशमायान्ति गुह्यक इति । द्वाभ्यां ज्येष्ठा-तर्जनीभ्यां हस्तद्वयगताभ्यां सूच्यं सूचीकृत्वा शेषाङ्गुलिसङ्कोचे किञ्चित् कुञ्चिता तर्जनी यस्यां सा तथा मुद्रा, तां नेत्रमुद्रां विजानीयात् । यस्येति यस्या मुद्रामेतां योगी दर्शयेत् । स इति ता गुह्यका योगिन्यस्तस्यैवं वशीभवन्तीत्यर्थः ॥ १-४ ॥

1. अथापरं- भो०
2. न संशयः- भो०
3. वामाङ्गुलि- भो०
4. इतः परं २९पटलान्तो पाठोऽनुपलब्धः स च टीकासाहाय्येन अभिधानोत्तरसंपुटतन्त्रयोर्मेलयित्वा भोटपाठात् संस्कृते रूपान्तरितः ।
5. यस्य दर्शयेत् स- टीकायाम् ।
6. न संशयः- अभि०; संपु०, गृहीतं तु टीकानुरोधात् ।

मुद्रा पोतङ्गिनीनाम यावज्जीवं न संशयः ।
 मध्यमां दर्शयेद् या तु प्रदेशिनीं तस्याः प्रदर्शयेत् ॥ ५ ॥
 अनामिकां प्रदर्शयेद् या तु जिह्वां तस्याः प्रदर्शयेत् ।
 १पट्टिशं दर्शयेद् या तु शूलं तस्याः प्रदर्शयेत् ॥ ६ ॥
 शिरो दर्शयेद् या तु २मेदिनीं तस्याः प्रदर्शयेत् ।
 महीं दर्शयेद् या तु आकाशं तस्याः प्रदर्शयेत् ॥ ७ ॥
 भृकुटिं दर्शयेद् या तु सीमान्तं तस्या दर्शयेत् ।
 दन्तान् दर्शयेद् या तु ओष्ठं तस्याः प्रदर्शयेत् ॥ ८ ॥
 ग्रीवां दर्शयेद् या तु वक्त्रं तस्याः प्रदर्शयेत् ।
 ललाटं दर्शयेद् या तु दृष्टिं तस्याः प्रदर्शयेत् ॥ ९ ॥
 एताः सर्वयोगिन्यः क्रमादङ्गमुद्रा प्रचोदिता ।
 एभिस्तु दर्शयेत् सम्यग् दर्शनं यान्ति गुह्यक(१ :) ॥ १० ॥

इति श्रीहेरुकाभिधाने विशेषमुद्रालक्षणविधि-
 पटलो द्वाविंशतिमः ॥ २२ ॥

मुद्रा पोतङ्गिनीनाम यावज्जीवं न संशय इति । इयं नेत्रमुद्रा पोतङ्गिनीसंज्ञका ।
 एता इत्यादिना बहुत्वनिर्देशस्तु प्रत्येकयोगिन्यङ्गभेदसम्बन्धात् । पट्टिशं पूर्ववत् । शिरो
 दर्शयेदिति । शिरोदर्शनमात्रम् । मेदिनीमिति व्याख्यातम् । वक्त्रं वक्त्रमुद्राः । एताः
 सर्वयोगिन्योऽङ्गमुद्राः प्रचोदिता इति । सर्वा एव योगिन्योऽङ्गमुद्रा एव भेदाभावात् ।
 सर्वासामेव चेत्यर्थः । एभिरिति प्रतिमुद्राः । कर्मणि तृतीया । लिङ्गव्यत्ययश्च ॥ ५-१० ॥

विशेषेणाङ्गमुद्रालक्षणं विधीयते येन स चासौ पटलश्चेति स विशेषेणाङ्ग-
 मुद्रालक्षणविधिपटलो द्वाविंशतितमः ।

इति श्रीचक्रसंवरविवृतौ द्वाविंशतितमः पटलः ॥ २२ ॥

*

1. महीं- अभि०
2. ओष्ठ- अभि०

डाकिनीविशेषचिह्नमुद्रालक्षणविधिपटलस्त्रयोविंशतिमः

१ अथातः संप्रवक्ष्यामि डाकिनीनां तु २ लक्षणम् ।

ज्ञायतेऽदूरतो येन वीराणां वीरभगिनी ॥ १ ॥

अथेति । अङ्गमुद्रालक्षणकथनानन्तरम् । संप्रवक्ष्यामीति लक्षणमेवानुवर्तनीयं कर्मपदम्, किञ्च पूर्वतो विशिष्टम् । अतःशब्दस्य विशेषार्थत्वात् । किं तद्विशेष-लक्षणमित्याह— ज्ञायत इत्यादि । अदूरत इत्यविलम्बतः । वीराणामिति वीरैरित्यर्थः । वीरभगिनीति वीरैरेव ज्ञातुं शक्यत्वात् । वीरेभ्यो वा सिद्धिदानात् । समानसमयत्वाद् वा । अतः परं प्रवक्ष्यामि डाकिनीनां तु लक्षणमिति पाठः सुबोधः ॥ १ ॥

अनुरक्ता समयिनी यस्य वीरभोग्या वसुन्धरा ।

आधारं तु मेदिनीं कृत्वा यजेद्वै योगसंवरम् ॥ २ ॥

कथं तेऽभ्यस्ताः सिद्धिदायिन्य इत्याह— अनुरक्तेत्यादि । समयिनी । समानसमया योगिनी सन्तुष्टा यस्य योगिनस्तस्य वीरभोग्या वसुन्धरा स्यात् । वीरः सुभटस्तस्यैव भोग्या वीरभोग्या । वसूनि रत्नानि धारयतीति वसुन्धरा । आक्रम्य रत्नपूर्णा पृथ्वी तेन भुज्यत इति भावः । किं चान्यदपीत्याह— आधारमित्यादि । आधे(धी)यते सुखम-भुज्यत इति भावः । किं चान्यदपीत्याह— आधारमित्यादि । आधे(धी)यते सुखम-नेनेत्याधारः । मेदः स्नेहः । स्निग्धा यदि सा स्यात्तदा तां डाकिनीमाधारं नियतां(तं) स्थानं कृत्वा योगो(ग)संवरं यजेतेति सम्बन्धः । योगः प्रज्ञोपायौ वैषम्यात्मनः संवृणोत्यनेनेति सम्बन्धः । सं सुखं योगस्य संवरो योगसंवरस्तं यजेतादत्ते । परमानन्दा-नन्तरं विषयेभ्य इन्द्रियग्रामो निवर्तते मनोमात्रं सुखमात्रमालम्बते यदा तदा विरमा-नन्दः । ततश्च विषयेभ्य इन्द्रियविरामो विरमः । तस्यैव पर्यन्तभूतो निर्विकल्पज्ञान-स्वरूपो निरतिशयसुखपरिपूर्णस्तज्जश्च सहजानन्दस्तमादत्त इति समुदायार्थः । स च मण्यन्तर्गतबोधिचित्तस्थिरीकरणेन प्रतीयमानोऽप्युपदेशं महान्तमपेक्षते स्वप्रतीतये । तदर्थं सद्गुरुभट्टारकचरणकमलमेव प्रसन्नीकार्यम् । अतः सङ्कल्पात्मनः संवृणोतीति

1. अतः परं- अभि०

2. तेषां- अभि०; भो०

संवरः सहजानन्दः। प्रज्ञोपाययोगेन तयोरेव तादृशं ज्ञानमुदेति। याभ्यां ज्ञानममूल्यं जायते तौ प्रज्ञोपायावेव रत्नभूताविति ज्ञेयम् ॥ २ ॥

एषां हि डाकिनीनां ¹तु विलोमेन निरीक्षणम् ।

आननस्य विरूपत्वं भूभङ्गशाश्वतं सुखम् ॥ ३ ॥

डाकिनीलक्षणमाह— विलोमेनेति। पुरो निरीक्षणं विहाय पश्चान्निरीक्षणं विलो-
मनिरीक्षणम्। आननविरूपत्वमेव स्पष्टयति। भूभङ्गशाश्वतं सुखमिति। शाश्वतभू-
भङ्गमित्यर्थः ॥ ३ ॥

विविधमाशु विज्ञेयं डाकिनीनिर्गतं तथा ।

आवर्तविकृता ज्ञेया त्रिरेखा तु परिमण्डला ॥ ४ ॥

विविधमाशु विज्ञेयं डाकिनीनिर्गतं तथेति। विविधं विज्ञेयमाशु शीघ्रं डाकिन्या
निरभिप्रायं गतं गमनम्। तथेति तथाभूतमवागोचरमित्यर्थः। विविधत्वमाह—
आवर्त इत्यादि। येन यथा गच्छति ततोऽन्येन पुनः पुनरागच्छतीति आवर्ताश्चक्रवर्ताः।
अतो विकृताः। तिस्रो रेखागमनागमनरूपा ये ते तथा आवर्ताः। पुनः कीदृश
इत्याह— परिमण्डलाः कुण्डलाकारत्वात् ॥ ४ ॥

गच्छन्त्याः खलु डाकिन्याः सर्वचिह्नं च लक्षयेत् ।

अकस्माद्विनिवर्तन्ते प्राग्विरां वदनखण्डितम् ॥ ५ ॥

गच्छन्त्याः खलु निश्चितम्। एतन्निपुणेन सर्वलक्षणमालोकनमित्याह—
सर्वचिह्नं च लक्षयेदिति। अकस्माद्विनिवर्तन्ते इति। अकारणेन विद्यमानेऽपि कार्ये
प्राप्तादेशाद् विशेषेण निवर्तत इति गमनलक्षणम्। प्राग्विरां वदनखण्डितमिति।
प्राक्तनगिरां वदनमुक्तिस्तस्य खण्डं भेदः। पूर्वापरयोर्वचनयोरसम्बन्ध इति वचन-
लक्षणम्। निरर्थकं वचनं खण्डितमिति पाठः सुबोधः ॥ ५ ॥

तथैव तेन च तस्या वज्राकृतिरिव स्फुटम् ।

स्वरः कोकिलध्वनिर्व्यक्तं तस्याः सदैव हि ॥ ६ ॥

गृहे चास्या भवेच्चिह्नं वज्राकारं तु दर्पणम् ।
 अपराकृतिस्तु खड्गाकारं सदर्पणम् ॥ ७ ॥
 ध्वजशक्तिर्ज्ञायते नित्यं संपुटं दर्पणेन च ।
 एतानि ज्ञेयचिह्नानि कृतरूपो हि [सूक्ष्मतः] ॥ ८ ॥
 एभिस्तु लक्षणैर्युक्ता विज्ञेया परमडाकिनी ॥ ९ ॥

इति श्रीहेरुकाभिधाने डाकिनीविशेषचिह्नमुद्रालक्षण-
 विधिपटलस्त्रयोविंशतिमः ॥ २३ ॥

तस्या वज्राकृतिः स्फुटमिति ललाटलक्षणम् । स्वरः कोकिलध्वनिर्व्यक्तमिति वागलक्षणम् । गृहे चास्या इत्यादिना गृहलक्षणम् । ध्वजशक्तिश्च ज्ञायते नित्यमिति । ध्वजो लिङ्गं तच्छक्तिर्यस्याः सा तथेति । दर्प[ण]लक्षणं संपुटं दर्पणेनेति । संपुटत्वं दर्पणेन सततं निरीक्षणमित्यर्थः । एतद् दर्पणलक्षणम् । ज्ञेयानि चिह्नान्येतानि इत्युप-
 संहरति । अत आह— एभिरित्यादि । कथमेवं भूतानि तानि योगी जानातीत्याह—
 कृतरूपो हि । यतोऽभ्यस्तडाकिनीचिह्नस्वरूपः सः, अत आह— एभिरित्यादि ।
 युक्तेति नियमात् । परमडाकिनीति विशेषलक्षणयोगात् । एकस्या एव यस्याः कस्या-
 श्चिल्लक्षणान्येतानि ॥ ६-९ ॥

डाकिन्यागमनादीनि विशेषेण चिह्नानि मुद्रागृहे दर्पणादिलक्षणा एव लक्षणम् ।
 एभिरिति लक्षन्ते तानि विधीयन्ते येनासौ पटलश्चेति । डाकिनीचिह्नमुद्रालक्षणविधि-
 पटलस्त्रयोविंशतितमः ।

इति श्रीचक्रसंवरविवृतौ त्रयोविंशतितमः पटलः ॥ २३ ॥

*

चतुर्वर्गसर्वसङ्केतभाषाविधिपटलश्चतुर्विंशतिमः

अथान्यभाषया च प्रवक्ष्यामि तु छोम्मकम् ।

साधको येन ज्ञायते भ्राता भगिनी न संशयः ॥ १ ॥

अथेति समुच्चये । अन्यभाषया च छोम्मकं प्रवक्ष्यामीति सम्बन्धः । पञ्च-
दशेऽक्षरछोम्मकस्योक्तत्वात् । तु-शब्दो वाक्यालङ्कारे । साधको येन छोम्मकेन
ज्ञायते । भ्रातेति साधकविशेषणं भगिनी चेति योगिनी । अन्यथान्यभाषाछोम्मका
भवन्तीति सुबोधं पाठान्तरम् ॥ १ ॥

पोतङ्ग्यभिवादनं प्रतिपोतङ्गी प्रत्यभिवादनम् । गमु गच्छामीत्युक्तं भवति ।
१लुमु आगच्छामीत्युक्तं भवति । देहं नगरमित्युक्तं भवति । गृहाणां वटुकमित्युक्तं
भवति । वीराणां हृदयं कारणं चैव । मारणं कौरवा । घण्टा च कर्णिका । २शिरो-
जलिः । करणं वाराहकेशः । श्रवणौ कर्णौ । अमृतस्थानं मन्थानम् । समागमो नरः ।
३तिलका डाकिन्यः । नरकं मण्डलम् । अमुकं श्मशानम् । ४काम्पित्या द्वारम् ।
श्वसनं ब्राह्मणः । परिधिः क्षत्रियः । विरतिर्वैश्यः । क्रूरः शूद्रः । अन्तश्चण्डालः ।
गृहमङ्गुलिका । डाकिनी भगिनी । मेदकमुदकम् । गृहिणीति मुद्राणाम् । जिह्वायां
दन्तं स्पृशतीति बुभुक्षिता । तृष्णा गन्धवाहिनीति । कुत आगमनममुकस्थानात् ।
किरणं पुष्पमिति । हास्यं तु लम्ब इति । दरो दन्तम् । वृष्टिनिरोधनं निरोधः । तृप्ति-
विज्ञप्तिः । धुर्युर्बहिः । मेघा धूप(म)प्रिया । सानु पर्वतम् । सरितो नद्यः । अङ्गुल्य-
वयवः । वदनं मुखम् । राजिका जिह्वा । अदना दन्ताः । पङ्क्तिर्ध्वजः । छन्दो
माला । चलो वायुः । ६नावं प्रवाहः । पशु मृगः । ७यान्ति मण्डलम् । ८समं

1. लुम्ब- अभि०
2. नास्ति- भो०
3. तालिका- भो०
4. काखिला- भो०; अभि०
5. पशुलिका- भो०
6. नास्ति- टी०
7. यति- भो०
8. स्वसं- भो०

चतुष्पथम् । जनः फल्गुषम् । 1 महाशवं महाक्षरम् । महापशु छागलम् । ना इति नरम् । गो इति वलीवर्दः । म इति महिषम् । भा इति भक्षणम् । हा इति पर्यायाः । अप्पका इति राजस्पशे राजपुरुषः । वनं स्थिति । मुखस्पर्शनं भुक्तमिति । दन्त-स्पर्शनं तृप्तमिति । हो इति पर्यायः क्वचित् । ह्री इति लज्जा । शून्यस्पर्शने नास्तीति । ऊरुस्पर्शने मैथुनं कुरुष्वेति । ऊर्ध्वेन तथा । एवमिति अधस्तात्नास्तीति मुद्रा प्रतिमुद्रा गुह्यछोम्मका वीराख्या चतुर्वर्गलक्षणम् ॥ २ ॥

इति श्रीहेरुकाभिधाने चतुर्वर्गसर्वसङ्केतभाषाविधि-
पटलश्चतुर्विंशतिमः ॥ २४ ॥

पोतङ्ग्यभिवादनमिति । अभिवादनस्य संज्ञा पोतङ्गीशब्दः । प्रतिपोतङ्गी प्रत्यभि-
वादनमिति प्रत्यभिवादनम् । पुनर्वन्दनाविशेषः । गमु शब्दोच्चारणौ (गे) गच्छामीति दर्शयति । लुमु शब्दोच्चारणे आगमनम् । लुम्बुरिति केचित् । देहं नगरमित्युक्तमिति शरीरस्याख्या । गृहाणां वटुकमित्युक्तमिति । वटुकमिति गृहस्य संज्ञा । गृहाणमिति क्वचित् पाठे । गृहाणमिति पात्रसंज्ञा । पूर्वत इत्युक्तं भवतीति सर्वत्र वर्तते । वीराणां हृदयमिति । हृदयमिति वीराणां संज्ञा । कारणं हृदयमिति क्वचित् पाठे हृदयमिति कारणम् । चैवशब्दौ समुच्चयावधारणयोः । कौरवा मारणमिति । कौरवा मारणाख्या । कौरवाशब्दः स्त्रीलिङ्गः । घण्टा कर्णिका चेति । कर्णिका घण्टायाः संज्ञा । शिरो-ऽलिरिति । शिरःसंज्ञोऽलिरिति । करणं वराहकेश इति । वराहरोम्णां करणसंज्ञा । श्रवणौ कर्णाविति यथार्थः । अमृतस्थानं मन्थानमिति । अमृतोद्धरणस्थानं मन्थान-मुच्यते । समागमेति स्त्रीलिङ्गः शब्दः नरस्याख्या । 2 तिलका डाकिन्या इति । 3 तिलका डाकिन्यो भण्यन्ते । नरकं मण्डलमिति । मण्डलस्याख्या नरकमिति । अमुकं श्मशानमिति । श्मशानसंज्ञा । 4 कम्पिल्येति स्त्रीलिङ्गः शब्दः । सा च द्वार-संज्ञा । श्वसनं ब्राह्मण इति ब्राह्मणसंज्ञा । परिधिः क्षत्रिय इति । क्षत्रियसंज्ञा । विरति-वैश्य इति । वैश्यसंज्ञा । क्रूरः शूद्र इति यथार्थः । अन्तश्चण्डाल इति । चण्डाल-

1. महाक्षरं महापशुः । ग इति छागलम् ।- भो०
2. तालिका- भो०
3. तालिका- भो०
4. काखिलेति- भो०

स्याख्या। गृहम¹ङ्गुलिकेति गृहसंज्ञा। डाकिनी भगिनीति सुबोधम्। मेदकमुदक-
मिति। उदकस्याख्या। गृहिणीति मुद्राणामिति। मुद्राणां संज्ञा गृहिणीति। जिह्वायां
दन्तं स्पृशतीति तेन बुभुक्षितान्नमिति। बुभुक्षयान्नं याचत इत्यर्थः। तृष्णा गन्धवाहि-
नीति। तृष्णायाः संज्ञा। कुत आगमनं छोम्मकदानम्। अमुकस्थानादिति पञ्चम्यन्त-
पदं प्रकृतिसिद्धम्। प्रतिछोम्मकदानसंज्ञा। किरणः पुष्प इति। किरणाख्या। हास्यन्तु
लम्ब इति। हसनं हास्यं हास इत्यर्थः। तुः समुच्चये। दरो दन्त इति। दन्तस्याख्या।
वृष्टिनिरोधनमिति। निरोधाख्या। तृप्तिर्विज्ञप्तिरिति। तृप्तेराख्या। धुर्युर्बहिरिति। बहिः-
स्थानाख्या। मेघा धूप(म)प्रिया इति सुबोधम्। सानुरिति पर्वताख्या। सरितो नद्य
इति। अङ्गुल्यवयव इति अङ्गुलीसंख्या। वदनं मुखमिति यथार्थम्। राजिका जिह्वेति
जिह्वाख्या। अदना दन्ता दरो दन्त इति च समम्। पङ्क्तिर्ध्वज इति। ध्वजाख्या।
छन्दो मालेति मालाख्या। चलो वायुरिति। वायोराख्या। [नावं प्रवाह इति प्रवा-
हाख्या] पशु मृगा इति। मृगाख्या। पशुशब्दात् प्रथमाबहुवचनलोपः। यान्तिर्मण्डल-
मिति मण्डलाख्या नरकमिति च।

समं चतुष्पथमिति चतुष्पथस्याख्या। जनं फल्गुषमिति। जनस्याख्या। लिङ्गम-
तन्त्रम्। महाशवं महाक्षरमिति। नरशवास्याख्या। महापशु छागलमिति। छागल एव
छागलः स च नरः। आहुरिति अध्याहारात् सर्वत्र द्वितीया। ना इति नरमिति।
नाशब्दः पुरुषवाची स्त्रीलिङ्गः। नृ-शब्द इति केचित्। गो इति वलीवर्दमिति। न
पुनर्गावीशब्दार्थः। म इति महिषमिति। महिषशब्दैकदेशः। भा इति भक्षणमिति।
अयमपि स्त्रीलिङ्गः। भोज्यतयाऽघसित इति वचनात्। हा इति पर्यायाः। क्वचिद् या
इति। रा-शब्दोऽपि भक्षणपर्यायः स्त्रीलिङ्गश्चायम्। 'हार्याः प्रभावात्' इति वचनात्।
अप्पका इति राजस्पशे इति। राजपुरुषे चर इत्यर्थः। 'अप्पकायां निविष्टान्' इति
दर्शनात्। वनं स्थितीति। निर्विभक्तिकम्। स्थितिर्वचनस्याख्या। मुखस्पर्शो भुक्त
इतीति। मुखस्पर्शो भुक्तवानिति प्रतिपादयतीत्यर्थः। दन्तस्पर्शने तृप्त इति सुगमम्।
हो इति पर्यायः। क्वचिदिति तृप्तपर्यायः। ह्री लज्जेति। ह्रीताख्या शून्यस्पर्शने। मैथुनं
कुरुष्वेति सुगमम्। ऊरुस्पर्शने। ऊर्ध्वेन एवमितीति। पूर्वकालमेवं कुर्विति भावः।
अधस्तादित्यादि। इतः परं मुद्रा प्रतिमुद्रा च नाम्नि छोम्मकाश्च न सन्तीत्यर्थः॥ २॥

डाकिनी च तथा लामा खण्डरोहा च रूपिणी । चत्वारो वर्गास्तेषां सर्वसङ्केत-
भाषा छोम्मका डा इति पुरुषः स्मृत इत्यादयस्त एवादिभूता यस्य वर्णादिसमूहः,
तच्चतुर्वर्गसर्वसङ्केतभाषाछोम्मकादि । तदेव विधीयत इति विधिर्येषां नवानां पटलानां
ते चतुर्वर्गसर्वसङ्केतभाषाछोम्मकादि विधयः । तेषामन्तर्भूतः पटलः । प्रथमपटला-
पेक्षया चतुर्विंशति चतुर्विंशतितमः । पञ्चदशापेक्षया दशमोऽपि । तेन गर्दभाकारयोग-
हेरुकीकरणविधिपटलमुत्सृज्य दशपटलपिण्डार्थो दर्शितः । अनुलोमविलोमेनेत्यस्या-
र्थान्तरम् । शुक्लप्रतिपदादिक्रमेण त्रिचक्रयोगिनी यथास्थानं भावनं वामदक्षिणावर्त-
योगिनीन्यासश्चेति ।

इति श्रीचक्रसंवरविवृतौ चतुर्विंशतितमः पटलः ॥ २४ ॥

*

मूलमन्त्रसर्वगोप्यविधिपटलः पञ्चविंशतिमः

अथ सर्वार्थकामानामष्टगोपितान्तेन योजिताः ।

हीनाधिमुक्तिसत्त्वानां मोहाज्ञानावृतचेतसाम् ॥ १ ॥

पूर्वमुद्धृतो मूलमन्त्रः कीदृशः किमर्थञ्च गोपित इति स्वयं कृतायां प्रश्नाशङ्का-
यामथशब्दः। अत आह— सर्वेत्यादि। तत्रैते मन्त्रा गोपिता इति सम्बन्धः। कस्यार्थे
गोपिता इत्याह— सर्वथाऽर्थेषु विषयेषु काम इच्छा यस्य स तथा। विषयार्थि-
नोऽर्थायेत्यर्थः। तेन हि सुसाध्य(ध)यितुमशक्यः प्रत्युत ततो माराधिष्ठानमिति भावः।
कियन्तस्त इत्याह— अष्टेति। अष्टपदत्वादष्टौ मन्त्राः। गोपितशब्दात् प्रथमाबहु-
वचनलोपः। अन्तेन स्वरूपेण योजिताः। हीनाधिमुक्तिसत्त्वमाशयो यस्य स तथा।
श्रावकस्याप्यर्थायेत्यर्थः। स हि स्वदमशममात्रार्थित्वाद्धीनाधिमुक्तिः कुतीर्थ्यानाम-
ज्ञानं तत्र चित्तं बुद्धिस्तदर्थेन। एतेनासद्भ्यो रक्षणार्थं गोपिता इत्यभिसन्धिः॥ १ ॥

तत्र वीरैर्योगिनीभिः स्पष्टाभिभाषितो मन्त्रस्त्वयम्— ॐ नमो भगवते वीरे-
शाय। महाकल्पाग्निसंनिभाय। जटामकुटोत्कटाय। दंष्ट्राकरालोग्रभीषणमुखाय।
सहस्रभुजभासुराय। परशुपाशोद्यतशूलखट्वाङ्गधारिणे। व्याघ्राजिनाम्बरधराय।
महाधूम्रान्धकारवपुषाय। कर कर कुरु कुरु बन्ध बन्ध त्रासय त्रासय क्षोभय
क्षोभय हौं हौं हः हः फें फें फट् फट् दह दह पच पच भक्ष भक्ष
वसरुधिरान्त्रमालावलम्बिने ग्रिह्ण ग्रिह्ण सप्तपातालगतभुजङ्गं सर्पं वा तर्जय तर्जय
आकड्ड आकड्ड ह्रीं ह्रीं ज्ञौं ज्ञौं(ज्णौं ज्णौं) क्ष्मां क्ष्मां हां हां ह्रीं ह्रीं हूं हूं किलि
किलि सिलि सिलि हिलि हिलि धिलि धिलि हूं हूं फट् ॥ २ ॥

इति श्रीहेरुकाभिधाने मूलमन्त्रसर्वगोप्यविधि-

पटलः पञ्चविंशतिमः ॥ २५ ॥

तत्रेति। स्वयमाशङ्कयाम्। एत इत्यष्टपदाः गोपिता इति कुतो ज्ञायत इत्याह—
स्पष्टा इत्यादि। वीरैर्योगिनीभिश्च स्पष्टाः सन्तोऽभाषिता न भाषिताः। अनाचार्यकं हि
विधानं मन्त्रनयसिद्धिहानिकरमेव। मन्त्रानाह— ॐ नम इत्यादि। मन्त्रराजेन मिश्री-

भावान्मूलमन्त्रस्य द्वयोरिहापि गोपः। हूँ हूँ फट्कारद्वययोगः। द्वयोरपीत्याह— हूँ हूँ
फट् फडिति ॥ २ ॥

अत आह— मूलमन्त्रेत्यादि। मूलमन्त्रस्य सर्वात्मा मूलमन्त्रसर्वात्मा तस्य
गोप्यं गोपनम्। भावे ण्यत्। उद्गारे ह्येकैकाक्षरगोपः तद् विधीयते येन यत्र वा स
चासौ पटलश्चेति मूलमन्त्रसर्वगोप्यविधिपटलः। मध्यपदलोपात्। पञ्चविंशतितमः।

इति श्रीचक्रसंवरविवृतौ पञ्चविंशतितमः पटलः ॥ २५ ॥

*

ये मुक्ता भवबन्धनैरपि भवं गृह्णन्ति सत्त्वार्थिनः
कालात् कर्मफलं त्यजन्ति न हि तच्छून्यार्थसंदेशकाः ।
संज्ञानानलदग्धचित्तकलुषाः सम्यक् कृपाद्राः सदा
तान् सत्त्वार्थरतानतर्क्यचरितान् बुद्धान् नमामो वयम् ॥

༡༡། །ཐུད་ཀྱི་ཐུལ་པོ་དཔལ་བདེ་མཆོག་ཉུང་ཏུ་
ཞེས་བྱ་བ་དང་།
དེའི་དཀའ་འགྲེལ་སློབ་དཔོན་རྩལ་རྩལ་ས་མཛད་པ་
བཞུགས་སོ།།

(भोट-खण्ड)

འགོ་བ་ནམས་ཀྱི་བདེ་ཆེན་གྱལ་པོ་གཅིག་ཕྱ་ནིད། |

གྱུ་ནམས་དང་བྲལ་ཏྲག་ཏུ་འབྱུང་བར་གྱུར་བ་སྟེ། |

གང་ཞིག་གིས་ནི་ཉེ་བར་བརྗོད་པའི་དུས་དག་ཏུ། |

ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་ཆོག་གིས་དབྱལ་གྱུར་གྱལ་ཅིག །

(དེ་ཁོ་ན་ནིད་གྲུབ་པ། ༡)

དཀྱིལ་འཁོར་དུ་འཇུག་པའི་ལེའུ།

༡། །ཁྱ་གར་སྐད་དུ། ཏུར་ཏུ་ཕྱི་ལ་སྒྱུ་མི་ཤར་ཀླུ། བོད་སྐད་དུ། ཁྱད་
ཀྱི་ཁྱལ་པོ་དཔལ་²བདེ་མཆོག་³ཉུང་དུ་ཞེས་བྲ་བ།

བཅོམ་ལྷན་འདས་དཔལ་⁴དྲི་རྩེ་སེམས་དཔའ་ལ་ཕྱག་འཆོལ་ལོ། །

དེ་ནས་གསང་བ་བཤད་པར་བྲ། །

མདོར་བརྒྱས་པ་སྟེ་ཁྱས་པར་མིན། །

དཔལ་ཉེ་རུ་ཀ་ཡང་དག་སྟོར། །

འདོད་པའི་དོན་ཀྱན་སྐྱབ་བྱེད་ཡིན། ། །

༢། །ཁྱ་གར་སྐད་དུ། བྱེའ་མི་ཤར་པ་སྒྲིག་ཀླུ། བོད་སྐད་དུ། དཔལ་འཁོར་ལོ་
སྟོམ་པའི་དཀའ་འགྲེལ་ཞེས་བྲ་བ།

དཔལ་འཁོར་ལོ་སྟོམ་པ་ལ་ཕྱག་འཆོལ་ལོ། །

འདོད་ལྟ་བུ་འཇུག་བདེ་བྱེད་ཞེ་སྒྲུ་ལ་གདུག་མི་གསོ་འདོད་ཆགས་

མཆོར་མི་རོལ།

རབ་དུ་མོངས་པའི་བྲ་བར་མི་གནས་སེར་སྒྲུ་ལེ་མེའི་དགའི་སྟོབས་ནི་མེད་པར་བྱེད།

1. སྐབར་སྒྲ། ཏུར་ཏུ་.....སྐབར་པེ། སུམ་ར་རྩེ།

2. 'དཔལ་'སྒྲར་ཐང་པར་མའི་ནང་མེད།

3. བོད་འགྱུར་འགྲེལ་པའི་མཆོན་བྱང་དུ་'དཔལ་འཁོར་ལོ་སྟོམ་པ་'ཞེས་གསལ།

4. 'དཔལ་'སྒྲ་ས་དང་སྒྲར་པར་གཉིས་ཀྱི་ནང་མེད།

5. བོད་འགྱུར་ནང་'མེའི་དགའི་'ཞེས་སྒྲ་ཡང་འདིར་ཆོག་རྒྱ་སྟོབས་ཕྱིར་དེ་རྒྱར་བཞག་པའོ།

བདག་མེད་ཐུར་གྱུར་པའི་¹སྒྲིན་པ་ནམ་སྤངས་སེམས་ཉིད་ཙམ་དུ་དགའ་བས་
རྩལ་པའི་²༥

ཞལ་བཞི་སྒྲིན་པར་མངོད་པའི་དཔལ་ལྡན་ཏེ་རུ་ཀ་ཡི་སྐྱུ་ཡིས་འགྲོ་བ་སྤངས་³༥

ལུས་དང་ཡིད་ལས་བྱུང་བ་ཡི། 1

སྒྲི་སྐྱམ་མངོ་སོགས་ཉིན་མོངས་ནི། 1

ཐུང་འདི་ལ་ནི་སྒྲིར་རྒྱས་པའི། 1

དད་དང་རིགས་ལྡན་དག་ལ་ཟད། 1

ཐུང་ནི་ཕུལ་བྱུང་རིན་པོ་ཆེའི། 1

ཕུག་པོ་གང་གིས་ཆད་གཞལ་རྒྱས། 1

ཐུ་མཆོ་ཆུ་ཡི་ཐིགས་པ་ནི། 1

གང་གིས་བགྱང་བར་མི་རྒྱས་སོ། 1

ནོར་སྒྲིན་ཉིད་ཀྱི་བྱིམ་འདི་ཡིས། 1

བྱིམ་གྱི་ནོར་ནི་བཙེ་མི་རྒྱས། 1

ཐུང་འདི་དེ་རྗེ་འཆང་བ་ཡིས། 1

ཐུགས་ཉིད་ཀྱིས་ནི་རབ་དུ་བརྟན། 1

དེ་ཕྱིར་སྒྲོ་དམན་བདག་ལ་ནི། 1

སྒྲ་མ་དག་གིས་རབ་དུ་བྱིན། 1

1. ཐུར་གྱུར་པ་ཡི་ ཤེ། ཅོ། གསེར།

2. རྩལ་པ་ཡི་ ཤེ། ཅོ། གསེར།

3. སྐྱུ་ཡི་འགྲོ་བ་འདི་དག་ཀྱན་ནས་སྤངས། ཤེ། གསེར།

ཉེ་བར་བཞག་¹ནས་རྟེན་གྱིར་རྟེ། |
 ཐལ་ཕྱང་ལ་ཡང་གཏེར་རྟེན་བཞིན། |
 གལ་རྟེ་ཤེས་བཞིན་མེད་པ་ཡིས། |
 བརྟེན་ངས་པ་ཡི་མཚོན་བཟུང་ནས་²། |
 རྒྱན་མ་ཉིད་ཀྱིས་ཕྱོགས་འགྱུར་པས། |
 དེ་སྤྱིར་བདག་གིས་རྣམ་པར་དབྱེ། |
³སྒྲི་ཡི་ཆད་པས་དམ་བཟུང་⁴ཡང་། |
 ཆོག་དོན་བཟུང་བ་⁵ཤིན་ཏུ་དཀའ། |
 གདམས་ངག་མེད་པར་རྒྱད་ལས་ནི། |
 རྒྱངས་ནས་ཁས་འདོན་བྱམ་མེ་བཞིན། |

གང་གི་སྤྱིར་ཐམས་ཅད་དུ་དགོས་པ་མ་མཐོང་ན་འཇུག་པར་མི་འགྱུར་བར་སྒྲུང་རྟེ།
 དེ་བཞིན་དུ་ཡང་།

བརྟེན་བཅོས་དག་ནི་ཐམས་ཅད་དང་། |
 ཡང་ན་ལས་ནི་འགའ་ཞིག་ལ། |
 རི་སྤྱིད་དགོས་པ་མ་བརྟེན་པར། |
 དེ་སྤྱིད་འཇུག་པར་རིགས་མ་ཡིན། |ཞེས་གསུངས་སོ། |

-
1. ཉེ་བར་གཞག་ བེ།
 2. རྟེན་ངས་པ་ཡིས་མཚོན་གཟུང་ནས། བེ། གསེར།
 3. ཆོག་ཀླང་འདི་ཡན་ནས་ཤོག་གངས་བརྒྱ་དང་བཞི་བརྒྱའི་དབུས་སུ་འཁོད་པ་ཨཐ་ཞེས་པའི་བར་གྱི་
ཆོག་རྣམས་ཀྱི་ལེགས་སྤྱར་མ་དཔེ་རྩ་མེད་སོང་བས་བོད་འགྱུར་ལ་བརྟེན་ནས་བརྒྱུར་གསོ་བྱས།
 4. སྒྲི་ཡི་ཆད་པས་དམ་གཟུང་ཡང་། གསེར། སྒྲི་ཡི་ཆད་པས་དམ་གཟུང་ཡང་། བེ།
 5. གཟུང་ བེ།

གང་གི་ཕྱིར་སློང་དམན་པ་ཡང་དགོས་པ་མ་བསྟན་ན་ཐབས་ལ་འཇུག་པར་མི་འགྱུར་ཏེ།
 “དམན་པ་ཡང་དགོས་པ་མ་བསྟན་ན་འཇུག་པར་མི་འགྱུར་རོ” ཞེས་གསུངས་སོ།
 དེ་ལ་དཔལ་འཁོར་ལོ་བདེ་མཆོག་དོན་དུ་གཉེར་བ་ནམས་འཇུག་པའི་ཡན་ལག་དུ་
 འཆད་པ་པོ་ནམས་ཀྱིས་དེ་ཡང་དགོས་པ་སྟོན་ཏེ། དེ་ཡང་གསུངས་པ་།

མདོ་དོན་འཆད་པར་འདོད་པ་ཡིས་²། །

དགོས་པ་བསྟུས་པའི་དོན་བཅས་དང་། །

ཆོག་དོན་བཅས་དང་མཆོམས་སྤྱར་བཅས་།

བཀལ་ལན་བཅས་ལ་བསྟན་པར་བྱ། །

དེ་ཡང་རྫོད་པར་བྱེད་པ་ལ་སོགས་པ་སྟོན་པ་སྟོན་དུ་འགྲོ་བས་ལེགས་པར་བཤད་པ་
 ཡིན་ནོ། །འོན་ཀྱང་དེ་ནས་དེའི་ཕྱིར་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པའི་ཆོག་བཅོམ་ལྷན་
 འདས་ཀྱིས་གསུངས་ཏེ། དེ་ལ་འདིར་རེ་ཞིག་ཆོག་དོན་ནི་གཉེས་སུ་འཆད་དེ། དེ་
 ཡང་བསྟན་པར་བྱ་སྟེ། “བསྟུས་པའི་དོན་དང་ཕྱོགས་ལས་མདོ།” ཞེས་པ་ལ་སོགས་
 པ་སྟེ་སྤྱབ་པའི་ཐབས་ལས་རྒྱས་པར་བཤད་པར་བྱའོ། །ཆོག་གི་དོན་ལ་སོགས་པ་
 རིམ་པས་⁴སྟོན་པ་དང་འཆད་པར་འགྱུར་རོ། །ཞལ་བཞི་པ་ལ་སོགས་པའི་སྐུ་དོ་རྩེ་
 འཆང་ཆེན་པོ་ནི་སྟོན་པ་པོ་སྟེ། དེ་ཡང་དེ་ཉིད་དངོས་སུ་སྤྱལ་པའི་སྤྱར་གནས་པའོ།

1. Toh. 4061 སེམས་ཙམ། “ཞི” རྣམ་བཤད་རིགས་པ། གོག་གྲངས་༡༠བཟ།

2. འདོད་པ་ཡིན་ རྟེན། ཅི། གསེར།

3. ཆོག་གི་དོན་ བེ།

4. རིམ་པར་ རྟེན། ཅི།

རྒྱུད་འདི་ནི་ཐོག་མ་མེད་པའི་དུས་ནས་བརྟན་པར་བྱ་བ་ཉིད་དུ་གནས་ཏེ། སེམས་
 ཅན་ནམས་ཀྱི་བསོད་ནམས་མ་ཡིན་པས་ཁ་ཅིག་ཏུ་ནི་ལུ་བ། ལ་ལར་ནི་བསོད་ནམས་
 ཀྱི་དབང་གིས་དར་རོ། །དེ་ཡང་བརྟན་བྱ་དང་སྟོན་པ་པོ་ལ་སོགས་པ་འདི་སྐུ་མ་ལྟ་བུ་
 རྟེ། དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་མཛད་པ་ནི་བསམ་གྱིས་མི་བྲལ་བོ། །འདིའི་ཕྱིར་བཙོམ་
 རྟན་འདས་དོ་རྗེ་ཡག་མོ་ནི་ལུ་བ་པོ་འོ། །ཕུག་ན་དོ་རྗེ་ནི་རྒྱུད་པ་པོ་འོ། རྟེ་ཡང་བྱུན་
 མོང་དུ་བརྟན་པ་གཏད་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །ཡང་ན་ཞལ་བཞི་པ་ལ་སོགས་པའི་སྐུ་
 སྟོན་པ་པོ་དང་བརྟན་པར་བྱ་བ་དང་། སྟོན་པ་པོ་ལ་སོགས་པའི་དོན་མ་ལུས་པ་རྒྱུད་
 ཀྱིས་སྟོན་པར་བྱལ་བ་རྟེ། བདེ་བར་གཤེགས་པས་གསུངས་པ་ཡིན་ཏེ། རྒྱུད་འབྲས་
 བུ་ལ་སོགས་པ་དང་བདེ་བ་དང་སྐྱུག་བསྐྱལ་ལ་སོགས་པ་དང་འདོད་ཆགས་དང་ཞེ་
 རྐང་ལ་སོགས་པ་དང་ལེགས་པར་སྦྱད་པ་དང་ཉེས་པར་སྦྱད་པ་ལ་སོགས་པ་བཞིན་དུ་
 བྱས་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །འདིར་ཨྲ། “དཔའ་པོ་བྱེ་བ་ཉིད་དང་ཡང་། །སངས་རྒྱས་བྱེ་
 བས་ལེགས་པར་བཤད།” །ཅེས་གསུངས་སོ། །

གཞན་ཡང་ཨྲ།

འདས་པའི་སངས་རྒྱས་ནམས་ཀྱིས་གསུངས། །

མ་འོངས་ནམས་ཀྱང་གསུངས་པར་འགྱུར། །

ད་ལྟར་བྱུང་བའི་རྗེ་གས་སངས་རྒྱས། །

ཡང་དང་ཡང་དུ་གསུངས་པ་⁴གང་། །

1. བརྟན་པ་པོ་ བེ།

2. Toh. 368 རྟེ། བཀའ། རྒྱུད། བདེ་མཚོག་ ལེའུ་༤༩ སྟོག་ ༡༢།

3. Toh. 360 རྟེ། བཀའ། རྒྱུད། མཚན་བརྗོད། སྟོག་ ༡༣-༡༩།

4. གསུང་པ་ བེ། གསེར།

ཀུད་ཆེན་སྐུ་འཕུལ་དུ་བ་ལས། 1

གང་ཡང་འདིར་ནི་སྐུར་སྒངས་པ། 1

ཞེས་བྱ་བར་གསུངས་སོ། །འདིར་གསུངས་པ་ནི་སྟོན་པ་ཉིད་དེ་གཞུང་དང་དོན་ཐུན་
མོང་དུ་ཆོག་དང་ཡི་གེ་ལ་སོགས་པས་སངས་ཀྱིས་ཀྱིས་དུས་ངེས་པ་མེད་པར་སྟོན་
བཞིན་པའི་དཔལ་འཁོར་ལོ་སྒྲིམ་པའི་ཀུད་ལ་འདུག་པར་བྱེད་དེ། དེ་ཉིད་སྟོན་པར་
འདོད་པས་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་དེ་ནས་དེ་ཕྱིར་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ།
བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་དཔལ་བདེ་མཆོག་འཁོར་ལོ་ལ་ལྷག་པར་མོས་པ་ནམས་ཀྱི་
དོན་དུ་གངས་འབུམ་པའི་ཙ་བའི་ཀུད་ལས་སྐུང་སྟེ། མདོར་བསྟུས་པ་ལ་དགའ་བའི་
དོན་དུ་སྟོན་ཏོ། །དོན་ཤུགས་མོ་གསོལ་བ་འདེབས་པ་ཡིན་ལ། བཅོམ་ལྡན་འདས་
ཀྱིས་དེ་ནས་དེ་ཕྱིར་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པས་ལན་གསུངས་སོ། །

དེ་ནས་ཞེས་བྱ་བའི་སྐུ་ནི་རྗེས་ཐོགས་ཏེ། ཡམས་ཞེས་སོགས་ཕྱིས་པ་ལ་ལྟུ་པའོ། །
ཙ་བའི་ཀུད་བསྟན་པའི་རྗེས་ཐོགས་སོ། །ཙ་བའི་ཀུད་ཉིད་གཞིར་བྱ་³སྟེ་གསང་བ་
བཤད་པར་བྱ་ཞེས་སྐུར་རོ། །དེ་ལ་དཔལ་འཁོར་ལོ་སྒྲིམ་པའི་ཀུད་ཀྱི་དོན་གཞན་དུ་
བྱ་བར་མི་རྒྱས་ཏེ་འདིར་དེ་ཉིད་ཀྱི་དོན་ཡོངས་སུ་རྗོགས་པའི་ཕྱིར་རོ། །བྱེ་བྲག་ནི་
གཞུང་བསྟུས་པ་ཙམ་མོ། །ཡང་ན་གང་གི་ཕྱིར་དོན་ཤུགས་མོས་བདག་ལ་གསོལ་བ་
བཏབ་པའི་ཀུའི་ཕྱིར་གསང་བ་བཤད་པར་བྱ་ཞེས་སྐུར་རོ། །ཀུད་ལས་གསུངས་པ་

1. ཞེས་བྱ་བ་ བཤ།

2. སྟོན་ནོ་ བཤ། གསེར།

3. བཞིར་བྱ་ སྟེ། ཙ་

མཉན་པར་གྱིས་། །ཞེས་བྱ་བའི་ཆོག་གིས་གསོལ་བ་བཏབ་པར་གྱུ་བའོ། །གང་གི་
 བྱིར་གསོལ་བ་མ་བཏབ་པར་ཆོས་བཤད་པ་ནི་ལེགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། སར་བསྐྱུལ་ནས་
 ཆོས་བཤད་ན་མི་གྱས་པ་སྤྱད་པའི་བྱིར་། །གསོལ་བ་འདེབས་པ་པོ་ལྷ་མོ་ཡིན་པར་ངེ་
 ལྷར་ངེས་ཤིང་། །གང་གི་བྱིར་བླ་མའི་བརྒྱུད་པ་ལ་རྩ་བའི་རྒྱུད་དེ་ཉིད་ཀྱིས་གསོལ་བ་
 འདེབས་པ་ཡིན་ནོ། །དེའི་བྱིར་འདིར་ཡང་དེ་ཉིད་གསོལ་བ་འདེབས་པ་པོར་གོ་བར་
 བྱའོ། །

ཁ་ཅིག་ནི་བཙུམ་ལྷན་འདས་ལྷ་བ་པོ་ཡིན་པས་བཙུམ་ལྷན་འདས་མ་ནི་སྟོན་པ་པོ་
 ཡིན་ཟེར་ཏེ། དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་དགོངས་པ་བསམ་གྱིས་མི་བྱུང་བའི་བྱིར་རོ། །
 རྟེན་ཞེས་བྱ་བའི་དྲུས་དང་ཡུལ་དང་རང་བཞིན་ཏེ་སྐྱེ་འགྲོ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྤྱོད་ཡུལ་
 མ་ཡིན་པས་སོ། །དྲུས་ནི་འདས་པ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། དེ་ཡང་ཉག་པའི་དྲུས་ནི་བྱུང་
 པར་དུ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པས་བཞིན་དོ། །ཡུལ་ནི་ཡུལ་ཕྱོགས་སོ། །དེ་ནི་གསང་
 བ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པའི་ཆོག་གིས་བཞིན་དོ། །རང་བཞིན་ནི་ལྷན་ཅིག་སྐྱེས་པའི་
 རོ་བོ་སྟེ། དེ་ཡང་དཔལ་ཉེར་ཀྱང་བསྟོམ་པའི་གནས་སུ་དམ་ཆོག་གི་སྤྱོད་པ་དང་།
 གསོལ་བ་གདབ་པ་དང་མཆོད་པ་ལ་སོགས་པའི་མཆོན་ཉིད་དོ། །ཡང་ན་ནོ་རྩེ་འཆང་
 ཆེན་པོ་ལ་གསང་བའི་སྐྱས་བཞིན་དེ་། དེ་སྐྱེ་འགྲོ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྤྱོད་ཡུལ་མ་ཡིན་
 པའི་རང་བཞིན་ཉིད་ཀྱི་བྱིར་རོ། །འདིའི་བྱིར་བྱུང་མོང་དུ་སྐྱེ་བོ་ནམས་ཀྱིས་རྟོག་པ་

-
1. མཉན་པར་གྱིས་ བེ།
 2. ངེ་ལྷར་ངེས་ཞེས་ བེ། གསེར།
 3. ལྷ་བཞིན་དེ་ བེ། གསེར།

དང་བྲལ་བས་དབེན་པ་ཉིད་དེ། དེ་ལས་བྱུང་བ་ནི་གསང་བ་འོ། །དེ་ཡང་དཔལ་པོ་ཉི་
 བྱ་ཙུ་བཞི་དཔལ་པོ་སྐྱུ་ཙུ་བདུན་དང་ཡང་དག་པར་ལྷན་པའི་དཔལ་ཉེར་ཀྱ་
 བསྐྱེད་པའི་གནས་དང་དམ་ཆོག་གི་སྦྱོད་པ་¹ ལ་སོགས་པ་ཇི་སྤྱད་པ་ནི་ཐུད་ཀྱིས་སྟོན་
 ཏེ་འདི་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་དེ་ཉིད་བརྗོད་བྱའོ། །དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་ཡང་དཔལ་འཁོར་ལོ་སྒྲིམ་
 པའི་དོན་དང་སྐྱབས་པར་བྱ་ཞེས་བྱའོ། །སྐྱེ་ཆོད་བྱེད་དུ་བྱས་ཏེ་སྐྱེ་ཆོད་བྱེད་དུ་
 བྱས་པ་ཉིད་ཀྱིས་བརྗོད་བྱ་གསལ་བར་བྱས་པ་ཉིད་དོ། །དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་ཆོད་པར་
 བྱེད་པ་དང་བརྗོད་པར་བྱ་བ་གཉིས་བརྗོད་བྱ་ཆོད་བྱེད་ཀྱི་མཆན་ཉིད་ཀྱི་འབྲེལ་བ་འོ། །
 འདིའི་ཕྱིར་ཆོད་བྱེད་ཀྱི་དགོས་པ་ནི་ཕྱིན་ཅི་མ་ལོག་པར་བརྗོད་པར་བྱ་བ་སྟོན་པ་འོ། །
 བརྗོད་པར་བྱ་བའི་དགོས་པ་ནི་འདི་ཉིད་ཡོངས་སུ་ཤེས་པར་བྱས་ནས་མངོན་དུ་བྱེད་
 པ་འོ། །དེའི་ཡང་དགོས་པ་ནི་ཆོས་སྟོན་པ་ལ་སོགས་པས་འགོ་བའི་དོན་བྱེད་པ་སྟེ།
 མངོན་དུ་མ་བྱས་ན་²གཞན་ལ་སྟོན་པར་མི་རུས་སོ། །ཐབས་དང་ཐབས་ལས་བྱུང་
 བའི་མཆན་ཉིད་ཀྱི་འབྲེལ་བ་སྟེ། ཐབས་ནི་འདིར་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་འཁོར་ལོ་ལ་
 སོགས་པའི་མཆན་ཉིད་དོ། །དེ་ཡང་ཇི་སྟར་འདོད་པ་དང་རྗེས་སུ་མཐུན་པར་ཡུལ་
 ལ་ཉེ་བར་ལོངས་སྦྱོད་པས་གོམས་བཞིན་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །ཐབས་ལས་བྱུང་བ་ནི་
 མི་གནས་པའི་ཐུང་ན་ལས་འདས་པ་འོ། །

1. དམ་ཆོག་སྦྱོད་པ་ བེ།

2. བརྗོད་པར་བྱའོ་ བེ། གསེར།

3. ཞེ་བྱའོ་ བེ། གསེར།

4. རྟ་མངོན་དུ་མ་བྱས་ན་ ཐུ་དཔེ།

དེ་ལྟར་ཡང་¹།

འབྲེལ་བ་དང་ནི་རྗེས་མཐུན་ཐབས། |

སྦྲེས་བུའི་དོན་ནི་རྫོད་བྱེད་པ་²། |

ངག་ནི་ཡོངས་སུ་བརྟགས་³པར་རིགས། |

དེ་ལས་གཞན་ནི་བརྟག་བྱ་⁴མིན། |

བདག་གིས་རེ་ཞིག་བརྩམས་པའི་དོན་དུ་གསོལ་བ་བཏབ་པ། ཅི་ཤེས་སྙམ་པའི་དོན་རྗེ་
ཕག་མའི་དོགས་པ་བསུ་བའི་དོན་དུ་འདི་ཉིད་བཤད་ཅེ་ན་གསུངས་པ། མདོར་བརྩམས་
པ་སྟེ་ཞེས་བྱ་སྟེ་ཀུན་རྣུད་པས་ན། མདོར་བརྩམས་པ་ནི་ཉུང་བར་གྱུར་པའོ། [དེ་ལ་
དོན་ནམ་གཞུང་གང་ཡིན་སྙམ་པ་ལ་རྒྱས་པར་མིན་ཞེས་བྱ་སྟེ། མིན་ནི་ངས་པར་
གཟུང་བ་སྟེ། དོན་བརྩམས་པ་ཁོ་ན་མ་ཡིན་ནོ། [དོན་ལ་དོགས་པ་བསུ་བ་པའི་དོན་དུ་
སྦྲེས་བུའི་ཡིན་གྱི་དོན་ནི་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། [གཞུང་བརྩམས་པ་ཉིད་དུ་
མདོན་པར་འདོད་པ་ཁོ་ནར་དགོངས་པའོ། [དོན་བརྩམས་པར་མ་ཡིན་པར་རྗེ་ལྟར་ཤེས་
ན་རྒྱས་པར་ཞེས་བྱ་བ་གསུངས་ཏེ། གང་གི་ཕྱིར་དོན་མང་པོ་ཉིད་ནི་རྒྱས་པའོ། [གལ་
ཏེ་འདི་ལ་དོན་བརྩམས་པ་ཡིན་པ་དེ་ལྟ་ན་ནི་མདོན་པར་འདོད་པའི་དོན་ནི་མི་འགྲུབ་
པའི་ཕྱིར་དང་། ནམ་མཁའ་དང་མཉམ་པའི་རྒྱད་ལས་མ་བརྟན་པར་འགྱུར་རོ། |

1. Toh. 4210 ཚད་མ་ནམ་འགྲེལ། རང་དོན་རྗེས་དཔག་གི་ལུ་ རྫོག ༡༡༥།

2. བརྫོད་བྱེད་པ་ ཅོ།

3. བརྟག་ གསེར།

4. རྟག་བྱ་ བེ། གསེར།

5. རྗེའི་སྦྲེས་ནི་ བེ། གསེར།

6. དོགས་པ་གསལ་ བེ། གསེར།

ནམ་མཁའ་དང་མཉམ་པའི་གཞུང་ལས་མདོར་བསྡུས་ནས། དཔལ་འཁོར་ལོ་སྡེ་མ་
པའི་ཐུད་ལ་ལྷག་པར་མོས་གིང་འདོད་པའི་གདུལ་བྱའི་མོས་པའི་དབང་གིས་སྟོན་
པས་གསུངས་པའོ། །དེ་ལྷར་གང་གི་ཕྱིར་འདོད་ཆགས་ལ་སོགས་པའི་གདུལ་བྱ་ལ་
འདོད་ཆགས་ལ་སོགས་པ་དེ་ཉིད་སྟོན་ཏེ། དེ་ལྷར་ཡང་།

ཇི་ལྷར་མེ་ཡིས་ཆོག་པ་ལ།	།
ཡང་ན་མེ་ཡིས་གདུང་བར་བྱ།	།
དེ་བཞིན་འདོད་ཆགས་མེས་ཆོག་ལ།	།
འདོད་ཆགས་མེ་ཡིས་གདུང་བར་བྱ།	།ཞེས་གསུངས་སོ། །
གཞན་ཡང་།	འདོད་ཆགས་བྱལ་བ་ལྷ་བྱའི་སྤྲིག་
	།
	ཁམས་གསུམ་ན་ནི་གཞན་མེད་དེ།
	།
	དེ་ཕྱིར་འདོད་ཆགས་དང་བྱལ་བ།
	།
	ནམ་ཡང་ཁྱོད་ཀྱིས་མི་བྱ་འོ།
	།ཞེས་བྱའོ། །

གསང་བའི་ཆོག་གི་དོན་²གང་བསྟན་པ་དེ་ཉིད་ཅུང་ཟད་ཀྱས་པར་འཆད་དེ་དེ་རུ་ག་
དཔལ་ཞེས་བྱ་བ་གསུངས་སོ། །ཀྱན་རྫོབ་ཏུ་ཞལ་དང་ཕྱག་ལ་སོགས་པའི་གཟུགས་
སུ་སྦྱོར་བ་ནི་ཡང་དག་པར་སྦྱོར་བའོ། །སྒྲུ་ནི་³ལས་ཀྱི་ཀྱེན་དུ་བྱས་པའོ། །དཔལ་ནི་
གཉིས་སུ་མེད་པའི་ཡེ་ཤེས་སུ་མངོན་པར་འཛིན་ནོ། །དེ་ནི་ཐུ་ལ་སོགས་པ་སྟོང་པ་

1. ཀྱེན་རྫོག་པ་ ༡ ལེའུ་ ༩ གྲླེ་ ༤༧།

2. ཆོག་གིས་དོན་ བཤེས་པ།

3. སྒྲུ་ནི་ བཤེས་པ། ཅོ། གཏན་ནི་ སྤེ། གོང་དུ་ཐུ་དཔེ་ལྷར་བཞག་ཡོད།

ཉིད་དོ། །རུ་ནི་སྒྲིན་པ་དང་བྲལ་བའོ། །ཀ་ནི་གང་དུ་ཡང་མི་གནས་པ་སྟེ། དཔལ་
 ཉེ་རུ་ཀ་ཞེས་བྱ་བར་གནས་སོ། །

དེ་ཡང་།

སྒྲི་ནི་གཉིས་མེད་ཡེ་ཤེས་ཏེ།	།
ཉེ་ནི་རྒྱ་སོགས་སྟོང་པ་ཉིད།	།
རུ་ནི་ཆོགས་དང་བྲལ་བ་སྟེ།	།
ཀ་ནི་གང་དུ་ཡང་མི་གནས་པའོ།	།ཞེས་གསུངས་སོ། །

གཞན་ཡང་།

སྒྲི་ནི་གཉིས་མེད་ཡེ་ཤེས་ཏེ།	།
ཉེ་ཡིས་རྒྱ་ནི་ ² སྒྲུངས་པ་སྟེ།	།
རུ་ནི་གཟུགས་ལས་ངེས་པར་གྲོལ།	།
ཀ་ཡིས་བྱེད་པ་ལས་གྲོལ་བའོ།	།

བཟླ་བར་བྱ་བས་ན་གཟུགས་སོ། །བྱེད་པ་ནི་དབང་པོ་ལ་སོགས་པའོ། །

ཡང་ན།

ཉེས་ནི་ ³ བདུད་ལས་རྒྱལ་བ་སྟེ།	།
རུས་ནི་ཕྱོགས་སྒོ་ཐམས་ཅད་འགེངས།	།
ཀ་ནི་རྟོག་པའི་བྲ་ལས་གྲོལ།	།
དེས་ནི་ཉེ་རུ་ཀ་ཞེས་བརྗོད།	།

1. Toh. 375 རྣལ་འབྱོར་ཀུན་སྟོད། ལུ་དགུ་པ། ཆོགས་བཅད་བདུན་པ།

2. ཉེ་ཡིས་རྒྱ་དེ་ བེ། གསེར།

3. ཉེ་ནི་ བེ།

གསང་བ་མཆོག་གི་དགེས་པ་ན། 1

ཐམས་ཅད་བདག་ཉིད་རྟག་ཏུ་བཞུགས། ༢།

སྐྱབ་པ་པོ་ཐུན་མོང་དང་ཐུན་མོང་མ་ཡིན་པ་གང་ཞེ་ན། སྐྱ་མ་ལས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་
སོགས་པ་གསུངས་སོ། །གཙོ་བོ་ལས་ཀྱང་གཙོ་བོ་སྟེ། ཉེ་རུ་ཀ་དཔལ་སྦྱོར་བ་ལ་
འཇུག་པའི་ཡན་ལག་ཏུ་གང་གི་ཕྱིར་གཙོ་བོ་ཉིད་ཏུ་བཞུན་པའོ། །གཙོ་བོ་མ་ཡིན་ན་
དེ་ལས་ལྷག་པར་མོས་པ་ཡང་གཙོ་བོ་ཉིད་མ་ཡིན་པར་གྲུབ་པས་མི་འཇུག་སྟེ། དེ་
ནམས་དེ་ལ་གཙོ་བོ་མ་ཡིན་པའི་སྒོ་མེད་དོ། །གཙོ་བོ་ཡང་དེ་ལས་ལྷག་པར་མོས་པ་
ནམས་ལ་གཙོ་བོར་བཞུན་པས་འཇུག་སྟེ། འདི་ཉིད་ཆོས་ཉིད་དེ་ཐུན་མོང་མ་ཡིན་
པར་¹འདོད་པས་སོ། །གང་གི་ཕྱིར་སྐྱ་མར་གྱུར་པའི་རྩ་གཞན་ཡོད་ཀྱང་དེ་ལས་ཀྱང་
སྐྱ་མར་གྱུར་པའི་རྩ་དཔལ་ཉེ་རུ་ཀ་ཞེས་དགོངས་པའོ། །

ཡང་ན་ཕུལ་དུ་བྱུང་བའི་བསོད་ནམས་དང་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཆོགས་ལ་ཤིན་ཏུ་སྦྱོར་
བས་ཉན་ཐོས་ལ་སོགས་པ་ལས་སྐྱ་མ་བཅོམ་ཞུན་འདས་ཏེ། འདིས་ནི་རང་གི་དོན་
ཕུན་སུམ་ཆོགས་པ་དང་ཐབས་ཕུན་སུམ་ཆོགས་པ་བཞུན་ཏོ། །སྐྱ་མ་ལས་སྐྱ་མ་ཡིན་
པ་ཇི་ལྟར་ཡིན་ཞེ་ན། མཁའ་འགྲོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །ཁྱེ་
དམིགས་པ་མེད་པའི་ཡེ་ཤེས་བདག་ཉིད་ཀྱིས་མངོན་དུ་བྱེད་རྒྱས་པ་འདིའི་ངང་ཚུལ་
ལོ་ཞེས་པ་ཁྱེ་ཡིན་སྟེ། དེས་པའི་ཆོག་གིས་ཀར་²བྱས་པས་ཁྱེ་གི་ཁྱོའོ། །གང་གི་ཕྱིར་

1. མ་ཡིན་པ་ བཤེས་པ།

2. ཀློང་ ཅོ།

ཤིན་ཅི་ནམ་མཁའ་ལ་འགྲོ་བ་སྟེ། འདིར་སྐད་ཀྱི་བྱིངས་ལས་ནམ་པར་བརྟག་པ་¹ནམ་
 མཁའ་ལ་འགྲོ་བ་ནི་བྱ་སྟེ་དེ་དང་འབྲ་བས་ཐབས་དང་ལྡན་པ་ནི་ནམ་མཁའ་ལོ། །དེ་
 ཡང་འདིར་དམིགས་པ་མེད་པའི་ལམ་གྱི་གསོག་པས་འགྲོ་བའོ། །དམིགས་པ་མེད་
 པའི་ཡེ་ཤེས་ནལ་འབྱོར་པས་ཐབས་དང་མངོན་དུ་བྱེད་པའོ། །དེ་ནམས་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་
 ཅི་ནམ་མཁའ་སྟེ། དེ་ལས་འགྲོ་བ་ནི་གནས་ཏེ་འདིར་འགྲོ་བ་ནི་གནས་པའི་དོན་ཏོ། །
 དེ་ཡང་ངལ་སོས་ཏེ་མི་དམིགས་པའི་ཡེ་ཤེས་མངོན་དུ་བྱས་ནས་གཞན་ཀྱན་དུ་སྦྱོད་པ་
 འགགས་ཏེ། འདི་ནི་གཞན་དུ་སྦྱོད་པ་མེད་པའོ། །དེའི་ཡེ་ཤེས་ནི་ཤེས་རབ་སྟེ་ཤེས་
 རབ་ཀྱི་རང་བཞིན་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་མཁའ་འགྲོ་མ་ནི་སྟོང་པ་ཉིད་དོ། །དེ་བཞིན་ཐབས་ཏེ་
 གང་གི་ཕྱིར་དུ་བས་ཉ་ལ་སོགས་པ་སྟོང་པར་གྱུ་བ་པོ། །གང་གི་ཕྱིར་ཐབས་ཀྱིས་ཉོན་
 མོངས་པའི་ཉ་ལ་སོགས་པ་ཉིད་བསྐྱམས་པས་ཅི་ཡང་མི་བྱེད་དེ། དེ་ཉིད་ཀྱི་སྟོང་པ་
 ཅི་བདེ་བ་སྟེ་ཁ་ན་མ་བོ་བ་ཕྱིར་བསལ་ནས་སྟོང་པར་བྱེད་པས་མཁའ་འགྲོ་མའི་དུ་བ་
 སྟོང་མོ། “།ཤམ་ནི་བདེ་བའི་ཆོག་ཉིད་དེ། །ཤམ་ནི་བདེ་བ་བརྗོད་པ་བྱ།” །ཞེས་
 གསུངས་པའི་ཕྱིར་རོ། །གང་ཡང་འཇིག་རྟེན་པ་ནམས་ནི་ཤམ་གྱི་སྒྲ་ནི་ཀན་ལས་
 བྱུང་བར་འདོད་དོ། །ཡང་ན་མཁའ་འགྲོ་མ་དང་ལྷ་མ་ལ་སོགས་པ་ནམས་རང་ལས་
 སྐྱལ་ཞིང་²འཆང་བས་ན་བྱིངས་སོ། །འདིས་ནི་གཞན་གྱི་དོན་ལྷན་སྐྱུ་མ་ཆོགས་པ་དང་
 ཐབས་ལྷན་སྐྱུ་མ་ཆོགས་པའི་སྟོན་སྟེ་བྱེད་པར་དུ་བྱེད་དེ་བྱེད་པར་གསུམ་གྱིས་³བྱེད་

1. ནམ་པར་དག་པ་ སྟེ། ཙུ་

2. སྐྱལ་ཅིང་ བཤ། གསེར།

3. བྱེད་པར་གསུམ་གྱི་ བཤ། གསེར།

པར་དུ་བྱས་པའི་དཔལ་ཉེར་ཀྱི་ཡང་དག་པར་སྒྲིབ་བ་བཤད་པར་བྱ་ཞེས་སྒྲུབ་རོ། །
 འདིར་ནི་སྤྱི་མཐའ་ཅན་དང་ཉིའི་མཐའ་ཅན་གྱི་ཆོག་ཐམས་ཅད་དུ་བཤད་པར་
 བྱའོ། ། མཆོམས་སྒྲུབ་ནི་དགོངས་པ་སྟེ། ཐོས་པ་དང་བསམ་པ་ལ་སོགས་པ་ཡང་དང་
 ཡང་དུ་བྱེད་པའོ། ། ཁོ་ལ་བཞི་མེ་མཐུན་པའི་ཚྭ་གས་སུ་བྱས་ནས་ཆོལ་བའོ། ། ལན་ནི་
 བཞུ་བ་འཁྱོངས་སུ་སྤངས་པའོ། ། གོང་དུ་བཞུན་པ་གང་འོག་ནས་འབྱུང་བའི་
 གནས་སྐབས་སུ་རང་གི་ཆོས་དཔུང་ཅིང་གོ་བར་བྱའོ། ། འདི་ཐམས་ཅད་གང་དུ་
 གནས་ནས་བདག་གིས་བཤད་ཅེས་པ་ལ་གསང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ།
 གསང་བའི་སྒྲས་ནི་ཡེ་ཤེས་དང་བྱུགས་དང་གསུང་དང་སྒྲུབ་དང་། དུར་ཁྱོད་དུ་གྲགས་
 པའི་འཁོར་ལོ་ལྷ་ལ་གནས་པ་དཔའ་བོ་དང་བཅས་པ་དང་། དཔའ་བོ་མེད་པའི་ནལ་
 འབྱོར་མ་སུམ་ཅུ་ཅ་བདུན་བཟང་པོ་དེ་ལ་བཞེན་པས་གསང་བ་སྟེ་ནལ་འབྱོར་མ་
 རྣམས་ཀྱི་གནས་སུ་རུང་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། ། དེ་ཡང་གཞལ་ཡས་ཁང་པའོ། །
 འདིས་ཅི་ཞིག་བརྗོད་ཅེ་ན་མཆོག་ཅེས་གསུངས་ཏེ། མཆོག་ནི་མྱ་ངན་ལས་འདས་
 པ་སྟེ། འདི་ནི་གང་ཇི་སྟོན་པའི་འབྲས་བུ་འདོད་པས་ན་མཆོག་གོ། ། ཡང་ན་མཆོག་ནི་
 དག་སྟེ་རྒྱ་ཉོན་མོངས་པའོ། ། དེ་ཡང་མཆོག་ནི་སྤང་ཞིང་ཡོངས་སུ་སྤང་སྟེ་འཛོམས་
 པར་བྱེད་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་མཆོག་ཅེས་བྱའོ། ། དགྲེས་པ་ནི་འདིས་རོལ་པ་སྟེ་སྒྲུ་མ་

-
1. གལ་བ་ གཤམ་།
 2. བཞུན་པ་དང་ གཤམ་།
 3. རྣམས་ཀྱིས་ རྟེན་ ཅོ།
 4. རྟེན་དཔེ་དང་ཅི་ཞེས་པར་མའི་ནང་གང་མེད།

ལྷ་བྱར་སོ་སོར་སྒྲུང་ཞིང་གསལ་བཞིན་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །འདིའི་ཕྱོགས་གཅིག་ཡིན་
 པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་དགྲེས་གིང་རོལ་པ་དེ་མངོན་དུ་བྱེད་པ་ལ་ཡང་ཐམས་ཅད་ནས་མ་
 ཡིན་པའི་ཕྱིར་བདེ་བ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །ཐམས་ཅད་ནི་བདུན་པ་
 དང་གཡོ་བ་ལ་སོགས་པའི་བདག་ཉིད་གང་ཡིན་པ་དེ་ཐམས་ཅད་བདག་ཉིད་དེ་གཞལ་
 ཡས་ཁང་པའོ། །དེ་ལ་གནས་པ་ནི་དེ་ལས་གཞན་དུ་འགྲོ་བ་ཚྲོག་སྟེ་འགྲོ་བར་བྱ་བ་
 ལས་གཞན་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །དྲག་ཏུ་བྱེས་པ་ནི་འཁོར་བ་ཇི་སྲིད་ཀྱི་བར་རོ། ། ༡ །

མཁའ་འགྲོ་ཀྱན་དངོས་སེམས་དཔའ་ནི། །

དྲི་རྩེ་སེམས་དཔའ་བདེ་བའི་མཆོག་ །

འདི་ནི་རང་བྱུང་བཅོམ་ལྷན་དཔའ། །

མཁའ་འགྲོ་བྱ་བའི་སྒྲིམ་པ་ཡིན། ། ༡ །

གནས་ཕུན་སུམ་ཆོགས་པ་ཡོད་དུ་བྱིན་ཀྱང་གནས་ཕུན་སུམ་ཆོགས་པ་མེད་པར་
 འགྱུར་རོ་ཞེས་པ་ལ། མཁའ་འགྲོ་ཀྱན་དངོས་སེམས་དཔའ་ནི། །ཞེས་པ་ལ་སོགས་
 པ་གསུངས་ཏེ། མཁའ་འགྲོ་ཀྱན་ནི་མཁའ་འགྲོ་མ་དང་ལྷ་མ་ལ་སོགས་པ་སྟེ་དེ་ཡན་
 ལག་ཏུ་གྱུར་པའི་ལྷས་དྲན་པ་ཉི་བར་བཞག་པ་འལ་སོགས་པའི་རང་བཞིན་ཉིད་ཀྱི་
 ཕྱིར་དེའི་ཡན་ལག་དང་ཉིང་ལག་ཉིད་ཀྱི་བདག་ཉིད་ཆེན་པོའོ། །ཡང་ན་དབང་པོ་
 དང་བཅས་པར་སྒྲིམ་ན་ཆོག་ཆད་མ་ཉིད་དུ་འགྱུར་པའོ། །མཁའ་འགྲོ་ཀྱན་ཞེས་བྱ་བ་

1. ཉེ་བར་གཞག་པ། བཤ། གསེར།

2. ཀྱིས་ བཤ། གསེར།

ལ་སོགས་པས་འཁོར་བསྟན་ཏོ། །གཞན་གྱི་དོན་མི་བྱེད་པ་ནི་སྟོན་པ་པོ་བདག་ཉིད་
 ཆེ་བ་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་པ་ལ། སེམས་དཔའ་ཞེས་བྱ་བ་གསུངས་ཏེ། སེམས་ཅན་གྱི་
 དོན་བྱེད་པ་ལ་ཞུགས་པ་ཉིད་ཀྱི་སྤྱིར་སེམས་དཔའོ། །དེ་ལྟར་གྱི་དོན་ཡང་གང་གི་
 ཡིན་པར་ངེས་ཞེས་པ་ལ། རྗེ་སེམས་དཔའ་ཞེས་གསུངས་ཏེ་དབྱེར་མི་བྱེད་²པའི་
 བསམ་པ་སྟེ། མི་བྱེད་པ་ལ་ལྷག་པར་མོས། ཞེས་དགོངས་སོ། །དོན་དམ་པའི་ནམ་
 པར་ཉོག་པ་ཡང་དོན་རབ་ཏུ་བསྐྱབ་པའི་རྣམས་པ་མེད་དོ་ཞེས་པ་ལ། བདེ་བ་ཞེས་
 གསུངས་ཏེ། བདེ་བ་ནི་གཞན་ཏུ་བདེ་བ་སྟེ། སྟོང་པ་ཉིད་དོ། །དོན་དམ་པ་དང་དོན་
 དམ་པ་མ་ཡིན་པ་གཉིས་ལ་ཆགས་པ་དང་བྲལ་བའི་སྤྱིར་རོ། །འདི་ཡང་བྱ་བའི་བྱེད་
 པར་ཡིན་ནོ། །དངོས་པོ་མེད་པ་³ལ་ལྷག་པར་མོས་པ་ནི་མངོས་པ་མ་ཡིན་ཞེས་པ་ལ།
 མཆོག་ཅེས་གསུངས་ཏེ། གཞན་གྱི་དོན་ལ་དགའ་བས་ན་མཆོག་གོ། །འདི་ནི་བྱ་བའི་
 བྱེད་པར་ཡིན་ཏེ། མཆོག་གང་ཡིན་པ་⁴རྗེ་སེམས་དཔའ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། །
 གནས་ལ་སོགས་པ་ཡུན་སུ་མཆོགས་པའི་བདག་ཉིད་དཔལ་ཉེར་ཀྱང་ཡང་དག་པར་སྦྱར་
 བ་བཤད་པར་བྱ་ཞེས་སྦྱར་རོ། །གལ་ཏེ་དཔལ་ཉེར་ཀྱང་ཡང་དག་པར་སྦྱར་བ་བྱོད་
 གྱིས་དངོས་སུ་མངོན་དུ་བྱས་ན་དེ་རྗེ་ལྟར་བཤད་ཅེས་སྟོམ་པ་ལོ། །འདི་ནི་ཞེས་པ་

-
1. སེམས་དཔའ་ བཤ། གསེར།
 2. དབྱེར་མི་བྱེད་ ཅོ།
 3. མི་བྱེད་པ་ རྒྱ་དཔེ།
 4. འདི་ནི་བྱ་བའི་བྱེད་པར་ཡིན་པ་དེ་ རྟེན། ཅོ།
 5. མངོན་དུ་མ་བྱས་ན་ རྒྱ་དཔེ།
 6. ལྷན་པ་ལ་ ཅོ།

ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། རི་རི་འངས་པར་གཟུང་བའོ། །འདི་ནི་དཔལ་ཉེར་ཀྱི་ཉིད་
 ཡང་དག་པར་སྦྱར་བ་རང་ཉིད་ནི་བདག་ཡིན་པས་དཔལ་ཉེར་ཀྱི་ཡང་དག་པར་སྦྱར་
 བ་བཤད་ཅེས་བྱའོ། །དཔལ་ཉེར་ཀྱི་ཡང་དག་པར་སྦྱར་བའི་ངོ་བོ་ཉིད་མངོན་དུ་བྱས་
 རས་དེ་ཉིད་སྟོན་ནི་ཞེས་དགོངས་སོ། །དེ་ལྟར་ཡིན་ཡང་བྱིད་ཡོན་ཏན་གྱི་གནས་མ་
 ཡིན་ནི་ཞེས་པ་ལ། རང་བྱུང་ཞེས་གསུངས་ཏེ། སྟོབས་བརྩུ་དང་མི་འཇིགས་པ་ལ་
 སོགས་པ་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཡོན་ཏན་འབྱུང་བའི་ས་གནི་དེ་ཡིན་ནོ། །

དེ་གང་ཡིན་ཞེས་པ་ལ། བཙུམ་ལྡན་འདས་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ་²།

དབང་ཕྱུག་དང་ནི་གཟུགས་བཟང་དང་། །

དཔལ་དང་གྲགས་དང་ཡེ་ཤེས་དང་། །

བཙུན་འགྲུས་ཕུན་སུམ་ཆོགས་པ་སྟེ། །

དུག་པོ་འདི་ལ་ལྡན་ཞེས་བྱ། །

བཙུམ་པ་དང་ལྡན་པས་ན་བཙུམ་ལྡན་འདས་སོ། །བཙུམ་པ་དང་ལྡན་པ་ཉིད་ཇི་
 ལྟར་ཞེས་པ་ལ། དཔལ་ཞེས་གསུངས་ཏེ། ཉོན་མོངས་པའི་གཡུལ་ལས་རྒྱལ་བས་ན་
 དཔལ་འོ་འོ། །དེ་ལྟར་ཡང་། “ཉོན་མོངས་ལ་སོགས་བདུད་རྣམས་ནི། །བཞི་པོ་
 བཙུམ་པས་བཙུམ་ལྡན་ནོ།” ཉོན་མོངས་པ་དང་ཕྱང་པོ་དང་འཆི་བདག་དང་ལྟའི་
 བུའི་བདུད་རྣམས་བཙུམ་པའོ། །གཞན་ཡང་། “ཉོན་མོངས་ལ་སོགས་བདུད་

1. འདི་ནི་ སྟེ། ཙ་

2. Toh. 4061 སེམས་ཙམ། ‘ཤེ’ རྣམ་བཤད་རིགས་པ། ཤོག་- ༤༡ན་ཡ།

འཛོམས་པས་། །འཛོམས་ཕྱིར་བཅོམ་ལྡན་ཞེས་སུ་བཞེད།” །དེ་ལྟར་ཉོན་མོངས་པ་
 ཅིས་བཅོམ་ཞེས་པ་ལ། མཁའ་འགྲོ་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། མཁའ་འགྲོ་
 མ་ནི་²ཤེས་རབ་སྟེ། དེ་ཡང་ཆོས་རབ་ཏུ་ནམ་པར་འབྱེད་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་དེ་བཞིན་
 ཉིད་ཀྱི་རང་བཞིན་ནོ། །⁵བ་ནི་ཉོན་མོངས་པ་འོ། །སྡོམ་པ་ནི་དེ་ལ་ཡིད་བསྐྱེད་པ་འོ། །
 མཁའ་འགྲོ་མ་རྒྱར་གྱི་རྒྱར་པ་གང་ཡིན་པས་³བ་ལ་སོགས་པ་སྡོམ་པ་དེ་ནི་མཁའ་འགྲོ་
 མའི་⁴བའི་སྡོམ་མོ། །དེ་ལྟར་མཁའ་འགྲོ་མའི་⁵བ་སྡོམ་པ་དེ་བཞིན་དུ་བདག་ཉིད་
 དཔལ་བོ་ཡིན་པས་དཔལ་ཉེ་རུ་ཀ་ཡང་དག་པར་སྦྱར་བ་བཤད་ཅིས་པའི་དོན་ཏོ། །དེ་
 ལྟར་ཡང་། “ཉོན་མོངས་ཤེས་རབ་ཀྱིས་འཛོམས་པས་། །དེ་ཕྱིར་ཤེས་རབ་བཅོམ་
 ལྡན་བཞེད།” ཅིས་གསུངས་སོ། །ཉོན་མོངས་པ་ལས་རྒྱལ་བ་དེ་ཡིད་བསྐྱེད་པ་འོ། །
⁵བ་ནི་གཏི་མུག་གི་དོན་ཏོ། །དེས་ཀྱང་ཉོན་མོངས་པ་ཐམས་ཅད་བསྐྱེད་པ་འོ། །གང་
 ཡང་ཉོན་མོངས་པ་ནམས་ཀྱི་ཅ་བ་ནི་བདག་ཏུ་ལྟ་བུ་འོ། །

དེ་ལྟར་ཡང་།

སྦྱོན་གྱི་རིགས་ནམས་ཐམས་ཅད་ནི། །

བདག་ཏུ་ལྟ་བར་གྱུར་ལས་བྱུང་། །

-
1. བདུད་འཛོམ་པ་ ཅོ།
 2. མཁའ་འགྲོ་ནི་ བེ། གསེར།
 3. ‘སོགས་’ གསེར་བྱིས་པེ་ཀིང་དང་རྒྱ་དཔེ་ནམས་སུ་མ་གསལ།
 4. བཅོངས་པས་ རྒྱ་དཔེ།
 5. ཡིད་བསྐྱེད་ བེ། གསེར།
 6. ལྟ་ལས་ བེ། གསེར།

སྐྱེ་བ་མེད་པ་དང་། གལ་ཏེ་སྔོན་གྱི་དངོས་པོ་ཉམས་པ་ལས་སྔོན་མ་བྱུང་བ་སྐྱེ་བ་དེ་
 ལྟ་ན་ཡང་ཡོད་པ་ལས་སྐྱེ་བ་སྟེ། སྔོན་མེད་པ་དང་ལྟན་ཅིག་སྐྱེ་བ་ཉིད་ཡིན་པའི་
 བྱིར་རོལ་ན། ལྟན་ཅིག་ཏུ་སྐྱེ་བ་ནི་མེད་དེ་སྔོན་ཉིད་ཉམས་པའི་བྱིར་རོ། །གང་གི་
 བྱིར་སྔོན་གྱི་དངོས་པོ་ཉམས་པ་དང་ད་ལྟར་གྱི་དངོས་པོ་ཡོད་པའི་བྱིར་མེད་པ་དང་
 འབྲ་བ་བསྐྱེད་པར་མི་རྒྱས་པས་ཀྱང་ཡོད་པ་ལས་སྐྱེ་བ་མེད་དོ། །གལ་ཏེ་ཡོད་པ་ལས་
 སྐྱེ་བར་མི་འདོད་པ་མ་ཡིན་ནམ། ཡོད་པ་ཇི་ལྟར་འགྱུར། གང་གི་བྱིར་སྐྱེ་བ་མེད་པའི་
 རི་བོང་གི་རྩ་ལ་སོགས་པ་ནི་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ནོ། །དོན་བྱེད་རྒྱས་པའི་མཚན་ཉིད་དང་
 ལྟན་པའི་བྱིར་དངོས་པོ་ཉིད་ཡིན་ནོ། །དོན་གྱི་བྱ་བ་ལ་སྦྱར་མི་རྒྱས་པའི་བྱིར་མིའི་རྩ་
 ལ་སོགས་པ་བཞིན་དུ་དོན་གྱི་བྱ་བ་དོན་དུ་གཉེར་བས་ཉག་པའི་དངོས་པོ་གང་ཡང་
 ཁས་ལེན་པར་མི་བྱེད་དོ། །ཡང་ན་ཡོད་པ་སྐྱེ་བ་ཡིན་པར་ཁས་སྐྱེད་སྦྱེན་གྱི་དེ་
 ཉམས་ལས་སྐྱེ་བ་མེད་དེ་བཀག་པ་ཉིད་ཀྱི་བྱིར་རོ། །མེད་པ་ཡང་མི་སྐྱེ་སྟེ་འོག་ནས་
 སུན་འབྲེན་པའི་བྱིར་རོ། །ཡོད་པ་དང་མེད་པ་ལས་སྐྱེ་བ་མེད་དེ་ཕན་ཚུན་སྤངས་ཏེ་
 གནས་པས་བདག་ཉིད་གཅིག་པ་མེད་པའི་བྱིར་རོ། །གཉིས་མ་ཡིན་པའི་ཕྱོགས་ལ་
 ཡང་སྐྱེ་བ་མེད་དེ་དུས་གཅིག་ཏུ་ཡོད་པ་དང་མེད་པ་གཉིས་ཀྱི་བྱིར་བྱིར་པའི་བྱིར་རོ། །
 ཡོད་པ་དང་མེད་པ་ལས་སྐྱེན་ཅི་ལོག་ཏུ་གྱུར་པས་ཡོད་པ་དང་མེད་པའི་རོ་བོ་ཉིད་མ་
 ཡིན་པའི་བྱིར་ལོགས་ཤིག་ན་མི་སྤྲིད་དོ། །དེ་སྤྲིད་ཀྱང་མི་ཉག་པར་འདོད་པས་རྒྱ་དང་
 འབྲས་བུ་ངེས་པར་ཡོད་པར་ཐལ་བར་འགྱུར་ཏེ་འབྲས་བུ་ཡོད་པ་ལ་རྩོད་པ་འགོག་

1. དེ་ལྟར་ན་ བཤེས།

2. གཉིས་ཀྱི་ བཤེས།

པའི་སྐབས་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །དོན་གྱི་བྱ་བ་ལ་སྦྱར་བ་མེད་དེ་ཡོད་པ་ལས་ཀྱང་སྦྱར་
མེ་བཏུབ་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེས་ཐུན་མོང་དུ་དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་གཅིག་དང་དུ་མའི་
རང་བཞིན་དུ་མེད་དེ་སྦྱར་བ་བཀག་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །

དངོས་པོ་རང་བཞིན་མེད་པར་སྦྱབ་བཞིན་པའི་ཕྱིར་སྦྱར་བ་མེད་པ་དང་ལྡན་པས་
ཉག་ཏུ་དངོས་པོ་མེད་པ་ཉིད་དུ་འགྱུར་རོ་ཞེ་ན། འདིར་ལན་གདབ་པར་བྱ་སྟེ། སྦྱར་
བའི་སྔ་རོལ་ན་ཡོད་པ་གཅིག་སྦྱར་མེད་པ་གཅིག་སྦྱར། གལ་ཏེ་ཡོད་པ་ལས་སྦྱོར་
ཞེ་ན། ཡོད་པ་ལས་སྦྱར་བ་མ་ཡིན་ཏེ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་གཅིག་དང་དུ་མའི་རང་བཞིན་
དུ་མེད་དེ་ཡོད་པའི་བདག་ཉིད་དུ་གྱུབ་པའི་ཕྱིར་རོ། །མེད་པ་ལས་ཀྱང་མི་སྦྱར་སྟེ་
འོག་ནས་འགོ་གཤམ་པའི་ཕྱིར་རོ། །ཡང་ན་རྒྱས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱི་རྒྱུ་བདག་ཉིད་གསལ་
བའི་བདག་ཉིད་ཀྱིས་ཡོད་པ་སྦྱོང་འོད་ཞེ་ན། གསལ་བའི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་གྱུར་པའི་བདག་
ཉིད་བསྦྱོང་པ་དེ་ཡོད་པ་ཞིག་ཡིན་ནམ་མེད་པ་ཞིག་ཡིན། གལ་ཏེ་རྒྱས་བྱས་པའི་སྔོན་
རོལ་དུ་ཡོད་པ་ཡིན་ན། རྒྱས་པ་བཞིན་དུ་མི་སྦྱར་བར་འགྱུར་ཏེ། གཏན་ཆོག་སྟེ་ནི་གོང་
དུ་སྤང་བའི་རིམ་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །ཡང་ན་མེད་པར་འདོད་ན་དེའི་ཆོ་འབྲས་བུ་ཡོད་
པར་སྦྱབ་པ་ཉམས་པར་འགྱུར་རོ། །འབྲས་བུ་མེད་པར་སྦྱབ་པར་ཐལ་བར་འགྱུར་རོ། །
རྒྱས་པ་དང་གསལ་བ་གཅིག་ཏུ་འདོད་ན། ཡོད་པ་དང་མེད་པའི་ཕྱོགས་ཀྱི་སྦྱོན་དུ་
འགྱུར་རོ། །ཐ་དད་པའི་བདག་ཉིད་ཡིན་ན་སྔོན་དུ་བསྟན་པའི་སྦྱོན་ཉིད་ཀྱིས་སོ། །

1. 'གཅིག་དང་དུ་མའི་རང་བཞིན་དུ་མེད་དེ་' གསེར་པོ་གཉིས་དང་ཀྱ་དཔེར་ཡང་མེད།

2. བདག་ཉིད་ཀྱི་ཡོད་པ་བསྦྱོང་བ་ཞེ་ན། གསེར་པོ།

གཞན་ཡང་རྒྱས་པ་འདི་རྒྱུ་བདག་ཉིད་ཡིན་ནམ། འབྲས་བུ་འདི་བདག་ཉིད་ཡིན།
 རྒྱུ་བདག་ཉིད་ཡིན་ན། དེ་ཉིད་སྐྱེ་བའི་སྔོན་རོལ་དུ་ཡོད་པ་ཉིད་ཀྱི་སྤྱིར་འབྲས་བུ་མ་
 ཡིན་པས་འབྲས་བུ་ཡོད་པར་སྒྲས་པ་¹ ཉམས་སོ། །འབྲས་བུ་འདི་བདག་ཉིད་ཡིན་ན་
 འབྲས་བུ་དུས་ན་རྒྱས་པ་མེད་དོ། །དེའི་བདག་ཉིད་ཡིན་ན་སྔོན་མེད་པར་ངེ་ལྟར་
 འགྱུར། རྒྱུ་བདག་ཉིད་ལ་རྒྱས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་འབྲས་བུ་ཡོད་པ་ཡིན་ན་རྒྱས་པ་མ་
 ཡིན་ཏེ་གསལ་བ་ཡང་མི་སྤྲིད་པའི་སྤྱིར་རོ། །རྒྱ་དང་འབྲས་བུ་གཉིས་ལས་རྒྱས་པ་དོན་
 གཞན་དུ་གྱུར་པ་ཡིན་ན་དེ་ཉིད་དང་དེ་ཉིད་མ་ཡིན་པ་གཉིས་སུ་² བཅོང་དུ་ཡང་མེད་
 པའི་སྤྱིར་རོ། །རྒྱས་པ་ནི་རྒྱ་ཡང་མ་ཡིན་ལ་འབྲས་བུ་ཡང་མ་ཡིན་ནོ། །གལ་ཏེ་རྒྱ་
 ཡང་མ་ཡིན་འབྲས་བུ་ཡང་མ་ཡིན་ན། རྒྱ་བཟང་དགག་པ་དང་སྒྲུབ་པ་མེད་པས་
 གཞོད་པ་མེད་དོ། །གཞན་ཡང་དངོས་པོར་གྱུར་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རྒྱ་དང་འབྲས་བུ་
 བཀག་པས་གྲོལ་བར་འདོད་པ་བཀག་པའི་ཡུལ་གྱུབ་སྟེ། སེམས་སྤྱིན་ཅི་མ་ལོག་པ་
 ཐར་པ་གྱུབ་པ་ནི་འདོད་པ་ཁོ་ནའོ། །རྒྱས་པ་དང་ལྡན་པ་ལས་མ་གཏོགས་པ་དོན་
 གཞན་དུ་གྱུར་པའི་རྒྱས་པ་མེད་དེ་རང་གི་ངོ་བོ་བྱམ་པ་ལ་སོགས་པ་བཞིན་དུ་དེ་
 དམིགས་པ་ཡིན་པ་ལས་བྱེ་བྲག་ཏུ་མི་དམིགས་³ པའི་སྤྱིར་རོ། །མི་དམིགས་⁴ པའི་
 མཚན་ཉིད་དུ་གྱུར་པ་དེ་འབྲས་བུ་དང་རྒྱུ་ཚོགས་པས་རྒྱས་པ་ཡོད་པ་དེ་མེད་ན་མེད་

1. སྒྲ་བ་ བཤ། གསེར།

2. དེ་ཉིད་མ་ཡིན་པ་གཉིས་ རྟེན། ཅོ།

3. མ་དམིགས་ བཤ། གསེར།

4. དེ་མི་དམིགས་ བཤ། གསེར།

པ་ལ་འབྲས་བྱ་ནམ་པར་ཤེས་པས་མིག་ལ་སོཌ་པ་བཞིན་དུ་ཡོད་པར་དགག་ཅིང་སྐྱབ་
པར་མི་རྒྱས་སོ། །ཉག་པ་ཉིད་ཡིན་པས་འབྲས་བྱ་བ་སྦྱེད་པར་མི་རྒྱས་པའི་ཕྱིར་རོ། །
དེ་མེད་པས་དཔེ་མི་འབྱུང་བོ། །དེ་ཉིད་དང་གཞན་དུ་བརྗོད་དུ་མེད་པ་ཡང་ཐུན་མོང་
གི་རིགས་པའི་རིམ་པ་འདི་ཡིས་སུན་ཕྱང་བར་བྱའོ། །དེ་བཞིན་དུ་རྒྱུ་ཉུ་གྱུར་པ་
ཐམས་ཅད་ལ་ཡང་གོ་བར་བྱའོ། །

གལ་ཏེ་སྦྱེ་བའི་དངོས་པོ་བདག་ཉིད་ཡོད་པ་ཡིན་ན་དངོས་པོ་ཡོད་པར་རི་ལྟར་
འབྱུར། གཞན་ཡང་སྦྱེ་བ་མེད་པ་ཡོད་པར་རྟོགས་པ་ན། དེ་ལྟར་ན་ནི་སྦྱེ་བའི་སྡོན་རོལ་
དུ་སྦྱེ་བ་མེད་པའི་དངོས་པོ་ཡོད་པར་བཞུགས་པར་འབྱུར་རོ། །གང་གི་ཕྱིར་དངོས་པོ་
ཡོད་པའི་དོན་དུ་སྦྱེ་བར་འདོད་ན་གལ་ཏེ་ཡང་སྦྱེ་བ་མེད་པར་ཡོད་པར་གྱུབ་ན། དེའི་
ཆེ་སྦྱེ་བ་དགོས་པ་ཅི་ཡོད། སྦྱེ་བ་མེད་པའི་དངོས་པོ་ཡིན་ནི་ཞེ་ན། མ་ཡིན་ཏེ་དེ་ལ་
སྡོན་དུ་བཞུགས་པའི་སྡོན་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་དང་། གཞན་ཡང་བརྗོད་པར་བྱ་སྟེ། གལ་ཏེ་
སྦྱེ་བའི་སྡོན་རོལ་ན་ཡོད་པ་ཡིན་ལ་ཆ་ཤས་རྩུང་ཟད་མ་གྱུབ་པས་དེའི་དོན་དུ་སྦྱེ་བ་
དོན་མེད་པ་མ་ཡིན་ནི་ཞེས་པའི་ཕྱོགས་ལ་ཡང་བརྗོད་པར་བྱ་སྟེ། དེ་ནི་མི་རིགས་ཏེ་
འབྲས་བྱ་ཡོད་པར་སྐྱབ་པར་ཐལ་བའི་ཕྱིར་རོ། །ཡོད་པ་དང་མེད་པ་གཅིག་དུ་མི་

1. 'ལ' གསེར་གྱིས་ནང་མེད།

2. སྦྱེ་བས་ བཤ། གསེར།

3. མེད་པར་ཡོད་པར་རྟོག་ བཤ། གསེར།

4. དངོས་པོ་མེད་པའི་དོན་དུ་སྦྱེ་བ་ གསེར། དངོས་པོ་ཡོད་པའི་དོན་དུ་སྦྱེ་བ་ བཤ།

5. རྩུང་བྱད་ བཤ།

བདུབ་པས་ཡོད་པའམ་མེད་པར་བཤམ་བའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ལ་སྒྲིན་ཡང་བསྟན་པའི་
 ཕྱིར་། །གསལ་བའི་ཕྱོགས་ནི་སྒྲིན་དུ་སྟན་ཕྱང་བའི་ཕྱིར་རོ། །གལ་ཏེ་གྲངས་པར་བྱ་
 བ་ཉིད་དུ་དེ་བསྐྱེད་པར་བྱའོ་ནི་ན། །འདིའི་ཕྱོགས་ཀྱང་མི་རིགས་ཏེ་གང་གི་ཕྱིར་དང་
 སོ་བདག་ཉིད་བམས་ཅད་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་སྐྱེས་པ་ཉིད་དུ་བྱུབ་ནས་ཡོད་པ་ལ། དེ་
 བཞིན་ལན་གཉིས་སུ་བསྐྱེད་པ་དོན་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །འབྲས་བུ་ཡོད་པར་²སྐྱེ་བའི་
 སྐབས་ཡིན་པའི་ཕྱིར་སྐྱེ་བའི་སྒྲིན་རོལ་བས་ཀྱང་སྐྱེ་བར་ཡོད་དེ་སྒྲིན་དུ་བསྐྱེད་པ་མི་
 རིགས་པའི་ཕྱིར་རོ། །སྐྱེ་བ་མེད་པའི་ཕྱོགས་ཀྱང་སྒྲིན་དུ་སྟན་ཕྱང་³བའི་ཕྱིར་བམས་
 ཅད་དུ་ཡོད་པ་སྐྱེ་བར་མི་རིགས་སོ། །གལ་ཏེ་ཡོད་པ་སྐྱེ་བ་མེད་པས་ན་མེད་པ་སྐྱེ་
 བར་འགྱུར་རོ། །གང་གི་ཕྱིར་དེ་བཞིན་དུ་མེར་མེར་སོ་ལ་སོགས་པའི་རྒྱ་ལ་ལན་བརྒྱ་
 བཙལ་དུ་⁴ཟེན་ཀྱང་ལག་པ་དང་རྒྱང་པ་ལ་སོགས་པ་བཞིན་ཉིང་ལག་ཚོགས་པའི་
 བདག་ཉིད་ཀྱི་ལུས་འབྲས་བུར་གྱུར་པ་དམིགས་པའི་མཚན་ཉིད་ཡིན་པ་ལས་མ་
 དམིགས་པའི་ཕྱིར་མེད་པ་ཉིད་དོ། །

གང་གི་ཕྱིར་དེ་བཞིན་དུ་གཟུགས་དང་སྒྲིང་བ་དང་མིག་དང་ཡིད་ལ་བྱེད་པ་
 རྣམས་དང་མདུན་ན་སྒྲིང་བའི་གཟུགས་སྒྲིན་སོ་ལ་སོགས་པ་ལས་མིག་གི་རྣམ་པར་
 ཤེས་པ་ནི་གཞན་ནོ། །རྒྱ་བ་དང་སྐྱ་དང་ཡིད་ལ་བྱེད་པ་རྣམས་དང་། རྒྱེད་བུ་དང་པི་

-
1. ཕྱིར་རོ་ བཤ། གསེར།
 2. འབྲས་བུ་ཡོད་པས་ གསེར།
 3. སྒྲིན་སྟན་ཕྱང་ གསེར། བཤ།
 4. ལན་བརྒྱད་ཙམ་དུ་ རྒྱ། ཅོ།

ཕང་ལ་སོགས་པ་དང་། རྫོན་པོ་དང་དམར་པོ་ལ་སོགས་པ་བརྗོད་པ་དང་མི་བརྗོད་པ་
 ཡིད་དུ་འོང་བ་དང་མི་འོང་བའི་སྐྱ་དང་བྲལ་བ་ནི། རྩ་བའི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་མ་
 ཡིན་ནོ། །སྐྱ་དང་རྩི་དང་ཡིད་ལ་བྱེད་པ་རྣམས་དང་། ཅམ་པ་ཀ་དང་བ་ཀྱ་ལ་ལ་¹
 སོགས་པའི་ཡིད་དུ་འོང་བ་དང་ཡིད་དུ་མི་འོང་བ་དང་བར་མའི་རྩིར་སྐྱའི་རྣམ་པར་
 ཤེས་པ་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ནོ། །ལྗེ་དང་རོ་དང་ཡིད་ལ་བྱེད་པ་རྣམས་དང་། ཙམ་བ་དང་ཁ་
 བ་དང་བསྐྱ་བ་ལ་སོགས་པ་རོར་སྐྱང་བ་ནི་ལྗེའི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་མ་ཡིན་ནོ། །ལྷས་
 དང་ཡིད་དང་རེག་བྲ་རྣམས་དང་འཇམ་པ་དང་རྩྱབ་པ་ལ་སོགས་པ་རེག་བྲར་སྐྱང་བ་
 ནི་ལྷས་ཀྱི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་མ་ཡིན་ནོ། །འདས་མ་ཐག་པ་དང་། མི་གཞན་ཡིད་ལ་
 བྱེད་པ་དང་། རྫོན་པོ་ལ་སོགས་པ་གཟུགས་སུ་སྐྱང་བ་ནི་རྗེས་ལས་ཐོབ་པའི་ཤེས་པ་
 འདི་ནི་རྫོན་པོའོ་ཞེས་རྣམ་པར་རྟོག་པའི་ཤེས་པ་ནི་རྣམ་པར་མི་རྟོག་པའི་རྫོན་པོ་ལ་
 སོགས་པ་གཟུགས་ཀྱི་རྣམ་པ་ཉིད་ཀྱི་ཤེས་པ་²གཟུགས་རྫོན་པོ་ལ་སོགས་པའི་ཡུལ་ལ་
 ཡོད་པ་མ་ཡིན་ནོ། །དེ་བཞིན་དུ་དུག་པོ་འགགས་མ་ཐག་པའི་རྣམ་ཤེས་གང་ཡིན་པ་
 དེ་³ཡིད་དོ་ཞེས་བཤད་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །དེ་བཞིན་དུ་སོ་སོར་⁴སྐྱེད་པ་པོ་སྐྱ་དང་རྩི་
 དང་རོ་དང་རེག་བྲ་སོ་སོར་སྐྱང་བ་ནི་རྩ་བ་དང་སྐྱ་དང་ལྗེ་དང་ལྷས་དང་དེ་མ་ཐག་
 པའི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་འབྱུང་བ་ནི་སྐྱ་ལ་སོགས་པ་དངོས་པོ་མེད་པ་ལ་འདི་ཡིན་ནོ་

1. བ་ཀྱ་ལ་ བཤེས་པ།

2. ཡེ་ཤེས་པ་ བཤེས་པ།

3. གང་ཡིན་དེ་ བཤེས་པ།

4. དེ་བཞིན་དུ་སོ་སོ་སོ་སོར་ བཤེས་པ།

ཞེས་ནམ་པར་རྟོག་པའི་ཤེས་པ་ལ་ནམ་པར་མི་རྟོག་པའི་སྐྱ་ལ་སོགས་པ་སོ་སོར་སྤང་
 བ་ནི་ན་པ་ལ་སོགས་པའི་ཤེས་པ་ལ་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ནོ། །ནམ་པར་རྟོག་པའི་ཤེས་པ་ནི་
 སྤྲོན་པོ་ལ་¹སོགས་པ་འདི་ཡིན་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་སྐྱེ་སྤྱི། རྒྱ་དེ་ལ་
 ནི་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ནོ། །ནམ་པར་མི་རྟོག་པ་ཡང་མདུན་ན་གནས་པའི་སྤྲོན་པོ་ལ་
 སོགས་པའི་གཟུགས་སོ་སོར་སྤང་བ་ལ། ནམ་པར་ཤེས་པ་སྤྲ་མ་སྤྲ་མ་ལས་རྒྱ་གཅིག་
 གིས་བསྐྱུས་པའི་ཕྱི་མ་ཕྱི་མ་²སྐད་ཅིག་མ་གཉིས་པར་འབྱུང་བ་ནི་མདུན་དུ་གནས་པ་
 སྤྲོན་པོ་ལ་སོགས་པའི་གཟུགས་གཞན་དང་གཞན་ཡུལ་དུ་བྱ་སྤྱི། ནམ་པར་རྟོག་པའི་³
 ཤེས་པ་བསྐྱེད་དེ། དེ་ཡང་རྒྱ་ལ་ཡོད་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །དེ་ལྟར་ཡུལ་གཞན་ལ་ཡང་
 བཟོ་བར་བྱའོ། །གང་ལ་རིགས་མཐུན་པའི་རྒྱ་གཅིག་གིས་མཆོད་ཉིད་ལ་གཞན་
 དང་གཞན་འབྱུང་བ་ཡོད་པ་དང་། གང་དུ་རྒྱ་གཅིག་དུ་འབྱུག་པ་མེད་པ་ཡིན་ལ།
 དེ་ཡང་ནམ་པ་ཐམས་ཅད་དུ་གཅིག་དུ་རྒྱན་མི་འཆད་པ་མེད་པས་གཞན་ཡང་རྒྱན་⁴
 ཉེ་བར་གྱུར་བའི་ནམ་པར་མི་རྟོག་པ་དབང་པོའི་ཤེས་པ་སྐྱ་ལ་སོགས་པའི་ཡུལ་ཆོགས་
 པ་ཐུན་མོང་⁵སྤྲོན་སྐྱ་ལ་སོགས་པ་འཛིན་པའི་ནམ་པར་མི་རྟོག་པ་ལ་སོགས་པའི་
 དབང་པོའི་ཤེས་པ་ལ། རྗེས་སུ་རྟོག་པ་མེད་པ་དང་རྟོག་པ་དང་བཅས་པ་ཡང་དེའི་

1. སྤྲོན་པོ་དང་སེར་པོ་ལ་ རྒྱ་དཔེ།

2. ཕྱི་མ་ རྩེ། ཅོ།

3. ནམ་པར་མི་རྟོག་པའི་ རྒྱ་དཔེ།

4. རྒྱན་མི་ཆད་པ་མེད་པས་གཞན་ཡང་རྒྱན་ རྩེ། ཅོ།

5. ཐུན་མོངས་ བེ།

བ་ཡིན་ནོ། །ཁ་ཅིག་དུ་ཨག་རུ་དང་ཅན་དང་། ག་པུར་ལ་སོགས་པ་བྱུགས་ཤིང་
 རྩོས་པས་སྒྲིའི་བྱ་ག་ཀྱས་ཏེ། སྒྲིའི་དབང་པོས་ཤེས་པ་དྲིའི་ཡུལ་²སྤྱོད་དོ། །ཁ་ཅིག་
 དུ་ཆ་བ་དང་ཁ་བ་དང་བསྐྱ་བ་ལ་སོགས་པའི་ཇེས་ལྟེ་དང་ཕྱད་པའི་ལྟེའི་དབང་པོ་ཤེས་
 པ་མི་རྟོག་པ་ཡུལ་རོ་ལ་སྦྱེ་བ་ཡིན་ནོ། །ཁ་ཅིག་དུ་རེག་བྱ་ཤེས་པའི་ཇེས་ལ་མིག་སྦྱེ་
 བས་སྒྲུ་མ་ལ་སོགས་པའི་སྦྱེ་པོའི་ཡུལ་གཟུགས་མཐོང་བས་ནི་མིག་གི་དབང་པོའི་ཤེས་
 པ་སྦྱེའོ། །ཁ་ཅིག་དུ་དབང་པོའི་ཤེས་པ་ཐམས་ཅད་རྒྱབ་ནས་རྟོག་པ་དང་བཅས་པའི་
 གཙོ་བོ་ཡིད་ལ་སོགས་པ་ཤེས་པ་སྡོན་མ་³ལས་ཇེས་སུ་བྱེད་པའི་ཤེས་པ་རྟོག་པ་དང་
 བཅས་པ་ལས་ཀྱང་རྟོག་པ་དང་བཅས་པ་གང་ཡིན་པ་སྦྱེས་སོ། །དེ་ནི་དུས་གཅིག་
 དུ་དབང་པོའི་ཤེས་པ་ལྡེའམ་དུག་ལས་སྦྱེ་བར་འགྱུར་རོ། །ཇི་ལྟར་ན་མ་པར་ཤེས་པ་
 དུག་གི་ཇེས་སུ་གཉིད་ཀྱིས་ལོག་པའི་དུས་སུ་སྡོན་དུ་བསམ་པའི་དོན་མི་ལམ་ན་བཟོད་
 པར་སྒྲུང་རོ། །

གལ་ཏེ་ཞེ་ན་རི་བོང་གི་རྩ་ལ་སོགས་པ་བཞིན་དུ་མེད་པ་ལས་སྦྱེ་ན། ཐམས་
 ཅད་ལས་ཀྱང་ཐམས་ཅད་སྦྱེ་བར་ཐལ་བར་འགྱུར་རེ་ཞེ་ན། གང་གི་ཕྱིར་འགྲོ་བའི་
 བསྦྱོད་བྱ་སྦྱོད་བྱེད་ལ་སོགས་པ་ནི་སྦྱུ་མ་ལྟ་བུའོ། །འོ་ན་དབང་པོའི་ཤེས་པ་རྟོག་པ་
 མེད་པ་ཡིན་ལ་རྟོག་པ་དང་བཅས་པ་མ་ཡིན་པར་ཇི་ལྟར་ཤེས་པ་ཡིན་ཞེ་ན། འདི་ལ་
 རེ་ཞིག་ཕྱི་རོལ་གྱི་དོན་ཡོད་པ་མདོ་སྡེ་པར་གནས་པའི་ཕྱོགས་ལ་བྱིས་པ་ན་མས་ཀྱིས་

1. ཨག་རུ་དང་ཅན་དན་ བོ། གསེར།

2. དྲིའི་ཡུལ་ལ་ བོ། གསེར།

3. ཤེས་པ་སྡོན་མ་ བོ། ཅོ།

རྟོགས་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་རི་ལྷ་ར་དུན་པ་ཕྱོགས་ཙམ་ཅུང་ཟད་བརྗོད་པར་བྱ་སྟེ། དེ་ལ་
 དངོས་པོ་ནི་ཤེས་པ་དང་ཤེས་བྱ་གཉིས་སུ་གནས་སོ། །གཞན་གསུམ་པོ་ལ་སོགས་པ་
 ནི་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ནོ། །བྱེད་པ་པོ་དང་བྱེད་པ་ལ་སོགས་པ་ཡང་དེ་ཉིད་ཀྱི་ཁོངས་སུ་
 བསྐྱུས་པའི་ཕྱིར་རོ། །གང་གི་ཕྱིར་དེ་བཞིན་དུ་རྟོག་པའང་ཆད་མ་ཤེས་པ་སྟོན་དུ་
 འགྲོ་བས་བརྟག་པར་བྱ་སྟེ། ཆོག་གི་དོན་རྣམ་པར་གཞག་པ་ནི་ཆད་མ་ཉིད་དང་
 འབྲེལ་བའི་ཕྱིར་རོ། །གཞན་དུ་ན་འདི་ལྟ་བུའི་གཟུགས་འདི་ན་མེད་ཅེས་པ་དང་།
 འདི་ནི་འདི་ན་མེད་དོ་ཞེས་པའི་ཡུལ་གཞན་དང་དུས་གཞན་དང་། རང་བཞིན་གཞན་
 བན་ཚུན་སྤངས་པས་ཡུལ་གཞན་ལ་སོགས་པ་རྟོགས་པ་མེད་¹ ། གཉིད་འཐུག་པོའི་²
 གནས་སྐབས་བཞིན་དུ་སྟོན་ཉིད་ལས་མེད་པ་ཐོབ་པ་དང་། མི་ཤན་པ་སྟོང་བའི་
 བདག་ཉིད་ཐ་སྙད་འགྲོ་བ་རྣམས་ལ་མེད་པར་འགྱུར་རོ། །གང་ཡང་ཡུལ་དང་དུས་
 ཀྱི་བསྐལ་པ་དེ་ཡང་དེའི་ཡུལ་དང་དུས་རྣམས་ནི་དེ་ཉིད་ཀྱི་དུས་ན་ཤེས་བྱ་དང་ཤེས་
 བྱེད་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་དོ། །རང་བཞིན་གྱི་བསྐལ་པ་གང་ཡིན་པ་ཡང་དོན་གྱི་བྱ་བ་བྱེད་པ་
 དེ་ཐམས་ཅད་མཐུན་པ་འདོད་ཆགས་དང་བྲལ་བ་ཉིད་ལ་སོགས་པ་ཡང་ཤེས་བྱའི་

1. སོགས་པ་ན་ ཟླ།

2. རྣམ་པར་བཞག་པ་ བཤ། གསེར།

3. གཞན་དུ་ ཙོ།

4. རྟོག་པ་མེད་དོ་ ཟླ། ཙོ།

5. གཉིད་མཐུག་པོའི་ བཤ། གསེར།

6. སྟོན་ཉིད་ནས་ བཤ། གསེར།

7. བྱ་བ་བྱེད་དེ་ གསེར། བཤ།

ཆོགས་སུ་གནས་སོ། །གང་ཡང་དོན་གྱི་བྱ་བ་མི་བྱེད་པ་ནི་རི་བོང་གི་རྩ་ལ་སོགས་པ་
 བཞིན་དུ་ཡང་སྤྱི་རྩོལ་ལ་མི་གནས་པ་དོ། །ཐོག་མ་མེད་པའི་རྣམ་པར་རྟོག་པའི་བག་
 ཆགས་འབའ་ཞིག་ལས་ཀྱང་བའི་རྣམ་པར་རྟོག་པས་བྱས་པའི་ཤེས་བྱ་ནི་དོན་དམ་པ་
 མ་ཡིན་པ་ཉིད་དོ། །དངོས་པོ་ནི་གཉིས་ཁོ་ན་སྟེ། དེ་ལ་ཤེས་པ་དང་ཤེས་བྱ་གཉིས་
 བདག་ཉིད་གཅིག་པ་ཉིད་མེད་དོ། །དེའི་བདག་ཉིད་གཅིག་པ་ཉིད་ཡིན་ན་ཤེས་པ་
 ཉིད་དམ་ཤེས་བྱ་ཉིད་གཉིས་སུ་དབྱེད་མེད་པར་འགྱུར་རོ། །དེ་ཡང་མ་ཡིན་ཏེ་གཉིས་
 པོ་ནི་ཕན་ཚུན་སྟོས་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །ཤེས་བྱའི་སྤྱོད་པ་ཡིན་ན་ནི་འགྲོ་བ་རྣམས་
 མིང་བ་དང་ལྷགས་པ་ལྟ་བུར་འགྱུར་རོ། །ཤེས་པ་ལས་གཞན་མེད་ན་ཤེས་པའི་
 སྤྱོད་པ་ལ་ཤེས་བྱ་ཉིད་ཤེས་པ་ཉིད་ཡིན་པའི་ཕྱིར་སྤྱི་རྩོལ་གྱི་དོན་མཐོང་བ་མེད་པར་
 འགྱུར་རོ། །སྤྱི་རྩོལ་གྱི་དོན་ཡོད་པར་སྒྲུབ་ས་དེ་ལྟ་བུ་དེ་ཡང་མི་འདོད་དོ། །དེ་ལ་
 གཉིས་པོ་ཕན་ཚུན་སྤངས་ཏེ་གནས་པ་ཡིན་ཏེ་ཤེས་པའི་བདག་ཉིད་ཤེས་བྱའི་
 བདག་ཉིད་དུ་མི་འགྱུར་པའི་ཕྱིར་རོ། །ཤེས་པ་ཉིད་གཞན་གྱིས་གསལ་བར་བྱེད་པ་
 མ་ཡིན་ལ་རང་ཉིད་གསལ་བར་བྱེད་པ་ཡིན་ཏེ། ཤེས་བྱ་གསལ་བར་བྱེད་པའི་བདག་
 ཉིད་མ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེའི་བདག་ཉིད་ཡིན་ན་སྤར་བརྟན་པའི་སྦྱོན་དུ་ཐལ་བར་
 འགྱུར་བའི་ཕྱིར་རོ། །ཤེས་པ་ཡང་གསལ་བ་ཉིད་མ་ཡིན་ན་ཤེས་བྱའི་བདག་ཉིད་ཀྱི་

-
1. དོན་དམ་མ་ཡིན་གསེར། བཤ།
 2. གཅིག་པ་ཡིན་ན་སྟེ། ཅོ།
 3. བརྟོས་པ་གསེར། བཤ།
 4. 'གནས་པ་ཡིན་ཏེ' གསེར་བྲིས་སུ་མེད།

སྒྲིན་དུ་འགྱུར་རོ། །གཞན་གསལ་བ་ཡིན་ན། གཞན་ཡང་དེ་བས་ལྷག་པའི་གསལ་
 བྱེད་ཉིད་¹ཡིན་ནོ། །གཞན་ཡང་རང་གསལ་བར་འགྱུར་བའོ། །གཞན་གྱི་གསལ་
 བྱེད་དུ་འགྱུར་རོ། །གཞན་དུ་ན་གཞན་འདིས་གསལ་བྱེད་ཡིན་ཞེས་བྱ་བར་མི་
 འགྱུར་ལ། འདི་ཡང་གསལ་བ་ཡིན་ཞེས་བྱ་བར་ཡང་མི་འགྱུར་རོ། །རང་ཉིད་
 གསལ་བའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཡིན་པར་འགྱུར་ཏེ། དེ་གསལ་བར་མ་གཟུང་ཡང་གསལ་བྱེད་
 ཉིད་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །གཞན་དུ་ན་སྐྱབ་པར་མི་རྒྱས་ཏེ་དེའི་གསལ་བར་བྱེད་པ་ཉིད་
 རྟོགས་པར་དགའ་བ་ཡིན་ཏེ། གསལ་བྱེད་མ་གཟུང་བས་ནི་གསལ་བྱེད་ཉིད་དུ་མི་
 འགྱུབ་པའི་ཕྱིར་རོ། །གང་གི་ཕྱིར་གསལ་བྱེད་ཉིད་དུ་བཟུང་བ་ནི་གསལ་བ་ཉིད་དུ་
 རྟོགས་ཀྱི་གཞན་དུ་ནི་མི་འགྱུབ་པོ། །དེ་རྟོགས་པ་ཡང་གསལ་བྱེད་ཉིད་²ཀྱིས་རྟོགས་
 པ་ཡིན་ན། བན་ཚུན་ལྟོས་པའི་⁴སྒྲིན་དུ་འགྱུར་རོ། །འོ་ན་གང་གི་ཕྱིར་ཡང་དངོས་
 པོའི་རང་བཞིན་ཡིན་ཏེ་དེའི་རང་བཞིན་གྱིས་གཞན་ཉི་བར་བསྐྱུར་ཏེ། ཇི་ལྟར་དམར་
 པོའི་རྩམ་དང་སྐྱར་བས་དགར་པོའི་རྩམ་ཀྱང་དམར་པོར་འགྱུར་རོ། །དེ་ལྟར་ནག་
 པོའི་རྩམ་གྱིས་ནག་པོར་འགྱུར་ལ། ལྷང་གུས་ལྷང་གུ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པའོ། །
 མར་མེའི་འོད་ཀྱིས་ཀྱང་གསལ་བར་བྱེད་དེ་སྤང་བ་དང་བཅས་པའི་གཟུགས་སུ་
 འགྱུར་རོ། །གང་ཡང་རང་ཉིད་གསལ་བྱེད་ཀྱི་བདག་ཉིད་མ་ཡིན་ན་དེ་བདག་ཉིད་

1. གསལ་བྱེད་ རྟོ། ཙོ།

2. མ་བཟུང་བས་ རྟོ།

3. 'ཉིད' གསེར་བྱིས་དང་ཕེ་ཀྱང་པར་མའི་ནང་མ་གསལ།

4. བཟོས་པའི་ གསེར། ཕེ།

དང་གཞན་མི་གསལ་བ་ཇི་ལྟར་གསལ་བར་འགྱུར། གང་གི་སྤྱིར་དབྱིག་པའི་མི་
 གསལ་བའི་བདག་ཉིད་ཀྱིས་མུན་པའི་བྱམ་པ་ལ་སོགས་པ་གསལ་བར་མི་འགྱུར་རྟེ།
 མར་མེ་ལ་སོགས་པ་ལེན་པ་མེད་པར་ཐལ་བར་འགྱུར་བའི་སྤྱིར་རོ། །གལ་ཏེ་གཞན་
 གསལ་བའི་ངོ་བོ་ཉིད་གྲངས་པས་གཞན་གསལ་བར་བྱེད་དོན་ཞིན། དེ་ནི་མ་ཡིན་ཏེ་
 གསལ་བར་བྱེད་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་དང་མི་ལྡན་པའི་སྤྱིར་རོ། །གང་གི་སྤྱིར་དེ་བཞིན་དུ་
 གང་གཞན་མ་ཡིན་པ་དེ་ལ་རེ་ཞིག་རང་གི་ངོ་བོ་ཉིད་གསལ་བྱེད་མ་ཡིན་པའི་སྤྱིར་
 གཞན་ཇི་ལྟར་གསལ་བར་བྱེད། དེ་གཞན་གྱིས་གསལ་བར་བྱེད་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཡིན་
 ན་དེ་ཡང་གཞན་གྱིས་བྱེད་དགོས་པས་ཐུག་པ་མེད་པར་འགྱུར་རོ། །རྩུང་ཟད་ཀྱང་
 གསལ་བྱ་དང་གསལ་བྱེད་མེད་པས་འགྲོ་བ་ལོང་བ་དང་སྐྱགས་པར་འགྱུར་རོ། །དེ་
 ཡང་གང་འདི་ཉིད་དང་འདི་ཉིད་མ་ཡིན་པ་ལ་སོཌ་པ་ཡུལ་དང་དུས་དང་རང་བཞིན་
 སྐབ་པ་དང་དགག་པའི་བདག་ཉིད་ཀྱི་ཐ་སྙད་མེད་པས་ཐ་སྙད་ཐམས་ཅད་རྒྱན་ཆད་
 པར་འགྱུར་རོ། །དེ་ལྟར་ཡང་མ་ཡིན་ནོ། །དེས་ནི་གཞན་གྱི་ཚྭ་གས་སུ་སྤྱང་བའོ། །

གང་གི་སྤྱིར་ཤེས་པ་རང་ཉིད་གསལ་བར་བྱེད་པའི་བདག་ཉིད་ཡིན་ན། དེ་ལྟ་
 ན་ཡང་དེའི་ཤེས་བྱ་ཇི་ལྟར་གསལ་བར་བྱེད་པར་འགྱུར། གང་གི་སྤྱིར་ཤེས་པའི་ངོ་
 བོ་ཉིད་ནི་ཤེས་བྱ་མི་འཛིན་ལ་ཤེས་བྱ་རང་གི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱང་ཤེས་པ་མི་འཛིན་པའི་
 སྤྱིར་རོ། །དེ་གཉིས་ཤིན་ཏུ་ཐ་དད་པར་ནི་གོང་དུ་བསྐྱབས་ཟིན་ཏོ། །གལ་ཏེ་ཤིན་

-
1. བདག་ཉིད་ཀྱི་ བཤེས་པ།
 2. བསྐྱབས་ཟིན་ནོ་ བཤེས་པ།

ཏུ་ཐ་དད་པ་ཡིན་དུ་ཟིན་ཀྱང་དམར་པོའི་རྩས་དང་དཀར་པོའི་རྩས་སྤྱར་བས་དམར་
 པོར་འགྱུར་བ་བཞིན་དང་། སྤྱན་པར་གནས་པའི་སྤྲུལ་བྱ་ལ་སོགས་པ་སྦྲོན་མ་ལ་
 སོགས་པའི་འོད་གསལ་བའི་དངོས་པོ་དང་ཉེ་བ་ལས་གསལ་བ་དེ་བཞིན་དུ་ཤེས་པ་
 དང་ཉེ་བ་ལས་ཤེས་བྱ་གསལ་བར་བྱེད་པ་ཡིན་ནི་ཞི་ན། མ་ཡིན་ཏེ། ཤེས་པ་དང་
 ཤེས་བྱ་དག་ཤིན་ཏུ་ཐ་དད་པའི་དཔེ་མི་འགྲུབ་པའི་སྤྱིར་རོ། །གང་གི་སྤྱིར་དེ་ལྟར་
 དཔེ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཤེས་བྱའི་བདག་ཉིད་ཡིན་ལ་ཤེས་པའི་བདག་ཉིད་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །དེ་
 གཉིས་ནི་ཤིན་ཏུ་ཐ་དད་པས་ཤེས་པའི་བདག་ཉིད་ནི་གསལ་བའི་བདག་ཉིད་དུ་སྒྲུབ་བ་
 བཞིན་མ་ཡིན་ལ། དེའི་བདག་ཉིད་མེད་པའི་རང་བཞིན་ནི་དཔེ་ཡིན་ལ། གང་ཡང་
 དཔེར་འགྱུར་པ་ནི་གང་གི་སྤྱིར་ཆད་མས་གྲུབ་པའི་དོན་ནི་དཔེར་གྲུབ་པ་ཡིན་པ་ལ་དེ་
 ཡང་ཆད་མ་ལས་ཐ་དད་པས་གནས་པ་ཡིན་ནོ། །དེ་གསལ་བཞིན་པས་དེའི་བདག་
 ཉིད་མ་ཡིན་པ་ཇི་ལྟར་གསལ་བར་བྱེད། དེ་ལྟར་དཔེ་གྲུབ་པ་མེད་པས་འདོད་པའི་
 དོན་རྒྱུང་ཟད་ཀྱང་མི་འགྲུབ་པོ། །འགྲོ་བ་ཐམས་ཅད་འོན་པ་དང་སྐྱགས་པ་ལ་སོགས་
 པར་འགྱུར་རོ། །གང་གི་སྤྱིར་དེ་ལྟར་ཤེས་པ་སྦྱེས་པའམ་མ་སྦྱེས་པ་ཡིན་ན་¹། སྦྱེས་
 པའི་སྦྱོགས་ལ་གཟུགས་ལ་སོགས་པའི་རྒྱ་ཡོད་པ་ལས་འགྱུར་རོ། །དེ་ཡང་མེད་ན་མི་
 འགྱུར་ཏེ་ནམ་པ་དང་བཅས་པའམ། ནམ་པ་མེད་པའམ་གཞན་གྱི་ནམ་པ་ཅན་དུ་
 འགྱུར་རོ། །དེ་ལ་དང་པོའི་སྦྱོགས་ལ་དེའི་བདག་ཉིད་དང་དེ་ལས་བྱུང་བ་གཉི་གའི་

1. སྤྱང་བཞིན་ བཤ། གསེར།

2. ད་ལྟར་ གསེར།

3. གསེར་བྲིས་དང་པེ་གིང་གཉིས་ཀའི་ནང་ན་མེད།

འབྲེལ་བ་ནི་ཤེས་བྱ་དང་ཤེས་པ་དག་ལ་མེད་དོ། །ཐ་དད་པའི་ཤེས་བྱ་གསལ་བའི་
བདག་ཉིད་ཀྱིས་ངེ་ལྟར་རྟོགས་པར་འགྱུར་ཏེ་མི་འགྱུར་རོ། །དེ་ལྟར་ཤེས་བྱ་ལས་
སྐྱེ་བ་མེད་པས་ཤེས་པ་དེའི་རྣམ་པ་ཅན་མེད་དོ། །ཤེས་པ་དེའི་རྣམ་པ་ཅན་དུ་རྟོགས་
པ་མེད་པས་ཀྱང་དོན་རྟོགས་པ་ནི་བརྟགས་པ་ཅི་ཙམ་དུ་གྲུབ་ཀྱི་ཐམས་ཅད་དུ་དོན་
རྟོགས་པ་ནི་མེད་དོ། །

རྟག་པ་དང་མི་རྟག་པ་དང་ཡོད་པ་དང་མེད་པའི་ཚུགས་ལ་དེའི་བདག་ཉིད་དང་
དེ་ལས་བྱུང་བ་མེད་པའི་ཕྱིར་དང་ཐ་དད་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་དེའི་རྣམ་པ་དང་བྲལ་བས་
སྟོན་བཞིན་དུ་དོན་བསྐྱབ་པའི་ཡན་ལག་ཉིད་དུ་བསམ་པར་མི་བྱའོ། །དེའི་བདག་ཉིད་
དང་དེ་ལས་བྱུང་བ་མེད་པས་འབྲེལ་བ་གཞན་ཡང་བརྟག་པར་མི་རིགས་ཏེ་དེ་ནི་ཉེ་
བར་ཕན་འདོགས་པའི་ཕྱིར་རོ། །ཕན་མི་འདོགས་ན་ནི་སྤར་བ་སྤན་པའི་སྟོན་དུ་ཐལ་
བར་འགྱུར་རོ། །ཕན་འདོགས་ན་དེ་ལས་བྱུང་བའི་ཚུགས་སུ་ཐལ་བར་འགྱུར་ཏེ་ཕྱིས་
དབྱེད་པར་བྱ་བ་ཉིད་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །ཐམས་ཅད་དུ་སྐྱེ་བ་མེད་པའི་ཚུ་ཉ་ནི་གཞན་
སྐྱབ་པར་བྱེད་པའི་ཡན་ལག་མ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་མ་ཡིན་པའི་ཚུགས་ནི་དེ་ལས་
བྱུང་བའི་ཚུགས་སོ། །དེ་ལ་གཅིག་དུ་ཕྱི་རོལ་གྱི་དོན་གྱིས་བསྐྱེད་པ་མ་ཡིན་ནོ། །
ཤེས་པ་ཉིད་དོན་གྱི་རྣམ་པར་སྤང་བ་ཡིན་གྱི་ལོགས་ཤིག་པའི་དོན་གྱིས་བསྐྱེད་པ་མ་
ཡིན་ནོ། །ཐོག་མ་མེད་པ་ནས་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་རྒྱུད་ལས་བྱུང་བའི་དེ་མ་ཐག་པའི་

-
1. རྟོག་པར་ སྟེ། ཅོ།
 2. སྐྱེས་པ་ སྟེ། ཅོ།
 3. བརྟགས་པ་ ཤེ། གསེར།

ཐུན་གྱིས་མི་ལམ་གྱི་ནམ་པར་ཤེས་པ་བཞིན་དུ་ནམ་པར་ཤེས་པར་སྦྱ་བས་ཀྱང་དེ་
 བཞིན་དུ་གང་གི་ཕྱིར་སྒོ་བཅད་ནས་བྱིས་དུ་ཉལ་དེ། མིག་འཛུམས་དེ་གཉིད་ལོག་པ་
 ལས་ཁང་པ་བས་ཆེ་བའི་ཆད་ཀྱིས་སྒྲང་པོ་ཆེ་དང་། ཏ་ལ་སོགས་པའི་ནམ་པར་ཤེས་
 པ་སྒྲང་པོ་ཆེ་ལ་སོགས་པ་མེད་པར་ཡང་དོན་གྱི་ནམ་པ་སྦྱེའོ། དེ་མི་ལམ་ན་ཤེས་པའི་
 ནམ་པ་སྒྲང་བ་ཡིན་གྱི་དོན་ཏ་ལ་སོགས་པས་བྱས་པ་ནི་མི་རིགས་སོ། །མིག་གི་བྱ་བ་
 མེད་ཀྱང་སོ་སོར་སྒྲང་བའི་ཕྱིར་རོ། །གང་གི་ཕྱིར་མིག་འཛུམས་པ་²ཡང་ལོང་བ་
 བཞིན་དུ་གཟུགས་སོ་སོར་སྒྲང་བ་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ནོ། །གལ་དེ་མིག་གི་བྱ་བ་ཡང་དེ་
 ལ་ཉེ་བར་དམིགས་པ་ཡོད་དོ་ཞེ་ན། བདེན་དེ་དེ་ལ་ཉེ་བར་དམིགས་པ་ཡོད་དོ། །དེ་
 ལ་ཉེ་བར་དམིགས་པ་མེད་པར་ནི་མི་གྲུབ་པོ། །འོན་ཀྱང་མིག་གི་དབང་པོ་མེད་པ་
 ཉིད་དོ། །ལོང་བ་དང་གཉིད་ལོག་པ་ལ་དེ་མེད་ཀྱང་མི་ལམ་ན་སྒྲོན་པོ་ལ་སོགས་པའི་
 གཟུགས་སོ་སོར་སྒྲང་བར་ཇི་ལྟར་མི་འགྱུར་དེ་འགྱུར་རོ། །ཤི་བར་སྒྲང་བ་ཡང་ཇི་
 ལྟར་མི་འགྱུར་དེ་མི་ལམ་མམ་སད་པའི་དུས་ན་ཡང་མེད་དེ། དེའི་ལྷས་ནི་མེས་
 བསྐྱེད་པ་ཉིད་ཡིན་ནོ། །ཇི་ལྟར་ཁང་པ་རྒྱུད་དུ་འཛིན་དུ་ཆད་ཤིན་ཏུ་ཆེ་བའི་ས་གནི་
 ལ་གནས་པའི་སྤོང་པོ་དང་རི་དང་མཆོ་དང་ནམ་མཁའི་དགྲིལ་དུ་ཉི་མའི་གཟུགས་
 བརྒྱན་སོ་སོར་སྒྲང་སྟེ། དེ་ནམས་དེར་ཞུགས་པ་འཕམ་གནས་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །
 གཉིད་ལོག་པ་ལས་མ་གཏོགས་པ་གཞན་ལ་སྒྲང་བ་མེད་དོ། །ནམས་པ་མེད་པའི་

1. གྱི་ སྟེ། ཅོ།

2. མིག་འཛུམས་པ་ བེ། གསེར།

3. གཟུགས་སོ། །སོ་སོར་སྒྲང་བ་ཇི་ལྟར་མི་འགྱུར་རོ། སྟེ། ཅོ།

སྐྱེས་བུ་ཐམས་ཅད་ལ་ཉེ་བར་དམིགས་པའི་རྒྱས་ཐུན་མོང་དུ་དོན་གྱི་ངོ་བོ་ཉིད་དེ་ལྟར་
 ཉེ་བར་དམིགས་སོ། །གལ་ཏེ་མི་ལམ་ན་དོན་ཡོད་པ་ཡིན་ན་མཁན་པོ་ལ་སོགས་པས་
 བཤད་པ་ལ་སོགས་པ་བྱེད་པ་། དེ་རི་ལྟར་དམིགས་པར་མི་འགྱུར། གལ་ཏེ་གཉིད་
 སད་པའི་དུས་སུ་ངེས་པ་ལ་དེ་ཐམས་ཅད་མེད་དེ་མི་དྲན་པའི་ཕྱིར་རོ་ཞིན་མ་ཡིན་ཏེ།
 ཐམས་ཅད་དུ་མི་དྲན་པ་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །གལ་ཏེ་མི་ལམ་གྱི་གནས་སྐབས་ན་དོན་
 མེད་ན། ཅི་འདྲིར་²དཔེ་ཙམ་གྱིས་གཉིད་སད་པའི་དུས་སུ་དོན་གྱིས་སྟོང་པའི་ཤེས་པ་
 འགྱུ་བ་པར་འགྱུར། གང་གི་ཕྱིར་རབ་རིབ་ཅན་གྱི་ཤེས་པ་ལོག་པ་³ཡིན་པ་བཞིན་དུ་
 རབ་རིབ་མེད་པའི་ཤེས་པ་ལོག་པར་འགྱུར་རམ་སྟེ་མི་འགྱུར་རོ། །གང་གི་ཕྱིར་དེ་
 བཞིན་དུ་ནམ་པར་ཤེས་པ་འབྱུལ་པ་མེད་པ་དེ་དོན་གྱིས་སྟོང་པ་ཡང་མ་ཡིན་ཏེ་མི་
 བསྐྱུ་བའི་⁴ཕྱིར་རོ། །དོན་ལས་སྐྱེས་པའི་ཕྱིར་མི་བསྐྱུ་འོ། །གཞན་དུ་ཤེས་པ་དོན་
 མེད་པར་འབྱུང་ན་མི་བསྐྱུ་⁶བའི་མཚན་ཉིད་ཀྱིས་ཀྱང་དོན་མི་རྟོག་དེ་ལོག་པའི་ཤེས་
 པ་བཞིན་དུ་འགྱུར་རོ། །དེ་ཡང་དོན་ལས་སྐྱེས་པ་ནི་དོན་རྗེས་སུ་འགོ་བ་དང་ཚྭ་གཡ་
 གཉིས་དངོས་སུ་དབང་པོའི་ཤེས་པ་ལ་ཡོད་པ་ཡིན་ནོ། །གང་གི་ཕྱིར་དེ་ལྟར་རབ་
 རིབ་ལ་སོགས་པའི་སྒྲིན་དང་བྲལ་བའི་མིག་ཡོད་ན་ཤེས་པ་ཡོད་ལ་ཤེས་པ་མེད་ན་

-
1. བྱེ་བ་ པེ། གསེར།
 2. ཅི་འདྲིད་ ཟླ། ཅོ།
 3. ཤེས་པ་ལོགས་པ་ ཅོ།
 4. མི་སྐྱུ་བའི་ ཟླ། ཅོ།
 5. དོན་ལས་སྐྱེས་པའི་ཕྱིར་སྐྱུ་འོ་ ཟླ། ཅོ།
 6. དོན་མེད་པས་འབྱུང་ན་མི་སྐྱུ་ ཟླ། ཅོ།

མེད་དོ། །མིག་འདྲམས་པ་ལས་གཟུགས་དང་སྒྲུང་བ་དང་། ཡིད་ལ་བྱེད་པ་ཡོད་
 གྲུང་དེ་མེད་ན་མེད་དོ། །ཡང་མིག་སྤྱོད་ནས་ཡོད་པ་ཡིན་ནོ། །དེ་ལྟར་ན་སྒྲུང་བ་ཡོད་
 ན་ཡོད་དེ་དེ་མེད་ན་མེད་དོ། །གཞན་ཡང་མིག་ལ་སོགས་པའི་རྒྱ་ཡོད་གྲུང་ཡང་སྒྲིན་
 མ་ལ་སོགས་པའི་གསལ་བ་ཡོད་ན་སྒྲུང་བ་ཡིན་ནོ། །དེ་ལྟར་མདུན་དུ་གནས་པའི་
 བུམ་པ་ལ་སོགས་པའི་གཟུགས་ཡོད་པར་གྱུར་པ་ཡིན་ནོ། །སྒྲུང་བ་ལ་སོགས་པ་ཡོད་
 གྲུང་དེ་མེད་ན་མེད་དོ། །ཡང་དེ་ཡོད་ན་ཡོད་པ་ཡིན་ནོ། །དེ་བཞིན་དུ་ཡིད་ལ་བྱེད་
 པ་ཡོད་པས་རྣམ་པར་ཤེས་པ་སྐྱེ་ལོ། །དེ་མེད་ན་མེད་དོ། །བུམ་པ་ལ་སོགས་པ་ཡོད་
 གྲུང་གཉིད་འབྲུག་པའི་གནས་སྐབས་སུ་མེད་དོ། །ཡང་དེ་སད་ན་ཡོད་དོ། །དེ་ལ་རེ་
 རེ་བསལ་ན་རྣམ་པར་ཤེས་པ་སྐྱེ་བ་མེད་པས་དེ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རྣམ་པ་ཡིན་པར་
 དཔག་གོ། །དེ་བཞིན་དུ་མིག་གིས་གཟུགས་ལ་འདྲུག་གི་སྒྲུ་ལ་སོགས་པ་ལ་མ་ཡིན་ནོ། །
 མིག་གིས་སྒྲུ་ལ་སོགས་པ་རྟོགས་པ་མེད་དོ། །ན་བའི་དབང་པོ་ལ་སོགས་པ་ཡོངས་
 སུ་བརྟག་པ་དོན་མེད་པར་ཐལ་བའི་ཕྱིར་དང་འོན་པ་ལ་སོགས་པ་མེད་པར་ཐལ་བར་
 འགྱུར་རོ། །དེའི་སྒྲུ་ལ་སོགས་པ་སྐྱེད་བྱེད་མ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་གང་དེ་ལ་སྒྲུང་བ་ཡིན་
 སྐྱེད་བྱེད་མ་ཡིན་གྲུང་སྒྲུང་ན་དོན་ཐམས་ཅད་མངོན་སུམ་དུ་གྱུར་པས་ཐམས་ཅད་
 ཀྱིས་ཐམས་ཅད་ཤེས་པར་འགྱུར་རོ། །དབང་པོའི་ཤེས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་གནས་
 སྐབས་འདི་ཉིད་དོ། །མིག་ལ་སོགས་པའི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་གཟུགས་ལ་སོགས་པའི་

1. གཉིད་མཐུག་པའི་གསེར། བཤེ།

2. བོད་དཔེར་གསལ་ན་ཞེས་འདུག་གྲུང་གོང་དུ་ཐུ་དཔེ་(ཨལལ)ལྟར་བཞོད་ཡོད།

3. རྟོགས་པ་མེད་དེ་ བཤེ། གསེར།

གཟུགས་བརྒྱན་གྱི་¹ཆམ་པ་ཅན་སྐྱོའོ་ཞེ་ན། ཆམ་པ་མེད་པ་འཇམ། གཞན་གྱི་ཆམ་པ་
 ཅན་དག་དོན་ཉོགས་པ་མེད་དེ་མི་སྤྲོད་པའི་ཕྱིར་རོ། །གང་གི་ཕྱིར་ཇི་ལྟར་སྐྱེས་པུ་
 རང་གི་བཞིན་²ཐམས་ཅད་དུ་མངོན་སུམ་དུ་མི་འགྱུར་བ་བཞིན་ནོ། །སྤང་བའི་མེ་
 ལོང་ལ་དེའི་གཟུགས་བརྒྱན་མཐོང་བས་དེས་³དེ་ཉོགས་པའོ། །གཟུགས་བརྒྱན་ཉམས་
 སུ་སྐྱོང་བ་ཉིད་རང་གི་བཞིན་གྱི་གཟུགས་སྐྱེས་པུས་ཉམས་སུ་སྐྱོང་བའོ། །དེ་ལ་གཟུང་
 བརྒྱན་ཉམས་སུ་སྐྱོང་བ་ལས་གཞན་དངོས་སུ་ཉམས་སུ་སྐྱོང་བ་ནི་མི་སྤྲོད་དོ། །དེ་
 ལྟར་དོན་ཡོད་པར་སྐྱབ་བ་ཐམས་ཅད་ཉིད་ཀྱིས་ཀྱང་དོན་གང་དུ་ཡང་མངོན་སུམ་དུ་མི་
 འགྱུར་རོ། །དེ་ལ་ཤེས་པ་མེ་ལོང་ལྟ་བུ་ལ་གཟུགས་བརྒྱན་ཉམས་སུ་སྐྱོང་བ་ཉིད་དེ་
 ཉམས་སུ་སྐྱོང་བའོ། །དེ་མཐོང་བ་ཉིད་དོན་མཐོང་བའོ། །གང་གི་ཕྱིར་རང་གིས་དོན་
 མངོན་སུམ་དུ་བྱས་པ་ནི་མེད་དོ། །དེ་མངོན་སུམ་ཉིད་ཡིན་ན་མངོན་སུམ་གྱི་བདག་
 ཉིད་ཀྱིས་ཆམ་པར་ཤེས་པའི་བདག་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་ཆམ་པར་ཤེས་པར་འགྱུར་རོ། །
 མངོན་སུམ་ཉིད་ཀྱིས་⁴ཆམ་པར་ཤེས་པ་ཉིད་བསྐྱབ་པས་དོན་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །གཞན་
 ཡང་དོན་ཉིད་མངོན་སུམ་ཡིན་གྱི་ཆམ་པར་ཤེས་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །དེ་མངོན་སུམ་མ་
 ཡིན་པ་ཉིད་ཀྱིས་ཐམས་ཅད་མངོན་སུམ་མ་ཡིན་པ་ཉིད་དུ་ཐལ་བར་འགྱུར་རོ། །
 གཟུགས་བརྒྱན་མངོན་སུམ་དུ་བྱས་པས་རང་གི་བཞིན་ཡང་མངོན་སུམ་དུ་བྱས་པ་

1. ཀྱིས་ སྤྲོད་ ཙོ།

2. རང་གི་དེ་བཞིན་ སྤྲོད་ ཙོ།

3. གསེར་བྲིས་དང་པེ་ཀིང་གཉིས་སུ་‘དེས་’མ་གསལ།

4. ཀྱི་ པོ། གསེར།

བཞིན་དུ་དེ་མངོན་སུམ་ཉིད་དུ་བྱ་བ་ནི་མི་རིགས་སོ། །དེའི་ཕྱིར་ན་དོན་མངོན་སུམ་
 མ་ཡིན་ནོ། །དེ་ལ་གང་ཡང་སྔོན་པོའི་རྣམ་པ་ལས་ཤེས་པ་གཞན་གྱི་རྣམ་པར་འགྱུར་
 ན་སྔོན་པོའི་རྣམ་པ་མ་ཡིན་ནོ། །རྣམ་པར་ཤེས་པ་དེ་དྲག་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་འགྱུར་རོ། །
 དེ་ཉིད་རང་རིག་པ་ཡིན་གྱི་དེ་སྔོན་པོ་ནི་མ་ཡིན་ཏེ་སྔོན་པོའི་རྣམ་པ་དང་བྲལ་བའི་
 ཕྱིར་རོ། །ཡང་དག་པའི་རིག་པ་ལ་ཡོད་པ་དང་མེད་པའི་རྣམ་པ་དང་བྲལ་བ་མ་
 ཡིན་ནོ། །སེར་པོའི་ཤེས་པ་དང་མི་འབྲལ་བའམ། སྔོན་པོ་དང་བྲལ་བ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །
 གང་དེའི་ངོ་བོ་ཉིད་མ་ཡིན་པ་དེ་ནི་ཡང་དག་པའི་རིག་པ་མ་ཡིན་ནོ། །སེར་པོའི་ཤེས་
 པ་ནི་ནག་པོའི་ཤེས་པ་མ་ཡིན་པ་¹བཞིན་ནོ། །ཇི་ལྟར་མེ་ལོང་ལ་རང་གི་བཞིན་གྱི་
 གཟུགས་བརྒྱན་སྒྲུང་བ་ནི་རང་གི་བཞིན་གྱི་རྣམ་པ་ཡིན་གྱི་²གཞན་གྱི་རྣམ་པ་ནི་མ་
 ཡིན་ནོ། །དེ་ཡི་³རང་གི་བཞིན་ཉིད་ཡང་དག་པར་རིག་པ་ཡིན་གྱི་གཞན་གྱི་བཞིན་ནི་
 མ་ཡིན་ཏེ་⁴ དེའི་རྣམ་པ་དང་བྲལ་བའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་བཞིན་དུ་གཞན་གྱིས་རྣམ་པར་⁵
 རིག་པས་སྔོན་པོའི་དོན་གྱི་རྣམ་པ་མ་ཡིན་ཏེ། ཤིན་ཏུ་ཐལ་ཆེས་པའི་ཕྱིར་རོ། །ཡང་
 དག་པར་རིག་པ་ཡང་མ་ཡིན་ནོ། །རྣམ་པ་མེད་པའི་ཤེས་པ་ཡང་སྔོན་པོའི་དོན་རིག་
 པ་པོ་མ་ཡིན་ཏེ། གང་གི་ཕྱིར་དེ་དོན་གྱི་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་དང་བྲལ་བའི་ཕྱིར་
 གཟུགས་བརྒྱན་ཐམས་ཅད་དང་བྲལ་བའི་མེ་ལོང་གི་དགྲིལ་འཁོར་བཞིན་ནོ། །དོན་

1. ནག་པོའི་ཤེས་པ་ཡིན་པ་ གསེར།

2. 'གྱི' གསེར་བྱིས་སུ་མེད།

3. དེ་ཡིས་ སྟེ། ཙོ།

4. གཞན་གྱིས་མ་ཡིན་ཏེ་ སྟེ། ཙོ།

5. རྣམ་པ་ བཤ། གསེར།

རྟོགས་པར་ངེ་ལྟར་འགྱུར་གང་གི་ཕྱིར་མེ་ལོང་གི་ངོས་ལ་། གཟུགས་བརྟན་མ་ལུས་པ་
 དང་བྲལ་ཏེ་གཟུགས་བརྟན་དང་བྲལ་བས་ན་རང་གི་བཞིན་ལ་སོགས་པ་རྟོགས་པ་མ་
 ཡིན་ཅོ། ། དེ་བཞིན་དུ་ཤེས་པ་ནི་གང་དུ་ཡང་དོན་གྱི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱི་བདག་ཉིད་ཀྱི་
 གཟུགས་བརྟན་མེད་པས་ངེ་ལྟར་དོན་ཉིད་རྟོགས་པར་འགྱུར། དོན་རང་གི་བཞིན་
 ལྟར་རང་གི་མངོན་སུམ་དུ་མི་འགྱུར་ཏེ་སྟོན་དུ་བརྟན་པའི་སྟོན་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །
 དེ་བས་ན་²རྣམ་པ་མེད་པ་དང་གཞན་གྱི་རྣམ་པ་ཅན་གཉིས་ཀྱིས་དོན་ཡང་དག་པར་
 རིག་པ་ནི་མི་སྲིད་དོ། ། བར་ལ་བྱུང་བ་ནི་དེས་ཆོག་གོ། ། རྟོགས་ཙམ་ཞིག་བརྟན་
 པ་ཡིན་ཏེ། འདི་ལས་གཞན་དུ་ནི་གཞུང་མངས་ཀྱིས་དོགས་པས་མ་བྱིས་སོ། ། ༡ །

སྐྱེ་ལྡི་ཚུལ་ལས་ངེས་འབྱུང་རྣམས། །

དམ་ཆོག་སྟོན་པའི་སྟོན་ཡུལ་ཡིན། །

འཇིག་རྟེན་གསུམ་དུ་རྟེན་དཀའ་བ། །

ཐོག་མ་དབྱས་མཐའ་ཡང་དག་གནས། ༢ །

དེ་ལྟར་གྱུར་པ་གང་ལས་ཤེ་ན། ངེས་འབྱུང་ཞིང་ཞེས་པ་ནི་ངེས་པར་འབྱུང་བ་
 ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། འདི་ངེས་པར་བྱེ་བྲག་དུ་སྟར་རྣམས་ངེས་པར་
 བྱེད་པས་ན་ངེས་པར་འབྱུང་བ་སྟེ་ཨྱུ་ལི་དང་ཀླུ་ལིའི་ཆོགས་སོ། ། དེ་ནས་ཡང་གང་
 ལས་ཤེ་ན། སྐྱེ་ལྡི་ཚུལ་ལས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། སྐྱེ་ལྡི་ཚུལ་ནི་སྐྱ་
 ཙམ་སྟེ། དེ་སོ་སོའི་རྟེན་དུ་འགྱུར་བ་སྟེ་མོའོ། ། དེའི་གཟུགས་ནི་ངོ་བོ་ཉིད་དོ། །

1. རྟོགས་ལ་ བོ། གསེར།

2. དེ་བས་ རྟེན། ཅོ།

གདན་ཇི་ལྟ་བུར་¹དབྱངས་དང་གསལ་བྱེད་ཀྱི་ཆོགས་ཀྱི་སྤྲོད་དུ་རྒྱུ་རྩེ་། །དེ་ལས་
 སྦྱོས་པ་ནི་སྦྱ་ཆོགས་དོན་རྩེ་སྤྲོད་བའི་སྤྲོད་དུ་གདན་ལ་གནས་པའི་རྒྱུ་ཡིག་གོ། །དེའི་
 སྤྲོད་དུ་བར་མཆོད་པར་རྒྱུ་ནག་པོའོ། །དེའི་སྤྲོད་དུ་ཡུལ་དམར་པོའོ། །དེའི་སྤྲོད་དུ་ཡོ་
 དཀར་པོ་བསྐྱམ་པར་བྱའོ། །ཡོ་ལ་སོགས་པ་རང་བཞིན་མེད་པར་བྱ་སྟེ། གང་རྒྱད་
 ཅམ་དེ་ནི་སྦྱ་ཅམ་སྤེ་དེ་ཐིག་ལེ་ལའོ། །དེ་ཆེ་བ་བྱེད་པ་ལའོ། །དེ་ཡོ་ལའོ། །དེ་ཡོ་
 ཡིག་གོ། །དེ་སྦྱོའི་ཐིག་ལེ་ཆོག་དུག་གཉིས་ལའོ། །དེའི་བྱེད་སྦྱོའི་³དབྱུག་པ་ལའོ། །
 དེ་ཡོའི་⁴རྒྱལ་ཏུ་འབྱར་བའི་སྦྱོའི་དབྱུག་པ་ལའོ། །དེ་ཡོ་ཡིག་གི་མགོ་བོ་ལའོ། །དེ་རྒྱུ་
 ཡིག་གི་དང་པོ་རྒྱད་ཅམ་མོ། །རྒྱད་དེ་ཐིག་ལེའོ། །དེ་མགོ་བོ་ལའོ། །དེ་ཆེ་ཆོས་ལའོ། །
 དེ་ལས་ཐིག་ལེ་ལའོ། །དེ་ཏེ་ལའོ། །དེ་ཏེ་བྱེད་སྤྲོད་ཀྱི་ཆ་ལའོ། །དེ་ཏེ་འོག་གི་
 ཆའི་བྱེད་སྦྱོའི་དབྱུག་པ་ལའོ། །དེ་ཡུ་ལའོ། །དེ་སྦྱ་ཆོགས་དོན་རྩེ་ལ་གནས་པའི་རྒྱུ་ཡིག་
 གི་རྒྱད་ཅམ་ལའོ། །རྒྱད་དེ་ཐིག་ལེ་ལའོ། །དེ་མགོ་བོ་ལའོ། །དེ་ཏེ་སྤྲོད་ཀྱི་ཆ་
 ལའོ། །དེ་ཏེ་སྤྲོད་ཀྱི་⁹ཆའི་ལོགས་ཀྱི་དབྱུག་པ་ལའོ། །དེ་ཡུ་ལའོ། །དེ་སྦྱ་ཆོགས་

1. གདན་ཇི་ལྟར་ བཤ། གསེར།
2. དེའི་སྦྱོའི་ གསེར། དེ་སྦྱོའི་ སྟེ། བཤ། ཅོ། གོང་དུ་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་བཀོད་པ་ཡིན།
3. དེའི་བྱེད་སྦྱོའི་ སྟེ། ཅོ།
4. དེའི་ཡོའི་ གསེར། བཤ། དེ་ཏེ་ རྒྱ་དཔེ།
5. དེ་ཏེ་ཡིག་ རྒྱ་དཔེ།
6. ཐིག་ལེ་ལའོ་ གསེར། བཤ།
7. ‘དེ་ཆེ་ཆོས་ལའོ། །དེ་ལས་ཐིག་ལེ་ལའོ། །དེ་ཏེ་ལའོ།’ གསེར་བཤ་གཉིས་སུ་མེད།
8. རྒྱད་ཅམ་ལ་ལའོ་ བཤ། གསེར།
9. སྤྲོད་ཀྱིས་ བཤ། གསེར།

དེ་རྗེས་ཤར་གྱི་ལོགས་ཀྱི་དབུས་ཀྱི་ཆའི་དོ་རྗེས་ཅེ་མོ་ལའོ། །དེ་གཡོན་ཕྱོགས་ཀྱི་ཅེ་མོ་
 ལའོ། །དེ་ལྷོ་ཆའི་གཡལས་ཀྱི་ཅེ་མོ་ལའོ། །དེ་དབུས་ཀྱི་ཅེ་མོ་ལའོ། །དེ་གཡོན་ཕྱོགས་
 ཀྱི་ཅེ་མོ་ལའོ། །དེ་རྒྱལ་ཕྱོགས་ཀྱི་གཡལས་ཀྱི་ཕྱོགས་ཀྱི་ཅེ་མོ་ལའོ། །དེ་དབུས་ཀྱི་ཅེ་མོ་
 ལའོ། །དེ་གཡོན་ཀྱི་ཅེ་མོ་ལའོ། །དེ་བྱང་ཕྱོགས་ཀྱི་གཡལས་ཀྱི་ཅེ་མོ་ལའོ། །དེ་དབུས་
 ཀྱི་ཅེ་མོ་ལའོ། །དེ་གཡོན་ཀྱི་ཅེ་མོ་ལའོ། །དེ་ཤར་ཕྱོགས་ཀྱི་གཡལས་ཀྱི་ཅེ་མོ་ལའོ། །དེ་
 དབུས་ཀྱི་ལྷོ་བ་ལའོ། །དེ་སྤྱང་པ་ཉིད་ཀྱི་རང་བཞིན་ཞུགས་པའི་རྣམ་པར་བསམ་པའོ།།
 དེ་ནས་ཡང་ཤར་གྱི་ལོགས་ཀྱི་གཡལས་ཀྱི་ཅེ་མོ་ལའོ། །དེ་ནས་བྱང་ཕྱོགས་ཀྱི་ལོགས་
 ཀྱི་གཡོན་ཕྱོགས་ཀྱི་ལོ། །དེ་ནས་དབུས་ཀྱི་ལོ། །དེ་ལས་གཡལས་ཕྱོགས་སོ། །དེ་ནས་
 རྒྱལ་ཕྱོགས་ཀྱི་ལོགས་ཀྱི་གཡོན་ནོ། །དེ་ལས་དབུས་མའོ། །དེ་ལས་གཡལས་ཕྱོགས་སོ།།
 དེ་ལས་ལྷོ་ཕྱོགས་ཀྱི་ལོགས་ཀྱི་གཡོན་པའོ། །དེ་ལས་དབུས་སོ། །དེ་ལས་གཡལས་
 པའོ། །དེ་ནས་ཤར་གྱི་ལོགས་ཀྱི་གཡོན་པའོ། །དེ་ལས་དབུས་མའོ། །དེ་ནས་ལྷོ་བ་
 ལ་གནས་པའི་རྒྱ་ཡིག་གི་ཡུའོ། །དེ་ནས་ཏའི་སྤྱད་ཀྱི་ཆའི་དབུག་པའོ། །དེ་ལས་སྤྱད་
 ཀྱི་ཆའོ། །དེ་ལས་མགོ་བོའོ། །དེ་ལས་ལྷ་ཆོས་དེ་ལས་ཐིག་ལེ་དེ་ནས་རྒྱད། དེ་ལས་
 རྒྱད་ཅམ་མོ། །དེ་ལས་ཡུའོ། །དེ་ལས་ཏའི་སྤྱད་ཀྱི་ཆའི་དབུག་པའོ། །དེ་ལས་སྤྱད་
 ཀྱི་ཆའི་མགོ་བོ་ལའོ། །དེ་ལས་ལྷ་བ་ཕྱེད་པའོ། །དེ་ལས་ཐིག་ལེའོ། །དེ་ལས་རྒྱདའོ།།
 དེ་ལས་རྒྱད་ཅམ་མོ། །དེ་ལས་ཨའི་མགོའོ། །དེ་ལས་ཨའོ། །དེ་ལས་སྤྱོའི་དབུག་

-
1. དེ་ནས་ བཤ། གསེར།
 2. ཨའི་མགོ་བོའོ་ བཤ། གསེར། ཏའི་མགོ་བོའོ་ རྒྱ་དཔེ།
 3. དེ་ལས་ཏའོ་ རྒྱ་དཔེ།

པའོ། །དེ་ལས་གཞན་སྒྲིའི་དབྱུག་པའོ། །དེ་ལས་ཐིག་ལེ་གཉིས་སོ། །དེ་ལས་ཨོའོ། །
 དེ་ལས་ཟླ་བ་ཐུད་པའོ། །དེ་ལས་ཐིག་ལེའོ། །དེ་ལས་རྒྱདའོ། །དེ་ལས་རྒྱད་ཙམ་མོ། །
 དེ་ལས་བྱུང་བ་གཏན་ལ་གནས་པ་རྩ་བར་གྱུར་པ་བསྐྱེད་སྒྲུབ་མ་ཐུ་བར་གནས་པ་
 བསྒྲུབ་པར་བྱ་བའི་རྩ་བྱ་ཐུད་དང་བཞི་པའི་ཆད་¹ དཀར་པོ་ལས་དང་ཉོན་མོངས་པའི་
 བག་ཆགས་ནམ་པར་དག་པའི་གཞིར་གྱུར་པའི་ནམ་པར་ཤེས་པའི་དམིགས་པ་ཤེས་
 རབ་ཀྱི་པ་རོལ་དུ་ཐིམ་པའི་ངོ་པོ་ཉིད་ཐབས་དང་ཤེས་རབ་ཀྱི་བདག་ཉིད་དོ་རྩེ་སེམས་
 དཔའི་རང་བཞིན་སངས་རྒྱས་ཀྱི་རི་མོ་བསྒྲུབ་པར་བྱའོ། །སྒྲིའི་ཚུལ་ཞེས་པ་ནི་གཉིས་
 པོ་ལས་སྒྲུབ་མ་ལྟ་བུ་ཉིད་དུ་བདག་ཉིད་སྒྲེས་སོ་ཞེས་བྱ་བར་དགོངས་སོ། །ཞིང་ནི་ངེས་
 པར་གཟུང་བའོ། །དེ་ལྟར་² རྩ་གཉིས་པོའི་བདག་ཉིད་ཐུང་སྟེ། རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་པར་
 འབྱུང་བའི་ཡན་ལག་བརྒྱ་གཉིས་ཀྱིས་ནམ་པར་དག་པ་ནི། ཐུག་བརྒྱ་གཉིས་ཉིད་དོ། །
 ཐུག་མཆོན་ནི་མན་ངག་ལས་སམ། རྒྱང་ཆེན་པགས་པས་གཡོགས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་
 སོགས་པ་གསུངས་སོ། །དེ་ལས་བདག་འབའ་ཞིག་བྱུང་བ་ནི་མ་ཡིན་ཏེ། ངེས་འབྱུང་
 ཞིང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །དམ་ཆོག་ནི་གོ་ཀླད་དན་ལ་སོགས་པའོ། །
 དེའི་སྒྲིད་ཡུལ་ནི་བསྟེན་པ་སྟེ། དེ་ཉིད་ཀྱི་སྒྲིད་ཡུལ་གང་ཡིན་པ་མཁའ་འགྲོ་མ་དང་
 ལུ་མ་ལ་སོགས་པ་དམ་ཆོག་སྒྲིད་ཡུལ་ལོ། །སྒྲིད་ཡུལ་ནི་ཡུལ་ལོ། །དམ་ཆོག་ནི་
 སྒྲུབ་པ་སྟེ། དེ་ཡང་སེམས་ཅན་གྱི་དོན་ལ་སོ་སོར་འབྲེལ་བའོ། །ཁ་ཅིག་ན་རེ་
 ངེས་འབྱུང་གི་སྒྲིའི་མང་པོའི་ཆོག་གི་མཐའ་ཅན་ཡིན་ཡང་རྟེན་ཡོངས་སུ་གྱུར་པས།

1. རྩ་བྱ་བའི་ཆད་ ཐུད་པའོ།

2. དེ་ལྟར་ རྩེ་ ཅོ།

གཅིག་གི་ཆོག་དུ་བྱ་སྟེ་དོན་འཛིན་པ་དང་སྐྱར་ཞེས་བེར་རོ། །ཅི་ཁྱོད་དོན་དམ་པའི་
 ཡེ་ཤེས་ཀྱི་རང་བཞིན་ཡིན་ནམ་སྙམ་དུ་དྲོགས་པ་¹ལ། རྟེན་དཀའ་བ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་
 སོགས་པ་གསུངས་སོ། །ཤེས་རབ་དང་ཐབས་དག་དང་རྣམ་པར་རྟོག་པ་དང་གསུམ་
 རི་གསུམ་མོ། །དེ་གཉིས་བྱེ་བྲག་དུ་རྟོག་པ་ཉིད་ཀྱིས་ཉེ་བར་གྱུར་པས་²རྣམ་པར་རྟོག་
 པ་གསུམ་པའོ། །གལ་ཏེ་ཕྱིས་ཀྱི་རྣམ་པར་རྟོག་པ་མ་ཡིན་ན་³ཤེས་རབ་དང་ཐབས་ཀྱི་
 བདག་ཉིད་རྟེན་སྦྲེལ་ཞེས་དགོངས་སོ། །དེ་ཉིད་ཀྱིས་ཞེན་པ་མེད་པའི་ཚུལ་དུ་གོམས་
 པས་⁴ཉོན་མོངས་པ་ཐམས་ཅད་སངས་⁵པའི་ལྷན་ཅིག་སྐྱེས་པའི་ཡེ་ཤེས་དངོས་སུ་
 བྱེད་དོ། །དེ་བས་ན་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་རོ་བོ་ཉིད་རྣམ་པར་མེ་རྟོག་པ་ཉིད་ང་ཡིན་ནོ། །
 དེའི་ཕྱིར་འཇིག་རྟེན་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །འཇིག་རྟེན་ནི་⁶འཇིག་
 རྟེན་མཐོང་བ་སྟེ་ཉེ་བར་དམིགས་པའི་བར་རོ། །དེ་ཡང་ཐབས་དང་ཤེས་རབ་གཉིས་
 སུ་གཟུང་བ་ལ་སོགས་པ་ཉེ་བར་དམིགས་པའི་ཕྱིར་རོ། །འཇིག་རྟེན་གྱི་སྐྱས་རྣམ་
 པར་རྟོག་པ་ཉིད་རྟེན་དེ། དེ་ཉེ་བར་དམིགས་པ་ལས་བྱུང་བའི་ཕྱིར་རོ། །ཡང་ན་
 དཀའ་བ་དང་མཆོག་དཀའ་དང་དཀའ་བྲལ་རྣམས་སུ་རྟེན་པར་དཀའ་བ་སྟེ་གསུམ་དུ་
 ཞེས་གསུངས་པའི་ཕྱིར་ལྷན་ཅིག་སྐྱེས་པ་མེད་དོ། །ལྷག་མ་ནི་སྤྲ་མ་བཞིན་ནོ། །དེ་

1. སྙམ་དུ་དགོངས་པ་ རྟེན་ ཅོ།

2. ཉིད་ཀྱི་ཉེ་བར་གྱུར་པས་ བཤེས་པ། ཉིད་ཀྱིས་ཉེ་བར་འགྱུར་བར་ ཅོ།

3. མ་ཡིན་ནོ་ རྟེན་ ཅོ།

4. གོམས་པ་ ཅོ།

5. སངས་ཀྱས་ རྟེན་ ཅོ། བཤེས་

6. འཇིག་རྟེན་ན་ བཤེས་

བས་ན་ཐོག་མ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། ། རྟོག་པ་དང་བཅས་པས་ན་ཐོག་
 མ་དང་བར་དང་ཐ་མ་ནམས་སུ་ཡང་དག་པར་ཆ་གས་སུ་བྱེ་བ་¹ གང་ཡིན་པ་ལ་
 བདག་རྟོད་པར་དགའོ། ། རྗེས་སུ་མཐུན་པའི་སྒོ་ནས་རྟོད་པར་སྒྲ་བ་སྒོ་ལ་བཞག་སྟེ་
 རྟོད་པར་དགའ་བ་² ཉིད་དུ་གསུངས་སོ། ། གང་ཡང་རྟོག་པ་དང་བཅས་པ་ཞེས་བྱ་བ་
 འདི་ནི་བདག་གི་ངོ་བོ་མ་ཡིན་ཞེས་བྱ་བར་དགོངས་སོ། ། རྣམ་པར་མེད་རྟོག་པ་ཉིད་
 གང་ཡིན་པ་དེ་བདག་གི་ངོ་བོ་ཉིད་དེ། དེ་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་བདག་ཉིད་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །
 དེ་ཡང་རྣམ་པར་རྟོག་པ་ལས་རྟོད་པར་དགའ་བོ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་དོ། ། ཡང་ན་རྣམ་
 པ་སྒྲ་ཆོགས་དང་། རྣམ་པར་སྒྲིན་པ་དང་། རྣམ་པར་ཉིད་པ་རྣམས་སུ་ཡང་དག་
 པར་གནས་པ་མེད་ཅིང་མ་མཐོང་བར་འགྱུར་རོ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་དོ། ། ཉམས་སུ་
 མྱོང་བ་མེད་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། ། དེའི་ཕྱིར་རྟོད་པར་དགའ་བོ། ། གང་གི་ཕྱིར་མཆོན་
 ཉིད་དང་བྲལ་བའི་སྐད་ཅིག་མ་ལ་ཉེ་བར་དམིགས་པ་ཐམས་ཅད་སྤངས་པའི་ལྷན་
 ཅིག་སྐྱེས་པའི་ཡེ་ཤེས་ཉམས་སུ་མྱོང་བའི་ཕྱིར་རོ། ལ །

བསྐྱབ་བྱ་སྐྱབ་བྱེད་³ ཡང་དག་སྟུར། །

ཇི་ལྟ་བལྟ་ནི་དེ་བཞིན་དུ། །

སྒྲགས་བརྒྱས་བསམ་གཏན་ལ་སོགས་ལྡན། །

སྟུར་ཉིད་ཆོ་གའི་ཡེ་ཤེས་ནི། །

-
1. ཆ་གས་སུ་བྱེ་བས་ ཤེ། གསེར།
 2. རྟོད་པར་དགའ་བ་ རྟེ།
 3. བསྐྱབ་བྱེད་ ཤེ།

ནལ་འབྱོར་སྒྲ་ན་མེད་པ་ཡི། 1

རྒྱད་ལས་གསུངས་པ་མཉན་པར་གྱིས་༥ 1

ཐབས་དང་ཤེས་རབ་ཀྱི་སྒྱུར་བ་ལས་རྟེན་པར་སྒྲ་བར་གསུངས་པ་ནི་དོན་གྱིས་
འཕངས་པ་ལོ། །དེ་ལྟར་ཡང་དེ་ཉིད་ཇི་ལྟར་གྲུབ་པ་ཡིན་ཞེ་ན། །བསྐྱབ་པ་དང་བསྐྱབ་
པའི་སྒྱུར་བ་³ཡིས་ཞེས་གསུངས་སོ། །བསྐྱབ་པ་ནི་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཆོལ། །བསྐྱབ་⁴པའི་
སྒྱུར་བ་ནི་ཐབས་ཀྱི་ཆ་སྟེ་ཆོས་ཀྱི་བདུན་ཡིན་པའི་བྱིར་རོ། །གང་དེ་གཉིས་རོ་གཅིག་
པར་གྱུར་པ་དེ་ནི་དེ་ཉིད་དོ། །བསྐྱབ་པ་དང་སྐྱབ་པར་བྱེད་པའི་སྒྱུར་བ་གང་ཡིན་པ་དེ་
ལྟར་ན་རྟེན་པར་སྒྲ་བ་ཡིན་ནོ། །དེ་དེ་རུ་ཀ་ཡང་དག་པར་སྒྱུར་བ་བཤད་ཅིས་བྱ་བར་
སྒྱུར་རོ། །ལྟན་ཅིག་སྐྱེས་པའི་རྩས་ཀྱི་ངོ་བོ་དེ་ཉིད་ནི་བཙམ་ལྟར་འདས་སོ། །དེ་ཇི་
ལྟ་བུ་ཞེས་པ་ལ་ཇི་བཞིན་ཞེས་བྱ་བ་གསུངས་ཏེ། ཐམས་ཅད་དུ་ཡི་གེ་བཞི་པོ་འདིའི་
ངག་ནི།

ཐོག་མ་ཐ་མ་དབུས་མེད་ཅིང་། 1

ཇི་སྲིད་བྱ་ངན་འདས་པ་མིན། 1

བདག་མིན་གཞན་ཡང་མ་ཡིན་པ། 1

འདི་ནི་བདེ་བ་ཆེན་པོ་ཡིན། 1

1. 'ནལ་འབྱོར་.....ཡི།' ཆོག་ཤང་འདི་སྒྲར་ཐང་དང་པོ་ཀྱང་གི་པར་མ་གཉིས་སུ་མི་སྒྲང་།

2. བགྱིས་ ལ།

3. བསྐྱབས་པའི་སྒྱུར་བ་ ལ། ཅོ།

4. བསྐྱབས་ ལ། ཅོ།

5. སྒྱུར་རོ་ བཤ། གསེར།

6. ལྟན་ཅིག་སྐྱེས་པའི་ཡེ་ཤེས་ རྒྱ་དཔེ།

གཡས་པས་ཅིག་ཤོས་ལག་པ་ཡི། །
 ཅན་པོ་དང་ནི་མིང་མེད་ཀྱིས། །
 ལོངས་སྤྱོད་ཀྱི་ནི་རྒྱལ་ས་གཉིས་ནི། །
 རྣལ་འབྱོར་པ་ཡིས་བཅོར་བྱས་ན། །
 གཞོན་ལུ་མ་ཡི་བདེ་བ་བཞིན། །
 དེ་ནས་ཡེ་ཤེས་སྐྱེ་བར་འགྱུར། །ཞེས་བྱའོ།

ཇི་བཞིན་གྱི་སྐྱེའི་དོན་ནོ། །དེ་ལྟར་དེ་བཞིན་བཞི་པ་ཡང་ཞེས་བྱ་བའི་དེ་བཞིན་
 སྐྱེའི་དོན་ནོ། །ཆོག་ས་བཅད་གཉིས་པོའི་དོན་ནི་སྐྱ་མའི་གདམས་ངག་ལས་ཤེས་པར་
 བྱའོ། །འདིར་སྐྱེའི་སྤྱེབ་སྦྱོར་²ལ་སོགས་པ་ནི་བཤད་པར་མི་བྱ་སྟེ། བདེ་བར་
 གཤེགས་པའི་ལུང་ཡིན་པའི་སྤྱིར་རོ། །གསང་བའི་སྐྱ་བཟོད་པར་བྱ་བ་བྱུད་པར་³
 དང་བཅས་པའི་དཔལ་ཉེར་ཀྱི་ཡང་དག་པར་སྦྱོར་བར་སྟོན་ཏོ། །དེ་གཉིས་བཟོད་པར་
 བྱ་བ་དང་འབྲེལ་བ་ལ་སོགས་པ་དང་། བསྐྱབ་པར་⁴འདོད་པས་སྤྲུགས་བཟུངས་ཞེས་
 བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། སྤྲུགས་ནི་རྒྱང་པ་བརྒྱད་པ་ལ་སོགས་པའོ། །དེ་
 རྣམས་ཉིད་ཡང་དང་ཡང་དུ་སྒྲོས་པ་ནི་བཟུངས་པའོ། །བསམ་གཏན་ནི་སྤྱི་རྣམ་པ་ལ་
 སེམས་པའོ། །སོགས་ཀྱི་སྐྱས་ནི་རིམ་ལྔ་ནི་མཆོད་པ་དང་། སྤོ་ཉས་འདོད་པ་བསྐྱབ་

-
1. ལག་པ་ཡིས་ བཤེས།
 2. སྐྱེའི་བདེ་བ་སྦྱོར་ བཤེས།
 3. བྱུད་པ་ ཅོ།
 4. སྐྱབ་པར་ བཤེས།

པ་དང་། བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་ཀྱི་ཐིག་ལེས་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ལ་སོགས་པ་མཆོད་
 པ་དང་། སྤྲིག་པ་ཐམས་ཅད་ནམ་པར་དག་པས་ནལ་འབྱོར་ཉིད་དུ་བསྐྱབ་པ་དང་།
 དམ་ཆོག་བསྐྱང་བ་དང་དམ་ཆོག་བསྐྱང་བ་དང་། བདུད་ཅི་ལྟ་བུ་བཟའ་བ་དང་ཆོགས་
 ཀྱི་འཁོར་ལོར་¹ ཟླ་བའི་བདུང་བ་བཞིན་དུ་བདུད་ཅི་ལྟ་བུ་བཟའ་བ་དང་། དབང་པོ་གཉིས་
 ཀྱི་སྦྱོར་བ་དང་། ལྷ་རྩལ་གྱི་བདེ་བའི་སྤྲུལ་པ་དང་། རི་སྤྲུལ་དང་ཚང་ཚོང་ལ་སོགས་
 པའི་གནས་དང་། དཀྱིལ་འཁོར་ལ་སོགས་པའི་དེ་ཉིད་བརྒྱ་དང་། ཟླ་མ་དང་དཔའ་པོ་
 དང་དཔའ་མོའི་དབང་ཕུག་མའི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་མཆོད་པ་དང་། སྦྲོབ་མ་དཀྱིལ་
 འཁོར་དུ་གཞུག་པ་དང་། དེ་ནས་དབང་སྦྱིན་པ་དང་། ཕུག་ཏུ་དང་སྦྲོབ་དཔོན་གྱི་
 མཆོད་པ་དང་། མཁའ་འགྲོ་མའི་ས་གནི་ལ་རོལ་པ་དང་། སྤྲུལ་བདུང་བ་དང་རིག་
 པའི་བྱུང་པོའི་ལས་ཀྱི་ཆོགས་དང་། འཛིག་ཉེན་པའི་དངོས་གྲུབ་བརྒྱུད་བསྐྱབ་པ་དང་།
 བདའི་ཆོག་དང་ལས་ཀྱི་ཕུག་ཏུ་མཆོད་ཉིད་དང་། དེ་གཉིས་ཀྱི་འགྲོ་བ་དང་འོང་
 བའི་བྱ་བ་བརྗོད་པ་དང་། མཁའ་འགྲོ་མའི་མཆོད་ཉིད་དང་། ཕུག་ཏུ་དང་ཕུག་ཏུ་
 ལན་བརྟན་པ་དང་། དམ་ཆོག་མི་བརྗོད་པ་² དང་། འཛིག་ཉེན་དང་འཛིག་ཉེན་ལས་
 འདས་པའི་དམ་ཆོག་ཆེན་པོ་བརྒྱུད་དང་། གཅིག་ཏུ་ཙྰ་ཙྰ་(ཙ་ཙ་)བཟའ་བ་དང་
 གཏོར་མ་སྦྱིན་པ་དང་གནོད་མཛེས་བྱུང་པའི་སྤྲུལ་བདུང་བ་དང་། དེའི་ལས་ཀྱི་ཆོགས་
 བསྐྱབ་པ་དང་། སྤྲུལ་གྱི་གཟུལ་བརྟན་བསམ་གཏན་དང་ནམ་པར་མི་རྟོག་པའི་³ དེ་

1. འཁོར་ལོས་ གསེར། བེ།

2. དམ་ཆོག་བརྗོད་པ་(སམ་ཡན་མཁའ་མཁའ་) ཏུ་དཔེ།

3. མི་རྟོག་པའི་ཡེ་ཤེས་ རྟེན། ཅོ།

ཉིད་བསྐྱོམ་པ་དང་། འཛིག་རྟེན་ལས་འདས་པའི་མཆོག་དང་། དེ་ནས་ཡང་ཞལ་
 བཞི་པའི་སྤྲུག་གི་ཆོག་དང་བཅས་པའི་དཔལ་བོ་དང་དཔལ་མོའི་དབང་ཕྱུག་མ་
 རྣམས་ནང་དུ་གཏོགས་པའི་སྤྲུག་གི་རྩི་རྩེ་ལ་སོགས་པའི་སྤྲུག་གི་བཟུངས་པ་དང་།
 གནས་ལ་སོགས་པའི་ས་བརྩ་དང་། ཡུལ་ཉི་ཤུ་ཙ་བཞི་བརྟན་པ་དང་། རུབ་མོ་
 སྤྲུག་གི་གོས་ལ་སོགས་པ་བྱང་ཆུབ་གྱི་སྤྲུག་གི་ཆོས་སུམ་ཙ་ཙ་བདུན་དང་། དེ་
 རྣམས་ཐོད་པའི་དུམ་བུ་ལ་སོགས་པ་དཔལ་བོ་ཉི་ཤུ་ཙ་བཞི་ཁམས་རྣམ་པར་དག་པ་དང་།
 མཁའ་སྤྱོད་དང་ས་སྤྱོད་གྱི་སྒྲ་མོའི་གཟུགས་བཤེ་བ་དང་། ཙ་ཉི་ཤུ་ལ་སོགས་སུམ་ཙ་ཙ་
 བདུན་གྱི་འཁོར་ལོ་ཀུན་དུ་སྤྱོད་པ་མགོ་བཟུག་པ་དང་ལོངས་སྤྱོད་པ་དང་བཅིམ་པ་དང་།
 དབང་དུ་བྱེད་པ་དང་། ཆོས་གྱི་འཁོར་ལོ་བསྐྱོར་བ་དང་། དེ་ནས་སྤྱུལ་པ་དང་།
 ལོངས་སྤྱོད་པ་དང་། ཆོས་རྣམ་པར་དག་པའི་སྤྱི་རང་བཞིན་དང་། སྤྱོད་པ་དང་
 སྤྱོད་རྩེ་དབྱེར་མེད་པ་ཉིད་ཅེས་བྱ་བ་སྟེ་དེ་རྣམས་བསྟུ་བའོ། །སྤྱོད་བཞི་ཞི་བ་དང་
 རྒྱས་པ་དང་དབང་དང་མངོན་སྤྱོད་ལ་སོགས་པའི་ལས་གྱི་ཉིང་ངེ་འཛིན་ནོ། །ཆོ་གའི་
 ཡེ་ཤེས་ནི་བྱ་བ་ཉིད་ཅེས་བྱ་བ་ནི་ཆོག་སྟེ། ལེགས་པར་དབྱེད་པ་ལ་སོགས་པའི་
 ལས་སོ། །དེའི་ཡེ་ཤེས་ནི་ཤེས་པར་བྱ་བ་ཉིད་དེ་ལ་ཡོད་པས་ན་དེ་བརྟན་པའོ། །

མར་གྱིས་གང་བའི་བུམ་པ་ནི། 1

མེ་ཡི་སྟེང་དུ་བཞག་གུར་ན། 1

མར་ནི་ཁྱ་ཞིང་ཁྱ་གུར་ནས། 1

སྤྱོད་གྱི་རྩི་མ་ཉམས་པར་བྱེད། 1

1. དཔལ་མོའི་དབང་ཕྱུག་མ་རྣམས་ལ་དུ་ཏོགས་སྟེ། ཙ་ ཙ་

ཉེ་རུ་ཀ་དཔལ་ཞེས་མིང་གིས། 1

དེ་བཞིན་སྤྲིག་པ་འཛོམས་པར་བྱེད་ཀྱི། 1

ཅེས་པའི་ཆོག་གིས་སོ། 1 ཡང་ན་འདིར་ཆོག་ནི་འདས་པ་དང་མ་འོངས་པ་དང་ད་
ལྟར་བྱུང་བའི་ངོ་བོ་ཉིད་དུས་གསུམ་སོ། 1 ཡེ་ཤེས་ནི་ཡེ་ཤེས་པ་²བརྒྱད་ཀྱི་ལུས་སོ། །
ཆོག་ཡང་ཡིན་ལ་ཡེ་ཤེས་ཀྱང་ཡིན་པས་ན་ཆོག་འི་ཡེ་ཤེས་སོ། 1 སྦྱོར་བ་ནི་ཆོག་འི་
ཡེ་ཤེས་ཉིད་དོ། 1 གསང་བ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པའི་ཆོག་གིས་བཞེད་པར་བྱ་བ་
བཞད་དོ་ཞེས་བྱ་བར་སྦྱར་རོ། 1 རྒྱུད་ནི་ནམ་མཁའ་དང་མཉམ་པའི་རྒྱུད་དོ། 1
གསུངས་པ་ནི་མ་ལུས་པ་ཡང་དག་པར་བསྐྱས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་འདིར་གསང་བ་ཞེས་
བྱ་བ་ལ་སོགས་པའི་ཆོག་གིས་བཞེད་པར་བྱ་བ་ཉིད་དུ་གསུངས་སོ། 1 དེ་ནས་ཡང་
མཉམ་པར་གྱིས་ནི་དོན་ཤེས་པ་ལས་ཏེ་དེའི་བསྐྱབ་བྱ་ནི་གསང་བ་ཉིད་ཡིན་པར་
དགོངས་སོ། 1 མདོར་བསྐྱས་པའི་རྒྱུད་ཀྱི་གཞུང་གཞན་ཡིན་པ་ལ་འགལ་བ་མེད་དོ། 1
གལ་ཏེ་འདི་སྐད་ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་རྒྱུད་དུ་ནི་གསུངས་པ་⁴འདིར་མ་བརྟན་ན།
སྤར་མ་བྱུང་བ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར། 1 འདིར་ཅིའི་ཕྱིར་མི་སྟོན་ཞེ་ན་⁵མ་ཡིན་ཏེ། 1 ཅ་བའི་རྒྱུད་
ཀྱི་བཞེད་པར་བྱ་བ་དང་འབྲེལ་བས་སྟོན་མ་བྱུང་བ་⁶ཉིད་མེད་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། 1

1. གཞུང་འདི་ཉིད་ཀྱི་ལེའུ་ང་གཅིག་པའི་ཆོག་གསུ་བཅད་པ་ལ-༡།

2. ཡེ་ཤེས་ནི་ཤེས་པ་ གསེར། བེ།

3. སྦྱོར་རོ་ གསེར།

4. རྒྱུད་དུ་ནི་གསང་བ་ གསེར། བེ།

5. ཅ་ན་ གསེར། བེ།

6. མདོར་མ་བྱུང་བ་ གསེར། བེ།

གལ་ཏེ་“དག་སྒྲིང་དག་འདི་སྐད་བདག་གིས་ཐོས་པ་དུས་གཅིག་ན་ཞེས་བྱ་བ་ལ་
 སོགས་པས་འཆོས་བསྐྱ་བར་བྱའོ”ཞེས་གསུངས་པའི་ཕྱིར་འདི་ནི་སྐད་པ་པོ་ཉིད་
 དང་²། དེ་དང་འབྲེལ་བ་ཡིན་ནམ་ཞེ་ན་མ་ཡིན་ཏེ་³། སྐད་པ་པོས་ཀྱང་བཅོམ་
 རྒན་འདས་ཀྱིས་གསུངས་པའི་རྗེས་བྱེད་དང་བརྗེས་བྱེད་འོ་པོ་ཉིད་ཀྱི་ཀླད་བསྐྱས་པའི་
 ཕྱིར་རོ། །གལ་ཏེ་བཅོམ་རྒན་འདས་མ་སྟོན་པ་པོ་ཡིན་ན། དེའི་ཆེ་བཞུགས་ཞེས་བྱ་
 བ་ལ་སོགས་པའི་ཆོག་གི་དོན་དང་ཇི་ལྟར་འབྱོར་ཞེ་ན། བཞུགས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་
 པའི་ཆོག་ནི་དེ་རྒྱུ་དཔལ་ཡང་དག་སྒྲིང་གིས་བཤད་དོ། །དེ་ཡང་ཇི་ལྟར་བྱ་ཞེ་ན།
 གསང་བ་མཆོག་གི་ནི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་པ་དང་སྐར་རོ། །ཀླད་ནི་
 འདིས་དོན་གྱི་ཉོགས་པ་བསྐྱེད་པས་སྒྲིའི་ཆོགས་སོ། །འདིར་དོན་ཐ་དད་གསུམ་
 ཡིན་ཏེ། ཀླ་འབྲས་ཐབས་ཀྱི་རང་བཞིན་ནོ། །འབྲས་བུ་ནི་ཆེ་བའི་འོ་པོ་ཉིད་⁴ཀྱན་ཏུ་
 བཟང་པོ་འོ། །ཀླ་ནི་འདི་གོམས་པའི་གནས་སྐབས་ཀྱི་བྱེད་པར་རྗེས་པ་ཉིད་དེ། ཀླ་
 ཡང་⁶དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་ལྷའི་ཆོགས་སོ། །ཐབས་ཀྱང་འབྱུང་བ་བཞི་དང་རི་རབ་དང་
 གནལ་ཡས་ཁང་ལ་སོགས་པའོ། །ཀླད་ནི་འདིར་དེ་བཞིན་དུ་ཡང་⁷།

1. ཞེས་བྱ་བས་ གསེར། བེ།
2. སྐད་པ་པོ་ཉིད་ཀྱི་ཡིན་ལ་ གསེར། བེ།
3. ཡིན་ཞེ་ན་མ་ཡིན་ཏེ་ གསེར། བེ། ཡིན་ནམ་ཞེ་ན་མ་ཡིན་ ཙོ།
4. འོ་པོ་ཉིད་དུ་ གསེར།
5. ཀླད་འདི་ རྩ། ཙོ།
6. ཀླ་ཡིད་ ཙོ།
7. གསང་བ་འདུས་པ། ལེའུ་ཏུ་ རྒྱུག་ ༡༣-༡༤།

རྒྱུན་ལ་། རྒྱུད་དུ་བཞེད་པ་སྟེ། །
 དེ་རྒྱུན་དེ་ཡང་ནམ་པ་གསུམ། །
 རྟེན་དང་ཐབས་དང་ནམ་པས་ནི། །
 རྒྱུད་དོན་གསུམ་གྱིས་བསྐྱུས་པའོ། །ཞེས་གསུངས་སོ། །

གསང་བ་ཞེས་བྱ་བའི་ཆོག་གིས་ཤིན་ཏུ་མདོར་བསྐྱུས་ནས་མ་ལུས་པའི་རྒྱུད་ཀྱི་བཞེད་
 པར་བྱ་བ་བརྟན་ཏོ། །དེ་ནས། ཉེ་ཏུ་ཀ་དཔལ་ཡང་དག་སྟོར། །ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་
 པར་རྒྱས་པར་དགྲོལ་བར་དགོངས་ནས་བརྟན་པའོ། །འདི་ན་མར་ཤིན་ཏུ་རྒྱས་པར་
 རི་རྒྱུད་རྫོགས་པའི་བར་གྱིས་གསུངས་སོ། ། ༥ །

དབུགས་འབྱེན་བར་མ་མཆོག་དག་དང་། །
 དྲི་ཡི་ཁུ་དང་བཅས་པས་ཀྱང་། །
 རྣལ་འབྱོར་པས་དུས་ཁྱད་པར་དུ། །
 རིགས་ལྡན་ཏུ་མཆོད་པར་བྱ། ༦ །

དེ་ཉིད་དབུགས་དབྱུང་བར་མ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། བར་མ་དང་
 མཆོག་ནི་འདིར་འདིས་སོག་འཛིན་པས་ན་དབུགས་སམ། དུས་ཡིན་པས་ན་དབུགས་
 ཞེས་བྱའོ། །བར་མ་ནི་མེ་སྟེ་ས་ཁུ་མེ་རྩུང་ཞེས་གསུངས་པས་བར་མ་འགྱུར་པ་ཉིད་
 ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །བར་མ་གྱུར་པ་ཉིད་ཀྱང་ཡལ་པ་གང་ཡིན་པར་གཟུང་བ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་

-
1. རྒྱུད་ལ་ སྟེ། ཙོ།
 2. བར་མར་གྱུར་པ་ བེ། གསེར།
 3. ཐབས་(ལུས་ལ) རྒྱ་དཔེ།

ཏེ་བཟླ་དེོ། །མཆོག་ནི་དབང་ཆེན་ཏེ་ལྷའི་ཀྱལ་པོ་ཉིད་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །བར་མ་
 དང་མཆོག་གི་དབུགས་ནི་གནས་སམ་དུས་ཀྱི་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། །དེས་ན་རིགས་
 ལྷན་མཆོད་པར་²བྱ། །ཞེས་བྱ་བར་སྦྱར་རོ། །ཇི་ལྟ་བུར་གྱུར་པ་ལ་ཞེ་ན། ཇི་ཞེས་
 བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། འདི་ལ་དྲི་ཡོད་པས་ན་དྲི་སྟེ། ཇི་ཕྱི་བ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་³
 རྒྱུར་རོ། །གང་ལ་ཁྱུ་ཡོད་པ་དེ་ནི་རྒྱུའོ། །དེ་གཉིས་ཀྱི་གནས་དང་འདི་བཅས་པས་
 དྲིའི་རྒྱ་དང་བཅས་པ་ཞེས་བྱ་སྟེ། ཆོག་བར་མ་ཕྱིས་པ་ནི་བསྐྱུ་བ་སྟེ་མར་གྱིས་གང་
 བའི་བུམ་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལྟ་བུའོ། །ནི་ཞེས་པས་ནི་ཆོག་གི་ཁ་བསྐང་བའོ། །འདིའི་དོན་
 ནི་རིགས་ལྷན་ནི་ནལ་འབྱོར་མ་སྟེ། དེ་མཆོད་པར་བྱེད་པ་ནི་མཉེས་པར་བྱེད་པའོ། །
 ཉུག་ཏུ་ནི་དུས་ཐམས་ཅད་དུ་སྟེ་དེ་ཉིན་རེ་ཞིང་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ནོ། །དུས་ཀྱི་ཁྱད་
 པར་ནི་དུས་ཀྱི་ཁྱད་པར་ཏེ། དཀར་པོའི་ཕྱོགས་ཀྱི་⁴ཆོས་གཅིག་ལ་སོགས་པ་ལ།
 གདམས་ངག་ཇི་ལྟ་བུ་བཞུགས་དུ་བྱུང་བྱེད་ཀྱི་ཆ་ནམས་སུའོ། །དཀར་པོའི་ཆོས་གཅིག་
 ནས་གཟུང་སྟེ་སྤྱོད་པར་བྱུང་བྱེད་ལ། སྤྱི་ལས་སྦྱོས་པའི་མགོ་བོ་ལ། ཨོྫོ ཀར་
 ཀར་ བཅའ་⁶ རྩྱི རྩྱི བུ་⁷ ཅེས་བྱ་བའི་སྤྲུགས་ལས་སྦྱོས་པའི་རབ་གདུམ་མོ་

1. གནས་སམ་དུ་ སྟེ། ཅོ།

2. མཆོག་པར་ གསེར།

3. ཉིད་ཀྱི་ སྟེ། ཅོ།

4. ཕྱོགས་ཀྱིས་ གསེར།

5. སྤྱི་ལས་ སྟེ། ཅོ། སྤྱི་ལས་ བོ།

6. བཅའ་ སྟེ། ཅོ། གཞུང་འདིའི་ཡན་ཆད་དུ་གསལ་བའི་ལྟ་མོའི་མཆོན་སྤྲུགས་ནམས་ཀྱི་དཔེ་
 གཞིར་བཟུང་བཞོད་ཡོད།

7. རྩྱི་དཔེར་འདིའི་ཡན་ཆད་དུ་ཡོད་པའི་སྤྲུགས་ནམས་ཀྱི་མཐར་‘མུ’བསྐྱར་བ་ལྷན་བྱས་པ་གསལ།

བསྐྱེམ་པར་བྱའོ། །གཉིས་པ་ལ་རྩྭ་ལས་སྐྱེས་པའི་སྤྱི་གཙུག་དུ། ཡོ་ ཀུར་ ཀུར་
 ཅན་ ཡེ་ཡེ།¹ རྩྭ་ བཟ། ཅེས་བྱ་བའི་སྤྱེས་ལས་སྐྱེས་པའི་གདུམ་མིག་མའོ། །
 གསུམ་པ་ལ་ཡོ་ལས་སྐྱེས་པའི་ན་བ་གཡས་པ་ལ། ཡོ་ བརྒྱ་ བརྒྱ་ བརྒྱ་བཟྱེ་² རྩྭ་
 བཟ། ཅེས་བྱ་བའི་སྤྱེས་ལས་སྐྱེས་པའི་འོད་ལྗན་མའོ། །བཞི་པ་ལ་ཡོ་ལས་སྐྱེས་
 པའི་མགོ་བོའི་ལྷག་པར། ཡོ་ རྒྱས་ཡ་ རྒྱས་ཡ་⁴ མདུན་སེ རྩྭ་ བཟ། བཟ། ཅེས་
 བྱ་བ་ལས་སྐྱེས་པའི་སྤྱི་ཆེན་མའོ། །ལྔ་པ་གོ་ལས་སྐྱེས་པའི་ན་བ་གཡོན་པ་ལ། ཡོ་
 རྒྱེ་ལྷ་ རྒྱེ་ལྷ་ རྒྱེ་ར་ མཟྱེ་⁵ རྩྭ་ བཟ། ཅེས་བྱ་བའི་སྤྱེས་ལས་སྐྱེས་པའི་དཔའ་
 བོའི་སྤྱི་ཅན་མའོ།⁶ །དུག་པ་རྩྭ་ལས་སྐྱེས་པའི་སྤྱི་ཆེན་མའི་དབུས་སུ། ཡོ་ རྩྭ་
 རམ་རི་⁸ རྩྭ་ བཟ། ཅེས་བྱ་བའི་སྤྱེས་ལས་སྐྱེས་པའི་མེ་ཐུང་མའོ།⁹ །བདུན་པ་
 རྩྭ་ལས་སྐྱེས་པའི་མིག་གཉིས་ལ། ཡོ་ ཅུ་ཅུ་ ལྟེ་ཤུ་¹¹ རྩྭ་ བཟ། ཅེས་བྱ་

1. ཅན་ཡེ་ཡེ། བཟ། གསེར།

2. བརྒྱ་བཟྱེ་ཡེ་ བོད་འགྲུར་པར་མ་ནམས་སུ་གསལ།

3. སྤྱེས་ལས་ལས་ རྩྭ།

4. རྒྱས་ཡ་རྒྱས་ཡ་ གསེར། རྒྱས་ཡ་རྒྱས་ཡ་ བཟ།

5. རྒྱེ་ར་མཟྱེ་ བོད་འགྲུར་པར་མ་ནམས་སུ་གསལ།

6. དཔའ་བོའི་སྤྱི་ཅན་ གསེར། བཟ།

7. རྩྭ་ལས་ ཅོ།

8. རམ་རི་ཡེ་ བོད་འགྲུར་པར་མ་ནམས་སུ་གསལ།

9. མེ་ཐུང་མའོ་ བཟ། གསེར།

10. རྩྭ་ལས་ གསེར། བཟ།

11. ལྟེ་ཤུ་ཡེ་ བོད་དཔེ་ནམས་སུ་གསལ།

བའི་སྐགས་ལས་སྐྱེས་པའི་ལྟེན་དབང་ཕྱག་མའོ། །བཟུང་པ་མྱོ་ལས་སྐྱེས་པའི་སྐག་
 པ་གཉིས་ལ། ཨོ་མོ་མོ་ རུམ་རྒྱལ་ རྒྱུ་ བཟ། ཅེས་བྱ་བའི་སྐགས་ལས་སྐྱེས་པའི་
 བེད་གྲིབ་མ་སྟེ་ཕྱགས་ཀྱི་འཁོར་ལོའོ། །ལྷ་མོ་ནམས་ཀྱི་གདན་ནི་ཉིན་མོའི་ཆ་ལ་མའི་
 དཀྱིལ་འཁོར་རོ། །མཆན་མོ་དང་པོའི་བུན་ཕྱེད་ལ་གླི་ལས་སྐྱེས་པའི་མཆན་ཁྲུང་
 དག་དུ། ཨོ་ བཟམཟ ཨེ་བཟྱེ་ རྒྱུ་ བཟ། ཅེས་བྱ་བའི་སྐགས་ལས་སྐྱེས་པའི་
 ས་སྤངས་མ་²བསྐྱོམ་པར་བྱའོ། །གཉིས་པ་ལ་ཨོ་ལས་སྐྱེས་པའི་རྒྱ་མ་དག་ལ། ཨོ་
 དད་ དད་ མདྲ་རྟེན་པེ་³ རྒྱུ་ བཟ། ཅེས་བྱ་བའི་སྐགས་ལས་སྐྱེས་པའི་འཛིགས་ཕྱེད་
 ཆེན་མོའོ། །གསུམ་པ་ལ་ཧྲི་ལས་⁴སྐྱེས་པའི་སྟེ་བ་ལ། ཨོ་ པཅ་ པཅ་ བུ་ཡུ་བེག་ རྒྱུ་
 བཟ། ཅེས་⁵བྱ་བའི་སྐགས་ལས་སྐྱེས་པའི་རྒྱུང་གི་ཕྱགས་ཅན་མའོ། །བཞི་པ་ལ་གླི་
 ལས་སྐྱེས་པའི་སྤྲ་ཅེར། ཨོ་ རྟུ་ རྟུ་ བསྐྱུར་ཉེར་ ཨུ་ལྷ་ལུ་བལྟ་བེན་ སུར་རྟུ་⁶ རྒྱུ་
 བཟ། ཅེས་བྱ་བའི་སྐགས་ལས་སྐྱེས་པའི་ཆང་འབྲུང་མའོ། །ལྔ་པ་ལ་གླི་ལས་སྐྱེས་པའི་
 ཁ་ལ། ཨོ་ བྱི་རྩ་ བྱི་རྩ་⁷ སལ་པ་དུ་ལ་ གདུ་ རྒྱུ་ལྟོ་ སལྟོ་ ལྷོ་⁸ ཏེ་ལ་ ཏེ་ལ་ ཕྱུ་ལྟོ་⁹

1. ཨེ་བཟྱེ་ལྟེ་ བོད་དཔེ་ནམས་སྐགས་ལ།

2. སྐྱེས་པའི་སྤང་མ་ བེ།

3. མདྲ་རྟེན་ལྟེ་ བོད་དཔེ་ནམས་སྐགས་ལ།

4. ཧྲི་ལས་ རྟེ། ཅོ།

5. ཞེས་ བེ། གསེར།

6. བཟུར་ཉེར་ ཨུ་ལྷ་ལུ་བལྟ་བེན་ སུར་རྟུ་ལྟེ་ བོད་དཔེ་ནམས་སྐགས་ལ།

7. བྱི་རྩ་བྱི་རྩ་ གསེར། བེ།

8. སལ་པ་དུ་ལ་ གདུ་རྒྱུ་ལྟོ་ སལྟོ་ གསེར། སལ་པ་དུ་ལ་ གདུ་རྒྱུ་ལྟོ་ སལྟོ་ རྟེ། ཅོ། བེ།

9. ཕྱུ་ལྟོ་ བོད་འགྲེལ་པར་མ་ནམས་སྐགས་ལ།

མོ་ནམས་ཀྱི་གདན་ནི་དབང་ཆེན་གྱི་དཀྱིལ་འཁོར་རོ། །དེ་ནི་དཀྱིལ་མཆན་མོའི་དང་
 པོའི་ཐུན་གཉིས་ལ་རབ་གདུམ་མ་དང་གདུམ་མའི་མིག་ཅན་མ་དང་འོད་ཟུན་མ་དང་།
 ལྷ་ཆེན་མ་ནམས་དང་ཉེ་བར་གོ་རིམ་²་བཞིན་དུ་ཁྲ་གདོང་མ་དང་། འུག་གདོང་མ་
 དང་། ཁྱི་གདོང་མ་དང་། བག་གདོང་མའོ། །གཉིས་པའི་³་གཉིས་པ་ལ་དཔའ་
 པོའི་ཁྲོ་མ་⁴་དང་། མེ་ཐུང་མ་⁴་དང་། ལྟའི་དབང་ཐུག་མ་དང་། སྒྲིང་གི་བ་མ་
 ནམས་དང་ཉེ་བར་གོ་རིམས་བཞིན་དུ། གཤིན་རྗེ་བཟན་མ་དང་། གཤིན་རྗེ་ཕོ་ཉ་མ་
 དང་། གཤིན་རྗེ་མཆེ་བ་མ་དང་། གཤིན་རྗེ་འཛོམས་མ་ནམས་བསྒྲོམ་པར་བྱའོ། །
 དེ་ལྟར་ཡང་ཆོས་གསུམ་པའི་ཉིན་ཞག་ལ་ཐུགས་དང་གསུང་གི་འཁོར་ལོའོ། །དེ་
 ནས་ཡང་ཆོས་བཞི་པ་ལ་སྒྱུའི་འཁོར་ལོ་དང་དྲུང་ཁྲིད་མ་ནམས་ཏེ། རྣལ་འབྱོར་མ་
 སུམ་ཅུ་ཅ་གཉིས་ཀྱི་ཀུན་དུ་སྦྱོད་པའོ། །དེ་ལྟར་ཆོས་ཁྲ་ལ་སོགས་པ་ནམས་ཀྱང་གོ་
 བར་བྱའོ། །དཔལ་ཉེར་ཀྱང་མཁའ་འགོ་མ་ལ་སོགས་པ་བཞིའི་རྣལ་འབྱོར་ནི་རྣམ་
 པར་ཤེས་པའི་འཁོར་ལོའོ། །འདི་ནམས་ལ་ཀུན་དུ་སྦྱོད་པ་མེད་དེ་གདམས་ངག་⁵
 མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །རི་སྒྲིང་ཟླ་བ་དུག་དུ་བསྒྲོམ་པ་དང་བཟུངས་པ་བྱ་སྟེ་མཆན་མ་ཐོབ་
 པར་བྱས་ནས་⁶། དེ་ནས་ཟླ་བ་བདུན་དུ་རྣལ་འབྱོར་མ་ནམས་ཀྱི་ཀུན་དུ་སྦྱོད་པའོ།

1. 'འོད་ཟུན་མ་དང་' བོད་དཔེ་ནམས་སུ་མེད་ཀྱང་ཆུ་དཔེ་བཞིན་གོང་དུ་བཀོད་པ་ཡིན།
2. ཉེ་བར་གོ་རིམས་ རྟེན། ཅོ།
3. དཔལ་པོའི་ཁྲོ་མ་ ཅོ།
4. མེ་ཐུང་མ་ གསེར། བེ།
5. གདམ་ངག་ བེ།
6. བྱས་ན་ བེ། གསེར།

དེ་ལྷར་བྱས་ཀྱང་གལ་ཏེ་མ་གྲུབ་ན་ཡང་དེ་བཞིན་དུ་བསྐྱེམ་པར་བྱའོ། །འདིར་ཟླ་བ་
 ལུམ་ཅུ་ཅ་དུག་གིས་ངེས་པར་འགྲུབ་པར་འགྱུར་བ་ནི་གདམས་ངག་གོ། །བར་མ་ཆད་
 པར་རྒྱན་དུ་བསྐྱེམས་ན་ལོ་གཅིག་གིས་སོ། །དེ་ནས་ཟླ་བ་དུག་དུ་གོམས་པའི་རིམ་
 པས་སོ། །མེ་ལ་སོགས་པའི་སྦྱོར་བས་མངོན་སྦྱོང་ལ་སོགས་པ་ཡང་དེ་བཞིན་དུ་གེས་
 པར་བྱའོ། །དེ་ལྷར་མངོན་སྦྱོང་ནི་ཐུགས་ཀྱི་འཁོར་ལོའི་མེའི་དུས་ནའོ། །ཞི་བ་ལ་ནི་
 གསུང་གི་འཁོར་ལོའི་རྒྱུ་དུས་ནའོ། །ཀྱས་པ་ལ་ནི་སྦྱུའི་འཁོར་ལོའི་དབང་ཆེན་གྱི་
 དུས་ནའོ། །སྦྱོང་པ་ལ་ནི་དུར་བྱོད་ཀྱི་འཁོར་ལོའི་རྒྱུ་གི་དུས་ནའོ། །ནལ་འབྱོར་མ་
 ནི་གང་ཡང་རུང་བ་བསྐྱེམ་སོ། །མེའི་རྒྱུ་ནི་སོར་བཞིའོ། །དབང་ཆེན་གྱི་རྒྱུ་ནི་
 སོར་བཅུའོ། །རྒྱུ་གི་རྒྱུ་ནི་སོར་དུག་གོ། །རྒྱུའི་རྒྱུ་ནི་སོར་བཅུ་གཉིས་པའོ། །

མེ་དང་དབང་ཆེན་རྒྱུ་དང་རྒྱ། །

བཞི་དང་བཅུ་དང་དུག་བཅུ་གཉིས་²། །

སོར་མེའི་ཆད་ཀྱིས་³སྦྱར་འབྱུང་བའི། །

གནས་ནི་ངེས་པ་ཉིད་ཡིན་ནོ། །

འོན་ཀྱང་ཉེང་དུ་འགྲོ་ཞིང་དྲོ་བ་ནི་མེའི་རྒྱུ་འོ། །ཤིན་དུ་གང་བ་ཡང་མ་ཡིན། །
 ཤིན་དུ་དྲོ་བ་ཡང་མ་ཡིན་ཞིང་སྒྲིའི་བྱ་ག་གང་བར་རྒྱ་བཞི་སའི་རྒྱུ་འོ། །ལོགས་སུ་
 རྩལ་པར་རྒྱ་བཞི་རྒྱུ་གི་རྒྱུ་འོ། །ཤིན་དུ་གང་བ་འོག་དུ་རྒྱ་བཞི་⁴རྒྱུའི་རྒྱུ་འོ། །

1. ལྷན་དུ་ རྩེ། ལྷན་དུ་ ཅོ། གསེར།

2. དུག་ཅུ་གཉིས་ རྩེ། དེ། ཅོ། དུག་ཅུ་གཉིས་སོ། གསེར། ཞོང་དེར་རྒྱ་དཔེ་བཞིན་བཞོད་ཡོད།

3. ཆད་ཀྱི་ དེ། གསེར།

4. ལྷན་ གསེར།

དེ་ལ་མེ་ལ་སོགས་པའི་དགྲིལ་འཁོར་ལ་མེ་ནི་གྲུ་གསུམ་དམར་པོ་ཅི་མོ་བདུན་གྱིས་¹
 མཚན་པའོ། །དབང་ཆེན་ནི་སེར་པོ་གྲུ་བཞི་དྲེས་མཚན་པའོ། །རྒྱུད་ནི་གཞུ་ཆ་བྱ་
 རྩེན་པོ་བ་དན་གྱིས་མཚན་པའོ། །ཁུ་ནི་རྒྱམ་པོ་དཀར་པོ་བུམ་པས་མཚན་པའོ། །
 རྒྱུད་ཕྱིར་རྒྱ་བས་མེ་ལ་སོགས་པའི་དུས་གོ་བར་བྱའོ། །རིགས་ལྡན་གྱི་མཆོད་པ་བཞུན་
 པ་ནི་དངོས་གྲུབ་དང་པོར་བཞུན་པ་སྟེ། དེ་ནི་ད་བསྐྱབ་བྱ་གཙོ་བོ་ནི་ད་ཡིན་པས་སོ། །

ཕོ་ཉ་ལྡན་ཅིག་སྐྱེས་གྲུབ་མ། །

མཆོག་དང་འབྲིང་དང་ཐ་མ་སྟེ། །

ཡིད་ནི་ནང་དུ་རྒྱད་པ་ཡིས། །

འདོད་པ་ཡིས་ནི་དངོས་གྲུབ་བྱ། ག །

རིགས་ལྡན་ཇི་ཙམ་ཡིན་ཞེས་པ་ལ། ཕོ་ཉ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །
 རྒྱར་རིགས་ལྡན་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རིགས་གཅིག་པ་ཙམ་ལ་གཅིག་གི་ཆོག་དུ་བྱས་པའོ། །
 དེ་ཡང་སེམས་ཅན་སྤྱུག་བསྐྱེད་པ་ལ་གདུང་བས་ན་ཕོ་ཉ་འོ། །ཕོ་ཉ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་མང་
 པོའི་ཆོག་གོ། །རིཌ་ལྡན་དང་ཕོ་ཉ་ནི་མིང་གི་ནམ་གངས་སོ། །དེ་ལྡན་ཅིག་སྐྱེས་པ་ནི་
 བཙུམ་ལྡན་འདས་གྱི་རང་བཞིན་དང་མཉམ་པ་²མཁའ་འགྲོ་མ་བཞི་ལ་སོགས་པའོ། །
 དེ་དེའི་ཡེ་ཤེས་གྱི་རང་བཞིན་ནོ། །དངོས་གྲུབ་ནི་གཤེན་ཇི་བཞུན་མ་ལ་སོགས་པའི་
 རྣམ་འབྱོར་མ་བརྒྱད་དོ། །ཐ་མ་ནི་སྐྱུའི་འཁོར་ལོར་གཏོགས་པའི་ས་འོག་ན་གནས་

1. བདུན་གྱི་ བོ། གསེར།

2. མཉན་པར་ བོ། གསེར།

པའོ། །འབྲིང་ནི་གསུང་གི་འཁོར་ལོར་གཏོགས་པའི་ས་ལ་སྤྱོད་དོ། །མཆོག་ནི་
 ཐུགས་ཀྱི་འཁོར་ལོར་གཏོགས་པའི་མཁའ་ལ་སྤྱོད་པའོ། །འདིས་ནི་ནལ་འབྱོར་མ་
 སུམ་ཙུ་ཙ་དུག་ཉིད་མཆོད་པར་བྱའོ་ཞེས་དགོངས་སོ། །ལུས་དང་ཕྱིའི་དཀྱིལ་འཁོར་
 གཉིས་བསྐྱབ་བྱ་དཔལ་ཉེར་ཀྱི་ཡིན་པར་གྱུ་བ་པོ། །ཅི་གོམས་པ་དང་ལྡན་པས་བསྐྱོམ་
 པར་བྱ་ཞེས་པ་ལ། ཡིད་ནང་དུ་ཐུད་པས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །
 འདོད་པ་ནི་གཟུགས་དང་སྐྱ་ལ་སོགས་པའོ། །དེ་ནམས་ཀྱིས་སམ་དཔལ་ཉེར་ཀྱིའི་
 དངོས་གྱུ་བ་ནི་འདོད་པའི་དངོས་གྱུ་བ་སྟེ། བསྐྱོམ་པར་བྱ་བའི་དངོས་པོ་ནི་རང་ལ་
 ཡོད་པར་བྱའོ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །འདོད་པའི་དོངས་གྱུ་བ་ཡོད་པ་ཡིན། ཞེས་པའི་
 བར་རོ། “འདོད་པ་གཟུགས་དང་སྐྱ་ལ་སོགས་པའི་^{2,3}” ཞེས་གསུངས་པས་སོ། །དེ་ལྟ་
 བྱ་ཉིད་ཅེས་པ་ལ་ཡིད་ནི་ཞེས་གསུངས་ཏེ། ནམ་པར་ཤེས་པས་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །
 “སེམས་དང་ཡིད་དང་ནམ་ཤེས་དང་། ཡང་ན་ནམ་པར་རིག་བྱེད་དོ།” ཞེས་
 གསུངས་པའི་ཕྱིར་རོ། །ནང་དུ་ཐུད་པ་ནི་རང་དང་དབྱེར་མེད་པའི་དཔལ་ཉེར་ཀྱིའི་
 གཟུགས་སུ་བསམ་པར་བྱའོ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། །འདོད་པ་ཐམས་ཅད་ལ་ལོངས་
 སྤྱོད་པས་དཔལ་ཉེར་ཀྱིའི་ནལ་འབྱོར་འགྲུབ་པོ་ཞེས་བསམ་པའོ་⁵། །དེ་ལྟར་ཡང་།
 “འདོད་པའི་ལོངས་སྤྱོད་ཐམས་ཅད་ལ། །བརྟེན་ན་སྦྱར་དུ་འགྲུབ་པར་

1. བོད་དཔེ་ནམས་སུ་གཏོགས་པའི་སྤྱོད་དོ་གསལ་ཡང་གོང་དུ་བྱ་བའི་ལྟར་བཞག་ཡོད།

2. སྐྱ་ལ་སོགས་པ་ བེ། གསེར།

3. གསང་འདུས། ལེའུ་ ༡༥ གླེག་ ༡༥།

4. དེ་ལྟར་བྱ་ གསེར།

5. བསམས་པའོ་ བེ། གསེར།

འགྱུར།¹''ཞེས་གསུངས་པའི་ཕྱིར་རོ། ཞིའི་སྒྲིལ་ནི་ཉིད་ཀྱི་དོན་ཏོ། །བྱ་བ་མི་བྱེད་
 པས་ན་བསྐྱབ་བྱ་འགྱུབ་པ་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །བསྒྲོམ་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ནི་ཡིད་ཀྱི་རང་
 བཞིན་ནོ། །གཟུགས་ལ་སོགས་པའི་ཡུལ་ལ་ཉེ་བར་ལོངས་སྤྱོད་པའི་མཚན་ཉིད་དེ་²
 ཕྱིའི་མཚན་པའོ། ས །

རང་རྒྱས་ཐིག་ལེས་སངས་རྒྱས་དང་། །

བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་མཚན་པར་བྱ། །

མཐོང་བ་དང་ནི་རེག་པ་དང་། །

ཐོས་པ་འཇམ་ནི་དྲན་པ་ཡིས། ་ །

ཐིག་པ་ཀུན་ལས་གྲོལ་འགྱུར་བ། །

དེ་ལྟ་ཉིད་དུ་བྲེ་ཚོམ་མེད། །

ནལ་འཕྱོར་པ་ཉིད་བསོད་ནམས་མཚོག། །

དག་བྱེད་ཐིག་པ་འཛོམས་བྱེད་པ། ། །

དངོས་ཀྱི་མཚན་པ་ནི་རང་རྒྱས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། ཕྱི་རོལ་གྱི་
 བེས་རབ་རྒྱུད་གཞན་ནས་གསུངས་པའི་མཚན་ཉིད་ཅན་མཚན་པའི་དོན་དུ་བྱང་ཆུབ་
 ཏུ་སེམས་བསྐྱེད་པར་བྱའོ། །དེ་གཉིས་སྟོམས་པར་ཞུགས་པ་ལས་སྐྱེས་པའི་ཐིག་ལེས་

1. གསང་འདུས་ལེའུ་ ས ཚོགས་བཅད་ ༡།

2. མཚན་ཉིད་ནི་ ཚོ། གསེར། བེ།

3. དེ་ལྟར་ བེ།

བདུན་ཅི་མུང་བའི་རང་བཞིན་གྱིས་དག་པར་བྱས་¹ལ་ལོངས་སྤྱད་ན་སངས་རྒྱས་ཏེ།
གཟུགས་དང་ཚོར་བ་ལ་སོགས་པ་མུང་པོ་ལྔ་དང་། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔལ་སྟེ་མིག་ལ་
སོགས་པའི་རང་བཞིན་མཆོད་པར་བྱའོ། །དེ་ལྟར་ཐུན་གསུམ་དུ་རྗེས་སུ་གནས་ཤིང་
དངོས་སུ་མཆོད་པར་བྱའོ། །དེ་ཡང་།

མིག་ཡངས་ཁྲ་བ་ཐངས་ནས་ནི། །

སྒོ་ལྗན་བཏན་པས་ཡིད་ཀྱིས་བཟའ། །

འདི་དེ་སྤྲུགས་ནམས་ཐམས་ཅད་ཀྱི། །

སྤྱི་གསུང་བྱུགས་ཀྱི་མཆོད་པའོ། ། ཞེས་གསུངས་སོ། །

གསང་བའི་མཆོད་པ་ནི་ལྟན་ཅིག་སྤྱིས་པ་ཉམས་སུ་སྤྱོད་བའོ། །ཐུན་སུམ་ཆོགས་
པའི་མཆོད་པའི་རྣམ་པ་བཞི་འབྲུབ་པོ་ཞེས་དགོངས་ཏེ། རྣལ་འབྱོར་འདིས་སྡོན་དུ་
བསགས་པའི་སྤྲུག་པ་དང་། བསོད་ནམས་ཀྱང་གཟུང་བ་ལ་སོགས་པ་མངོན་པར་ཞེན་
པས་བྱས་པས་²ཉམས་ནས་སྡོན་མ་ཡིན་པ་ཉིད་མངོན་པར་ཞེན་པ་མེད་པའི་བསོད་
ནམས་སུ་འགྱུར་རོ། །དེ་ནས་དངོས་གྲུབ་ནི་མཐོང་བ་དང་ནི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་
གསུངས་སོ། །མཐོང་བ་ནི་མིག་གིས་ཉེ་བར་དམིགས་པའོ། །རེག་པ་ནི་ལུས་ཀྱི་དབང་
པོས་རེག་པའོ། །ཐོས་པ་ནི་རྣ་བའི་དབང་པོས་སོ། །དྲན་པ་ནི་ཡིད་ཀྱི་དབང་པོས་སོ། །
འདི་རྣམས་ཀྱི་དཔལ་ཉེར་ཉུག་དང་འབྲེལ་བའི་རྒྱུར་གྱུར་པས་སྤྱིས་བྱ་གཞན་ཡང་གྲོལ་
བར་འགྱུར་ཏེ། ལུས་ཀྱི་ཉེས་པར་སྤྱད་པ་ལ་སོགས་པས་བྱས་པར་གྱུར་པས་སྤྲུག་པ་

1. བོད་དཔེར་‘རང་བཞིན་གྱིས་དག་པར་བྱས།’ ཞེས་གསལ། གོང་དུ་ཕྱི་དཔེ་ལྟར་བཞག་ཡོད།

2. ‘བྱས་པས་’ གསེར་བྲིས་སུ་མེད།

ཐམས་ཅད་བྱང་པར་འགྱུར་རོ། །སྤྲིག་པ་མེད་པའི་ནལ་འཁྱོར་གྱིས་སྤྲིག་པ་མེད་པར་
 འགྱུར་རོ། །དེ་ལྟར་དེ་ཉིད་གོ་རིམ་¹་བཞིན་དུ་བསྟན་ཏེ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །འདི་བདེན་
 དོན་དམ་ཞེས་པ་ལ། ཐེ་ཚོམ་མེད་²་ཅེས་གསུངས་ཏེ། ཡིད་གཉིས་མི་བྱ་ཞེས་བྱ་པའི་
 དོན་ཏོ། །མཐོང་བ་ལ་སོགས་པས་གཟུང་བ་ལ་སོགས་པ་ལ་མངོན་པར་ཞེན་པ་ལས་
 གྲོལ་བར་འགྱུར་ཏེ། གསང་བ་ལྟན་ཅིག་སྤྲེས་པ་རྟོགས་པའི་དུས་ཀྱི་ནལ་འཁྱོར་ཡིན་
 པའི་ཕྱིར་རོ། །གསང་བའི་མཆོད་པའོ། །དེ་ལ་ཡང་དེ་ཉིད་ཀྱིས་ནི་ཁམས་གསུམ་
 ཉིད་ཀྱང་ཅི་ཡང་མ་ཡིན་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །ཁ་ཅིག་ན་རེ་ཐེ་ཚོམ་མེད་ཅེས་བྱ་བ་ནི་
 རྟོག་པ་མེད་པ་ཡིན་ནི་ཞེས་ཟེར་རོ། །ནལ་འཁྱོར་པ་མཐོང་བས་ཇི་ལྟར་ཞེ་ན། ནལ་
 འཁྱོར་པ་ཉིད་ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། དཔལ་ཏེ་རུ་ཀའི་ནལ་འཁྱོར་ཉིད་།
 མཆོག་ཅེས་པ་ནི་མཐོང་བ་ཙམ་གྱིས་སྤྲིག་པ་ཐམས་ཅད་འཛོམས་པའི་ཕྱིར་རོ། །འདི་
 ཉིད་ཀྱིས་དག་པར་བྱས་པས་ན་བསོད་ནམས་སོ། །དག་བྱེད་ནི་ཉོན་མོངས་པའི་བྱི་མ་
 དང་བྲལ་བར་བྱེད་པས་ནའོ། །སྤྲིག་པ་འཇིག་པ་ནི་མཆོམས་མེད་པ་ནམ་པ་ལྷ་ལ་
 སོགས་པ་ཉམས་པར་བྱེད་པའི་ཕྱིར་རོ། ། ༡-༧ །

གསང་སྤྲགས་སྒྲོས་³དང་བསམ་གཏན་དང་།

བདེ་བས་ཀྱང་ནི་⁴འགྲུབ་པར་འགྱུར། །

-
1. གོ་རིམས་ གྲུ་ ཅོ།
 2. ཐེ་ཚོམ་མེད་ བེ། གསེར།
 3. བསྐྱེས་ ལྟ། བསྐྱེས་ ལྟ།
 4. རྒྱ་དཔེར་‘བསྐྱེས་པ་ཡིས་ནི་’ ཞེས་གསལ།

དམ་ཆོག་ཏྲ་ཏྲ་བསྐྱེད་པར་བྱ། །

ཤིན་ཏུ་མཉམ་བཞག་²སྐྱབ་པ་པོས། ༡༠ །

བསྐྱེད་པར་བྱའོ་ཞེས་བྱ་བ་མདོར་བསྟན་པ་དེ་རྒྱས་པར་བཤད་པ་ནི་³། འགྲུབ་
པར་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། འགྲུབ་པར་ཞེས་བྱ་བའི་ཡི་གེ་ཨི་ཨེར་བྱས་
པ་སྟེ། དངོས་སུ་ཡིན་ནོ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །བཟུངས་པ་ཡིས་ཞེས་⁴བྱ་བ་ནི་གསུམ་པ་
ཕྱིས་ཏེ་⁵། དེ་ཡང་ཡིད་ཀྱི་བྱ་བའོ། །དེ་ཡིད་ཀྱིས་ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་སོ། །འཇིག་རྟེན་
ཀྱི་ཁམས་སྐྱོབ་པ་ལས་ན་⁶ཤེས་རབ་དང་ཐབས་ཀྱི་བདག་ཉིད་དཔལ་ཉེ་རུ་ག་སྟགས་སུ་
གྲུབ་པའོ། །སྟགས་ནི་དང་པོའི་དོན་གསུམ་པར་བྱས་པའོ། །བཟུངས་པ་ཞེས་བྱ་བས་
ནི་ངག་གི་བྱ་བ་བསྟན་པའོ། །བསམ་གཏན་ཞེས་པ་སེམས་ཀྱི་བྱ་བའོ། །ཤེས་རབ་
ཐབས་ཀྱི་བདག་ཉིད་ཀྱིས་ནི་ལུས་ཀྱི་བྱ་བ་ཡང་ངོ་། །བཟུངས་པ་ལ་སོགས་པ་དང་།
རྟེན་ཅིག་བྱས་པས་འབྲས་བུར་འགྱུར། ཞེས་པའོ། །དམ་ཆོག་ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་
པ་གསུངས་ཏེ། དམ་ཆོག་ཏུ་གསུངས་པ་ཏྲ་ཏུ་སྟོང་ན་དེ་ནམས་བསྐྱེད་པར་བྱའོ་
ཞེས་དགོངས་སོ། །དེ་ལྟར་ཡང་། “འདི་ནི་དམ་ཆོག་དཔྱལ་བའི་ཚུ། །དམ་ཆོག་

1. སྐྱེད་པར་བྱ་ བེ།

2. མཉམ་བཞག་ ལྷ།

3. བཤད་པ་ན་ བེ།

4. ‘ཞེས་’ བེ་ཀིང་པར་མའི་ནང་མེད།

5. ཕྱིས་པ་ཏེ་ བེ། གསེར།

6. ལས་ནི་ ཅོ།

ཉམས་ན་བསྐྱེད་པར་¹འགྱུར།” ཞེས་གསུངས་སོ། །དམ་ཚིག་སྤྱད་པའི་སྤྱིད་ཡུལ་
ཡིན། ཞེས་བྱ་བའི་རྒྱས་པར་བཤད་པའོ། །སྤྱབ་པ་པོ་ནི་²གང་གི་ཕྱིར་སྤྱབ་པ་པོས་
ཉག་ཏུ་སྒྲོམ་པར་བྱེད་³པའི་དུས་སུ། གོ་ཀྱད་ཉན་དང་བདུད་ཅི་རྣམ་པ་ལྡེའི་རི་ལུ་
བསྒྲོམ་པ་ཚོམ་པའི་དུས་སུ་བཟའ་བར་བྱའོ། །དེ་ཡིས་བཞེགས་ལེན་པ་ཡིན་ནོ། །
ཕྱིན་ཏུ་མཉམ་གཞག་ནི་ཕྱིན་ཏུ་མཉམ་པས་མི་མཐུན་པ་སྤངས་ཏེ། ཞེས་རབ་དང་
ཐབས་ཀྱི་བདག་ཉིད་ཀྱི་རྣལ་འབྱོར་གྱིས་ཀྱན་དུ་ཕན་པར་རྒྱས་པའོ། །དམ་ཚིག་གྲང་
གཞན་ནས་གསུངས་ཏེ། དེ་ལྟར་ཡང་། “ན་དང་ག་དང་ཏ་དེ་བཞིན། མཐའ་ཡི་
གྲ་དང་⁴དང་པོའི་གྲ།⁵” ཞེས་གསུངས་སོ། ། ༡༠ །

དམ་ཚིག་ཉམས་པས་དཀྱིལ་འཁོར་དུ། །

དབང་བསྐྱར་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་མི་འགྱུར། །

སྤང་ཅི་དམར་⁶དང་ག་ཕུར་བཅས། །

ཙམ་ན་⁷དམར་པོ་དང་སྤྱར་བ། ། ༡༡ །

དེ་ལ་ཡང་གསང་བའི་བདེ་བྱེད་པ་ཇི་ལྟར་ཡིན་ཞེས་པ་ལ། དམ་ཚིག་ཉམས་པས་

1. བསྐྱེད་པར་ བཤ། གསེར།

2. བསྤྱབ་པ་པོ་ གསེར།

3. ཉག་ཏུ་བསྒྲོམ་ གསེར། བཤ།

4. ‘དང་’ གསེར་བྲིས་སུ་མེད།

5. ཀྱེ་རྩི་རྩི་ཉག་པ་དང་པོའི་ལེའུ་¹¹ པའི་ཚིགས་སུ་བཅད་པ་ལ།

6. མར་ བོད་དཔེ། གོང་དུ་རྒྱ་དཔེ་དང་འབྲེལ་པར་(རྩུ)གསལ་བ་ལྟར་བཞག་པ་ཡིན།

7. ཙམ་དན་ བཤ། ལྷ།

ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། ཉམས་པ་ནི་དམ་ཆོག་མི་ཤེས་པ་ལ་བསྟན་པའོ།།
 ཅི་ནི་¹གང་གི་ཕྱིར་གྱི་དོན་ཏོ། །གང་གི་ཕྱིར་ཉམས་ན་དངོས་པོའི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཡོངས་
 སུ་མི་ཤེས་པ་ནམས་ཀྱིས་སྒོད་པར་འགྱུར་བས་གཉི་ག་ལ་སྒྲིན་དུ་འགྱུར་རོ། །དེ་བས་
 ན་དངོས་གྲུབ་ཀྱང་མེད་ལ་སྐྱབ་པ་པོ་ཡང་མེད་དོ། །གསང་སྤགས་ཀྱི་ཐུད་ཀྱིས་ཀྱང་
 དངོས་གྲུབ་དུ་མི་འགྱུར་རོ་ཞེས་དགོངས་སོ། །ཁ་ཅིག་ལས་ནི་སྤགས་ཀྱི་དཀྱིལ་འཁོར་
 དུ་དངོས་གྲུབ་མི་འཐོབ་པོ་²ཞེས་པའི་གཞུང་ཡོད་དོ། །སྤགས་ཀྱི་དེ་ཉིད་ནི་བསྐྱལ་ཞིང་
 སྒོན་པས་ན་སྟེ་³ སྟོང་པོ་ནི་བྱང་ཆུབ་སྟེ་གང་དེ་ལེན་པ་དེ་ནི་དེ་བཞིན་ནོ། །གསང་
 སྤགས་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཞེས་བྱ་བ་བཤད་པར་བྱའོ། །ཐམས་ཅད་དུ་མི་ཕྱེད་པར་⁴དམ་
 ཆོག་བསྟན་པར་བྱ་བ་ནི་དངོས་སུ་མཆོད་པའོ། །གཞན་ཡང་བདུད་ཅི་ལྟ་བུ་བསྟན་པའི་
 རོ་བོ་ཉིད་དངོས་སུ་མཆོད་པ་ཡིན་པར་སྤང་ཅི་ཞེས་བྱ་བས་⁵གསུངས་སོ། །སྤང་ཅི་
 དང་ཆོས་མཐུན་པས་སྤང་ཅི་ནི་ས་པོན་ཏེ། ཡང་དག་པར་སྦྱོར་བས་སྦྱོན་གསུམ་
 འཛོམས་པས་བདར་བྱས་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །ཁྲག་ནི་རབ་དུ་གྲགས་པའོ། །ག་པུར་ནི་
 བདེ་བས་འགོངས་པས་ན་ག་པུར་ཏེ་ཡི་གེ་དང་ལུང་ཉམས་པར་བྱས་པས་གྲུབ་པོ། །དེ་
 ཡང་ཤའོ། །དམར་བྱེད་པས་ན་ཁྲག་ནི་རྩི་ཆུའོ། །ཅེས་ནི་དགའ་བར་བྱེད་པས་ན་
 སྤང་མཛད་དོ། ༡༡ །

1. ཡན་ནི་ སྟེ། ཅོ།

2. མི་ཐོབ་པོ་ གསེར། བེ།

3. 'སྟེ' བེ་གིང་པར་མར་མེད།

4. མི་ཕྱེད་པར་ སྟེ། བེ།

5. མཆོད་པོ་.....ཞེས་བྱ་བར་ སྟེ། ཅོ། མཆོད་པོ་.....ཞེས་བྱ་བར་ གསེར།

ཆོགས་ཀྱི་ནང་དུ་བཞག་པ་ནི།
 ཐམས་ཅད་དོར་མཆན་མཆན་མ་འཛིན།
 མིང་མེད་མཐེ་བོ་ཅེ་སྤྱུང་བས།
 རྣལ་འབྱོར་རིག་པས་རྟག་དུ་སྤྱད། ༡༣

མུངས་པས་ནི་བའི་བདུང་བ་བཞིན། 1

དངོས་གྲུབ་རྟག་པ་ཐོབ་པར་འགྱུར། 1

འདི་ནི་མི་འཆི་བར་བྱེད་འགྱུར། 1

དངོས་གྲུབ་ཐམས་ཅད་འདུག་བྱེད་ཡིན། ༡༩།

འདིར་ཐེ་ཆོམ་མི་བྱའོ་ཞེས་པ་ནི་ཁྱ་བའི་བདུང་བ་འཁྱེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་
གསུངས་ཏེ། དམ་ཟེ་ནམས་མཆོད་སྤྱན་བྱེད་པའི་དུས་སུ་ཁྱ་བའི་གིང་གི་ཁྱ་བ་ཕྱགས་
དམར་སེར་གྱི་པགས་པ་དང་མཉེས་པ་ནི་ཁྱ་བའི་བདུང་བའོ། དེ་ཡིས་ཆེ་ཀྲས་པ་ཡང་
བསོད་ནམས་འཕེལ་ལོ། །ཇི་ལྟར་དམ་ཟེ་ནམས་ཐེ་ཆོམ་མེད་པར་ཁྱ་བ་འཁྱེས་ཏེ།
དེ་བཞིན་དུ་ནལ་འབྱོར་པས་བདུད་ཅི་ལྡུངས་ན་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་པར་འགྱུར་རོ། །
རྟག་པ་ནི་རྟག་པའི་འབྲས་བུ་འབྱུང་བ་ཉིད་ཡིན་པའི་བྱེད་རོ། །ཐེ་ཆོམ་མི་བྱ་བར་
མུང་བ་ཙམ་དཔེར་བྱས་པ་ཡིན་གྱིས་འབྲས་བུ་མཉམ་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །ཇི་ལྟར་༥

དེ་ཆེན་དེ་ཆུ་ཁྱ་བ་ཁྲག 1

སྤང་པ་ཉིད་དུ་མི་བྱའོ། 1

ཆོ་ག་ཡིས་ནི་རྟག་དུ་བཟུལ། 1

འདི་འབྲས་གསང་བ་གསུམ་ལས་སྦྱེས། 1

ཞེས་གསུངས་སོ། །སྤང་ཅི་ལ་སོགས་པས་ཅི་བརྗོད་ཅེ་ན། བརྱ་བྱེད་ཅེས་པ་ནི་
བདུད་ཅི་ནམ་པ་ལྡུངས་གཅིག་དུ་བྱས་པ་ནི་བདུད་ཅི་ལྡུངས་། །ལྟའི་ནལ་འབྱོར་དང་

1. ཞེས་ནི་ཁྱ་བའི་གདུང་བ་ གསེར། ཞེས་ནི་ཁྱ་བའི་བདུང་བ་ བེ།

2. གསང་འདུས་ལེའུ་ ༡༥ པའི་ཆོགས་སུ་བཙད་པ་ ༩༥ །

ལྷན་པས་ཐེ་ཆོམ་སྤངས་ཏེ་བདུད་ཅི་མུང་བའི་ཆོ་གས་ཡང་མུངས་ན་བཟའ་བ་དང་
བདུང་བ་ལ་སོགས་པ་ཐམས་ཅད་བདུད་ཅིར་འགྱུར་རོ་ཞེས་པ་ནི་བསྟུས་པའི་དོན་ཏོ།
ཇི་ལྟར། འདི་ལ་དངོས་གྲུབ་ཉག་པ་འབྱུང་། །ཞེས་པ་ལ། ཐམས་ཅད་ཅེས་བྱ་བ་ལ་
སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། ཐམས་ཅད་ནི་འཇིག་རྟེན་དང་འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པའི་
དངོས་གྲུབ་སྟེ་དེ་ལ་འཇུག་པ་ནི་དེ་བཞིན་ནོ། ༡༣ །

མཆོད་བཞི་དཔའ་བོ་ཆེན་པོ་ནི། །

ཡིད་ལ་འདོད་པ་བྱེད་པ་སྟེ། །

དབང་གཉིས་སྟོམས་པར་འཇུག་པ་ཡི། །

སྟོམས་པར་བྱུང་པའང་དེ་ནི་དཔའ་བོ་ནོ། ༡༤ །

མདོར་བསྟན་ནས་རྒྱས་པར་བཤད་པའི་སྤྱི་འདོན་ནི། མཆོད་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་
སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། མཆོད་པ་བཞི་ནི་མཆོད་པ་བཞི་སྟེ། འདིའི་དོན་ནི་སྤྱི་དང་
གསང་བ་དང་ཡིད་ཀྱི་རང་བཞིན་དང་དངོས་ཀྱི་ངོ་བོ་ནི་དེ་ཀྱི་སྤྱེ་བྲག་གིས་དེ་བསྟན་ཏེ།
དེའི་སྤྱིར་བཞི་ཞེས་གསུངས་ཏེ། ནང་དུ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པའི་རྣམ་པས་རྒྱས་པར་
བསྟན་ཏེ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། །རྣལ་འབྱོར་མ་ཞེས་པ་ནི་མཁའ་འགྲོ་མ་ལ་སོགས་པ་
བཞི་དང་། ལྷ་གདོང་མ་ལ་སོགས་པ་བརྒྱད་དང་། དཔའ་བོ་དང་དཔའ་མོ་གཉིས་སུ་
མེད་པའི་གཟུགས་ཀྱིས་སྟོམས་པར་བྱགས་པ་དེ་ནི་དཔའ་བོ་དང་གཉིས་སུ་མེད་པར་
སྟོམས་པར་བྱགས་པའོ། །རྣལ་འབྱོར་མ་ནི་ཤུ་ཅུ་བཞི་མཆོག་དང་འབྲིང་དང་ཐ་མ་

1. དེ་ལས་ གསེར། ཡེ།

བསྟན་པ་ནི་དཔལ་པོ་དང་གཉིས་སུ་མེད་པར་སྟོམས་པར་འདུག་པའི་སྒྲིའི་དོན་ཏེ་ཀྱིན་
 ཕྱིས་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ལྟར་སྟོམས་པར་འདུག་པ་ཡིན་པ་དེ་བཞིན་དུ། དེ་ཉིད་
 རྗེ་ཡག་མོ་དང་དབྱེར་མེད་པའི་རང་བཞིན་འཛིན་པ་ནི་དེ་ཉིད་འཛིན་པ་ལོ། །ཏེ་ནི་
 གར་བྱས་པ་ལོ། །དེ་ཙུག་དཔལ་ཡང་དག་སྒྲོར། །ཞེས་པས་དེ་བསྟན་དོ། ༡༤ །

ལྟ་དང་མི་ཡི་བདེ་བ་ནི། ༡

བསྟུས་བྱས་ནི་རྗེ་འཛིན་པ་ཡིས་ཀྱི། ༡

དེ་ལྟ་བུར་ནི་བྱེད་པ་ཡི། ༡

བཙུ་བྱག་ཆར་ནི་མི་པོ་དོ། ༡༥ །

ལྟར་བྱུར་པས་ན་ལྟ་སྟེ་དེའི་བདེ་བ་དང་། མི་ལ་ཡོད་པས་ནི་མི་སྟེ། དེའི་རོ་བོ་
 ཉིད་ནི་མེད། །དེའི་ཡང་བདེ་བའི་རང་བཞིན་གཉིས་སུ་མེད་པར་ཡོད་པར་བྱུབ་བོ། །
 བདེ་བ་ཇི་ལྟར་སྟེ་དེ་ཅས་པ་ལ། བདེ་བ་དེ་ནི་ཞེས་གསུངས་སོ། །བདེ་བ་ནི་སེམས་
 བདེ་བར་གནས་པ་སྟེ་དེ་ཉིད་བདེ་བ་ལོ། །དེ་ཡང་དཔྱལ་བ་དང་ཡི་དུགས་དང་། རྩལ་
 སོང་དང་འགྲོ་བ་ནམས་ཀྱི་ཐུན་མོང་དུ་རིལ་པོར་བསྟུས་པ་དང་། རྗེ་རྗེ་ནི་དྲི་མ་མེད་
 པའི་སྒྲིའི་དོན་དེ་ཆ་ནི་སྤྱོད་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ལྟར་ཡང་ཡིན་ལ་ཆ་ཡང་ཡིན་པས་ན་³
 རྗེ་ཆ་སྟེ། ལྟན་ཅིག་སྟེས་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་དོན་དོ། །ལྟ་དང་མི་ལ་སོགས་པའི་བདེ་

1. ཕྱི་བ་ སྟེ། ཅོ།

2. ཐུད་པའི་ཙ་འགྲེལ་དང་བོད་འགྱུར་འགྲེལ་པའི་ནང་རྗེ་རྗེའི་ཆ་(བརྟག་ཆིག་ལྟ་ཞེས་འཁོད་འདུག་

3. 'ན' གསེར་བྱིས་སུ་མེད།

བ་ཡང་དབྱེར་མེད་པར་གནས་གིང་བྱས་པར་གྱུར་བས་ན་དོན་རྒྱུ་ཆའི་ཆའི་བཅུ་དྲུག་གི་ཆ་
 ཡང་མི་མེད་དོ། །མི་མེད་པ་ནི་ཉོན་མོངས་པས་ཞེས་པ་ནི་ལྷག་མའོ། །ཐབས་འདིས་
 ཉོན་མོངས་པ་ལས་ཀྱལ་བར་བསྐྱབ་བྱ་ཉིད་ཀྱི་སྤྱིར་རོ། །ཇི་ལྟར་བདེ་བ་དེ་བཞིན་དུ་
 བསྐྱེད་པ་ནི་རིལ་པོའི་དོན་དུ་བསྐྱེད་པའོ། ༡༥ །

རི་བོ་ཆང་ཆིང་སྐྱེན་སྒྲོངས་སམ། །

ཆུ་བོ་ཆེ་ནམས་ངོགས་དག་དང་། །

གདོད་ནས་གྲུབ་པའི་དུར་ཁྲོད་དུ། །

དེར་ནི་དཀྱིལ་འཁོར་བྲི་བར་བྱ། ༡༦ །

དཔལ་ཉེར་ཀའི་ངེས་པར་བརྗོད་པ་ལས་དཀྱིལ་འཁོར་དུ་འཇུག་པའི་ལེའུ་
 རྟེན་དང་པོའོ། །

དབང་བསྐྱར་བ་མེད་པར་དངོས་གྲུབ་མེད་པས་དེ་ཡང་དཀྱིལ་འཁོར་དུ་མ་ཟུམ་
 པར་ཡོད་པ་མ་ཡིན་པས་ན་རི་སྐལ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །རི་ནི་རི་
 པོའོ། །སྐལ་གྱི་སྐྱས་ནི་དེའི་ལོགས་གཉིས་པས་ནང་ངོ། །ཆང་ཆིང་གི་སྐྱས་ནི་ལྷག་
 མ་ལ་སོགས་པས་གཡོགས་པའི་ཕྱོགས་སོ། །ཆུའི་ངོགས་ནི་སྤྱིར་ངོ། །གདོད་ནས་
 གྲུབ་པ་ནི་གང་གདོད་ནས་གྲུབ་པའི་ས་ཕྱོགས་དེ་ནི་དེ་བཞིན་ནོ། །དུར་ཁྲོད་ནི་རོའི་
 གནས་སོ། །དེ་ལ་ནི་ཉགས་ཀྱི་བདུན་པའོ། །དབང་བསྐྱར་པའི་དོན་དུ་དཀྱིལ་འཁོར་
 བྲི་བར་བྱའོ། ༡༦ །

1. ཞེས་པ་ གསེར། བཤ།

ཞེས་བྱ་བའི་སྐྱེས་ནི་ལེའུ་རྫོགས་པར་བསྟན་པའོ། །དཔལ་དེར་ཀའི་ཡན་ལག་
 དང་ཉིང་ལག་འདིས་བརྗོད་པས་ན་རྫོད་བྱེད་དེ་ཐུད་ཀྱི་སྐྱའི་ལུས་སོ། །དེ་ལ་དཀྱིལ་
 འཁོར་དུ་འཇུག་པའི་ལེའུ་ལ་འདིས་འཇུག་པས་འཇུག་པའོ། །དེ་ཉིད་བྱ་བས་ན་ཆོ་
 ག་སྟེ། དཔལ་དེར་ཀ་ལ་སོགས་པའི་དཀྱིལ་འཁོར་ལ་འཇུག་པའི་ཆོ་གའོ། །དེ་སྟོན་
 པར་བྱེད་པའི་ལེའུ་ནི་གཞུང་ཡོངས་སུ་བཅད་པའོ། །དང་པོ་ནི་གཅིག་གོ་ཞེས་བྱ་བ་
 ནི་དཔལ་འཁོར་ལོ་སྒྲིམ་པའི་ལེའུ་དང་པོའི་དཀའ་འགྲེལ་ལོ། །

འཁོར་ལོ་མཆོད་པའི་ཆོ་གའི་ལཱུ།

དེར་ནི་ཕྱི་བ་མ་ལྷུང་བས།	།
དཀྱིལ་འཁོར་ས་ནི་ཉེ་བར་བྱུག།	།
དུར་ཁྱོད་ཐལ་བར་ལྡན་པ་དང་།	།
བདུད་ཅི་ལྷ་དང་བཅས་པ་ཡིས།	༡ །
དཀྱིལ་འཁོར་ས་ནི་ཉེར་བྱུགས་ཏེ།	།
དེར་ནི་དཀྱིལ་འཁོར་ཡང་དག་བཙམ་པ།	།
གནས་དེ་རུ་ནི་བསྐྱོམས་པ་ཡིས།	།
དུར་ཁྱོད་དུ་ནི་ཀྱན་ཏུ་བཏག་པ།	༣ །

དཀྱིལ་འཁོར་ནི་དེ་ལ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། གང་ལ་ལས་ཡོད་པ་
 དེ་ལ་རང་གི་ལས་མེད་ཀྱང་བྱ་བའོ། །དེ་ཐུན་མོང་དུ་རྒྱུད་ལས་གསུངས་པའི་ཆོ་ག་
 ལ་བརྟེན་ནས་གོ་བར་བྱ་བས་ཐུན་མོང་དུ་རྒྱུད་དུ་གསུངས་པའི་རིགས་པས་སོ། །
 འདིར་ནི་རྩེ་ཟད་ཐུན་མོང་དང་ཐུན་མོང་མ་ཡིན་པའི་ཆོ་ག་གསུངས་ཞེས་བྱའོ། །
 དེ་ལ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ། དེ་ལ་ནི་དཀྱིལ་འཁོར་བྱ་བའི་དོན་དུ། རྒྱ་དང་ཕྱི་བ་

-
1. དེ་ནས་ རྒྱ་དཔེ།
 2. ཅམ་ ལྷ།
 3. ཡང་དག་རྒྱུད་(སལྷུཅེན) རྒྱ་དཔེ།
 4. 'ཐུན་མོང་མ་ཡིན་' རྒྱ་དཔེར་མི་སྣང་།

དང་། རྣམ་པར་སྒྲུབ་མཛད་ཀྱིས་རི་སུལ་¹ལ་སོགས་པ་རྣམས་སུ་སློབ་དཔོན་དང་
 སློབ་མས་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་དོན་དུ་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་སའི་གནས་ལ་བྱུག་པར་བྱའོ། །
 ཡང་དེའི་སྤྱིང་དུ་དུར་ཁྲོད་ཀྱི་ཐལ་བ་ལ་སོགས་པས་བྱུག་པ་ནི་དུར་ཁྲོད་ཅེས་བྱ་བ་ལ་
 སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། དུར་ཁྲོད་ཐལ་བར་ཡང་དག་ལྟར། །བདུད་ཅི་ལྟ་དང་བཅས་
 པ་ཡིས། །གང་ཡིན་པ་དེ་བཞིན་དུ་ཁྱེད་ཀྱི་བས་བྱུགས་པའི་རྗེས་སུ་ས་གནི་བྱུགས་
 ལ་དཀྱིལ་འཁོར་བརྩམ་པར་བྱའོ་ཞེས་བྱ་བར་སློབ་རོ། །ཁྱེད་ཀྱི་བས་བྱུགས་པའི་
 རྗེས་སུ་དུར་ཁྲོད་ཀྱི་ཐལ་བ་ལ་སོགས་པས་བྱུགས་པ་དེ་རྩ་ན་ཡང་། ཅེའི་ཕྱིར་དེའི་
 རྗེས་སུ་དཀྱིལ་འཁོར་བརྩམ་པར་བྱ་ཞེས་པ་ལ་དེར་ནི་ཞེས་གསུངས་ཏེ། སྤྱང་བའི་
 འཁོར་ལོ་ལ་སོགས་པའི་རྗེས་ལའོ། །དུར་ཁྲོད་དུ་ནི་ཀྱན་སློབ་ཅིང་། །ཞེས་པ་ནི་
 དུར་ཁྲོད་ལ་སོགས་པ་གཞན་དུ་དཀྱིལ་འཁོར་བྱེད་པ་ན་ཡང་དེའི་ཆེ་དུར་ཁྲོད་དུ་
 བསྐྱོམ་པར་བྱ་ཞེས་དགོངས་སོ། ། ༡-༡ །

རོ་བསྐྱེགས་སོལ་བའི་བྱེ་མ་དང་། །

དུར་ཁྲོད་སོ་ཕག་ལྟན་པ་ཡིས་⁴། །

དཀྱིལ་འཁོར་བཟང་པོ་བྱི་བར་བྱ། །

སློབ་དཔོན་དགེ་བའི་མཆོན་ཉིད་ཅན་⁵། ། ༡ །

1. རིལ་བུ་ རྩེ། ཅོ།

2. སྤྱིང་རོ་ བེ། གསེར།

3. སོགས་པ་བའི་ རྩེ། ཅོ།

4. ལྟན་པ་ཡི་ ལྟ། ལྟ།

5. མཆོན་ཉིད་ཐམས་ཅད་ལྟན་(སཏལ་ལྟན་ལྟ་) ཐུ་དཔེ།

ཡང་དག་ཤེས་ཤིང་རྒྱད་ཤེས་པ། 1

དཔལ་ལྷན་ཁྲག་འབྲུང་གསང་སྒྲགས་ཤེས། 1

བློ་མེད་གཙང་ཞིང་མཁས་པ་དང་། 1

སྦྱར་ཤེས་ཡེ་ཤེས་པ་རོལ་འགོ། ༩ 1

རྩལ་ཚོན་ནི་རོ་བསྐྱེགས་སོལ་བ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། རྩལ་བློད་སོ་ཕག་ཅེས་པ་ནི་རོ་བསྐྱེགས་པའི་ས་དང་རྩལ་བློད་ཀྱི་སོ་ཕག་མེད་ན་དེ་བསྐྱེམས་ལ་བསྐྱབ་པར་བྱའོ། རྩལ་བློད་ཀྱི་སོལ་བ་དང་། རྩལ་བློད་ཀྱི་སོ་ཕག་དང་། རྩལ་ཚོན་ལ་རྩལ་བློད་དུ་བརྩམ་པར་བྱའོ་ཞེས་ཁ་ཅིག་ཟེར་རོ། །༡༡ནི་ཐུང་དུའོ། །ནག་པོ་དང་སེར་པོའི་རྩལ་ཚོན་གཉིས་ཀྱང་རོ། །བཟང་པོ་ནི་སྦྱེ་འགོ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྦྱོད་ཡུལ་མ་ཡིན་པས་སོ། །

སྦྱོབ་དཔོན་ཞེས་པ་ནི།

དམ་པའི་ཚོས་ནི་སྟོན་པ་དང་། 1

བཤད་དང་གདམས་ངག་སྟོན་པ་དང་། 1

དབང་ནི་བསྐྱར་བའི་ལས་བྱེད་པ། 1

སྦྱོབ་དཔོན་དུ་ནི་རབ་བཤད་དོ། 1

ཞེས་གསུངས་པའི་མཚན་ཉིད་དོ། །བྱད་པར་དུ་གྱུར་པའི་ཁྱ་མ་ཉིད་དོ། །ཁྱ་མ་ནི་

1. གཙང་ཤིང་ རྒྱ། བེ།

2. ཨིལྷཱའྲྀ་ཐུ་དཔེ།

3. བཤད་པ་དང་ གསེར། བེ།

སྒྲོབ་དཔོན་གྱི་སྒྲུས་བཟོད་པས་མཁས་པར་ཡོངས་སུ་གསུངས་པའི་རིགས་པས་སོ། །
 འདིར་ཡང་དབང་གི་དོན་དུ་འཇམ་བསོད་ནམས་ཀྱི་དོན་ནམ། དངོས་གྲུབ་ཀྱི་དོན་དུ་
 རྣམ་འབྱོར་པས་གལ་ཏེ་དཀྱིལ་འཁོར་འབྲི་བར་²བྱེད་ན་དེ་ཡང་གཞི་དུ་བྱུང་བར་གྱི་
 མཚན་ཉིད་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྒྲོ་ནས་མཚོན་པ་ནི་³ཡང་དག་ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་
 གསུངས་ཏེ་⁴། ཡང་དག་པ་ནི་ཕྱིན་ཅི་མ་ལོག་པར་གཟུང་བ་ལ་སོགས་པ་དང་བྲལ་
 བས་ཏེ་དེའི་ཤེས་པ་ནི་ཡང་དག་པའི་ཤེས་པ་ལོ། །དེ་ཡང་འདིར་བདེ་མཚོག་ལ་སོགས་
 པའི་རྒྱུད་ཤེས་པ་ནི་ཡང་དག་ཤེས་ཤིང་རྒྱུད་ཤེས་པ་ལོ། །དེ་རྒྱུ་དཔལ་གསང་སྒྲགས་
 ཤེས། །ཞེས་པ་ནི་དེ་རྒྱུ་འདི་རྒྱང་པ་བརྒྱད་པ་ལ་སོགས་པའི་སྒྲགས་མན་ངག་ཇི་ལྟ་བ་
 བཞིན་དུ་ཤེས་པ་དེ་ནི་དེ་བཞིན་ནོ། །ཡང་ན་དཔལ་དེ་རྒྱུ་འདི་གསང་སྒྲགས་ཉུག་དུ་
 རྫོས་པ་ལོ། །འབྲམ་ལ་དུ་གནོད་པ་བྱས་པ་ལ་སེམས་འབྱུག་པ་ནི་བྲོས་པ་སྟེ། དེ་མེད་པ་
 ནི་བྲོ་བ་མེད་པ་ལོ། །གཙང་ཞིང་ཞེས་པ་ནི་སེམས་འབྱུག་པའི་སྒྲོན་དང་བྲལ་བ་ལོ། །
 མཁས་པས་ཞེས་པ་ནི་དགེ་བ་ལ་སྒྲོ་བ་ལོ། །སྒྲོར་བ་ནི་ནི་བ་ལ་སོགས་པ་དེའི་ཕ་རོལ་
 དུ་སོན་པ་དེ་དང་ཐུན་པ་ནི་སྒྲོར་ཞེས་⁵ཡེ་ཤེས་ཕ་རོལ་འགྲོའོ། ། ༡-༥ །

ཐོད་པས་སྒྱུ་བོར་བརྒྱན་བྱས་ཤིང་། །

ཡན་ལག་ཐལ་བས་བྱགས་པ་དང་། །

1. གསུངས་པའི་བར་དུའོ་ རྒྱ་དཔེ།
2. འབྲི་བར་ གསེར། དེ།
3. མཚན་པ་ནི་ གསེར། དེ།
4. གསུངས་སྟེ་ དེ། གསེར།
5. སྒྲོར་ཤེས་ དེ། གསེར།
6. ཡན་ལག་ཐལ་ ལྟ།

གྲག་སྒྱེད་¹དག་གིས་ལུས་བརྒྱན་ཅིང་། །

རུས་པའི་སྤྲེང་ལ་སོགས་པས་བརྒྱན་³། །

དུམ་གཅིག་སྒྱི་པོར་བརྒྱན་པ་⁴དང་། ༥ །

ཐོད་པ་ལས་དབུ་ལ་བརྒྱན་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་⁵། ཐོད་པས་སྒྱི་པོ་བརྒྱན་བྱས་གིང་།།
 ཞེས་བྱ་བས་སོ། །ཐལ་བ་ནི་དུར་ཁྲོད་དང་འབྲེལ་བའི་ཐལ་བས་ཡན་ལག་གང་ལ་
 བྱགས་པ་དེ་ནི་ཡན་ལག་ཐམས་ཅད་ཐལ་བས་བྱགས་པ་འོ། །གྲག་སྒྱེད་⁶དག་གིས་
 ལུས་བརྒྱན་ཅིང་། །ཞེས་པ་ནི་ཡོད་པས་ན་མིའི་རུས་པའི་སྤྲེང་བའི་བྱད་པར་གྱིས་
 ལུས་བརྒྱན་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་དེ་བཞིན་ནོ། །རུས་སྤྲེང་ཞེས་པ་ནི་སེམས་ཅན་
 རྣམས་ཀྱི་རུས་པའི་སྤྲེང་བ་སྟེ། རུས་པ་དེ་ལ་ཡང་དག་པར་གནས་པ་འོ། །འོན་ཀྱང་
 གྲག་སྒྱེད་སྒྲས་ནི་རིན་ཆེན་⁷འབྱུང་ལྡན་དང་། འོད་དཔག་ཏུ་མེད་པ་བསྐྱེད་པ་ལ་
 བཟོད་དེ། དེ་ཡིས་ལུས་ལ་བྱག་ཅེས་ཁ་ཅིག་ཟེར་རོ། །དེ་ལ་རུས་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་
 སོགས་པ་ནི་རྒྱན་ཉིད་བཞུགས་པ་འོ། །དུམ་གཅིག་སྒྱི་པོར་རྣམ་པར་བརྒྱན། ཞེས་བྱ་
 བ་ནི་དུམ་བུ་ནི་ཕྱོགས་གཅིག་སྟེ། དུམ་བུ་གཅིག་པ་གང་ལ་ཡོད་པ་དེ་ནི་དེ་བཞིན་ཏེ།

1. གྲག་སྒྱེད་ རྟེན། བེ།

2. རྒྱན་ རྟེན།

3. རུས་པའི་.....རྒྱན། རྟེན། རུས་པའི་ཐལ་བ་ཡང་དག་གནས། རྒྱ་དཔེ།

4. རྒྱན་ རྟེན།

5. གང་ཡིན་པ་ནི་ གསེར། བེ།

6. གྲག་སྒྱེད་ གསེར། བེ། སྐྱེད་ལྡན་ལྡན་ རྒྱ་དཔེ།

7. གྲག་སྒྱེད་སྒྲས་ནི་རིན་པོ་ཆེ་ གསེར། བེ།

དུམ་བྱ་གཅིག་པས་གང་ལ་བརྒྱན་པ་དེ་ནི་དེ་བཞིན་ནོ། །གཞན་གྱི་སྐྱ་ལས་བྱས་པའི་
དབྱ་རྒྱན་དང་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ནོ། ༥ །

རུས་པའི་སྤྱང་བ་ནམ་པར་འབྱུང་། ༡ །

ཁུྲྀག་ནི་ལག་ན་གནས། ༡ །

བདག་ཉིད་ཁྲག་འབྱུང་དཔལ་བྱས་ནས། ༡ །

དེ་ལོག་ཁྲག་འབྱུང་དཔལ་བྱས་ཀྱི། ༦ །

རུས་པའི་སྤྱང་བ་ནམ་པར་དབྱུངས་²། །ཞེས་བྱ་བ་ནི་³མཆོད་སྤྱིར་ཐོགས་ཏེ།
དེ་གང་ལ་ཡོད་པ་དེ་ནི་རུས་པའི་སྤྱང་བ་དབྱུངས་⁴པའོ། །ཡང་ནི་བསྐྱུ་བའི་⁵དོན་ནོ། །
ཁུྲྀག་གཡོན་པའི་ཕྱག་ན་ཡང་དག་པར་གནས་པ་ནི་ཁུྲྀག་ནི་ལག་ན་གནས་པའོ། །
འདིས་ནི་རྒྱན་ལ་སོགས་པའི་སྐྱ་ནས་བྱུང་པར་དུ་བྱས་པ་སྟེ། དེ་ལྟར་གྱུར་པའི་
གདམས་ངག་རི་ཁྱ་བ་བཞིན་དུ་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་སྐྱ་དང་དཔལ་ཏེ་རུག་འི་བདག་ཉིད་དུ་
བསམ་པ་ནི་དཔལ་ཏེ་རུག་བྱས་པའོ། ༦ །

⁶འཁོར་ལོ་འདི་ནི་སྤྱིང་གར་⁷དགོད། ༡ །

1. དབྱུངས་ འགྲེལ་པ།

2. ནམ་པར་སྤྱུངས་ གསེར། བེ།

3. 'ནི' བེགྱིང་དུ་མེད།

4. སྤྱུངས་ གསེར། བེ།

5. བསྐྱུས་པའི་ བེ།

6. ཕྱེད་པེར་ཆོགས་བཅད་ཁ་སྐྱོང་བའི་ཆེད་དུ་'དམ་ཆོག་དེ་དང་འབྲེལ་པ་ལས་
ཐུངས་ཏེ་དེར་བཞོད་ཡོད།

7. སྤྱིང་ཁར་ སྐ།

བདག་ཉིད་དེ་ལྟར་གོ་བཞོས་ཀྱི་ནས། 1

ར་བ་རྣམས་ནི་སྤྱོད་གས་སུ་དགོད། 2

དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་རྩ་དང་དཔལ་ཉེ་རྒྱུ་ལེ་ཡེ་གས་ཀྱི་བདག་ཉིད་དམ་ཚིག་དེ་¹དང་
འདྲ་བའི་དཔལ་ཉེ་རྒྱུ་ཁྱེད་ཀྱི་པར་བྱའོ། །འཁོར་ལོ་འདིའི་སྤྱིང་གར་དགོད་པ་ཞེས་
པ་ནི་³འདི་ནི་དཔལ་ཉེ་རྒྱུ་ལེ་བདག་ཉིད་དུ་གྱུར་པའི་སྤྱིང་གའི་དོན་ནི་རབ་ཏུ་གསུམ་
མོ་ལ་སོགས་པའི་རྩ་མོ་དང་། ཐོད་པའི་དུམ་བུ་ལ་སོགས་པའི་དཔལ་པོ་རྣམས།
དུས་རྒྱུ་རྩལ་ལ་⁵ལ་སོགས་པ་དང་། མོ་དང་སེན་མོ་ལ་སོགས་པའི་ལྷས་⁶ལ་དགོད་
པའོ། །དངོས་པོ་མེད་པར་གྱུར་པའི་དོན་ནི་ས་ལ་སོགས་པའོ། །དེ་ལྟར་བདག་ཉིད་
གོ་བཞོས་ནས། །ཞེས་པ་ནི་བདག་ཉིད་དཔལ་ཉེ་རྒྱུ་ར་བྱས་ཏེ། རྩལ་ཚོན་གྱི་དཀྱིལ་
འཁོར་བྱས་པ་ལས་སྤྱི་རོལ་ཏུ་ཐོག་མར་སྤྱོད་གས་རྣམས་སུ་ར་བ་བསྒྲིམ་པར་བྱའོ། །
ཡུལ་མི་གྱི་སྒྲ་ལས་འདི་ཐོབ་པའོ། །ཡང་ན་སེམས་ཙམ་དུ་སྤྱོད་པའི་ཚིག་གི་ཚོ་
གས་མ་⁸ནི་སྤྱོད་མེད་དོ། །བདག་ཉིད་ཀྱི་བྱད་པར་རོ། །སེམས་ཙམ་གྱི་བདག་ཉིད་

1. གོ་བཞོས་ རྒྱ།

2. དམ་ཚིག་པ་དེ་ གསེར། བེ།

3. ཅེས་པ་ནི་ བེ། གསེར།

4. མྱེད་ཀྱི་ཡོད་ཏེ་ལམ་རྩེ་ རྩ་དཔེ།

5. དུས་རྒྱུ་མ་ལ་ཡ་ གསེར། བེ།

6. རང་གི་ལྷས་ རྩ་དཔེ།

7. ཡུལ་མི་⁸ཐོབ་པའོ་ བེ། ཡུལ་མི་⁸ཐོབ་པའོ་ རྒྱ། ཅོ། གསེར། ཚིག་འདི་དག་རྩ་དཔེ་མ་གསལ།

8. ཚོགས་ལས་ནི་ རྒྱ། ཅོ།

དཔལ་ཉེ་རྒྱུ་ཀར་¹ གྲུའོ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །དོན་དམ་པར་འདི་ནི་སེམས་ཙམ་མོ་ཞེས་
དགོངས་པའོ། ² །

དེ་ལྟར་བདག་ཉིད་གོ་བགོས་ནས་²། །

འོག་ཏུ་ཡང་ནི་མཆོན་ཆ་དགོད། །

འཁོར་ལོ་མཆོན་ཆའི་ཕྱང་བ་དག །

སྤང་དུ་མདའ་ཡི་³ དྲ་བ་ཉིད། །

དཔལ་ཉེ་རྒྱུ་ཀར་བདག་ཉིད་⁴ རྩེ་ལྟར་བསྐྱོམ་པར་བྱ་ཞེ་ན། དེ་ལྟར་བདག་ཉིད་གོ་
བགོས་ནས། །ཞེས་བྱ་བར་གསུངས་ཏེ། མ་ནི་གོང་མ་བཞིན་ནོ། །ཕུང་པོ་ལ་སོགས་
པ་དག་པའི་བདག་ཉིད་དུ་བརྩོན་པར་⁵ བྱས་པ་ལ་དཔལ་ཉེ་རྒྱུ་གཞུག་པར་བྱའོ་ཞེས་
པ་ནི་བྱའོ། །འོག་ཏུ་མཆོན་ཆ་ནི་འདིར་འོག་ཏུ་མཆོན་ཆ་ཡང་གཞུག་པར་བྱའོ། །
འཁོར་ལོའི་སྤང་དུ་ནི་མདའི་དྲ་བའོ། །དེ་ནས་དཀྱིལ་འཁོར་པའི་ལྟ་དང་དཔལ་ཉེ་རྒྱུ་
གཞུག་པར་བྱའོ། །

སྤང་ཡང་བདག་ཉིད་མཁའ་སྤྱོད་དུ། །

གྲུ་བྱས་ཏེ་ནི་གོ་ཆར་འགྱུར། །

1. ཉེ་རྒྱུ་ཀ་ བཤ། གསེར།
2. 'དེ་ལྟར་བདག་ཉིད་གོ་བགོས་ནས།' ཆོག་རྒྱང་འདི་སྤེ་དགེ་པར་མའི་ནང་མེད།
3. མདའི་ བཤ།
4. དཔལ་ཉེ་རྒྱུ་ཀར་ བཤ། གསེར།
5. རྩོམ་པར་ གསེར། བཤ།
6. གྲུ་བྱས་ ལྷ།

དེ་ལྟར་གོ་ཆ་དེ་བགོས་ནས་། 1

སྐབས་གསུམ་པས་²ཀྱང་མི་ཐུང་དོ། ༥ 1

དེ་ལྟར་བདག་ཉིད་རབ་བསྐྱེད་སྤངས་ཤིང་། 1

སྐྱུ་གས་དང་ཕྱག་རྒྱས་ནམ་བུ་ན་³ནས། 1

དངོས་གྲུབ་ཆེན་པོ་རབ་སྒྲེར་བའི། 1

དཀྱིལ་འཁོར་འཇིགས་པ་བྱི་བར་བྱ། ༡༠ 1

བདག་ཉིད་ཀྱི་སྒྲིང་དུ་མཁའ་སྤྱོད་དེ། རྫོང་འཁོར་རང་བཞིན་གྱི་གྲུར་བྱས་ནས་
དཔལ་ཉེ་རུ་ག་གཞུག་པར་བྱའོ་ཞེས་སྒྲུར་རོ་⁴། གོ་ཆ་དེ་ཡང་དཔལ་ཉེ་རུ་གར་རྫོགས་
ནས་དཔའ་བོ་དུ་ག་ལ་སོགས་པའི་སྐྱུ་གས་ཀྱིས་གོ་ཆའི་ཆོ་ག་རྩོ། དེ་ལྟར་བདག་ཉིད་
རབ་སྐྱེད་ཞིང་། ཞེས་བྱ་བ་གསུངས་ཏི། རེས་པའི་ཆོག་གིས་མ་ནི་སྐྱ་མ་
བཞིན་མོ་⁵། ཕྱག་རྒྱ་ནི་རྫོང་པག་མོའོ། སྐྱུ་གས་ནི་རྩ་བའི་སྐྱུ་གས་ལ་སོགས་པའོ།
ཡང་ན་ཕྱག་རྒྱ་ནི་མཆོན་མའི་ཕྱག་རྒྱའོ། སྐྱེ་ནི་ཀར་ཀར་ལ་སོགས་པའི་སྐྱུ་གས་ཏི།

-
1. བགོས་ན་ ལ།
 2. སྐབས་སུམ་ཏུ་པས་ ལ། བཤ། ལ།
 3. རམ་རྒྱན་ ལ།
 4. སྐར་རོ་ གསེར། བཤ།
 5. གོ་ཆའི་གོ་ཆ་ བཤ། གསེར།
 6. རབ་བསྐྱེད་ གསེར། བཤ།
 7. སྐྱེས་ གསེར། བཤ།
 8. ཆོག་གིས་ནི་སྐྱ་མ་བཞིན་མོ་ ལ། ཅོ།

པ་ནི་རོའི་གིང་བྱི་ལ་དགྲིས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཡིན་པས་སོ། །འཇིགས་པ་ཞེས་པ་ནི་དུར་
 ཁྲོད་ཀྱིས་ཡོངས་སུ་བསྐྱོར་བ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རམ། དཔལ་དེ་རུ་ཀའི་སྒྲིའི་དོན་བཀོལ་
 ནས་དགྱིལ་འཁོར་བདག་མེད་པར་བསྟན་པས་བྱིས་པ་རྣམས་འཇིགས་པ་བསྐྱེད་པ་
 ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །ཁྲོད་བྱིར་མཆོག་ཅེས་པ་ནི་དཔལ་དེ་རུ་ཀའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཡིན་པས་
 བཤོ། ༡༡ །

བྱ་གང་བྱ་བཞིའམ་བྱ་བརྒྱད་པ། 1

སྒྲོ་བཞི་ཀུན་ནས་བྱར་བཞི་པ་། 1

ན་བབས་བཞི་ཡིས་རྣམ་པར་བརྒྱན་པ། ༡༢ །

བྱ་གཅིག་པ་དང་བྱ་བརྒྱད་པ། ཞེས་པ་ནི་བྱ་བཞིའམ་བྱ་བརྒྱད་ཀྱི་ཚད་འདི་ནི་
 དེ་བཞིན་ནོ། །ལྷག་མ་ནི་གོ་སྒྲུབ། ༡༣ །

སྒྲགས་པས་ཉིས་འགྱུར་རྣམ་པར་སྦྱད་པ། 1

མཁའ་འགྲོ་བྱ་བའི་བདེ་མཆོག་མཆོད། 1

དེ་ཡི་དབུས་སུ་བརྒྱ་ནི། 1

འདབ་བཅས་ལྷོ་བ་འབར་དང་བཅས་པ། 1

གེ་སར་ཡང་དག་ལྷན་པར་བཞག་པ། ༡༤ །

1. ཟུང་བཞི་པ་ བཤོ།

2. རྣམ་པར་བརྒྱན་ ལྷ།

3. རྣམ་པར་སྦྱད་ ལྷ།

4. ལྷོ་བར་འབར་དང་བཅས་ ལྷ། བརྒྱ་འབར་དང་བཅས་ བཤོ། ལྷོ་བ་དང་འབར་(ལྷན་པར་)བརྒྱད་པའི།

5. གཞག་ ལྷ། ལྷ།

ཉིས་འགྱུར་ནམས་དབྱེ་ཅིང་ཞེས་པ་ནི།

ཁྱེ་གཉིས་དང་ནི་ཁྱེ་བརྒྱད་དང་། 1

ཁྱེ་བརྒྱད་དུག་ཅེས་པ་ནི། 1

ཐེག་སྐྱད་འདི་ཡི་1 ཁྱད་པར་རོ། 1

འཁོར་ལོ་ཉིས་འགྱུར་ཐེག་སྐྱད་བྱའོ། 1

ཞེས་བརྟན་པ་ཡིན་ནོ། །སྤགས་པས་ཞེས་པ་ནི་བཟླས་པ་རིག་པའོ། །དེའི་དཀྱིལ་
འཁོར་གྱི་དབྱས་སུ་མཁའ་འགྲོ་མའི་བྱ་བ་སྡོམ་པ་མཆོད་པར་བྱའོ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །
ཅི་བྱས་ནས་ཞེས་པ་ལ། བཞག་ཅེས་པ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། ཁ་དོག་སྣ་ཆོགས་
དང་བཅས་པའི་འདབ་མར་གནས་པ་ནི་འདབ་བཅས་སོ། །དེ་རི་ཁྱ་བྱ་ཞེས་པ་ལ། རྩ་
བ་འབར་དང་ཞེས་གསུངས་ཏེ། འདི་སྣ་ཆོགས་པར་སྤྱོད་མིང་ཅན་གྱི་རྩ་བས་ནི་ས་བོན་
གྱི་སྣོད་མཆོན་པ་རྩི། མང་པོའི་ཆོག་ནི་མང་པོ་སྤྱོད་བཞིན་གྱི་ཕྱིར་རོ། །དང་གིས་ནི་
ལེགས་པར་ཁ་བྱེ་བཞིན་ལ་སོགས་པའོ། །གེ་སར་ནི་ཟེ་འབྲུ་སྟེ་དེ་འདབ་མར་གནས་
པ་ནི་འདབ་བཅས་སོ། །དེ་ཡིས་འདིར་གེ་སར་གྱིས་ཡོངས་སུ་རྒྱས་པར་གྱུར་པ་ཞེས་
པར་དགོངས་སོ། །ལྷག་མ་ནི་གོ་སྟོན་ ༡༩ །

རྩ་བར་དགོད་བྱ་དཔའ་བོ་ནི། 1

འཛིགས་བྱེད་ཀྱང་ནི་འཛིགས་པར་མཛད། 1

1. འདིའི་ གསེར། བེ།

2. གཞག་ རྩི། ཅོ།

མདངས་དང་ལྡན་ཞིང་རབ་དྲུ་འབར། 1

དྲུ་ཞེས་པའི་སྒྲ་ཆེར་བཞད། 1༥

དུ་འབོད་ཆེན་པོ་ལ་སོགས་པའི་དམུལ་བའི་སྒྲ་མ་རྣམས་ཀྱང་འཛིགས་པར་
 བྱེད་པས་ན་འཛིགས་བྱེད་ཆེན་པོའོ། |མདངས་ཡང་དག་པར་བྱེད་པས་ན་མདངས་
 ལྡན་ནོ། |ནི་ནི་གང་གི་ཕྱིར་གྱི་དོན་ཏེ་མདངས་ཉིད་རབ་དྲུ་གསལ་བའོ། |གཞུང་ཁ་
 ཅིག་ལས་ནི་རབ་དྲུ་གསལ་བར་ཡོད་དེ་དང་གི་ཆོག་ཁ་བསྐྱང་བའོ། |དྲུ་ཞེས་བྱ་¹
 སྒྲ་ཆེར་བཞད། |ཅིས་པ་ནི་ཡུ་ལི་དང་ཀླ་ལི་ལས་སྒྲུལ་པས་ངོ་མཆར་དུ་དྲུ་ཞེས་
 དགོད་པའི་²གཟུགས་ཅན་གྱི་སྒྲ་ཆེན་པོ་རྣམ་མཁའ་བྱུང་པར་ཞལ་ནས་གསུངས་པ་
 གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་དེ་བཞིན་ནོ། 1༥ |

ཐོད་པའི་ཕྱིང་བའི་རྒྱན་³དང་ལྡན། 1

བཟང་པོ་སྒྲུན་གསུམ་ཞལ་བཞི་མངའ། 1

སྒྲ་པའི་པགས་པ་⁴རྣམ་པར་བགོས། 1

སྒྲེན་མ་བཟང་པོ་དོ་རྩི་དབྱེས། 1༥ |

ཐོད་པའི་ཕྱིང་བའི་རྒྱན་དང་ལྡན། |ཞེས་པ་ནི་ཐོད་པའི་ཕྱིང་བའི་རྒྱན་ནི་ཉོན་
 མོངས་པ་རྣམ་པར་དག་པ་དེ་རྣམས་ཐོད་པས་⁵གཟུང་བའོ། |བདེ་བའི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་

-
1. ཞེས་བྱ་བ་ བཤེས།
 2. ཐོད་པའི་ བཤེས། བཤེས།
 3. བརྒྱན་ བཤེས།
 4. བཤེས་པ་ བཤེས།
 5. ཐོད་པར་ བཤེས། བཤེས།

གྱུར་པས་ན་བཟང་པོའོ། །ནམ་པར་ཐར་པའི་སྒོ་གསུམ་དག་པས་ཞལ་རེ་རེ་ཞིང་
 སྒྱུན་གསུམ་མོ། །ནམ་པར་ཐར་པའི་སྒོ་བཞི་དག་པས་ཞལ་བཞིའོ། །སྒྲུང་པོ་ཆེ་ཡི་
 པགས་པ་¹བཞོས། །ཞེས་པ་ནི་ཕུག་གཉིས་ཀྱིས་དེ་ཀྱབ་ནས་བཀའ་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །
 སྒྲུང་པོ་དང་ཆོས་མཐུན་པས་ཉོན་མོངས་པའི་ཆོགས་ནི་སྒྲུང་པོའོ། །དེ་ལྟར་ཡང་།
 སྒྲུང་པོའི་པགས་པ་གོས་སུ་གྱུར། (མཚན་བཞེད་ ༥/༣) །ཞེས་གསུངས་སོ། །གང་གི་ཕྱིར་
 དེ་དང་ཐ་དད་དེ་སྒྱུ་མ་ལྟ་བུར་ཉེ་བར་གནས་པས་པགས་པ་སྟེ་དེ་གཡོགས་པའོ། །
 ཀུན་རྫོབ་དུ་སྒྱུ་མ་ལྟ་བུ་སྟེ། །འདི་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་ཀྱབ་དུ་གཟུང་བ་སྟེ་སྟོང་གར་ནི་མ་
 ཡིན་ནོ། །མེད་པས་གཟུང་བར་བྱ་བ་མ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་སྒྲུང་པོ་ཆེའི་པགས་པས་
 གཡོགས་པའོ། །དང་ནི་དེ་ཉིད་ཀྱི་དགོངས་པ་གསལ་བར་བྱས་པའོ། །དེ་རྗེས་ལྟ་བུས་
 སྒྲ་ཆོགས་ཡང་དག་པར་བཅོམ་པར་གྱུར་པས། །དེ་སྟེན་མ་གཉིས་གང་ཡིན་པ་དེ་
 ནི་དེ་རྗེས་འབྲེལ་པའི་སྟེན་མ་སྟེ། །སྟེན་མའི་དབུས་ནི་སྟེ་བའོ། །སྟེན་མ་དང་ནི་མིག་
 དག་གི་འོག་དུ་དེ་རྗེས་ཅེ་གསུམ་པ་ཉིད་དུ་གྱུབ་པའོ། །དེ་གསུངས་པ། །སྟེན་དབུས་དོ་
 རྗེའི་སྟེ་བ་རུ། །ཞེས་གསུངས་སོ། ། ༡༥ །

ཕུག་ན་ཁ་ཏྲུ་མི་ཐོད་³བསྐྱམས། །

བརྒྱ་ཕྱེད་ཕྱེད་བས་ནམ་པར་བརྒྱན་⁴། །

1. གསེར་བྲིས་སུ་དུག་སྒྲ་དང་འབྲེལ་བའི་པཎ་པ་ཐམས་ཅད་ལ་ལ་སྒྲགས་ཉིད་འཁོད་པ་གསལ།

2. ལྷན་ནི་ སྟེ། ཙོ།

3. 'མི་ཐོད་' རྒྱ་དཔེ་དང་འགྲེལ་པར་མེད།

4. རྒྱན་ སྟེ།

འཛིགས་མི་གདུག་པ་ཅན་ལ་སྤྲིགས་མཛུབ་བྱེད་པས་མངོན་དུ་འབྱུང་པར་བརྟན་ནས་
 དེ་རྒྱས་པར་སྟོན་ཏེ། རྟེན་གྲུབ་པལ་ལྷོགས་ཞེས་བྱ་བ་འཛིགས་པ་ཉིད་ཡིན་པས་ན་²
 ཐམས་ཅད་དུ་གཉིས་པར་སྦྱར་རོ། །དེ་མདུན་ནི་ལྷ་མོའི་བྱེད་པར་རོ། །ཐོད་པའི་
 རང་དུ་སོན་པའི་རྒྱ་མ་ནི་ཐོད་པ་རྒྱ་མས་བཀང་བའོ། །དེ་བདུན་ནམས་ཀྱི་རྒྱ་མས་
 ཐོད་པ་ཡང་དག་པར་བཀང་བ་སྟེ། གཞན་མ་གང་བ་མེད་པའོ། །ཁ་ནས་རུ་རྒྱར་³
 འཛིག་ཅིང་། ཞེས་པ་ནི་འདོད་ཆགས་རྣམ་པར་དག་པའོ། ༡༤-༡༥ །

ལྷ་དང་ལྷ་མིན་མིར་བཅས་པ། །

ལྷོགས་ཀྱན་དུ་ནི་སྤྲིགས་མཛུབ་⁴བྱེད། །

མཁའ་འགོ་མ་ནི་ཉི་ཤུ་བཞི། །

ཐག་མོ་ཡི་ནི་རིགས་ལས་བྱུང་། ༡༦ །

ལྷོགས་ཀྱན་དུ་ནི་སྤྲིགས་མཛུབ་བྱེད། །ཅེས་པ་ནི་ལྷོགས་ཀྱི་བདག་པོ་ཐམས་
 ཅད་ལ་ཞེས་པའི་དོན་ནོ། །ལྷ་དང་ལྷ་མ་ཡིན་དང་མི་དང་བཅས་པའི་འཛིག་རྟེན་
 གསུམ་ཞེས་དགོངས་སོ། །ལྷོགས་ཀྱན་ཞེས་པའི་གཞུང་ནི་གང་ལ་ལྷོགས་ཡོད་པ་དེ་
 ནི་ལྷོགས་ཀྱན་གྱི་བདག་པོ་ཉིད་དུ་གོ་བར་བྱའོ། །མཁའ་འགོ་མ་ནི་ཉི་ཤུ་བཞི། ཞེས་

1. 'ཀྱི་དྲི་ཀྱི་ཡུ་' ལྷ་དཔེར་ལྷག་པ་གསལ།

2. 'ན' གསེར་བྱིས་སུ་མེད།

3. ཐོད་དཔེ་ཆང་མའི་ནང་'རུ་རྒྱར་'ཡོད་ཀྱང་གོང་དུ་ཙ་བ་དང་འགྲེལ་པ་ལྷར་བཞག་པ་ཡིན།

4. བསྤྲིགས་མཛུབ་ ལྷ། ལྷོགས་མཛུབ་ ཤེ།

5. ཀྱན་དུ་ ཅོ། ཤེ། གསེར།

པ་ནི་རབ་གདུམ་མོ་ལ་སོགས་པ་ནི་བྱ་བའོ། །དང་ནི་ཁྱ་གདོང་མ་ལ་སོགས་བརྒྱ་
གཉིས་བསྟུ་ལྟེ། དེ་ཡང་ཐམས་ཅད་མཆོད་པར་བྱའོ། །ཕག་མོའི་རིགས་ལས་བྱུང་
བཞི་ཞེས་པ་ནི་ཕག་མོ་དང་རྩན་ཅིག་དུ་བྱུགས་ལ་སོགས་པའི་རིགས་ལས་བྱུང་བའོ། །
འདིས་རིགས་ངེས་པར་བསྟན་ཏོ། ༡༥ །

ཕྱོད་དང་ཕྱོགས་ཀྱི་མཆོམས་ནམས་དང་། །

འཁོར་ལོའི་དབུས་སུ་མཆོད་པར་བྱ། །

དེ་བཞིན་འདིར་ནི་དཔའ་བོ་ཡང་། །

འཁོར་ལོར་ཡང་དག་གནས་པ་མཆོད། ༡༦ །

འཁོར་ལོའི་ལྷ་བ་ཞེས་པ་ནི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱིས་པ་དཔལ་ཉེར་དུ་ག་དང་དཀྱིལ་
འཁོར་གྱི་རྩ་མོ་ནམས་བསྐྱེམས་ནས་མཆོད་པར་བྱའོ་ཞེས་དགོངས་སོ། །རྩ་ནམས་ཇི་
རྩར་དགོད་ཅེས་པ་ལ། ཕྱོད་དང་ཕྱོགས་ཀྱི་³མཆོམས་ནམས་དང་ཞེས་གསུངས་སོ། །
དེ་བཞིན་འདིར་ནི་དཔའ་བོ་ཡང་། །ཞེས་གསུངས་སོ། །འདིར་ཞེས་པ་ནི་འཁོར་
ལོའི་ལྷ་བའི་དབུས་ཀྱི་རིགས་ལས་བྱུང་བ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །རྩའི་འཁོར་ལོ་ཐམས་
ཅད་མཆོད་པའོ་ཞེས་མདོར་བསྟུས་པའོ། །འཁོར་ལོ་ཡང་དག་བསྟུས་གནས་ཞེས་པ་
ནི་གཉིས་པའི་མང་པོའི་ཆོག་གི་མཐའ་ཅན་གྱི་ཆོག་སྟེ་ན་ཕྱི་བའོ། །དེ་ཡིས་འཁོར་ལོ་

1. ཁྱ་གདོང་མ་གསེར།

2. འདི་ཡིས་པེ། གསེར།

3. རྩེ་དགེ་དང་ཅི་ནིའི་པར་མའི་ནང་གྱི་མ་གསལ།

སྟེ་བར་ཞེས་པ་བརྟན་པར་བྱས་པའོ། ཁྱིའི་སྐྱས་¹ལུས་ཉིད་གནས་པ་བཀག་པས་
ཡང་ངེས་པར་མཆོད་པར་བྱའོ་ཞེས་དགོངས་སོ། ༡༩ །

སྐྱབ་པོ་གལ་ཏེ་དངོས་གྲུབ་འདོད། །

གཉིས་མེད་དཔའ་བོ་མཆོད་པར་བྱ། །

དེ་ནས་བུམ་པ་བྱ་བ་ནི། །

རྩ་བ་ནག་པོ་ལ་སོགས་མེད། ༢༠ །

འདིས་མཆོད་པར་བྱ་བ་ཅི་ཞེ་ན། དཔའ་བོ་གཉིས་མེད་ཅེས་བྱ་བ་གསུངས་ཏེ།
མཚུངས་པ་དང་བྲལ་བས་གཟུང་བ་ལ་²སོགས་པའི་ངོ་བོ་གསོད་པར་བྱེད་དོ་³ཞེས་
པས་དཔའ་བོ་སྟེ་དེ་ཡང་སེམས་ཅམ་སོ། །དེའི་ཕྱིར་གསུངས་པ། གཉིས་སུ་མེད་པ་
དེའི་དཔའ་བོ་སྟེ། གཉིས་སུ་མེད་པ་ཁོ་ན་མཆོད་པར་བྱའོ་⁴ཞེས་དགོངས་སོ། །ཅིའི་
ཕྱིར་ཞེས་པ་ལ། སྐྱབ་པོ་གལ་ཏེ་དངོས་གྲུབ་འདོད། ཅེས་གསུངས་ཏེ། དངོས་གྲུབ་
ནི་གཉིས་པ་ཕྱི་བོ་⁵སྟེ་གང་དངོས་གྲུབ་འདོད་པའི་སྐྱབ་པ་པོ་དེས་མཆོད་པར་བྱ་སྟེ།
དཀྱིལ་འཁོར་སེམས་ཅམ་ཉིད་དུ་གེས་པར་བྱའོ། །དེ་ནས་བུམ་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་
སོགས་པ་ནི་གོ་སྟོན་འོ། །རྩ་བ་ནག་པོ་ལ་སོགས་མེད། ཅེས་པ་ནི་རྩ་བ་ནི་རྩ་མཐའ་ན་གྱི་

1. ཁྱིའི་སྐྱས་ གསེར། བེ།

2. གཟུང་ལ་ གསེར། བེ།

3. རུཔ་མྱེར་ཡའི་ རྒྱ་དཔེ།

4. མཆོད་པར་བྱའོ་ རྟེན་ ཅོ།

5. ཕྱི་མ་ རྟེན་ ཅོ།

འཁོར་ལོ་བྱས་པའི་འོག་གི་ཆའོ། །ནག་པོ་ནི་ནག་པོའི་ཆའོ། །སོགས་ཀྱི་སྐྱས་ནི་སྐྱ་
ཆོགས་པ་ཉིད་ལ་སོགས་པའོ། ༡༠ །

མུ་ཉིག་གསེར་དང་རིན་ཆེན་དང་། །

བྱེ་རུ་དངུལ་དང་ཟངས་མ་སྟེ། །

བཟའ་བ་ཀྱན་གྱིས་ལེགས་བཀང་བའི། །

སྟོད་ནི་སྟེང་དུ་གཞག་པར་བྱ། ༡༡ །

གསེར་དང་རིན་པོ་ཆེ་ནི་གསེར་ཡང་ཡིན་ལ་རིན་པོ་ཆེ་ཡང་དེ་ཡིན་ཏེ། རིན་པོ་
ཆེ་ནི་ཐམས་ཅད་དུ་འདི་ཡིས་ནི་རིན་པོ་ཆེ་སྐྱ་ལྟ་བུ་སྟན་ཏོ། །དེ་ལ་ཟངས་མ་³ཐ་མར་
སྟོས་པའོ། །བཟའ་བ་ཀྱན་ཞེས་པ་ནི་བཟའ་བ་ཀྱན་གྱི་ཆོག་གིས་འབྲུ་སྐྱ་ལྟ་བུ་སྟན་
སྐྱ་ལྟའོ། །བཟའ་བའི་སྐྱས་པ་དུད་ཅི་ལྟའོ། །ཐོད་པ་སྟེང་དུ་གཞག་པར་བྱ། །ཞེས་པ་
ནི་བདུད་ཅི་ལྟའི་བྱད་པར་བསྟན་པའོ། །ནིའི་སྐྱ་⁴ནི་བྱད་པར་གྱི་དོན་ཏོ། །རིན་པོ་ཆེ་
སྐྱ་ལྟ་དང་། སྟན་ལྟ་ནི་བྱམ་པའི་ནང་དུའོ། །བདུད་ཅི་ལྟ་ཐོད་པ་གནས་པ་ནི་དེའི་
སྟེང་དུ་བཞག་པའོ། །ཡང་ན་ཐོད་པ་ལ་དེའི་སྟེང་དུ་གཞག་པར་བྱ་⁵ཞེས་པ་ནི།
གསུམ་པའི་སྐྱས་⁶བྱམ་པའི་བྱད་པར་དེ་རྒྱལ་ཆོན་གྱིས་བྲིས་ལ་བྱམ་པའི་སྟེང་དུ་
བཞག་གོ་ཞེས་ཟེར་རོ། ༡༡ །

1. བྱེ་རུ་ བཤ། བྱེ་རུ་ སྟེ།

2. བཞག་ སྟེ།

3. ཟངས་ སྟེ། ཅོ།

4. ནིའི་སྐྱ་ གསེར།

5. བཞག་པར་བྱ་ བཤ། གསེར།

6. བདུད་ཅི་གསུམ་པའི་སྐྱས་ སྟེ། ཅོ།

མགིན་པ་སྤྲ་བྱས་པའི་དཀྱིལ་པ་དང་། 1

ཁ་ནི་འདབ་མས་བརྒྱན་པར་བྱ། 1

གོས་བྱང་གིས་ནི་ལེགས་དཀྱིས་པ་²། 1

བརྒྱན་ནི་སྒོ་དུ་ནམ་པར་དགོད། 33 1

གོས་བྱང་གིས་ནི་ལེགས་དཀྱིས་པའི། 1

བྱམ་པ་དགུ་པ་དབྱས་སུ་བཞག་³ 1

གསེར་རམ་དངུལ་ལམ་རིན་ཆེན་ནམ། 1

མུ་ཏིག་ནམས་ཀྱིས་མངོས་པར་བྱ། 33 1

བྱམ་པ་དེ་ནམས་ཀྱི་མགུལ་པ་ནི་མགིན་པའོ། ཁ་ནི་འདབ་མས་བརྒྱན་པར་བྱ།
 ཞེས་པ་ནི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པས་བྱམ་པ་དགུ་པ་ནམ་པར་⁴ཀླུ་པོ་བའི་བྱམ་པ་ཞེས་
 བྱ་བ་ལ་རིན་པོ་ཆེ་སྒྲ་ལྟ་བུ་ལྟར་པར་བརྒྱན་ཏོ། གསེར་རམ་དངུལ་ལམ་རིན་ཆེན་
 ནམ། ཞེས་བྱ་བ་གསུམ་པའི་དོན་ལས་དང་པོའི་གཅིག་གི་ཆོག་གོ། རིན་ཆེན་མུ་
 ཏིག་ནི་གསུམ་པའི་གཉིས་པའི་ཆོག་⁵ཕྱི་བའོ། དངུལ་ལ་སོགས་པས་བརྒྱན་པའི་བྱམ་
 པ་དགུ་པ་དབྱས་སུ་བྱས་ལ་གྲོང་མཆོག་མཆོད་པར་བྱའོ་ཞེས་སྒྲུར་རོ། 33-33 །

1. སྤྲ་བྱས་ ལྟ། ལྟ། སྤྲ་བྱས་ ལ།

2. དཀྱིས་ ལྟ།

3. གཞག་ ལྟ། ལ། ལྟ།

4. 'ནམ་པར་' ལྟ་དགེ ལེགས་དང་ཙུང་ཀྱི་གསུམ་དུ་མ་གསལ།

5. ཆོག་ ལྟ། ཙུང་ཀྱི་གསེར་བྱས་སུ་ནི་ཆོག་གམ་ཆོག་གང་ཡང་མེད། ལོང་འཁོད་ཀྱི་དཔེ་ལྟར་རོ།

དགྲིལ་འཁོར་ཀྱན་ཏུ་རིན་ཆེན་དང་། །
 གསེར་གྱིས་མངོས་པར་སྤྲས་པར་བྱ། །
 གྲོང་མཆོག་ཡིད་འོང་མཆོད་ན་ནི། །
 བྱལ་པ་ཉིད་དུ་ཐེ་ཆོམ་མེད། ༣༤ །

གང་གིས་ཞེས་པ་ལ་གསེར་ནམས་གྱིས་མངོས་པར་དབྱམ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་
 པ་ལ་རིན་པོ་ཆེ་ནི་མུ་ཏིག་ལ་སོགས་པའོ། །གསེར་ཉིད་ནི་གསེར་རོ། །འདིར་མངོས་
 པ་ནི་མངོས་གིང་བརྒྱན་པའོ། །རིན་ཆེན་གསེར་གྱིས་བརྒྱན་པ་དེ་ནི་དེ་བཞིན་ནོ། །
 ཇི་ལྟ་བུའི་གདམས་ངག་གིས་མཆོད་པ་ཐམས་ཅད་ཇི་ལྟར་དབྱམ་ཞེ་ན། དགྲིལ་
 འཁོར་གང་ཡིན་པ་དེ་ལ་མཆོད་པ་ནི་སྤང་པོ་རིན་པོ་ཆེ་²དང་། ཏུ་རིན་པོ་ཆེ་དང་།
 རྩོམ་བྱ་རིན་པོ་ཆེ་དང་། རལ་གྱི་རིན་པོ་ཆེ་དང་། འཁོར་ལོ་རིན་པོ་ཆེ་དང་། རྫོན་
 པོ་རིན་པོ་ཆེ་དང་། བྱད་མེད་རིན་པོ་ཆེ་སྟེ་དེ་ནམས་གསེར་དང་ཡོན་ཏན་འདྲ་བས་
 གསེར་ཞེས་ཁ་ཅིག་ཟེར་རོ། ། ༣༥ །

བདག་ཉིད་ཀྱན་ནས་ཞལ་ལ་ནི། །
 ཇི་ཡི་ཆུ་ཡིས་ལེགས་པར་གདབ། །
 གལ་ཏེ་དངོས་བྱལ་མཆོག་འདོད་ན། །
 མར་མེ་བརྒྱ་ནི་དབུལ་བར་བྱ། ༣༥ །

-
1. ཆོད་ན་ ལྷ།
 2. སྤང་པོ་ཆེ་རིན་པོ་ཆེ་ གསེར། ཡེ།

བདག་ཉིད་ཀྱན་ནས་སྒྲིལ་ནི། །ཞེས་པ་ནི་བདག་ཉིད་དཔལ་ཏེ་རུ་ཀ་གྲོང་གི་
དབུས་སུ་མཆོད་པར་བྱ་ཞེས་སྟུར་རོ། ༡༥ །

ནམ་མཁའ་མཁའ་འགྲོ་མ་ནམས་ནི། །
ཡིད་ཀྱིས་ཐམས་ཅད་སྤྲོད་དུ་དགོད། །
ས་སྤྲོད་མཁའ་འགྲོ་མ་གང་ཡིན། །
དཀྱིལ་འཁོར་ཀྱན་ཏུ་དགོད་པར་བྱ། ༡༦ །
གང་ཡང་ས་འོག་མཁའ་འགྲོ་མ། །
དེ་ནི་ས་འོག་ནམས་སུ་དགོད། །
མ་མོ་ཐམས་ཅད་ཕྱོགས་དང་ནི། །
ཕྱོག་མཆམས་ནམས་སུ་དགོད་པར་བྱ། ༡༧ །

ས་སྤྲོད་ནི་ཡས་གཞིའོ། །ཡང་ན་ས་འོག་མཁའ་འགྲོ་མ། །ཞེས་པ་ནི་ཉི་ཤུ་རྩ་
བཞིའོ། །གཞུང་ཁ་ཅིག་ན་མ་མོ་ཞེས་བྱ་བའི་སྤྱོད་དེ་དེ་ཉིད་ཀྱི་དོན་ཏོ། །མ་མོ་འོ་
སྤྱོད་ནི་ཁྱ་གདོང་མ་ལ་སོགས་པ་བརྩ་གཉིས་སོ། ༡༦-༡༧ །

གལ་ཏེ་དངོས་གྲུབ་མཆོག་འདོད་ན། །
དེ་དང་མེ་ཏོག་དེ་བཞིན་སྒྲིལ། །
ཆོ་ག་བཞིན་དུ་དེ་བཞིན་མཆོད། །
མར་མེ་བརྒྱ་ཡང་དབུལ་བྱ་ཞིང་། ༡༨ །

1. སྒྲིལ་ན་གསེར། བཤ།

2. ས་སྤྲོད་ནི་སྤྱོད་ཅོ།

གོང་གི་མར་མེ་ཞེས་པ་ནི་བྱུན་མོང་གི་མར་མེ་བརྒྱ་བྱ་བར་གསུངས་སོ། །མར་
མེ་བརྒྱ་ཡང་ཞེས་པ་ནི་མར་ཁྲ་ཆེན་པོར་གྱུར་པ་ལོ། །འདིར་ནི་འཇིག་རློན་གྱི་པར་གྱི་
དོན་དྲེ། ལྷག་མ་ནི་གོ་སྒྲུབ། ༣༩ །

དཔལ་དྲེ་རུ་ཀའི་དགྱིལ་འཁོར་གནས། །

དཔལ་པོ་རྣལ་འབྱོར་མ་རྣམས་མཆོད། །

རྒྱལ་མཆན་དམར་དང་དེ་བཞིན་སེར། །

དཀར་དང་ནག་དང་སེར་སྐྱ་དང་། ༣༧ །

མེ་དྲོག་སྤང་བ་དུ་མ་དང་། །

དེ་བཞིན་གོས་ནི་སྒྲ་ཆོགས་དང་། །

སྒྲ་རེ་དང་ནི་ཡོལ་བ་དག། །

མཛེས་པ་ཇི་ལྟ་དེ་བཞིན་དྲེ། །

དེ་བཞིན་བཟའ་བཅའ་བརྒྱུང་བ་ཡིས། །

རབ་མཉམ་བཞག་སྒྲེ་མཆོད་པར་བྱུ་། ༣༠ །

དཔལ་དྲེ་རུ་ཀའི་ངེས་པར་བརྗོད་པ་ལས་འཁོར་ལོ་མཆོད་པའི་ཆོག་ཀའི་ལེའུ་
སྒྲེ་གཉིས་པ་ལོ། །

བཅའ་བཞི་ནས་ཀྱི་ཁྲར་བ་ལ་སོར་པ་ལོ། །བཟའ་བཞི་ཟན་ལ་སོགས་པ་ལོ། །སྒྲོན་མོ་

1. གནག་ བེ། ལྷ།

2. རབ་དུ་མཉམ་པར་བཞག་པར་བྱ། རྒྱ་དེ།

ནི་ཆོད་མའོ། །བདུང་བ་ནི་བདུང་བ་སྟེ། ཞོ་དང་ཐུག་པ་ལ་སོགས་པ་འོ། །བྱ་ཞེས་པ་
ནི་མཆོད་པ་ཞེས་པ་ལྷག་མའོ། །འདིས་ཕྱི་རོལ་གྱི་མཆོད་པ་བསྟན་ཏོ། ། ༣༩-༣༠ །

དེ་ལ་འཁོར་ལོ་དང་མཆོད་པ་དེ་དག་གི་ཆོ་གའི་ཆེད་དུ་མངོན་པར་བཟོད་པའི་
ལེའུ་སྟེ་དེ་ཡང་གཉིས་པ་འོ། །དཔལ་འཁོར་ལོ་སྟོམ་པའི་དཀའ་འགྲེལ་ལས་ལེའུ་
གཉིས་པ་འོ། ། ༥

✱

ཡོན་དང་བཅས་པའི་དབང་བསྐྱར་བའི་ལཱ།

དེ་ནས་སྐྱབ་པོས་དངོས་ཀྱི་ཁྱིས།

དང་པོར་སྒྲོབ་དཔོན་མཉེས་པར་བྱ།

གྲུབ་འདོད་ཟིན་ཏུ་མཉམ་གཞག་པས།

ཅི་རྒྱས་པས་ནི་བྲ་མ་མཆོད།

གླ་མའི་གདམས་ངག་མེད་ན་འགྲུབ་པའི་ཐབས་འཁྱར་ཟད་ཀྱང་མེད་པའི་སྤྱིར་
 དེ་ཉིད་མཉམས་པར་བྱ་བ་ནི་དབང་གི་དུས་སུ་མཆོད་པར་བྱ་བ་ཞིང་། དེ་ནས་ཞེས་
 གསུངས་སོ། །གང་གི་སྤྱིར་ངེས་པར་སློབ་དཔོན་གྱི་གདམས་ངག་མེད་ན་དངོས་གྲུབ་
 མེད་པ་ཞིང་། དེའི་སྤྱིར་གླ་མ་མཉམས་པར་བྱའོ། །དེ་ནས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཐ་དད་པའི་
 ཆོག་ཞིང་། དེ་ཉིད་སློབ་དཔོན་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །དང་པོར་ཞེས་པ་
 ནི་སློབ་དཔོན་གྱི་བྱད་པར་ཏེ། ཡང་དག་ཤེས་ཤིང་རྒྱད་ཤེས་པ་། ཞེས་བྱ་བ་ལ་
 སོགས་པ་ནི་བྱེ་བྲག་གི་བྱད་པར་ཅན་ནོ། །ཡང་ན་དུས་གྱི་བྱད་པར་ཏེ་དང་པོར་སློབ་
 དཔོན་མཉམས་པར་བྱ་བ་ནི་གསོལ་བ་གདབ་པར་བྱ་བའི་དོན་ཏེ། །དངོས་ཀྱན་གྱིས་
 ཞེས་བྱ་བ་ནི་མོར་དང་བདག་ཉིད་ལ་སོགས་པའོ། །ཅི་རྒྱས་པས་ནི་གླ་མ་མཆོད། །

1. བཞིན་དུ་མཉམ་བཞག་ ལྷ། ཤིན་དུ་མཉམ་བཞག་ རྩ། དེ།

2. རྒྱལ་སྤྱི་སྐྱབ་ཐབས་(མཆོག་ལྟོས་) རྒྱ་དཔེ།

3. རྒྱལ་ལེས་པ་ དེ། གསེར།

གྲུབ་འདོད་ཤིན་ཏུ་མཉམ་གཞག་པས། །ཞེས་པའི་ཁིའི་སྐྱ་ནི་བྱད་པར་གྱི་དོན་དོ། །
 དེའི་ཐུར་རེ་ཞིག་ཐ་མ་ཉིད་སྒྲོབ་དཔོན་ཏེ་སྒྲོབ་མས་དངོས་པོ་ཀྱན་གྱིས་²མཆོད་ནས་
 དེ་ནས་དཀྱིལ་འཁོར་བྱའོ། །དེ་ལ་ཞུགས་པ་ལ་སོགས་པའི་དོན་དུ་མཆོད་པར་བྱ་སྟེ་³།
 བདག་གིས་དབང་ལ་སོགས་པ་ཐོབ་ནས་དངོས་གྲུབ་བསྐྱབ་པར་བྱའོ། །གྲུབ་པར་
 འདོད་པ་ནི་གྲུབ་འདོད་དེ། རྒྱགས་ཀྱི་བཟུངས་པ་ལ་སོགས་པ་བྱས་ཤིང་མཉམ་པར་
 གཞག་⁴པས་སོ། ། ༡ །

དེལ་བྱ་སྐྱ་ལྷན་དབྱངས་པ་⁵དང་། །

མེ་ཏོག་སྒྲོས་ནམས་ཀྱིས་བརྒྱན་⁶ཅིང་། །

ཤིན་ཏུ་སྐྱ་སྟན་དེལ་བྱ་དགྲོལ། །

སྐྱབ་པ་པོ་ཡིས་རྩ་བརྟུང་ཞིང་⁸། །

ཏ་ཏ་ཞེས་ནི་བརྗོད་པར་བྱ། ། ༡ །

དེལ་དབྱངས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པས་ནི་དེལ་བྱའི་དབང་སྟོན་ཏེ། སྐྱབ་པ་པོ་
 ཡིས་དེལ་བྱ་དགྲོལ། །ཞེས་བྱ་བར་སྐྱར་རོ། །མེ་ཏོག་སྒྲོས་ཀྱིས་བརྒྱན་ཞེས་པ་ནི་

-
1. ཤེས་པའི་ གསེར། བེ།
 2. ཀྱན་གྱི་ ཅོ།
 3. དེར་བདག་ཉིད་དབང་ལ་སོང་པའི་དོན་དུ་མཆོད་པར་བྱ་སྟེ་གསེར་བེ་གཉིས་སུ་སྒྲག་པ་གསལ།
 4. མཉམ་པར་བཞག་ བེ། གསེར།
 5. ཐུངས་པ་ བེ། སྒྲ།
 6. ཐུན་ སྒྲ།
 7. སྐྱ་བརྟན་ བེ།
 8. རྩ་བརྟུངས་ཤིང་ བེ།

མཚན་པའི་དོན་དུ་ཞེས་པའོ། ། བེན་ཏུ་སྒྲ་སྒྲ་ཞེས་པ་ནི་ཉེ་བར་མཚན་པ་སྟེ།
 མཚན་ཉིད་ཐམས་ཅད་བསྟན་པའོ། ། ཅི་བྱ་ཞེས་པ་ལ་དེ་ལ་བྱ་དགྲོལ་²ཞེས་བྱ་བ་ལ་
 སྟགས་པ་གསུངས་ཏེ། དེ་ལ་བྱ་ནི་ཀུན་རྫོབ་པོ། ། དེ་ཡི་³སྒྲ་ནི། ཇི་ལྟར།

སྟོན་པ་⁴རྩོམ་ཉིད་ཀྱིས་དག །

རྩོམ་ཉིད་ཀྱིས་སྟོན་བྲལ་བྱས། །

རྩོམ་ཉིད་དག་སེམས་དཔའ་མཚོག །

སྟོན་པ་མཚོག་ཏུ་བྱེད་པར་འགྱུར། །

ཞེས་བྱ་བའི་ཚིགས་བརྗོད་པ་དང་། རྩོམ་ཀྱང་དེའི་དོན་དུ།

འདི་དེ་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ཀྱི། །

ཤེས་རབ་དབྱངས་ཀྱི་རྗེས་འགྲོར་བཤད། །

ཁྱིད་ཀྱིས་ཀྱང་ནི་ཉག་ཏུ་བཅང་། །

བྱང་ཆུབ་མཚོག་ཏུ་རྒྱལ་བས་བཞེད། །

ཅེས་པའི་ཚིགས་བཅད་བརྗོད་དེ། རྩོམ་མེ་བཙུན་གྱིས་དེ་ལ་བྱ་བྱིན་ལ། དེ་ལ་བྱའི་སྒྲ་
 ལ་དམིགས་ནས་དགྲོལ་བར་བྱ་ཞེས་དགོངས་སོ། ། རྩོམ་དང་ཞིང་⁵ཞེས་པ་ནི་བྱ་

1. ཅེས་པ་ནི་མཚན་པའི་དོན་ཞེས་པའི་དོན་དུ་ གསེར། བེ།
 2. ཞེས་བྱ་བ་ལ་དེ་ལ་བྱ་དགྲོལ་བྱ་ གསེར། ཞེས་པ་ལ་དེ་ལ་བྱ་དགྲོལ་བྱ་ བེ།
 3. དེའི་ གསེར། བེ།
 4. སའཆྭ་སྟེ་ རྒྱ་དཔེ།
 5. ‘ཞིང་’ གསེར་བེ་གཉིས་སུ་མེད།

གེས་པར་བྱེད་པའོ། །འམ་གྱི་སྐྱས་ནི་མཚན་ཉིད་གཞན་བསྟུ་བའོ། །ཡང་གོ་
 རིམ་¹བསྒྲིག་པས་རིམ་པ་བཞིན་སྐྱབ་པ་པོ་²ཡིས་ཀྱང་དེ་བདུང་བར་བྱའོ། །དང་པོར་
 སྟོབ་དཔོན་གྱིས་བྱིན་པ་དེ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་གང་སྐྱ་བྱ་བར་བྱུབ་པ་གང་ཡིན་པ་ནི་ཡང་
 སྐྱས་ཏྲོགས་པར་བྱའོ། །དྲུག་ཞེས་ནི་བཙུང་པར་བྱ། །ཞེས་པས་ནི་དྲུག་ནི་མིང་གི་
 དབང་སྟེ། སྐྱ་མ་རྗེ་བཙུན་གྱིས་གྱུས་པ་ཉིད་དུ་གྱུར་པའི་སྟོབ་མའི་བདག་ཉིད་གང་
 ཡིན་པ་ལ་དེས་དེ་བྱའོ།³ །བྱ་ཞེས་པ་ནི་བྱའོ་ཞེས་བསྟན་པའོ། །དེ་ནས་འདི་ཡིས་ནི་
 སྐྱ་མ་ལ་གྱུས་པ་ཆེན་པོར་བསྟན་པ་ཡིན་ནོ། །དྲུག་དང་མིང་གཉིས་ནི་སྐྱའི་བདག་ཉིད་
 ཡིན་པར་མཐུན་པས་མིང་ཞེས་དེ་ལྟར་བཙུང་དོ། །དེ་ཕྱིར་ཐུ་དང་དབུ་བྱན་དང་རྩ་
 རྗེ་དང་བདག་པོའི་དབང་ཆ་མས་གཟུང་བ་ཡིན། དེ་གཉིས་ཀྱི་སྟོན་དུ་འགྲོ་བ་ཉིད་ཡིན་
 པའི་ཕྱིར་རོ། །དོན་གཞན་ཡང་སྐྱ་མས་ཀྱང་རིལ་བུའི་སྐྱ་བྱའོ་ཞེས་གསུངས་པར་བྱའོ། །
 ཅི་བྱས་ནས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་ཕྱོགས་བཙུར་རིལ་བུའི་སྐྱ་ཕྱ་མོ་⁴བྱ་བ་སྟེ། དེ་ནི་རིལ་བུའི་
 སྐྱ་ཞེས་བྱ་བའི་མན་ངག་གོ། །ཡང་ན་དེ་སྟོན་བཞིན་གྱི་ཆོགས་བཅད་ཀྱིས་སོ། །སྐྱབ་
 པ་པོས་ཀྱང་རྩ་བདུང་བ་དང་དྲུག་ཉིད་སྐྱ་ཡང་བྱ་སྟེ། དྲུག་ནི་ཀླུ་པར་གྱུར་ཅིག་པའོ། །
 ཡང་གོ་སྐྱས་ནི་གཞན་བདུང་བ་དང་། དཀྱོལ་བའི་ཁྱད་པར་དང་སྐྱ་ཡང་གསུངས་པར་
 བྱའོ། །རིལ་དབུངས་ནི་རང་རང་ཏྲགས་སུ་ཉི་བར་གནས་པ་སྟེ། ལོ་ཉི་ཤུ་ཙ་ལ་

-
1. གོ་རིམས་ རྟེན། ཅོ།
 2. བཞིན་དུ་སྐྱབ་པོ་ བཤ། གསེར།
 3. གང་ཡིན་པ་ལ་དེས་བཟུ་བྱའོ་ རྟེན་དཔེ།
 4. རིལ་བུའི་སྐྱ་ཕྱ་མོ་བཙུ་ རྟེན་དཔེ།

བཟོད་པའོ། །དྲིལ་བུ་ནི་ལོ་བརྒྱ་གཉིས་མའོ། །རྩ་ནི་ལོ་བརྒྱ་དྲུག་མའོ། །དྲིལ་བུའི་སྐྱ་
 ནི་དོ་རྩེའི་རིགས་སོ། །དྲིལ་བུ་ནི་རིན་པོ་ཆེའི་རིགས་སོ། །རྩ་ནི་པརྩེའི་རིགས་སོ། །
 ཏཏ་ནི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་རིགས་སོ། །དང་ཡིག་ལས་གཞན་ཡང་ངོ་། །མིང་
 གིས་ནི་གཞན་དྲིལ་བུའི་སྐྱའི་རིགས་ནམས་ཏེ་དེ་ནམས་གང་ཡང་རུང་བ་ཅིག་སྟེ་སྟོབ་
 དཔོན་གྱིས་བསྟེན་པར་བྱའོ། །དྲིལ་བུའི་སྐྱ་ཡང་སྟོབ་མ་སྐྱབ་པ་པོས་ཨོན་ལྷན་ཞེས་
 བྱ་བའི་སྐྱགས་གྱིས་ནམ་པར་བཟོད་པར་བྱའོ། །ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། །གང་གི་རྩེས་
 སུ་ཞེས་པ་ལ་སྟེན་ལག་ཅེས་པ་ལ་སོགས་པ།

སྟོམ་པོ་²མཐའ་ཉུག་ཅེ་སྐྱར་བས། །

ནལ་འབྱོར་རིག་པས་ཉུག་ཏུ་སྦྱད། །

ཞི་བའི་བརྟུང་བ་བཞིན་སྦྱངས་ན། །

དངོས་གྲུབ་ཉུག་པ་ཐོབ་པར་འགྱུར། །(བདེ་མཆོག་ལེའུ་༡/༡༣-༡༤)

ཞེས་བྱ་བའི་ཆོགས་བཅད་དང་ཡང་སྐྱར་བར་བྱའོ། །དེ་ནས་འདིའི་དོན་གཞན་ཡང་
 སྟོན་དུ་བསྟན་པའི་ཤེས་རབ་བསྟེན་པ་གང་ཡིན་པ་ལས་བྱུང་བ་སྟོབ་དཔོན་གྱིས་མཐེ་
 བོང་དང་སྟེན་ལག་གིས་སྟོབ་མ་ལ་བྱིན་ཏེ་སྦྱད་པར་བྱའོ། །སྟོབ་མ་དེ་ཡང་ཞི་བའི་
 བརྟུང་བ་བཞིན་སྦྱངས་ན་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་པར་འགྱུར་བ་སྟེ་གསང་བའི་དབང་ངོ་། །
 འདི་ཉིད་གྱིས་སྟོབ་དཔོན་གྱི་དབང་ཡང་འགྲུབ་སྟེ་དེ་སྟོན་དུ་འགྲོ་བའི་བྱིར་རོ། ། ༡ །

1. གང་ཡང་རུང་བ་ཞིག་ གསེར། རེ།

2. སྟོམ་མོ་ གསེར།

3. སྟོད་པར་ རེ། ཅོ།

དེ་ལྟར་ཆོ་ག་བཞིན་དཀྱིལ་འཁོར། 1

འདོད་པ་ཀུན་ལྡན་མཆོད་ནས་ནི། 1

བྱ་སྐྱུག་དེ་དག་གཏོང་པ་ལ། 1

དར་རས་ལེགས་པར་བཀའ་ནས་སུ། ༩ 1

གང་གི་རྗེས་སུ་འདི་ཐམས་ཅད་བྱ་ཞེས་པ་ལ། དེ་ལྟར་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ་
མེ་ཏོག་ལ་སོགས་པ་སྡོན་དུ་འགྲོ་བས། སྡོན་དུ་བསྟན་པའི་རྩལ་ཆོན་གྱི་དཀྱིལ་འཁོར་
རམ་ཐང་ཀའོ། །མཆོད་པ་ཞེས་པ་ནི་ཡང་དག་པའི་སྐྱས་སྡེ་སྟེ། དེ་ལ་མཆོད་པ་
གཞུག་པར་བྱའོ་ཞེས་སྐྱར་རོ། །གང་ཡིན་ཞེས་པ་ལ་གང་ཡིན་ཞེས་པ་ནི་གཙང་སྐྱ་
བྱེད་པས་ན་བྱ་སྟེ། དེའི་སྤྱིར་བསྐྱུགས་པ་²ལ་ཀའི་སྐྱ་བྱས་པའི་བྱ་ནི་སློབ་མས་ཏེ།
བཟུངས་པ་ལ་སོགས་པ་རིག་པ་རིགས་ལ་སོགས་པ་ལྡན་པར་འགྱུར་རོ། །ཅི་བྱས་ན་
ཞེས་པ་ལ། དར་བྱིས་ལེགས་པར་བཀའ་ནས་སུ། །ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་
གསུངས་ཏེ། དར་ནི་གོས་དམར་པོའོ། །བྱ་དེ་ན་མས་ལ་ཞེས་པ་ནི་ཐུན་མོང་དུ་མང་
བའི་ཆོག་བྱས་པའོ། །དེ་ནི་ད་དུ་རེ་རེ་གཞུག་པར་བྱའོ་ཞེས་སོ། ༩ 1

ཐལ་མོ་མེ་ཏོག་གིས་བཀང་སྟེ། 1

ཡང་དག་པར་ནི་ཞུགས་པ་དག 1

སྐྱབ་པོ་གིན་དུ་མཉམ་བཞག་³པས། 1

དེ་ནས་བསྐྱོར་བ་བྱས་ནས་ནི། ༩ 1

1. སྤྱུང་པས་ན་ལྟེ་ཐུ་དཔེ།

2. བོད་དཔེར་‘སྐྱུགས་པ’ ཞེས་གསལ། གོང་དུ་ཐུ་དཔེ་ལྟར་བཀོད་ཡོད།

3. མཉམ་གཞག་ ལྟེ།

སྒོ་བཟང་ཡིད་ནི་མཉམ་བཞག་¹པ། 1

སྒོ་བྱང་ཉམས་དགར་གཞུག་པར་བྱ། 1

སྒོ་ཡི་ཕྱོགས་སུ་ལུས་བརྟེན་²ལ། 1

ཐལ་མའི་མེ་ཏོག་དེ་ནས་དོར། 4 1

དེ་ཉིད་ནི་མེ་ཏོག་གིས་བཀང་ཞེས་བྱ་བ་གསུངས་ཏེ་བརྟུག་པའི་རྗེས་སུ་སྐྱབ་པ་
 པོས་གཡས་ནས་བསྐྱོར་བ་³བྱ་སྟེ་སྒྲིམ་པ་མེ་ཏོག་གིས་བཀང་སྟེ་དོར་བར་བྱའོ། །སྒོ་
 ཕྱོགས་སུ་ལ་བརྟེན་ནས་སུ། །སྒྲིམ་པ་མེ་ཏོག་དེ་ནས་དོར། །ཞེས་པ་ནི་སྒོ་ཕྱོགས་སུ་
 མངོན་པར་ཕྱོགས་པས་དོར་བ་སྟེ་མན་ངག་གོ། །ཡང་ན་མཚོད་ཉེན་ལ་ཕྱག་བྱ་བའི་
 རིམ་པས་བཅོམ་ལྡན་འདས་ལ་གཡས་ཕྱོགས་སུ་བསྐྱོར་བའོ། ༥-༥ །

དཀྱིལ་འཁོར་སྟང་དུ་དོར་བར་བྱ། 1

གང་དུ་མེ་ཏོག་དེ་ལྟར་བ་⁴། 1

སྒྲི་ཏེ་རུ་ཀའི་གནས་སོགས་བརྟན། 1

དེ་ཡི་རིགས་ནི་རྣམ་བརྟན་ཏེ། 1

-
1. མཉམ་བཞག་ ལྷ།
 2. སྒོ་ཡི་ཕྱོགས་སུ་ལུས་བརྟེན་ བེ། ལྷ། སྒོ་ཡི་ཕྱོགས་སུ་ལུས་བརྟེན་ རྟེ། ལྷ། གོང་དུ་འགྲེལ་བ་
 དང་མཚུངས་པར་བཀོད་ཡོད།
 3. སྐྱོར་བ་ གསེར། བེ།
 4. ལྟར་ས་ ལྷ།

དེ་ནི་རིགས་དེའི་མིང་འགྱུར་བར་། 1

སློབ་དཔོན་གྱིས་ནི་མིང་བརྟན་ཏེ་། 2 6

དེ་ནས་སློབ་དཔོན་ལེགས་པར་ནི། 1

མཉམ་པར་བཞག་³སྟེ་ཕྱག་རྒྱ་མཆོད། 1

དེ་ནས་སློབ་མ་ཕྱི་དེ་ཉིན་། 1

ལས་ནི་ཡང་དག་སྤྱད་པར་བྱ་། 2 1

མཚལ་ཆེན་ལན་གསུམ་བཟུང་བ་ཡིས། 1

དེ་ནས་སྤྱི་ཞིག་ལེ་བྱ། 1

སློབ་མ་ཡི་ནི་གདོང་ཕྱེ་ལ། 1

དེ་ནས་དཀྱིལ་འཁོར་བརྟན་པར་བྱ། 1 1

དཔལ་དེར་ཀྱང་ལ་སོགས་གནས། །ཞེས་པ་ནི་གཉིས་པ་ཕྱི་བ་སྟེ། །གདོང་ཕྱེད་
དཀྱིལ་འཁོར་བརྟན་པར་བྱ། །ཞེས་སྒྱུར་རོ། །དཀྱིལ་འཁོར་བརྟན་པའི་རྗེས་སུ་
དཔལ་དེར་ཀྱང་ཉེ་བར་མཆོན་པ་སྟེ། །གནས་ལ་སོགས་པ་བརྟན་པར་བྱའོ་ཞེས་པའི་
དོན་ཏོ། །དེ་ནས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པས་ནི་ཤེས་རབ་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་དབང་སྟོན་ཏེ། །དེ་

1. འགྱུར་བ་ ལྟ།

2. བརྟན་ཏེ་ ལྟ།

3. མཉམ་པར་གཞག་ ལྟ།

4. སློབ་དཔོན་ཕྱི་དེ་ཉིན་ བཤ། སློབ་མ་ཕྱི་དེ་ཉིན་ ལྟ།

5. བཅད་པར་བྱ་ བཤ།

ནས་དེ་གསང་བའི་དབང་གི་རྗེས་ཐོགས་སུ་སློབ་དཔོན་ཞེས་པ་ནི་བརྟན་པ་ཉིད་ལ་
 སོགས་པའི་ཡོན་ཏན་དང་ལྡན་པའོ། །དེ་ལ་ཟུ་མཚན་ལ་ཀར་ཀར་ལ་སོགས་པའི་
 རྒྱགས་བཟུངས་པས་ཐིག་ལེ་བྱའོ། །དེ་ལ་ཞེས་པ་ནི་དེ་ནམས་ཀྱི་ནང་ནས་ཁ་ཅིག་དཀྱིལ་
 འཁོར་དུ་བརྟུག་ཅིང་གདོང་བྱེ་བ་ལ་དེས་ཐིག་ལེ་བྱ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། ། ༥-༡ །

ལྟ་གང་གི་ནི་གནས་གང་ཡིན། །

དེར་དེ་¹ཡང་དག་བརྟན་པར་བྱ། །

སློབ་དཔོན་དང་བཅས་པོ་བྱང་ལ། །

དེ་ནས་སློབ་མས་རབ་བརྟུང་ནས། །

གང་ཡང་ལྟ་ནམས་ཀྱི་གནས་དེ་ལ་བརྟན་པར་བྱའོ་ཞེས་དགོངས་སོ། །གནས་
 ལ་སོགས་པ་དཔལ་དེར་ཀྱང་ལ་སོགས་པའི་ལྟ་ནམས་བརྟན་པར་བྱའོ། །ལུས་རྗེས་སུ་
 དན་པ་ནི་མཁའ་འགོ་མའོ། །ཆོར་བ་རྗེས་སུ་དན་པ་ནི་ལྷ་མའོ། །ཆོས་རྗེས་སུ་དན་
 པ་ནི་དུམ་སྐྱེས་མའོ། །སེམས་རྗེས་སུ་དན་པ་ནི་³གཟུགས་ཅན་མ་ལ་སོགས་པ་དཀྱིལ་
 འཁོར་གྱི་དེ་ཉིད་དང་། ལྟའི་དེ་ཉིད་ཀྱང་བརྟན་པར་བྱའོ། དེ་ནས། སློབ་དཔོན་དང་
 མི་བཅས་པ་ལ། །རབ་བརྟུང་བརྟུང་པ་⁴བྱས་ནས་ནི། །ཞེས་པ་ལ། དེ་ནས་སློབ་མ་

1. དེར་ནི་ ལྟ། དར་ད་ བཤ།

2. ལྟ་བརྟན་ རྗེ། ཅོ།

3. གསེར་བྱིས་དང་པེ་ཀིང་པར་མ་གཉིས་ཀའི་ནང་“ནི”འཁོད་པ་མ་གསལ།

4. རབ་བརྟུང་འདྲུང་པ་ རྗེ། ཅོ།

གདོང་ཕྱེ་བའི་རྗེས་ལ་དཀྱིལ་འཁོར་ལ་འདུད་པ་¹ བྱས་ནས་ཐིག་ལེ་བྱས་པ་དཀྱིལ་
འཁོར་གྱི་མདུན་དུ་བཞུག་པར་བྱའོ། །

ཕྱིར་ཡང་གཡོན་ནས་བརྩམས་པ་ཡིས། །

དེ་ནས་བསྐྱོར་བ་བྱས་ནས་ནི། །

དཀྱིལ་འཁོར་དང་ནི་ཆ་མ་ལ། །

ཇི་བཞིན་ཆོ་གས་ཕྱག་བྱའོ། ། ༡༠

དེ་ནས་ཆ་མ་དག་ལ་ཡོན། །

དེ་བཞིན་གསེགས་པས་གསུངས་པ་དབུལ། །

གསེར་ནི་བརྒྱ་སྟོང་དབུལ་བ་དང་། །

རིན་ཆེན་རྣམ་པ་སྟེ་ཆོགས་དང་། ། ༡༡

རས་ནི་བྱུང་གྱུར་བརྒྱ་ཉིད་དང་། །

སྒང་པོ་དང་ཡུལ་འཁོར་དང་། །

ན་རྒྱན་དང་ནི་གདུ་བྱ་²དང་། །

མགུལ་གདུབ་³སོར་གདུབ་དམ་པ་དང་། ། ༡༢

གཡོན་ནས་བརྩམས་པའི་རིམ་པ་ཡིས། ། དེ་ནས་བསྐྱོར་བ་རབ་ཏུ་བྱ་⁴། ། ཞེས་

1. གདུད་པ་ གསེར། བེ།

2. ར་རྒྱན་འཕམ་ནི་གདུབ་བྱ་ སྟེ། ར་རྒྱན་འཕམ་ནི་གདུབ་བྱ་ ལྟ།

3. མགུལ་རྩལ་ བེ།

4. སྐྱོར་བ་རབ་ཏུ་ གསེར། བེ།

པ་ནི་ཡང་བསྐྱར་བ་བྱ་སྟེ། གཡོན་ནས་བཅ་མས་ནས་གཡས་སུ་བསྐྱར་བའམ།
 གཡོན་དུ་བསྐྱར་བས་འཁོར་བར་བྱས་ལ་དཀྱིལ་འཁོར་དང་ཐ་མ་ལ་¹བདུད་ནས། །
 ཐ་མ་ལ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པས་གསུངས་པའི་ཡོན་དབུལ་བར་བྱའོ། །དཀྱིལ་འཁོར་
 རྩེ་དེ་ཉིད་བསྟན་པའི་རྩེས་སུ་སློབ་མས་ཐ་མ་ལ་ཡོན་དབུལ་བའོ། །དེ་ཡང་བདུད་
 ཅི་ལྟ་སྒྲིན་པ་སྟོན་དུ་འགོ་བས་ཁུ་ལ་སོགས་པའི་དབང་ནས་སློབ་དཔོན་གྱི་བར་དུ། དེ་
 ནས་གསང་བའི་དབང་ནི་ཞེས་པ་ནི་གཞུང་གོ་བསྒྲིག་པ་སྟེ་བསྐྱས་པའི་དོན་དོ། །ཡོན་
 ནི་དབུལ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། གཏོང་བའི་རྩོམ་ཉིད་ཁུར་ནི་དབུལ་
 བ་སྟེ། དེས་པར་གཏོང་བ་ནི་མ་ལུས་པར་གཏོང་བའོ། །དེ་མ་ལུས་པར་གཏོང་བ་
 ཡང་ཡིན་ལ། གསེར་སྲང་བརྒྱ་དང་སྟོང་ཡང་ཡིན་པས་ན་དེ་ནི་དེ་བཞིན་ནོ། །
 གསེར་སྲང་འབུམ་ཡང་དབུལ་ལོ།³ །སྲང་པོ་ཆེ་ཞེས་པ་རྒྱུན་⁴ཕྱིས་པའི་ཆིག་གོ། །
 སོར་གདུབ་ཅེས་པ་ནི་སོར་གདུབ་དང་བཅས་པས་གསུམ་པའི་དོན་དོ། །དམ་པ་ནི་
 དབུ་རྒྱན་ནོ། ༡༠-༡༣ །

གསེར་ལས་བྱས་པའི་མཆོད་ཕྱིར་ཐོགས། །

རྒྱུང་མ་བཟང་⁵དང་བྱ་མོ་ཉིད། །

-
1. རྩེ་དགེ་དང་ཅི་ནི་གཉིས་སུ་ལ་མེད།
 2. གཏོར་མའི་ བོད་དཔེ། གོང་དུ་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་བཞག་ཡོད།
 3. འབུམ་ཡང་རྩོ་ གསེར། བེ།
 4. བོད་དཔེར་རྒྱན་ཞེས་གསལ་ཡང་གོང་དུ་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་བཞག་ཡོད།
 5. རང་གི་རྒྱུང་མ་ རྒྱ་དཔེ།

མཆོག་ཀྱི་ཀླུ་ལ་པོ་དཔལ་བདེ་མཆོག་ཉུང་དུ་ཞེས་བྱ་བའི་ཙུང་འགྲེལ།

བྱན་པོ་བྱན་མོ་སྤྱིང་མོ་ནམས། །

ཕྱག་བཙུང་ལ་¹ནས་ནི་དབུལ་བར་བྱ། ༡༩ །

གསེར་ལས་བྱས་པའི་མཆོད་ཕྱིར་ཐོགས། །ཞེས་པ་ནི་ཚངས་པའི་སྐྱེད་པ་གསེར་
ལས་བྱས་པའོ། །བྱན་མོ་ཞེས་པ་ནི་རྒྱུན་མེད་པའོ། །འདི་ཐམས་ཅད་སྒྲ་མ་ལ་དབུལ་
བར་བྱའོ། །

རང་རྟག་²དམ་ཆོག་སློབ་དཔོན་ནི། །

སྤྱིན་མིན་བྱ་དང་ཚུང་མ་དང་། །

རང་སྟོག་གིས་ཀྱང་བརྟེན་བྱ་ན། །

མོངས་སྟེང་གཡོ་བ་སློས་ཅི་དགོས། །

ཞེས་གསུངས་པའི་ཕྱིར་རོ། ༡༩ །

ཇི་སྐད་གསུངས་བཞིན་སློབ་མ་ནི་³། །

སློ་དང་ལྡན་པས་སྒྲ་མ་ལ། །

དངོས་པོ་ཀྱན་གྱིས་བདག་ཉིད་ནི། །

དེ་བཞིན་དུ་ནི་དབུལ་བར་བྱ། །

དེང་ནས་བཙུམས་ཏེ་བྱན་དུ་བདག །

བྱིད་ལ་བདག་གིས་སྤུལ་བ་ལགས། ༢༠ །

1. ཕྱག་འཛུལ་ བཤ།

2. རང་རྟགས་ རྟེན། ཅོ།

3. 'ཇི་སྐད་གསུངས་བཞིན་སློབ་མ་ནི།' རྒྱ་དཔེར་མེད།

བདག་ཉིད་དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་གྱིས། །ཁྲོ་ལྷན་ཐུག་པ་དབུལ། །ཞེས་པ་
 ཉི་དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་ཉི་ལུས་ལ་སོགས་པའི་བྱ་བའོ། །འདིར་འདི་ལྟ་བུར་གྱུར་པ་
 མི་ཟད་པ་ཐོབ་པར་འདོད་པའི་སྒོའི་ཚུལ་ཅན་གྱིས་སོ། །རང་ཉིད་དབུལ་བ་ཉི་དང་
 ཉན་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། དབུལ་ལགས་¹ཉི་ཉེན་མེད་པའོ། ༡༤ །

དེ་ནས་སྐྱབ་པོས་རབ་ངེས་པར། །

དེ་ལྟར་ཆོ་ག་བྱས་ནས་²ནི། །

དེ་ནས་དེ་ལ་མཁའ་འགྲོ་མ། །

ནལ་འབྱོར་མ་མོ་ནམས་མཉེས་འགྱུར། ༡༥།

མཁའ་འགྲོ་མ་དང་ལྷ་མ་³དང་། །

ཁམ་རོ་དྲུ་⁴གཟུགས་ཅན་མ། །

སྐྱབ་པོ་མཁའ་འགྲོ་མ་ལྟན་ཅིག །

དེ་དང་ནམ་སྒྱུད་ཀྱན་དུ་འགྲོ། ༡༦ །

ཐམས་ཅད་སྐྱབ་པོ་དེ་ཡི་ནི། །

ཅི་བགྱི་བྱེད་པར་ཐེ་ཆོམ་མེད། །

-
1. འབུལ་ལགས་ ཅོ།
 2. བྱས་ན་ ཟེ། ལྷ། བེ།
 3. ལྷ་ལྷ་ ལྷ། ལྷ།
 4. ཁམ་རོ་དྲུ་ ཟེ། ཁམ་རོ་ཉི་ བེ།
 5. བྱེད་པ་ བེ།

ནལ་འབྱོར་འདི་ནི་སྐྱབ་འབྱུར་ན། །

འཛིག་ཏེན་གསུམ་དུ་མི་བསྒྲིགས་ཤིང་། ༡༡༥།

དེ་ལྟར་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོཌ་པས་ནི་མཇུག་ཀྱས་པར་བྱ་བ་ཉིད་གསུངས་ཏེ། གང་
དུ་གསུངས་པའི་གསེར་ལ་སོཌ་པ་སྒྱིན་པར་བྱས་པ་ལ་སྐྱབ་པ་པོས་དེ་ལྷངས་པ་²ངས་
པར་ཤིན་དུ་ལེགས་ཤིང་མཛེས་པའི་ཞེས་རྗེས་སུ་ཡི་རང་བའི་དོན་ཏོ། །དེ་ལ་ཞེས་པ་
ནི་བྱ་བའི་ཆོག་དེ་ལ་རྗེས་སུ་གནས་པའི་འབྲས་བུ་མཁའ་འགྲོ་མ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་
པ་སྟོན་ཏོ། །མཁའ་འགྲོ་མ་ཞེས་པ་ནི་མཁའ་འགྲོ་མའི་རིགས་སོ། །དེའི་བྱད་པར་ནི་
ནལ་འབྱོར་མ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། ནལ་འབྱོར་མ་ནི་མཁའ་འགྲོ་མ་
ཉི་ཤུ་ཙུང་བཞི་ཁྲ་གདོང་མ་ལ་སོགས་པ་ཡང་རོ། །ལྷ་མ་ནི་ལྷ་མའི་རིགས་སུ་སྐྱེས་པ་
སྟེ། ལྷ་མའི་མིང་གི་རྣམ་གྲངས་ལ་ཡང་ལྷ་མའི་སྐྱས་བརྗོད་པའམ། ཨ་བྱིས་ནས་ཡ་
བཅུག་པའི་³མང་པོའི་ཆོག་⁴གི་མཐའ་ཅན་གྱི་ཆོག་གོ། །དེ་དང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་
པ་ལ་འདི་ལྟ་བུར་གྱུར་པའི་དཀྱིལ་འཁོར་དུ་ཞུགས་ཤིང་མཆོད་ནས། དབང་ལྷང་
པའི་ཕྱིར་དེ་བྱིས་པ་སྟོན་དུ་སོང་བས་དངོས་གྲུབ་བསྐྱབ་པར་བྱ་བའི་དོན་དུ་མཁའ་
འགྲོ་མ་རྣམས་རྒྱུར་གྱུར་པས་འགྲོ་བ་ཐམས་ཅད་ལ་སྦྱོད་པ་⁵སྟེ། བསྟོད་པར་བྱ་བ་མ་

1. མི་ལོག་ཅིང་ ལ། མི་སྒྲིགས་ཤིང་ བཤ།

2. ‘དེ་ལྷངས་པ་’ རྗེ་དགེ་དང་ཅི་ནི་གཉིས་སུ་མེད།

3. མ་བཅུག་པའི་ བོད་དཔེ། གོང་དུ་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་བཞག་ཡོད།

4. མིང་པོའི་ཆོག་ གསེར། བཤ།

5. གྱུར་པས་མཁའ་འགྲོ་མ་ཐམས་ཅད་ལ་སྦྱོར་བ་ རྗེ། ཅི།

ཡིན་པར་ཡང་འགྲོ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་དོ། །མཁའ་འགྲོ་མ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ནི་ཡི་
གའི་ལུང་དང་ཡི་གེ་ཉམས་པ་དང་ཡི་གེ་བརྒྱུག་པར་འགྱུར་བས་ངེས་པའི་ཆོག་གིས་པ་
བརྒྱས་པ་རྟེ། བདེ་བར་གསལ་གསུང་པའི་ལུང་ཡིན་པས་ན་གཙོ་བོ་ཉིད་དུ་སྐྱབ་པའི་
ཕྱིར་རོ། །དེ་ལྟར་བམས་ཅད་དུ་ལོ། །སྐྱ་དང་སྐྱ་མ་ཡིན་པ་ཉིད་དུ་དོགས་པར་མི་
བྱ་རྟེ། གནས་པ་མེད་པས་སོ། ། ༡༥-༡༥ །

མི་སྣང་ཐུག་འདང་ནམ་མཁའ་རྒྱ། །

རྒྱ་མཁའ་གསལ་དེ་བཞིན་བརྒྱད་ཀྱིས་ལེན། །

སྐྱབ་པ་པོ་ནི་²འདོད་ཅམ་གྱིས། །

ཉག་པར་རྒྱན་དུ་³བསྐྱེད་པར་འགྱུར། ། ༡༦ །

གཟུགས་ནི་དུ་མ་བྱེད་པ་དང་། །

ནམ་མཁའ་ལ་ནི་འགྲོ་བར་འགྱུར། །

མཁའ་འགྲོ་ནམས་ཀྱང་བྱེད་པར་དུ། །

སྐད་ཅིག་དེ་ལ་སྐྱོར་བསྐྱེད་དེ། ། ༡༧ །

སྐྱོང་བ་ཞེས་པ་ནི་འཆི་བ་སྐྱོང་བའོ། །གནོད་པ་ནི་གསོད་པའོ། །སྐྱག་མ་ནི་གོ་

སྐྱའོ། ། ༡༨-༡༩ །

1. མི་སྣང་ཐུག་ བེ།

2. སྐྱབ་པ་པོ་ཡི་ ལྟ།

3. རྒྱན་དུ་ ལྟ།

འགྲོ་བ་ནམས་ཀྱང་ངེས་གཞོན་པར་། །

ལན་ཅིག་²བཏུས་པས་ནལ་འབྱོར་པས། །

སྒྲགས་པ་དཀྱིལ་འཁོར་མ་མཐོང་བར། །

གང་ཞིག་ནལ་འབྱོར་པ་ཉིད་འདོད། ། ༣༠ །

མཁའ་ལ་ཁུ་ཚུར་གྱིས་བརྟེན་དང་། །

སྒྲིག་རྒྱུ་ཁྱེ་ཁྱེ་འབྲུངས་དང་མཚུངས་། །

ནལ་འབྱོར་འདི་ནི་མཆོག་རབ་དང་། །

སྒྱོར་བ་ཀྱན་གྱི་དམ་པ་ཡིན། ། ༣༡ །

སྒྲགས་པ་དཀྱིལ་འཁོར་མ་མཐོང་བས། ། ཞེས་བྱ་བ་ལ་སྒྲགས་པས་ནི་དཀྱིལ་
འཁོར་གྱི་པན་ཡོན་ཡིན་ནོ། ། ཇི་ལྟར་ནམ་མཁའ་ལ་ཁུ་ཚུར་གྱིས་བརྟེན་ཀྱང་བརྟེན་
པའི་མཆོན་ཉིད་ཀྱི་དོན་གྱི་བྱ་བ་ནི་འབྲུབ་པར་མི་འགྱུར་རོ། ། སྒྲིག་རྒྱུ་ཁྱེ་ཁྱེ་འབྲུང་
བར་འདོད་ཀྱང་འབྲུང་བའི་མཆོན་ཉིད་དང་སྒྲིམ་པ་ཞི་བའི་དོན་གྱི་མཆོན་ཉིད་ཀྱི་བྱ་
བ་མེད་དོ། ། དེ་བཞིན་དུ་དཀྱིལ་འཁོར་མ་མཐོང་བར་ནལ་འབྱོར་ཉིད་དུ་འདོད་ན་
དེས་ནལ་འབྱོར་གྱི་འབྲས་བུ་འདོད་པ་གང་དུ་ཡང་ཆེད་པར་མི་འགྱུར་རོ། ། ༣༠-༣༡ །

གང་ཞིག་ཏྲ་ཏྲ་⁴འདོད་གྱུར་པ། །

ལྟ་དང་ལྟ་མེན་མེན་ནམས་ཏེ། །

1. ངེས་པར་གཞོན་ ལྟ། ལྟ། དེས་གཞོན་པར་ བེ།

2. ལན་ཅིག་ ལྟ། ལྟ།

3. འབྲུངས་པར་འཚུངས་ བེ། འབྲུང་དང་མཚུངས་ ལྟ། ལྟ།

4. 'ཏྲ་ཏྲ་' རྒྱ་དཔེར་མེད།

འདི་དག་ཟིལ་གྱིས་གནོན་པར་འགྱུར།	1
རྒྱད་ ¹ འདི་རུ་ནི་དབང་བསྐྱར་བས།	1
ཐམས་ཅད་ཀྱི་ནི་སྐྱབ་པ་པོ།	༣༣ 1
དགོད་ ² དང་ལྟ་དང་ལག་འཛིན་གྱིས།	1
འབྱུང་དང་གཉིས་སྐྱད་ ³ ལ་སོགས་ལ།	1
དབང་བསྐྱར་བར་ནི་གྱུར་པ་ཡིན།	1
ཐམས་ཅད་རྒྱད་ལས་དམ་པ་འོ།	༣༣ 1
འདི་ནི་ལྟ་མི་ཟིལ་གནོན་འགོ་ ⁴ །	1
དེ་ནི་ད་བསྐྱས་པ་འམ་སྒྲིམ་པ་འམ།	1
གསང་བ་འམ་དོ་རྩེ་འཛིགས་བྱེད་ལས།	1
དཀྱིལ་འཁོར་རྣམས་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་འདི།	1
མ་བྱུང་འབྱུང་བར་མི་འགྱུར་རོ།	༣༤ 1
བཤད་དང་མ་བཤད་གང་ཅི་འང་ ⁵ རུང་།	1
དེ་ཀྱན་དེ་རུ་ཀ་ལ་གནས།	༣༥ 1

-
1. དཀྱིལ་འཁོར་ རྒྱ་དཔེ།
 2. གོད་ རྩེ།
 3. གཉིས་སྐྱད་ ལྟ། རྩེ།
 4. ‘འདི་ནི་ལྟ་མི་ཟིལ་གནོན་འགོ་’ རྒྱ་དཔེར་མེད།
 5. གང་ཅི་འམ་ ལྟ།

དཔལ་དེ་རུ་ཀའི་ངེས་པར་བཟློད་པ་ལས་ཡིན་¹ དང་བཅས་པའི་དབང་
བསྐྱར་བའི་ཆོ་གའི་ལེའུ་སྟེ་གསུམ་པའོ།། །

འདིར་གང་ཞིག་དཔལ་དེ་རུ་ཀ་མཆོག་འདོད་པ་དེས་ལྟ་ལ་སོགས་པ་བེལ་གྱིས་
གཞོན་པ་སྟེ། གཞོན་པར་འགྱུར་རོ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། །འགྲོ་ཞེས་པ་ནི་གནས་པའི་
དོན་ཏོ། གནས་པར་འགྱུར་བའོ་ཞེས་དགོངས་སོ། །འདས་པ་དང་མ་འོངས་པ་དང་
ད་ལྟར་གཤམ་གྱི་ཆོན་པར་འདོད་པར་²འགྱུར་རོ་ཞེས་སྟོན་པ་ཡང་མ་ཡིན་ནོ། །
བཤད་དང་མ་བཤད་གང་ཅིའང་རུང་། །ཞེས་པ་ནི་གང་ཡང་གསུངས་པ་དང་མ་
གསུངས་པ་དང་³ གཞན་ཡང་དེ་ཐམས་ཅད་དཔལ་དེ་རུ་ཀའི་འཁོར་ལོ་བདེ་མཆོག་
གི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་ཆོ་ག ༡༡-༡༥ །

ཞེས་བྱ་བའི་མིན་ཏུ་གསུམ་པས་ཕུལ་དུ་བྱུང་བའོ། །དབང་བསྐྱར་བ་ཞེས་པ་ནི་ཉོན་
མོངས་པ་སྟོང་པར་བྱེད་པའོ། །དེ་དག་གི་ཆོ་ག་དེས་⁴བཟློད་པར་བྱ་བས་ལེའུ་སྟེ་དེ་ནི་
གསུམ་པ་སྟེ། དཔལ་འཁོར་ལོ་སྟོན་པའི་དཀའ་འགྲེལ་ལས་⁵ལེའུ་གསུམ་པའོ།། །

★

1. ཡིན་ཏན་ བོད་འགྱུར་པར་མ། གོང་དུ་བྱ་དཔེ་ལྟར་བཀོད་པ་ཡིན།
2. འདོད་པས་ གསེར། བེ།
3. 'མ་གསུངས་པ་དང་'སྟེ་དགེ་དང་ཅི་ཞེས་པར་མ་གཉིས་ཀའི་ནང་ཆད་འདུག
4. དེ་ཡིས་ གསེར། བེ།
5. 'ལས་' གསེར་བེ་གཉིས་སུ་མེད།

དཔའ་པོ་དང་ནལ་འབྱེར་མ་གཉིས་སུ་མེད་པར་དགོད་པའི་ལེན།

དེ་ནས་མཁའ་འགྲོ་མ་ནམས་ནི། 1

གནས་ན་ནམ་པར་འགྱུར་བ་སྟེ། 1

བརྩོན་ཆེན་འཁོར་ལོས་སྐྱར་མ་¹དང་། 1

སྟོབས་ཆེན་མ་དང་རབ་དཔའ་མོ། 2 1

འཁོར་ལོའི་གོ་ཆ་ཆང་འཛོང་མ་²། 1

ཁར་རྩ་³འཁོར་ལོའི་བྱགས། 1

བྱ་གདོང་མ་དང་ཏྲ་ན་མ། 1

ཤིན་ཏུ་བཟང་མོ་ལྗང་ལྟ་མོ། 3 1

ཆང་འབྲུང་མ་⁴དང་རྒྱང་བྱགས་མ། 1

དེ་བཞིན་འཇིགས་བྱེད་ཆེན་མོ་དང་། 1

ས་སྐྱང་མ་⁵དང་ཤིང་གྲིབ་མ། 1

ལང་ཀའི་དབང་ཕྱག་མིའུ་ཐུང་མ། 3 1

1. འཁོར་ལོས་བསྐྱར་མ་ ལྟ། ལྟ། དེ།

2. ཆང་འཛོང་མ་ ལྟ།

3. ཁར་རྩ་དེ། ཁར་རྩ་ ལྟ། ལྟ།

4. ཆང་འབྲུང་མ་ དེ།

5. ས་སྐྱང་མ་ དེ། ས་བསྐྱང་མ་ ལྟ།

དཔལ་བོའི་སྒོ་མ་སྒྲ་ཆེན་མ། 1

འོད་ལྡན་མ་དང་གཏུམ་མིག་མ། 1

རབ་གཏུམ་མ་སྟེ་སྒྲུབ་བྱེད་ཡིན་ཀྱི། 1

མཁའ་འགོ་མ་ནི་ཉི་ཤུ་བཞི། 1

འདི་དག་སྟོན་ཉིད་གྲུབ་པ་ཡིན། ༩ 1

སྒྲ་གསུང་བྲགས་ཀྱི་དབུས་སུ་ནི། 1

རི་ལྷར་བྱེ་རོལ་ནང་དེ་བཞིན་ཀྱི། 1

རང་མིང་བརྗོད་པའི་རྒྱགས་ལ་ནི། 1

མཐར་ནི་རྩྱ་རྩྱ་པཌ་ལྷ་རྒྱར་ཏེ། ༥ 1

ཉེན་གྱི་དཀྱིལ་འཁོར་བསྟན་པའི་རྗེས་སུ་དེ་ལ་བརྟེན་པའི་ནལ་འབྱོར་མ་རྣམས་
སྟོན་པས་ལེའུ་བཞི་པ་ནི་དེ་ནས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། གང་དམ་ཆོག་
སྟོད་པའི་སྟོད་ཡུལ་མཁའ་འགོ་མར་བརྟེན་པ་⁴སྒྲ་དང་གསུང་དང་བྲགས་ཀྱི་རང་
བཞིན། སྒྲུབ་པ་དང་ལོངས་སྟོད་དང་ཆོས་ཀྱི་སྒྲུའི་བདག་ཉིད་གང་ཡིན་པ་དེའི་རྒྱ་ཉིད་
ཀྱི་བྱེར་མཁའ་འགོ་མ་ནི་ཤུ་ཙ་བཞི་ས་གསུམ་དུ་སྒྲུའི་འཁོར་ལོ་ལ་སོགས་པར་རོལ་

1. སྒྲུབ་བྱེད་པའི་ སྒྲ། སྒྲ།

2. 'སྒྲ་གསུང་.....དེ་བཞིན།' ཞེས་པའི་ཆོག་ཀྱང་གཉིས་པོ་སྒྲར་ཐང་པར་མའི་ནང་མེད།

3. ཙ་བར་'རྩྱ་རྩྱ་པཌ' ཞེས་ཡོད་ཀྱང་དེར་འགྲེལ་པར་གསལ་བ་ལྷར་བཞོད་ཡོད།

4. བརྟེན་པ་ གསེར། བེ།

ཅིང་བྱབ་པར་བྱེད་དོ། །དེ་ཉིད་ནི་བཙུན་ཆེན་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ།
 འཁོར་ལོའི་གྲགས་ཅན་མ་དང་། དུམ་སྐྱེས་མ་དང་། ཆང་འཛོང་མ་དང་། འཁོར་
 ལོའི་གོ་ཆ་མ་དང་། རབ་རྩ་དཔའ་མོ་དང་། སྒོ་བས་ཆེན་མ་དང་། འཁོར་ལོས་སྐྱར་
 མ་²དང་། བཙུན་ཆེན་མ་ཞེས་པ་འདི་ནམས་ནི་དཀར་པོ་སྟེ་སྐྱེའི་འཁོར་ལོའོ། །ས་
 སྐྱངས་མ་དང་། འཛིགས་བྱེད་ཆེན་མོ་དང་། རྩུང་གི་གྲགས་ཅན་མ་དང་། ཆང་
 འབྱང་མ་དང་། ལྷ་མོ་སྟོ་བསངས་མ་དང་། བེན་རྩ་བཟང་མོ་དང་། ཏྲ་མ་དང་།
 ལྷ་གདོང་མ་ཞེས་པ་འདི་ནམས་ནི་དམར་མོ་སྟེ་³གསུང་གི་འཁོར་ལོའོ། །རབ་རྩ་
 གདུམ་མོ་དང་། གདུམ་པའི་མིག་ཅན་མ་དང་། འོད་ལྡན་མ་དང་། ལྷ་ཆེན་མ་དང་།
 དཔའ་བོའི་སྒོ་མ་དང་། མིའུ་བྱང་མ་⁴དང་། ལང་ཀའི་དབང་ལྷག་མ་དང་། བེང་
 གྲིབ་མ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་མདོག་ནག་པོ་སྟེ་བྲགས་ཀྱི་འཁོར་ལོའོ། །སྟོན་རྒྱུད་ཐམས་ཅད་
 གོ་རིམ་⁵བརྒྱུག་པ་ཉིད་ནི་གོ་རིམས་སོ། །དེའི་ཕྱིར་རབ་རྩ་གདུམ་མོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་
 སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། རབ་རྩ་གདུམ་མོ་ལ་སོགས་པ་⁶བྱས་པས། གདུམ་པའི་མིག་
 ཅན་མ་ལ་སོགས་པ་བརྟ་བར་བྱའོ། །རང་རང་གི་མིང་བརྗོད་པ་གང་ཡིན་པ་དེའི་

-
1. བོད་འགྱུར་ནམས་སུ་‘བྱབ་པར་བྱེད་དོ’ ཞེས་གསལ། གོང་དུ་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་བཀོད་ཡོད།
 2. འཁོར་ལོ་སྐྱར་མ་ གཞེས།
 3. དམར་མོས་ཏེ་ གཞེས།
 4. མི་བྱང་མ་ གཞེས། གཞེས།
 5. གོ་རིམས་ གཞེས། ཅོ།
 6. རབ་རྩ་གདུམ་མོ་དང་པོར་ རྒྱ་དཔེ།

སྒྲིན་དུ་སྐྱབ་པའི་ཐབས་གསུངས་པའི་རིམ་པས་¹ ཀར་ཀར་ལ་སོགས་པའི་སྐྱགས་དང་
 ཡང་དག་པར་ཐུན་པའི་བར་དེ་ནི། རང་མིང་བཟློད་པའི་སྐྱགས་ཞེས་བྱ་བ་སྟེ་² དང་
 པོའི་དོན་ལས་དྲག་པོ། །རྟོ་རྟོ་ཕུ་³ མཐའ་རུ་སྐྱར་ཞེས་པ་ནི་རྟོ་རྟོ་ཕུ་དང་མིང་གི་
 མཐའ་སྐྱར་བ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་དེ་བཞིན་ནོ། ༡-༥ །

ནལ་འབྱོར་རབ་མཆོག་འདི་མཐོང་ན། །

མེ་⁴སྟེ་གཞན་དག་སོག་མར་མཚུངས། །

ཨོ་ནི་ཀུན་ལ་གསལ་བྱེད་དེ། །

གྲུབ་སྟོན་འདོད་པ་ཐམས་ཅད་བྱེད། ། ༦ །

ཨོ་ནི་ཐམས་ཅད་གསལ་བྱེད་དེ། །ཞེས་པ་ནི་ཀར་ཀར་ལ་སོགས་པའི་སྐྱགས་
 ལས་སྒྲིན་དུ། ཨོ་གྱིས་གསལ་བར་བྱེད་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་དེ་བཞིན་ནོ། །འདིའི་
 དོན་ནི་ཨོ་ཐུ་ཐུ་ ཅུ་ཤེས་ཀྱི་རྟོ་⁵ ཕུ། ཅེས་པ་ལ་སོགས་པས་འཁོར་ལོའི་གྲགས་
 ཅན་མ་ལ་སོགས་པ་བརྒྱད་ཀྱི་འོ། །ཨོ་ ཕུ་ཕུ་ ཨེ་རུ་བཏི་⁶ རྟོ་རྟོ་ ཕུ། ཅེས་པ་ལ་
 སོགས་པས་སྐྱངས་མ་ལ་སོགས་པ་བརྒྱད་དོ། །ཨོ་ ཀར་ཀར་ བྲམ་ཆེ་⁷ རྟོ་རྟོ་ ཕུ།

1. རིམས་པས་ ཅོ།

2. ཞེས་བྱ་བ་དེ་ གསེར། བེ།

3. རྟོ་རྟོ་ཕུ་ གསེར། བེ། རྒྱ་དཔེ།

4. ཐུ་ཤ་(སྟེན་བྱ་) རྒྱ་དཔེ།

5. ཅུ་ཤེས་ཀྱི་རྟོ་ བེ། ཅུ་ཤེས་ཀྱི་རྟོ་ རྒྱ་དཔེ།

6. བོད་འགྱུར་པར་མ་ནམས་ཀྱི་ནང་ཨེ་རུ་བཏི་ཞེས་གསལ་གྱིང་གོང་དུ་རྒྱ་དཔེ་ཇི་བཞིན་བཞག་པ་འོ།

7. བོད་འགྱུར་པར་མ་ནམས་སུ་བྲམ་ཆེ་ཞེས་འཁོད་ཡོད་ཀྱིང་གོང་དུ་རྒྱ་དཔེར་གསལ་བ་ལྟར་བཞག་

ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ནི་རབ་དྲུ་གདུམ་མོ་ལ་སོགས་པ་བརྒྱད་ཀྱི་འཁོར་པ་ནི་དཀྱིལ་
 འཁོར་དང་རང་¹གི་ལུས་ལ་ཡང་དགོད་དོ། །འདི་ནི་དཀྱིལ་ཕྱིར་ཐུགས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་
 དང་། དེ་ནས་གསུང་གི་འཁོར་ལོ་དང་། དེ་ནས་སྐྱེ་འཁོར་ལོ་ཡང་སྟེ། གདམས་
 ངག་གི་དོན་དུ་བྱུང་ནི་གོ་རིམ་²བརྒྱུག་པ་ལོ། །འོན་ཀྱང་རྒྱུ་ལྷན་མཐའ་རུ་སྦྱར་ཞེས་
 པའི་དོན་ནི་གཞན་ཡིན་ནོ། །རྒྱུ་ལྷན་³ཅེས་པའི་སྐྱགས་མཐའ་རུ་སྦྱར་བ་ནམས་ནི་
 དུག་པའི་དོན་ལས་དང་པོ་སྟེ། མཐའ་གྱུར་པ་ནི་དཀྱིལ་ཕྱིར་མཐའ་སྦྱར་བ་ནི་ཁྱ་གདོང་
 མ་ལ་སོགས་པ་བརྒྱད་དོ། །མཁའ་འགྲོ་མ་ལ་སོགས་པ་བཞི་ནི་དབུས་སོ། །དུས་ཀྱི་
 བྱད་པར་བྱིས་དེ་སྐྱགས་ལས་སྦྱེས་པར་བཟུང་། །ཇི་ལྟར། ལོ་རྒྱུ་ལྷན་ལྷན་གྲགས་སྟེ་⁴
 རྒྱུ་ལྷན་ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་རབ་དྲུ་གདུམ་མོ་ནས་གིང་གི་བ་མའི་བར་ཏེ། ཐུགས་
 ཀྱི་འཁོར་ལོ་ལ་གནས་པ་དེ་ཡང་སྟོན་པོ་ལོ། །ས་སྦྱངས་མ་⁵ནས་བྱ་གདོང་མའི་བར་དུ་
 གསུང་གི་འཁོར་ལོ་ལ་གནས་པ་སྟེ། དེ་ཡང་དམར་པོ་ལོ། །འཁོར་ལོའི་ཐུགས་ཅན་མ་
 ལ་སོགས་པ་བརྒྱུན་ཆེན་མའི་བར་དུ་སྟེ། དེ་ཡང་སྐྱེ་འཁོར་ལོ་ལ་གནས་པ་སྟེ་དེ་
 ཡང་དཀར་པོ་ལོ། །མཁའ་འགྲོ་མ་ལ་སོགས་པ་བཞི་པོ་ནི་གོ་རིམ་བཞིན་དུ་གཡོན་སྟོར་
 བྱིས། ཉག་པོ་དང་ལྷང་གུ་དང་དམར་པོ་དང་དཀར་པོ་ལོ། །གཞིན་རྗེ་བརྟན་མ་ལ་

1. དཀྱིལ་འཁོར་རང་རང་ རྟེན། ཅོ།

2. གོ་རིམས་ རྟེན། ཅོ།

3. རྒྱུ་ལྷན་ རྒྱ་དཔེ།

4. གྲགས་ ཅོ། གྲགས་ བེ། གསེར།

5. ས་སྦྱངས་ བེ། གསེར།

སོགས་པ་ནི་ཁ་དོག་གཉིས་གཉིས་ཐོབ་པའོ། །གྲུབ་སྒྲུབ་འདོད་པ་ཐམས་ཅད་སྟེར། །
 ཞེས་པ་ནི་འདི་ནམས་ཆོགས་དང་། དཔལ་ཉེར་ཉུ་ཀའི་གཙོ་བོ་ནི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་བྱུང་
 པར་གཉིས་སོ། ུ །

དཔལ་བོ་ཉིད་འགྱུར་གྲུབ་པ་ནི། །
 བྱིས་དུ་དཀྱིལ་འཁོར་མཐོང་བ་ཡིན། །
 དེ་ནས་དེ་ཉུག་བསྐྱོམ་པར་བྱ། །
 དངོས་གྲུབ་དེ་བཞིན་གཤེཌ་གསུངས་བཞིན། ོ །

དཔལ་ཉེར་ཉུ་ཀའི་ངེས་པར་བརྗོད་པ་ལས་དཔལ་བོ་དང་ནལ་འབྱོར་མ་
 གཉིས་སུ་མེད་པར་དགོད་པའི་ལེའུ་སྟེ་བཞི་པའོ། །

དཔལ་བོ་ཉིད་འགྱུར་ཞེས་པ་ནི་ནལ་འབྱོར་མ་ནི་བྱ་ཙ་བཞིའི་བྱུང་པར་རོ། །
 འདིས་དཔལ་བོ་ཉིད་ནི་དཔལ་བོའི་ཡན་ལག་ཏུ་གྱུར་བ་རྟོད་པ་སྟེ། དཔལ་བོ་ལ་འབྱུང་
 ཅིང་ལྡན་པ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །དཔལ་བོ་ནི་ཐོད་པའི་དུམ་བུ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། དེ་
 ཡང་ཞལ་གཅིག་ཕྱག་བཞི་པ་སྟུན་གསུམ་པ་རལ་པའི་དབུ་རྒྱན་གྱི་ཐོད་ཅན་སྟག་གི་
 པགས་པའི་གམ་ཐབས་ཅན་དོ་རྩེ་དང་དྲིལ་བུ་གཡོན་པ་དང་གཡས་པའི་ཕྱག་གཉིས་
 ན་འཆང་ཞིང་འབྱུང་བ། གཞན་གཡོན་པ་དང་གཡས་པའི་ཕྱག་ན་ཁྲུའི་དང་དེའུ་
 རྒྱུང་བསྐྱེད་པའོ། །གཡས་བརྒྱུང་པས་གདན་ལ་བཞུགས་པ། འཁོར་ལོ་དང་ན་ཆ་

1. དགོས་ ལ།

2. དེ་རྒྱུང་ ལ། གསེར།

ལ་སོགས་པའི་ཕྱག་རྒྱ་¹དང་ལྡན་པ་འཁོར་ལོ་དང་རྗེས་སུ་མཐུན་པའི་རྩ་མོའི་སྐྱ་
མདོག་གོ། །རབ་རྟུ་གཏུམ་མོ་ལ་སོགས་པ་ཡང་ཕྱག་གཉིས་ཀྱིས་འཁྱུད་པ། གཞན་
གཡོན་པ་དང་གཡས་པའི་ཕྱག་གཉིས་ན་ཁྲག་གིས་གང་བའི་ཐོད་པ་རྩེགས་མཛུབ་²
འཆང་བའོ། །མཁའ་འགོ་མ་ལ་སོགས་པ་ནི་གཡོན་པའི་ཕྱག་གཉིས་ན་ཁྲྀླག་དང་
ཐོད་པ་འཆང་བ། གཡས་པའི་ཕྱག་ན་དེའུ་ཆུང་དང་གི་གྲུག་བསྐྱམས་པའོ། །ཁྱ་གདོང་
མ་ལ་སོགས་པ་ནི་མཁའ་འགོ་མ་ལ་སོགས་པའི་མཆན་མ་འཆང་བའོ། །གཤིན་རྗེ་
བརྟན་མ་ལ་སོགས་པའི་ཕྱག་གཡོན་པ་གཉིས་ན་དེའུ་ཆུང་དང་གི་གྲུག་གི་མཆན་མ་
འཛིན་པའོ། །གཡས་ན་ཁྲྀླག་དང་ཐོད་པ་བསྐྱམས་པའོ། །མཁའ་འགོ་མ་ལ་སོགས་
པ་ན་ལ་འཁྱོར་མ་སུམ་རུ་རྩ་དུག་ནི་ཞལ་གཅིག་སྐྱུན་གསུམ་པ་གཅེར་བུ་སྐྱ་གྲོལ་བ།
གཡས་བརྒྱང་³པའི་ཞབས་ཀྱིས་གནས་པ། མི་བཟད་པའི་གཟུགས་ཅན། མགུལ་
རྒྱན་ལ་སོགས་པས་བརྒྱན་པའོ། །འོན་ཀྱང་དཔལ་བ་ལ་གནས་པའི་དོ་རྗེ་སྤང་བ་
དཔའ་མོ་⁴ནམས་ལ་ཡང་ངོ་། །

རྩ་ནམས་ཀྱི་རང་བཞིན་བརྗོད་པར་བྱ་སྟེ། ལུས་དྲན་པ་ཉེ་བར་གཞག་པའི་
རང་བཞིན་ནི་མཁའ་འགོ་མའོ། །ཆོར་བ་དྲན་པ་ཉེ་བར་གཞག་པའི་རང་བཞིན་ནི་ལྷ་
མའོ། །ཆོས་དྲན་པ་ཉེ་བར་གཞག་པའི་རང་བཞིན་ནི་དུམ་སྐྱེས་མའོ། །སེམས་དྲན་

1. ཕྱག་བརྒྱ་ བེ།

2. རྩེག་མཛུབ་ ཅོ།

3. གཡས་བརྒྱངས་ ཅོ།

4. དཔའ་མོ་དང་དཔའ་མོ་ རྒྱ་དཔེ།

པ་ནི་བར་གཞག་པའི་རང་བཞིན་ནི་གཟུགས་ཅན་མ་སྟེ། ཡེ་ཤེས་ཀྱི་འཁོར་ལོའོ།
 འདུན་པའི་རྩ་འཕུལ་གྱི་རྒྱ་པའི་རང་བཞིན་ནི་རབ་དུ་གདུམ་མའོ། །བཙོན་འགྲུས་ཀྱི་
 རྩ་འཕུལ་གྱི་རྒྱ་པའི་རང་བཞིན་ནི་གདུམ་པའི་མིག་ཅན་མའོ། །དཔྱོད་པའི་རྩ་འཕུལ་
 ཀྱི་རྒྱ་པའི་རང་བཞིན་ནི་འོད་ཟེན་མའོ། །སེམས་ཀྱི་རྩ་འཕུལ་གྱི་རྒྱ་པའི་རང་
 བཞིན་ནི་སྣ་ཆེན་མའོ། །དད་པའི་དབང་པོའི་རང་བཞིན་ནི་དཔལ་པོའི་སྟོ་ཅན་མའོ། །
 བཙོན་འགྲུས་ཀྱི་དབང་པོའི་རང་བཞིན་ནི་མི་བྱ་བྱང་མའོ། །དན་པའི་དབང་པོའི་རང་
 བཞིན་ནི་ལྟའི་དབང་ཕྱག་མའོ། །ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་དབང་པོའི་རང་བཞིན་ནི་ཤིང་
 གྲིབ་མ་སྟེ་ཐུགས་ཀྱི་འཁོར་ལོའོ། །ཤེས་རབ་ཀྱི་དབང་པོའི་རང་བཞིན་ནི་ས་སྤངས་
 མའོ། །དད་པའི་སྟོབས་ཀྱི་རང་བཞིན་ནི་འཛིགས་བྱེད་ཆེན་མའོ། །བཙོན་འགྲུས་ཀྱི་
 སྟོབས་ཀྱི་རང་བཞིན་ནི་རྒྱུད་གི་ཤུགས་ཅན་མའོ། །དན་པའི་སྟོབས་ཀྱི་རང་བཞིན་ནི་
 ཆང་འཐུང་མའོ། །ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་སྟོབས་ཀྱི་རང་བཞིན་ནི་རྩ་མོ་སྟོབས་ངས་མའོ། །
 ཤེས་རབ་ཀྱི་སྟོབས་ཀྱི་རང་བཞིན་ནི་ཤིན་ཏུ་བཟང་མའོ། །ཏིང་ངེ་འཛིན་ཡང་དག་
 བྱང་ཁྱབ་ཀྱི་ཡན་ལག་གི་རང་བཞིན་ནི་རྟ་ན་མའོ། །བཙོན་འགྲུས་ཡང་དག་བྱང་
 ཁྱབ་ཀྱི་ཡན་ལག་གི་རང་བཞིན་ནི་བྱ་གདོང་མ་སྟེ་གསུང་གི་འཁོར་ལོའོ། །དགའ་བ་
 ཡང་དག་བྱང་ཁྱབ་ཀྱི་ཡན་ལག་གི་རང་བཞིན་ནི་འཁོར་ལོའི་ཤུགས་ཅན་མའོ། །
 ཤིན་ཏུ་སྤངས་པ་ཡང་དག་བྱང་ཁྱབ་ཀྱི་ཡན་ལག་གི་རང་བཞིན་ནི་དུམ་སྦྱེས་མའོ། །
 ཆོས་རབ་དུ་འབྱེད་པ་ཡང་དག་བྱང་ཁྱབ་ཀྱི་ཡན་ལག་གི་རང་བཞིན་ནི་ཆང་འཛོང་

1. དཔལ་པོའི་སྟོ་མའོ་ གསེར། དེ། དཔལ་སྟོའི་སྟོ་ཅན་མའོ་ ཙྰ།

2. མི་བྱང་མའོ་ གསེར། དེ།

མའོ། །དན་པ་ཡང་དག་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་ཡན་ལག་གི་རང་བཞིན་ནི་འཁོར་ལོའི་གོ་ཆ་
 མའོ། །བཏང་སྟོམས་ཡང་དག་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་ཡན་ལག་གི་རང་བཞིན་ནི་གིན་དུ་དཔལ་
 མའོ། །ཡང་དག་པའི་རྩ་བའི་རང་བཞིན་ནི་སྟོབས་ཆེན་མའོ། །ཡང་དག་པའི་རྟོག་
 པའི་རང་བཞིན་ནི་འཁོར་ལོས་སྐྱར་མའོ། །ཡང་དག་པའི་ངག་གི་རང་བཞིན་ནི་
 བརྩེན་ཆེན་མ་སྟེ་སྐྱའི་འཁོར་ལོའོ། །ཡང་དག་པའི་ལས་ཀྱི་མཐའི་རང་བཞིན་ནི་ཁྲ་
 གདོང་མའོ། །ཡང་དག་པའི་འཆོ་བའི་རང་བཞིན་ནི་འུག་གདོང་མའོ། །ཡང་དག་
 པའི་རྩལ་བའི་རང་བཞིན་ནི་བྱི་གདོང་མའོ། །ཡང་དག་པའི་དན་པའི་རང་བཞིན་ནི་
 སྐྱེ་གདོང་མའོ། །མ་སྟེས་པའི་དག་པའི་ཆོས་བསྐྱེད་པའི་རང་བཞིན་ནི་གཤིན་རྗེ་
 བརྟན་མའོ། །སྟེས་པའི་དག་པའི་ཆོས་ཡང་དག་པར་བསྐྱེད་པའི་རང་བཞིན་ནི་གཤིན་
 རྗེའི་ཕོ་ཉ་མའོ། །སྟེས་པའི་མི་དག་པའི་ཆོས་འཛུམས་པའི་རང་བཞིན་ནི་གཤིན་རྗེ་
 མཆེ་བ་མའོ། །མ་སྟེས་པའི་མི་དག་པའི་ཆོས་མ་བསྐྱེད་པའི་རང་བཞིན་ནི་གཤིན་རྗེ་
 འཛུམས་མ་སྟེ་དུར་ཁྲོད་ཀྱི་འཁོར་ལོའོ། །ཡང་དག་པའི་རྟིང་རེ་འཛིན་གྱི་རང་བཞིན་
 ནི་དཔལ་ཉེ་དུ་ཀའོ། །གྲུབ་པ་ཡིན་ཞེས་པ་ནི་ནལ་འབྱོར་མ་ཉི་ཤུ་ཅུ་བཞིའོ། །ཁྱིམ་དུ་
 དཀྱིལ་འཁོར་མཐོང་བ་ཡིན། །ཞེས་པ་ནི་རང་གི་ལུས་དཀྱིལ་འཁོར་དུ་མཐོང་བ་
 རྟེན་ཉིད་དཀྱིལ་འཁོར་བསྟོམས་པས་ཀྱུ་བ་པར་ཤེས་ནས་བསྟོམ་པར་བྱའོ་ཞེས་

1. སྟོབས་ཆེན་མའོ་ ཅུ་

2. འཁོར་ལོ་སྐྱར་མའོ་ བེ། གསེར།

3. མཐོང་བ་སྟེ་ གསེར། བེ།

4. བསྟོམ་པས་ རྟེན་ ཅུ།

པ་བསམ་པའོ། །བདེར་གསེགས་ནི་རི་ལྟ་བུར་ཞེས་པ་ནི་དེ་བཞིན་གསེགས་པའི་
གསུང་གིས་ནི་བསྐྱེམ་པར་བྱའོ་ཞེས་དགོངས་སོ། ག ༥ །

དཔལ་བོ་དང་ལྡན་པའི་ནལ་འབྱོར་མ་ནི་དཔལ་བོ་ནལ་འབྱོར་མ་སྟེ་ཉི་ཤུ་རྩ་
བཞི་འོ། །གཉིས་སུ་མེད་པའི་དཔལ་བོ་སྤངས་པ་ནི་བརྒྱ་གཉིས་སོ། །བྱང་ངུ་ནི་བདེ་
བར་གསེགས་པའི་ལུང་ཡིན་པའི་བྱུར་རོ། །དེ་ནམས་དགོད་པ་ནི་དེའི་ཆོ་ག་སྟེ། དེ་
རྫོད་པར་བྱེད་པའི་ལེའུ་སྟེ་དེ་ཡང་བཞི་པའོ། །དཔལ་འཁོར་ལོ་སྟོམ་པའི་དཀའ་
འགྲེལ་ལས་ལེའུ་བཞི་པའོ། ། ༥ །

ཙ་བའི་སྐགས་ཀྱི་ཡི་གེ་བདུ་བའི་ཆོ་གའི་ལེན།

དེ་ནས་ཐམས་ཅད་ཆོས་འབྱུང་བར། ༡

སྐ་ཆོགས་ལྟེ་བར་མི་ཤིགས་དགེ། ༡

སྐགས་པས་ཆོ་ག་བཞིན་དུ་བྱ། ༡

ཆོས་ཀྱན་གཅིག་དུ་བསྐྱུ་བར་བྱ། ༡ ༡

བསྐྱེམ་པ་²ཅམ་འབའ་ཞིག་གི་དངོས་གྲུབ་སྐྱབ་བྱེད་³མ་ཡིན་པས། འོན་ཀྱང་
བཟུངས་པས་ཀྱང་ཞེས་པ་ལ་དེ་ནས་ཞེས་བྱ་བ་⁴ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། རྒྱ་མཚན་དེ་
ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་སྐྱེ་བ་དུ་བ་ལྟེ། བདུ་བ་ནི་ཐམས་ཅད་ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ།
ཐམས་ཅད་ནི་ཆོས་ནམས་སོ། །འབྱུང་བ་ནི་འདི་ལས་འབྱུང་བས་ན་འབྱུང་བར་བྱེད་
པས་སོ། །སྐ་ཆོགས་ནི་ཁ་དོག་སྐ་ཆོགས་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །ལྟེ་བ་ཞེས་པ་⁵ནི་ལྟེ་བ་
ལའོ། །མི་ཤིག་པ་ནི་ཀྱན་དུ་ཐོབ་ཅིང་ཞི་བ་⁶དགེ་བ་འབྱུང་བ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །དེ་རྩ་
བུར་གྱུར་པའི་པར་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །“བྱད་པར་དུ་བྱེད་པ་མ་གཟུང་བར་བྱད་པར་

-
1. བསྐྱུ་བ་བྱ། བེ།
 2. བསྐྱེམས་པ་ གསེར། བེ།
 3. བསྐྱབ་བྱེད་ གསེར། བེ།
 4. ཤེས་བྱ་བ་ གསེར། བེ།
 5. ཅེས་པ་ གསེར། བེ།
 6. ཞེས་པ་ ལྟེ། ཅོ།

ལ་སྒོ་འཇུག་པར་མི་འགྱུར་''ཞེས་སོ། ། རྩེ་བ་བྱུང་པར་དུ་བྱེད་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །
 ཡང་ན་ཆོས་འབྱུང་ནི་སྟག་ལས་དོན་གཞན་མ་ཡིན་ནོ། །སྒྲ་ཆོག་ས་ནི་སྒྲ་ཆོག་ས་ཀྱི་
 པར་དང་ལྡན་པའི་རྩེ་བ་ལ་ཐོབ་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །སྒྲ་ཆོག་ས་པར་འབའ་ཞིག་ནི་མ་
 ཡིན་ཏེ། ཆོས་འབྱུང་གི་ཁོངས་སུ་སྒྲ་ཆོག་ས་པར་ལ་རབ་དུ་དབང་པར་བྱའོ་ཞེས་
 ཟུར་རོ། །ཅི་བྱས་ནས་ཞེས་པ་ལ། བྱས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །
 ཆོས་ཀྱན་ནི་ཨ་ལ་སོགས་པ་དང་ཀ་ལ་སོགས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་གཅིག་དུ་ཡང་དག་པར་
 བསྐྱས་པའོ། །བྱས་ཞེས་པ་ནི་རེ་མིག་བཞི་བརྒྱ་ཙུ་ཙུ་དགའི་གནས་ལ་དགོད་པར་བྱའོ་
 ཞེས་པ་ནི་ནམ་གངས་སོ། ། ༡ །

འདིར་སྒྲ་གས་ཆོག་ནི་འདི་ཡིན་ཏེ། །

ཨྱ་ལི་ཀྱ་ལི་མཉམ་བྱས་ནས། །

སྒྲ་ཆོན་ལ་ནི་ཡོངས་བསྒྲུམས་པ། །

བཞི་བཞི་རུ་ནི་ཤེས་བྱས་ལ། །

ཐུབ་པ་མཆོག་གི་རེ་མིག་ལ། ། ༡ །

འདིར་སྒྲ་གས་ཆོག་ནི་འདི་ཡིན་ཏེ་ཞེས་པ་ནི་རེ་ཕུ་མིག་བཞི་བརྒྱ་ཙུ་དགའི་གནས་
 སུ་གནས་པ་ལ། དེ་ཡང་བཙམ་ལྡན་འདས་ཀྱི་ཙུ་བའི་སྒྲ་གས་ཀྱང་པ་བརྒྱད་པར་

1. ཐོགས་པ་(ཨྱ་རྟ) རྒྱ་དཔེ།

2. བྱས་ཤེས་པ་ གསེར། དེ།

3. བཞི་བཞིར་རུ་ སྒྲ།

4. རེ་དམིག་ དེ།

5. བཞི་རུ་དགའི་ དེ། གསེར།

འགྱུར་བ་སྟེ། ཀྱན་ཀྱང་ཡན་ལག་དང་ཉིང་ལག་¹ ཏུ་གྱུར་པའི་ཕྱིར་རོ། །ཡི་གེ་ལས་
 སྐྱེས་པའི་སྐགས་སུ་བསྟན་ཏེ། རི་ལྟར་སྐྱད་པ་² ཡོད་པ་ལ་སྐྱམ་བུ་བྱེར་བ་ལྟ་བུའོ། །
 དེ་ཡང་རི་ལྟར་དགོད་ཅིས་པ་ཡུ་ལི་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་ལ་གཉིས་པའི་གཅིག་ཆེག་
 ཕྱིས་པའོ། །ཀྱ་ལི་མཉམ་བུས་ཞེས་པ་ནི་ཡི་གེ་གཅིག་ཀྱང་³ མི་འདོར་བས་སོ། །
 གཞན་ང་ཉ་ཁ་ན་མ་སྤངས་པའི་ཞེས་བསྟན་ཏེ། །དེ་ལྟར་གྱུར་པའི་ཡུ་ལི་དང་ཀྱ་ལི་
 བཀོད་པའི་དགམ་པ་སྟེ། དེ་ཡོངས་སུ་གྱུར་པའོ། །དེ་ལས་སྐྱེ་ཞིང་ཡོངས་སུ་གྱུར་པ་ནི་
 གནས་སྐབས་ཀྱི་བྱད་པར་དུ་ཡོངས་སུ་གྱུར་པའོ། །དེ་གང་ཞེས་པ་ལ། རྩེ་ཆཅ་ཞེས་
 གསུངས་ཏེ་བྲུལ་ཕྱིས་པའི་⁴ ཐུ་པའོ། །རྩེ་ཆཅ་བརྒྱད་རྣམས་སྤང་ཞིང་ཡོངས་སུ་གྱུར་
 པ་དེ་ནི་རྩེ་ཆཅ་བརྒྱད་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱི་གནས་སྐབས་ཀྱི་བྱད་པར་ཤེས་པའི་དོན་ཏོ། །
 དེའི་ཕྱིར་འདི་དང་ཞེས་བུ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། རྩེ་ཆཅ་བཞི་དང་བཞི་རུ་ཤེས་
 བུས་ལ། །ཞེས་པ་ནི་ཤེས་པར་བུ་བ་གང་ཡིན་པ་དེ་དེ་བཞིན་དུ་དགོད་པར་བུའོ། །
 ཡིད་ནི་བྱུང་བ་སྟེ། ས་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པའི་ཐེག་པ་དང་སྐགས་ཀྱི་ཐེག་པའི་ནང་ནས་གཙོ་
 བོ་ནི་སྐགས་ཀྱི་ཐེག་པ་སྟེ། དེ་བཀོད་པར་ཤེས་པ་ནི་གསང་⁵ སྐགས་ཀྱི་ཐེག་པ་ནི་
 བྱུང་བ་སྟེ། མཆོག་གོ། །དེ་ལ་ཡ་ལ་སོགས་པ་དབྱངས་ཡིག་བརྒྱ་དུ་གཉི་རྩེ་ཆཅ་

1. ཉིང་ལག་ གསེར། བེ།

2. སྐྱད་པར་ བེ། གསེར།

3. བོད་འགྱུར་པར་མ་རྣམས་སུ་གཅིག་དང་ཞེས་གསལ། གོང་དུ་བྱ་དཔེ་བཞིན་བཀོད་པ་ཡིན།

4. བོད་འགྱུར་པར་མ་རྣམས་སུ་དགུ་པ་ཕྱིས་པའི་ཞེས་འཁོད་ཡོད། གོང་དུ་བྱ་དཔེ་ལྟར་བཞག་ཡོད།

5. 'གསང་'གསེར་བྲིས་དང་པེ་ཀིང་དུ་མེད།

གཅིག་གོ། །ཡི་གེ་ལྷ་ལྷ་ནི་ཀ་ལ་སོགས་པ་ནས་མའི་བར་དུ་སྡེ་ཆོན་ལྡོ། །ཡ་ར་ལ་ཐ་
བཞི་ནི་སྡེ་ཆོན་གཅིག་གོ། །ཤ་ཤ་ས་ཏ་ནི་གཞན་ནོ། ། །ཀ་དང་ཤ་གཉིས་ཡང་དག་
པར་སྒྱུར་བ་ལས་སྒྲིས་པ་ནི་ཀླ་སྟེ་འདིར་དགོས་པ་མེད་པས་མ་བསྟན་ནོ། །འདིར་སྡེ་
ཆོན་བརྒྱད་གོ་བར་བྱའོ། ༡ །

དེར་གནས་དཔལ་པོ་བདུ་བར་བྱ། །

འདོད་དོན་ཐམས་ཅད་སྒྱུབ་བྱེད་པའོ། །

བཞི་པའི་ལྷ་པ་གང་ཡིན་དང་། །

ལྷ་པ་ཡི་ཡང་ལྷ་པ་དང་། ༡ །

དེར་གནས་དཔལ་པོ་བདུ་བར་བྱ། །ཞེས་པ་ནི་ཨྲ་ལི་ཀླ་ལི་ལ་གནས་པའི་དཔལ་
པོའི་རྒྱུ་པ་བརྒྱད་པའི་སྒྲགས་བདུ་བར་བྱ་སྟེ། །ཞོ་ལ་གནས་པའི་མར་ལྷ་བྱའོ། །
ལྷག་མ་ནི་གོ་སྟའོ། །བཞི་པའི་ལྷ་པ་གང་ཡིན་པ། །ཞེས་པ་ནི་སྡེ་ཆོན་བཞི་པའི་ལྷ་པ་
ནི་ནོ། །ལྷ་པ་ཡི་ནི་ལྷ་པ་དང་། །ཞེས་པ་ནི་མའོ། ༡ །

ལྷ་པ་ཡི་ནི་བཞི་པ་དང་། །

དང་པོའི་གསུམ་པ་གང་ཡིན་དང་། །

དེ་བཞིན་ནི་ཤུ་ཙ་དགྲ་པ་། །

བཞི་པའི་དང་པོ་གང་ཡིན་དང་། ༤ །

1. མཆོག་གོ་ བོད་དཔེ། གོང་དུ་ཐུ་དཔེ་རྩེར་བཞག་ཡོད།

2. དཔལ་པོའི་ཉང་པ་ ཅོ།

3. ཉི་ཤུ་ཙ་དགྲ་ལ་ སྟེ། བེ།

ཞེས་པའི་དོན་དོ། །དེ་ཉིད་ཀྱི་ནི་གཉིས་པ་དང་། །ཞེས་པ་ནི་མཐར་གནས་པའི་དེ་
 ཉིད་གང་ཡིན་པའི་ཡི་གེ་གཉིས་པ་དེ་སྒངས་ཏེ་དཔལ་པོ་བདུ་བར་བྱའོ་ཞེས་སྒྱུར་རོ། །
 སུམ་ཙུ་པ་ནི་ཞེས་པ་ནི། །ཤ་སྟེ་ཕྱེའུ་ཁྱུང་ནས་འབྱུང་བའོ། །དེ་ཡང་ནི་བའི་དོན་དུ་
 རྟེན་འཇུག་པའི་དོན་དོ། །དེ་སུམ་ཙུ་པའི་དོན་དོ། །དེ་བཞིན་ནི་ཤུ་ཙུ་གཉིད། །ཅེས་
 པ་ནི་ནི་ཤུ་ཙུ་གཉིད་པ་ནི་ཡའོ། །དེ་བཞིན་དུ་ཉིད་ནི་ཁྱུང་གི་དོན་དོ། ། ༥ །

དེ་དག་ཐམས་ཅད་ལེགས་བསྐྱུས་ལ། །

དེ་བཞིན་བརྒྱ་ཡི་ཕྱེད་ཕྱེད་ཀྱང་⁴། །

དེ་ནས་སུམ་ཙུ་ཙུ་གསུམ་གཟུང་། །

དང་པོའི་དང་པོ་ཉིད་དག་དང་། ། ༦ །

བརྒྱའི་ཕྱེད་ཕྱེད་ཅེས་པ་ནི་མའོ། །དེ་བཞིན་དང་ཞེས་པ་ནི་ཆོས་ཐམས་ཅད་འཆི་
 བ་ནི་མེད་པར་⁶བསྟན་པའི་དོན་དོ། །དེ་ནས་སུམ་ཙུ་ཙུ་གསུམ་དང་། །ཞེས་པ་ནི་
 ཏ་སྟེ། མའི་རྗེས་སུ་བཟུང་⁷སྟེ། དཔལ་པོ་བདུ་བར་བྱ་ཞེས་སྒྱུར་རོ། །དེ་དང་པོའི་

1. 'པའི་' གསེར་བྲིས་དང་པོ་ཀིང་གི་པར་མ་གཉིས་ཀྱི་ནང་མ་གསལ།

2. བཞི་བའི་ རྟེན། ཙུང་།

3. བརྗོད་པའི་(སྒྲུབ་) ཐུ་དཔེ།

4. ཡང་ རྟེན། སྟེ། པེ།

5. སུམ་བརྒྱ་ པེ།

6. འཆི་བ་མེད་པར་ གསེར། པེ། འཆི་བ་ཉེ་བར་སྟོབས་པ་(མར་ཁོལ་གདུ་) ཐུ་དཔེ།

7. གཟུང་ གསེར། པེ།

དང་པོ་ཁེ་པ་ནི་གནས་ལ་བྱེད་ཀྱི་དབང་དུ་བྱས་ནས་དང་པོ་ནི་ཀའི་སྡེ་ཆན་ནོ། །དེའི་
སྡེ་ཆན་ཀྱི་དང་པོ་ཀའོ། །ནིའི་སྐྱ་ནི་གང་དུ་ཡང་གནས་པ་མེད་དོ་ཁེ་པ་འི་དོན་ནོ། ༥ །

མཐར་གནས་པ་ཡི་གསུམ་པ་དང་། །

དང་པོ་ཡི་ནི་གསུམ་པ་དང་། །

སུམ་ཅུ་ཅ་གཉིས་ཉིད་དག་དང་། །

བཞི་པ་ཡི་ནི་ལྔ་པ་དང་། ་ །

མཐར་གནས་པ་ཡི་གསུམ་པ་ནི་² ། ཁེ་པ་ནི་ལའོ། །སའི་ས་བོན་དུ་བརྟན་
པའོ། །དང་པོ་ཡི་ནི་གསུམ་པ་ཉིད། །ཅེས་པ་ནི་གའོ། །དེ་ལ་ཟབ་མོའི་ཆོས་ཀྱི་དོན་
ཡིན་པས་དེ་ཉིད་དེ་ནིའི་སྐྱའི་དོན་ནོ། །སུམ་ཅུ་ཅ་གཉིས་པ་ཉིད་ནི་ཁེ་པ་ནི་སའོ། །
སུམ་ཅུ་ཅ་གཉིས་པ་ཡིན་ཁེ་པ་འི་དོན་ནོ། །དང་གི་སྐྱས་ནི་སྡེ་ལས་བྱུང་བའི་ས་ཡིན་
པར་བརྟན་པར་བྱའོ། །བཞི་པ་ཡི་ནི་ལྔ་པ་དང་། །ཁེ་པ་ནི་ནའོ། ་ །

ལྔ་པ་ཡི་ཡང་བཞི་པ་དང་། །

མཐར་གནས་པ་ཡི་དང་པོ་གང་། །

གཉིས་པ་ཡི་ནི་གསུམ་པ་དང་། །

གསུམ་པའི་དང་པོ་གང་ཡིན་དང་། །

1. དེ་དཔའ་བོའི་དང་པོ་ སྡེ། ཅ།

2. 'ནི' གསེར་པེ་གཉིས་སུ་མེད།

3. 'དེ' གསེར་པེ་གཉིས་སུ་མེད།

ལྷ་པ་ཡི་ཡང་བཞི་པ་དང་། །ཞེས་པ་ནི་མཐོ་། །མཐར་གནས་པ་ཡི་དང་པོ་དང་། །
 ཞེས་པ་ནི་མཐར་གནས་པ་ནི་མཐར་གནས་སྡེ་ཆོན་ཏེ། །དེའི་ཡང་དང་པོ་ན་གནས་པ་
 ནི་ཡའོ། །གཉིས་པ་ཡི་ནི་གསུམ་པ་དང་། །ཞེས་པ་ནི་ཇའོ། །བཟུང་པའི་དོན་
 ཉིད་ཀྱིས་ཀའི་འཁྱུན་བྱེད་པའོ། །གསུམ་པའི་དང་པོ་གང་ཡིན་བདུ། །ཞེས་པ་ནི་
 ཏའོ། ༡ །

ལྷ་པ་ཡི་ཡང་ལྷ་པ་དང་། །

དང་པོ་ཡི་ཡང་དང་པོ་དང་། །

དེ་བཞིན་བརྟུ་གཅིག་པ་ཉིད་དང་། །

དེ་བཞིན་མཁས་པས་བརྟུ་དུག་པ། ༥ །

ལྷ་པ་ཡི་ཡང་ལྷ་པ་དང་། །ཞེས་པ་ནི་མཐོ་། །དང་པོ་ཡི་ཡང་དང་པོ་ནི། །ཞེས་
 པ་ནི་ཡང་ཀ་སྟེ། །ར་དང་ཀ་ལ་སོགས་པའི་སྦྱོར་བས་འདོད་པ་གསལ་བར་བྱེད་པ་སྟེ།
 ནིའི་སྒྲས་²བརྟན་པའོ། །དེ་བཞིན་བརྟུ་གཅིག་པ་ཉིད་ནི། །ཞེས་པ་ནི་དེ་བཞིན་དུ་
 བཟུང་གི་ཡན་ལག་དང་ཉིད་ལག་དུ་གྱུར་པ་ཉིད་ཀྱིས་ལྷུང་པར་བྱེད་པའི་དོན་བརྟན་
 པའོ། །བརྟུ་གཅིག་པ་ནི་ཏའོ། །དང་གིས་ནི་དེའི་སྦྱོན་རོལ་དུ་གྱུར་པའི་པ་ཡིག་³
 གིས་ངེས་པར་སྒྲགས་ཀྱི་མཐར་དེ་སྦྱར་རོ་ཞེས་པ་དེའི་ཕྱིར་ཉིད་གསུངས་སོ། །དེ་
 བཞིན་མཁས་པས་བརྟུ་དུག་པ། །ཞེས་པ་ནི་བརྟུ་དུག་པ་ཉིད་བརྟུ་དུག་པ་སྟེ། །རང་

1. བོད་འགྱུར་པར་མ་ནམས་སྟེ་ཀ་ནིའི་ཞེས་གསལ། ཀོང་དུ་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་བཞག་པ་ཡིན།

2. ནིའི་སྒྲས་ གསེར། པ།

3. ཏཱཀར་ རྒྱ་དཔེ།

གི་དོན་དུ་མ་སྟེ་དུ་མ་ལྟ་བུའོ། །དེ་ཡང་ཏའོ། །དེ་ལ་མཁས་པ་ཞེས་པ་ནི་བྱ་བས་བྱ་བ་
 པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་གཉིས་པའོ། །ལྷ་པ་ཡི་ཡང་ལྷ་པ་དང་། །ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་
 དང་། །འོན་ཀྱང་། །བཞི་པའི་ལྷ་པ་གང་ཡིན་དང་། །ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ཉོགས་
 པར་བྱའོ། །བཞི་པའི་སྡེ་ཆོན་གང་ཡིན་པ་དེའི་ཡི་གེ་དེ་ནི་ལྷ་པའི་ཡང་ལྷ་པ་སྐྱངས་ལ་
 དཔའ་པོ་བདུ་བར་བྱའོ་ཞེས་མཁས་པས་དགོངས་སོ། །དེ་ལྟར་ལྷ་པ་གང་ཡིན་པའི་ཡི་
 གེ་དེའི་བཞི་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ཡང་དེ་བཞིན་ཞེས་གསུངས་པ་སྟེ། །སྟོང་པ་
 ཉིད་བཅུ་དྲུག་སྟོན་པར་འདི་སྟུབ་པ་ཡིན་ནོ། ། ༩ །

²གསུམ་པའི་དང་པོ་གང་ཡིན་དང་། །

དེ་བཞིན་ནི་ཤུ་ཅ་དྲུག་པ། །

བཞི་པའི་གསུམ་པ་གང་ཡིན་དང་། །

ལྷ་ལྷ་ལྷ་ཡི་གཉིས་པ་ཉིད། ༡༠ །

གསུམ་པའི་དང་པོ་ནི་ཏའོ། །དེ་བཞིན་ནི་ཤུ་ཅ་དྲུག་པ། །ཞེས་པ་ནི་ནི་ཤུ་ཅ་
 དྲུག་པའི་ལ་སྟེ་མཁས་པས་བྱ་བ་ལ་གཉིས་པའོ། །དེ་ལྟར་ཐམས་ཅད་བཟའོ། །ནི་
 ཤུ་ཅ་དྲུག་པ་ལ་སོགས་པ་ནམས་ལ་ནི་ཏ་ཕྱི་བ་སྟེ། །དེ་བཞིན་ཞེས་པ་ནི་འདི་ནི་ཆུང་

1. བོད་དཔེར་‘རང་གི་དོན་དུ་མ་སྟེ་དུ་མ་ལྟ་བུའོ’ཞེས་འཁོད་ཡོད། གོང་དུ་བྱ་བ་དཔེ་ལྟར་བཞག་ཡོད།
2. རྒྱ་དཔེར་‘དང་པོ་ཡི་ནི་དང་པོ་དང་།’ཞེས་པའི་ཆོག་ཀང་གཅིག་ལྟག་པ་འཁོད་འདུག
3. ལྷ་ལྷ་ལྷ་ ལྷ་ ལྷ། ལྷ་ལྷ་ བེ།
4. དེ་བཞིན་དུ་ གསེར། བེ།
5. ད་ལྟར་ བེ།
6. ‘ནི་’གསེར་བྱིས་དང་ཕེ་ཀིང་དུ་མེད།

གི་ས་བོན་ཉིད་དོ། །བཞི་པའི་གསུམ་པ་གང་ཡིན་དང་། །ཞེས་པ་ནི་དཔོ། །ནའི་
 གྲུས་ནི་སྤྲིག་པ་བསྐྱེད་པར་དོན་བརྟན་པ་ཡིན་ནོ། །ཡུལ་ཡི་ནི་གཉིས་པ་ཉིད། །ཅེས་
 པ་ནི་གཤམ་དུ་ནི་དོད་གྱི་ཡི་གེའོ། །དོད་ཅེས་པ་ནི་ཡི་གེའི་ལུང་བྱས་པའོ། །གཉིས་
 ཞེས་པ་¹གཉིས་པ་པའོ། །ཉིད་ཅེས་པ་ནི་གཞན་གཉིས་པ་ཉིད་ལས་ངེས་པར་གཟུང་
 པའི་དོན་ཏོ། ༡༠ །

དང་པོའི་དང་པོ་གང་ཡིན་དང་། །

།

དེ་བཞིན་ནི་ཤུ་རྩ་བདུན་པ།

།

ནི་ཤུ་རྩ་བརྒྱད་པ་ཡང་དོ།

།

དང་པོ་ཡི་ནི་གསུམ་པ་དང་། ༡༡ །

།

དང་པོའི་དང་པོ་གང་ཡིན་དང་། །ཞེས་པ་ནི་གཞོ། །དེ་བཞིན་ནི་ཤུ་རྩ་བདུན་པ། །
 ཞེས་པ་ནི་ནི་ཤུ་རྩ་བདུན་པ་ནི་རའོ། །དེ་བཞིན་སྐྱེ་འདི་མེའི་ས་བོན་ཡིན་པར་བརྟན་
 པའོ། །ནི་ཤུ་རྩ་བརྒྱད་པའོ་ཞེས་པ་ནི་ནི་ཤུ་རྩ་བརྒྱད་ལ་ཡིག་ཅི་སའི་ས་བོན་ཡིན་པར་
 བསྐྱབས་པ་³ཡིན་ནོ། །དང་པོ་ཡི་ནི་གསུམ་པ་དང་། །ཞེས་པ་ནི་གཞོ། །ནའི་སྐྱེས་⁴
 ནི་བྱད་པར་དུ་འགྲོ་ཞིང་རྟག་དུ་འད་སྟོང་པ་ཉིད་ལ་ཉེ་བར་གནས་པ་དེ་བརྗོད་པའི་
 ཕྱིར་གྲོས་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། ༡༡ །

1. ཅེས་པ་ གསེར། བེ།

2. ལས་གྱི་སྐྱེ་ གསེར། ལོ་གྱི་སྐྱེ་ རྟེན། ཅོ། ལོ་གྱི་སྐྱེ་ བེ། གོང་དུ་རྒྱུད་པེ་ལྟར་བཀོད་ཡོད།

3. བསྐྱབས་པ་ རྟེན། ཅོ།

4. ནའི་སྐྱེས་ གསེར།

སྟོང་པ་ཉིད་ཀྱི་དོན་བརྟན་པའོ། །དེ་བཞིན་ནི་ཤུ་ཙུག་པ། །ཞེས་པ་ནི་དེ་བཞིན་ནི་
སྟོན་བཞིན་ཏེ་ཡའོ། །ཡང་གི་སྐྱས་ནི་དག་གི་ཀླན་ནོ། །ཡི་གེ་སྲུལ་ཙུ་གཉིས་ཉིད་
དང་། །ཞེས་པ་ནི་ཡི་གེ་སྲུལ་ཙུ་ཙུ་གཉིས་པ་ནི་སའོ། །དང་ནི་དེ་ཚུའི་རང་བཞིན་
ཡིན་པར་བརྟན་ཏོ། །ཉིད་ནི་འདི་ཉེ་བར་གཟུང་བའོ། །དྲོད་ནམས་ཀྱི་ནི་ཐ་མ་ཉིད། །
ཅས་པ་ནི་ཏའོ། །ཉིད་ཀྱི་ནི་ཀླུ་ཡི་ཐ་མ་དང་འབྲེལ་བ་ངེས་པར་གཟུང་བའོ། ། ༡༩ །

སྲུལ་ཙུ་ཙུ་གཉིས་པ་ཉིད་དང་། །

ལྷ་པ་ཡི་ནི་བཞི་པ་དང་། །

གཉིས་པ་ཡི་ནི་གསུམ་པ་དང་། །

ལྷ་པ་ཡི་ནི་བཞི་པ་དང་། ༡༩ །

སྲུལ་ཙུ་ཙུ་གཉིས་པ་ཉིད་དང་། །ཞེས་པ་ནི་ཡི་གེ་སྲུལ་ཙུ་ཙུ་གཉིས་པ་སའོ། །
ཡང་དང་ཉིད་ཀྱི་ཆོག་གིས་ནི་སྟོན་ཀྱི་དག་གི་དོན་བརྟན་པའོ། །ལྷ་པ་ཡི་ནི་བཞི་པ་
དང་། །ཞེས་པ་ནི་ཏའོ། །ནིའི་སྐྱས་ནི་འདིས་འཇིགས་པ་སེལ་བར་བརྟན་ཏོ། །
གཉིས་པ་ཡི་ནི་གསུམ་པ་²དང་། །ཞེས་པ་ནི་ཏའོ། །ཉིད་ཀྱི་སྐྱས་ནི་དེ་ཀླུ་པའི་དོན་
དུ་ངེས་པར་གཟུང་བའོ། །ལྷ་པ་ཡི་ནི་བཞི་པ་དང་། །ཞེས་པ་ནི་ཏའོ། །ནིའི་སྐྱས་
ཨ་མྱ་³སྟོན་དུ་བརྟན་པའི་དོན་བརྟན་པའོ། ། ༡༩ །

1. བརྟན་བའོ་ ཙུ།

2. གསུམ་པ་ཉིད་ བཤེས།

3. ནིའི་སྐྱས་ནི་མྱ་ནི་ བོད་འགྱུར་པར་མ། གོང་དུ་ཀྱང་དཔེ་ལྟར་བཞག་ཡོད།

ཡུལ་ཁྱེ་ཡི་གསུམ་པ་དང་། 1

གཞན་ཡང་ཉི་ཤུ་ཅ་བདུན་པ། 1

ཡུལ་ཁྱེ་ཡི་དང་པོ་དང་། 1

དེ་བཞིན་ཉི་ཤུ་ཅ་གཅིག་པ། ༡༥ 1

དོད་ནམས་ཀྱི་ཉི་གསུམ་པ་ཞེས་པ་ནི་སྟོང་། བྱི་མ་སྟོན་བཞིན་གཞན་ཉི་ཤུ་
ཅ་བདུན་པ་ཞེས་པ་ནི་རྟོག་པོ། གཞན་ཉི་མེད་ས་པོན་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། མཐར་གནས་
ནམས་ཀྱི་དང་པོ་ཉིད། ཅེས་པ་ནི་ཡང་། ཉིད་ནི་བསྐྱེད་པར་ཉི་བར་གཟུང་བའོ། དེ་
བཞིན་ཉི་ཤུ་ཅ་གཅིག་པ་ནི་པོ། དེ་བཞིན་ནི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པས་གསུངས་པར་
བརྟན་པའོ། ཡང་ནི་ཡོན་ཏན་རྒྱས་པའོ། ༡༥ 1

ཡུལ་ཁྱེ་ཡི་གཉིས་པ་དང་། 1

དེ་བཞིན་ཡང་ནི་སུམ་ཅུ་པ། 1

ཐུ་པ་ཡི་ནི་དང་པོ་དང་། 1

ཡུལ་ཁྱེ་ཡི་དང་པོ་ཉིད། ༡༦ 1

1. ཡུལ་ཁྱེ་ ལྷ་ ལྷ། ཡུལ་ཁྱེ་ པོ།
2. ཡུལ་ཁྱེ་ པོ། ཡུལ་ཁྱེ་ ལྷ་ ལྷ།
3. 'གཞན' ལྷ་དག་དང་ཅི་ནི་མེད།
4. དང་པོ་ནི་ བོད་དཔེ། མོང་དུ་རྒྱ་དཔེར་གསལ་བ་ལྟར་བཞོད་པ་ཡིན།
5. ཡུལ་ཁྱེ་ པོ། ཡུལ་ཁྱེ་ ལྷ་ ལྷ།
6. སུམ་ཅུ་པ་ པོ།
7. ཡུལ་ཁྱེ་ ལྷ་ ལྷ། ཡུལ་ཁྱེ་ པོ། ཡུལ་ཁྱེ་ ལྷ་ ལྷ། ལྷ་དག་དང་ཅི་ནི་མེད་པ་བཞིན་འདིར་བཞོད་ཡོད།

མཐར་གནས་པ་ཡི་གཉིས་པ་དང་། ཞེས་པ་གང་ཡིན་པའི་གཉིས་པ་ནི་རའོ། །
 དེ་བཞིན་ཡང་ནི་སུམ་ཅུ་པ། ཞེས་པ་ནི་ཤའོ། །ཡང་གི་སྐྱུས་ནི་ཡང་དེས་བཞུས་པ་
 ཉིད་དུ་བཞུན་པའོ། །དེ་བཞིན་ནི་ཞི་ཞིང་གིས་པར་བྱེད་པས་ན་ཤའི་དོན་བཞུན་པའོ། །
 རྩ་པ་ཡི་ནི་དང་པོ་དང་། ཞེས་པ་ནི་པའོ། །དྲོད་རྣམས་ཀྱི་ནི་དང་པོ་དང་། ཞེས་པ་
 ནི་ཤའོ། །དང་ནི་ཉིད་ཀྱི་དོན་ཏེ། ཞི་བའི་དོན་དང་དང་པོ་ཉིད་དུ་ངེས་པར་གཟུང་
 བའོ། ༡༥ །

དེ་བཞིན་ཡི་གེ་རྩུ་ཉིད་དང་། །
 བཞི་པའི་དང་པོ་གང་ཡིན་དང་། །
 ཡུལ་ཉི་ཡེད་དང་པོ་གང་ཡིན་དང་། །
 དེ་བཞིན་ནི་བྱ་ཙ་བཟུང་པ། ༡༦ །

དེ་བཞིན་ཡི་གེ་རྩུ་ཉིད་དང་། ཞེས་པ་ནི་རྩུ་ཡི་གེ་སྒྲངས་ཏེ་དཔལ་པོ་བདུ་བར་
 བྱའོ་ཞེས་སྒྱུར་རོ། །བཞི་པའི་དང་པོ་གང་ཡིན་དང་། ཞེས་པ་ནི་ཏའོ། །དྲོད་རྣམས་
 དང་པོ་གང་ཡིན་དང་། ཞེས་པ་ནི་ཤའོ། །དེ་བཞིན་ནི་བྱ་ཙ་བཟུང་པ། ཞེས་པ་ནི་
 ལའོ། །དེ་བཞིན་ཞེས་པ་ནི་དེའི་ཐོན་དུ་བཞུན་པའོ། ༡༧ །

དང་པོའི་གཉིས་པ་གང་ཡིན་དང་། །
 གསུམ་པའི་དང་པོ་ཉིད་དག་དང་། །

1. ཡི་གེ་བྱ་ སྐྱུ ཡི་གེ་བྱ་ ལྷ གི ལྷ རེར་འགྲེལ་པ་ལྟར་བཞག་ཡོད།

2. ཡུལ་ཉི་ སྐྱུ ལྷ ཡུལ་ཉི་ གི།

དང་པོའི་གསུམ་པ་གང་ཡིན་དང་། །

བཞི་པའི་བཞི་པ་གང་ཡིན་དང་། ༡༩ །

དང་པོའི་གཉིས་པ་གང་ཡིན་དང་། །ཞེས་པ་ཁ་རྩེ་སྒྲ་མ་བཞིན་ནོ། །གསུམ་པའི་
དང་པོ་ཉིད་དག་དང་། །ཞེས་པ་ནི་ཁོ་ལོ། །དང་པོའི་གསུམ་པ་གང་ཡིན་དང་། །ཞེས་
པ་ནི་གཏོ། །བཞི་པའི་བཞི་པ་གང་ཡིན་ནི། །ཞེས་པ་ནི་རྩེ་ལོ། །ཁིའི་སྒྲ་ནི་སྒྲིག་པ་
འཛོམས་པར་བྱེད་པ་ཉིད་དུ་བརྟན་པའོ། ༡༩ །

ཡམས་སྒྲ་²ཡི་གཉིས་པ་དང་། །

གསུམ་པ་ཡི་ཡང་ཁྲ་པ་དང་། །

ཡི་གེ་བྱ་ནི་དེ་ནས་སྒྲ་³། །

དང་པོ་ཡི་ནི་བཞི་པ་དང་། །

དེ་ནས་བརྒྱད་པ་ཉིད་དག་དང་། ༡༩ །

མཐར་གནས་པ་ཡི་གཉིས་པ་དང་། །ཞེས་པ་ནི་རའོ། །གསུམ་པའི་ཡང་ནི་ཁྲ་པ་
དང་། །ཞེས་པ་ནི་ཁྲ་པ་ནི་ཁོ་ལོ། །ཡང་ནི་ངེས་པར་གཟུང་བའོ། །དེ་ལྟར་ཐམས་
ཅད་དུ་ལོ། །བྱ་ཡིག་⁴ཅེས་བྱ་དཔའ་བོས་གསུངས། །ཞེས་པ་ནི་བྱ་དཔར་ཅན་ཐོབ་

1. ལྟའོ་གསེར།

2. ཡམས་སྒྲ་ བེ། ཡམས་སྒྲ་ ལྟ། ལྟ།

3. ཡི་གེ་བྱ་ནི་དེ་ནས་སྒྲ་ བེ། ལྟ། ལྟ། ‘བྱ་ཡིག་ཅེས་བྱ་དཔའ་བོས་གསུངས་’འགྲེལ་པ་དང་བྱ་
དཔའི་རྩ་བར་གསལ།

4. བྱ་ཡིག་ གསེར། བེ།

པར་བྱེད་པས་ན་བླ་སྟེ་། དེ་དཔལ་བོ་དཔལ་ཉེ་རྟུགས་གསུངས་པའོ། །དང་པོ་ཡི་ནི་
བཞི་པ་དང་། །ཞེས་པ་ནི་སྟོའོ། །དེ་བཞིན་བརྒྱུད་པ་ཉིད་དང་ཡང་། །ཞེས་པ་ནི་
བརྒྱུད་པ་ནི་ངོ་འོ། །དེ་བཞིན་གྱི་སྐྱས་ནི་ཐུལ་བའི་དོན་རྗེས་སུ་བསྟན་པའོ། །ཉིད་ནི་
དེ་ཡིས་ངེས་པར་གཟུང་བའོ། །ཡང་གི་སྐྱས་ནི་ཀླ་ལའི་བརྒྱུད་པར་བསྟན་པའོ། ། ༡༧ །

བཞི་པའི་ལྷ་པ་ཉིད་དག་ཡིན། །

།

ལྷ་པ་ཡི་ཡང་ལྷ་པ་དང་། །

།

དེ་བཞིན་ཉི་ཤུ་ཙ་བདུན་པ། །

།

བཞི་པ་ཡི་ནི་བཞི་པ་དང་། ། ༢༠ །

།

སྐར་ཡང་ཉི་ཤུ་ཙ་བདུན་པ། །

།

དེ་བཞིན་ཉི་ཤུ་ཙ་དུག་པ། །

།

ཉི་ཤུ་ཙ་ལྷ་ཡང་དག་ཆང་། །

།

སུམ་རུ་ཙ་གསུམ་ཉིད་དག་དང་། ། ༢༡ །

།

ལྷ་པ་ཡི་ཡང་ལྷ་པ་དང་། །ཞེས་པ་ནི་མཐོ། །བཞི་པ་ཡི་ཡང་ལྷ་པ་དང་། །ཞེས་
པ་ནི་ནམོ། །དེ་བཞིན་ཉི་ཤུ་ཙ་བདུན་པ། །ཞེས་པ་ནི་རམོ། །དེ་བཞིན་གྱི་སྐྱས་ནི་
སྟོན་དུ་བསྟན་པའི་དོན་བསྟན་པའོ། །བཞི་པ་ཡི་ཡང་བཞི་པ་དང་། །ཞེས་པ་ནི་སྟོའོ། །
དང་གི་སྐྱས་ནི་ཡང་གི་དོན་ཉེ། །ཡང་ནི་ཉི་ཤུ་ཙ་བདུན་པ། །ཞེས་པ་ནི་རམོ། །ཡང་

1. བླ་སྟེ་ སྟེ། ཙ།

2. ཡང་ན་ སྟེ། ཙ།

གི་སྐྱུ་སྐྱུ་ཞི་དེ་བཞིན་ཉིད། །དེ་འབཞིན་ཉི་ཤུ་ཅ་དུག་ཉིད། །ཅེས་པ་ནི་ཉི་ཤུ་ཅ་དུག་པ་
 ཡའོ། །དེ་བཞིན་གྱི་སྐྱུ་སྐྱུ་ཞི་དེ་བཞིན་ཉིད་དུའོ། །ཏམ་འེ་ཁྱེན་གྱི་ཆ་ཕྱི་²པའི་ཉིད་ཅེས་
 པ་ནི་སྐྱེན་དུ་བསྟན་པའི་དོན་འདིས་སྟོན་པའོ། །ཉི་ཤུ་ཅ་ལྷ་སྐྱུ་ཞེས་པ་ནི་མའོ། །
 དེ་སྐྱུ་སྐྱུ་ཉིད་པའེ་པོ་བདུ་བར་བྱའོ་ཞེས་སྐྱུར་རོ། །སྐྱུ་ཞེས་པ་ནི་གཞན་ལ་³
 ཡང་རོ། །སྐྱུ་ཅ་ཅ་གསུམ་ཉིད་དག་དང་། །ཞེས་པ་ནི་ཏའོ། །དང་གི་སྐྱུ་སྐྱུ་
 སེམས་ཅན་རྣམས་ཀྱི་སྒྲིག་པ་འཛོམས་པར་བྱེད་པའི་དོན་དུ་ངེས་པར་གཟུང་བར་
 བྱའོ། ༡༠-༡༡ །

བཞི་པ་ཡི་ནི་བཞི་པ་དང་། །

ལྷ་པ་ཡི་ནི་ལྷ་པ་དང་། །

བཞི་པ་ཡི་ཡང་ལྷ་པ་དང་། །

དང་པོའི་དང་པོ་ཉིད་དག་དང་། ༡༡ །

བཞི་པ་ཡི་ནི་བཞི་པ་དང་། །ཞེས་པ་ནི་ཏའོ། །ནི་ནི་ཡང་གི་དོན་ཏོ། །ལྷ་པ་ཡི་
 ནི་ལྷ་པ་དང་། །ཞེས་པ་ནི་མའོ། །བཞི་པ་ཡི་ཡང་ལྷ་པ་དང་། །ཞེས་པ་ནི་ནའོ། །
 ཡང་གི་⁴སྐྱུ་སྐྱུ་ཞི་ལྷ་པར་བསྟན་པའོ། །དང་པོ་ཡི་ནི་དང་པོ་ཉིད། །ཅེས་པ་ནི་ཏའོ། །
 ཉིད་གྱི་སྐྱུ་སྐྱུ་ཞི་སྐྱུར་བསྟན་པའི་དོན་བསྟན་པའོ། ༡༡ །

1. དེ་དེ་གསེར། བ།

2. ཕྱི་མ་སྤྲེ། ཅོ།

3. གཞན་པ་སྤྲེ། ཅོ།

4. ཡང་གིས་གསེར། བ།

དེ་བཞིན་ནི་ཤུ་ཙ་བདུན་པ། 1

ཨུལ་ཡི་¹བཞི་པ་དང་། 1

དེ་བཞིན་ནི་ཤུ་ཙ་གཅིག་པ། 1

ཨུལ་ཡི་²གཉིས་པ་ནིད། 1

དེ་བཞིན་ནི་ཤུ་ཙ་དྲུག་པའོ། ༡༩ 1

དེ་བཞིན་ནི་ཤུ་ཙ་བདུན་པ། ཞེས་པ་ནི་རའོ། །དེ་བཞིན་གྱི་སྐྱས་ནི་མའི་ས་བོན་
ནིད་དུ་བསྟན་པའོ། །མཐར་གནས་ནམས་ཀྱི་བཞི་པ་ནི། ཞེས་པ་ནི་མའོ། །ཁིའི་
སྐྱས་ནི་ཚུའི་ས་བོན་ནིད་དུ་བསྟན་པའོ། །དེ་བཞིན་ནི་ཤུ་ཙ་གཅིག་པ། ཞེས་པ་ནི་
པའོ། །དེ་བཞིན་གྱི་སྐྱས་ནི་ཨུ་ལི་དང་འབྲེལ་བ་ནིད་དུ་བསྟན་པའོ། །དོད་ནམས་ཀྱི་
ནི་གཉིས་པ་ནིད། །ཅེས་པ་ནི་པའོ། །ནིད་ཀྱི་སྐྱས་ནི་འདིའི་གནས་སུ་ངེས་པར་
བསྟན་པའོ། །དེ་བཞིན་ནི་ཤུ་ཙ་དྲུག་ནིད། །ཅེས་པ་ནི་ཡའོ། །དེ་ནི་ཙ་བའི་སྐྱས་ཀྱི་
ཡི་གེ་བདུ་བའོ། ༡༩ 1

དང་པོའི་དང་པོ་ནིད་དང་ནི། 1

མཐར་གནས་པ་ཡི་གཉིས་པ་ནིད། 1

གཉིས་པ་ཡི་ནི་དང་པོ་ནིད། 1

དྲུག་པ་ཡི་ཡང་གཉིས་པའོ། ༢༠ 1

1. ཨུལ་ཡི་ བེ། ཨུལ་ཡི་ ལྷ། ལྷ།

2. ཨུལ་ཡི་ ལྷ། ལྷ། ཨུལ་ཡི་ བེ།

དང་པོ་ཡི་ནི་དང་པོ་དང་།	།
མཐར་གནས་གཉིས་པ་དེ་བཞིན་ཏེ།	།
གཉིས་པ་ཡི་ནི་དང་པོ་དང་།	།
དུག་པ་ ¹ ཡི་ནི་གཉིས་པ་དང་།	༡༥ །
དུག་པ་ཡི་ཡང་བཞི་པ་ ² དང་།	།
བཞི་པ་ཡི་ཡང་ལྔ་པ་ལ།	།
བཞི་པ་ཡིས་ནི་སྒྱུར་བར་བྱ།	།
མཐར་གནས་པ་ཡི་བཞི་པ་དང་།	༡༦ །
བཞི་པ་ ³ ཡི་ཡང་ལྔ་པ་ལ།	།
བཞི་པ་ཡིས་ནི་གདན་དུ་བྱ།	།
ལྔ་པ་ཡི་ནི་དང་པོ་ལ།	།
འོག་དུ་མེ་ཡི་གདན་ ⁴ དང་ལྔ་ན།	༡༧ །
ཡུལ་ལྔ་ཡི་ ⁵ གསུམ་དེ་བཞིན།	།
མཐར་གནས་པ་ཡི་དང་པོ་ཡང་།	།
བཞི་པ་ཡི་ནི་ ⁶ དང་པོ་ནི།	།
མེ་ཡིས་གདན་དུ་བྱས་པ་འོ།	༡༨ །

1. བདུན་པ་ བོད་འགྱུར་པར་མ། གོང་དུ་ཁྱ་དཔེ་ལྟར་བཞག་ཡོད།
2. གསུམ་པ་ བོད་འགྱུར་པར་མ། གོང་དུ་ཁྱ་དཔེ་བཞིན་བཀོད་པ་ཡིན།
3. བོད་འགྱུར་པར་མ་ནམས་སུ་‘ལྔ་པ་’ཞེས་གསལ་ཡང་གོང་དེར་གཟུངས་ལྔ་གས་དང་། ཁྱ་དཔེར་གསལ་བ་དང་མཐུན་པར་བཀོད་ཡོད།
4. མེ་ཡིག་གདན་ ལྟ།
5. ཡུལ་ ལྟ། ལྟ། ཡུལ་ཡིག་ ཡེ།
6. ‘ནི་’ བེ་ཀོང་དུ་མེད།

བདུན་པ་ཡི་ནི་གསུམ་པ་དང་། 1

དུག་པ་ཡི་ཡང་དང་པོ་གང་། 1

ཀཤར་¹ གྲགས་པའི་དང་པོ་གཟུང་²། 1

ལྔ་པ་ཡི་ནི་བཞི་པ་དང་། 39 1

མཐར་གནས་པ་ཡི་དང་པོ་གང་། 1

དེ་བཞིན་ཡང་ནི་རིལ་པོ་ཉིད། 1

ལྔ་པ་ཡི་ནི་བཞི་པ་དང་། 1

བདུན་པ་ཡི་ཡང་དང་པོ་དང་། 30 1

ཡུལ་རྒྱུ་³ཡི་བཞི་པ་གཟུང་⁴། 1

བདུན་པ་ཡི་ནི་བཞི་པ་ལ། 1

དོ་རྩེ་སེམས་དཔས་⁵ཕྱེ་བ་དག 1

ཡུལ་རྒྱུ་⁶ཡི་བཞི་པ་ཉིད། 39 1

འོད་ཕྱེད་གདན་དུ་བྱས་པའོ། 1

བདུན་པ་ཡི་ནི་བཞི་པ་ལ། 1

1. ཀ་ཤར་ ལྷ།

2. བཟུང་ ལྷ། བེ།

3. ཡུལ་རྒྱུ་ ལྷ། ལྷ། ཡུལ་རྒྱུ་ བེ།

4. བཟུང་ ལྷ།

5. དོ་རྩེ་སེམས་དཔས་ ལྷ། ལྷ།

6. ཡུལ་རྒྱུ་ ལྷ། ལྷ། ཡུལ་རྒྱུ་ བེ།

འོག་རྩ་ཡང་ནི་མེ་ཡི་གདན།	།
ཚོག་རྩ་དང་ནི་ཡང་དག་ལྷན།	༣༣ །
ཐུ་པ་ཡི་ནི་གཉིས་པ་དང་།	།
དེ་བཞིན་ནི་ཤུ་གཉིས་པ་ཉིད།	།
རྩ་པ་ཡི་ནི་གཉིས་ཉིད་དང་།	།
དེ་བཞིན་བརྩ་གཅིག་པར་ནི་ངེས།	༣༣།
སྐར་ཡང་ནི་ཤུ་ཙ་གཉིས་གཟུང་།	།
གསུམ་པ་ཡི་ནི་དང་པོ་དང་།	།
བཞི་པ་ཡི་ནི་གསུམ་པ་དང་།	།
ཡུལ་ཐུ་ཡི་བཞི་པ་ཉིད།	༣༤ །
ཐུ་པ་ཡི་ནི་གསུམ་པ་དང་།	།
བདུན་པ་ཡི་ནི་བཞི་པ་དང་།	།
ནི་ཤུ་གཅིག་པ་དེ་ནས་བརྩ།	།
གཉིས་པ་ཡི་ནི་དང་པོ་དང་།	༣༥ །
ཐུ་པ་ཡི་ནི་དང་པོར་ངེས།	།
གཉིས་ལས་རྩ་པ་འེ་ཡི་གོའོ།	།

-
1. བརྩ་གཅིག་པར་ བེ།
 2. བཟུང་ ལྷ།
 3. ཡུལ་ ལྷ། ལྷ། ཡུལ་ བེ།

ཐུ་པ་ཡི་ནི་བཞི་པ་དང་། 1

དེ་བཞིན་ཀཏར་གྲགས་ཉིད་དང་། 36

ནི་ཤུ་བཞི་པ་དེ་ནས་བརྟུ། 1

སྐར་ཡང་རིལ་པོ་ཐི་བཞིན་དང་། 1

ཐུ་པ་ཡི་ནི་གསུམ་པ་དང་། 1

ཡུལ་ཐུ་ཡི་གསུམ་པ་དང་། 37

མཐར་གནས་པ་ཡི་གཉིས་པ་ཉིད། 1

ཐུ་པ་ཡི་ནི་བཞི་པ་དང་། 1

སྐར་ཡང་འོད་བྱེད་སྦྱིན་པར་བྱ། 1

ཡི་གེ་ནི་ཤུ་འོ་འོ་ག་རྟུ་ནི། 38

བརྟུ་རྟུག་པ་ནི་གདན་དུ་བྱ། 1

འོ་ག་རྟུ་མེ་ཡིས་གསལ་བྱས་ལ། 1

ཐུ་པ་ཡི་ནི་ཐུ་པ་དང་། 1

མཐར་གནས་པ་ཡི་གསུམ་པ་དང་། 39

ཐུ་པ་ཡི་ནི་གསུམ་པ་དང་། 1

རྟུག་པ་ཡི་ཡང་གསུམ་པ་དང་། 1

1. ཀཏར་གྲགས་ ལྷ། ཀཏར་དགས་ བཤ།

2. ཡུལ་ ལྷ། ལྷ། ཡུལ་ བཤ།

3. ཡི་གེ་ནི་ཤུ་ ལྷ།

4. རྟུག་པ་ཡི་དང་ བཤ།

མཐར་གནས་པ་ཡི་བཞི་པ་དང་། 1

ཉི་ཤུ་ལྔ་པས་བྱད་པར་དབྱེ། ༤༠ 1

བཞི་པ་ཡི་ནི་ལྔ་པ་དང་། 1

གཉིས་པ་ཡི་ནི་གསུམ་པ་ལ། 1

ཉི་མའི་བྱ་ཡིས་བྱད་པར་དབྱེ། 1

ཡུལ་ལྔ་པ་ཡི་བཞི་པ་དང་། ༤༡ 1

འོག་དུ་བཙོ་ལྔ་པ་²ཡི་གདན། 1

དང་པོ་ཡི་ཡང་གསུམ་པ་དང་། 1

དེ་ནས་མེ་ཡིས་གདན་དུ་བྱ། 1

བདུན་པ་ཡི་ནི་བཞི་པ་དང་། ༤༢ 1

འོག་དུ་བཙོ་ལྔ་པ་³ཡི་གདན། 1

ཡུལ་ལྔ་པ་⁴ཡི་གསུམ་པ་ཉིད། 1

ལྔ་པ་ཡི་ནི་དང་པོ་ལ། 1

བརྒྱ་དྲུག་པ་ཡིས་གདན་དུ་འོ། ༤༣ 1

1. ཡུལ་ལྔ་ ལྔ། ལྔ། ཡུལ་ན་ བེ།

2. བརྒྱ་ལྔ་པ་ རྟེ།

3. བརྒྱ་ལྔ་པ་ རྟེ།

4. ཡུལ་ལྔ་ ལྔ། ལྔ། ཡུལ་ན་ བེ།

དེ་ནས་ཉི་ཤུ་གཅིག་པ་ཐུང་། 1

བཞི་པ་ཡི་ནི་དང་པོ་དང་། 1

མཐར་གནས་པ་ཡི་གསུམ་པ་དང་། 1

གཉིས་པ་ཡི་ནི་གསུམ་པ་དང་། ༤༤ 1

བཞི་པ་ཡི་ནི་དང་པོ་དང་། 1

ཐུ་པ་ཡི་ནི་བཞི་པ་དང་། 1

གསུམ་པ་ཡི་ནི་གསུམ་པ་དང་། 1

དང་པོ་ཡི་ནི་གསུམ་པ་དང་། ༤༥ 1

ཡུལ་ལྗོངས་ཡི་གསུམ་པ་ཉིད། 1

དེ་བཞིན་ཉི་ཤུ་རྩ་གཅིག་པ། 1

འོད་བྱེད་མཉམ་པར་གནས་པའོ་²། 1

ཐུ་པ་ཡི་ནི་གསུམ་པ་དང་། ༤༦ 1

བཞི་པ་ཡི་ནི་དང་པོ་དང་། 1

གསུམ་པ་ཡི་ནི་གསུམ་པ་ལ། 1

མེ་ཡིས་སྤྱོད་³ནས་གསལ་བར་བྱ། 1

མཐར་གནས་པ་ཡི་དང་པོར་གསུངས། ༤༧ 1

1. ཡུལ་ལྗོངས་སྤྱོད་ཀྱི་ཡུལ་ལྗོངས་པེ།

2. མཉམ་པའོ་སྤྱོད་ཀྱི་ཀྱི།

3. སྤྱོད་སྤྱོད་སྤྱོད།

དེ་ནས་ཡི་གེ་བརྒྱ་དྲུག་འོག	།
གསུམ་པ་ཡི་ནི་གསུམ་པ་དང་།	།
སྤྱི་པོར་མེ་ཡི་ཡི་གས་མཚན།	།
དེ་བཞིན་ནི་ཤུ་ཙ་དྲུག་ཉིད།	༥༩ །
དང་པོ་ཡི་ནི་དང་པོ་དང་།	།
གཉིས་པ་ཡི་ནི་དང་པོ་དང་།	།
གསུམ་པ་ཡི་ནི་བཞི་པ་ལ།	།
བརྒྱ་གསུམ་པ་ཡིས་མནན་པའོ།	༥༩ །
དང་པོའི་དང་པོ་དེ་བཞིན་ཏེ།	།
གཉིས་པ་ཡི་ནི་དང་པོ་དང་།	།
གསུམ་པ་ཡི་ནི་བཞི་པ་ཡི།	།
སྤྱིར་དུ་བརྒྱ་གསུམ་པ་ཉིད་དང་།	༥༠ །
ཡུལ་རྒྱུ་ ¹ ཡི་བཞི་པ་ལ།	།
ནི་ཤུ་བདུན་པས་གདན་དུ་བྱ།	།
ཡ་ཡིག་ ² བརྒྱད་པའི་ས་བོན་ལ།	།
འོད་བྱེད་ཀྱིས་ནི་གསལ་བྱས་པ།	༥༡ །

1. ཡུལ་རྒྱུ་ རྩ། རྩ། ཡུལ་རྩ་ བེ།

2. དབྱངས་ཡིག་ བེ།

གཉིས་པ་ཡི་ནི་གསུམ་པ་ལ།	།
བཙོ་ལྔ་པ་ ¹ ཡིས་གདན་དུ་བྱ།	།
གཉིས་པ་ཡི་ནི་གསུམ་པ་ལ།	།
གསུམ་པའི་ལྔ་པ་ལ་ནི་བསྐྱོན།	༥༣ །
ཀཤའི་ ² ས་པོན་བདུས་ནས་ནི།	།
ཉི་ཤུ་ལྔ་པས་གདན་དུ་བྱ།	།
རིལ་པོ་མཛེས་པ་བདུས་ནས་ནི།	།
ཡི་གེ་མ་ཡིས་གདན་དུ་བྱ།	༥༣ །
ཡུལ་ལྔ་ ³ ཡི་བཞི་པ་ཉིད།	།
བདུན་པ་ཡི་ནི་བཞི་པ་དང་།	།
ཡ་ཆོགས་བརྒྱད་པའི་ས་པོན་དང་།	།
དེ་བཞིན་སུམ་ཙུ་གསུམ་ ⁴ པར་ངེས།	༥༤ །
ལྔ་པའི་བདག་ཉིད་ཡོངས་བདུས་ལ།	།
ཡང་ནི་དེ་ལ་གཉིས་པར་ངེས།	།
གཉིས་པ་ཡི་ནི་དང་པོ་དང་།	།
མཐར་གནས་པ་ཡི་གསུམ་པ་དང་།	༥༥ །

1. བཙོ་ལྔ་པ་ རྒྱ། བེ།

2. ཀཤའི་ ལྷ།

3. ཡུལ་ལྔ་ ལྷ། ལྷ། ཡུལ་ན་ བེ།

4. སུམ་བརྒྱ་གསུམ་ བེ།

རིག་པའི་ཀླུ་པོ་ནི་དཔལ་ཉེ་རུ་ཀློང་། །དེའི་སྐྱུ་གསུམ་ནི་ཀླང་པ་བརྒྱད་པའི་སྐྱུ་གསུ་
 ཉིད་དུ་གྲུབ་པ་སྟེ། །དེ་ཤེས་པ་ནི་དངོས་གྲུབ་འབྱུང་བ་རྟོགས་པའོ། །དེ་ནས་སྐྱུ་གསུ་
 གཞན་གྱི་ཆོག་ནི་སྟོང་པོ་མེད་པ་རྩ་དང་འདྲ་བ་གང་ཡིན་པ་ལ་བྱ་བ་སྟེ། །འདིའི་
 བསྐྱུ་བ་བྱའི་འབྲས་བྱ་ལ་སྟོས་ནས་²འབྲས་བྱ་མེད་པའི་སྤྱིར་རོ། །འབྲུ་ནི་སྤྱིར་བྱའི་
 བྱུང་པར་རོ། །དེས་ཐོས་པ་ནི་ཤིང་ལ་ཡང་འབྲས་ཐོས་པའོ། །དེ་ལ་འདིའི་དོན་ནི་
 འབྲས་ཐོས་པའི་ཤིང་ལྟར་གཞན་སྐྱུ་གསུ་གྱི་ཆོག་གསུམ་ནི་དོན་གྱི་བྱ་བས་སྟོང་པ་སྟེ། སྟོང་
 པོ་མེད་པའི་རྩ་བ་ཞིན་³དུ་འབྲས་བྱ་མེད་པར་ནལ་འབྱོར་པས་བསམ་མོ། །རྩ་བའི་
 སྐྱུ་གསུ་སྤྱིར་བྱུ་གསུ་གསུ། །ཞེས་པའོ། །དེ་ནི་ཡི་གེ་བདུས་པ་ཙམ་འབའ་ཞིག་གི་བདག་
 ཉིད་ཀྱི་སྤྱིར་རིག་པའི་ཀླུ་པོའི་སྐྱུ་གསུ་ཞེས་བཞེད་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །ཡང་ན་རིག་པ་
 ནི་མཁའ་འགྲོ་མ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། ཀླུ་པོ་ནི་འདིས་སྟེད་པར་བྱེད་པས་རིག་པའི་
 ཀླུ་པོའི་སྐྱུ་གསུ་ཉེ། ཀླུ་པོ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། དང་པོའི་དོན་ལ་དུག་པའོ། །
 སངས་རྒྱུས་ཀྱི་རིམ་འདི་སྐྱུ་བ་པ་⁴ཉིད་ཀྱིས་རིག་པའི་ཀླུ་པོ་ཉིད་ནི་གདམས་ངག་གོ། །
 སྐྱུ་བ་པ་ཐམས་ཅད་སྤངས་པའོ། །ཞེས་པ་ནི་སྤྱིར་སྐྱུ་གསུ་ལ་སོགས་པའི་སྐྱུ་བ་པ་ཡིན་ཉེ།
 བསྐྱུ་བ་པ་ཙམ་གྱིས་བསྐྱུ་བ་པར་བྱ་བ་ཉིད་ཀྱི་སྤྱིར་རོ། །ཡོད་མིན་ཞེས་པ་ནི་མཆོག་

1. ཀླུ་དཔའི་འགྲེལ་པར་‘དེ་ཤེས་པ་ནི་.....རྩ་བའི་སྐྱུ་གསུ་ཉེ་རུ་གསུ། །ཞེས་པའོ’ བར་གྱི་
 གཞུང་ཆོག་ཡིག་ཐེང་བདུན་པོ་དེ་དག་འོག་དུ་འཁོད་པའི་‘ཡི་གེ་བདུས་པ་ལས་རབ་དུ་ནམ་པར་སྤེ་
 ནས་བཞེད་པའོ’ །ཞེས་པའི་ཆོག་དེའི་གོང་དུ་འཁོད་འདུག
2. བསྟོས་ནས་ བཤ། གསེར།
3. སྟོང་པོ་མེད་པའི་རྩ་བ་ཞིན་ སྟེ། ཅོ།
4. བསྐྱུ་བ་པ་ གསེར། བཤ།

དཔའ་པོ་དུག་གི་ཚོ་ག་བདུ་པའི་ལེའུ།

གཞན་ཡང་ཡི་གེ་ཉི་ཤུ་གཉིས། 1

སྒྲིང་པོ་ཉི་སྒྲིང་ཡི་གེ་བདུན། 1

ཡ་ཚོགས་བརྒྱད་པའི་ས་བོན་དང་། 1

དེ་བཞིན་གྲག་སྒྲིད་¹བརྒྱ་གཉིས་ཀྱི། 9 1

མདོར་བསྡུས་པ་ལ་དགའ་བ་ནམས་ཀྱི་དོན་དུ་ཡང་དག་པར་མདོར་བསྡུས་པའི་
 རྒྱལ་ས་བསྟན་ཏེ། དེའི་ཕྱིར་ཞེས་པ་ནི་མདོར་བསྡུས་པ་ལ་དགའ་བའི་དོན་དུ་ཡང་
 དག་པར་མདོར་བསྡུས་པའི་རྒྱལ་ས་བསྟན་པའི་རྒྱ་མཚན་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །སྒྲིང་པོ་
 ཡི་གེ་ཉི་ཤུ་གཉིས། །ཉི་སྒྲིང་ཡི་གེ་བདུན་པ་ཡི། །དངོས་གྲུབ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རྒྱར་
 རྒྱར་པའི་ཕྱིར་རོ། །ཉི་བའི་སྒྲུབ་ནི་དམན་པའི་དོན་དོ། །ཡི་གེ་དམན་པ་ཡིན་ཀྱི།
 འབྲས་བུ་དམན་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །དེ་ཡང་གཉིས་ཁོ་ན་འོག་ནས་འཆད་པར་འགྱུར་
 ཞེས་པའི་དོན་དོ། །འོག་ནས་ཀྱང་རེ་ཞིག་མདོར་བསྡུས་པའི་གོ་ཆའི་སྟེན་གསུངས་ཏེ།
 ཡ་ཚོགས་བརྒྱད་པའི་ས་བོན་དང་། །ཞེས་བུ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། ཡ་ཚོགས་
 བརྒྱད་པའི་ས་བོན་ནི་དེའོ། །དང་ནི་ཉིད་ཀྱི་དོན་ནམས་བྱུང་པར་བྱེད་པའི་དོན་དོ། །
 གྲག་སྒྲིད་²ནི་དབྱངས་ཡིག་སྟེ། མ་ནིང་ཡི་གེ་སྤངས་པའོ། །དེ་བཞིན་ཞེས་པ་ནི་དོན་
 ཀྱི་བྱུང་པར་ལ་འཇུག་པའོ། །མཚན་ཉིད་ཀྱི་གསུམ་པའོ། 9 1

-
1. གྲག་བསྒྲིད་ བེ།
 2. གྲག་ཀྱིད་ གསེར། བེ།

ཡི་གེ་བར་མ་དོར་བྱས་ལ། 1

ཡན་ལག་དྲུག་ནི་དེ་རུ་གྲ། 1

དཔལ་པོ་དྲུག་དང་མཉམ་སྦྱར་བ། 1

ཡི་གེ་རེ་རེར་ཡང་དག་གནས། 3 1

ཡི་གེ་བར་མ་དོར་བྱས་ལ། །ཞེས་པ་ནི་དེའི་ས་བོན་གྱི་ཡི་གེ་བར་མ་དོར་བར་
བྱས་ནས་དཔལ་ལྟེ་རུ་གྲ་ཞེས་བཞེད་ཅེས་པ་ནི་¹ རྒྱུན་སྤྱོད་པའོ། །དེ་ཡང་ཡན་ལག་དྲུག་
ནི་ཡན་ལག་དང་ཉིང་ལག་དྲུག་གོ། །ཇི་ལྟར་ཉ་དྲ། ཉི་དྲ། ཉུ་དྲ། ཉེ་དྲ། ཉོ་དྲ། ཉི་དྲ།
ཞེས་བྱའོ། །ཡི་གེ་དང་ཡི་གེའི་བར་བྱས་པས་ནི་རིང་དུ་བྱས་ནས་དཔལ་ལྟེ་རུ་གྲ་ཞེས་
བཞེད་ཅེས་སྦྱར་རོ། །བྱས་པ་ནི་འདིར་དོན་གཟུང་བར་བྱའོ། །དྲ་ཡིས་དེ་དང་རིང་
དུ་བྱས་པའོ། །དེ་ནས་ཡང་དེ་དྲ་ཡིས་དྲ་²དང་རིང་དུ་བྱས་པའོ། །དེ་ནས་ཡང་དྲ་དྲ་
ལས་དེ་དང་རིང་དུ་བྱས་པའོ། །དེ་ནས་ཡང་དེ་དྲ་ཡིས་དྲ་³དང་རིང་དུ་བྱས་པའོ། །
དེ་ནས་ཡང་དེ་དྲ་ཡིས་དྲ་⁴དང་རིང་དུ་བྱས་པའོ། །ཞེས་པ་ནི་གཉི་ག་རིང་བར་གྱུར་པ་
འདི་རྣམས་ཀྱི་ནང་ནས་དྲུག་གཟུང་བར་བྱས་ཏེ། ཡི་གེ་དེ་རྣམས་ནི་ཇི་ལྟར་ཉ་³ ཉེ ཉུ
ཉེ ཉོ ཉི་ཞེས་བྱ་བ་དྲུག་པོ་དེ་ཡིན་ནོ། །དེ་རྣམས་གང་གི་ཆེ་དཔལ་ལྟེ་རུ་གྲ་གཉིས་སུ་
མེད་པ་དོན་རྒྱུར་པ་དྲུག་པོ་ཞེས་བྱ་བ་གསུངས་ཏེ། གོ་རིམ་དུ་⁴དཔལ་པོ་དྲུག་གི་

1. ཅེས་པ་ནི་དཔལ་ལྟེ་རུ་གྲར་བཞེད་པ་ཞེས་པ་ནི་ གསེར། བེ།

2. ཉི་དྲ་ཡིས་སྤྱོད་ བེ།

3. 'ཉ' གསེར་བྱིས་དང་པོ་ཀྱང་དུ་མེད།

4. གོ་རིམ་སུ་ སྤྱོད་ ཅོ།

སྒྲགས་ཡི་གེ་རེ་རེ་ལ་ཡང་དག་པར་གནས་པའོ། །དེའི་ཆོ་དཔལ་ཉེ་རུ་ཀའི་ཡན་ལག་
 དུག་ཉིད་དོ། །དཔལ་པོ་ཞེས་པ་ནི་དང་པོའི་མང་པོའི་ཆོག་ལྟེ་བའོ། །དེ་ལྟར་བྱུང་
 པ་ཇི་ལྟར་ཞེས་པ་ནི་མཉམ་སྦྱར་བྱ་ཞེས་པ་སྟེ། ཡང་དག་པར་དང་པོ་སྦྱོད་པ་ནི་
 མཉམ་སྦྱར་ཏེ། ཏ་ལ་སོགས་པའི་སྒྲན་དུ་ཨོ་ལ་སོགས་པའོ། །དཔལ་པོ་དུག་སྦྱིན་
 ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། ། ༡ །

ཨོ་ནམ་སྤྲུ་བྱོལ་ཁ། །

དྲི་དྲི་ཕུ་དང་ཡང་དག་ལྟ། །

སྒྲུབ་པོས་སྒྲིང་པོར་ཤེས་པར་བྱ། ། ༡ །

ཨོ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། ཨོ་ནམ་སྤྲུ་བྱོལ་ཁ་དྲི་དྲི་ཕུ་ཅེས་པ་ནི་དང་
 པོའི་མང་པོའི་ཆོག་སྦྱི་བའོ། །ཇི་ལྟར་ཡང་དག་པར་ལྟན་པ་དེ་བཞིན་དུ་ཤེས་པར་
 བྱའོ། །དཔལ་པོ་དུག་པོ་ནམས་ཀྱི། སྒྲིང་པོ་རུ་ནི་ཤེས་པར་བྱ། །ཞེས་པ་ནི། རིའི་
 སྒྲུ་ལས་གང་གིས་ཤེས་པར་བྱ་ཞེས་པ་ལ། སྒྲུབ་པོ་ཞེས་པ་གསུམ་པའི་དོན་ལས་དང་
 པོའོ། ། ༡ །

དང་པོ་སྒྲིང་ག་ཉིད་དུ་སྟེ། །

གཉིས་པ་སྦྱི་པོར་ཤེས་པར་བྱ། །

1. ཆོག་གི་ རྟེན་ ཅོ།

2. ཨོ་ནམ་སྤྲུ་ སྟེ། ཨོ་ནམ་སྤྲུ་ བེ།

3. རིའི་སྒྲུ་ནི་ལས་ རྟེན་ ཅོ། རིའི་སྒྲུ་ལས་ གསེར། རིའི་སྒྲུ་ལས་ བེ། གོང་དུ་ཆུ་དཔེ་ལྟར་བཞག་གོ།

4. སྒྲིང་ཁ་ བེ། སྒྲིང་ཀ་ སྟེ།

མཆོན་ཆའོ། །བླུག་པ་ཞེས་པ་ནི་དང་པོའི་དོན་གྱི་བླུག་པའོ། །སྒྲིང་ག་ལ་སོགས་པ་ནི་
བདུན་པའི་དང་པོའི་དོན་གྱི་དང་པོའི་གཉིས་པའོ། །མཐའ་དག་ཉིད་དུའང་སྒྲིང་པོའོ་
ཞེས་པ་ནི་སྒྲིང་པོར་རྗེས་སུ་འབྱུག་པའོ། ལ ༡ །

སྒྲུག་ས་དེ་ནམས་སམ་དེ་ནམས་ལས་གྲུབ་པའི་དཔའ་བོ་བླུག་གནས་ནམས་སུ་གོ་
ཆར་བྱ་སྟེ། བདུད་ནམས་ཀྱིས་མི་ཕྱེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེའི་བདུ་བ་དེ་རྫོད་པར་བྱེད་¹
པའི་ལེའུ་ནི་བླུག་པ་སྟེ། བླུག་པའི་ཆོག་ལས་རང་གི་དོན་དུ་མའི་རྒྱུན་བྱས་པའོ་ཞེས་
བྱ་བ་ནི་དཔལ་འཁོར་ལོ་སྒྲོམ་པའི་དཀའ་འགྲེལ་ལས་ལེའུ་བླུག་པའོ། ༥ །



1. བརྫོད་པར་བྱེད་ གསེར། བེ།

ཐུགས་བརྟུ་བའི་ཆོ་གའི་ལེན།

དེ་ནས་དབྱངས་ཡིག་བརྟུ་གསུམ་ཉིད། |

ཡི་གེ་གཉིས་པ་དག་དང་སྟུར། |

དབྱངས་ཡིག་བརྟུ་གཅིག་ཡང་དག་ལྟར། |

ཡི་གེ་དུག་པར་¹བརྟུན་པར་བྱ། ༡ |

སྟོན་དུ་ཀང་པ་བརྟུ་གྱི་ཐུགས་བརྟུ་བར་བྱས་ནས་ད་ནི་ཡི་གེ་དེ་རྣམས་དབྱངས་
 གྱི་དང་སྟུར་བ་ཉིད་དུ་རབ་དུ་ཚོམ་སྟེ། དེ་ནས་དབྱངས་ཡིག་ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་
 གསུངས་སོ། །དེ་ལ་ཉིད་ནི་ཡི་གེ་བརྟུ་བ་ངེས་པར་གཟུང་སྟེ། དམིགས་ཀྱིས་དགར་
 བའི་སྒྲིའི་དུག་པའོ། །བརྟུ་གསུམ་པ་ནི་ཨོཾ²། །དང་ནི་དོན་གྱི་བྱད་པར་ཉེ³། ཉི་
 མའི་འོད་ཀྱིས་འོད་ཟེར་སྟོང་ཕྲག་འབར་བ་བརྟུ་དབྱལ་བ་⁴དང་སྟོང་ག་རྣམས་སུ་
 བསམས་ཉེ་དབང་དུ་བྱེད་པ་སྟེ། ཉིད་ཀྱིས་འདིའི་དོན་ངེས་པའོ། །ཡི་གེ་གཉིས་པ་
 སྟུར་བར་བྱ། །ཞེས་པ་ནི་ཡི་གེ་གཉིས་པ་ནི་ན་⁵ལས་གཞན་མ་སྟེ། དེ་དང་ཨོ་སྟུར་
 བ་ནི་མཁས་པས་སོ། །དེ་ནས་མའི་⁶གཟུགས་སུ་གྱུར་པའོ། །དེ་ལྟར་བརྟུ་ལ་

1. དུག་པ་ བཤ། དུག་པས་ རྟེ།

2. ཨོཾ་ རྟེ། ཅོ།

3. བྱད་པར་སྟེ། བཤ། གསེར།

4. འབར་བ་སྒྱུ་བོ་དབྱལ་བ་ རྟེ། དཔེ།

5. གཉིས་པ་ན་ནི་ རྟེ། ཅོ།

6. དེ་ནས་མའི་ བོད་འགྱུར་པར་མ། གོང་དུ་རྟེ། ལྟར་བཞག་པ་ཡིན།

སོགས་པ་ཉིད་དོ། །དང་པོ་ནི་ན་ཉིད་དོ། །དབྱངས་ཡིག་བརྒྱ་གཅིག་པ་ནི་ཨོཾ་། །
 དེ་ཡང་དེ་དང་འདི་ཡང་དག་པར་ལྷན་པ་དེ་ནི་དེ་བཞིན་ནོ། །དེའི་ཕྱིར་དུག་པའི་ཡི་
 གེ་ཏ་ལ་བརྒྱན་པའོ། །དེ་ནས་དེའི་གཟུགས་སུ་འགྱུར་རོ། ༡ །

དབྱངས་ཀྱི་བཞི་པ་ཉིད་ཀྱང་ནི། །

ཡི་གེ་བདུན་པ་ཉིད་དང་སྒྱུར། །

དབྱངས་ཡིག་བརྒྱ་གཅིག་པ་ཉིད་ནི། །

མཁས་པས་ཡི་གེ་བརྒྱད་དང་སྒྱུར། ༢ །

དབྱངས་ཡིག་ཉིད་ཀྱི་བཞི་པ་ནི། །ཞེས་པ་ནི་ཨོཾ་། ཉིད་ནི་ཐུང་དུ་དགག་པའི་
 དོན་ཏོ། །དེ་ཡིས་མཆོན་པའི་བདུན་པའི་ཡི་གེ་ནི་བ་རུ་མཁས་པས་སོ། །དེ་ཡིས་
 བྱེའི་གཟུགས་སུ་འགྱུར་རོ། །ཡི་གེ་བརྒྱད་པ་ནི་རའོ། །དབྱངས་ཡིག་བརྒྱ་གཅིག་པ་
 དང་ཡང་དག་པར་ལྷན་པ་ནི་མཁས་པས་སོ། །དེས་རེའི་གཟུགས་སུ་འགྱུར་རོ། །
 མཁས་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཐམས་ཅད་ལ་སྒྱུར་རོ། ༣ །

དབྱངས་ཡིག་གཉིས་པ་དང་ལྷན་པར། །

ཡི་གེ་དགུ་པ་བརྒྱན་པར་བྱ། །

1. དང་པོ་ནི་ན་ རྟེན། ཚི།

2. ཨོཾ་ བོད་འགྱུར་པར་མ། གོང་དུ་རྒྱ་དཔེ་ལྷན་བཞག་ཡོད།

3. དེའི་ གསེར། བེ།

4. དེ་ཡིས་བྱེའི་ གསེར། བེ།

5. ཡི་གེ་དགུ་པས་ རྟེན། རྟེ།

དབྱངས་ཀྱི་ཡི་གེ་གཉིས་པ་ཉིད། 1

ཡི་གེ་བརྒྱ་གཉིས་པ་དང་སྟུར། 3 1

དེ་ནས་ཡི་གེ་དགུ་པ་གཟུང་། །ཞེས་པ་ནི་གོ། །དེ་ནས་ཞེས་པ་ནི་¹བསྟུས་པ་
ལས་དང་པོ་ལས་དབྱངས་ཡིག་གཉིས་པ་ནི་ཨུ་རིང་པོ་འོ། །དེ་གྲུའི་གཟུགས་སུ་
འགྱུར་རོ། །ཡི་གེ་བརྒྱ་གཉིས་པ་ནི་དེ་འོ། །དབྱངས་²གཉིས་པ་དང་ལྡན་པར་ནི་³
མཁས་པས་སོ། །དེས་དྲུའི་གཟུགས་སུ་འགྱུར་རོ། 3 1

དབྱངས་ཡིག་གཉིས་པར་ལྡན་པ་ནི། 1

ཡི་གེ་ནི་ཤུ་གཅིག་པ་⁴གཟུང་། 1

མཁས་པས་ཡི་གེ་བརྒྱ་བཞི་པ། 1

ཡི་གེ་ནི་ཤུ་པ་དང་སྟུར། 5 1

དབྱངས་ཀྱི་གསུམ་པ་ཉིད་དག་ནི། 1

ཡི་གེ་བཙུ་ལྔ་པ་⁵དང་སྟུར། 1

དབྱངས་ཡིག་བཙུ་ལྔར་⁶ཡང་དག་ལྡན། 1

ཡི་གེ་བརྒྱ་དྲུག་པ་མངོས་བྱ། 4 1

-
1. ཤེས་པ་ནི་ གསེར། བེ།
 2. དབྱངས་ཡིག་ གསེར། བེ།
 3. ལྡན་པར་མི་ རྩེ། ཅོ།
 4. ཉི་ཤུ་གཅིག་པར་ ལྷ། ལྷ།
 5. བརྒྱ་ལྔ་ རྩེ། བེ།
 6. བརྒྱ་ལྔར་ རྩེ། བེ།

ཡི་གེ་ནི་ཤུ་གཅིག་པ་གཟུང་། །ཞེས་པ་ནི་ནི་ཤུ་ཙུ་གཅིག་པའི་ཡི་གེ་པའོ། །
 དབྱངས་ཡིག་གཉིས་དང་ཡང་དག་ལྡན་ནི་གཟུང་བ་དེ་དང་ལྡན་པའོ། །ཡི་གེ་བརྒྱ་
 བཞི་པ་ལ་ཡིན་པར་མཁས་པས་སོ། །དེ་ནས་སྒྲུ་པའི་གཟུགས་སུ་འགྱུར་རོ། །ཡི་གེ་
 ཉི་ཤུ་པ་ཞེས་པ་ནི་ནི་ཤུ་པའི་ཡི་གེ་ནི་ནའོ། །དེའི་འོག་དང་ཡང་དག་ལྡན་པ་ནི་ཡི་གེ་
 བཙུ་ལ་པ་གའོ། །དབྱངས་ཡིག་རྣམས་ཀྱི་གསུམ་པ་ནི། །དབྱངས་ཡི་འོ། །དེ་ཡིས་
 མཆོན་པར་མཁས་པས་སོ། །དེས་སྒྲུ་པའི་གཟུགས་སུ་འགྱུར་རོ། །ནི་དེ་ནི་རིང་པོ་དགག་
 པའི་དོན་དོ། །དབྱངས་ཡིག་བཙུ་ལ་པ་ནི་ཐིག་ལའོ། །དེ་ཡིས་ཡི་གེ་བརྒྱ་ཤུག་པ་ས་
 ལ་བརྒྱན་པར་མཁས་པས་སོ། །དེས་ནས་སྒྲུ་པའི་གཟུགས་སུ་འགྱུར་རོ། ། ༤-༥ །

དབྱངས་ཡིག་གསུམ་པ་དང་ལྡན་པའི་⁴། །

ཡི་གེ་བརྒྱ་བདུན་པ་རུ་འདོད། །

དབྱངས་ཀྱི་གཉིས་པ་ནི་དེ་དག་ནི། །

ཡི་གེ་བཙུ་ལ་པ་རུ་སྒྱུར། ། ༦ །

དབྱངས་ཡིག་གི་ནི་གཉིས་པ་ནི་དེ། །

ཡི་གེ་ནི་ཤུ་གཅིག་པར་སྒྱུར། །

1. ཡི་གེ་ནི་ནི་འོ་ ཙོ།

2. དེས་གཞི་འི་ གསེར། བེ།

3. དེས་ནས་མ་ བེ། དེས་ན་བས་མ་ གསེར། དེས་ན་ས་མ་ རྒྱ། ཙོ།

4. གསུམ་དང་ལྡན་པ་ཡི་ རྒྱ། རྒྱ།

5. བརྒྱ་བརྒྱད་པ་ རྒྱ། བེ། རྒྱ། བཙུ་ལ་ རྒྱ།

དབྱངས་ཡིག་ལྔ་པ་ཉིད་དང་ནི། 1

ཡི་གེ་ནི་ཤུ་གསུམ་པར་སྦྱར། 2

ཡི་གེ་བརྒྱ་བདུན་པ་ནའོ། 1 དབྱངས་ཡིག་གསུམ་པ་དང་ཡང་དག་པར་མཁས་
པས་སོ། 2 མཆོག་ཏུ་ཕན་ཞེས་པས་ནི་ཐུ་མ་དང་སངས་ཀྱས་ལ་སོགས་པ་ལ་གཞོན་
པ་བྱེད་པ་དེ་ཡིས་སྒྲོན་པར་བྱེད་པའོ། 3 ཇི་ལྟར་རྒྱུད་གི་དཀྱིལ་འཁོར་ལ་ཞོན་པའི་དུ་
བའི་ཕུང་པོ་ལྟ་བུ་བསྐྱབ་བྱའི་སྒྲིང་ག་དང་མགྲིན་པ་དང་། རྩེ་བ་དང་། ཀླང་པ་གཉིས་
ལ་བསྒྲམས་ན་དེ་སྒྲོན་པར་འགྱུར་ཏེ། ཞིའི་ཡི་གེ་རྩེ་དེ་ནས་གཟུགས་སུ་འགྱུར་རོ། 4
ཡི་གེ་བཙུང་བརྒྱད་པ་ཡང་རྩའོ། 5 དབྱངས་གཉིས་པ་དང་ཡང་དག་པར་ལྡན་པ་མཁས་
པས་སོ། 6 དབྱངས་ཡིག་ཨ་དང་ཡང་དག་ལྡན་ཞེས་པ་ནི་ནི་ཤུ་ཙུ་གཅིག་པ་སྟེ། ཉི་
ཤུ་གཅིག་པ་ནི་ཏ་མཁས་པས་ཤེས་པར་བྱའོ། 7 མ་མའི་ལྔ་པ་ནི་ཨའོ། 8 དེ་ཡིས་
ཡང་དག་པར་ལྡན་པ་ནི་ཡི་གེ་ནི་ཤུ་ཙུ་གསུམ་པ་ནི་ཀ་མཁས་པས་སོ། 9-10

དབྱངས་ཡིག་བརྒྱ་གསུམ་པ་ཉིད་ནི།

ཡི་གེ་ནི་ཤུ་བཞི་པར་སྦྱར། 1

1. བརྒྱ་བདུན་པའོ་ གསེར།
2. མཆོག་ཏུ་པ་ བོད་འགྱུར་པར་མ། ཞོང་དུ་ཐུ་དཔེ་ལྟར་བཞག་པ་ཡིན།
3. 'དབྱངས་གཉིས་པ་དང་ཡང་དག་པར་ལྡན་པ་མཁས་པས་སོ་' ཙུ་གཉིས་སུ་མེད།
4. ཉི་ཤུ་ཙུ་གཅིག་ ཙུ་
5. མཁས་པས་ གསེར།
6. ཉི་ཤུ་བཞི་པ་ སྟེ།

དང་པོའི་དང་པོ་སྒྲངས་ནས་ནི། 1 |

ཡི་གེ་ནི་ཤུ་ལྔ་པར་སྒྱུར། ༡ |

དབྱངས་ཡིག་བརྒྱ་གསུམ་པ་ནི་དེ་ནི་བརྒྱ་གསུམ་པའི་ཨོ་སྒྲངས་ཏེ། དེས་ནི་ཤུ་
བཞི་བའི་ཏ་དང་ཡང་དག་པར་སྒྱུར་བ་ནི་མཁས་པས་སོ། །དང་པོའི་དང་པོས་ནི་ཀ་
མཁས་པས་སོ། །དང་གིས་ནི་མ་བརྗོད་པ་བསྐྱུས་པའོ། །ནི་མའི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་
འོད་ལྷ་བུའི་ཐིག་ལེ་དང་ཡང་དག་པར་ལྷན་པ་བསྐྱུས་བུའི་སྒྲིང་ག་དང་ལྷེ་བ་དང་སྒྱི་
པོར་དེ་བཞོད་ནས་དེས་དབང་དུ་བྱེད་དོ་ཞེས་པའོ། །ནི་དེ་ནི་བསྐྱུས་པའི་དོན་ངེས་
པར་གཟུང་བའོ། །རི་ལྷ་བུར་གྱུར་པས་མཁས་པས་སོ་ཞེས་པ་ལ། ཡི་གེ་ནི་ཤུ་ཙ་ལྔ་
སྒྱུར། །ཞེས་གསུངས་ཏེ། ནི་ཤུ་ཙ་ལྔ་ནི་ནི་ཤུ་ལྔ་པའི་ཡི་གེ་ཏའོ། །དེས་གོང་དུ་སྒྱུར་
བའོ། །དེས་ན་ཁྱའི་གཟུགས་སུ་འགྱུར་རོ། ༡ |

དབྱངས་ཡིག་གཉིས་པ་དང་ལྷན་པར་པ། 4 |

ཡི་གེ་ནི་ཤུ་ཙ་ལྔ་པར་སྒྱུར། 1 |

ནི་ཤུ་བརྒྱད་པ་ནི་དེ་དག་ནི། 1 |

དབྱངས་ཡིག་བཙུང་པ་དང་སྒྱུར། ༧ |

1. རྩེ་ཚན་དང་པོ་སྒྲངས་ནས་ནི། བོད་འགྱུར་པར་མ། གོང་དུ་སྒྱུ་དཔེར་གསལ་བ་ལྷན་བཞག་པ་
ཡིན།
2. 'དང་' ཅི་ནིར་མེད།
3. འོད་ལྷ་བུའི་དེ་ལྷ་བུའི་ རྩེ། ཅི།
4. ལྷན་པ་ ལྷ། པ།
5. གྱུར་ ལྷ།

གསུམ་པ་ཡི་ནི་དང་པོ་ནི། ཞེས་པ་ནི་ཏ་མཁས་པས་སོ། །དབང་པོའི་གཞུ་ལྟ་
བུའི་འོད་ཀྱི་ཏ་བསྐྱབ་བུའི་དཔལ་བ་དང་སྤྱིང་ག་དང་མགྱུན་པར་བཞོད་ནས་དབང་བྱ་
བྱེད་དོ། ཁྱིའི་སྒྲུའི་དོན་དོ། །དབང་ས་ཡིག་གཉིས་པ་ཡང་དག་ལྡན། ཞེས་པ་ནི་ཏ་
ཡིག་ལ་དབང་ས་ཡིག་གཉིས་པ་ཡང་དག་པར་ལྡན་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡི་གེ་ནི་བྱ་ཙུ་
བྱག་པར་གྱུར་པའོ། །ཏྲའི་གཟུགས་ཀྱི་ཞེས་པའི་དོན་དོ། །གསུམ་པ་ཡི་ནི་དང་པོ་ནི། །
དེ་ནི་གཉིས་པ་དག་དང་ལྡན། ཞེས་པའི་གཞུང་གཞན་ཡང་ཡོད་དོ། །གཉིས་དང་
ལྡན་པ་ནི་དབང་ས་ཀྱི་གཉིས་པ་དེ་དང་ལྡན་པའོ། །ཡང་དག་པར་སྒྱུར་བའི་ཏྲའི་
གཟུགས་སུ་འགྱུར་རོ། །ནི་བྱ་ཙུ་བརྒྱད་ཉིད་དང་ནི། ཞེས་པ་ནི་ད་³མཁས་པས་སོ། །
དང་གིས་ནི་མ་བཟོད་⁴པའི་དོན་བསྐྱབ་བུ་སྤྱི་ །ད་སྤྱིན་⁵ལྟ་བུའི་འོད་བསྐྱབ་བུའི་སྤྱི་
པོར་བསམས་ན། །དེ་རངས་པར་བྱེད་དོ། །ནི་དེ་ནི་རེས་པར་གཟུང་བའོ། །དབང་ས་
ཡིག་བཙུ་ལྟ་པ་ནི་ཐིག་ལའོ། །དེས་མཛེས་པ་ནི་མཁས་པས་སོ། །དེས་ནི་དྲི་བྱ་
གཟུགས་སུ་འགྱུར་རོ། ། །

གསུམ་པའི་དང་པོ་ཡང་དག་ལྡན། །

འོག་མའི་ཆ་ནི་མེ་དང་བཅས། །

1. ཏྲའི་གཟུགས་ བོད་འགྱུར་པར་མ། གོང་དུ་ཐུ་དཔེ་ལྟར་བཞག་ཡོད།
2. ཏྲའི་གཟུགས་སུ་གྱུར་རོ་ ཙུ་ ཏྲའི་གཟུགས་སུ་འགྱུར་རོ་ རྟེ། བེ། གསེར།
3. ཞེས་པ་ནི་དེ་ བོད་འགྱུར་པར་མ། གོང་དུ་ཐུ་དཔེ་ལྟར་བཞག་པ་ཡིན།
4. དང་གིས་ནི་བཟོད་ རྟེ། ཙུ་
5. དེ་སྤྱིན་ བོད་འགྱུར་པར་མ། གོང་དུ་ཐུ་དཔེ་བཞག་བཞོད་པའོ།

དེ་བཞིན་དབྱངས་ཡིག་གཉིས་པར་སྒྱུར། །

ཡི་གེ་ཉི་ཤུ་ཅུ་དགུ་པའོ། ༡༠ །

གསུམ་པའི་དང་པོ་ཏེ་ཡིག་གི་འོག་གི་ཆ་ལ་ཡང་དག་པར་སྒྱུར་ཏེ། དེའི་འོག་ཏུ་
མེའི་ས་བོན་ར་དང་ཡང་དག་པར་ཐུན་པའོ། །དེ་ཙམ་ཕྱི་ཉིད་ཀྱི་སྒྲུབ་ཞི་དབྱངས་ཡིག་
གཉིས་པ་དང་སྒྱུར་ཏེ། ཡི་གེ་ཉི་ཤུ་ཅུ་དགུ་པར་འགྱུར་རོ། །དེས་ན་ལྷའི་གཟུགས་
སྤྱུ་འགྱུར་རོ། །དང་གིས་ཞི་ཡང་དག་པར་སྒྱུར་བ་²བསྒྱུ་བའོ། ༡༠ །

ཡི་གེ་སྒྲུམ་རྩ་ཅུ་གཅིག་པ། །

དབྱངས་ཡིག་གཉིས་པ་དག་དང་སྒྱུར། །

ཡི་གེ་སྒྲུམ་རྩ་ཅུ་གཉིས་པ། །

དབྱངས་ཡིག་བརྒྱ་གསུམ་པ་དང་སྒྱུར། ༡༡ །

ཡི་གེ་སྒྲུམ་རྩ་ཅུ་གཅིག་པ། །ཞེས་པ་ནི་སྒྲུམ་རྩ་ཅུ་གཅིག་པ་ར་སྟེ་³། དབྱངས་
ཡིག་གཉིས་པ་དང་སྒྱུར་བའོ། །དེས་རྒྱའི་⁴གཟུགས་སྤྱུ་འགྱུར་བའོ། །ཡི་གེ་སྒྲུམ་རྩ་
གཉིས་པ་ལའོ། །དབྱངས་ཡིག་བརྒྱ་གསུམ་པ་དང་སྒྱུར་ན་དེས་ལྷའི་⁵གཟུགས་སྤྱུ་
འགྱུར་རོ། ༡༡ །

1. ལྷའི་ བཤེས་ ལྷའི་ རྟེན་ ཅོ། གསེར།

2. སྒྱུར་བ་ བཤེས།

3. སྒྲུམ་རྩ་ཅུ་གཅིག་པར་ཏེ་ བོད་འགྱུར་པར་མ། ཞོང་དུ་རྩ་དཔེ་བཞིན་བཞོད་ཡོད།

4. དེས་རའི་ བོད་འགྱུར་པར་མ། ཞོང་གི་དེ་རྩ་དཔེ་བཞིན་བཞག་པ་ཡིན།

5. བོད་འགྱུར་འགྲེལ་པར་དབྱངས་ཡིག་གཉིས་པ་དང་སྒྱུར་ན་དེས་ལྷའི་ཞེས་གསལ་གྱང་ཞོང་དེར་
ཅ་བ་དང་མཚུངས་པར་བཞོད་ཡོད།

ཡི་གེ་སུམ་ཙུ་ཙུ་གསུམ་པ། 1

ཉི་མར་ཡང་དག་ལྡན་པར་བྱ། 1

དབྱངས་ཡིག་བཞི་པ་ཉིད་དང་ནི། 1

ཡི་གེ་སུམ་ཙུ་བཞིར་ལྡན་པ། ༡༡ 1

སྒྲུང་བྱེད་དང་ནི་ཡང་དག་ལྡན། ཡི་གེ་སུམ་ཙུ་གསུམ་པར་འགྱུར། ཞེས་པ་
ནི་སྒྲུང་བྱེད་ནི་རའོ། ཡི་གེ་སུམ་ཙུ་ཙུ་གསུམ་པ་ནི་གའོ། ཡང་དག་པར་སྒྱུར་བས་
ནི་གྲུའི་གཟུགས་སུ་འགྱུར་རོ། མ་མོ་བཞི་པ་ཉིད་ནི་ཨྱའོ། ཉིད་ཀྱིས་ནི་བྱང་ངུ་
དགག་པའོ། སུམ་ཙུ་ཙུ་བཞི་ཞེས་པ་ནི། སུམ་ཙུ་ཙུ་བཞི་པའི་ཡི་གེ་ལྟའོ། དེས་
ལྟའི་གཟུགས་སུ་འགྱུར་རོ། ༡༡ 1

འདོད་པའི་དོན་ཀྱན་སྒྱུབ་བྱེད་ཡིན། 1

དབྱངས་ཡིག་ལྡ་པ་ཉིད་དག་ནི། 1

སུམ་ཙུ་བདུན་པར་ཡང་དག་ལྡན། 1

མཁའ་འགྲོ་མ་ནམས་སྒྱུབ་བྱེད་ཡིན། ༡༢ 1

མ་མོ་ལྡ་པ་ཉིད་ནི་ཨྱའོ། ཉིད་ཀྱིས་ནི་རིང་པོ་དགག་པའོ། སུམ་ཙུ་ཙུ་བདུན་
ཞེས་པ་ནི། ཡི་གེ་སུམ་ཙུ་ཙུ་བདུན་མའོ། དེ་དང་ཡང་དག་པར་སྒྱུར་བ་ལྟའི་
གཟུགས་སུ་འགྱུར་རོ། མཁའ་འགྲོ་མ་ནམས་སྒྱུབ་བྱེད་དན། ཞེས་པ་ནི་མཁའ་
འགྲོ་མ་ནམས་ཀྱི་སྒྱུབ་བྱེད་ནི་སྤགས་མ་ལུས་པའོ། ཡང་ན་སུམ་ཙུ་ཙུ་བདུན་པའི་མ་

འབའ་ཞིག་ཡང་དག་པར་ཉི་མ་ལྟར་སྒྲུབ་བ་བསྐྱབ་བྱའི་སྤྱོ་པོར་བསམས་ན་གཞིད་
 སྤྱོན་ལ་སོགས་པ་དབང་དུ་འགྱུར་རོ། །མཁའ་འགོ་མ་རྣམས་ཀྱི་སྤྱབ་བྱེད་དན་ནི་
 མཁའ་འགོ་མ་རྣམས་འདོད་པའོ། ༡༩ །

སུམ་ཙུ་བརྒྱད་པ་འདི་དག་ནི། །

དབྱངས་ཡིག་གཉིས་པ་དང་སྒྱུར་བ། །

ལྟ་རྣམས་ཐམས་ཅད་སྤྱབ་པ་ནི། །

འདི་ཉིད་ཡིན་པར་གྲེ་ཚོམ་མེད། ༡༩ །

སུམ་ཙུ་ཙ་བརྒྱད་ཉིད་དག་ནི། །ཞེས་པ་ནི་སུམ་ཙུ་བརྒྱད་པའི་ཡི་གེ་ཁོའོ། །
 དེ་དབྱངས་ཡིག་གཉིས་པ་དང་སྒྱུར་བས་ཁྲུའི་²གཟུགས་སུ་འགྱུར་རོ། །འདིར་ཡང་
 ཐམས་ཅད་དུ་འགྱུར་རོ་ཞེས་བྱ་བ་དང་པོའི་བྱ་བར་སྒྱུར་བའམ། མཁས་པས་ཤེས་
 པ་³གཉིས་པའི་བྱ་བར་སྒྱུར་རོ། །ཡི་གེ་ཁ་ཡིས་སྤྱབ་པར་བྱེད་པར་འགྱུར་ཞེས་པའམ།
 མཁས་པས་ཤེས་པར་བྱ་ཞེས་བྱའོ། །དེ་ལྟར་གཞན་ལ་ཡང་རོ། །ཁ་དབང་པོ་སྤྱོད་
 པ་⁴ལྟ་བུའི་འོད་བསྐྱབ་བྱའི་སྤྱོ་པོར་བསམས་ན་ལྟ་ལ་སོགས་པ་དབང་དུ་འགྱུར་རོ། །

-
1. སུམ་ཙུ་བརྒྱད་པ་ བཤེས་པ།
 2. སྒྱུར་བས་ཁྲུའི་ བོད་དཔེ། མོང་དུ་བྱེད་པེ་ལྟར་བཞག་ཡོད།
 3. ཞེས་པ་ བཤེས་པ། བཤེས་པ།
 4. ལྟ་ལ་ ལྟ།
 5. སྤྱབ་བྱའི་ བཤེས་པ།



འོག་གི་ཆར་ནི་སྐྱབ་པ་པོས།

བཞི་བརྒྱ་གསུམ་པ་ཉིད་དག་ནི། ༡༥ །

བཞི་བརྒྱ་ཙུ་གཉིས་ནི་ཞེས་པ་ནི་བཞི་བརྒྱ་ཙུ་གཉིས་པའི་ཡི་གེ་སའོ། ཉིད་ཀྱི་
 གྲས་ནི་རྩུབ་བརྒྱན་པའི་དོན་ཉི་ཤུ་ག་ཟུང་པའོ། །མེ་ནི་རའོ། །མིའི་གྲས་ནི་ངེས་
 པར་ག་ཟུང་བ་དེ། དེ་ཡང་འདིའི་འོག་གི་ཆ་སྟེ་འོག་གི་ཆ་གས་པ་དེ་དང་ལྷན་པས་
 བཞི་བརྒྱ་ཙུ་གཉིས་པའི་ཡི་གེ་འོ། །དེས་སྒྲའི་ག་ཟུགས་སུ་འགྱུར་རོ། །དེ་ཡང་སྐྱབ་པ་
 པོས་ཤེས་པའི་⁴བྱ་བ་དོན་གས་པར་བྱའོ། །བཞི་བརྒྱ་ཙུ་གསུམ་པ་ཉིད་དང་། །ཞེས་བྱ་
 བ་ནི་ཡི་གེ་བཞི་བརྒྱ་ཙུ་གསུམ་པ་རྩའོ། ༡༥ །

དབྱངས་ཡིག་ལྔ་པ་ཉིད་དང་སྟུང་།

ཡི་གེ་བཞི་བརྒྱ་ལྔ་པ་ནི།

1. ལྷ་པ་པོ་ ལྷ། ལྷ།
2. ལྷ་པ་ ལྷ། ལྷ།
3. ལྷ་པོ་ལྷ་པོ་ལྷ་པོ་ ལྷ། ལྷ།
4. ལྷ་པ་པོ་ལྷ་པོ་ལྷ་པོ་ལྷ་པོ་ ལྷ། ལྷ། ལྷ། ལྷ།

དབྱངས་ཀྱི་ཡི་གེ་གཉིས་པར་སྒྱུར། །

དབྱངས་ཡིག་ལྡ་པ་ཉིད་དག་ཀྱང་། ༡༥ །

དེ་དབྱངས་ཡིག་ལྡ་པ་ཉིད་དང་སྒྱུར་བ་དེས་ན་སྒྲིའི་གཟུགས་སྤྱ་འགྱུར་རོ། །
 ཉིད་ཀྱིས་ནི་རིང་པོ་དགག་པའོ། །ཡི་གེ་བཞི་བརྩ་ལྡ་པ་ཞེས་པ་ནི་བཞི་བརྩ་ཙ་ལྡ་
 པའི་ཡི་གེ་སྟོ། ཉིད་ཀྱི་སྒྱུས་ནི་སྒྲར་བརྟན་པའི་བསྐྱུས་པའི་དོན་དུ་ངེས་པར་གཟུང་
 བའོ། །དབྱངས་ཡིག་གཉིས་པ་དང་སྒྱུར་བས་སྒྲིའི་གཟུགས་སྤྱ་འགྱུར་རོ། །དབྱངས་
 ཡིག་ལྡ་པ་ཉིད་དག་དང་། ཞེས་པ་ནི་སྟོན་བཞིན་ནོ། ༡༥ །

བཞི་བརྩ་ཙ་དུག་པ་ལྡན་པ། །

དཔའ་བོ་ཐམས་ཅད་རབ་མཆོད་ཡིན། །

བཞི་བརྩ་ཙ་བདུན་པ་ཉིད་ནི། །

དབྱངས་ཡིག་གཉིས་པ་དང་སྒྱུར་བ། ༡༦ །

བཞི་བརྩ་དུག་པ་ཡང་དག་ལྡན། ཞེས་པ་ནི་ཡི་གེ་བཞི་བརྩ་དུག་པ་ས་དང་ཨུ་
 ཡང་དག་པར་སྒྱུར་བས་སྒྲིའི་གཟུགས་སྤྱ་འགྱུར་རོ། །བཞི་བརྩ་ཙ་བདུན་པ་ཞེས་པ་ནི་
 ཡི་གེ་བཞི་བརྩ་ཙ་བདུན་པ་ནི་རའོ། ཉིད་ཀྱི་སྒྱུས་སྒྲར་བརྟན་པའོ། །དོན་བསྐྱུས་པས་
 ངེས་པར་གཟུང་བའོ། །དབྱངས་ཡིག་གཉིས་པ་དང་སྒྱུར་བས་སྒྲིའི་གཟུགས་སྤྱ་
 འགྱུར་རོ། ༡༦ །

1. 'བཞི་པ་ནི' བོད་འགྱུར་པར་མ་ན་མས་སྤྱ་ལྡན་པ་འཁོད་འདུག
2. སྒྲིའི་གཟུགས་ སྟོ། ཙ་
3. རབ་མཆོད་ བ།

འདི་ནི་དོ་རྩེ་སེམས་དཔལ་མཆོག་ 1

དེ་བཞིན་ལྷ་བརྩུ་ཙ་གཅིག་པ། 1

དབྱངས་ཡིག་ལྷ་པ་ཉིད་དག་གིས། 1

མངོས་པ་མཆོག་ནི་ཡིན་པར་འདོད། 14 1

ལྷ་བརྩུ་ཙ་གཉིས་པ་ཉིད་ནི། 1

དབྱངས་ཡིག་གཉིས་པ་དང་སྐྱར་བ། 1

ལྷ་ནམས་ཐམས་ཅད་སྐྱབ་བྱེད་ནི། 1

འདི་ཉིད་ཡིན་པར་ཐེ་ཚོམ་མེད། 15 1

དོ་རྩེ་སེམས་དཔལ་མཆོག་ཏུ་ཕན། །ཞེས་པ་ནི་རའི་ཡི་གེ་དེ་ཉིད་དོ་རྩེ་སེམས་
དཔལ་འོ། །དེ་བཞིན་ལྷ་བརྩུ་ཙ་གཅིག་པ། །ཞེས་པ་ནི་ལྷ་བརྩུ་ཙ་གཅིག་པ་འོ། །དེ་
བཞིན་ཉིད་ཅེས་པ་ནི་སྐྱར་བསྐྱར་པའི་དོན་ཉིད་འདིས་བསྐྱར་པ་འོ། །ལྷ་པ་ཉིད་དང་
སྐྱར་ཞེས་པ་ནི་དང་གི་སྐྱ་ནི་ཁྱད་པར་ཅན་ཏེ། དབང་པོའི་གཞུ་ལྷ་བྱེད་འོད་བསྐྱབ་
བྱེད་མགྱིན་པར་ལྷ་བསམས་ན་དེས་དབང་དུ་འགྱུར་རོ། །དེས་ཀྱང་བྱེད་གཟུགས་
སྐྱ་འགྱུར་རོ། །མངོས་པའི་མཆོག་ནི་ཡིན་པར་འདོད། །ཅེས་པ་དང་ལྷ་བརྩུ་ཙ་
གཉིས་པ་ཉིད་ནི་ལྷ་བརྩུ་ཙ་གཉིས་པའི་ཡི་གེ་པའོ། །ཉིད་གྱིས་ནི་མ་བཟོད་

1. ཐེ་ཚོམ་ ལྷ།

2. བསྐྱབ་བྱེད་མགྱིན་པར་བསམས་ན་ རྟེན། ཅོ། གསེར། སྐྱབ་བྱེད་མགྱིན་པར་བསམས་ན་ བེ།

3. 'སྐྱ' ཅོ་ཞེས་མེད།

4. ཉིད་ན་ རྟེན། ཅོ།

པའི་དོན་བསྐྱུས་པ་ཉིད་དུ་ངེས་པར་བཟུང་བ་སྟེ། རྒྱུ་གི་དགྲིལ་འཁོར་གྱིས་བསྐྱོད་
བཞིན་པའི་ཁྱེ་འཛིན་པ་¹ ལ་ཞོན་པ་ལ་དུ་བའི་མདོག་ཏུ་ཅན་བསྐྱབ་བྱའི་མགྱིན་པ་
དང་སྟོང་ག་དང་ཤིང་པ་དང་རྒྱུ་པ་གཉིས་ཀྱི་མཐེལ་དུ་བསམས་ན་དེས་ཕུལ་ཏེ་པ་
ཡིག་སྟོད་པར་²འགྱུར་རོ། །དབྱངས་ཡིག་གཉིས་པ་སྐྱར་བས་ཕྱའི་གཟུགས་³སྐྱ་
འགྱུར་རོ། ༡༩-༢༠ །

དེ་བཞིན་ལྷ་བརྩ་ཙ་གསུམ་པ། །

དབྱངས་ཡིག་བརྩ་གསུམ་པ་དང་སྐྱར། །

སྟེ་ཆན་བཞི་པའི་གསུམ་པ་བདུ། །

ལྷ་བརྩ་ཙ་བཞི་པ་དང་སྐྱར་⁴། ༢༠ །

ལྷ་བརྩ་ཙ་གསུམ་པ་ཞེས་པ་ནི་ལྷ་བརྩ་ཙ་གསུམ་པ་ཤེས། །དེ་བཞིན་ཡང་ཞེས་
པ་ནི་སྐར་བརྩན་པའི་དོན་བསྐྱུས་པའོ། །དེ་ཉིད་དབྱངས་ཡིག་བརྩ་གསུམ་པ་དང་
སྐྱར་བས་⁵མཁས་པས་ཤེས་པར་བྱ་རྗེས་སུ་གནས་པའོ། །དེས་ན་ཤོད་གཟུགས་སུ་
འགྱུར་རོ། །སྟེ་ཆན་བཞི་ལས་ད་ཉིད་⁶དུ། །ཞེས་པ་ནི། སྟེ་ཆན་བཞི་པའི་གསུམ་པ་

1. ཁྱེ་འཛིན་པ་ གསེར།

2. ཕུལ་ཏེ་སྟོད་པར་ བོད་དཔེ། མོང་དུ་རྒྱ་དཔེ་བཞིན་བཞོད་པ་ཡིན།

3. སྐྱར་བས་ཕྱའི་གཟུགས་ གསེར། བེ།

4. ‘སྟེ་ཆན་བཞི་པའི་གསུམ་པ་བདུ། །ལྷ་བརྩ་ཙ་བཞི་པ་དང་སྐྱར།’ ཆོག་རྒྱུ་གཉིས་པོ་བོད་འགྱུར་
ཙ་བར་མེད་ཀྱང་ལེན་སྐྱར་གྱི་ཙ་འགྲེལ་དང་བོད་འགྱུར་འགྲེལ་པ་དང་མཐུན་པར་བཞག་ཡོད།

5. སྐྱར་བར་ གསེར། བེ།

6. བྱེད་ ཙ། བྱེད་ སྟེ། བེ། གསེར། མོང་དུ་རྒྱ་དཔེ་སྐར་བཞག་པ་ཡིན།

བདུ། ཞེས་བཅོམ་པ་¹གང་ཡིན་པ་དེས་ད་ཡིག་དག་དུ་བཅོམ་པ་འོ། །དེ་ཡིས་ཀའི་སྡེ་
 ཆན་གྱི་བཞི་པ་ཡིན་པར་བསྟན་ཏོ། །གཞན་དུ་ན་ཡའི་སྡེ་ཆན་ནམ་ཀའི་སྡེ་ཆན་ཞེས་
 ཐེ་ཆོམ་བ་བར་འགྱུར་རོ། །དེ་ལྟ་ནི་ད་ཡིག་གི་བ་ལ་འབྱུལ་པར་འགྱུར་རོ། །ཅི་ཡུ་
 དང་ཀ་ཟུང་གཅིག་གམ་²ད་ཟུང་གཅིག་ཡིན་ཞེས་ཐེ་ཆོམ་དུ་འགྱུར་རོ། །ལྟ་བུ་ཙུ་
 བཞི་པ་ཞེས་པ་ནི་ལྟ་བུ་ཙུ་བཞི་པ་ཡོད། །དེ་དང་སྟུར་བ་མཁའ་ས་པས་སོ། །དེས་ན་
 སྤེལ་གཟུགས་སུ་འགྱུར་རོ། ། ༣༠ །

ཡི་གེ་ལྟ་བུ་ཙུ་དུག་པ། །

དབྱངས་ཡིག་དུག་པ་དང་ཡང་སྟུར། །

དག་རྣམས་ངེས་པར་གསོད་བྱེད་ཡིན། །

ཡམས་ཡི་³བཞི་པ་དང་། ༣༡ །

ཡི་གེ་ལྟ་བུ་ཙུ་དུག་པ། ཞེས་པ་ནི་ཡི་གེ་ལྟ་བུ་ཙུ་དུག་པ་ཤིང་། །དབྱངས་
 ཡིག་དུག་པ་ཡུ་⁴དང་དེ་སྟུར་བར་མཁའ་ས་པས་སོ། །དེས་སྤེལ་གཟུགས་⁵སུ་འགྱུར་རོ། །
 དག་རྣམས་ངེས་པར་གསོད་བྱེད་ཡིན། །ཞེས་པ་ནི་ཉོན་མོངས་པའི་དག་ལས་ཀྱལ་
 བའོ། །མཐར་གནས་པ་ཡི་བཞི་པ་ཞེས་པ་ནི་ཤིང་། །རྟན་ཅིག་པའི་དོན་གྱིས་ནི་
 གསུམ་པའོ། ། ༣༢ །

1. བཅོམ་པས་ གསེར། བེ།

2. ཀ་གཟུང་གཅིག་གམ་ གསེར། བེ། ‘ཀ་ཟུང་གཅིག་གམ་’ཀྱང་དཔེར་མེད།

3. ཡམས་ཡི་ རྟེ། ཡན་དཔེར་ བེ།

4. དུག་པ་ཡུ་ བེ།

5. སྤེལ་གཟུགས་ རྟེ། གསེར། ཅོ།

དབྱངས་ཡིག་གཉིས་པར་སྒྱར་བར་བྱ། |
 དེ་བཞིན་བཅོ་ལྔ་པ་¹དང་སྒྱར། |
 དངོས་གྲུབ་ཐམས་ཅད་གྲུབ་པ་²ཡིན། |
 ཡི་གེ་ལྔ་བརྒྱ་ཙུང་དགྲུང་འགྲུང། ༣༣ |

ཡི་གེ་ལྔ་བརྒྱ་ཙུང་དགྲུང་དབྱངས་ཡིག་གཉིས་པ་དང་སྒྱར་བཞི་བ་དེ་བཞིན་དུ་
 སྒྱར་བའོ། །དེ་བཞིན་བཅོ་ལྔ་པ་དང་སྒྱར། །དངོས་གྲུབ་ཐམས་ཅད་སྒྲུབ་བྱེད་
 ཡིན། །ཞེས་པ་མཁས་པ་ཞེས་བྱ་བ་གཉིས་པའི་བྱ་བའི་མ་མོ་³དེས་ཀྱི་གཟུགས་སུ་
 འགྱུར་རོ། །ཕན་ཡོན་འདི་ནི་ཏ་ཡིག་ཙམ་གྱི་འཕྲུལ་ཡང་ན་སྒྲགས་མ་ལུས་པའོ། ༣༣ །

ཡི་གེ་དྲུག་ཙུང་གཅིག་ཉིད། |
 དབྱངས་ཡིག་གཉིས་པ་དག་དང་སྒྱར། |
 འདི་ཉིད་མཆོག་ནི་ཡིན་པར་བཤད། |
 དེ་བཞིན་དྲུག་ཙུང་གཉིས་པ། ༣༣ |
 དབྱངས་ཡིག་གསུམ་པར་སྒྱར་བཞི། |
 མཁའ་འགྲོ་མ་ཡི་མཆོག་དུ་འདོད། |
 ཡི་གེ་དྲུག་ཙུང་གསུམ་ཉིད། |
 དབྱངས་ཡིག་བརྒྱ་གཅིག་ཡང་དག་ལྟར། ༣༤།

-
1. བརྒྱ་ལྔ་པ་ རྟེན། བཤ།
 2. སྒྲུབ་པ་ རྟེན། བཤ།
 3. བྱ་བའམ་མོ་ གསེར། བཤ།

ཡི་གེ་དུག་ཙུ་ཙ་གཅིག་ཅེས་པ་ནི་རྟོལ། །དབྱངས་ཡིག་གཉིས་པ་དང་སྐྱར་བས་
 རྟོལ་གཟུགས་¹སྤྱ་མཁས་པས་སོ། །ནིའི་སྐྱས་རྟོལ་འབའ་ཞིག་གི་སྟོན་དུ་བརྟན་པའི་
 རོན་བརྟོན་པའོ། །དེ་ལྟ་བུ་མཁས་པ་ཉིད་མཆོག་ཅེས་བྱ་བས་གོ་བར་བྱའོ། །དེ་
 བཞིན་དུག་ཙུ་ཙ་གཉིས་ཞེས་པ་ནི་ཡི་གེ་ར་ཡིན་པར་མཁས་པས་སོ། །དེ་བཞིན་ཞེས་
 པ་ནི་སྐྱར་བརྟན་པའི་རོན་གྱིས་རབ་དུ་བྱེད་པ་བསྐྱུ་བ་ཉིད་དུ་གཟུང་བའོ། །དེ་དང་
 དབྱངས་ཡིག་གསུམ་པ་སྐྱར་བས་རིའི་གཟུགས་³སྤྱ་འགྱུར་རོ། །དུག་ཙུ་ཙ་གསུམ་
 པ་ཉིད་ཀྱང་ཅེས་བྱ་བ་ནི་ཆའོ། །ཉིད་ཀྱང་ཞེས་པ་ནི་ཡང་བསྐྱུས་པ་ངེས་པར་
 གཟུང་བའོ། །དེ་དབྱངས་ཡིག་བཙུ་གཅིག་པ་དང་སྐྱར་བས་ཆེའི་གཟུགས་སྤྱ་མཁས་
 པས་སོ། ། ༣༣-༣༤ །

མངེས་པའི་ཡི་གེ་ཀུན་མཆོག་ཉིད། །

དེ་བཞིན་དུག་ཙུ་ཙ་ལ། །

རྟོ་རྟོ་སེམས་དཔས་⁵བྱེ་བ་དག །

དེར་ནི་དབྱངས་ཡིག་གཉིས་པ་སྐྱར་⁶། ༣༥ །

1. རྟོལ་གཟུགས་ བོད་འགྱུར་པར་མ། གོང་དུ་བྱ་དཔེ་ལྟར་བཞག་པ་ཡིན།

2. རྟོལ་འབའ་ཞིག་ རྟོལ་ ཅོ།

3. རིའི་གཟུགས་ བེ།

4. ཀུན་མཆོད་ ལྷ། ལྷ།

5. རྟོ་རྟོ་སེམས་དཔའ་ ལྷ།

6. དེར་ནི་དབྱངས་ཡིག་གཉིས་པ་སྐྱར་། ཞེས་པའི་ཆོག་ཀྱང་འདི་ལེགས་སྐྱར་མ་དཔེར་གསལ་བ་ལྟར་
 བོད་སྐད་དུ་བསྐྱུར་གང་ཐུབ་བྱས་ཏེ་གོང་དུ་བཀོད་པ་ཡིན།

དུག་ཅུ་ལྷ་པ་ནི་¹སྒྲིའི་ཡི་གེའོ། །དྲི་རྩེ་སེམས་དཔའ་ནི་རའོ། །དེ་ལྟར་ཉིད་ཅེས་
པ་ནི་སྤར་བ་སྒྲན་པའི་རབ་དུ་བྱེད་པའི་དོན་བསྟུས་པ་ཉིད་དུ་ངེས་པར་གཟུང་བའོ། །
དེས་སྒྲིའི་²གཟུགས་སུ་ཉོགས་པར་བྱའོ། ༡༥ །

ས་བོན་འདི་ནི་ལྷ་རྩེ་མཆོག་། །
གྲུབ་སྒྲིན་³ཐར་པ་སྒྲིན་ཆེན་པོ། །
ཡི་གེ་དུག་ཅུ་ཅ་དུག་པ། །
དབྱངས་ཡིག་གསུམ་པ་དང་ཡང་སྒྱར། ༡༦ །

དུག་ཅུ་ཅ་དུག་ཅེས་པ་ནི་དུག་ཅུ་ཅ་དུག་པ་རྩ་⁴ཞེས་ཏེ་དེ་བཞིན་གསེགས་པས་
གསུངས་སོ། །དང་གིས་ནི་སྤར་བ་སྒྲན་པའི་དོན་བསྟུས་པའོ། །དབྱངས་ཡིག་གསུམ་
པ་དང་སྒྱར་བས་ངོའི་གཟུགས་⁵སུ་འགྱུར་རོ། ༡༧ །

བྱ་བ་ཀུན་ལ་གྲུབ་སྒྲིན་⁶པར། །
དེ་ལྟར་དེ་བཞིན་གསེགས་པས་གསུངས། །
ཡི་གེ་དུག་ཅུ་ཅ་བདུན་པ། །
དབྱངས་ཡིག་གཉིས་པར་ཡང་དག་ལྡན། ༡༨ །

-
1. དུག་ཅུ་ལྷ་པ་ཞེས་པ་ནི་ གསེར། བེ།
 2. དེས་སྒྲིའི་ བོད་འགྱུར་པར་མ། ཞོང་དུ་ཆུ་དཔེ་ལྟར་བཞོད་པའོ།
 3. གྲུབ་སྒྲིན་ ལྷ། ལྷ།
 4. 'རྩ' ཅོ་ནེར་མེད།
 5. ངོའི་གཟུགས་ གསེར།
 6. གྲུབ་སྒྲིན་ ལྷ། ལྷ།

ཡི་གེ་དྲུག་ཙུ་ཙ་བདུན་པ་ཞེས་པ་ནི་ཡི་གེ་དྲུག་ཙུ་ཙ་བདུན་པ་ནི་ན་ཡིན་པར་
གསུངས་སོ། །དབྱངས་ཡིག་གཉིས་པ་དང་སྒྱར་བས་སྒྲིའི་གཟུགས་སུ་འགྱུར་རོ། །
དེ་དང་ཡང་དག་པར་སྒྱར་བའི་དོན་དོ། ༡༥ །

ནལ་འཁྱོར་མ་ཡི་བྱ་བ་ཀུན། །

འདི་ཉིད་ཡིན་པར་ཐེ་ཆོམ་མེད། །

དྲུག་ཙུ་བརྒྱད་པ་ཉིད་ལ་ཡང་། །

དེར་ནི་ཡི་གེ་བ་སྒྱར་བ། ༡༦ །

ས་བོན་ཡི་གེ་འདི་ཡི་ནི། །

འོག་གི་ཆར་ནི་བརྟག་པར་བྱ། །

ཡི་གེ་བདུན་ཙུ་ཙ་གཅིག་པ། །

དབྱངས་ཡིག་གཉིས་པར་ཡང་དག་སྒྱར། ༡༧ །

དྲུག་ཙུ་ཙ་བརྒྱད་པ་ཞེས་པ་ནི། དྲུག་ཙུ་ཙ་བརྒྱད་པའི་ཡི་གེ་མ་ཡིན་པར་
གསུངས་སོ། །ཉིད་དག་དང་ཞེས་པ་ནི་སྔོན་དུ་བཞུགས་པའི་དོན་བསྐྱུ་བ་ཉིད་དུ་གཟུང་
བའོ། །དེ་ནི་ཡི་གེ་བ་སྒྱར་བྱ། །ཞེས་པ་ནི་མའི་འོག་གི་ཆ་ལ་བཞུགས་པར་བྱའོ། །དེ་
ནས་སྒྲིའི་གཟུགས་སུ་འགྱུར་རོ། །བདུན་ཙུ་ཙ་གཅིག་པ་ཞེས་པ་ནི་ཡི་གེ་བདུན་ཙུ་ཙ་
གཅིག་པར་ཡིན་པར་གསུངས་སོ། །ཉིད་དག་གི་སྒྲས་ནི་སྔོན་དུ་བཞུགས་པ་དོན་

1. འོག་གི་བར་ནི་རྟག་ བེ།

2. བོད་འགྱུར་པར་མ་ནམས་སུ་ར་ མི་སྒྲུང་ཡང་ཐུ་དཔེ་ལྟར་བཞག་པ་ཡིན།

3. 'བཞུགས་པ' ཅེ་ནི་མེད།

བསྐྱུས་པ་ཉིད་དུ་ངེས་པར་གཟུང་བའོ། །དབྱངས་ཡིག་གཉིས་པ་དང་སྒྱུར་བས་རྒྱུ་
གཟུགས་སུ་འགྱུར་རོ། ༡༩-༢༠ །

ཡི་གེ་ཀུན་ལ་མངེས་པ་ནི། །

འདི་ཉིད་ཡིན་པར་བེ་ཆོམ་མེད། །

བདུན་ཅུ་ཅ་བཞི་པ་ཉིད་ནི། །

དབྱངས་ཡིག་གཉིས་པར་སྒྱུར་བ་དག ༡༠ །

བདུན་ཅུ་ཅ་བཞི་པ་ཞེས་པ་ནི་ཡི་གེ་བདུན་ཅུ་ཅ་བཞི་པ་ཞེས་པ་དྲ་ཡིན་པར་
གསུངས་སོ། །ཉིད་ཀྱི་སྒྲས་ནི་སྒྲ་མ་བཞིན་ནོ། །དབྱངས་ཡིག་གཉིས་པ་དང་སྒྱུར་
བས་རྒྱུ་གཟུགས་སུ་འགྱུར་རོ། ༡༠ །

གདོད་ནས་གྲུབ་པ་ཡིན་པར་ནི། །

དེ་བཞིན་གསལ་གསལ་པའི་ཞལ་ནས་གསུངས། །

ཡི་གེ་བདུན་ཅུ་ཅ་པ་ཉིད། །

མ་མོ་དྲུག་པ་དང་ལྔ་ན་པ། ༡༡ །

བདུན་ཅུ་ཅ་ཅ་པ་ཞེས་པ་ནི། །བདུན་ཅུ་ཅ་ཅ་པའི་ཡི་གེ་ནི་རྒྱ་ཡིན་པར་
གསུངས་སོ། །ཉིད་ནི་སྒྲ་མ་བཞིན་ནོ། །དེ་ཡང་མ་མོ་དྲུག་པ་སྒྱུར་བས་རྒྱ་ཡི་
གཟུགས་སུ་འགྱུར་རོ། ༡༡ །

འདི་ནི་ནལ་འབྱོར་རབ་མཆོག་སྟེ། །

བྱ་བ་ཀླན་ལ་དམ་པ་ཡིན། །

བདུན་ཙུ་ཙ་དུག་པ་ཉིད་ནི། །

དབྱངས་ཡིག་གཉིས་པ་དང་ལྷན་ཁིང་། ༡༣།

བདུན་ཙུ་ཙ་དུག་པ་ཞེས་པ་ནི་མའོ། །མ་མའི་གཉིས་པས་དབྱེ་བར་བྱ། །ཞེས་པ་
ནི་མ་མའི་གཉིས་པས་དབྱེ་བར་བྱའོ། །ཉིད་ཀྱི་སྒྲ་ནི་སྒྲ་མ་བཞིན་ནོ། ༡༣ །

ཉི་མ་ཡིས་ནི་དབྱེ་བྱ་སྟེ། །

ཡི་གེ་བ་ནི་དེར་སྒྱུར་བྱ། །

མཆོག་ཏུ་མངོས་པ་གཞན་ཡོད་མིན། །

ཡི་གེ་བདུན་ཙུ་ཙ་བདུན་པ། །

དེར་ནི་རྟ་དང་སྒྱུར་བར་བྱ། ༡༣ །

ཉི་མ་ཡིས་ཀྱང་དེ་ཉིད་དབྱེ་བའོ། །དེ་ལ་བ་དང་དེ་གཉིས་ཀྱི་གཟུགས་ཀྱི་འོག་ཏུ་
གྱུར་པ་རའོ། །ར་དང་མ་དག་གི་དབྱས་སུ་¹སྒྱུར་རོ། །དེས་སྒྲིའི་གཟུགས་²སུ་
འགྱུར་རོ། །མཆོག་ཏུ་མངོས་པ་གཞན་ན་མེད། །ཅེས་པ་ནི་སྒྲིའི་ས་བོན་ནོ། །ཡི་
གེ་བདུན་ཙུ་ཙ་བདུན་པ། །ཞེས་པ་ནི་བདུན་ཙུ་ཙ་བདུན་པའི་ཡི་གེ་ནའོ། །དེ་དང་

1. དབྱངས་སུ་ སྟེ། ཅོ།

2. སྒྲིའི་གཟུགས་ གསེར། སྒྲིའི་གཟུགས་ ཅོ།

3. སྒྲིའི་ས་བོན་ ཅོ།

ཡང་དག་ལྟོན་པར་སྐར་བསྟན་པའི་དོན་གསུངས་པའོ། །རྟོལ་ག་གི་ཆར་སྐར་བས་
རྟོལ་གཟུགས་²སུ་འགྱུར་རོ། ༡༡ །

ས་པོན་འདི་ནི་ལྟ་རྒྱུ་མཆོག་³ །

མཁའ་འགྲོ་མ་ཡི་མཛེས་པར་འདོད། །

བདུན་རྩ་ཙ་བརྒྱད་པ་ཉིད་ནི། །

དབྱངས་ཡིག་གཉིས་པ་དང་ལྟོན་ཁིང་། ༡༢།

བདུན་རྩ་ཙ་བརྒྱད་པ་ཞེས་པ་ནི་ཡི་གེ་བདུན་རྩ་ཙ་བརྒྱད་པ་ནི་ཀའོ། །ཉིད་ནི་རྩ་
མ་བཞིན་ནོ། །དབྱངས་ཡིག་གཉིས་པ་དང་སྐར་བས་རྟོལ་གཟུགས་སུ་འགྱུར་རོ། ༡༣།

ས་པོན་འདི་ནི་མཆོག་བཟང་པོ། །

རྩ་ཡི་མཆོག་ནི་ཡིན་པར་འདོད། །

ཡི་གེ་བརྒྱད་རྩ་ཙ་གཅིག་⁴པ། །

བཞི་པའི་མཐའ་ཡི་བྱད་པར་བྱེད་། ༡༤ །

ཡི་གེ་བརྒྱད་རྩ་ཙ་གཅིག་པ་ཞེས་པ་ནི་བརྒྱད་རྩ་ཙ་གཅིག་པ་ཡི་གེ་པའོ། །

1. ལྟ་རྟོན་ རྟོ།

2. རྟོལ་གཟུགས་ བེ།

3. 'ས་པོན་འདི་ནི་ལྟ་རྟོན་མཆོག་' རྩ་དཔེར་མེད། ས་པོན་འདི་ནི་རྩ་གྱི་ སྟེ། ལྟེ། བེ།

4. བརྒྱ་བརྩ་ཙ་གཅིག་ བེ།

5. མཐའ་ཡི་བྱད་པར་གྱིས་ སྟེ། ལྟེ། མཐའ་བྱད་པར་གྱིས་ བེ།

དབྱངས་ཡིག་བཞི་པའི་མཐས་སྡེ་བས་པུའི་གཟུགས་སུ་འགྱུར་རོ། ། ཉིད་ནི་སྡེ་མ་
བཞིན་ནོ། ༣༥ །

གདོད་ནས་གྲུབ་བྱེད་འདི་ཡིན་ཏེ། །

དངོས་གྲུབ་ཀྱན་ལ་འཇུག་བྱེད་པར་། །

ཡི་གེ་བརྒྱད་ཅུ་ཙ་གཉིས་²པ། །

དབྱངས་ཡིག་གཉིས་པ་དང་སྟུར་བྱ། ༣༦ །

ཡི་གེ་བརྒྱད་ཅུ་ཙ་གཉིས་པ། ། ཞེས་པ་ནི་ཡི་གེ་བརྒྱད་ཅུ་ཙ་གཉིས་པ་ནི་པུའོ། །
ཉིད་ནི་སྡེ་མ་བཞིན་ནོ། ། དབྱངས་³གཉིས་པ་དང་སྟུར་བས་པུའི་གཟུགས་⁴སུ་
གསུངས་སོ། ། ཏང་པ་བརྒྱད་པོ་འདི་ནི་ཙ་བའི་སྟགས་སོ། ༣༧ །

⁵མ་མོ་ནམས་ལས་ལྷ་པ་ཉིད། །

དེ་བཞིན་ཡི་གེ་བརྒྱད་ཅུ་བརྒྱད། །

མ་མོ་དག་ལས་ལྷ་པ་ཉིད། །

ཡི་གེ་བརྒྱད་ཅུ་ཙ་དགྲུ་⁶པ། ༣༨ །

1. བྱེད་པའོ་ ལྷ། པེ། ལྷ།

2. བརྒྱད་བརྒྱ་ཙ་གཉིས་ པེ།

3. དབྱངས་ཡིག་ ཙོ།

4. པུའི་གཟུགས་ གསེར།

5. ‘མ་མོ་ནམས་ལས་ལྷ་པ་ཉིད།.....’ ཏེ་རུ་ཀ་དཔལ་མགོན་པོ་ཡི།’ ཞེས་ཆོགས་སུ་བཅད་པ་སོ་
བདུན་པ་ནས་དྲུག་ཅུ་རེ་གསུམ་པའི་བྱེད་བར་གྱི་ཆོགས་བཅད་ནམས་ཀྱི་དཔེར་མེད་ཅིང་དེའི་
ཆབ་ཏུ་གཟུངས་སྟགས་ནམས་འཁོད་པ་གསལ།

6. བརྒྱད་བརྒྱ་ཙ་དགྲུ་ པེ།

མོ་མོ་རྣམས་ལས་ལྔ་པ་ཉིད།	1
དེ་བཞིན་ཡི་གེ་དགུ་བརྩུ་པ།	1
མ་མོ་དག་ལས་ལྔ་པ་དང་།	1
ཡི་གེ་དགུ་བརྩུ་ཙ་གཅིག་པ།	36 1
མ་མོ་རྣམས་ལས་གཉིས་པ་ཉིད།	1
ཡི་གེ་དགུ་བརྩུ་ཙ་དུག་པ།	1
དབྱངས་དག་ལས་ནི་གཉིས་པ་དང་།	1
ཡི་གེ་དགུ་བརྩུ་ཙ་དགུ་པ།	37 1
གདུག་པ་རྣམས་ནི་སྒྲག་བྱེད་ཅིང་།	1
རྒྱགས་པ་ ¹ རྣམས་ལ་བདེ་འབྱུང་བྱེད།	1
དབྱངས་རྣམས་ཀྱི་ནི་བརྩུ་གསུམ་པ།	1
ཡི་གེ་གཉིས་པར་ཡང་དག་ལྡན།	40 1
དབྱངས་ལས་བརྩུ་གསུམ་པ་ཉིད་དང་།	1
ཡི་གེ་ལྔ་པར་ཡང་དག་ལྡན།	1
གདུག་པ་རྣམས་ནི་བདེ་བྱེད་ཅིང་།	1
མཁའ་འགྲོ་རྣམས་ཀྱི་བདེ་འབབ་པའོ།	41 1

1. མ་མོ་ རྩུ་དཔེ།

དབྱངས་ནམས་ལས་ནི་བརྩ་བཞི་ཉིད། 1

ཡི་གེ་བརྩུད་པར་ཡང་དག་ལྡན། 1

བཙོ་ལྔ་པ་ཡི་མཆོད་པར་བྱ། 1

དབྱངས་དག་ལས་ནི་བརྩ་བཞི་པ། ༤༦ 1

ཡི་གེ་དག་པར་ཡང་དག་ལྡན། 1

སྤྱི་བོར་ཐིག་ལེས་མཆོན་པའོ། 1

སྤྱབ་པོ་མཁའ་འགྲོ་མ་ནམས་ནི། 1

བྱུང་པར་དུ་ནི་དག་འབྱེད་པའོ། ༤༧ 1

དབྱངས་ནམས་ལས་ནི་བརྩ་གཅིག་པ། 1

བརྩ་གཉིས་པ་ཡིས་ཡང་དག་ལྡན། 1

སྤྱི་བོར་ཐིག་ལེས་མཆོན་པའོ། 1

འབྱུང་པོ་ཐམས་ཅད་སྤྲུག་བྱེད་ཅིང་། ༤༨ 1

སྤྱབ་པོ་ནམས་ལ་ཕན་འབྱུང་བའོ། 1

བརྩ་གཅིག་པར་ནི་ཡང་དག་ལྡན། 1

ཡི་གེ་བརྩ་གསུམ་པ་ཉིད་ལ། 1

ཐིག་ལེས་ནམ་པར་བརྩན་པའོ། ༤༩ 1

1. བརྩ་ལྔ་པ་ཡི་གཅིག་དུ་བྱས། བཤ། ཐེ།

2. བརྩ་གཉིས་པ་ཡི་ སྤྱ། ལྟ། བརྩ་གཉིས་པ་ཡི་ག་ བཤ།

འབྲུང་པོ་ཐམས་ཅད་སྐྱག་བྱེད་ཅིང་།	།
སྐྱབ་པོ་ནམས་ལ་ཕན་འབྲུང་བའོ།	།
དབྲངས་ནམས་ལས་ནི་ལྡ་པ་ཉིད།	།
ཡི་གེ་སྲུམ་རྩ་གཉིས་པར་ལྡན།	༤༦ །
དབྲངས་ནམས་ལས་ནི་གསྲུམ་པ་དང་།	།
ཡི་གེ་སྲུམ་རྩ་གསྲུམ་པར་ལྡན།	།
དབྲངས་ཀྱི་གཉིས་པ་ཉིད་དང་ནི།	།
ཡི་གེ་སྲུམ་རྩ་བཞི་པར་ལྡན།	༤༧ །
དབྲངས་ནམས་ལས་ནི་གཉིས་པ་ཉིད།	།
ཡི་གེ་སྲུམ་རྩ་དྲུག་པར་ལྡན།	།
ཐོག་མའི་གཉིས་པར་ཡང་དག་ལྡན།	།
ཡི་གེ་སྲུམ་རྩ་རྩ་བདུན་པ་།	༤༨ །
དབྲངས་ལས་གསྲུམ་པར་ཡང་དག་ལྡན།	།
ཡི་གེ་བཞི་བརྩ་པ་ལ་འོ།	།
མ་མོའི་བརྩ་གཅིག་ཡང་དག་ལྡན།	།
ཡི་གེ་བཞི་བརྩ་རྩ་གཅིག་པ།	༤༩ །

1. སྲུམ་བརྩ་གསྲུམ་ བེ།

2. སྲུམ་བརྩ་རྩ་བདུན་པ་ བེ།

དབྱངས་དག་ལས་ནི་གསུམ་པ་ཉིད།	།
ཡི་གེ་བཞི་བརྒྱ་གཉིས་པར་ལྡན།	།
དབྱངས་དག་ལས་ནི་གསུམ་པ་ཉིད།	།
ཡི་གེ་བཞི་བརྒྱ་བཞི་པར་ལྡན།	༥༠ །
མ་མོ་ལས་ནི་གཉིས་པ་ཉིད།	།
ཡི་གེ་བཞི་བརྒྱ་བརྒྱད་པར་ལྡན།	།
དབྱངས་དག་ལས་ནི་གཉིས་པ་ཉིད།	།
ཡི་གེ་བཞི་བརྒྱ་དགུ་པར་ལྡན།	༥༡ །
མ་མོ་ལས་ནི་ལྔ་པ་ཉིད།	།
ཡི་གེ་ལྔ་བརྒྱ་གསུམ་པར་ལྡན།	།
ཡི་གེ་ལྔ་བརྒྱ་ཙུ་བཞི་པ།	།
ཐིག་ལེས་ཀྱང་ནི་རྣམ་བརྒྱན་པ་འོ།	༥༢ །
ཡི་གེ་ལྔ་བརྒྱ་ཙུ་ལྔ་པ།	།
སྤྱི་བོར་ཐིག་ལེས་མཆན་པ་ལ།	།
དབྱངས་ཀྱི་གཉིས་པར་སྤྱར་བའོ།	།
ཡི་གེ་ལྔ་བརྒྱ་ཙུ་བདུན་པ།	༥༣ །

སྤྱི་བོར་ཐིག་ལེས་མནན་པའོ།	།
དབྱངས་ནམས་ལས་ནི་གཉིས་པ་ཉིད།	།
ཡི་གེ་ལྔ་བརྒྱ་ཙུ་བརྒྱད་པ།	།
མ་མོ་ལས་ནི་གཉིས་པ་ཉིད།	༥༩ །
ཡི་གེ་དྲུག་ཙུ་ལྔ་པ་ལའོ།	།
མ་མོ་ལས་ནི་གཉིས་པ་ཉིད།	།
ཡི་གེ་དྲུག་ཙུ་བརྒྱད་པར་ལྡན།	།
དངོས་གྲུབ་ཐམས་ཅད་འགྲུཌ་བྱེད་ཅིང་། ༥༥	།
སྤྱི་བོར་ནམས་ལ་དཔལ་སྦྱིན་པའོ།	།
མ་མོ་ལས་ནི་བཞི་པ་ཉིད།	།
ཡི་གེ་བདུན་ཙུ་གཅིག་པར་ལྡན།	།
ཐིག་ལེས་ཀྱང་ནི་ནམ་པར་བརྒྱན།	༥༦ །
མ་མོ་ལས་ནི་བཞི་པ་ཉིད།	།
ཡི་གེ་བདུན་ཙུ་གཉིས་པར་ལྡན།	།
སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་དབང་བྱེད་པ།	།
ཐིག་ལེ་ཡིས་ནི་མཉམ་པར་མནན།	༥༧ །

1. དྲུག་བརྒྱ་བརྒྱད་ བེ།

2. བདུན་བརྒྱ་གཉིས་ བེ།

དབྱངས་ཀྱི་བརྒྱ་བཞི་པར་ངེས་ལྡན།	1
ཡི་གེ་བདུན་ཙུ་ཙ་གསུམ་ ¹ པའོ།	1
མ་མོ་ལས་ནི་བརྒྱ་བཞི་པ།	1
ཡི་གེ་བདུན་ཙུ་བཞི་པར་ལྡན།	49 1
དེ་བཞིན་ཐིག་ལེས་རྣམ་བརྒྱན་པའོ།	1
དབྱངས་རྣམས་ལས་ནི་གཉིས་པ་ཉིད།	1
ཡི་གེ་བདུན་ཙུ་ལྔ་པར་ལྡན།	1
མ་མོ་ལས་ནི་གཉིས་པ་ཉིད།	48 1
ཡི་གེ་བདུན་ཙུ་བརྒྱད་ ² པར་ལྡན།	1
སྟེང་དུ་ཐིག་ལེས་མཆན་པ་འོ།	1
མ་མོ་ལས་ནི་བཞི་པ་དང་།	1
ཡི་གེ་བདུན་ཙུ་ཙ་དགྲུ་ ³ པ།	60 1
སྤྱི་པོར་ཐིག་ལེས་མནན་པ་འོ།	1
དབྱངས་རྣམས་ལས་ནི་དྲུག་པ་ཉིད།	1

-
1. བདུན་བརྒྱ་ཙ་གསུམ་ བཤེ།
 2. བདུན་བརྒྱ་བརྒྱད་ བཤེ།
 3. བདུན་བརྒྱ་ཙ་དགྲུ་ བཤེ།

ན་ཡི་ཁྱལ་པོ་བསྐྱེད་པ་ལ།	།
ཐིག་ལེ་ནདས་ ¹ ནམ་བཟུན་པ།	༤༡ །
དབྱངས་ནམས་ལས་ནི་གསུམ་པ་ནིད།	།
ཡི་གེ་བཙུ་དྲུག་ལྡན་པ་འོ།	།
ཡི་གེའི་གྲངས་ནི་བཟུ་ཡི་སྟེང་།	།
དགུ་བཙུ་དང་ནི་ཅ་བཟུད་དོ།	༤༢ །
འདི་ནི་རེ་མིག་ ² ལས་བདུས་པ།	།
དེ་རུ་ཀ་དཔལ་མགོན་པོ་ ³ ཡི།	།
ཅ་བའི་སྐྱགས་མཆོག་དུ་ཤེས་བྱ།	།
དངོས་གྲུབ་ཀྱན་གྱི་གནས་ཡིན་ནིང་།	༤༣ །
མཁའ་འགྲོའི་སྟིང་ནི་འཛོམས་པ་ཡིན།	།
དཔལ་ལྡན་ཁྲག་འཕྱང་ལྷ་རིག་ཁྱལ།	།
བཟླགས་ ⁴ པས་གྲུབ་པ་དོན་ཡོད་པ།	།
ཡི་གེ་ཚིན་དང་པོ་སྟེ།	༤༤ །

-
1. ནདས་ བོ།
 2. རེ་དམིག་ བོ།
 3. དགོན་པོ་ ལྷ།
 4. ཟླགས་ བོ།

དྲློལ་པུ་ཉི་མཐའ་མར་སྐྱར། 1

ཙ་བའི་སྐྱགས་ཏེ་སྐྱགས་འདི་ནི། 1

སྐྱབ་པ་¹ཐམས་ཅད་གྲུབ་བྱེད་²ཡིན། ༦༥ 1

དཔལ་དེ་རུ་ཀའི་ངེས་པར་བཟོད་པ་ལས་སྐྱགས་བྱུ་བའི་ཆོ་གའི་ལེའུ་སྒྲེ་
བདུན་པའོ། 11

དེའི་ཕྱིར་ཙ་བའི་གསང་སྐྱགས་མཆོག་ཏུ་མཁས་པས་ཤེས་པར་བྱ་ཞེས་
གསུངས་སོ། །དཔལ་དེ་རུ་ཀའི་ཉིད་རྩོལ་བ་ནི་དཔལ་དེ་རུ་ཀའི་ལྟོ། །དེའི་རིག་པའི་ཐུལ་
པོའི་³སྐྱགས་ནི་ཀར་ཀར་ལ་སོགས་པའོ། །མེ་དང་པོར་དྲློལ་པུ་⁴མཐའ་སྐྱར་ཞེས་པ་
ནི་རྒྱུ་མེད་པས་རིང་པོར་བཟོད་པའོ། 1

སྐྱགས་ཀྱི་མཐུ་དཔུད་པར་བྱ་སྟེ། བྱེད་པར་འདི་ནི་ཙ་བའི་སྐྱགས་དང་རིག་པའི་
ཐུལ་པོའི་སྐྱགས་ལ་ཡང་ངོ་། །དེའི་ཕྱིར་འདིའི་ཙ་བའི་སྐྱགས་ཏེ་ཞེས་གསུངས་
པའོ། །ཙ་བའི་སྐྱགས་འབའ་ཞིག་ནི་མ་ཡིན་ཏེ། མེ་ལ་སོགས་པའི་ཆོ་ག་གིས་⁵བྱེད་
པར་བྱ་བྱས་པའོ། །འོན་ཀྱང་གང་⁶གང་གི་ཕྱིར་འདིའི་རིག་པའི་ཐུལ་པོའི་སྐྱགས་

1. གྲུབ་པ་ བཤ།

2. རྒྱུན་བྱེད་ སྒྲ། སྒྲ། བཤ། འགྲེལ་པར་ནི་‘སྐྱབ་ཐབས་ཐམས་ཅད་སྐྱངས་པ་’ ཞེས་གསལ།

3. རིགས་པའི་ཐུལ་པོའི་ གསེར།

4. དྲློལ་པུ འགྲེལ་པར་གསལ་ཡང་ཙ་བ་སྐྱར་བཞོད་ཡོད།

5. ཆོ་ག་གི་ ཙ།

6. ‘གང་’ ཙ་ནི་མེད།

ཀྱང་ཞེས་པའི་དོན་དོ། །སྐྱབ་ཐབས་ཐམས་ཅད་སྤངས་པར་ཞེས་པ་ནི་སྤང་པོ་
 དང་། ཉེ་བའི་སྤང་པོ་དང་གོ་ཆའི་སྤྲུགས་¹དང་། ཙ་བའི་སྤྲུགས་དང་རིག་པའི་
 རྒྱལ་པོའི་སྤྲུགས་ཀྱང་ངོ་། །བྲིས་པ་ལ་སོགས་པའི་སྐྱབ་པའི་²ཐབས་ཐམས་ཅད་
 སྤངས་པའོ། ༡༧-༢༥ །

ཙ་བའི་སྤྲུགས་ནི་ཡང་དག་པའི་³དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་བསྐྱས་ལ་⁴རིག་པའི་
 རྒྱལ་པོ་ཡང་ཆ་ཙམ་བདུ་བའི་ཆོ་ག་ཚོ་ད་པར་བྱེད་པ་དེ་ལེའུ་ཡང་ཡིན་པས་དེ་དེ་
 བཞིན་ནོ། །བདུན་པའི་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དཔལ་འཁོར་ལོ་སྤྲོམ་པའི་དཀའ་འགྲེལ་ལས་
 ལེའུ་བདུན་པའོ། ॥



-
1. ཆོ་གའི་སྤྲུགས་ རྟེན།
 2. 'པའི་' གསེར་བྲིས་སྐྱེད།
 3. 'དག་པའི་' གསེར་བྲིས་ལེ་གིང་དང་ཙ་ཞེས་པར་མ་ནམས་སྐྱེད།
 4. ཐམས་ཅད་ཀྱིས་གསུངས་པ་ རྟེན།

གོ་བོ་ལྷོ་ག་པའི་སྒྲིང་པོ་དང་རྣལ་འབྱོར་མའི་སྒྲགས་བརྟུ་བའི་

ཆོ་གའི་ལཱ།

དེ་ནས་རང་གི་བདག་ཉིད་ཀྱི།

དཔའ་བོ་ཐམས་ཅད་མཉམ་སྦྱོར་བ།

མཁའ་འགྲོ་མ་ཡི་དྭ་བ་ཡི།

འཁོར་ལོ་བདེ་མཆོག་ཡིན་པར་འདོད། ། ༡ །

ཏུསྐར་བཤམ་པ་ལྟོག་ཀྱི་ཁྲེན་ཕྱོད་ཀྱི་འུ་འུ་ཉེ་ཉེ་བ་²ལྷོ། ར།

སྒྲིང་པོ་དང་ཉེ་བའི་སྒྲིང་པོའི་སྐྱགས་སྐྱར་བ་སྟན་པ་དང་ནལ་འབྱོར་མ་དུག་གི་གོ་
 ཚའི་སྐྱགས་དང་དོ་རྩེ་ཕག་མའི་ཉེ་བའི་སྒྲིང་པོའི་སྐྱགས་མ་བ་སྟན་པ་ནམས་དེ་ཐམས་
 ཅད་ཅི་སྟ་བུ་ཞེས་པ་ལ། དེ་ནས་ཞེས་བུ་བ་³ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །དེ་ཉིད་
 ལྷ་ལི་ཀླ་ལི་ཚོགས་པ་ལས་ཡང་དག་པར་བྱང་བ་དཔའ་བོ་ཐམས་ཅད་མཉམ་པར་
 རྒྱུར་བ་མཁའ་འགོ་མ་བུ་བའི་སྒྲིམ་པ་ཡང་དག་པར་བརྟུའོ་⁴ཞེས་པ་བཟུ་བར་བུའོ། །
 ཐམས་ཅད་ཅིས་བུ་བ་ལ་སོགས་པ་དཔལ་དེ་རུ་ག་དང་འདྲིའི་སྐྱགས་ཀྱང་དེ་བཞིན་བུ་

- [illegible]

པའི་ཐུལ་པོ་འོ། །སྤགས་ཀྱི་ཡང་སྤྲོང་པོ་ཡིན་པ་ཤར་བ་བརྒྱད་པའི་ཡང་སྤྲོང་པོ་སྟེ།
 མདོར་བསྡུས་ནས་བཟོད་པའོ། །དེའི་མཐུན་མ་བྱུང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་
 གསུངས་སོ། །འདས་པ་དང་མ་འོངས་པ་དག་གི་དུས་སུ་བདག་གིས་སྤགས་འདི་ཅུང་
 ཟད་ཀྱང་མ་བསྟན་ཏོ། །དེ་ནི་བཟོད་པར་བྱའོ་ཞེས་དགོངས་སོ། །

ནལ་འབྱོར་མ་ནམས་ཀྱི་གོ་ཆའི་སྤགས་བདུ་བའི་ཏམ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་
 གསུངས་སོ། །ཇོ་རྩྱ་རྩྱ་རྩྱ་ལྟ་ཅས་བྱ་བ་ནི་གོ་རིམས་སུ་བྱས་སོ། །ཏམ་རྩྱ་རྩྱ་
 རྩྱ་རྩྱ་ཇོ་ཞེས་བྱ་བའི་ཡི་གེའི་ཆོགས་སོ། ། ༡-༥ །

ཡི་གེ་བླ་དང་ཡོ་དང་ནི། །

ཡི་གེ་མི་དང་རྩྱ་ཉིད་དང་། །

རྩྱ་དང་ཕུ་ཅེས་བཤད་པ་ནི། །

ནལ་འབྱོར་མ་ནི་དུག་ཏུ་བཤད། ། ༥ །

བླ་དང་ཡོ་དང་མི་དང་རྩྱ་དང་རྩྱ་དང་ཕུ་ཉིད་དོ། །ཇོ་ལ་སོགས་པ་ནི་བླ་ལ་
 སོགས་པའི་དང་པོར་སྦྱར་བར་བྱ་སྟེ། ཇོ་བླ་རྩྱ་ཕུ་མི་སྟེ་སྟེ་བར་དོ། །རྩྱ་ཡོ་

1. 'ཡང་' པེ་ཀིང་དུ་མེད།

2. ཏམ་རྩྱ་རྩྱ་རྩྱ་ཇོ་སྟེ། ཅི།

3. ཡི་གེ་མི་ པེ། འགྲེལ་པ།

4. བླ་དང་ཇོ་དང་ བོད་དཔེ་ནམས་སུ་གསལ།

5. རྩྱ་དང་རྩྱ་ སྟེ། གསེར། རྩྱ་དང་རྩྱ་ ཅི། རྩྱ་དང་རྩྱ་ པེ།

རྒྱ་རྒྱུ་པུ་དག་དེ་གཉིས་ཀྱི་སྐད་ཀྱི་ཐོང་དུ་བྱུང་། །མཁའ་འགྲོ་མ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དེ་རྗེ་ཡག་
མོ་ལ་སོགས་པའི་སྐགས་ནི་མཁའ་འགྲོ་མའི་ལོ། །ནིའི་སྐྱ་ནི་བདག་ཉིད་ཆེ་བར་རབ་
ཏུ་བརྟན་པའོ། །མ་བྱུང་ཞེས་པ་ནི་སྐགས་ཀྱི་ཁྱད་པར་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རིགས་ལ་གཅིག་
གི་ཆོག་གོ ་ ༡

ས་སྤྱང་ཅན་ནི་རིན་ཆེན་བཞི། ༡

ཕྱང་བའི་སྐགས་ནི་དམ་པ་ཡིན། ༡

མཁའ་འགྲོ་མ་ཡི་རིག་པ་ཆེ། ༡

རིག་པའི་ཀླུ་པོ་དེ་རུ་གྱུ། ༡

དཔལ་ཉེ་རུ་ཀའི་ངེས་པར་བརྗོད་པ་ལས་གོ་བཟོག་པའི་སྤྱང་པོ་དང་ནལ་
འབྱོར་མ་དུག་གི་སྐགས་བརྟུ་བའི་ཆོག་འེལ་ལེའུ་སྤྱང་བརྟན་པའོ། །

ས་སྤྱང་ཅན་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ་རྗེ་སྤྱང་གི་འཛིག་ཉེན་གྱི་ཁམས་དེ་ཉིད་ཀྱི་
སྤྱང་གི་ས་གཞི་གང་ཡིན་པ་སྤྱང་། རིགས་ཀྱང་གཅིག་གི་ཆོག་གོ །རིན་ཆེན་བཞི་པ་
ཞེས་པ་ནི་རིན་ཆེན་བཞི་ནི་དེས་དགའ་བ་བྱས་པར་བྱེད་པའོ། །དེ་གང་ཡིན་པ་ལ།
ཕྱང་བའི་སྐགས་ནི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྤྱང་སྐགས་ཀྱི་ཕྱང་བའི་ཕྱང་སྐགས་ཉེ་དེ་
ཡང་རྟེན་པ་བརྟན་པའོ། །ནིའི་སྐྱ་ནི་ཁྱད་པར་དུ་མའི་ནམ་པར་བཤད་པའོ། །དེའི་

1. རྒྱ་རྒྱུ་པུ་དག་དེ་གཉིས་ ཅོ། རྒྱ་རྒྱུ་པུ་སྐགས་པའོ་ རྒྱ་དཔེ།
2. ས་སྤྱང་ས་ སྤྱང་ པེ། སྤྱང་།
3. ངེས་པར་བརྗོད་པ་ལས་ནལ་འབྱོར་མའི་སྐགས་བརྟུ་བའི་ཆོག་འེལ་ལེའུ་ རྒྱ་དཔེ།
4. ས་སྤྱང་ས་ གསེར། པེ།

ཕྱིར་དེ་ཉིད་དམ་པའོ། །མཁའ་འགྲོ་མ་ཡི་རིག་པ་ཆེ། །ཞེས་པ་ནི་དོན་རྒྱུ་མོ་ལ་
 སོགས་པའི་སྒྲགས་སོ། །ཞིའི་སྒྲ་ནི་ངེས་པར་གཟུང་པའོ། །རིག་པའི་ཀླུ་པོ་ནི་རིག་
 པའི་ཀླུ་པོ་སྟེ། ཨོཀར་ཀར་ལ་སོགས་པའོ། །དང་ནི་བརྒྱ་པའོ། །དཔལ་ཉེ་རྒྱ་དེའི་
 རོན་དུ་ཤེས་པ་ནི་ཕྱག་དང་ཞལ་ལ་སོགས་པའོ། ༥ །

གོ་རིམས་བརྒྱུག་པའི་སྟངས་པོ་དང་། རྣལ་འབྱོར་མ་དུག་དང་། དོན་རྒྱུ་མོའི་
 སྒྲགས་བདུ་བའི་ཆོ་གའི་ལེའུ་བརྒྱད་པ་སྟེ། ལེའུའི་བརྒྱས་པའི་རོན་ཏི་ཞེས་བྱ་བ་ནི་
 དཔལ་འཁོར་ལོ་སྟོམ་པའི་ལེའུ་བརྒྱད་པའི་དཀའ་འགྲེལ་ལོ། །



ཅ་བའི་སྐྱགས་ཀྱི་ལས་ཀྱི་ཆོ་གའི་ལེན།

དེ་ནས་ཅ་བའི་གསང་སྐྱགས་ཀྱི།	།
ལས་མཆོག་གོ་རིམ་ ¹ འི་བཞིན་དུ།	།
དེ་ནི་རྣམ་པར་བཤད་པར་བྱ།	།
འཇིག་རྟེན་གསུམ་ ² གང་འི་ཡོད་རྣམས།	།
ཐམས་ཅད་སྐད་ཅིག་གིས་གྲུབ་ ³ པར།	།
ལས་རྣམས་ཐམས་ཅད་བྱེད་པའོ།	༡ །

སྐྱགས་ཀྱི་མཐུ་བཟོད་པ་མེད་པར་འཇུག་པར་⁴མི་འགྱུར་བས་དེ་བརྟན་པའི་སྤྱིར་
 ལེན་དགུ་པ་ནི་དེ་ནས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །དེ་ནས་ཞེས་པ་ནི་སྐྱགས་
 བརྟན་པའི་རྗེས་ལ་ལས་བཤད་པར་བྱའོ་ཞེས་སྤྱིར་རོ། །མཆོག་ནི་ཡོད་ལ་འདོད་
 པའོ། །ཅིའི་སྤྱིར་ཞེ་ན། དེ་བས་ན་ཞེས་གསུངས་རྟེ་གང་ལ་འབྲས་བུ་བརྟན་པ་མེད་
 པར་ཐབས་ལ་འཇུག་པར་མི་འགྱུར་རོ། །ཅ་བའི་སྐྱགས་དང་པོ་ཉིད་དུ་གསུངས་པའི་
 སྤྱིར་དེའི་ལས་ཀྱང་དང་པོར་གསུངས་སོ། །དེ་ཡང་བཅོམ་ལྷན་འདས་ཉིད་ཀྱིས་
 གསུངས་སོ། །འི་བཞིན་ཞེས་པ་རབ་དུ་ཆོགས་པའོ། །གོ་རིམ་ཞེས་པ་⁵ནི་རིམ་པ་འི་

1. གོ་རིམས་ རྟེན། ཤེ། ལ།
2. གསུང་ རྟེན། ཤེ། ལ།
3. འགྲུབ་ རྟེན། ཤེ། ལ།
4. 'འཇུག་པར་' རྟེན་དེ་དང་ཅི་ནིའི་པར་མའི་ནང་མ་གསལ།
5. གོ་རིམས་ཞེས་པ་ རྟེན། ཅི། གོ་རིམས་ཞེས་པ་ གསེར།

ལྷ་པ་བཞིན་ནོ། །སྒྲགས་དེ་བྱེད་པ་པོ་ཉིད་དུ་སྟོན་ཏེ། འཇིག་རྟེན་གསུམ་ན་གང་རུང་
བད་ཅི་ཡོད་པ་ཡང་དེ་ཐམས་ཅད་མ་ལུས་པར་སྐྱབ་པར་བྱེད་དོ། །སྐད་ཅིག་གིས་ནི་
འབྲུམ་བཞུས་པའི་རྗེས་སུ་འོ། ༡ །

ལྷ་ཐམས་ཅད་དང་རྒྱ་ཐམས་ཅད་དང་། གནོད་སྲིན་ཐམས་ཅད་དང་ངི་
བ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྒྲེ་གནས་ཐམས་ཅད་དྲན་པ་ཙམ་གྱིས་གསོད་པར་བྱེད་དོ། །
སྲིན་ཐམས་ཅད་འཁོར་བ་དང་། ཆར་འབེབས་པར་བྱེད་པ་དང་། རྫོག་¹པར་
བྱེད་པའོ། །རྒྱ་མཚོ་སྐྱམ་²པར་བྱེད་དོ། །རྒྱ་པོ་རྒྱན་སྒྲིགས་ལས་བརྫོག་³སྟེ་
འབབ་པར་སྟོན་ནོ། །དབང་པོ་བརྫོག་⁴པར་བྱེད་དོ། །གསང་སྒྲགས་འདི་བཞུས་
བརྗོད་འབྲུམ་བྱས་པས་ས་གཡོ་བར་བྱེད་པ་དང་གིང་ལ་འཇིགས་ཏེ་གང་དུ་
འདོད་པ་དེར་འགྲོ་བར་བྱེད་དོ། །སྒྲགས་ཐམས་ཅད་འཕྲོག་པར་བྱེད་པ་དང་།
དངོས་གྲུབ་ཐམས་ཅད་འཕྲོག་པར་བྱེད་དོ། །ཁྲག་⁵འདྲན་པར་བྱེད་པ་དང་།
སྒར་ཡང་གཏོང་བར་བྱེད་དོ། །གཟུགས་བརྒྱ་སྟོང་ཕྱག་དུ་མར་བྱེད་དོ། །
འདོད་ན་སྒྲུང་བར་བྱེད་ཅིང་འདོད་ན་མི་སྒྲུང་བར་བྱེད་དོ། །ཁང་བཟངས་⁶
དང་གིང་གི་ཚེ་མོ་ལ་སོགས་པ་སྤྱེ་མར་བྱེད་དོ། །དུག་བདུད་ཅིར་བྱེད་པ་དང་།

-
1. བརྫོག་ ལྷ།
 2. སྐྱམས་ རྗེ། པ། ལྷ།
 3. སྒྲིགས་ལས་བརྫོག་ ལྷ། སྒྲིགས་ལ་བརྫོག་ ལྷ།
 4. དབང་པོ་བརྫོག་ ལྷ།
 5. འདོད་པ་(རྩེའི་) རྒྱ་པོ།
 6. ཁང་བཟང་ ལྷ། ལྷ།

བདུད་ཅི་ཡང་དུག་དུ་བྱེད་དོ། །ཟླ་བ་ཆུར་བྱེད་པ་དང་ཆུ་ཟླ་བར་བྱེད་དོ། །དི་
 ཐམས་ཅད་འཕྲོག་པར་བྱེད་དོ། །གང་དུ་འདོད་པ་དེར་འཕོ་བར་བྱེད་དོ། །
 རྣམ་མཁའ་ལྡིང་གི་གདོང་དང་། འགྲོ་བ་འབྱེན་པར་བྱས་པ་ནི་བ་འདུས་པའི་
 ལྷ་མོ་དང་གང་ཞིག་ཀུན་དུ་སྦྱོད་པའི་མིའི་མཆོག་དེའི་ལག་མཐེལ་¹ རྣ་ཡོད་
 པའི་དཔལ་གང་གིས་ཀྱང་མི་འཕྲོག་² པར་འགྱུར་རོ། །རྣམ་པ་དེ་ལྟ་བུའི་ཆོ་ག་
 དང་ལྡན་པའི་དངོས་གྲུབ་ཀྱི་འབྲས་བུ་ཐམས་ཅད་སྐལ་པར་འགྱུར་རོ། །དེ་
 པ་ཙམ་གྱིས་གསོད་པར་བྱེད་པ་དང་མེ་སྦྱེད་³ པར་བྱེད་དོ། །ས་འོག་རྣམ་པར་
 གཤེགས་པར་⁴ བྱེད་པ་དང་། ཐོག་འབེབས་པ་དང་ཡང་སྒྲོག་⁵ པར་བྱེད་དེ་དེ་
 པ་ཙམ་གྱིས་སྒྲོག་སྦྱེད་⁶ པར་བྱེད་དོ། །ལྷ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་གཟུགས་བརྒྱན་གར་
 བྱེད་དུ་འདུག་གོ། །གང་གིས་གྲུབ་པའི་ཕྱིར་མིང་རྣམས་བཟུང་སྟེ་ལན་ཅིག་
 བཟུངས་ན་དེའི་མོད་ལ་འཆི་བར་འགྱུར་རོ། །ས་མ་ལུས་པ་རྣམས་ལ་ལོངས་
 སྦྱོད་པར་འགྱུར་རོ། །འདོད་ན་སྤྱད་པར་འགྱུར་རོ། །བཙམ་ལྡན་འདས་འདི་

1. ལག་འཐེལ་ བེ།

2. མི་འཕྲོགས་ བེ། ལྷ།

3. མི་བསྦྱེད་ བེ། མི་སྦྱེད་ ལྷ།

4. རྣམ་པར་གཤེགས་པས་ བེ། རྣམ་པར་གཤེགས་པར་ རྟེ། ལྷ། ལྷ། གོང་དུ་ཁྱེད་པེ་བཞིན་
 བཞོད་པ་ཡིན།

5. སེར་བ་ཡང་བསྒྲོག་ ལྷ། སེར་བ་འབེབས་པ་དང་ཡང་སྒྲོག་ རྟེ། བེ། ལྷ། གོང་དུ་འགྲེལ་པ་
 དང་ཁྱེད་པེ་ལྷར་བཞག་ཡོད།

6. སྒྲོག་བསྦྱེད་ བེ།

7. ལྷུ་བ་པའི་ ལྷ།

ལ་ནི་བརྟུལ་ཞུགས་མི་དགོས། སྤྱད་པ་དང་སྦྱང་བ་¹མི་དགོས་ཏེ། ཉོག་པའི་
 བྱ་བ་ཆོ་ག་²འདིས་ཅི་འདོད་པའི་ལས་ནམས་བྱའོ། །གལ་ཏེ་སྤྱོད་པས་ལན་
 ཅིག་བཞུས་ན་བྱེ་བ་གསོད་པར་འགྱུར་རོ། །ཞི་བས་བཞུས་ན་འཆོ་བར་
 བྱེད་དོ། །དུར་ཁྲོད་ཀྱི་སོལ་བ་ལ་ལན་ཅིག་བཞུས་པས་གང་ལ་བསྐྱུན་པ་དེའི་
 མོད་ལ་ལྷུང་བར་བྱེད་དོ། །ཐལ་བ་ལ་ཡོངས་སུ་བཞུས་ཏེ་གང་ལ་བསྐྱུན་ན་
 དེའི་མོད་ལ་ག་ཟས་གཟུང་³བར་འགྱུར་རོ། །དུར་ཁྲོད་ཀྱི་སོལ་བ་ལ་ལན་ཅིག་
 བཞུས་ནས་⁴སྤང་ལེབ་ལ་སོགས་པ་ལ་མཆན་མོ་གང་གི་མིང་བྲིས་པ་དེ་གདོན་
 ཆེན་པོས་བཟུང་བར་འགྱུར་རོ། །ཨ་ཏི་མུ་ཏྲིའི་⁵ལྷུག་མ་ལ་ལན་གཅིག་བཞུས་
 ནས་གང་ལ་བསྐྱུན་པ་དེ་དེའི་མོད་ལ་ལྷུང་གི་ཤུགས་ཀྱིས་འོང་བར་འགྱུར་རོ། །
 གསེག་མ་ལ་ལན་ཅིག་⁶བཞུས་ཏེ་གང་ལ་བདེགས་པ་དེ་རེངས་པར་འགྱུར་རོ། །
 གང་དུ་འདོད་པ་དེར་འགྲོ་བར་འགྱུར་རོ། །གུ་གུལ་གྱི་བདུག་པ་ལ་ལན་ཅིག་
 བཞུས་ཏེ་སྤྱོད་སུ་སྦྱར་ན་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་འཕེབས་པར་འགྱུར་རོ། །
 ལག་པ་ལ་ལན་ཅིག་བཞུས་ཏེ་བཀའ་ན་ནག་པོས་བྲིན་པའི་དུག་གསོས་⁷པར་

1. བསྐྱུང་བ་ ལྷ། སྦྱང་བ་ བེ།

2. ཆག་ བེ།

3. ག་ཟས་བཟུང་ ལྷ། བེ། ལྷ།

4. ལན་ཅིག་བཞུས་ན་ བེ། ལྷ། ‘ལན་ཅིག་བཞུས་ནས་’ ཟུང་པེར་མེད།

5. ཨ་ཏི་མུ་ཏྲིའི་ བེ། ལྷ།

6. བསེག་མ་ལ་ལན་གཅིག་ ལྷ།

7. དུག་གསོས་ བེ། གདོང་བཀའ་ན་མུ་དུག་གསོས་ ཟུང་པེ།

བྱེད་དོ། །མཁའ་འགྲོ་མས་ཀྱིས་བཏབ་པ་ལ་ལན་ཅིག་བཞས་པའི་ཆུས་དེ་
གཏོང་བར་བྱེད་དོ། །ཀར་བྱེད་འཁྱུག་མ་ལ་ལན་ཅིག་བཞས་པས་མངལ་
གང་དུ་འདོད་པ་དེར་འཕྲོ་བར་འགྱུར་རོ། ༡ །

སྐབ་པ་པོའི་བྱ་བ་ནི་ཐམས་ཅད་བྱེད་པ་པོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །
སྐེ་པོ་(སྐེ་)ནི་ངེས་པར་གཟུང་བའོ། །ལས་ཐམས་ཅད་ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་
གསུངས་ཏེ། ལྷ་ཐམས་ཅད་ནི་མཐོང་བའི་དུག་ལ་སོགས་པས་ནི་དོན་ཉམས་པར་
བྱས་པའོ། །དེའི་ཕྱིར་དེ་དང་པོར་བསྟན་པས་ནའོ། །ལྷ་ཐམས་ཅད་ནི་སེང་གེ་དང་
འཕྲིག་བྱེད་དང་དབྱེག་གི་སྤྲིང་པོ་ལ་སོགས་པའོ། །གཞོན་སྤྱན་ཐམས་ཅད་ནི་བས་སུ་
མངས་ཟེ་བ་ལ་སོགས་པའོ། །ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྐྱེ་གནས་ཞེས་པ་ནི་མ་རུངས་པའི་མི་
ནམས་སོ། །ལས་ཀྱི་དང་པོ་ལྷ་ནམས་ནི་སློག་གཅོད་པ་ལ་སོགས་པས་གདུང་བར་
བྱེད་པའོ། །གསད་པ་ནི་སྐབ་པ་པོས་དེ་སློག་ཏིང་བྲལ་བར་བྱེད་པ་སྟེ། དེ་ནམས་ནི་
ནང་ན་གནས་པའི་མ་རུངས་པ་ལ་མཐུ་འདི་གསུངས་པའོ། །ཡང་འཆོ་བར་བྱེད་པའི་

1. མཁའ་འགྲོས་ ལྷ། བེ། ལྷ།
2. དེ་འེངས་པར་བྱེད་ རྒྱ་དཔེ།
3. ལྷགས་མ་ལ་ལན་གཅིག་བཞས་ ལྷ། ལྷག་མ་ལ་ལན་ཅིག་བཞས་ བེ།
4. སྐབ་པ་པོའི་བྱེ་བ་ རྟེ། ཅོ།
5. པ་ནི་དོན་མཉམ་ རྟེ། ཅོ། པས་དོན་མཉམ་ གསེར། བེ། གོང་བཞོད་རྒྱ་དཔེ་བཞིན་ཡིན།
6. ལྷ་མོ་ རྟེ། ཅོ།
7. སྐྱེ་གནས་གས་པ་ གསེར། བེ།
8. བསད་པ་དེ་སྟེད་ གསེར། བསད་པ་དེ་སྟེད་ བེ།

རྒྱས་པ་དང་ལྷན་པར་རིག་པར་བྱའོ། །གཞན་དུ་ན་ཡང་སྤྱིང་རྗེ་ཅན་ལ་རྒྱས་པ་མེད་
པར་ཐལ་བའི་བྱེར་རོ། །དེ་ནི་སེམས་དང་མི་ལྷན་པའི་ཡང་རྒྱས་པ་སྟོན་ཏེ། སྤྱིན་
ཐམས་ཅད་ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །འདར་བ་ནི་སྒྲག་པར་བྱེད་གཡོ་
བར་བྱེད། དུམ་བུ་དུམ་བུར་བྱེད་ཅེས་པའི་དོན་ཏེ། །ཆར་འབབས་པར་བྱེད་དོ་ཞེས་
པ་ནི་ཆར་འབབས་པ་སྟེ། ཆར་འབབས་པ་ནི་སྤྱིན་ལས་ཆར་འབབས་པར་བྱེད་པའོ།
སྒྲག་མ་ནི་གོ་སྟོན་པའོ། །

ཆུ་པོ་ཞེས་པ་ནི་རྒྱུན་དག་པ་དང་ལྷན་པའོ། །འདིས་ཅི་ཞེས་པ་ལ་དབང་པོ་སྒྲོག་
པར་བྱེད་དོ་ཞེས་གསུངས་ཏེ། དབང་པོ་རིགས་ལས་གཅིག་གི་ཆོག་གོ། །བདག་པོ་
བྱེད་པས་ན་དབང་པོ་སྟེ་སེམས་བཅས་དང་སེམས་མེད་ཀྱི་བདག་པོ་བྱ་བ་མ་ཡིན་པར་
བྱེད་པ་དགག་གོ་ཞེས་པའི་དོན་ཏེ། །གཡོ་བར་བྱེད་ཅེས་པ་ནི་རོལ་བར་བྱེད་པའོ། །
ཤིང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པས་ནི་སེམས་མེད་པ་ཡང་སེམས་དང་བཅས་པ་བཞིན་དུ་
བྱེད་དོ་ཞེས་པའི་དོན་ཏེ། །སྒྲགས་ཐམས་ཅད་ཅེས་པ་ནི་སྒྲགས་ཀྱི་རྒྱས་པ་ཞུགས་
པས་ཡང་འཕྲོག་པར་བྱེད་དོ་ཞེས་པའི་དོན་ཏེ། །འདིས་ནི་ངག་འཕྲོག་པར་བརྟན་པ་
ཡིན་ནོ། །དངོས་གྲུབ་ཐམས་ཅད་ནི་བརྒྱུད་ལེན་ལ་སོགས་པའི་དངོས་གྲུབ་ཐམས་
ཅད་དེ། གྲུབ་པའི་རྗེས་ལ་སོགས་པ་འཕྲོག་པར་བྱེད་དོ་ཞེས་པའི་དོན་ཏེ། །ཟས་
འདོད་པ་དགུག་པར་བྱེད་དོ་ཞེས་པ་ནི་ཡིད་ལ་འདོད་པ་གཞན་ལས་ལེན་པའོ། །
སྒྲར་གཏོང་བ་བྱེད་པ་ཞེས་པ་ནི་སྒྲགས་ལ་སོགས་པའོ། །ལུས་སུ་གཏོགས་པའི་

1. བྱེད་པ་དག་གོ་ གསེར། བེ།

2. འགྲུལ་བར་ རྟོ། ཅོ།

སྐྱེགས་ཀྱི་མཐུ་ནི་གཟུགས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ་འདིས་ཕྱག་དང་ཞལ་
 མང་པོ་ལ་སོགས་པ་ཉིད་བསྟན་པ་ཡིན་ནོ། །འདོད་ན་ཞེས་པ་ནི་ནལ་འབྱོར་པ་འདོད་
 ན་མཐོང་ཞིང་མི་འདོད་ན་མི་མཐོང་སྟེ་མི་སྤང་བ་བྱུང་བ་སྟེ་གཟུགས་སྟེད་པའི་རྒྱས་
 པ་དང་ལྡན་པའོ། །ཡང་ན་གང་གིས་ནལ་འབྱོར་པའི་གཟུགས་བསྟན་བ་ལ་སོགས་པ་
 མཐོང་སྟེ། དེ་ནས་དེའི་བསམ་པ་གཤམ་ནས་དེ་ལ་སྟོན་པ་ནི་ཅི་འདོད་འཛོལ་པའོ། །
 ཁང་བཟངས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལེགས་པར་བརྟེན་པ་ཡང་འཛོལ་པར་སྟོན་
 པའོ། །སོགས་ཀྱི་སྒྲས་ནི་དང་བྲག་གི་རི་ཡང་བསྟན་ཏོ། །ལེགས་པར་བརྟེན་པ་
 ཡང་འཛོལ་པའི་རྒྱས་པ་ཅན་ནོ། །དུག་ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ནི་དངོས་པོའི་རང་
 གི་ངོ་བོ་ཉིད་གཞན་དུ་བྱེད་པའི་རྒྱས་པ་དང་ལྡན་པའོ། །ཟླ་བ་ནི་ཆང་སྟེ་ཆུར་བྱེད་
 པར་རོ། །ཐམས་ཅད་ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པས་ཆང་ལ་སོགས་པའི་དྲི་འཕྲོག་པར་
 བསྟན་ཏོ། །ཐབས་འདིས་གདུལ་བྱ་དེ་དང་དེ་ལ་མཐུ་སོ་སོར་བསྐྱབས་པ་ཉིད་དུ་
 བསྟན་པ་ཡིན་ནོ། །ནམ་པ་གཞན་དུ་བཤད་པ་ཡང་ཡོད་དེ་སྐྱེ་ཐམས་ཅད་ཅེས་པ་ནི་
 ཉོན་མོངས་པ་ཐམས་ཅད་དོ། །ཐམས་ཅད་ཀྱི་རོལ་པས་ནི་ཡུལ་གཟུགས་ལ་སོགས་
 པ་ལ་ལྟ་ཐམས་ཅད་ཅེས་བྱའོ། །ཐམས་ཅད་དུ་ཀླུ་བར་བྱེད་པས་ན་གཞོད་སྦྱིན་
 ཐམས་ཅད་དེ། དེས་པའི་ཆོག་གིས་ཇ་ལས་ཡར་བྱས་པའོ། །དེ་ཡང་དབང་པོ་
 ཐམས་ཅད་དོ། །སྐྱེ་བའི་གནས་ཏེ་སྐྱེ་བའི་རྒྱ་ནི་སྐྱེ་གནས་ཐམས་ཅད་དོ། །དངོས་

1. 'སྟོན་པ་ནི་ཅི་འདོད་' སྟེ་དག་དང་ཅི་ནི་གཉིས་སུ་མེད།

2. ཁང་བཟང་ བེ། གསེར།

3. ཀྱིས་སྒྲས་ནི་ཇ་ གསེར། བེ། ཀྱི་སྒྲས་ནི་ཇ་ སྟེ། ཅི། ཁོང་དུ་ཀྱུ་དཔེ་ལྟར་བཞག་ཡོད།

གྲུབ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ལས་དྲན་པ་ཙམ་ནི་བསམ་པ་ལོ། །གསོད་པ་ནི་ནམ་པར་དག་པར་
 བྱེད་པ་ལོ། །སྤྱིན་ནི་མཁའ་འགྲོ་མ་ནམས་ཀྱི་ཙམ་མཆོམས་སོ། །འཕྱོར་བར་བྱེད་པ་
 ནི་ལྷ་བར་བྱེད་པ་ལོ། །ཁར་འབེབས་པ་ནི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་འབེབས་པ་ལོ། །ཆོག་
 པར་བྱེད་པ་ནི་དེ་ནམས་བདན་པར་བྱེད་པ་ལོ། །ཁྱ་མཆོན་ནི་སྤྲིག་པ་ལོ། །ཁུ་པོ་ནི་ས་
 པོན་ཏེ་གྲུན་དུ་ཆོག་པར་བྱེད་པ་ལོ། །དབང་པོ་ནི་སེམས་སོ། །ཐམས་ཅད་ཀྱི་བདག་
 བྱེད་པ་ནི་བདན་པར་བྱེད་པ་ལོ། །གསང་སྤྲུགས་འདི་བཟླས་བརྗོད་འབྲུམ་བྱས་པ་ནི་
 སྤྲུགས་འདི་ཞེས་པ་ནི་དུག་པ་ཕྱི་བལོ། །མཆོན་པར་བྱས་པ་ན་འབྲུམ་སྟེ་དཔལ་
 ཏེ་རུག་ལོ། །དང་པོར་ཨ་ཙའི་རྒྱན་བྱས་པ་ལོ། །དེའི་བཟླས་པ་ནི་ཡིད་ཀྱིས་བྱ་སྟེ།
 བསྟོམ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །འདི་ཐམས་ཅད་ནི་སྤྲུགས་བཟླས་པ་དང་དཔལ་ཏེ་རུག་
 བསྟོམ་ཞེས་དགོངས་པ་ལོ། །དཀྱིལ་འཁོར་བྱི་བའི་དུས་སུ་ས་ཁྲང་པ་ནི་ས་གཞི་གཡོ་
 བར་བྱེད་པ་ལོ། །ཤིང་ནི་ནམ་པ་ལྗེའི་ནལ་འབྱོར་རོ། །དེ་ལ་ཞོན་ནས་གང་འདོད་
 པའི་གང་འཛོལ་བར་འདོད་པ་དེ་རྟེན་པ་ལོ། །འདི་འདོད་པ་དཔལ་ཏེ་རུག་ཏེ་དོ་ཞེས་
 དགོངས་ཏེ། །ཨོ་ལ་སོགས་པ་སྐྱབ་ཐབས་ལས་གསུངས་པའི་ཆོ་གས་རྣམས་ལ་སོགས་
 པ་ལ་ཐིག་ལེ་ལ་སོགས་པ་ཁྱུགས་ཏེ། །རང་བཞིན་མེད་པར་བྱས་པ་ནི་ཐམས་ཅད་
 ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པས་བསྟན་ཏེ་² །ཡང་ཐམས་ཅད་ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ནི་རྣམས་
 ལ་སོགས་པ་ཁྱུགས་པ་གྲུབ་ནས་རྣམས་ལ་སོགས་པ་ཕྱིར་བྱུང་སྟེ་ཐམས་ཅད་གྲུབ་པ་ཉི་
 བར་སྟོན་པ་ལོ། །འདོད་ན་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པས་ནི་སྟོབ་པ་ལ་སོགས་པ་ལོ། །གཟུགས་

1. འདོད་པའི་དོན་ སྟེ། ཅི།

2. བསྟན་ཏོ་ བཤ། གསེར།

ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ནི། །མོ་ཀར་ཀར་ལ་སོགས་པའི་སྒྲགས་ཀྱི་ཆའོ། །འདོད་ན་
 ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་ནི་སྟོན་ལམ་མོ། །མི་འདོད་ན་ཞེས་བྱ་བ་ནི་མངོན་པར་ཞེན་པ་
 མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །འདིར་ཁང་བཟངས་ཀྱི་ཞེས་པ་ནི་ཡིད་ལ་བཟང་བས་ན་ཁང་
 བཟངས་ནི་ལུས་སོ། །ཤིང་ནི་ལྷ་བར་གྱུར་པས་ན་འོ། །ལུང་དང་བཞུན་པས་ཉག་ཏུ་
 ཀའི་ཁྱེན་བྱས་པའོ། །ཤིང་ཉིད་ནི་ལྷ་བ་སྟེ་ཆོར་བའོ། །ཅེ་མོ་ནི་སེམས་སོ། །སོགས་
 ཀྱི་སྒྲས་ནི་ཆོས་སོ། །སྤྱེ་མར་བྱེད་པ་ཞེས་པ་ནི་ཤེས་རབ་ཀྱི་མཆོན་གྱིས་འབྱེད་པའོ། །
 འདིས་དྲན་པ་ཉེ་བར་གཞག་པ་བཞི་བརྗོད་པས་སྟོང་པ་ཉིད་བཞུན་པ་ཡིན་ནོ། །དུག་
 ནི་ཡུལ་ལོ། །བདུད་ཅི་ནི་བདུད་ཅི་²ལྟ་བུར་རོ། །

དམན་པའི་ཡུལ་ནི་བདུད་ཅི་སྟེ། །

བཞུན་པས་བདུད་ཅིར་བྱེད་པའོ། །

དེ་ཡི་སེམས་ཀྱི་ནམ་ཐར་ནི། །

མར་མེ་ལྟ་བུ་མུ་ངན་འདས། །ཞེས་བྱའོ། །

མུ་ངན་ལས་འདས་པ་ནི་དུག་ལྟ་བུ་སྟེ་བཞུན་པར་བྱ་བ་མ་ཡིན་པ་ཉིད་ཀྱི་
 ཕྱིར་རོ། །གཟུགས་ལ་སོགས་པ་སྤངས་ནས་ལོངས་སྟོན་དེ་ཞེས་དགོངས་སོ། །ཟླ་བ་
 ཞེས་པ་ནི་ཡུ་དང་མ་གཉིས་དང་ལྟན་ཅིག་ཏུ་གནས་བྱས་པ་ནི་ཟླ་བ་སྟེ་མོ་མོ། །ཡུ་
 ཡང་ཡིན་ལ་ཡང་ཡིན་པས་ཡུ་དང་མའོ། །ལྷགས་ལས་བཞྌག་ནས་སྐྱར་བའོ། །ཟླ་
 ཕྱེད་དང་རྒྱད་ནི་མན་ངག་གིས་སོ། །ཁུ་ནི་བ་སྟེ་ཁུ་ཉིད་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །བྱེད་དོ་

1. ཁང་བཟང་གསེར། བེ།

2. བདུད་ཅི་ལྟ་སྟེ། ཅི།

ཞེས་པ་ནི་ཚུ་ཡང་ལན་གཉིས་སུ་སྒྱུར་རོ། །ཟླ་བ་ཞེས་པ་ནི་སྤྲུལ་བ་ཞིན་ནོ། །དེ་ལ་
འདིའི་སྤྲུགས་ནི་མོ་བ་མོ་ཞེས་བྱ་སྟེ་ཚུའི་དགྲིལ་འཁོར་ལ་ཀུན་དང་ཟླ་བ་ལྟ་བུའི་
དཀར་པོ། །ཡི་གེ་བཞི་ཕྱོགས་བཞིར་བྱས་ལ་གོས་གཙང་མས་བརྒྱན་པ་བསྐྱབ་བྱ་
དེ་ཡང་དེའི་དབྱས་སུ་བསམས་ལ་མདུན་དུ་སྤྲུགས་ཀྱི་ཡི་གེ་དེ་ནམས་ལས་བདུད་ཅིའི་
ཐིགས་པ་འདྲ་གཙང་དེ་ལ་འབབ་པར་དམིགས་ལ་བཟུངས་པ་བྱ་དེས་ཅི་ཞེས་པ་ལ་
ཐམས་ཅད་ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་ཏེ། དེ་ནི་ནད་དང་དུག་ལ་སོགས་པོ། །རྣལ་མ་ནི་
གོ་སྟོན། །

ནམ་མཁའ་ལྗང་གི་གདོང་ནི་གདོང་དང་སྒོ་དང་ཐབས་ཞེས་པ་ནི་ནམ་
གངས་སོ། །གདོང་དག་ན་འགྲོ་བའི་ཐབས་དག་སྟེ་གསོག་པ་གཉིས་ཏེ་བྱ་བྱ་བྱུང་ཏེ་
བྱ་བྱུང་གི་གདོང་རོ། །ཡང་ན་གདོང་ཞེས་པ་ནི་གསུམ་པ་སྟེ་བའོ། །བྱ་བྱུང་ནི་བྱ་
བྱུང་ཏེ་བྱ་སྟེ། དབྱང་པ་གཉིས་གསོག་པ་ཏེ་བྱར་བསྐྱོད་པས་འཁོར་བའོ། །འགྲོ་བའི་འགྲོ་
བའོ། །འབྲེན་པ་ནི་སྐྱོད་པར་བྱེད་པའི་ཞེས་པས་འགྲོ་བ་ལ་སྐྱེན་པར་བྱེད་པ་ནི་ནལ་
འཁྱོར་པའོ། །ཟླ་བ་དག་ཐབས་དང་ཤེས་རབ་ལས་བྱུང་བའི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་དག་
འདུས་པ་མཉམ་པར་སྐྱོད་པའོ། །གང་བྱད་མེད་མེ་ཏོག་དང་ལྡན་པ་ནམས་ལ་མི་ནམ་
པར་དབྱེ་བ་མཁའ་པས་སོ། །མཆོག་ནི་ཐུན་མོང་མ་ཡིན་པའོ། །དེས་དེའི་བྱང་
ཆུབ་ཀྱི་སེམས་ཁས་སྒྲངས་ལ་བྱ་བྱུང་བཞིན་དུ་གསོག་པ་གཉིས་བསྐྱོད་ཅིང་ཤེས་རབ་

1. ཤེས་པ་ གསེར། བ།

2. སྐྱོད་པས་ གསེར། བ།

3. མིང་ནམ་པར་དབྱེ་བ་ལ་ བ། མིང་ནམ་པར་དབྱེ་བ་ རྟེན་ ཅི། གསེར། གོང་འཁོད་ཅ་བ་བཞིནོ།

ཀྱི་ཁར་བྱིན་པ་ལྷག་མ་རང་གིས་བདུང་བར་¹བྱའོ། །དེ་ཡང་རྒྱང་པ་བརྒྱད་པའི་
 རྒྱགས་འབྱམ་བཞི་དེ་ནས་མཉམ་པར་བསྐྱབ་པའོ། །དེ་ལ་ཡོད་པ་ནི་གནས་པའོ། །
 དཔལ་ནི་ལོངས་སྤྱོད་ཀྱིས་རྒྱས་པ་ཡིན་ཏེ། །དེ་ཡང་རྒྱའི་བྱ་ལ་སོགས་པའི་བགེགས་
 ཀྱིས་གཞོམ་པར་མི་རྒྱས་སོ་ཞེས་པའི་དོན་ཏེ། །དེ་ལ་²མན་ངག་ནི་འདི་ཡིན་ཏེ།
 ཀྱུ་ལོ་རྒྱ་ནི་སྤྱོར་བས་³མུ་ནི་མུ་ཁུ་ཞེས་བྱང་བ་རྟེ། མུ་ལས་⁴མུ་ཁུ་ཏེ། །ཁ་ནི་ཙུ་
 བའོ། །དེས་གདོང་ནི་གཉིས་སུ་མེད་པའི་ཡེ་ཤེས་རྣམ་པར་དག་པའོ། །ག་ནི་བྱང་
 སྤྱོགས་སུ་རྒྱ་ལ་སོགས་པ་ཉིད་རྣམ་པར་དག་པའོ། །རུ་ནི་རྒྱབ་སྤྱོགས་སུ་སྤྱོན་པ་ལས་
 སྤོལ་བ་ནི་རྣམ་པར་དག་པའོ། །ཏ་ནི་སྤོ་སྤྱོགས་ན་གང་དུ་ཡང་ནི་གནས་པ་རྣམ་པར་
 དག་པའོ། །བརྒྱས་པ་བྱ་བྱང་གི་གདོང་ངོ་། །འདི་གང་ལ་ཡོད་པ་དེ་ནི་བྱ་བྱང་གི་
 གདོང་རྟེ། དཔལ་དེ་རུ་ཀའོ། །ཞི་བའི་འདུས་པ་གང་ཡིན་པ་ལ་མཉམ་པར་སྤྱོད་པ་གང་
 ཡིན་པ་དེ་ནི་བྱ་བྱང་གི་མགོ་ཞེས་ཀྱན་ལ་སྤྱར་རོ། །ཇི་རྩ་བྱར་བྱར་པ་ལས་ཤེས་པ་
 ལས་འགོ་བ་འབྲིན་པར་བྱེད་པ་ཞེས་གསུངས་ཏེ། འགོ་བ་ནི་ཤེས་རབ་དང་ཐབས་ཀྱི་
 ཡེ་ཤེས་སོ། །དེ་འབྲིན་པ་ནི་དེ་སྤྱོད་པར་བྱེད་པའོ། །གང་ལས་ཞེས་པ་⁵ལ་རྩ་མོ་ཞེས་
 བྱ་བ་གསུངས་ཏེ། རྣལ་འབྱོར་མ་རྣམས་སོ། །ས་ནི་ཟླ་བྱེད་དེ་བདུད་རྩི་འུ་ས་བོན་
 ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ནས་ཨུའོ། །དེ་ནས་དུམ་བུའི་མིང་ནི་ཐིག་ལེ་བཞི་དཔེ་པའོ། །ཨ་

1. གཏུང་བར་གསེར།
2. 'ལ' གསེར་བྱིས་དང་ཕེ་ཀྱང་དུ་མེད།
3. ཀྱུ་ལོ་རྒྱ་ནི་ཡོག་ན་རྒྱ་དཔེ།
4. མུ་ལས་གསེར། དེ།
5. ཤེས་པ་གསེར། དེ།

ནི་འོག་གི་ལོགས་ཀྱི་ཀང་པ་བརྗོད་པའོ། །ཟླ་བས་ཡང་དག་པར་འགྲོ་ནི་ཟླ་བའི་འདུས་
 པ་སྟེ་ཏའོ། །བརྒྱས་པ་རྟུ་ངོ་། །རྒྱ་དེ་གདམས་ངག་ལས་སོ། །དེ་ལ་མཉམ་པར་
 སྦྱོད་པ་ནི་ཤེས་པ་སྟེ། རི་སྤྱོད་དུ་བསྐྱོམ་པར་བྱ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །མིའི་སྦྱའི་ལུགས་
 ནི་རྩོད་དེ་ཀའི་དབྱེངས་ལས་སྦྱེ་ནི་གནས་རི་ལྟ་བར་རྩ་མོ་ནམས་དགོད་པ་ལ་མི་ཞེས་
 བྱ་བ་སྟེ་ཨ་ཙ་ལ་སོགས་པའི་རྒྱུན་བྱེན་པས་སོ། །མཆོག་ནི་འདྲན་པ་པོ་ཉིད་ཀྱི་
 བྱེར་རོ། །རྟུ་ལས་སྦྱེས་པའི་དོ་རྗེའི་སྟེ་བ་ལ་གནས་པའི་རྟུ་ལས་སྦྱེས་པའི་དཔལ་
 ཏེ་རུ་ཀ་འབྱེན་པར་བྱེད་དོ་ཞེས་བརྒྱས་པའི་དོན་ཏོ། །དེ་ལ་ཡང་ཡོད་པའི་དཔལ་ནི་དོ་
 རྗེ་པག་མོའོ། །གོ་ཆའི་ནང་དུ་སྤྱོད་ཀྱང་གཞིམ་པར་མི་རྒྱས་སོ། །ཡན་ལག་གོ་ཆ་
 ཙམ་ཡང་མི་ཐོབ་པའོ། །དེ་ལྟར་སྤར་བ་རྟེན་པའི་ཆོ་ག་དང་ཡང་དག་པར་ལྟན་པའི་
 རི་ལྟ་བ་ཡིན་པ་དེ་དེ་བཞིན་དུ་དངོས་གྲུབ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་འབྲས་བུའི་སྐལ་པ་དང་ལྟན་
 པར་འགྱུར་རོ། །དན་པ་ཙམ་གྱིས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ནི་མི་དང་བྱོལ་སོང་དང་
 དམུལ་བར་གཏོགས་པ་ལ་རྒྱས་པའོ། །མེ་ནི་རའོ། །མེའི་དཀྱིལ་འཁོར་ལས་བྱ་གསུམ་
 པ་ནམ་པར་བསྐྱོམས་ལ་རྒྱང་གི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱིས་བསྐྱལ་བས་སྒོ་བྱར་དུ་མི་སྦྱོད་པར་
 བྱེད་པ་ཡིན་ཏེ། སྤགས་ཀྱི་རྒྱས་པ་བསམ་གྱིས་མི་བྱུང་པའི་བྱེར་རོ། །ས་འོག་
 འཛོམས་པར་བྱེད་དོ་ཞེས་པ་ནི། ས་འོག་ན་གནས་པའི་སྟོ་འཕྲེའི་ཆོགས་ཏེ་ས་འོག་
 འཛོམས་པར་བྱེད་ཅེས་བྱའོ། །དེས་རྩང་ཟད་མི་རྒྱས་ཞེས་པ་ནི་སྦྱོ་པ་ཞེས་པའི་དོན་

1. མའི་སྦྱའི་ལུགས་ནི་བྱ་བ་ཏི་གའི་ བོད་འགྱུར་པར་མ། གོང་དུ་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་བཞག་ཡོད།

2. སྦྱེན་ གསེར། བེ།

3. ཡང་དག་པ་ གསེར། བེ།

ནམ་འཇིགས་པར་¹བྱས་པའོ། །ཐོག་²ཀྱང་འབེབས་པར་བྱེད་དོ་ཞེས་པ་³། ཀྱང་གིས་
ནི་མཆོན་ཆའི་བྱེ་བྲག་གཞན་ཡང་ངོ་། །ཐོག་ནི་སྟོན་མོ་སྟེ་སྐྱའི་དབྱིངས་ལས་བརྟན་
པའི་སྐྱ་⁴འདྲོད་ན་གནས་ཀྱང་འབེབས་སོ་ཞེས་པ་ནི་དོན་གཞན་ནོ། །སྐྱོག་ཅས་པ་ནི་
ལས་ཀྱི་སྐྱ་ལ་དང་པོའོ། །སྐྱིན་མེད་པར་ཡང་སྐྱོག་བསྐྱེད་པའོ། །སྐྱོག་ནི་གིན་ཏུ་
མངོས་གིང་གསལ་བར་བྱེད་དེ། དན་པ་ཙམ་མམ་བསམས་པ་ཙམ་གྱིས་དེ་བསྐྱེད་
པའོ། །སྐྱོག་ནི་ནོར་འཛིན་ཏེ་དེ་དན་པ་ནི་རྒྱུ་ལས་བསྐྱེད་པར་བྱའོ་ཞེས་པའི་དོན་
གཞན་ནོ། །རྟག་མ་ནི་གོ་སྟེའོ། །

གང་ཞིག་གྲུབ་པའི་མིང་ནས་བཟུང་སྟེ་ཞེས་པ་ནི། གང་གི་མིང་བཟུང་བ་ཙམ་
གྱིས་⁵རྟགས་ལ་སོགས་པ་གྲུབ་པར་འགྱུར་རོ། །གང་གིས་གིན་ཏུ་ཡང་རྟགས་ལ་
སོགས་པ་གྲུབ་པ་ཡིན་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །མིང་བཟུང་བས་⁶རྟགས་གྲུབ་པོ་ཞེས་
བརྟུས་པའི་དོན་ཏོ། །གིན་ཏུ་སྐྱ་སྟེགས་པ་རྟགས་གྲུབ་པའི་རྟུས་པ་ཙན་ཡང་ལན་ཅིག་
བཞས་པས་འཆོའོ། །འདྲོད་པའི་ཁམས་ལ་སོགས་པ་བཞི་ལ་ལོངས་སྟོན་པའི་སྐྱེ་བོའོ། །
ཡང་ན་ས་གཞི་རྣམས་ལས་རྒྱས་པར་སྐྱུ་ལ་ལོ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །དེའི་སྤྱིར་འདྲོད་ན་
ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། དེས་པ་⁷ལ་སོགས་མེད་པར་གྲུབ་ཅས་བརྟན་

1. སྐྱ་ལབ་ཞེས་པའི་དོན་ནམ་འཇིག་པར་གསེར།

2. ཐོག་གསེར། བཤ།

3. ཞེས་པ་ལ་བཤ། གསེར།

4. བརྟན་པའི་སྐྱ་གསེར།

5. གཟུང་སྟེ་ཞེས་པ་ནི་གང་གི་མིང་གཟུང་བ་ཙམ་གྱི་དོན་གྱིས་གསེར། བཤ།

6. གཟུང་བས་གསེར། བཤ།

7. དེས་པར་སྟེ། ཅོ།

པའི་ཕྱིར། འདི་ཡང་ནི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །འདི་ལ་ནི་རྒྱུ་པ་
 བརྒྱད་ཅུ་པའི་སྒྲགས་སོ། །དེས་ཅི་འདོད་པའི་ལས་བྱེད་དོ་ཞེས་སྒྲུར་འོ། །བརྒྱལ་
 རྒྱགས་ནི་བརྒྱལ་རྒྱགས་²ཆེན་པོ་ལ་སོགས་པའོ། །སྦྱོད་པ་ནི་སྒྲིག་སྤངས་ཀྱི་སྦྱོད་པ་ལ་
 སོགས་པའི་གཟུགས་སོ། །སྦྱང་བ་ནི་ཞག་གཅིག་དུ་ཟས་མི་བར་གནས་པའོ། །དེ་
 ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་བཟའ་པ་ཅམ་གྱིས་འགྲུབ་ཅེས་པའི་དོན་དོ། །རྟོག་པ་ནི་བརྟན་བཅོས་ཏེ།
 དེ་ལས་གསུངས་པའི་ཉི་པར་སྦྱོད་པའི་ཆོ་ག་སྟེ། ཇི་ལྟར་འདོད་པར་གནས་པའོ། །
 ད་ནི་རྟན་ཅིག་བྱེད་པའི་སྟན་དང་སྒྲགས་ཀྱི་རྣམ་པ་སྟོན་ཏེ། གལ་ཏེ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་
 སོགས་པ་གསུངས་སོ། །ས་ཏྟག་ལ་ཆེ་གེ་མོའི་མགོ་པོ་བཟའོ་ཞེས་བེད་ཁྱིང་འཆང་ན་
 མ་རུངས་པ་³སྒྲགས་ལན་ཅིག་བརྗོད་པས་སེམས་ཅན་བྱེ་བ་གསོད་པར་འགྱུར་རོ། །
 ཁྱོ་བ་མེད་ཅིང་སེམས་ཁྱི་བར་བྱ་སྟེ་མགོ་ཆ་ཁྱིང་དཀྱིས་པར་དམིགས་ལ་བཞུས་ན་
 སྒར་འཆོ་བར་འགྱུར་རོ། །སྒར་གསོ་བའོ། །གང་འདིས་སྟོག་ཐོབ་པ་ནི་འཆོ་བ་སྟེ་དེ་
 བྱས་པ་ནི་སྟོག་འཆོ་བའོ། །ཨ་རི་སྒྱུའི་⁴སྟོ་ཕྱོགས་སུ་གཏོགས་པའི་ཡལ་ག་ཅན་ལི་ལ་
 སོགས་པའི་སྟ་རེས་བཅད་པ་སྤངས་ལ་ནག་པོའི་སྟོགས་ཀྱི་བརྩུ་བཞིའི་རྩལ་མོ་དུར་
 ཁྱོད་དུ་མེ་ལ་བསྟེགས་ཏེ། དེའི་ལོ་མ་ཁུ་བས་བསད་ལ་སོལ་བ་དང་ཐལ་བ་བསྐྱུ་བར་
 བྱའོ། །ཡང་ན་དུར་ཁྱོད་ཅེས་པ་⁵ནི་དུར་ཁྱོད་དུ་གཏོགས་པའི་ཐལ་བའོ། །གསུམ་

1. ཞེས་སྒྲུར་ བཤ། གསེར།

2. 'རྒྱགས་' བཤེས་དུ་མེད།

3. ཆང་ན་མ་རུངས་པས་ གསེར། བཤ།

4. ཨ་རི་སྒྱུ་ཤིང་གི་ རྩུ་དཔེ།

5. ཅེས་པའི་ གསེར། བཤ།

པ་¹ཕྱི་བའོ། །སྟོལ་བ་ཞེས་པ་འདི་གཟའ་མིག་དམར་གྱི་དུས་²སུ་བལ་བ་ཆོ་ག་འདིས་
 གང་ངོ་ཞེས་པ་ནི་བསྐྱུས་པའི་དོན་ཏོ། །སྐྱགས་འབུམ་བཟུངས་པའི་རྗེས་སུ་ཞེས་པ་ནི་
 ཡུལ་ལྷོ་ལུ་ཡལ་གའི་ཁྲི་³ལ་འདུག་སྟེ་བྱ་མོས་བཀལ་བའི་སྐྱད་པ་སུམ་གྱི་ལ་⁴དུ་བྱས་
 ཅས་ཡུང་བས་ཁ་བསྐྱར་ཏོ། །རྒྱུ་ཕྱོགས་སུ་གཏོགས་པའི་ཡལ་ག་ལ་ཡང་དག་པར་
 བཅེངས་གཅེར་བྱར་⁵སྐྱ་གྲོལ་ལ། ཟླ་བ་གཟམ་ཟེན་ནས་མ་གྲོལ་བའི་⁶བར་དུ་ལག་པ་
 གཡོན་པས་⁷གཟུང་སྟེ་རྒྱ་ན་མི་འཆད་པར་བཟུངས་པར་བྱའོ། །དེ་ནས་དེ་གངས་ལ་ཅེ་
 མོས་འོང་ཞིང་ཙ་ཙ་བས་ནི་རང་གི་གནས་སུ་ཕྱིར་འགྱུར། །ལན་ཅིག་བརྗོད་ནས་ཞེས་
 པ་ནི་ངོ་བོ་ཉིད་ལ་ལྷོ་ལྷོ་ལྷོ་⁸སྐྱར་བའོ། །རེངས་པ་ཞེས་པ་ནི་མེར་པོར་བསྐྱོམ་པའོ། །
 ལྷག་མ་ནི་གོ་སྟོན། ༣ །

དེ་རུ་ག་དཔལ་ཡེ་ཤེས་ནི།

།

མི་ཤེས་དངོས་གྲུབ་མངོན་འདོད་པ།

།

-
1. གསུམ་པའི་ གསེར། དེ།
 2. གཟའ་མིག་གི་དུས་ གསེར། དེ།
 3. ཞེས་པ་ཡུལ་ལྷོ་ལུ་ཡལ་གའི་ཁྲི་ གསེར། དེ། ཞེས་པ་ནི་ཡུལ་ལྷོ་ལུ་ཡལ་གའི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་ཁྲི་ རྒྱ་དཔེ།
 4. གསུམ་གྱི་ལ་ གསེར། དེ།
 5. གཅེར་བྱ་ རྟེན་ ཅོ།
 6. མ་གྲོལ་གྱི་ གསེར། དེ།
 7. གཡོན་པ་ ཅོ།
 8. ལྷོ་ལྷོ་ལྷོ་ ཅོ།

གསང་སྐགས་འདི་ནི་མི་ཤེས་པར། 1

ནལ་འབྱོར་པ་ནི་མངོན་འདོད་པ། ༤ 1

དངོས་གྲུབ་ནི་དངོས་སུ་འགྲུབ་པར་འགྱུར་བ་སྟེ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་བྱང་
 རྒྱུ་པོ། །བདེ་བ་ནི་འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པའི་བདེ་བའོ། །མི་ཡིས་ནི་དེའི་རྒྱལ་
 ལ་གནས་པས་ཀྱང་རྡོ། །ཐབས་དང་ཤེས་རབ་གཉིས་སུ་མེད་པའི་ནལ་འབྱོར་མེད་
 པར་མི་འགྲུབ་པོ་ཞེས་བརྟན་པའི་བྱིར་རོ། །གསང་སྐགས་འདི་ནི་མི་ཤེས་པར། 1
 ཞེས་བྱ་བ་ལ་སྐགས་པ་གསུངས་སོ། །སྐགས་ནི་ཐབས་དང་ཤེས་རབ་ཀྱི་ནལ་
 འབྱོར་རོ། ༤ 1

དེ་ཡི་ངལ་བ་དོན་མེད་དེ། 1

འབྲས་བུ་ཐོབ་པར་མི་འགྱུར་རོ། 1

གསང་སྐགས་འདི་ནི་འདོད་སྟོད་པའི། 1

དངོས་གྲུབ་ཐམས་ཅད་སྦྱིན་བྱེད་ཡིན། ༥ 1

མོག་པ་ཡོངས་སུ་ངལ་བའི་བསྐྱེམ་པ་ལ་སྐགས་པ་འདིའི་མཆོན་ཉིད་ནི་དེ་དེ་
 བཞིན་དུ་གནས་པའོ། །གསང་སྐགས་འདི་ནི་སྟོད་པར་འདོད། །ཅེས་པ་ནི། འདོད་
 པའི་ཡོན་ཏན་ལྡན་པ་ཡོངས་སྟོད་པས་བསྐྱབ་པའོ། ༥ 1

རྒྱུ་པོ་སྐགས་དང་ཕྱག་རྒྱ་དག 1

བདེར་ག་ཤེགས་གསུངས་པ་འདི་ཤེས་པ། 1

བཟའ་བདུང་ལ་སོགས་ཅ་རུ་¹ཡི། 1

བཟའ་དང་བདུང་བའི་རོ་སོགས་པ་²། 1

དངོས་གྲུབ་ཐམས་ཅད་སྐྱབ་བྱེད་ཡིན། 6 1

དཔལ་ཉེས་ཀྱི་ངེས་པར་བརྗོད་པ་ལས་ཅ་བའི་སྐྱགས་ཀྱི་ལས་ཀྱི་ཆོ་གའི་
ལེའུ་སྟེ་དགུ་པའོ། ॥

ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་བདུ་ལ་ཞུགས་མེད་ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། 1 སྐྱགས་དེ་
གང་ཞེས་པ་ལ་བདེ་བར་ག་ཞེགས་པས་གསུངས་སོ། 1 བདེ་བར་ག་ཞེགས་པས་སྐྱགས་
པ་འདི་³ཞི་ངེས་པར་བརྟན་པའོ། 1 དེ་རྩ་བུ་དེ་མེས་ནས་སྐྱགས་དང་ཕྱག་རྒྱས་ཏེ།
སྐྱགས་ལས་སྐྱེས་པའི་རྩ་བ་སྐྱབ་པའི་⁴ཡི་གེ་ཡིན་ནོ། 1 བཟའ་བ་དང་⁵ཞེས་པ་ནི་བ་ལ་
ལ་སོགས་པ་བཟའ་བར་བྱས་པ་ལ་⁶བཟའ་བའོ། 1 བདུང་བ་ནི་ཚྱོས་པར་བྱེད་པ་སྟེ།
ཆང་གི་བདུང་བ་དང་སྟན་པའོ། 1 སོགས་ཀྱི་སྐྱས་ནི་བཟུག་པ་དང་གཞིབ་པ་⁷ལ་
སོགས་པའོ། 1 ཅ་རུ་ནི་⁸རྩལ་མའོ། 1 རྩོན་མོ་ནི་བཟའ་བའོ། 1 རྩོན་མོ་དེ་ལ་ལོངས་

1. ཅ་རུ་ བཤ།

2. བདུང་བའི་རོ་སོགས་པས་ བཤ། བཟའ་བའི་རོ་སོགས་པ་ རྒྱ་དཔེ།

3. 'འདི་' གསེར་བྱིས་དང་པེ་ཀྱང་པར་མའི་ནང་མ་གསལ།

4. རྩ་བུ་པའི་ བཤ། གསེར།

5. བཟའ་དང་ གསེར། བཤ།

6. སོགས་པ་བཟའ་བར་བྱས་པ་ན་ གསེར། སོགས་པ་ལ་བཟའ་བར་བྱས་པ་ན་ བཤ།

7. བཞིབ་པ་ གསེར། བཤ།

8. ཅ་རུ་ རྩལ། ཅོ། ཅུ་རུ་ གསེར། ཅོ། རྩོང་དེར་ཅ་བ་དང་མཐུན་པར་བཞག་པ་ཡིན།

སྟོད་པ་ནི་སྤྱ་དང་རོ་དང་སོགས་ཀྱིས་སྤྱས་ཏེ། གཟུགས་¹དང་དྲི་དང་རེག་བྱ་གཟུང་བའོ། །དེས་སྤྱབ་པ་པོ་བདག་ཉིད་ལ་མཆོད་ན་ཐམས་ཅད་འགྲུབ་པོ། །གང་གིས་དངོས་གྲུབ་ཐམས་ཅད་དུ་གྱུར་པ་དེ་ནི་དེ་བཞིན་ནོ། །དེ་ཡིས་ཇི་ལྟར་འདོད་བཞིན་དུ་གནས་ཏེ། ཡུལ་ལ་ཉེ་བར་ལོངས་སྟོད་པས་ཐུས་ཤིང་བདག་མེད་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱིས་བརྒྱན་པའོ། ། ༥ །

རྩ་བའི་སྤྲལས་ཀྱི་ལས་ཀྱི་ཆོ་ག་མངོན་པར་རྫོད་པར་བྱེད་པ་ནི་ལེའུ་དགུ་པའོ་
 ཞེས་བྱ་བ་ནི། དཔལ་འཁོར་ལོ་སྒྲིམ་པའི་དཀའ་འགྲེལ་ལས་ལེའུ་དགུ་པའོ། ། ༥ །

✱

1. དེས་གཟུགས་ བོ། གསེར།

སྐྱ་གསུམ་གྲུབ་པའི་སྤྲིང་པོའི་སྐྱ་གསུམ་གྱི་ལས་གྱི་ཚེ་གའི་ལེན།

དེ་ནས་སྐྱ་གསུམ་བཤད་པར་བྱ། 1

ཐག་འབྲུང་དཔལ་གཉིས་མེད་སྒྲོར་བས། 1

གང་གིས་ཤེས་པ་ཙམ་གྱིས་ནི། 1

འདིར་ནི་གྲུབ་པར་ཐེ་ཚོམ་མེད། 9 1

གལ་ཏེ་སྐྱ་གསུམ་གྱི་བདག་ཉིད་¹ དཔལ་ཏེ་རྟུག་ཡིན་ན་སྐྱ་གསུམ་ཉིད་ཇི་ལྟ་བུ་
 ཞེས་པ་རང་ཉིད་གྱིས་དེ་བ་བྱས་པ་ལ་དེ་ནས་གྱི་སྐྱས་² བརྟན་པས་དེའི་དོན་ནི་འོན་
 ཀྱང་སྐྱ་གསུམ་ཉིད་ཇི་ལྟར་ཞེས་པ་ལ། སྐྱ་གསུམ་པོ་ཉིད་བཤད་པར་བྱ་བ་ཞེས་པའི་
 ལན་ནི། ཇི་ལྟ་བུར་གྱུར་ཞེས་པ་ལ། ཏེ་རྟུག་དཔལ་གཉིས་མེད་སྒྲོར། ཞེས་བྱ་བ་
 གསུངས་ཏེ། དཔལ་ཏེ་རྟུག་གཉིས་སུ་མེད་པར་ཐེ་ཚོམ་མེད་པར་སྒྲོར་བ་གང་ཡིན་པ་
 དེ་ནི་དེ་བཞིན་ཏེ་སྐྱ་གསུམ་མོ། །དང་པོའི་མཐའ་ལ་ཏ་སིལ་འི་རྒྱན་³ སྒྱུན་པའོ། །སྐྱ་
 གསུམ་པོ་ཁྱད་པར་ཙན་བྱས་པས་སྐྱ་གསུམ་པོ་འདི་ཉིད་འདིར་བསྐྱབ་བྱ་ཡིན་པར་
 བརྟན་པའོ། །གང་གིས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ཤེས་པ་ཙམ་གྱིས་⁴ ནི་དོན་པ་ཙམ་སྟེ་
 མངོན་དུ་བྱ་བ་ཞེས་པའི་དོན་དོ། །ཙམ་གྱི་སྐྱས་ནི་ཉེ་བར་གཟུང་པའོ། །སྐྱབ་པ་ནི་གྲུབ་

1. སྐྱ་གསུང་བླགས་གྱི་བདག་ཉིད་ རྟེན། སྐྱ་གསུང་བླགས་གྱི་བདག་ ཅོ།
2. ནས་སྐྱས་ རྟེན། ཅོ།
3. ཏ་སིལ་འི་རྒྱན་ བོད་འགྱུར་པར་མ། གོང་དུ་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་བཀོད་ཡོད།
4. ཤེས་ཙམ་གྱིས་ གསེར། དེ།

པར་འགྱུར་ཏེ་ཆོས་ཀྱི་སྐྱེ་ལ་སོགས་པ་ནི་ལ་འབྱུར་པས་མངོན་པར་འདོད་པའི་དོན་ཏེ་
ཞེས་པ་ནི། འདི་གྲུབ་པའམ་འདི་མི་འགྲུབ་པའམ་ཞེས་པའི་བློ་ཆོས་མེད་པའོ། ༡ །

ཆོས་ཀྱི་སྐྱེ་ཡི་ལུས་ཅན་དུ། ༡

གང་ཆེ་སྐྱབ་པ་པོ་འགྱུར་བ། ༡

དེ་ལྟར་ལེགས་སེམས་གྱུར་པ་ལ། ༡

དེ་ཆེ་ཡེ་ཤེས་ང་སྒྲོའོ། ༡ །

ཆོས་ཀྱི་སྐྱེ་སྐྱབ་པའི་ཐབས་ནི་ཆོས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། ཆོས་
ཀྱང་ཡིན་ལ་སྐྱེ་ཡང་ཡིན་པས་ན་ཆོས་ཀྱི་སྐྱེ་ཏེ། ལུས་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་དེ་བཞིན་དུ་
ཀླུ་པའོ། །དེ་བསྐྱབ་པ་ནི་གང་གིས་དེ་རྫོགས་པར་བྱེད་པ་ཡིན་ནོ། །གྲུབ་པ་དེའི་ཆེ་
ཡེ་ཤེས་ནི་བདག་གིས་བཤད་པའོ། །ཡེ་ཤེས་ཆོས་ཀྱི་སྐྱེ་གཅིག་དང་དུ་མ་དང་བྲལ་
བ་དེ་བཞིན་གསེགས་པའི་སྔོན་ཡུལ་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་དག་པ་འོད་གསལ་བ་བྱེ་བྲག་དུ་
ངེས་པར་བྱས་པའོ། །དེ་ཡང་ཀླུ་པའི་རང་བཞིན་ཆོས་ཀྱི་སྐྱེ་བསྐྱབ་པའོ། །དེ་
ལྟར་ཡང་། ༤

1. 'སྐྱེ་གསུམ་པོ་ནི་བཤད་པར་བྱ།' ཞེས་པའི་ཆོག་ཀྱང་འདི་བོད་འགྱུར་པར་མའི་ནང་ལྷག་པ་སྤང་།
2. 'དེ་ལྟར་ལེགས་སེམས་གྱུར་པ་ལ།' ཕྱད་པེར་ཆོག་ཀྱང་འདི་མེད།
3. དེ་ཡི་ གསེར། བེ།
4. ཕྱད་གཞུང་འདིའི་ནང་ལུང་འདྲེན་གྱི་ཚུལ་དུ་སྒྲངས་པའི་སྐྱེ་གསུམ་གྱི་བསྔོན་པའི་ཆོགས་བཅད་
གསུམ་པོ་འོག་མཆན་དུ་བཀོད་ནས་གཞུང་དེ་ཉིད་ཀྱི་ཆོགས་བཅད་ནམས་ཀྱི་འགྱུར་བཟང་ཞིང་ཀྱེ་
དཔེ་དང་མཐུན་ཆེ་བར་སྤང་བས་གོང་དུ་བཞག་ཡོད།

གཅིག་མིན་དུ་མ་མ་ཡིན་བདག་དང་གཞན་ལ་ཡན་པ་ཡུན་སུམ་
 ཆོག་ས་ཆེན་གཞིར་གྱུར་པ། །
 དངོས་མིན་དངོས་པོ་མེད་པ་མ་ཡིན་མཁའ་ལྟར་རོ་གཅིག་ཉོག་ས་
 བར་དཀའ་བའི་རང་བཞིན་ཅན། །
 གོས་པ་མེད་ཅིང་མི་འགྱུར་ཞི་ལ་མི་མཉམ་མཉམ་པ་བྱབ་པ་ཅན་ཏེ་
 སྤྱོད་མེད་པ། །
 སོ་སོ་རང་རིག་ཀྱལ་བ་ནམས་ཀྱི་ཆོས་སྐྱེད་པེ་མེད་གང་ཡིན་
 དེ་ལ་བདག་ཕྱག་འཆོལ། །

ཞེས་གསུངས་སོ། ་།

ལོངས་སྤྱོད་ཉོག་ས་པའི་ལུས་ཅན་དུ། །
 གང་ཆེ་སྐྱབ་པ་པོ་འགྱུར་བ། །
 དེ་ནས་མཉམ་པར་བཞག་པ་ལ། །
 ལོངས་སྤྱོད་ཉོག་ས་པར་ང་རབ་སྤྱ། ་།

2 ལོངས་སྤྱོད་ནི་ལོངས་སྤྱོད་ཉོག་ས་པ་ཞེས་གསུངས་ཏེ། མཚན་དང་དཔེ་བྱད་ལ་
 སོགས་པས་3 མངོས་པའི་སྐྱེས་གང་གི་ཆེ་ཆོས་སྟོན་པར་བྱེད་པ་དེའི་ཆེ་ལོངས་སྤྱོད་

གང་ཡང་གཅིག་དང་དུ་མའི་རང་བཞིན་ཡུན་སུམ་ཆོག་ས་པ་ཆེན་པོའི་གཞིར་གྱུར་པ།
 དངོས་དང་དངོས་མེད་མ་ཡིན་ནམ་མཁའ་ལྟར་རོ་མཉམ་ཉོག་པར་དཀའ་བའི་རང་བཞིན་ཅན།
 གོས་པ་མེད་ཅིང་ཞི་བར་འགྱུར་བ་མེད་པ་མི་མཉམ་པ་དང་མཉམ་པར་བྱབ་ཅིང་སྤྱོད་པ་མེད།
 དཔེ་མེད་ཀྱལ་བ་ནམས་ཀྱི་ཆོས་ཀྱི་སྐྱེ་ལ་སོ་སོར་རང་གིས་རིག་པར་བདག་ཕྱག་འཆོལ། །

1. ལོངས་སྤྱོད་ སྤྱ།
2. 'སངས་རྒྱལ་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་' ཞེས་སྡེ་དགེ་དང་ཅི་ནི་གཉིས་སུ་ལྷག་པ་འཁོད་འདུག
3. སོགས་པ་ གསེར། པ།

རྫོགས་པའི་སྐྱུ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་ཀྱི་སྤྱོད་ཡུལ་ལོངས་སྤྱོད་ཅེས་པ་ནི་རྒྱན་
 གྱིས་རྟག་པའོ། །སངས་རྒྱས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ལ་ཡང་དག་པར་གྱུ་བ་ཅིང་
 ལོངས་སྤྱོད་པ་སྟེ་བདག་ཉིད་ལ་ཡོད་པར་བྱེད་ཅེས་པ་དེ་ནི་དེ་བཞིན་ནོ། །

དེ་ལྟར་ཡང་།

རང་གི་འབྱོར་པ་འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་བསམ་གྱིས་

མི་བྱུང་ལེགས་མཛད་བརྒྱུ་ཡི་འབྲས་བུ་ནི། །

སྒོ་ཅན་རྣམས་ཀྱི་དགའ་བ་བསྐྱེད་ཕྱིར་འཁོར་གྱི་ནང་དུ་སྒྲ་

ཆོགས་རྒྱས་པར་སྟོན་མཛད་ཅིང་། །

རྟག་ཏུ་དམ་པའི་ཆོས་ཀྱི་སྒྲ་སྐད་རྒྱ་ཆེན་འཇིག་རྟེན་ཀྱན་དུ་

འཕྲོ་བར་མཛད་པ་པོ། །

སངས་རྒྱས་ལོངས་སྤྱོད་རྫོགས་སྐྱེ་ཆོས་ཀྱི་རྒྱལ་སྤྱོད་གནས་པ་

གང་ཡིན་དེ་ལ་ཕྱག་འཆལ་ལོ། །

ཞེས་གསུངས་སོ། ། ༡ །

སྐུལ་པའི་སྐྱུ་ཡི་ལུས་ཅན་དུ། །

གང་ཆེ་སྐྱུ་བ་པ་པོ་འགྱུར་བ། །

1. Toh. 1123 ཇེ། བཞུན། བསྟོད་ཆོགས། ‘ཀ’ ཤོག་གངས་ཡོང་བ།

འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་བསམ་གྱིས་མི་བྱུང་ལེགས་སྤྱད་བདེན་པའི་འབྲས་བུ་བདག་ཉིད་རྣམ་རྒྱས་
 གང་། །འཁོར་རྣམས་དག་གི་དབུས་སུ་སྒོ་ཅན་རྣམས་ཀྱི་དགའ་བའི་རྒྱ་རྒྱ་ཆོགས་གཟུང་བར་
 མཛད། །སངས་རྒྱས་རྣམས་ཀྱིས་འཇིག་རྟེན་ཀྱན་ལ་སྒྲོས་པ་མངོན་པར་དགའ་བའི་དམ་ཆོས་རྒྱ་
 ཆེན་གསུང་། །ལོངས་སྤྱོད་རྫོགས་སྐྱེ་ཆོས་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ཆེན་པོ་འདིར་ནི་བཞུགས་པ་དེ་ལ་བདག་ཕྱག་
 འཆལ། །

དེ་ཆེ་སེམས་དེ་ཅེ་གཅིག་ལ།

ཡུལ་པའི་སྐར་ཡང་ང་སྐྱ་ཏེ། ༩།

སྐྱུལ་པ་ནི་སྐྱུལ་པ་འི་སྐྱུའི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །སེམས་ཅན་
བཅས་ཅད་ལ་བྱམ་མོང་གི་རིགས་ཀྱིས་དྲག་པའི་སྐྱུལ་པ་འི་སྐྱུའོ། །
དེ་ལྟར་ཡང་།

མཐའ་ཅན་ཆམས་ནི་སྡིག་པར་མང་ད་མྱིར་ལ་ལ་དག་རྒྱ་
མེ་འབར་པའི་ནད་ཀྱང་སྤང་ཞིང་། །

ལ་ལར་ཡང་ནི་རྫོགས་པར་བྱང་ཐུབ་ཆོས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་
རབ་དུ་ནི་བར་གང་སྤང་ལ། །

ལྷ་ཆོག་ས་ཐབས་ཚུལ་རྣམ་པ་དུ་མར་འདུག་ཅིང་གྲིད་པ་
གསུམ་གྱི་འདིག་ས་མེལ་པ། །

སྒྲིགས་བཅུར་ཚུབ་མང་ད་བྱབ་པ་ན་མས་གྱི་སྤྱལ་སྤྱོད་ཆེན་
གང་ཡིན་དེ་ལ་སྤྱག་འཆའ་ལོ།

ཞེས་གསུངས་སོ། ༥ །

1. Toh. 1123 རྩེ། བསྟན། བསྟན་ཚུགས། ‘ཀ’ སྟོན་གྲངས་༥༠བ།

ཐུགས་འདུག་པའི་མཆོད་མཉམས་ཅན་རྣམས་ནི་སྒྲིལ་བའི་རྒྱུར་གྱི་རྒྱུར་ཟེར་པ་མེད་པའི་འཇིག་རྫོང་གསལ་བར་བྱེད་པ་
གང་། །ཡང་དག་པུར་རྒྱུབ་དང་ནི་ཆོས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་ཁ་ཅིག་ཏུ་ཡང་ཞི་བར་མ་ཐོང་བ་སྟེ། །

གཅིག་གི་རྣམ་པར་འདུག་པ་མེད་ཅིང་མིན་གསུམ་འཛིགས་པ་སེལ་མངོན་ལྷ་ཚོགས་གཞུགས་ཀྱི་
ཐབས། །སྤྱིགས་བརྒྱ་ཀླན་དུ་གཤེགས་པའི་སྒྲུབ་སྒྲུབ་པ་ཆེན་པོ་དོན་དེ་ལ་ཡང་ཐུག་འཆལ་ལོ། །

ཡེ་ཤེས་ལོངས་སྤྱོད་རྫོགས་དང་སྤྱལ། 1

ཡང་དག་འཛོལ་པར་གཏོག་མི་ཟ། 1

བདག་ཉིད་སྤྱི་དེ་རུ་ཀར་ནི། 1

འགྲུབ་འགྱུར་འདི་ལ་ཐེ་ཆོམ་མེད། ༥ 1

གསང་སྤྲགས་འདི་ཡི་སྤྱིང་པོ་ནི། 1

གསང་བ་བཤད་ཀྱིས་སྤྱབ་པོ་ཉིན། ༦ 1

སྤྱི་གསུམ་ཉིད་བསྐྱབ་བྱ་ཡིན་པར་གྲུབ་པོ། །དེས་ཅི་བརྗོད་ཅེས་པ་ལ་ཡེ་ཤེས་
 ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །དཔལ་དེ་རུ་ཀར་གི་བདག་ཉིད་ནི་དཔལ་
 དེ་རུ་ཀར་ཉིད་དེ་ཐོབ་པར་འགྱུར་ཞེས་སྤྱར་རོ། །དེ་ཅི་ཞེས་པ་ལ། ཡེ་ཤེས་ལོངས་
 སྤྱོད་རྫོགས་སྤྱལ་དེ། ཞེས་བྱ་བ་གསུངས་དེ། ཡེ་ཤེས་ནི་ཆོས་ཀྱི་སྤྱི་སྤྱོད། སྤྱི་བསྐྱབ་
 བ་ལ་གཅིག་གི་ཆོག་གོ། །སྤྱི་ནི་ཐོབ་པར་བྱ་བ་རྫོགས་པའོ། །ཡང་ཇི་ལྟར་གྱུར་པ་ལ་
 ཞེས་པ་ལ། །བདག་ཉིད་ཅེས་གསུངས་དེ། བདག་ཉིད་ཀྱིས་འཆང་བ་ནི་དེའི་རྒྱ་ཉིད་
 ཀྱི་སྤྱིར་བདེ་བ་ཡང་དེ་བཞིན་དུ་བརྗོད་དེ་བདེ་བའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཅེས་པའི་དོན་དོ། །
 འགྲུབ་པར་འགྱུར་ཞེས་པ་ནི་ནལ་འབྱོར་པ་སྤྱི་གསུམ་གྲུབ་པོ་ཞེས་ཉེ་བར་བསྐྱབ་པའོ། །
 དེ་ལྟར་གྱུར་པ་དེ་དཔལ་དེ་རུ་ཀར་གང་ཡིན་པའི་སྤྲགས་དེ་ཡང་དེ་ལྟར་གྱུར་པ་ནི་འདི་
 ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་དེ། ཡེ་ཤེས་ཉི་ཤུ་རྩ་གཉིས་པ་ནི་སྤྱིང་པོ་སྤྲགས་དེ།
 འདིའི་དགོས་པ་ཡང་སྤྱིང་པོའོ། །ཇི་ལྟར་མར་ནི་ཆོ་ཡིན་ཞེས་པ་ལྟ་བུའོ། །དེ་ཇི་ལྟར་

1. ཐོབ་པར་ སྤྱི་ བཤ།

བྱར་ཡོད་པ་བཤད་པར་བྱ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་གསང་བའི་སྐྱབ་པ་པོ་ཞེས་གསུངས་སོ། །
 སེམས་ལ་སོགས་པའི་རང་བཞིན་སྐྱབ་སྐྱུ་གསུམ་གྱི་གསང་བ་ནམ་པར་འབྱོར་བས་གྲུབ་པ་
 ཉི་ངེས་པར་རྫོགས་པར་བྱེད་པ་ཞེས་པ་དེ་ཉི་ངེས་བཞིན་ནོ། །ཁྱེད་ཀྱང་དེ་བཞིན་དུ་
 གྱུར་བས་ཉོན་ཅིག་པའོ། ༥-༦ །

སྒྲིང་པོ་བཟླས་པས་དཔག་ཆད་བྱེ་བ་འཕགས་པར་འགྱུར་ཞིང་འགྲོ་བ་
 དང་འོང་བར་འགྱུར་རོ། །གཟུཏ་སྒྲིང་ཕྱག་དུ་མར་བྱེད་དོ། །ཁང་བཟངས་²
 དང་གིང་དང་བྱིམ་ལ་འཛིགས་³ཏེ་མཁའ་འགྲོ་མ་ནམས་དང་ལྟན་ཅིག་དཔག་
 ཆད་བྱེ་བའི་བར་དུ་འགྲོ་བར་འགྱུར་རོ། །ནམ་མཁའ་ལ་འགྲོ་ཞིང་འོང་བ་
 ལས་གཞན་དུ་མི་འགྱུར་རོ། །འདོད་ན་སྤང་བར་འགྱུར་ཞིང་མི་⁴འདོད་ན་མི་
 སྤང་བར་འགྱུར་རོ། །འདོད་ན་བྱིས་པ་དང་། གན་པོ་དང་། དར་ལ་བབ་
 པའི་གཟུགས་འཛིན་པར་འགྱུར་རོ། །འདོད་ན་སྤང་པོ་ཆེ་དང་། མ་ཏེ་དང་།
 བ་མེན་དང་། རྟག་དང་། སེཁྱེ་དང་། བྱ་མཆོག་དང་། བྱི་ལ་དང་། རི་
 བོང་དང་⁵། ར་མོའི་གཟུགས་འཛིན་པར་འགྱུར་བ་དང་། འདོད་ན་མ་བྱ་
 དང་། བྱིམ་བྱ་དང་། ངང་པ་དང་། དུར་པ་དང་། རྒྱ་སྐྱར་དང་། བྱུག་པ་

1. འཕགས་པར་ བཤ། འཕགས་པ་ ལྟ།

2. ཁང་བཟང་ ལྟ། ལྟ།

3. ས་ལ་འཛིགས་ རྒྱ་དཔེ། འགྲེལ་པ།

4. རྫོང་དཔེ་དང་ལྟ་ས་དང་སྤང་བར་ནམས་སུ་མི་མེད།

5. ‘རི་བོང་དང་’ ལྟ་བུ་གཉིས་སུ་མ་གསལ།

དང་། བླ་དང་། བྱ་མོད་དང་། བྱ་རོག་གི་གཟུགས་འཛིན་པར་འགྱུར་རོ། །
གང་འདོད་པ་དེའི་གཟུགས་སུ་བྱེད་དོ། །ཆོག་འཕྲོག་པ་དང་། མཐོང་བ་
འཕྲོག་པ་དང་། ཉན་པ་འཕྲོག་པ་དང་། ལྷ་འཕྲོག་པ་དང་། རྩེ་འཕྲོག་པར་
བྱེད་དོ། །གང་གི་འདོད་པ་དེའི་ཁྲག་འདྲན་པར་བྱེད་པའམ། རེངས་པར་
བྱེད་དོ། ༥ །

དཔལ་ཉེར་ཀའི་ངེས་པར་བཟོད་པ་ལས་སྐྱུ་གསུམ་གྱུ་བ་པའི་སྤྲིང་པོའི་
སྐྱགས་ཀྱི་ལས་ཀྱི་ཆོག་འའི་ལེའུ་སྤེ་བཅུ་པའོ། །

འཕྲུ་པར་གྱུར་ཞེས་པ་ནི་སྤྲིང་དུ་འགྲོ་བའོ། །འགྲོ་བ་དང་འོང་བར་འགྱུར་ཞེས་
པ་ནི་དཔག་ཆད་བྱེ་བ་ཉིད་དུ་སྐད་ཅིག་ཙམ་གྱིས་འགྲོ་ཞིང་འོང་ཞེས་དགོངས་སོ། །
དེས་ནི་ཡིད་མཐུགས་ཀྱི་རྩེ་འཕྲུལ་བསྟན་ཏོ། །ཁང་བཟངས་དང་ནི་ཞེས་པ་ནི།
གཉིས་པའི་ཆོག་བྱེ་བ་ཡིན་ནོ། །ས་ཞེས་པ་ནི་མཐོང་རིས་ལ་སོགས་པའི་གནས་
གསུམ་སོ། །དཔག་ཆད་བྱེ་བ་ཞེས་པ་ནི་གཉིས་པ་བྱེ་བའོ། །མཁའ་འགྲོ་མ་ཞེས་བྱ་
བ་ནི་དགའ་བ་སྟོན་པ་ཡིན་ནོ། །དེ་ཁོ་ན་བཞིན་དུ་ནམ་མཁའ་ལ་འགྲོ་ཞིང་སྐར་འོང་
བའོ། །ལྷག་མ་ནི་གོ་སྐྱེའོ། །

གཟུགས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལེའུ་དགྲུ་པར་མདོར་བསྟན་པ་འདིར་རྒྱས་པར་
སྟོན་ཏོ། །འདོད་ན་བྱིས་པ་དང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །གང་ལ་ལང་
ཆོ་²ཡོད་པས་སེམས་གཞིན་ནུར་གྱུར་པས་ན་བྱས་པ་སྤེ་སྐྱེས་པའོ། །དེ་ཡིས་ཀྱང་ཆོ་

1. ཤེས་བྱ་བ་ གསེར། བེ།

2. འཆོ་བ་ བོད་དཔེ། གོང་དུ་བྱ་དཔེ་ལྟར་བཞག་པ་ཡིན།

ལོང་བསྐྱར་བའི་¹རྒྱས་པ་དང་ལྷན་པའོ། །འདོད་ན་སྦྱང་པོ་དང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་
པ་ནི་ཕྱགས་ཀྱི་གཟུགས་²འཛིན་པར་བསྟན་པའོ། །འདོད་ན་ཆ་བྱ་དང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་
སོགས་པས་ནི་བྱའི་གཟུགས་འཛིན་པའོ། །འདིས་ནི་དུད་འགྲོར་³གཏོགས་པའི་རྒྱས་
པ་དང་ལྷན་པར་བཅོལ་དོ། །གང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པས་ནི་བྱམ་མོང་གི་གཟུགས་
འཛིན་པ་ཉིད་དོ། །ལྷག་མ་ནི་གོ་སྟོན་པའོ། །

གཞོད་པར་བྱེད་ཅེས་པ་ནི་འདོད་ཆགས་ལ་སོགས་པ་གཞོད་པར་བྱེད་པའོ། །
དེའི་ཕྱིར་འཇགས་ཀྱི་སྒྲས་ནི་མ་བཅོལ་པ་ཡང་དག་པར་བསྐྱབ་སྟེ། གང་གིས་སྐྱ་གསུམ་
གྱུ་བ་པའོ། ་ །

སྟོང་པའི་ཕྱགས་ཀྱི་ལས་ཀྱི་ཆོ་ག་དེ་དང་དེ་རྗེས་པར་བྱེད་པའི་⁴ལེའུ་བཙུ་པའོ་
ཞེས་བྱ་བས་ནི། དཔལ་འཁོར་ལོ་སྔོན་པ་ལས་ལེའུ་བཙུ་པའི་དཀའ་འགྲེལ་ལོ། །

✱

-
1. སྐྱར་བའི་ བེ།
 2. ཕྱགས་གཟུགས་ གསེར། བེ།
 3. དུར་ཁྲོད་དུ་ བོད་དཔེ། གོང་དུ་རྒྱ་དཔེར་གསལ་བ་ལྟར་བཞག་ཡོད།
 4. ཆོ་ག་དེ་དང་རྗེས་པར་བྱེད་པ་ནི་ གསེར། བེ།

སྐྱེ་བ་བདུན་པའི་མཆན་ནི་ད་ཀྱི་ཆོ་གའི་ལེན།

དེ་ནས་གཞན་ཡང་སྐྱབ་པ་པོས།	།
སྐྱེ་བ་བདུན་པའི་བར་འབྱུང་བ།	།
གང་གིས་བསྟན་པ་ཙམ་གྱིས་ནི།	།
མུར་དུ་དངོས་གྲུབ་ལ་འབྱུག་པའོ།	།
དངོས་གྲུབ་ཐོབ་འབྱུར་བཤད་པར་བྱ།	༡ །

དེ་ནི་སྐྱེ་བ་བདུན་པའི་ལྷན་ཅིག་སྐྱེས་པའི་ཆེན་གྱིས་སྤྱིང་པོའི་སྐྱགས་དེའི་མཐུ་ནི།
 དེ་ནས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། དེ་ནས་ཞེས་པ་ནི་བསྐྱབ་བ་སྟེ། གང་ཡང་
 རུང་བ་ལ་སྤྱིང་པོས་སྐྱེ་བ་བདུན་པའི་སྦྱོར་བ་བཤད་པར་བྱའོ། །ཡང་ནི་སྤྱིང་པོ་དང་
 ལྷན་གྱི་སྦྱོར་བའོ། །གང་ཞིག་ཅེས་པ་ནི་གསོལ་བ་འདེབས་པའི་ཉོག་པའི་རྗེས་ལའོ། །
 རྗེས་ལ་ཞེས་པ་ནི་རྗེས་ཀྱི་སྦྱོར། རི་ལྷ་བྱ་སྦྱོར་བ་ཞེས་པ་ལ་སྐྱབ་པ་པོས་ཞེས་བྱ་བ་
 ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། སྦྱོར་བ་གང་གིས་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་པར་འབྱུར་བ་དེ་བཤད་
 དོ་ཞེས་པར་སྦྱོར་³རོ། །བསྐྱམས་པ་ཙམ་གྱིས་ཞེས་པ་ནི་བསྐྱམས་པས་བསྟན་པ་ཙམ་
 རྟེན་མུར་དུ་སྐྱེ་བ་བདུན་པ་ཡོངས་སུ་ཤེས་པ་འགྲུབ་པར་འབྱུར་རོ། །རེ་ཞིག་མདོར་
 བསྐྱེད་པའི་ཤེས་⁴གྲུབ་ཅེས་དགོངས་སོ། ། ༡ །

1. 'སྐྱེ་བ་བདུན་པའི་བར་འབྱུང་བ།' རྒྱ་དཔེར་ཆོག་ཀླང་འདི་མ་གསལ།
2. སྐྱབ་པོས་ གསེར།
3. ཞེས་པར་སྦྱར་ གསེར། བེ།
4. དེའི་ཡེ་ཤེས་ གསེར། བེ།

སྐྱེས་བུ་གང་ཞིག་རྩལ་དྲི་ཞིམ་པར་གྱུར་པ་དང་། བདེན་པར་སྦྱ་བ་དང་།
 ཡུན་རིང་པོར་མིག་མི་འཇུ་མས་པ་²དང་། ཁྱོ་བ་མེད་པར་འགྱུར་བ་དང་། ཁ་
 ནས་དབུགས་དྲི་ཞིམ་པར་འབྱུང་བ་དེ་ནི་སྐྱེ་བ་བདུན་དུ་མིའི་སྐྱེ་བར་གྱུར་པ་
 ཡིན་ནོ། །གྲིབ་མ་བདུན་པ་བྱ་ངང་པའི་འགྲོས་ཅན་སྤྱིང་རྗེ་དང་ཡང་དག་པར་
 ལྡན་པ་³དེ་བཞེན་ན་དེའི་སྤྱིང་ག་ན་རྩ་ཅན་ཡོད་དེ། དེ་སྤྱིང་ས་ལ་དཔལ་
 ཉེ་རུ་ཀའི་སྤྱིང་པོའི་སྤྲུགས་བརྒྱ་ཅ་བརྒྱད་བཟུངས་ནས་ཐིག་ལེ་བྱས་ན་སྤྱིང་དུ་
 སྤྱིང་བར་འགྱུར་ཞིང་དཔག་ཆད་བྱེ་བར་འགྲོ་བར་འགྱུར་རོ། །དེ་བཞེན་པ་⁵
 ཅམ་གྱིས་འཇིག་རྟེན་གསུམ་གྱི་ཡེ་ཤེས་ཅན་དུ་འགྱུར་རོ། །དཔག་ཆད་བྱེ་བ་
 ལ་བཙུར་ནི་ན་ཞག་གཅིག་གིས་འགྲོ་ཞིང་འོང་བར་འགྱུར་རོ། །ལྟའི་ལུས་ཀྱང་
 ཐོབ་པར་འགྱུར་རོ། །དཔལ་ཉེ་རུ་ཀའི་སྤྱིང་པོ་གང་ཞིག་ཤེས་པ་དེ་གང་དང་
 གང་འདོད་པ་དེ་དང་དེ་སྤྱིང་བར་འགྱུར་རོ། ༡ །

དཔལ་ཉེ་རུ་ཀའི་ངེས་པར་བརྗོད་པ་ལས་སྐྱེ་བ་བདུན་པའི་མཆན་ཉིད་ཀྱི་ཚོ་
 གའི་ལེའུ་སྐྱེ་བཙུ་གཅིག་པའོ། །

1. དབུལ་དྲི་ བེ། རྩལ་གྱི་དྲི་ ལྷ། ལྷ།

2. མིག་མི་འཇུ་མ་པ་ ལྷ།

3. ‘གྲིབ་མ་བདུན་པ་བྱ་ངང་པའི་འགྲོས་ཅན་སྤྱིང་རྗེ་དང་ཡང་དག་པར་ལྡན་པ་’ ལྷ་དཔེར་མེད།

4. བཞེན་ན་ ལྷ།

5. བཞེན་པ་ ལྷ། ལྷ།

སྐྱེས་བྱ་གང་ཞིག་ཅས་པ་ནི་སྐྱེས་པའི་གཟུགས་ཀྱི་བསོད་ནམས་ཀྱི་ཡུང་པོ་ཡིན་
 ཞེས་དགོངས་སོ། ། དྲི་ཞིམ་པ་ཉིད་ནི་མཆ་ཅི་ལ་སོགས་པའི་དྲི་ཞིམ་པོ་འདི་ལ་འོ། །
 དེའི་དྲི་ཞིམ་པ་ནི་རྩལ་དྲི་ཞིམ་པ་འོ། ། རྟག་མ་ནི་གོ་སྟོབས་འོ། །

བདེན་པར་སྐྱབ་དང་ཡུན་རིང་པོར་མིག་མི་འཇུགས་པ་དང་སྤྱོད་བ་མེད་པ་གང་
 ཡིན་པ་དེ་ནི་ཤེས་པར་བྱ་འོ། ། དབུགས་དྲི་ཞིམ་པར་ང་རོ་འབྱུང་། ། ཞེས་པ་ནི་
 དབུགས་དྲི་ཞིམ་པར་འབྱུང་བ་ལ་མ་ཞིང་གི་ཉགས་བསྟན་ཏོ། ། གང་ལ་དབུགས་དྲི་
 ཞིམ་པ་འབྱུང་བར་འགྱུར་པ་དེ་སྐྱེ་བ་བདུན་པའི་མིར་སྐྱེས་པ་ཡིན་ནོ། ། སྐྱེ་བ་བདུན་
 པའི་རིགས་གཅིག་ཤུ་མིར་སྐྱེས་པ་ནི་མིའི་གཙོ་བོ་ཞེས་པའི་དོན་ནམ། ཡང་ན་མི་རུ་
 སྐྱེས་པ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། ། དྲི་ཞིམ་པོའི་ཉགས་ཀྱི་དགོངས་པ་ནི་༥ དེ་ཞེས་པ་ལ་
 སོགས་པ་གསུངས་སོ། ། དེ་བསྐྱམས་པ་ནི་བསྐྱམས་པ་འོ། ། ཤེས་པ་ཞེས་པ་ནི་ཤེས་
 པར་བྱ་བའོ། ། ཅི་དེ་ཞེས་པ་ལ་དེའི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏོ། ། གང་གི་
 ཕྱིར་དྲི་ཞིམ་པོ་ནི་རྩེ་ཅན་འོ་འབྲས་བྱ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་དེ་རྗེས་སུ་དཔག་པར་བྱ་འོ། ། དེ་
 ལ་དེ་ནི་གཞན་ལས་སྐྱེས་པ་མ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། ། དེ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ནི་
 རྩེ་ཅན་འོ་དགོས་པ་སྟོན་ཏོ། ། འབྲས་བཟུངས་པའི་རྗེས་སུ་བྱ་བའོ། ། དཔག་ཆད་བྱེ་བར་
 འགོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དཔག་ཆད་བྱེ་བ་ནི་ཆད་ཡོངས་སུ་བཅད་པ་སྟེ། ལམ་ནས་སྦྱང་
 ཏུ་འགོ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། ། བྱེ་བ་ཇུ་བཅུར་ཞེས་པ་ནི་དཔག་ཆད་དོ། ། རྩེ་རྗེས་ཀྱི་

1. དྲི་ཞིམ་པར་ང་རོ་ གསེར། བ།

2. དགོས་པ་ནི་ ཐུ་དཔེ།

3. ཤེས་པར་བྱ་འོ་ བ། གསེར།

ལུས་དག་ཡིན་པ་དེ་ནི་ལྟ་རྒྱུ་ཉེ་སྤྱོད་པོ་འོ། །གང་དང་གང་འདོད་པའི་སྐྱབ་
པ་པོ་དེ་ལ་དེ་དང་དེ་སྤྱོད་པའི་སྐྱབ་པ་བདུན་པའི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་ཆོ་ག ༑ །

དེ་རྒྱུ་པར་བྱེད་པ་དེ་ནི་ལེའུ་བརྩ་གཅིག་པའི་ཞེས་པ་ནི། དཔལ་འཁོར་ལོ་སྤྱོད་
པ་ལེའུ་བརྩ་གཅིག་པའི་དཀའ་འགྲེལ་ལོ། །



ཉེ་བའི་སྤྲིང་པོའི་ལས་ཀྱི་ཆོ་གའི་ལེན།

དེ་ནས་ཉེ་བའི་སྤྲིང་པོ་ནི།

དངོས་གྲུབ་ཐམས་ཅད་འདུག་ཤེད་ཅིང་།

འཛིག་ཉེན་གསུམ་འགྱུར་གང་ཅུང་ཟད།

དེ་ཀྱན་སྐད་ཅིག་གིས་འགྲུབ་བཤད། ག ག

དེ་ནས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ་དེ་ནས་ཞེས་པ་ནི་སྤྲིང་པོའི་ལས་ཆོགས་ཀྱི་ཆོ་
ག་ལྟར་པའི་ཐེས་སུ་འོ། །ལྟག་མ་ནི་གོ་སྟོན་འོ། ག ག

ཏམ་རྟུན་རྟུན་ཉེ་མོ་ལྟོ། །འདི་ནི་སྤྲིང་པོའི་ཉེ་བའི་སྤྲིང་པོའོ། །གསང་སྟགས་
འདི་འབྲུམ་བཟུངས་པས་འཛིག་ཉེན་གསུམ་ཡང་གཡོ་བར་བྱེད་དོ། །ལྟ་དང་།
ལྟ་མ་ཡིན་དང་། གནོད་སྦྱིན་དང་། སྦྱིན་པོ་དང་། ལྷ་དང་། ཇི་ཟ་དང་།
མེའམ་ཅི་མམས་འགྲུགས་པར་བྱེད་དོ། ག ག

ཏམ་རྟུན་རྟུན་ཉེ་མོ་ཞེས་བྱའོ། །མོ་རྟུན་རྟུན་རྟུན་པུ་སྟེ། སྟགས་འདི་ནི་གོ་རིམས་
སུ་བྱ་བའོ། །འདི་ནི་སྤྲིང་པོའི་ཡང་ཉེ་བའི་སྤྲིང་པོ་ཞེས་པ་ནི་ཉེ་བའི་སྤྲིང་པོ་དམན་པའི་
དོན་དོ། །སྤྲིང་པོའི་སྟགས་ལས་ཡི་གེ་དམན་པ་ཉིད་ཡིན་གྱི་རྒྱས་པ་དམན་པ་མིན་
པའམ་ཡང་ན་ཉེ་བའི་དོན་དོ། །འདི་ཞེས་པ་ནི་ཉེ་བའི་སྤྲིང་པོའི་བཟུངས་པ་སྟེ། དེ་ཡང་

1. ཏམ་རྟུན་རྟུན་ཉེ་མོ། ལ།

2. ཏམ་རྟུན་རྟུན་ཉེ་མོ་ཞེས་བྱའོ། །མོ་རྟུན་རྟུན་རྟུན་པུ་སྟེ། བོད་དཔེ། གོང་དུ་ཅ་བ་ལྟར་བཞག་ཡོད།

3. བོད་འགྱུར་དུ་རྒྱས་པ་དམན་པ་ཡིན་ཞེས་གསལ་གྱང་གོང་དུ་བྱ་དཔེ་ལྟར་བཞག་པ་ཡིན།

ཡི་གེ་ཁྲི་གྲངས་¹ནི་འབྲུམ་བཟུངས་པའོ། །ལྷ་ཁེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པས་ནི་འགྲུགས་པའི་
རྒྱས་པ་དང་ལྷན་པར་བརྗོད་དོ། ༡ །

རྒྱ་མཚོ་དང་། འབབ་ཁུ་དང་། མཚོ་ལུ་ལ་སོགས་པ་སྐྱེམ་²པའམ།
གནོན་པར་བྱེད་³དོ། །གང་དུ་བཟུངས་པའི་གནས་དེར་མཁའ་འགྲོ་མ་ཐམས་
ཅད་སྐྱབ་པ་པོའི་མངག་གཞུག་བྱེད་པར་འགྱུར་རོ། །འདིས་ཁུ་ལ་ཡོངས་སུ་
བཟུངས་ཏེ་བདག་ཉིད་ཀྱི་མིག་བཀྲས་ན་སྐྱེ་བ་བདུན་མེས་པར་⁴འགྱུར་རོ། །
ཆོ་བདེ་པ་ཡང་འཆི་བ་བཞིན་དུ་སྤང་བ་དང་། ཆོ་རིང་བ་གསོན་པར་སྤང་བར་
འགྱུར་རོ། །མིག་ལ་མངོན་པར་བསྟགས་ནས་གང་ལ་བཟུངས་པ་དེ་གནོན་པར་
འགྱུར་རོ། ༡ །

རྒྱ་མཚོ་དང་ཁུ་བོ་དང་རྗེ་བྱ་རེངས་པ་ཁེས་པ་ནི་ཁུ་རེངས་པར་བྱེད་པའོ། །
གནས་དེར་ཁེས་པ་ནི་གང་དུ་འབྲུམ་སྟག་བདུན་གྱི་སྟགས་བཟུངས་པས་བཀའ་ཉན་བྱེད་
པར་འགྱུར་ཁིང་བཞུགས་མི་རྒྱས་སོ་ཁེས་དགོངས་སོ། །འདི་ཡང་བཟུངས་པ་ཙམ་དུ་
ཏོགས་པའི་རྒྱས་པའོ། །འདི་ཁེས་པ་ནི་ཡི་གེ་བདུན་སྟགས་ཀྱི་རིག་པས་སོ། །ཁུ་ཁེས་
པ་ནི་ཁུ་དང་སྟན་ལྷན་ཅིག་དུ་བྱེད་པའི་མཐུད། །སྐྱེ་བ་བདུན་ཁེས་པ་ནི་སྐྱེ་བ་བདུན་
དང་འདས་པ་དང་མ་འོངས་པ་ཡང་ངོ་། །མིག་ལ་མངོན་པར་བསྟགས་པ་ཁེས་པ་ནི་
ཁུ་ལྟོག་པའི་སྤྱིར་རོ། ༡ །

1. ཡི་གེ་གྲངས་ རྟེན་ ཅོ།

2. སྐྱེམས་ ལྷ།

3. རེངས་པར་བྱེད་ རྒྱ་དཔེ།

4. སྐྱེ་བ་བདུན་པའི་མི་མེས་པར་ བོད་དཔེ་ནམས་སུ་གསལ། གོང་དུ་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་བཀོད་པ་ཡིན།

དཔལ་བོ་གི་བའི་རྒྱུ་མཐེལ་གྱི་པགས་པ་¹ རྒྱངས་ཏེ། མིའི་ཁྲག་² དང་
 བཏགས་ཏེ་ན་བའི་མིག་སྒྲན་³ དང་ཐོད་པར་བཅུག་ལ་ལྗོང་རོས་དང་། གིའུ་
 སྒང་དང་། གུར་གུམ་དང་། ཁྲག་དང་བསྐྱོས་⁴ ཏེ་གྲིབ་མ་ལ་བསྐྱམས་⁵ ལ་
 རྩལ་གསུམ་གྱིས་དྲུག་པར་⁶ བྱ་སྟེ། ཡང་དེ་ལྟར་པར་གནས་པ་སྐར་མ་
 ཀླུ་ལ་བྱ་བ་ཡང་དཔལ་ཉེར་ཀྱི་འཁྱུང་དུ་བཅུག་ལ་⁷ ལག་པ་གཡོན་པས་ཁ་
 བཀལ་སྟེ། ཡང་བརྒྱ་ཙུང་བརྒྱུད་བཞུགས་ན་དེ་དེའི་མོད་ལ་མི་སྒྲང་བར་འགྱུར་
 ཞིང་གྲིབ་མ་མེད་པར་འགྱུར་ཏེ། ལྷ་རྣམས་ཀྱིས་ཀྱང་མཐོང་བར་མི་འགྱུར་ན།
 ས་སྟེང་གི་མི་⁸ རྣམས་ཀྱིས་ལྷ་སྐྱོས་ཀྱང་ཅི་དགོས། དེ་བཞིན་དུ་ཁ་ལས་བཏོན་
 ན་ནི་སྒྲང་བར་འགྱུར་རོ། །ཕྱེད་འདིར་མཁའ་སྐྱོད་གྲུབ་པའི་རིལ་བུ་⁹ འདི་ནི་
 དཔལ་བོ་རང་ཉིད་ཀྱིས་གསུངས་པ་ཡིན་ནོ། ལ །

1. ཐགས་པ་ བཤ། ལྷ།
2. མིའི་ཁྲག་ ལྷ།
3. འགྲེལ་པར་“མིག་བྱ་མིག་”ཞེས་གསལ་བ་དེ་ནི་དོ་སྒྲན་གྱི་རིགས་ཤིག་སྟེ་དེའི་རྩལ་པས་མིག་ནད་
 རབ་རིབ་སྟོན་ལ་ཕན་པ་ཀྱི་བོད་ཆོག་མཛོད་ཆེན་མོར་གསལ། ཕྱ་སྐད་དུ་སྟོད་སྒྲན་(བོད་སྒྲན་)།
4. བསྐྱོས་ ལྷ། ལྷ།
5. སྐྱམས་ བཤ།
6. དྲུག་པ་ ལྷ། བཤ།
7. ‘ལ’ བར་མི་སྒྲང་།
8. ས་སྟེང་གི་མི་ བཤ།
9. རིལ་བུ་ བཤ།

རི་ལུ་སྐྱབ་པའི་ཐབས་ཀྱི་རྒྱས་པ་སྟོན་ཏེ། དཔལ་པོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་
 སྟོན་ཏེ། ༡ དཔལ་པོ་རྒྱང་མཐིམ་གྱི་པགས་པ་² ཞེས་པ་ནི་མི་དེའི་ཁྲག་དང་བསྟོས་
 བྱེད་གཞིབ་པར་³ བྱའོ། ༢ སྐྱབས་ཀྱི་ནང་དུ་ཞེས་པ་ནི་དེའི་རིལ་པོར་⁴ བྱའོ་ཞེས་
 དགོངས་སོ། ༣ ལིག་བྱ་མིག་ནི་མིག་སྟུན་ནོ། ༤ རྫོང་རོས་དང་། གིའུ་མང་དང་།
 གུར་གུམ་⁵ ཞེས་པ་ནི་གཉིས་པ་ཕྱི་བའོ། ༥ མིག་སྟུན་དང་རྫོང་རོས་ལ་སོགས་པ་ཁྲག་
 གིས་སྐགས་པ་⁶ དེ་སྐྱབས་ཀྱི་ནང་དུ་བརྒྱུག་ལ་གྱིབ་མ་ལ་བསྐྱམ་པར་བྱ། ༦ དེ་⁷ སྐགས་
 གསུམ་གྱིས་དྲགྱིས་པར་བྱས་ལ་བསྐྱབ་པར་བྱའོ་ཞེས་པ་ནི་བསྐྱུས་པའི་དོན་ཏེ། ༧ དེ་
 ཡང་ཞེས་པ་ནི་སྐགས་འབྲུམ་སྐག་བདུན་དུ་བརྒྱས་པ་ཡང་ནལ་འབྱོར་པས་སོ། ༨ རྒྱག་
 པར་གནས་ཞེས་པ་ནི་དཔལ་ཉེར་ཀའི་དྲགྱིལ་འཁོར་གྱི་འཁོར་ལོ་དེ་ལ་སྐྱབས་སྐགས་
 གསུམ་གྱིས་དྲགྱིས་པར་བསྐྱོམས་ནས་སྐགས་བརྒྱ་ཅ་བརྒྱད་དགོངས་ཀའི་⁸ དུས་སུ་
 བརྒྱ་བར་བྱའོ་ཞེས་པ་ནི་སྐག་པར་གནས་པའོ། ༩ རྒྱར་མ་རྒྱལ་ཞེས་པ་ནི་གཞན་རྒྱ་
 རྒྱར་བཟང་པོ་ལ་སོགས་པ་ཡང་ངོ་། ༡༠ སྐྱབ་ཐབས་⁹ ནི་དཔལ་ཉེར་ཀ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་

1. བོད་འགྱུར་དུ་‘དཔལ་པོ’ ཞེས་འདུག་ཀྱང་གོང་དེར་ཅ་བ་དང་རྒྱ་དཔེ་རྒྱར་བཞག་ཡོད།
2. དཔལ་པོ་རྒྱང་མཐིམ་གྱི་སྐགས་པ་ གསེར། བེ། དཔལ་པོ་རྒྱང་མཐིམ་གྱི་པགས་པ་ རྩེ། ཅོ།
3. བཞི་པར་ གསེར། བཞིབ་པར་ བེ།
4. དེ་རིལ་པོར་ གསེར། བེ།
5. གུར་གུམ་ གསེར། བེ།
6. ཁྲག་ཁྲིག་སྐགས་པ་ བེ། ཁྲག་གིས་སྐགས་པ་ རྩེ།
7. བསྐྱམ་པར་བྱ་ཞིང་ གསེར། བེ།
8. གོངས་ཀའི་ གསེར། བེ།
9. སྐྱབས་ཐབས་ གསེར། བེ།

སོགས་པ་གསུངས་སོ། །དཔལ་ཉེར་ཀའི་ནལ་འབྱོར་པས་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་འཁོར་ལོའི་
ནང་ན་ཡོད་པའི་རི་ལུ་དེ་རང་གི་ཁར་¹བཅུག་སྟེ། རི་ལུ་ར་གསུངས་པ་ཡང་བཟུང་བར་
བྱུང་། །དེ་ནས་རི་ལུ་བ་བཞིན་དུ།

གསེར་དང་རྒྱ་བ་ཉིན་འབྱེད་ནམས། །

རིག་བྱེད་²གསུམ་བཞི་ཚད་མན་ཆ། །

ཐུབ་པ་གསུམ་མདའ་ར་ཉིས་ལྟག །

རི་ལུ་རི་མ་པས་དཀྱི་བར་བྱ། །

ལྷགས་གསུམ་གྱི་ནི་ངེས་པའོ། །ལྷག་མ་ནི་གོ་སྒྲ་བ་ཁོ་ནའོ། ། ༤ །

དཔལ་ཉེར་ཀའི་སྒྲིང་པོའི་ཉེ་བའི་སྒྲིང་པོའི་སྒྲགས་འདིས་མཇུག་མོའི་ཕེས་
མགོའི་³ཐོད་པའི་ག་མེད་པར་བྱས་ལ་མཉེས་ན། དེའི་ཁྲག་འབྲེན་པར་བྱེད་དོ། །
གཡོན་པས་ཡང་དང་ཡང་དུ་མཉེས་པས་ནི་འབྲུག་པར་འགྱུར་རོ། །མངོན་
པར་བཟུངས་⁴ཉི་མགོའི་ཐོད་པར་ཁུ་ཚུར་བསྐྱུན་ན། གང་གི་མིང་ནས་སྒྲིས་ཉེ་
བྱས་པ་དེའི་ཁྲད་པ་⁵འགས་པར་འགྱུར་རོ། །གསང་སྒྲགས་རྗེས་སུ་བྱེད་ལ་
ཐོད་པ་འོ་མས་བཀང་ན་ཉེ་བར་ནི་བར་འགྱུར་རོ། །གི་ཕུ་ཤང་⁶ལ་བཟུངས་ཉེ་

1. རང་གིར་ གསེར། བེ།

2. རིགས་བྱེད་ གསེར། བེ།

3. མགོ་པོའི་ བེ།

4. མངོན་པར་འདས་ བེ།

5. དེ་ཡི་ཁྲད་པ་ བེ།

6. འགྱུ་ཤང་ བེ།

ཐིག་ལ་¹ བྱས་ན་གང་ལ་བརྟམས་པ་དེ་རྒྱས་བཏབ་པར་འགྱུར་རོ། །མཛུབ་མོ་²
 ལ་ཡོངས་སུ་བཞུས་ཏེ་གང་ལ་སྤྲིགས་མཛུབ་³ བྱས་པ་དེ་དེའི་མོད་ལ་ལྷུང་བར་
 འགྱུར་རོ། །སྤྲིགས་བཞུས་ནས་ཀང་པ་ས་ལ་བསྟུན་ན། གང་གི་མིང་ནས་
 སྒྲོས་པ་དེ་དེའི་མོད་ལ་འཆི་བར་འགྱུར་རོ། །ཁུ་ལ་བཞུས་ཏེ་ས་ལ་གཏོར་ན་
 སྒྲར་འཆོ་བར་འགྱུར་རོ། །གསང་སྤྲིགས་བཞུས་པའི་མཛུབ་མོའི་⁴ ཕྱི་མོས་
 སྟོང་ལ་ཡང་སྤྲིགས་མཛུབ་⁵ བྱས་ན། བརྟམས་པ་དེ་ཐམས་ཅད་གཞོན་པར་
 འགྱུར་རོ། །ཆོག་གིས་ནི་གོ་ལ་བར་འགྱུར་རོ། །སྒྲེ་ག་ཅན་གྱི་ཐལ་བ་ལ་
 བཞུས་བརྗོད་བརྒྱ་བྱས་ཏེ་སེམས་ཅན་གང་རྗེས་སུ་དན་པ་དེ་ལ་བསྟུན་པ་དེའི་
 གཟུགས་འཛིན་པར་འགྱུར་རོ། །སྒྲིན་སྤྲེག་གི་མེའི་ཐལ་བ་ལ་བཞུས་བརྗོད་
 བརྒྱ་བྱས་ཏེ་གང་ལ་བསྟུན་པ་དེ་ལྷ་ཉིད་ཀྱིས་ཀྱང་མི་མཐོང་ངོ་། །ཁུ་ལ་བརྒྱ་⁹
 བཞུས་པས་གཏོར་ན་སྒྲར་སྒྲང་བར་འགྱུར་རོ། །ཐོད་པའི་ཕྱག་རྒྱ་ཁ་སྒྱར་

-
1. ཐིག་ལ་ བཤེན་པའི་ལོ་ལོ་ཤིང་།
 2. འཛུབ་མོ་ བཤེན་པའི་ལོ་ལོ་ཤིང་།
 3. བསྤྲིགས་མཛུབ་ སྤྲིགས་མཛུབ་ བཤེན་པའི་ལོ་ལོ་ཤིང་།
 4. འཛུབ་མོའི་ བཤེན་པའི་ལོ་ལོ་ཤིང་།
 5. བསྤྲིགས་མཛུབ་ སྤྲིགས་མཛུབ་ བཤེན་པའི་ལོ་ལོ་ཤིང་།
 6. མེ་ག་ཅན་ སྤྲིགས་མཛུབ་ བཤེན་པའི་ལོ་ལོ་ཤིང་།
 7. སྒྲིན་པའི་ལོ་ལོ་ཤིང་།
 8. 'ཀྱང་' སྤྲིགས་མཛུབ་སྤྲིགས་མཛུབ་ལ།
 9. 'བརྒྱ' སྤྲིགས་མཛུབ་སྤྲིགས་མཛུབ་ལ།

བཅིངས་ལ་དབུགས་མི་འབྲིན་པར་གང་གི་མིང་ནས་བཟུངས་པ་དེ་སྟོ་བར་
འགྱུར་རོ། སྟེ་བོ་སྟོང་ཡང་སྟོ་བར་འགྱུར་རོ། །ཡིད་ཀྱིས་གྲོ་ལ་བར་འགྱུར་རོ། །
གང་གི་མིང་ནས་སྟོས་ཏེ་གཙུག་ཕུད་པ་ལན་བར་བཟུངས་ཏེ་མདུད་ན་མཁའ་
འགོ་མ་ཐམས་ཅད་འགྲོ་བར་འགྱུར་རོ། །ཁང་སྟོང་དུ་སྟོང་སྟེ་ལན་བར་བཟུངས་
ནས་སྟེ་བོར་བཅིངས་ལ་མིག་བབས་དེ་ཇི་སྟེད་དུ་བཟུངས་པ་དེ་སྟེད་དུ་མི་སྒྲུང་
བར་འགྱུར་རོ། །བཀྲོལ་ན་སྒྲུང་བར་འགྱུར་རོ། ༥ །

ཉེ་བའི་སྟོང་བོ་གང་ཡིན་པ། །འདི་ཉིད་གང་གི་སྟོང་བོ་ཡིན། །ཞེས་པ་ལ་དཔལ་
དེ་རུག་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། དཔལ་དེ་རུག་ཞེས་པ་ནི། མོ་ཀར་ཀར་ལ་
སོགས་པ་འོ། །འདིས་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། མགོ་བོའི་ཐོད་པ་ཞེས་པའི་སྐྱའི་ཀྱེན་
མེད་པ་འོ། །དེ་ཡང་ཐོད་པ་ཉིད་ལ་མ་མེད་པ་འོ། །ཤ་མེད་པར་བྱས་ལ་ཞེས་པ་ནི་ཤ་
མེད་ཅིང་མགོ་ལ་ཉམས་པ་མེད་པ་འོ། །དེའི་ལུས་སོ། །ཤ་མེད་ཀྱང་ཡིན་ལ་ལུས་
ཀྱང་ཡིན་པས་དེ་ནི་དེ་བཞིན་ནོ། །དེ་ལྟ་བུར་ཀྱུར་པའི་བསྐྱབ་བྱའི་ལུས་སུ་བྱ་སྟེ།
མཉེ་བར་བྱའོ་ཞེས་པ་ནི་ཡང་དག་པར་མཉེ་བའོ། །གང་གིས་ཞེས་པ་ལ་སྟེགས་

1. དབུགས་མི་འབྲིན་པར་སྟོས་ནས་ རྒྱ་དཔེ།

2. གང་གིས་ ལྷ།

3. གཙུག་ཕུད་ ལྷ།

4. 'དུ་'ལྟ་ས་དང་སྒྲུང་ཐང་གཉིས་སུ་མེད།

5. དཀྲོལ་ ལྷ། ལྷ།

6. སྐྱབ་བྱའི་ གསེར།

མཛུབ་ཅེས་བྱ་བ་གསུངས་ཏེ། གཡས་པས་ཏེ་དེའི་ཚེ་མོས་སོ། །འདི་ཡང་བསྒྲུབ་
 པར་བཏྲ་བར་བྱའོ། །མིའི་ཐོད་པ་བྲངས་པ་དོན་རྒྱུ་ཡིན་པའི་ནལ་འཁྱོར་པས་རང་གི་
 ལྷའི་བྱ་ག་¹ གཡས་པ་ནས་དྲུ་བཟོད་པ་ལས་སྐྱེས་པའི་ཕྱག་ན་མཚོན་ཆའི་ཕྱག་མཚན་
 ཅན་དུ་མ་སྐྱེས་པ་ཕྱིར་ཕྱུང་སྟེ་² གང་གི་མིང་ནས་བཟུང་བའི་³ ཚེ་ལྷ་ཕྱག་པར་བྱས་
 ནས་དེའི་ཁྲག་གིས་⁴ ཐོད་པ་གང་བཞིན་པར་རྒྱུགས་མཛུབ་ཀྱི་ཚེ་མོར་⁵ བསྒྲུབས་ན་
 རྒྱགས་དེ་ལན་མང་དུ་⁶ བཟླས་པ་དེས་ལུས་ཀྱི་ནང་ཐམས་ཅད་ཀྱི་གཞི་པའི་ཁྲག་
 དགུག་པར་བྱེད་དོན་ཞེས་པ་ནི་བསྐྱེད་པའི་དོན་དོ། །སྒྲར་ལོག་པ་ནི་གཡོན་པས་ཞེས་
 བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། གཡོན་པའི་རྒྱུགས་མཛུབ་ཀྱི་ཚེ་མོས་ཞི་བའི་སེམས་
 ཀྱིས་མཉེས་ན་དེའི་ལུས་ཀྱི་ནང་གང་ཞིང་བསྐྱེད་བྱའི་ལུས་རྒྱས་པར་འགྱུར་རོ། །ཅི་
 ཞེས་པ་ལ་འདུག་པར་འགྱུར་རོ་ཞེས་གསུངས་ཏེ། དེ་ནི་དེ་ཀྱི་ཁྲག་འདུག་པར་འགྱུར་
 བ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །མངོན་པར་བརྒྱགས་⁷ ཏེ་ཞེས་པ་ནི་བསྐྱེད་བྱའི་མགོ་བོའི་ཐོད་
 པ་ཡིན་པར་བསམས་ལ་ཁྲ་ཚུར་བསྐྱེད་པར་བྱའོ། །ཐོད་པ་ཞེས་པ་ནི་བསྒྲུབས་པའམ་

-
1. ལྷའི་བྱ་ག་ གསེར། བཤེ།
 2. ཕྱུང་བ་སྟེ་ གསེར།
 3. གཟུང་བའི་ གསེར། བཤེ།
 4. ཁྲག་གི་ གསེར། བཤེ།
 5. ཚེ་མོས་ གསེར། བཤེ།
 6. ལན་བདུན་དུ་ རྒྱ་དཔེ།
 7. སྒྲར་ལོག་པའི་ གསེར། བཤེ།
 8. རྒྱགས་ གསེར།

དངོས་སུ་སྟེ་ཐོད་པ་དགང་བའོ། །དངོས་སུ་ཐོད་པའི་ནང་དགང་བ་ཡང་ངོ་། །
 རྒྱགས་བཟུངས་པ་ཞེས་པ་ནི་བྱ་བའི་ཁྱད་པར་རོ། །རྒྱག་མ་ནི་གོ་སྟོན་པོ། ༥ །

གསེག་མ་ལ་མངོན་པར་བཟུངས་ཏེ། རྟེང་དང་འོག་དང་ཕྱོགས་མཆམས་
 རྒྱལ་སུ་གཏོར་ན་ལྟ་དང་ལྟ་མ་ཡིན་དང་། གཞོད་སྦྱིན་དང་། སྦྱིན་པོ་དང་།
 ཇི་ཟ་དང་། མི་འམ་ཅི་དང་། རྟོ་འཕྲེ་ཆེན་པོ་ཐམས་ཅད་ཀྱང་འཆིང་བར་
 འགྱུར་རོ། །མཁའ་འགྲོ་མའི་སྦྱར་བ་ཐམས་ཅད་ཀྱང་འཕྲོག་པར་འགྱུར་རོ། །
 རྟན་དང་མལ་བྲི་ལ་སྦྱེས་པ་དང་། བུད་མེད་འདུ་བ་ལ་བལྟས་ཏེ་རྒྱགས་བརྒྱ་
 ཙུ་བརྒྱད་བཟུངས་ན་²འབྱར་བར་འགྱུར་རོ། །ཡིད་ཀྱིས་ནི་གྲོལ་བར་འགྱུར་རོ། །
 གྲོ་མོག་དང་བཅས་པ་ལ་ཡོངས་སུ་བཟུངས་ཏེ་ཆུ་བོར་བརྒྱག་ན་ཆུ་ན་ཕྱོགས་ལས་
 བཟློག་³སྟེ་འབབ་པར་འགྱུར་རོ། །གྲོ་མོག་དང་བཅས་པ་དེ་ནི་དུ་ཀྱིས་ཅ་
 རྒྱལ་ས་⁴གཞོན་པར་འགྱུར་རོ། །ཡིད་ཀྱིས་ནི་བཟློག་པར་འགྱུར་རོ། །
 རྒྱགས་བཟུངས་ཏེ་རྟེང་དུ་བལྟ་⁵བཞིན་དུ་རྟོང་བཟུངས་ན་ཆར་ཆེན་པོ་གཙོད་པར་
 འགྱུར་རོ། །གཞན་གྱི་དཔུང་མངོན་དུ་ཕྱོགས་ན་བཟུངས་བཟོད་རྟོང་བྱས་ཏེ་

1. དངོས་སུ་པར་བྱེད་ཐུང་པོ།

2. བཟུངས་ནས་ པོ།

3. བརྒྱག་ནས་བོར་ན་ཕྱོགས་ལས་བཟློག་ ལྟ། བརྒྱག་ནས་བོར་ན་ཕྱོགས་ལས་ཟློག་ ལྟ།

4. དཔལ་རྒྱལ་ས་ ལྟ། ལྟ། ཅ་བཟུངས་ པོ།

5. བལྟས་ ལྟ། ལྟ། པོ།

གཡུལ་དུ་ཞུགས་པ་ན་མཆོན་ཆ་བརྒྱས་བསྟན་ཀྱང་གནོད་པའི་ཚོར་བ་འབྱུང་།
 བར་མི་འགྱུར་ཞིང་མཆོན་གྱིས་ཀྱང་ཆོད་པར་མི་འགྱུར་རོ། །དྲི་རྩེའི་ལུས་
 ཅན་དུ་འགྱུར་རོ། ༥ །

དཔལ་ཉེས་ཀྱི་འཛིན་པར་བརྟེན་པ་ལས་ཉེ་བའི་སྤྲིང་པོའི་ལས་ཀྱི་ཆོ་གའི་
 ལེའུ་སྟེ་བརྒྱ་གཉིས་པའོ། །

མཁའ་འགྲོ་མ་ཐམས་ཅད་འོང་ཞེས་པ་ནི་མཁའ་འགྲོ་མ་ནི་དང་པོའི་མང་པོའི་
 ཆོག་ཕྱི་བའོ། །ཀྱོད་ལྟམ་ཞེས་པ་ནི་གཉིས་པའི་སྐྱ་ཕྱི་བའོ། །མཁའ་འགྲོ་མའི་སྦྱོར་བ་
 ཐམས་ཅད་འཕྲོག་ཅེས་ཕྱོགས་དང་ཕྱོགས་མཆམས་སུ་ཀྱོད་ལྟམ་ཉིད་གཏོར་བའོ། །
 རྩན་ནི་འབྲིག་པ་སྦྱོད་པའི་དོན་དུ་རྩན་²ནམ་མལ་དུ་གཏོགས་པར་གནས་པ་ན་རྩན་
 ནམ་མལ་བྲི་ལ་གཏོགས་པ་དེ་ལ་བྱད་མེད་དམ་སྦྱེས་བྱ་བསྟུ་བའི་དོན་ཏོ། །གཡུལ་
 འོར་ཞེས་པ་ནི་ཀྱོད་ལྟམ་གྱི་རྩེས་སུ་འབྲུག་པའོ། ༥ །

སྤྲིང་པོ་དང་ཉེ་བས་ན་ཉེ་བའི་སྤྲིང་པོའི་སྒྲགས་སོ། །འདྲིའི་ལས་ཀྱི་ཆོ་ག་རྫོང་
 བར་བྱེད་པའི་ལེའུ་ནི་བརྒྱ་གཉིས་པ་སྟེ། ཉེ་བའི་སྤྲིང་པོའི་ལས་ཀྱི་ཆོ་གའི་ལེའུ་སྟེ་
 བརྒྱ་གཉིས་པའོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དཔལ་འཁོར་ལོ་སྦྱོམ་པའི་ལེའུ་བརྒྱ་གཉིས་པའི་དཀའ་
 འབྲེལ་ལོ། །

✱

1. ཚོར་བ་འབྱུང་། སྟེ།

2. བརྩན་གསེར།

གོ་ཆའི་སྤྲུགས་ཀྱི་ལས་ཀྱི་ཆོ་གའི་ལེན།

དེ་ནས་གོ་ཆའི་ལས་རྣམས་ནི། 1

འཇིག་རྟེན་གསུམ་ན་གང་ཡོད་པ། 1

ཡིད་ལ་འདོད་པ་དེ་དག་ཀྱིས། 1

གོ་རིམ་¹་བཞིན་དུ་བཤད་པར་བྱ། ༡ 1

དེ་ནས་ཞེས་པ་ནི་ཉེ་བའི་སྤྱིང་པོའི་སྤྲུགས་དེའི་ལས་ཀྱི་ཆོ་ག་བསྟན་པའི་རྗེས་
སུའོ། །གོ་ཆ་ནི་གོ་ཆའི་སྤྲུགས་ཀྱི་ལས་བཤད་པའོ། །ཚི་²་དེ་ནམ་ཅེ་སྤྱད་དུ་བྱོལ་
དེ་རྒྱ་རྒྱ་དོ་པུ་དོ་རོ་། །གོ་རིམ་²་ཞེས་པ་ནི་བསྟན་པ་དང་སྟན་ལ་སོགས་པའི་རྣམས་
པའི་རིམ་པས་སོ། །དེ་གང་ལས་ཞེས་པ་ལ་འཇིག་རྟེན་གསུམ་ན་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོཊ་པ་
གསུངས་ཏེ། དེ་ཐམས་ཅད་གང་ཡིན་པ་འདོད་པ་ཞེས་པ་ནི་ཡིད་ཀྱི་འདོད་པའོ། ༡ 1

དེ་ལ་གོ་ཆ་སྟོན་བཞིན་དུ་ཡང་ལམ་དུ་ཞུགས་ན་རྒྱ་མ་དང་སྟག་གིས་
འཇིགས་པར་མི་འགྱུར་བའམ། མི་སྣང་བར་འགྱུར་རོ། །གོ་ཆ་སྟོན་³་བཞིན་
དུ་རྒྱལ་པོའི་པོ་བྱང་གི་བྱང་མེད་ཀྱི་གནས་སུ་ཞུགས་ན་ཡང་མི་སྣང་བར་
འགྱུར་ཏེ། གང་འདོད་པ་དེ་སྤངས་ཏེ་འགོ་བར་འགྱུར་རོ། །ལྟ་རྣམས་ཀྱིས་

1. གོ་རིམས་ རྟེན། ལྟ། བཤ།

2. གོ་རིམས་ རྟེན། ཅི།

3. གོ་ཆ་བསྟན་ བཤ།

གྲང་མི་མཐོང་ངོ་། །གོ་ཆའི་སྒྲགས་བརྒྱ་¹ལྷོས་པའི་ལག་པས་གང་ལ་རིག་པ་²
 དེ་མདུང་བཞིན་དུ་རེངས་པར་འགྱུར་རོ། །སུམ་ཙུ་ཙ་གསུམ་པས་གྲང་མི་
 གཡོའོ། །སྒྲགས་ལྷོས་³པའི་རྒྱང་པས་བསྐྱན་ན་ཐར་བར་འགྱུར་རོ། །རང་
 གི་ཁྲག་ལ་⁴ལན་གསུམ་བཞུས་ནས་ཐིག་ལེ་བྱས་ལ་གང་དང་ལྟན་ཅིག་སྒྲ་བ་
 དང་། གང་གིས་མཐོང་ཞིང་གང་མཐོང་བ་དེ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཁྲག་འདྲན་པར་
 བྱེད་དོ་། །གང་གི་ཁྲིམ་དུ་ཁྲོ་བ་དང་བཅས་པས་ལན་སྟོང་བཞུས་ན་ཐམས་
 ཅད་ལ་རིམས་ཀྱིས་འདེབས་⁶པར་འགྱུར་རོ། །ཁུ་ལ་ལན་ལྔ་བཞུས་ཏེ་གཏོར་
 ན་སྒྲར་འཆོ་བར་འགྱུར་རོ། །གང་གི་གདོང་ལ་བརྟམས་ཏེ་བཞུས་པ་དེའི་ཆོག་
 འཕྲོག་པར་འགྱུར་རོ། །འབབ་ཕྱུའི་འགྲམ་⁷དང་སྟེང་ཀར་གནས་ཏེ་སྟོང་
 བཞུས་ན་ཕྱུའི་སྟེང་དུ་གནས་ཏེ། ཐང་ལ་ཇི་ལྟ་བ་དེ་བཞིན་དུ་ཁུ་ལ་ཡང་⁸དེ་
 བཞིན་དུ་འགྲོའོ། །ཁུ་ལ་ཁྱགས་ན་ཁུ་བོའམ་རྒྱ་མཆོ་ཡང་གནས་སོ། །ལག་པ་

-
1. 'བརྒྱ' ལྟ་དཔེར་མེད།
 2. གང་ལ་རིག་པ་ ལྟ། ཇི།
 3. སྒྲགས་བཞུས་ བེ།
 4. རང་གི་ཁྲག་དང་རང་གི་ཁྲ་བ་ལ་ ལྟ་དཔེ།
 5. འདྲན་པར་བྱེད་ ལྟ།
 6. བཏབ་ བེ། ལྟ།
 7. འབབ་ཕྱུའི་འགྲོ་མ་ ལྟ།
 8. ཁུ་ལ་ཡང་ ཇི།

གཉིས་ཤིལ་ཕྱིས་བྱས་པ་ལ་ལན་སྟོང་བཟུངས་ན་ནལ་འབྱོར་མ་རྣམས་དབང་དུ་
འགྱུར་རོ། ༡ །

གོ་ཆ་སྟོ་ཞིང་ལམ་དུ་ཞུགས་པ་ན་དེ་རྒྱན་མ་¹ལ་སོགས་པས་འཇིགས་པར་མི་
འགྱུར་རོ་ཞེས་པ་ནི་གོ་ཆ་ལ་སོགས་པ་འདིའི་དོན་ཏོ། །ཐུལ་རིགས་ཀྱི་ཕོ་བྲང་ནི་
ཐུལ་པོའི་ཁབ་ཀྱི་ནང་དུ་ཞུགས་པ་ན་དེ་ཡང་མི་མཐོང་བའོ། །དེའི་ཕྱིར་མི་སྤང་བར་
འགྱུར་ཏེ་ཞེས་པ་ལ་གང་དུ་མི་སྤང་ཞེས་བྱམས་སུ་གནས་པ་ཞེས་པ་སྟེ་ཕོ་བྲང་གི་ནང་
ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །གང་གི་ཕྱིར་འདི་པ་རོལ་གྱི་མི་གཞན་རྣམས་ཀྱིས་ཞིབ་དུ་ལྟ་བར་²
བྱེད་དོ། །འདིར་ཡང་མི་མཐོང་བ་ནི་³སྤགས་ཀྱི་མཐུའོ། །གང་འདོད་པ་དེ་བླངས་ཏེ་
འགོ་བར་འགྱུར་རོ་ཞེས་པ་ནི་མཛོད་ལ་སོགས་པ་ནས་དངོས་པོ་གང་འདོད་པ་བླངས་
ཏེ་ཕྱིར་འབྱུང་བ་ནི་མི་མཐོང་རོ་ཞེས་སྤྱར་རོ། །འདིར་ཡང་མང་པོ་ཞིབ་པར་བལྟ་བ་
ནི་དེ་ཀྱི་ཕྱིར་དེ་མཐོང་བར་དཀའ་བས་རྟོགས་མི་རུས་པ་ནི་སྤགས་ཀྱི་མཐུའོ། །རྩ་
རྣམས་ཀྱིས་ཀྱང་མི་མཐོང་རོ། །ཞེས་པ་ནི་རྩ་རྣམས་ཀྱི་གཤེད་མིག་ཡིན་ཡང་ཐོགས་པ་
མེད་པར་མཐོང་སྟེ། དེ་རྣམས་ཀྱིས་ཀྱང་མི་མཐོང་བ་ནི་སྤགས་ཀྱི་རུས་པའོ། །མདུང་
བཞིན་ཞེས་པ་ནི་དེ་རིང་དུ་བརྟོས་ན་བཅུགས་པ་རྩ་བུ་སྟེ་མི་གཡོ་བའོ། །རང་གི་ཁྱག་
ཅེས་པ་ནི་རྟོགས་སྟེ། །གང་གི་བྱིམ་དུ་ཞེས་པ་ནི་བྱིམ་འདིར་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །དེ་
ལ་ཞེས་གོ་བར་བྱའོ། །རྣལ་འབྱོར་པ་ནི་དང་པོའི་མང་པོའི་ཆོག་ཕྱི་བའོ། ༡ །

1. དེ་རྒྱན་མ་ གསེར། བེ།

2. ཞིབ་དུ་བལྟ་བར་ གསེར། བེ།

3. མཐོང་བ་ནི་ བོད་འགྱུར་པར་མ། གོང་དུ་ཙུ་བ་དང་ཐུ་དཔེ་རྩུར་བཞག་ཡོད།

ནལ་འབྱོར་མ་ནི་སྒྲ་ཚོགས་གཟུགས། 1

མཁའ་འགྲོ་དེ་བཞིན་ལུ་མ་དང་། 1

ཁམ་རོ་དུ་དེ་བཞིན་ཏེ། 1

གཟུགས་ཅན་མ་རུ་རབ་གྲགས་པ། 1

དེ་ལ་སོགས་པའི་ནལ་འབྱོར་མ། 1

དེ་ཀུན་དེ་ཡི་²དབང་དུ་འགྱུར། ༡ 1

ནལ་འབྱོར་མ་ནི་དང་ཞེས་པ་དང་པོའི་དོན་ལས་གཉིས་པོ། 1དང་ནི་³རབ་དུ་
དབྱེ་བའོ། ཉིད་ནི་ངེས་པར་གཟུང་བའོ། །སྒྲ་ཚོགས་པའི་གཟུགས་ཉིད་ནི་མཁའ་
འགྲོ་མ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ་མཁའ་འགྲོ་མ་ནི་མཁའ་འགྲོ་མའི་རིགས་
སུ་སྦྱེས་པའོ། །ལུ་མ་ཞེས་པ་ནི་ལུ་མའི་རིགས་སུ་སྦྱེས་པའོ། །གཟུགས་ཅན་མ་ནི་
གཟུགས་ཅན་མའི་རིགས་སུ་སྦྱེས་པའོ། ༡ 1

སྐར་མ་རྒྱལ་གྱི་⁴སྦྱོར་བས་རས་བྱས་ལ། དེ་གྲོན་པའི་ལུས་ཀྱིས་ནལ་
འབྱོར་མ་མཉམ་པར་བཞག་པས་⁵སྦྱོང་ཕྱག་བཙུ་བཟུས་ན་དེའི་འོག་དུ་འགྱུབ་
པར་འགྱུར་རོ། །དེ་གྲོན་པའི་ལུས་ཀྱིས་དཔག་ཚད་སྦྱོང་གི་བར་དུ་ནམ་མཁའ་

1. ཁམ་རོ་དེ་ བེ། ཁམ་རོ་དེ་ ལ། ཁམ་རོ་དེ་ ལ།
2. དེའི་ བེ།
3. དང་པོ་ནི་ ལ། ཅོ།
4. རྒྱལ་གྱིས་ ལ།
5. གཞག་པས་ ལ། གཞག་པ་ བེ། ནལ་འབྱོར་མ་མཉམ་པར་བཞག་པས་ རྒྱ་དཔེར་མེད།

མི་སྣང་བར་འགྱུར་རོ། །གང་དུ་འདོད་པ་དེར་འགྲོ་བར་འགྱུར་རོ། །དེས་ཀྱི་མཆོའི་མཐར་ཐུག་པའི་ས་ནམས་སུ་འགྲོ་བར་འགྱུར་རོ། །སྤང་གི་ཕྱད་དུ་འགྲོ་བར་འགྱུར་རོ། ། ༤ །

སྤང་དུ་རྒྱན་འགྲོ་བ་ཞེས་པ་ནི་ངས་པའི་ཆོག་གིས་ས་ཕྱིས་པའོ། །ཁུའི་ཕྱིན་ཅི་ལོག་དུ་འབེབས་པ་གིན་དུ་མནན་ནས་འགྲོ་ཞེས་པའི་དོན་དོ། །རྣལ་འབྱོར་པས་བྱང་ཐུབ་ཀྱི་སེམས་ནོར་བྱར་བརྟན་པར་བྱ་སྟེ། སྤང་དུ་རྒྱན་ཅིག་སྐྱེས་པ་རྒྱ་ཞིང་དངོས་སུ་འགྲོ་ཞེས་པ་ཞི་བརྟོགས་སེམས་པ་ཉི་དོན་གཞན་ནོ། ། ༥ །

དབང་པོ་གང་དང་གང་ལམ་གྱུར། །

།

དེ་དང་དེ་ཡི་རང་བཞིན་འགྲོ། །

།

མཆོག་དུ་ཕན་པའི་སྦྱོར་བ་ཡིས། །

།

ཐམས་ཅད་སངས་རྒྱས་རང་བཞིན་འགྱུར། ། ༥ །

འདོད་པའི་ཡོན་ཏན་ལྡན་པ་ལོངས་སྟོན་པ་མདོར་བསྟན་ནས་རྒྱས་པར་བསྟན་པ་ནི་གང་དུ་འདོད་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །དབང་པོ་རྣམས་ནི་མིག་ལ་

1. དེའི་ ལྷ། དེ། ལྷ།

2. དངོས་སུ་འོང་ རྒྱ་དཔེ།

3. ཤེས་པ་ གསེར། དེ།

4. མཉམ་གཞན་ ལྷ། གོང་དུ་བོད་འགྱུར་འགྲེལ་པ་དང་རྒྱ་དཔེའི་ཙ་བར་གསལ་བ་རྟོག་བཞག་པ་ཡིན།

སོགས་པ་འོ། །ལམ་ནི་སྤྱད་ཡུལ་ཉིད་དོ། །གང་གསང་གང་གཟུགས་ལ་སོགས་པ།
 དེ་དང་དེ་ཐམས་ཅད་སངས་རྒྱུ་གྱི་རང་བཞིན་ནི་ནམ་པར་སྤང་མཛད་ལ་སོགས་
 པའི་རང་བཞིན་དུ་གྱུར་པ་ནི་ཉམས་སུ་སྤྱོད་བ་ཡིན་པ་འོ། །རང་བཞིན་ཉམས་སུ་
 སྤྱོད་བར་བྱའོ། །ཇི་ལྟར་ཉམས་སུ་སྤྱོད་བ་ཡིན་ཞེས་པ་ལ། མཆོག་ཏུ་ཕན་པའི་སྤྱོར་
 པ་ཡིས། །ཞེས་བྱ་བ་གསུངས་ཏེ། མཆོག་ནི་དཔལ་དེར་ཉུག་འོ། ཕན་པ་ནི་བྱས་
 པ་འོ། །སྤྱོར་བ་ནི་ཉིང་ངེ་འཛིན་ཏོ། །གཟུགས་ནི་ནམ་པར་སྤང་མཛད་དོ། །སྤྱི་
 མི་བསྤྱོད་པ་འོ། །དྲི་ནི་རིན་ཆེན་འབྱུང་ཡན་ནོ། །རོ་ནི་སྤང་བ་མཐའ་ཡས་སོ། །
 རེག་བྱ་ནི་དོན་ཡོད་གྲུབ་པ་སྟེ། སངས་རྒྱུ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་བདག་ཉིད་དུ་གྱུབ་པོ་ཞེས་
 བྱའོ། །འདོད་པའི་ཡོན་ཏན་ཁྲ་ལ་ཡོངས་སྤྱོད་པས་སྤྲུགས་ཀྱི་བཟུངས་པ་བྱའོ། །ཞེས་
 དགོངས་སོ། ། ༥ །

ཤིང་ཡོངས་འདྲའི་ཁུ་བཙུད་སྒངས་ལ་བཟུངས་བཅོད་སྟོང་བྱས་ཏེ་གང་ལ་²
 ཐིག་ལེ་བྱས་པ་དེ་ཤིང་དུ་འགྱུར་རོ། །ཁུ་ལ་ལན་བདུན་བཟུངས་པས་གཏོར་ན་
 འདི་ནི་སྤྲུང་འཆོ་བར་འགྱུར་རོ། །སྒང་པོ་ཆེའི་རྒྱང་མཐིལ་³དང་བསྐྱབ་བྱའི་
 རུལ་སྒངས་ཏེ་བཟུངས་བཅོད་སྟོང་བཟུངས་ནས་གང་ལ་བསྐྱུན་ན་དེ་སྒང་པོ་ཆེར་
 འགྱུར་རོ། ། ༦ །

-
1. བཟུངས་པར་བྱའོ། གསེར། བེ།
 2. ལྟ་ས་པར་མའི་ནང་ལ་མེད།
 3. རྒྱང་འཐིལ་ བེ།

དཔལ་ཉེར་ཀྱི་འཇམ་པར་བཟོད་པ་ལས་གོ་ཆའི་སྤྲུག་གི་ལས་ཀྱི་ཆོ་གའི་
ལེའུ་སྤེ་བཅུ་གསུམ་པོ། ॥

ཤིང་ཡོངས་འདུ་ཞེས་པ་ནི་ཤིང་ཡོངས་འདུའི་ཡལ་ག་ལ་སོགས་པོ། །རྟག་མ་
ནི་གོ་སྒྲུབ། ༥ །

གོ་ཆའི་སྤྲུག་གི་བྲག་ཏུ་བཤད་པ་ནི་སྦྱོར་བ་ནི་གོ་ཆ་སྤྲུག་གི་སྦྱོར་བ་སྤེ། དེ་
ཉིད་ཟོད་པར་བྱེད་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡང་ཡིན་ལ་ལེའུ་ཡང་ཡིན་པས་དེ་དེ་བཞིན་ནོ། །
བཅུ་གསུམ་ནི་ལེའུ་བཅུ་གསུམ་མོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི། དཔལ་འཁོར་ལ་སྤྲུམ་པའི་ལེའུ་བཅུ་
གསུམ་པོའི་དཀར་འགྲེལ་ལོ། ॥

དཔལ་དེ་རུ་ག་པོང་བུའི་རྣམ་པར་མཛད་པའི་ཚོགའི་ལེའུ།

པོང་བུའི་རྣམ་པའི་རྣལ་འབྱོར་བདག །

ཡིད་ཀྱི་ཤུགས་ནི་བསྐྱོག་བུའི་ཕྱིར། །

གང་གིས་སྐྱབ་པོ་འགྲུབ་པ་ཡི། །

སྐྱབ་པ་དེ་ནས་འབད་པར་བྱ། ག །

དེ་ནས་ཞེས་པ་ནི་ཡང་གི་དོན་དེ་ཡང་སྤྱིང་པོའི་སྤགས་ཀྱི་སྐྱབ་ཐབས་བཤད་དོ་
ཞེས་བྱ་བར་སྦྱོར་རོ། །ཅི་ཞེས་པ་ལ་གང་གིས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ།
གང་གིས་སྐྱབ་པ་པོ་འགྲུབ་པར་འགྱུར་བ་དེའི་སྐྱབ་པའི་ཐབས་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །
དོན་དེ་ཅིའི་ཞེས་པ་ལ་ཡིད་ཀྱི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། ཡིད་ཀྱི་ཤུགས་
ནི་ཡིད་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་སྤྱི་དེའི་སྤྲོག་པ་གྲུབ་པའི་ཕྱིར་རོ། །ཅི་ཞེས་པ་ལ། པོང་བུའི་རྣམ་
པའི་རྣལ་འབྱོར་གྱིས། ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། ག །

མཁའ་འགྲོ་དེ་བཞིན་ལུ་མ་དང་། །

ཁ་རྩ་རྩ་ཏེ་འདོད་གཟུགས་ཅན། །

1. དེ་ནི་ ལ།

2. སྤགས་ཀྱིས་ གསེར། བེ།

3. དོན་དེའི་ཅིའི་ ལ། ཅོ།

4. ཁ་རྩ་རྩ་ཏེ་ བེ། ཁ་རྩ་རྩ་ཏེ་ ལ།

པོང་བྱའི་རྣམ་པ་ཁྲག་འཇག་ཞལ། 1

མཁའ་འགྲོ་ཅི་གསུམ་ལག་ན་ཐོགས། 2 1

རྣལ་འབྱོར་མ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པས་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་ལྷ་སྟོན་ཏེ། རྣལ་
འབྱོར་མ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་འཁོར་ལོ་གསུམ་ལ་གནས་པའོ། །འདོད་པའི་གཟུགས་ཞེས་པ་
ནི་པོང་བྱའི་གདོང་གི་རྣམ་པ་ཁྲག་དང་བཅས་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །དེ་བས་ན་པོང་བྱའི་
རྣམ་པ་ཁྲག་གི་གདོང་། ཞེས་གསུངས་ཏེ། དང་པོའི་མང་པོའི་ཆོག་²ཕྱི་བའི་ཕྱིར་རོ། །
དེ་བཞིན་དུ་མཁའ་འགྲོ་མ་ཞེས་པ་ནི་མཁའ་འགྲོ་མ་ནི་ཀུཀུཕྱ་³ལ་སོགས་པའོ། །ཁ་
གདོང་མ་ལ་སོགས་པ་བཞི་མ་གཏོགས་པ། གཞན་ཐམས་ཅད་ནི་པོང་བྱའི་རྣམ་པར་
ཁྲད་པར་དུ་གྱུར་པའོ། །ཅི་གསུམ་ལག་ན་ཐོགས་ཞེས་པ་ནི་ཁྲྀྱག་སྤངས་པའི་གནས་
སུ་ཅི་གསུམ་བཅང་བའོ། །ཡང་ལྷ་སུམ་ཙུ་ཙ་⁴རྣམས་རྣལ་འབྱོར་མ་ཉིད་ཀྱི་
མདོག་ནི་སྦྱབ་པའི་ཐབས་ཀྱི་རིམ་པ་ཉིད་དོ། །ཁ་ནས་ཁྲག་འཇག་པ་པོང་བྱའི་རྣམ་པ་
དཔལ་ཉེར་ཀའི་རྣལ་འབྱོར་དང་ལྡན་པ་རང་ཉིད་དོ། །

ད་ནི་འདི་སྟོན་ཏེ། པོང་བྱའི་ཁ་ནས་ཁྲག་འཇག་ཉིད། ཅེས་པ་ནི་ཁྲད་པར་རོ། །
ལྷག་མ་ཐམས་ཅད་ནི་སྦྱབ་ཐབས་ནས་གསུངས་པ་བཞིན་ནོ། །རང་གི་ཆེ་ཉིད་ཅེས་པ་

1. ཐུ་དཔེར་ཆོགས་བཅད་གཉིས་པ་ནས་དུག་པའི་བར་ཆོག་ལྷག་ཐོག་བཞུགས་ཡོད།

2. མིང་ཆོག་ གསེར།

3. ཀུཀུཕྱ་ གསེར། དེ། ཀུཀུཕྱ་ ཐུ་དཔེ།

4. ལྷ་སུམ་ཙུ་ཙ་ གསེར། དེ། ལྷ་སུམ་ཙུ་རྣམས་ ཐུ་དཔེ།

5. འདིས་ནི་ ཐུ་དཔེ།

བསྐྱོར་བར་བསྐྱོམ་མོ། །འཁོར་ལོའི་ལྷ་བ་ལ་འབྲས་སྤྲུའི་ཁྱར་བའི་¹རང་བཞིན་ལས་བོང་བུའི་རྣམ་པའི་གཟུགས་བརྟན་བྱས་ཏེ། མར་ནག་དང་བྱ་སྐྱེགས་ཀྱི་ཁྱ་བས་བསྐྱས་ལ་དངོས་སུ་བཞག་གོ། །ཁ་ནས་ཁྲག་འཇག་པའི་བོང་བུའི་རྣམ་པའི་དཔལ་ཉེར་ཀའི་རྣལ་འབྱོར་དང་ལྡན་པས་མཆོམས་བཞི་རུ་མར་མེ་སྤར་ལ། སྤོང་པོའི་སྤགས་ཅི་གཅིག་པར་གྱུར་པར་བཞས་ཤིང་གཟུགས་བརྟན་ལ་བརྟོའོ། །དེ་ནས་ནང་རི་ལྷ་བར་བརྟུ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། ། ༡ །

བསྐྱབས་ན་ཆེ་ཟད་པ་²དང་ནི། །
 ཆེ་རིང་བ་ཡང་སྤང་བ་ཡིན། །
 འདིར་ནི་བོང་བུའི་རྣལ་འབྱོར་བདག །
 དེ་བཞིན་བོང་བུར་མཐོང་བ་ཡིན། ། ༡ །

དེ་ཉིད་ནི་ཆེ་ཟད་པ་ཡང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །ཡང་གིས་ནི་སྤྲོད་ཆད་དོ། །འདིར་ཞེས་པ་ནི་ངས་པའི་དོན་གྱི་སྤྱོའོ། །འདི་ཉིད་ཀྱི་ཆོག་བྱས་ན་དེ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །བོང་བུ་ཞེས་པ་ནི་གལ་ཏེ་ངས་པར་སྤྲོན་དུ་བོང་བུར་གྱུར་པ་ཡིན་ན་རྣལ་འབྱོར་པ་དེའི་ཆེ་བོང་བུའི་བདག་ཉིད་དུ་མཐོང་བའོ། ། ༡ །

སྤང་པོ་ཉིད་དུ་སྤྲོན་དུ་གང་³། །
 མཐོང་སྟེ་སྤང་པོའི་གཟུགས་ཅན་ཡིན། །

1. ཁྱ་བའི་ བེ།
2. ཆོ་ཆད་པ་ སྤ།
3. ཡང་ སྤ། རྟ།

གང་དང་གང་གི་སྐྱེ་བ་གང་།	།
སྒོན་གྱི་སྐྱེ་བར་གྱུར་པ་དག	༤ །
དེ་དང་དེ་ཡི་ ¹ གཟུགས་སྣང་བར།	།
ན་ལ་འབྱོར་པས་ནི་འདིར་ ² མཐོང་འགྱུར།	།
སྒོན་ནས་སྐྱེ་བ་བདུན་དུ་མི་ ³ །	།
གྲུབ་པ་སྟེར་བ་ཡོད་ ⁴ གྱུར་ན།	༥ །
དེ་ཡིས་གཏོར་མའི་བྱ་བ་དག	།
བྱས་ནས་སྐྱབ་པོས་ ⁵ འགྲུབ་པར་འགྱུར།	།
དེ་བཞིན་དཔག་ཆད་བརྒྱ་ཕྱག་ནི།	།
སྟོང་གི་སྟངས་དུ་སྐད་ཅིག་འགྲོ།	༦ །

སྣང་པོ་སྐྱ་ཞེས་པ་ནི་ཡིའི་མཐའ་ཅན་ནོ། །གཞན་གྱི་སྐྱེ་བ་ཡང་མཐོང་བར་
བསྟན་ནོ། །མཐོང་སྟེ་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་ལ་གང་ཡང་མི་ལ་སོགས་པའི་སེམས་
ཅན་ནོ། །སྐྱབ་པ་པོ་ཞེས་པ་ནི་གསུམ་པའི་དོན་གྱི་དུག་པོ། །འདིས་སྐྱེ་བ་བདུན་པ་

-
1. དེའི་ བཤེས་
 2. འདི་ བཤེས་
 3. བདུན་དུ་ནི་ རྟེན་ ལྟ་ ལྟ་
 4. ཡོད་ ལྟ་
 5. སྐྱབ་པས་ ལྟ་ ལྟ་
 6. སྟེང་ ལྟ་

བདེ་ཐུག་ཏུ་ཉིད་པ་ཞེས་པ་ལ་¹སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། གཏོར་མ་དང་། སྤྱན་ལྷན་
དང་། བཟའ་བའོ། །བྱ་བ་ནི་བྱེད་པའོ། །རྣལ་འབྱོར་པ་དེས་གཏོར་མ་དང་སྤྱན་ལྷན་
བྱ་བ་ཡིན་ནོ། །ཅི་ཞེས་པ་ལ། སྐྱབ་པ་པོ་ནི་²སྐྱབ་པར་གྱུར། །ཞེས་གསུངས་ཏེ།
གང་ཡང་སྐྱེ་བ་བདུན་པ་སྐྱབ་པ་པོས་གོང་དུ་བཞུགས་པའི་རིམ་པས་གྱུབ་པའོ། །རྣལ་
འབྱོར་ཞེས་པའི་སྐྱེའི་རྒྱུན་མེད་པའོ། །འདི་རྣམས་པོང་བུའི་རྣལ་འབྱོར་གྱིས། །ཞེས་
པའི་དོན་ནོ། ༥-༦ །

འདི་ནི་རྣལ་འབྱོར་སྐྱགས་མཆོག་གཙོ། །

མཁའ་འགྲོ་མ་ཡི་³སྦྱར་སྐྱབ་བྱེད། །

རྣལ་འབྱོར་མཚན་མས་གང་ལྗོས་པ། །

ཟླ་བ་གཅིག་གིས་འགྱུབ་པར་འགྱུར། ། ག །

སྐྱགས་མཆོག་དམ་པ་ཞེས་པ་སྐྱགས་མཆོག་གི་སྦྱར་བས་སོ། །སྤྱིང་པོའི་སྐྱགས་
རྣམས་ཅིག་ཏུ་བྱེད་པའི་སྦྱར་རོ། །སྐྱགས་འཆང་ཞེས་བྱ་བའི་གཞུང་ལ་ཡང་དེ་ཉིད་དོ། །
གཙོ་པོ་ནི་མངོན་པར་འདོད་པས་སྐྱབ་པའི་སྦྱར་རོ། །མཁའ་འགྲོ་མ་ནི་དོ་མེ་ཕག་
མོའོ། །དེའི་སྦྱར་བའི་ནི་དེས་སྤྱན་གྱི་སྐྱེ་བ་མཐོང་བའི་སྐྱབ་པ་པོ་དེ་དང་སྦྱོམས་པར་
ཞུགས་སོ་ཞེས་དགོངས་སོ། །རྣལ་འབྱོར་ཞེས་བྱ་བ་ནི་གོ་སྦྱོའོ། ། ག །

1. ཞེས་པ་ལ་དེ་ནི་ཞེས་པ་ལ་ གསེར། བེ།

2. སྐྱབ་པ་པོའི་ནི་ གསེར། བེ།

3. མཁའ་འགྲོ་མའི་ བེ།

དེ་ནི་གསང་བའི་རྒྱ་ལོ་ཡི། 1

སྒྲགས་ཀྱི་སྒྲིང་པོ་དག་པ་ཡིན། 1

དེ་ཉིད་མཆོག་གིས་གང་དེ་འདིར། 1

ནལ་འབྱོར་པ་རུ་བྱེད་ཆོས་མེད། ༩ 1

མཁའ་འགྲོ་བའི་སྒྲིང་པོ་ནི། 1

དེ་དག་ཐམས་ཅད་འབྲོད་པ་ཡིན། ༧ 1

དཔལ་ཉེ་རྒྱུ་འདི་ངས་པར་བཞེད་པ་ལས་དཔལ་ཉེ་རྒྱུ་པོང་བུའི་རྣམ་པར་
མཛད་པའི་ཆོག་འདི་ལུ་བུ་སྒྲིང་བུ་བཞི་པའོ། །

གསང་བ་ཞེས་པ་ནི་རྒྱ་ལོ་འདིའི་སྒྲིང་པོ་ཅི་ཞེས་པ་ལ་སྒྲིང་པོ་ཞེས་གསུངས་ཏེ།
སྒྲིང་པོའི་སྒྲགས་སོ། །གང་གི་སྒྲིང་པོ་ཞེས་པ་ལ་སྒྲགས་ཞེས་གསུངས་ཏེ། རིག་པའི་
རྒྱལ་པོ་དེ་གང་གིས་གསེས་པ་དེ་ཉིད་ནི་དཔལ་ཉེ་རྒྱུ་དང་རིག་པའི་རྒྱལ་པོ་གཉིས་
དག་དབྱེར་མེད་པའི་ནལ་འབྱོར་པའོ། །ཡེ་གསེས་ཞེས་པའི་³གཞུང་ལ་ཡང་། ཡེ་གསེས་
ཅམ་གྱི་ནལ་འབྱོར་པས། །དེ་གསེས་པ་ནི་⁴སྒྲིང་པོའོ། །འདི་ནི་མཁའ་འགྲོ་བའི་
སྒྲིང་། །ཞེས་པ་ནི་དཔལ་ཉེ་རྒྱུ་འདི་རྟགས་ལ་མི་བརྟོས་པའོ། །དེ་ཉིད་ལ་འདིར་

1. བླག་འཐུང་དཔལ་པོ་(ཉེ་རྒྱུ་སྒྲིང་) རྒྱ་ལོ།

2. ཞེས་པ་ རྟེན་ ཅོ།

3. གསེས་པའི་ གསེར། བོ།

4. དེ་ཞེས་པ་ནི་ རྟེན་ ཅོ།

5. རྟགས་སུ་ལ་མི་བརྟོས་ གསེར། རྟགས་ལ་མི་བརྟོས་ བོ།

སྦྱོར་བའི་ཉིང་ངེ་འཇོན་ལ་སེམས་འདིས་སྦྱོར་ཞེས་དགོངས་སོ། །འདི་ནམས་ཞེས་
པའི་¹གཞུང་ལ་ནི། འདི་ནི་འགྲོ་བའི་དོན་གྱི་སྦྱུང་དབྱིངས་སོ། །འདི་ནམས་ཀྱིས་
འཛོལ་བའི་མཁའ་འགྲོ་མའི་བྱ་བའི་སྦྱོམ་པ་ཤེས་སོ་ཞེས་བཤད་དོ། ༥-༧ །

དཔལ་དེ་རུག་ར་འདིས་བྱེད་པ་ནི་དཔལ་དེ་རུག་འི་རྒྱུ་ཆོག་འོ། །ཁོང་བྱའི་ནམ་
པའི་ནལ་འབྱོར་གྱིས་དཔལ་དེ་རུག་ར་བྱེད་པའི་ཆོག་ནི་སྦྱབ་ཐབས་སོ། །དེ་རྗེས་པར་
བྱེད་པའི་ལེའུ་བརྒྱ་བཞི་པ་ནི་བརྒྱ་བཞི་པའི་ཞེས་པ་ནི། དཔལ་དེ་རུག་འཁོར་ལོ་སྦྱོམ་
པའི་ལེའུ་བརྒྱ་བཞི་པའི་དཀའ་འགྲེལ་ལོ། །

✱

1. ཤེས་པའི་ བཤ། གསེར།

ཡི་གེ་འབྲི་བ་དྲི་ཆོ་གའི་ལེན།

དེ་ནས་སྡོམ་པ་རྣམས་ལ་ནི།

གང་ཞིག་བདར་གྱུར་ཤིས་པ་དག།

དེ་ཉིད་ཀྱིས་དེ་གྲུབ་པ་ནི།

ཐེ་ཆོམ་མེད་པར་བཤད་པར་བྱ། ༡ |

དེ་ནས་ཞེས་པ་ནི་བརྒྱ་བ་སྟེ་དེའི་སྤྱིར་ཞེས་པ་ནི་ཕྱུ་སྟེ་སྤྱིར་པོ་འབའ་ཞིག་གང་
 གིས་ཤེས་པ་དེ་དེས་ནི་ཆལ་འཕྱོར་པ་མ་ཡིན་ཏེ། འོན་ཀྱང་བད་ཡང་སྟེ་གང་གི་སྤྱིར་
 ཆལ་འཕྱོར་དང་འབྲེལ་བའི་བདའི་ཆོ་གའོ། ཅིའི་དོན་ཡིན་ཞེས་པ་ལ། རྩོམ་པ་
 ཐམས་ཅད་ལ་ཞེས་གསུངས་ཏེ། ཐམས་ཅད་ནི་སྟེས་བྱ་རྒྱུས་ཏེ། ཉན་ཐོས་ལ་
 སོགས་པ་ལ་སྒྲ་བར་བྱ་བ་ནི་རྩོམ་པ་སྤྱང་བ་ལྟེ། དེའི་དོན་དུ་ཞེས་པའི་དོན་ནོ། །དེ་
 གང་དང་སོ་སོར་འབྲེལ་པ་གཟུང་བར་བྱ་བའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཡིན་ནོ་ཞེས་པ་ལ། དེ་ཉིད་
 གྱུས་ཞེས་གསུངས་ཏེ། དེ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པའོ། ག །

རྒྱ་མཚོ་གི་སྐད་ཀྱི་བློ་སྦྲེང་བྱུང་བ་ཤད། |

རྒྱ་ཆེས་བྱ་བ་བྱད་མེད་ཡིན།

དུ་ཞེས་བྱ་བ་གནོན་པ་ཡིན།

སྐྱ⁴ཞེས་བྱ་བ་ཟ་བ་ཡིན། ༣ |

1. གྲུབ་པ་ཡིན་ མྱ། མྱ།
2. བསྐྱར་བ་ གསེར། པ།
3. ཏ་ མྱ།
4. མ་ རྒྱ། མྱ། པ།

རྒྱ་ཞེས་པ་ནི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དཔག་དུ་མེད་པའི་བདར་བྱས་པ་འོ། །རྒྱ་ཞེས་
པ་བྱད་མེད་དེ་ཞེས་པ་དེ་ནི་ནམ་མཁའ་ལ་འགོ་བའི་སྐད་ཀྱི་དབྱངས་ཀྱི་སྒྲོར་བས།
དེ་ཞེས་པ་ནི་དེ་བས་ན་དེ་བཞིན་ཉིད་ཀྱི་རྗེས་སུ་འགོ་བའོ། །རྒྱ་ཞེས་པ་ནི་ཀྱི་པའི་རྒྱན་
གྱིས་གྱུབ་པ་འོ། །རྒྱ་སྟེ་ཐམས་ཅད་དུ་བྱབ་པས་ན་རྒྱའི་འོ། །པུ་ཞེས་པ་ནི་གཞོན་པ་
ཡིན་པའི་ཞེས་པ་ནི་རངས་པར་བྱེད་པ་ལ་པུའི་སྒྲོ་བདར་བྱས་པ་སྟེ། རྒྱ་པ་ལ་སོགས་པ་
དང་འདྲའོ། །དེ་ནི་སྟོང་པོའི་³བྱེ་བྲག་གོ། །པུ་ཞེས་པ་ནི་བཟའ་བཞིད། །ཅེས་པ་ནི་
དེ་ཉིད་ལ་འདིར་བདར་བྱའོ། །ཉིད་ཀྱི་སྒྲོས་ནི་ཡང་དག་པར་བསྐྱབ་པ་ཉིད་དུ་ངས་པར་
གཟུང་བའོ། ། ༣ །

མ་ཞེས་བྱ་བ་མ་རུ་བཤད། །

ཡེ་ཞེས་བྱ་བ་ཁུང་མ་ཡིན། །

སྟེ་ཞེས་སྟངས་མེད་དེ་བཞིན་ཏེ། །

བྱེ་ཞེས་བྱ་བ་མཛའ་མོར་བཤད། ། ༣ །

མ་ཞེས་བྱ་བ་མ་རུ་བཤད། །ཞེས་པ་ནི་མ་ཉིད་ཅེས་པའི་དོན་ཏོ། །ཡེ་ཞེས་པ་ནི་
ཁུང་མ་ཉིད། །ཅེས་བྱ་བ་ནི་བྱེད་པར་ཅན་གྱི་ཁུང་མ་ཉིད། ཅེས་པའི་དོན་ཏོ། །སྟེ་ཞེས་

1. རྒྱའི་ བེ། གསེར།

2. པུ་གཞོན་ཡིན། བེ། བོད་འགྱུར་ཙུང་པར་པུ་ཞེས་གསལ་གྱང་དེར་འགྲེལ་པ་ལྟར་བཀོད་ཡོད།

3. དེ་ནི་གིང་གི་ རྒྱ་དཔེ།

4. སྟེ་ སྟེ། བེ།

5. པུ་ བོད་དཔེ་ཙུང་གི་ གོང་གསལ་བོད་འགྱུར་ཙུང་འགྲེལ་གཉིས་ཀར་རྒྱ་དཔེའི་ཙུང་པ་ལྟར་བཞག་པ་འོ།

པ་ཁྱིང་མོར་དྲན། ཁྱེས་བྱ་བ་ནི་དོན་རིམ་པོ། བྱི་ཁྱེས་བྱ་བ་མཛའ་མོར་གྲགས་
པ་ནི་གཙུགས་²པོ། ༡ །

ལུ་ཁྱེས་བྱ་བ་བྱ་མོ་ཡིན། 1

སྒྲི་³ཁྱེས་ཁྲག་ཏུ་གེས་པར་བྱ། 1

སོ་ཁྱེས་ཞི་བའི་བདུང་བ་ཡིན། 1

པེ་ཁྱེས་དེ་བཞིན་བདུང་བ་སྟེ། ༤ །

ལུ་ཁྱེས་བྱ་བ་ནི་བྱ་མོ་ཁྱེས་བྱ་བ་བདག་ཉིད་ལས་སྒྲེས་པོ། སྒྲི་ཁྱེས་པ་ཁྲག་ཏུ་
ཁྱེས་པ་ནི་ཁྲག་གོ། སོ་ནི་ཁྲ་བའི་བདུང་བ་ཡིན། ཁྱེས་པ་ནི་བདུད་ཅིའི་བདུང་
བའོ། བེ་ནི་བདུང་བ་དེ་བཞིན་གོ། ཁྱེས་པ་ནི་བདུང་བར་བྱ་བ་ཁྱུ་བའི་རྩས་ཁྱེས་
པའི་དོན་དོ། དེ་བཞིན་གྱི་སྒྲི་སྒྲོགས་གཅིག་ལ་བདར་བྱས་པ་ཉིད་དུ་བསྒྱུབ་པ་⁴
ཡིན་གོ། ༥ །

དྲི་⁵ཁྱེས་བྱ་བ་དེ་བཞིན་གྱི། 1

ལུ་ཁྱེས་བྱ་བ་བྱ་མོ་ཡིན། 1

ལུ་ཁྱེས་བྱ་བ་འདུ་ས་⁶ཡིན། 1

ལུ་ཁྱེས་དུར་ཁྲོད་དེ་བཞིན་དེ། ༥ །

1. བའི་གསེར། པེ།
2. གཙུགས་གསེར། པེ།
3. སྒྲི་བོད་འགྱུར་ཙ་བ། མོང་དུ་འགྲེལ་པ་ལྟར་བཞོད་ཡོད།
4. སྒྲུབ་པ་པེ།
5. དྲི་སྟེ། སྟེ། མོང་དུ་ཁྱུ་དཔེ་ལྟར་བཞག་ཡོད།
6. ལུ་ཁྱེས་བྱ་བ་འདུས་པ་ཙ་བ། མོང་དུ་འགྲེལ་པ་ལྟར་ལེགས་པར་མཐོང་སྟེ་བཞོད་དོ།

རྒྱ་¹ཞེས་པ་ནི་ཤའམ་ཡང་ཞེས་པ་ནི་ཤ་ཉིད་དོ། །རྩ་²ཞེས་པ་ནི་བཟའ་བ་ཡིན། །
 ཞེས་པ་ནི་བཟའ་བར་བུ་འོ། །རྩ་³ཞེས་པ་ནི་འདུ་ས་ཡིན། །ཞེས་པ་ནི་ནལ་འབྱོར་མ་
 འདུ་བའི་གནས་ཀྱི་ཕྱེ་བྲག་གོ། །ཕྱི་ཞེས་བུ་བ་⁴དུར་ཁྲིད་ཡིན། །ཞེས་བུ་བ་ནི་རྩེ་
 གནས་སོ། ། ༥ །

དུ་ཞེས་བུ་བ་རོ་རུ་ཤེས། །

རྩ་⁵ཞེས་ནལ་འབྱོར་མ་རུ་བཤད། །

ག་ཞེས་དེ་བཞིན་ལྷ་མ་ཡིན། །

ཏི་⁶ཞེས་བུ་བ་གཟུགས་ཅན་མ། ། ༦ །

དུ་ཞེས་རོ་དུ་མ་བཅས་པ་འོ། །ཞེས་པ་ནི་རོ་སྟེ་ནལ་འབྱོར་མ་དཔག་དུ་མེད་པ་
 གནས་སོ། །རྩ་⁷ཞེས་ནལ་འབྱོར་མ་རུ་གྲགས། །ཞེས་པ་ནི་ཉིང་ངེ་འཛིན་དང་ལྡན་པ་
 དང་དོན་གཉིས་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །ག་ནི་ལྷ་མ་དེ་བཞིན་ནོ། །ཞེས་པ་ནི་ལྷ་མའི་རིགས་
 ལས་བདར་བྱས་པ་འོ། །ཏི་ནི་གཟུགས་ཅན་མ་ཉིད་དོ། །ཞེས་པ་ནི་གཟུགས་ཅན་
 མའི་རིགས་སུ་གྱུར་པ་ཉིད་ལ་བདར་བྱས་པ་འོ། ། ༧ །

-
1. ཕའི་གསེར། དེ། ཕྱི་སྟེ། ཅོ། གོང་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་བཤོད་པ་ཡིན།
 2. ལྷ་གསེར། རྩ་དགེ་དང་ཅེ་ནིར་རྩ་³ཞེས་ཡོད་ཀྱང་གོང་དུ་ཅ་བ་ལྟར་བཞག་པ་ཡིན།
 3. ལྷ་སྟེ། ཅོ།
 4. བའི་ཞེས་བུ་བ་ནི་གསེར། དེ།
 5. ལྷ་བོད་དཔེ་ཅ་བ། གོང་དུ་འགྲེལ་པ་དང་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་བཞག་པ་ཡིན།
 6. རྩ་སྟེ། ལྷ།
 7. གང་སྟེ། ལྷ། དེ།
 8. རྩ་སྟེ། རྩ་སྟེ། ལྷ། དེ། གོང་དུ་རྒྱ་དཔེ་དང་འགྲེལ་པ་ལྟར་བཤོད་པ་ཡིན།

ཀྱ་ཞེས་དེ་བཞིན་མཁའ་འགྲོ་མ། 1

དུ་ནི་ཁྲུ་རྩེ་དུ་ཉིད། 1

ཇ་ཞེས་བྱ་བ་བྱིན་པ་གཉིས། 1

ཀྱ་ཞེས་བྱ་བ་དཔུང་པ་བྱུང་²། 2 1

ཟླ་³ཞེས་བྱ་བ་གསོང་པོར་སྒྲ། 1

སྲུ་⁴ཞེས་ལེགས་འོངས་བྱ་བ་ཡིན། 1 1

ཀྱ་ཞེས་མཁའ་འགྲོ་མ་དེ་བཞིན། ཞེས་པ་ནི་མཁའ་འགྲོ་མའི་རིགས་སུ་སྒྲིམ་པ་
ལ་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་དུ་བདར་བྱས་པའོ། དུ་ཞེས་པ་ནི་དུ་མ་སྒྲིམ་སམ། ཞེས་དུ་མ་སྒྲིམ་
ཀྱི་རིགས་གང་ཡིན་པ་ཉིད་དོ། དུ་འི་སྒྲ་ཡང་དོན་གཉིས་སོ། ཇ་ཞེས་པ་ནི་བྱིན་པ་
གཉིས། ཞེས་པ་ནི་བྱིན་པ་གཉིས་ཏེ་སྒྲིགས་གཅིག་ལ་བདར་བྱས་པའོ། ཟླ་ཞེས་པ་
ནི་གསོང་པོར་སྒྲ། ཞེས་པ་ནི་ཕྱག་འཆལ་བ་སྟེ། ཟླ་འི་སྒྲ་ཡང་དོན་གཉིས་སོ། སྲུ་
ཞེས་པ་ནི་ལེགས་འོངས་ཡིན། ཞེས་བྱ་བ་ནི་ལེགས་པར་འོངས་ཞེས་སུ་འོ། 2-1 1

མེ་ཞེས་བྱ་བ་ཉ་ཡིན་ལ། 1

བ་ཞེས་བྱ་བ་བ་ཡིན། 1

-
1. ཁྲུ་རྩེ་དེ། ཁྲུ་རྩེ་དེ། ཟླ། ཟླ། གོང་དུ་བྱ་བ་དེ་དང་འགྲེལ་པ་ལྟར་བཞག་པ་ཡིན།
 2. དཔུང་པར་བྱུང་། ཟླ། དཔུང་པ་བྱུང་། ཟླ།
 3. དུ་ བྱ་བ་དེ། ཟླ།
 4. སྲུ་ ཟླ། ཟླ། ཟླ། ཟླ།
 5. རིགས་སུ་ གཉིས། ཟླ།

པེ་¹ཞེས་བྱ་བ་བདུང་བ་བདུང་། 1

ལྷ་ནི་བགོད་དང་བགོད་མིན་²ཡིན། 1

ཀྱ་³ཞེས་བྱ་བ་འདོད་པ་ཡིན། 1

ས་ཞེས་བྱ་བ་གཞན་མི་འགྲོ། 1

ར་ཞེས་བྱ་བ་ཁྱི་མེད་མོ་⁴། 1

དུ་ཞེས་བྱ་བ་སྤྱོད་ངན་མོ། 10 1

སུ་ཞེས་བྱ་བ་སྐལ་བཟང་མ་⁵། 1

ན་ཞེས་བྱ་བ་སྐལ་ངན་མ། 1

ས་ཞེས་བྱ་བ་དམ་ཆོག་ཅན། 1

ཨ་ཞེས་བྱ་བ་དམ་ཆོག་མེད། 11 1

ཨྱ་⁶ཞེས་བྱ་བ་འོངས་པ་ཡིན། 1

ན་ཞེས་བྱ་བ་མ་འོངས་ཡིན། 1

སོ་ཞེས་བྱ་བ་ཆགས་པ་ཡིན་⁷། 13 1

1. པ་ ལ།

2. ལྷ་ནི་བགོད་དང་བགོད་མིན་ ལ།

3. ཀ་ ལ། ལ། པ།

4. ཁྱི་མེད་ད་ ལ།

5. སྐལ་བཟངས་མ་ པ།

6. ཨ་ ལ། པ། ལ།

7. ‘མི་ཞེས་བྱ་བ་ཉ་ཡིན་ལ། ཆགས་པ་ཡིན།’ ཞེས་ཆོགས་བཅད་དགྲ་པ་ནས་བརྒྱ་གཉིས་པའི་
བར་གྱི་ཐུ་དཔེའི་ཙུ་བ་ནམས་མེད་པ་མ་ཟད་དེ་དག་གི་འགྲེལ་པའང་མ་གསལ།

འདི་དག་ནི་ཡི་གེ་རེ་རེ་བད་ཡིན་ཏེ། དཔའ་བོ་དང་སྤང་མོར་འདྲ་ཤེས་
 པར་བྱེད་པ། གྲུས་པ་དང་མི་གྲུས་པ་ལ་སྦྱན་པར་བྱ་བ་དམ་ཚིག་གི་མཚོག་ཡིད་
 དུ་འོང་བ་ཕན་འདོགས་པར་བྱེད་པ་སྟེ། གྲུས་པ་ལ་སྦྱན་པར་བྱ་བ་འོ། ༡༩ །

དཔལ་ཉེ་རུ་ཀའི་ངེས་པར་བརྗོད་པ་ལས་ཡི་གེའི་²བདའ་ཆོ་གའི་ལེའུ་སྟེ་
 བཙེ་ལྷ་པའོ་³༥ ॥

ཡི་གེ་ཐམས་ཅད་ནི་རྒྱན་མེད་ལ་སོགས་པའོ། །འདིས་ཀྱང་། ཡི་གེ་རེ་རེ་
 བད་ཡིན་ཏེ། །ཞེས་པ་ནི་ཡི་གེ་རེ་རེ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་དེ་བཞིན་ནོ། །དཔའ་བོ་
 སྤང་མོ་དེར་ཤེས་བྱ་⁴། །ཞེས་པ་ནི་དཔའ་བོ་ནི་ནལ་འབྱོར་པའོ། །སྤང་མོ་ནི་ནལ་
 འབྱོར་མའོ། །བྱའོ་ནི་ངེས་པར་གཟུང་བའོ། །དེ་ནི་བདའོ། །འདི་ནི་མང་པོ་ལ་
 བདར་བྱས་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་གསུམ་པའི་དོན་གྱིས་⁶དང་པོའོ། །བད་⁷དཔའ་བོ་དང་
 ནལ་འབྱོར་མ་དེ་དག་གིས་⁸ཤེས་པར་བྱ་སྟེ། དེ་ཡང་ཐ་སྙད་ཀྱི་ཡན་ལག་གཅིག་

-
1. སྦྱན་པར་བྱའོ་ ལྷ། བེ། ལྷ། ‘གྲུས་པ་དང་མི་གྲུས་པ་.....བྱ་བའོ་’ རྒྱ་དཔེར་མེད།
 2. ཡི་གེ་ བེ།
 3. བཙེ་ལྷ་པའོ་ ལྷ། བེ།
 4. བདའ་ཡིན་ ལྷ། བདར་ཡིན་ ཅོ།
 5. དཔའ་བོ་སྤང་མོ་དེ་ཤེས་པར་བྱ་ གསེར། བེ།
 6. དོན་གྱི་ གསེར། བེ།
 7. བདའ་ ལྷ། ཅོ།
 8. ནལ་འབྱོར་མ་ཉིད་ཀྱི་མས་ ལྷ། ཅོ། ནལ་འབྱོར་མ་ཉིད་མས་ བེ། གསེར། གོང་དུ་རྒྱ་དཔེ་
 ལྷར་བཞག་པ་ཡོད།

ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །ཡང་ན་བདེའི་ཡི་གེ་ཉི་ཤུ་རྩ་བཞི་ནི་འཛམ་གླིང་མཉེན་གྱི་རྩ་བཞི་
རྣམས་པར་དག་པའོ། ༧-༡༩ །

ཡི་གེའི་བདེ་ནི་ཡི་གེ་གཅིག་ཉིད་ཀྱི་བདེའོ། །དེ་རྣམས་སྟོན་པའི་ཆོག་ནི་ཡི་གེའི་
བདེའི་ཆོག་འོ། །དེ་རྫོང་པར་བྱེད་པའི་ལེའུ་ནི་བཙོ་ལྷ་པ་སྟེ་²བཙོ་ལྷ་པའི་ཞེས་བྱ་བ་
ནི་དཔལ་འཁོར་ལོ་སྟོམ་པའི་ལེའུ་བཙོ་ལྷ་པའི་དཀའ་འགྲེལ་ལོ། ། །

✱

-
1. གསེར་བྱིས་དང་པེ་ཀིང་གི་པར་མ་གཉིས་ཀའི་ནང་‘ནི’ མ་གསལ།
 2. ‘བཙོ་ལྷ་པ་སྟེ’ རྟེན་དགེ་དང་ཅི་ནི་གཉིས་སུ་ཆད་པ་ལྟར་སྟངས་།

ནལ་འབྱོར་མ་བདུན་གྱི་མཚན་ནི་ད་ངེས་པར་བརྟག་པའི་ལུ་།

དེ་ནས་གསང་བའི་དངོས་གྲུབ་ཆེ། །

མདོར་བསྡུས་ནས་ནི་རབ་བཤད་བྱ། །

དམ་ཚིག་མཚིག་²ལ་གནས་པ་སྟེ། །

སྐལ་ལྷན་ཡིད་འོང་པན་འདོགས་བྱེད། ༡ །

གྲུས་པ་ནི་ད་ལ་རབ་སྦྱོན་བྱ། །

དེ་ནས་རིགས་ཀྱི་དབྱེ་གཟུང་³ན། །

དཔའ་དང་གཉིས་མེད་ནལ་འབྱོར་མ། །

གང་གིས་ཤེས་པ་ཙམ་གྱིས་ནི། །

སྦྱབ་པོ་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་འགྱུར་བའོ། ༢ །

དེ་ནས་ཞེས་པ་ནི་ཡི་གེའི་བད་བརྟན་པའི་རྗེས་སུ་འོ། །གསང་བ་ནི་ནལ་འབྱོར་
མ་ནམས་སོ། །དངོས་གྲུབ་ཆེན་པོ་ནི་ཆེན་པོར་ངེས་པའི་དངོས་གྲུབ་པོ། །གསང་
བའི་དངོས་གྲུབ་ཆེན་པོ་དེ་རབ་དུ་བཤད་པར་བྱ་སྟེ། །རབ་དུ་བྱེད་པའི་བྱེ་བྲག་གིས་⁴
བཤད་པར་བྱའི་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །དེའི་སྒྲ་ནི་ངག་གི་རྒྱན་ཡིན་ཏེ་ཟད་པ་མེད་པའི་

1. དེ་ནས་སྐལ་ལྷན་སྐལ་ལྷན་མིན། བོད་དཔེ། གོང་དུ་རྒྱ་དཔེ་དང་འགྲེལ་པ་ལྟར་བཞག་པ་ཡིན།

2. རྒྱུག་ བེ། མདོག་ རྟེ། སྐ། ལྟ། གོང་དུ་རྒྱ་དཔེ་དང་འགྲེལ་པ་ལྟར་བཞག་པ་ཡིན།

3. དབྱེ་བཟུང་ ལྟ།

4. བྱེ་བྲག་གི་ གསེར། བེ།

སྐྱེ་ནི་དོན་མང་པོ་ལ་འཇུག་པའི་ཕྱིར་རོ། །སྐྱུ་བ་པ་པོ་ཞེས་པ་ནི་སྐྱུ་བ་པར་བྱེད་པའི་
 རྟེན་བཞི་པའི་དོན་དང་པོ་འོ། །གསང་བའི་སྐྱས་བརྗོད་པའི་ནལ་འབྱོར་མ་དེ་གང་ཞེས་
 པ་ལ་ཐོབ་འགྱུར་མཆོག་ནི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། མཆོག་ནི་དམ་ཆོག་
 དང་མདོག་དང་བྱི་ལ་སོགས་པའོ། །གནས་པ་ཡང་ཡུན་རིང་དུ་ཉེ་བར་གནས་པ་སྟེ།
 རི་ལྗ་བྱར་གྱུར་པ་ཞེས་པ་ལ་ཡིད་འོང་ནི་སྐྱུ་བ་པ་པོ་ཉེ་བར་དགོངས་པ་ཡིན་ནོ། །དེ་
 ཡིད་འོང་ཉེ་བར་འཁོར་བར་བྱེད་པ་ནི་ནལ་འབྱོར་མའི་སྐྱེ་འགོ་སྟེ། རི་ལྗ་བྱར་གྱུར་
 པ་ནམས་ཀྱི་དོན་གང་ཡིན་པ་དེ་དེ་ལྟར་ཞེས་པས་སྟོན་ཏེ། གྲུས་པ་ཞེས་པ་ནི་མཆོད་
 པ་¹ནམས་བསྟེན་པའོ། །དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་འབད་པས་ཤེས་པར་བྱ་བ་ནི་དགོངས་པའོ་
 ཞེས་དགོངས་སོ། །དམ་ཆོག་གི་བཤད་པའི་ནམ་པར་དབྱེ་བ་ནི་དགོངས་པ་ཞེས་བྱ་བ་
 ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། ནི་ནི་ངེས་པའི་དོན་དོ། །ངེས་པར་བསྐྱུ་བ་པའི་ཕྱིར་དཔལ་
 བོ་དང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོཌ་པ་གསུངས་ཏེ། དཔལ་བོ་དང་གཉིས་སུ་མེད་པ་ལ་གཞན་དུ་
 ནལ་འབྱོར་མའི་སྐྱེ་འགོ་ནམས་གང་གི་ཁ་དོག་ལ་སོགས་པ་ཤེས་ན། དེའི་དངོས་གྲུབ་
 མདོན་དུ་བྱེད་ཅིང་ཐོབ་པར་འགྱུར་བ་དེ་རབ་རྟུ་བཤད་པར་བྱའོ་ཞེས་སྐྱར་རོ། །ཕྱི་
 རོལ་གྱི་ནལ་འབྱོར་པས་དེ་ལྟ་བུ་ཤེས་ན་དངོས་གྲུབ་སྟེར་རོ་ཞེས་དགོངས་སོ། ། ༡-༣ །

བྱུང་མེད་པ་ད་ཙུང་ལྟར་དཀར་གང་། །

པརྟའི་³འདབ་ལྟར་དཀྱུས་རིང་མིག་ །

-
1. མཆོན་པ་ རྒྱ་དཔེ།
 2. རིགས་ རྒྱ་དཔེ།
 3. པད་མའི་ བེ།

ཉག་ཏུ་གོས་ནི་དགར་ལ་དགའ། 1

ཅཅན་གསར་པའི་བྱི་དང་ལྷན། ༡ 1

མཚན་ཉིད་ནི་པར་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ་གོ་སྒྲཏོ། 1 ཅཅན་སར་པར་
རབ་ཏུ་གསུངས་པ་ནི་གོ་སྒྲཏོ་²ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། 1 ཅཅན་སར་པའི་བྱི་འདི་ལ་ཡོད་པས་
ཅཅན་སར་པའི་བྱི་ཏོ། ༡ 1

བདེ་གཤེགས་པ་འདུས་ཉིད་ལ་དགའ། 1

དེ་རིགས་རུས་བྱུང་གས་པར་བྱ། 1

བྱད་གང་³བཙོ་མའི་གསེར་འདྲ་ཞིང་། 1

དམར་དང་སེར་བའི་གོས་ལ་དགའ། ༢ 1

རྩ་ཏི་ཅམ་པའི་བྱི་དང་ལྷན། 1

དེ་ནི་དཔའ་བོའི་རྩེས་འགྲོར་འགྱུར། 1

གང་ཞིག་ཟུར་ལ་⁴ལྟར་སྒྲོ་བསངས། 1

གོས་ནི་སྒྲོན་པོ་འཛིན་ལ་དགའ། ༥ 1

ཟུར་ལ་སྒྲོན་པོར་སྒྲུང་བའི་བྱི། 1

དེ་ནི་དཔའ་བོ་བྱན་རྩེས་འགྲོ། 1

1. ཅན་དན་གསར་ ལྟ། དེ། ཅཅན་སར་ ལྟ།

2. གོ་ཤེག་ ལྟ། ཅི།

3. བྱད་གང་ ལྟ། ལྟ། བྱད་མེད་གང་(ཡུན་རྒྱུ) རྒྱ་དཔེ།

4. ཟུད་པལ་ དེ།

5. དཔའ་བོ་བྱན་རྩེས་ རྒྱ་དཔེ།

བྱད་མེད་གང་ཞིག་མཛེས་མ་སྟེ། 1

ཕགས་པ་¹པད་དཀར་འདབ་འདྲ་མ། 6 1

རྟག་ཏུ་པརྟའི་²རྩ་བའི་ངོ། 1

དེ་ནི་དེ་བཞིན་དཔལ་པོའི་སྟོ། 1

དམར་ཞིང་དཀར་བའི་བྱད་མེད་གང་། 1

གཟུགས་བཟང་ཁ་ནི་དམར་བ་དང་། 2 1

མ་ལི་ཀ་དང་ཡུལ་³ངོ། 1

དེ་ནི་དེ་རྗེའི་རིགས་བྱང་ཡིན། 1

མེར་ཞིང་ལྗང་བའི་བྱད་མེད་གང་། 1

གོས་ནི་དཀར་པོ་འཆང་བར་དགའ། 3 1

མགོ་ལ་མེ་ཏོག་ངོ་དང་ལྡན། 1

དེ་བཞིན་གཤེགས་རིགས་རྗེས་འགྲོ་⁴ཡིན། 1

བྱད་མེད་གང་ཞིག་ཁ་དོག་དམར། 1

དེ་ཡི་མདོག་གི་གོས་འཆང་ཞིང་། 4 1

1. ཕགས་པ་ བེ། ལྟ།

2. པད་མའི་ བེ།

3. མ་ལི་ཀ་དང་ཡུལ་ ལྟ། མ་ལི་ཀ་དང་ཡུལ་པལ་ བེ། ལྟ།

4. རྗེས་འགྲོ་ བེ།

ནག་ཏུ་ག་བྱར་བྱི་དང་ལྷན། ༡

ནམ་སྤང་རིགས་ཀྱི་རྗེས་འགྲོ་ཡིན། ༡

ནལ་འགྱོར་མ་ཡི་རིགས་ནམས་ནི། ༡

དེ་རྩེ་བདུན་པོ་ངས་བཤད་པ། ༡༠ །

བདེ་གཤེགས་འདུས་པ་ཉིད་ལ་དགའ་བ་ཉིད་དོ། །རིགས་ནི་རྟ་མགིན་ནོ། །དེའི་
རིགས་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་ཆང་འཛོང་མའི་རིགས་ཀྱི་རྒྱུ་དོ། །དེ་ལས་བྱུང་བ་ནི་སྤྱ་
བྱུང་བ་ཉིད་ཀྱི་རིགས་ལས་སྤྱེ་བ་ཉིད་དོ། །དཔལ་པོ་ནི་ནམ་མཁའི་སྤྱིང་པོ་འོ། །དེའི་
རྗེས་སུ་འགྲོ་བ་ནི་འཁོར་ལོའི་གོ་ཆ་མའོ། །དེའི་རིགས་ལས་བྱུང་བ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་དེ་ནི་
དེ་བཞིན་ནོ། །དེ་རྒྱལ་ཡི་རྗེས་སུ་འབྱུང་། །ཞེས་པ་ནི་ཤིན་ཏུ་དཔལ་མོའི་རིགས་ཀྱི་
རྗེས་སུ་འགྲོ་བའོ། །དཔལ་པོའི་སྤྱོ་མ་ཞེས་པ་ནི་དཔལ་པོའི་སྤྱོ་མའི་རིགས་ཀྱི་རྗེས་སུ་
འགྲོ་བའོ། །དེ་རྗེའི་རིགས་ནི་ཕག་མོའི་རིགས་སོ། །དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ནི་པརྱ་
གར་དབང་ངོ་། །དེའི་རིགས་ཞེས་པ་ནི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་རིགས་སྟོབས་པོ་ཆེའི་
རྗེས་སུ་འབྱུང་བའོ། །བདག་ཅེས་པ་ནི་བདག་ཉིད་ཀྱི་མངོན་དུ་ཡིད་ཆེས་པའོ། །ནི་
ནི་རྗེས་སུ་སྟོན་པའོ། ། ༤-༡༠ །

གཡོན་པའི་ཀྱན་སྦྱོང་ལ་ནག་དགའ། ༡

འདི་དག་རང་རྒྱའི་མདོག་གིས་འབྲུབ། ༡

རིགས་ཀྱི་རིག་པའི་ཡི་གེ་ཡང་། ༡

རིགས་ཀྱི་རྗེས་སུ་འདིར་འགྱུར་བ། 1

འདི་ལ་ཁ་དོག་དུག་དུ་འགྱུར། ༡༡ 1

གཡོན་པ་ནི་བྱད་མེད་དོ། །དེའི་སྤྱོད་པ་ནི་གིན་དུ་བྱོ་བའི་ང་ཐུལ་ལ་སོགས་པ་འོ། །
ལ་ནི་བསྐྱུ་བའོ། །འདིར་ནལ་འབྱོར་མའི་སྐྱེ་འགྲོ་ཡང་རྩ་ལྷ་བྱ་ཞེས་པ་ལ་གསུངས་པ་
རང་ཐུན་ཉི་དཀར་པོ་གོས་ལ་སོགས་པ་འོ། །ཁ་དོག་ནི་པད་ཙུ་ལྟར་དཀར་བ་ལ་
སོགས་པ་འོ། །དེ་གཉིས་བསྐྱེམས་པ་ནི་ཡང་དག་པར་བཅེངས་པ་འོ། །རིགས་ཀྱི་
རིག་པའི་ཡི་གེ་ཡང་། །ཞེས་པ་ནི་སྐྱུ་བ་པ་པོས་དེའི་རིག་པ་དེ་ཉིད་ཀྱང་ཡི་གེ་ཉིད་འོ་
རྗེ་ཡིན་ཏེ། བརྟན་པོར་ལྷག་པར་མོས་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་ན་ནལ་འབྱོར་མའི་སྐྱེ་འགྲོ་འོ། །
དེས་ཀྱང་གཡོ་བ་མེད་པའི་གཟུགས་ནི་ལྷ་མོ་ཡིན་ཞོ་ཞེས་དགོངས་སོ། །རིགས་ནི་
དུག་ཡིན་ཞེས་པ་ནི་རིགས་དུག་གི་རབ་དུ་དབྱེ་བའི་ནལ་འབྱོར་མ་ལྟམས་སུ་གེས་
པར་བྱའོ། །ནི་ནི་བསྐྱུ་བའི་དོན་ནོ། ༡༡ 1

རང་གི་ཕྱག་རྒྱ་འཆིང་བ་དང་། 1

རང་རིགས་ལས་བྱུང་ཆོག་དུ་སྒྲ། 1

གཡོན་ནས་འགྲོ་བའི་བྱད་མེད་གང་། 1

ནལ་འབྱོར་མ་ལའང་གཡོན་ལ་རྟག་ ༡༣ 1

1. 'རིགས་ཀྱི་རྗེས་སུ་འདིར་འགྱུར་བ།' ཐུད་པེར་མེད།

2. རང་ཐུན་ནི་ རྩ། ཙུ།

3. 'ཉིད་' རྩེ་དགེ་དང་ཙུ་ཞེའི་པར་མ་གཉིས་ཀྱི་ནང་མེད།

4. བརྟན་ བོད་འགྱུར་པར་མ། གོང་དུ་འགྲེལ་པར་གསལ་བ་ལྟར་བཞག་པ་ཡིན།

སྐད་ནི་ཆེན་པོར་རབ་སྒྲུབ། 1

གཡོན་ནས་ལྟ་བས་རྣམ་པར་བཟྱ། 1

བྱད་མེད་རྣམས་མཐོང་²རབ་སྒྲུབ། 1

དེ་ནི་དམ་ཆོག་ལྷན་པར་བཤད། 13 1

བྱད་མེད་རྣམས་གང་གསོལ་བཏབ་³བྱེད། 1

རིགས་ཀྱི་ས་བོན་རབ་ཏུ་སྒྲུ། 1

རིགས་ཀྱི་བྱ་བ་མི་འདོར་ཞིང་། 1

རང་གི་གཙུག་ལག་ཆོག་མི་སྤོང་⁴། 14 1

རང་གི་རིགས་ཀྱི་རིག་པ་བློས་⁵། 1

དེ་ནི་དམ་ཆོག་ལྷན་པར་བཟོད། 1

ཕྱག་འཆལ་བ་ནི་གང་འཆིང་བ། 1

གཡོན་པའི་ལུས་ཀྱིས་རྟག་ཏུ་འདུད། 15 1

དེ་ནི་ཕྱག་རྒྱ་འཆིང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། ཕྱག་རྒྱ་འཆིང་བ་ནི་
གཡོན་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། རྣམ་འབྱོར་མ་ཡང་གཡོན་ལ་རྟག 1

1. གཡོན་ནས་ལྟ་བས་རྣམ་པར་ཟླ། ཟླ།

2. དགའ་(རྩིས) རྒྱ་དཔེ།

3. གསོལ་གདབ་ ཟླ།

4. རང་གི་བཟྱན་བཅོས་གསུངས་པ་སྤོང་། ཟླ། ཟླ། དེ།

5. བློས་ དེ།

ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ནལ་འབྱོར་མ་ནམས་ནི་གཡོན་པས་སོ། །ནལ་འབྱོར་མ་
 ནམས་གཡོན་ཞེས་པ་ནི་གང་ཡང་གཡོན་གྱིས་རང་གི་རིགས་ལས་སྐྱེ་བའི་ཆོས་ནི་
 སྐྱེའོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོང་པ་གསུངས་ཏེ། ཆེན་པོར་གྱུར་པ་གང་ཡིན་པ། །དེ་བཞིན་དུ་
 རྫོས་པ་ནི་རབ་དུ་སྐྱེ་བས་རྫོས་པའི་ཚུལ་ཅན་ནོ། །ཉིད་ཀྱི་དོན་ནི་རབ་དུ་སྐྱེ་བའི་དོན་ཏེ།
 དགའ་རྫོས་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་དགའ་བ་རྫོས་པའོ། །དང་ནི་དུ་མ་བཞིན་ནོ། །དམ་ཆོག་
 འདོར་བར་བྱ་བ་མ་ཡིན་ནོ། །དམ་ཆོག་འདོར་བར་བྱ་བ་མ་ཡིན་པའི་ཆོག་ནི་
 དམ་ཆོག་ཡོད་པ་ཅན་དུ་བརྗོད་པའི་ནལ་འབྱོར་མའི་སྐྱེ་འབྱོལ་སྐྱོས་ནས་སྐྱེས་པའི་
 རིགས་ཀྱིས་བརྟན་པའམ་རབ་དུ་དབྱེ་བ་སྐྱོས་ནས་གནས་པ་མེད་པའོ། །རབ་དུ་
 དབྱེ་བ་ཡང་གཅིག་སྟེ། བྱད་མེད་ཅེས་པ་ནི་དམིགས་ཀྱིས་བཀར་བའི་དུག་པའོ། །
 རིགས་ནི་གྲུབ་པའི་འོ། །དེ་ཉིད་ཀྱི་སྐྱོས་དོན་ནི་རབ་དུ་དགའ་བར་སྐྱེ་བར་བྱེད་པའོ། །
 དེ་བྱེད་བྱ་དུ་བྱེད་པ་ནི་སྐྱེ་བའོ། །རིགས་ཀྱི་བྱ་བ་དམ་ཆོག་སྟོད་པའོ། །རིགས་ཀྱི་
 རིག་པ་ནི་རིགས་ཀྱི་ལྟ་མོའོ། །རང་གི་བརྟན་བཅོས་ལས་གསུངས་པ་ནི་རྒྱགས་ཀྱི་

-
1. ཞེས་པ་ གསེར། དེ།
 2. དནི་ སྟེ། ཙོ།
 3. 'དམ་ཆོག་འདོར་བར་བྱ་བ་མ་ཡིན་ནོ།' གསེར་བྱིས་དང་པོ་གིང་པར་མའི་ནང་མི་སྣང་།
 4. ཆོག་ནི་དེ་ དེ། གསེར།
 5. བརྐྱས་ གསེར། དེ།
 6. བརྐྱས་ནས་ གསེར། དེ།
 7. རིགས་ནི་དུག་པའི་དེ་ཉིད་ཀྱི་ གསེར། དེ།
 8. རིགས་ཀྱིས་ གསེར། དེ།

ལྷགས་¹ལས་སོ། །དེ་བརྗོད་པ་ཞེས་པ་གཉིས་པའོ། །ཕྱག་འཆལ་བ་ཞེས་པ་ལ་
སོགས་པ་བདེན་པ་ཉིད་དུ་ངེས་པར་བྱའོ། །མཆན་ཉིད་འདི་ནམས་རྟོགས་ནས་དེ་ལྟ་
བུར་བྱུར་པ་ནི་ནལ་འཕྱོར་མ་ལ་དེ་ཁོ་ན་བཞིན་ཕྱག་འཆལ་བ་ལ་སོགས་པས་དེ་
བདེན་པར་སྐྱབ་པ་པོས་²ངེས་པར་བྱ་བ་ཡིན་ཞོ་ཞེས་པ་ནི་གསུམ་པའོ། ༡༣-༡༥ །

ལྟ་མོ་ནམས་དང་ཀྱན་སྐྱ་བ། །
དེ་ནི་ངེས་པར་བདེན་པར་འགྲོ། །
མཐེ་བོང་གཡོན་པས་ས་ལ་ནི། །
ཀྱང་པས་རི་མོ་འབྲི་བྱེད་ཅིང་། ༡༦།

མཐེ་བོང་གཡོན་པས་ཞེས་པ་ནི་ཀྱང་པའི་འོ། །རི་མོ་འབྲི་བ་ནི་ཡང་དང་ཡང་དུ་
གང་གི་ཆེ་འབྲི་བ་དེའི་ཆེ་དེ་ནལ་འཕྱོར་མའི་སྐྱེ་འགྲོའི་བྱེ་བྲག་གོ་ཞེས་ཤེས་པར་བྱ་
བར་⁶དགོངས་སོ་ཞེས་པ་ནི་བཞི་པའི་དོན་དོ། ༡༦ །

མགོ་ནི་འཕྱག་⁷པར་བྱེད་པ་སྟེ། །
བྱུར་གྱིས་བལྟ་ཞིང་⁸ལག་གཡོན་གྱིས། །

1. ལྷགས་ཀྱི་ལས་ བཤ། གསེར།
2. སོགས་པས་དེ་བདེན་པར་བསྐྱབ་པ་པོས་ ཅོ།
3. མཐེ་བོ་ རྟེ།
4. འབྲི་ རྟེ། བཤ། ལྟ།
5. རི་མོ་འབྲི་བ་ནི་ཡང་དང་ཡང་དུ་གང་གི་ཆེ་འབྲི་བ་ གསེར། བཤ།
6. ཤེས་པར་བྱེད་པར་ གསེར། བཤ།
7. དཀྱག་ ལྟ། དཀྱག་ ལྟ།
8. ལྟ་ཞིང་ ལྟ།

སྐྱབ་པ་པོ་ལ་བྱད་པར་དུ། 1

དེ་ཡི་རང་རིག་པ་¹དཔར་པ་འོ་²། 22 1

མཁུར་བའམ་གོ་སྒོ་དག་³དང་ནི། 1

སྒྲ་དག་དུ་ནི་སོར་མོར་⁴སྒྲོན། 1

ཟུར་གྱིས་བཏུ་ཞིང་ལན་ཅིག་⁵སྒྲགས། 1

བཟུམ་ནས་རིག་མ་རྣམ་པར་བཏུ་⁶། 1

བདེན་པར་འགྲོ་བའི་རྣལ་འབྱོར་མ། 1

ངེས་པར་དམ་ཆོག་ཅན་ཡིན་ནོ། 23 1

དཔལ་ཉེར་ཀའི་ངེས་པར་བརྗོད་པ་ལས་རྣལ་འབྱོར་མ་བདུན་གྱི་⁷མཆན་
ཉིད་ངེས་པར་བརྟག་པའི་⁸ལུ་སྟེ་བཙུ་དུག་པའོ། 11

1. དེའི་རང་རིག་པ་ བཤ།

2. རང་གི་རིག་པ་དཔར་པ་དང་དེ་སྐྱབ་པ་ཡུལ་ལ་ཕན་ ཀྱུ་དཔེ་ཙ་འགྲེལ་དུ་གསལ།

3. འཁུར་བའམ་སྒོ་སྒོ་དག་ སྒྲ། འཁུར་བའམ་གོ་སྒོ་དག་ བཤ། མཁུར་བའམ་གོ་སྒོ་དག་ སྒྲ།

4. སོར་མོ་ སྒྲ། བཤ།

5. ཟུར་གྱིས་བཏུ་ཞིང་ལན་གཅིག་ སྒྲ།

6. རྣམ་པར་ཏུ་ སྒྲ། སྒྲ།

7. རྣལ་འབྱོར་མའི་ བོད་དཔེ། བོད་དུ་འགྲེལ་པ་བཞིན་བཞག་པ་ཡིན།

8. བརྟག་པའི་ སྒྲ། བརྟག་པའི་ཆོག་འི་ ཀྱུ་དཔེ།

མགོ་ནི་འཕྲུག་པར་བྱེད་པ་སྟེ། །ཞེས་པ་ནི་ལག་པས་བྱེད་པ་དེ་ནི་ནལ་འབྱོར་
 མའི་སྐྱེ་འགྲོའི་རབ་དྲུ་བྱེད་པར་གཤམ་པར་བྱའོ། །དྲུག་དྲུ་ཞེས་བྱ་བ་རྗེས་སུ་འདྲུག་
 པའོ། །རང་གི་རིག་པ་དྲན་པ་དང་དེ་སྐྱབ་པ་ཡུལ་ལ་ཕན་ཞེས་པ་དང་དེ་ལྟར་གྱུར་པ་
 དེ་བརྟུན་ནས་རིག་པ་དྲན་པ་ནི་སྐྱབ་པ་པོས་དེ་ལ་སྦྱོར་བའོ། །རང་གི་རིག་པ་ནི་རང་
 གི་ཡི་དམ་གྱི་ལྟ་བཞིན་དུ་བརྟུན་ཞེས་དགོངས་སོ། །ཅི་ཞེས་པ་ལ་ཡུལ་དུ་ཕན་པ་ཞེས་
 པ་ནི་དེ་ལྟ་བུའི་ཡུལ་གང་ཡིན་པ་སྐྱ་མར་བྱའོ། །དང་པོའི་དོན་ལ་བདུན་པའི་དོན་
 བརྟུན་ན་ཐུག་པའོ། །བྲི་བས་བྲི་²ཞེས་བརྟུན་པ་ལྟ་བུའོ། །འདི་ནི་ཡང་དག་པར་
 འབྱུང་བའི་རིག་པའོ།³ །ཟུར་གྱིས་བརྟུ་ཞིང་ཞེས་པ་ནི་ཀོ་སྒོ་⁴ལ་སོགས་པར་སོར་
 མོས་བྱ་སྟེ། ཟུར་གྱིས་བརྟུ་བ་གང་ཡིན་པ་བྱད་མེད་དེ་ནི་ནལ་འབྱོར་མའི་སྐྱེ་འགྲོའི་
 རབ་དྲུ་དབྱེ་བ་གཤམ་པར་བྱའོ་ཞེས་པ་ནི་སྐྱ་གནས་ཀྱི་⁵དྲུག་པའོ། །དེ་ལྟར་བརྟུན་ནས་
 ཅི་བྱེད་ཅེས་པ་ལ། ལན་ཅིག་སྐྱགས་སྒྲོས་གིང་རིག་མ་ནམ་པར་བརྟུ་ཞེས་གསུངས་ཏེ།
 སྐྱགས་ནི་རིག་པའི་རྒྱལ་པོའོ། །འདིས་ཅིར་འགྱུར་ཞེ་ན་གསུངས་པ་བདེན་པར་

-
1. འགྲོ་བ་ཕྲུག་པར་བྱེད་པའོ། རྟེན། ཅོ། མགོ་བོ་འཕྲུག་པར་བྱེད་པ་དང་། གསེར། བེ། འདིར་
 སྐྱུར་གསེར་པེ་པར་མ་གཉིས་དང་ཙ་བར་གསལ་བའི་ཆོག་དབར་བྱད་པར་དེ་ཙམ་མེད་ཀྱང་གོང་
 བཀོད་ནི་ཙ་བར་གསལ་བ་ལྟར་བཞག་པ་ཙམ་ཡིན།
 2. བྲི་བས་བྲི་ བོད་འགྱུར་པར་མ། གོང་དུ་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་བཞག་ཡོད།
 3. རིགས་པའོ་ གསེར། བེ།
 4. ཀོ་བསྒོ་ གསེར། བེ།
 5. དག་གནས་ཀྱི་ རྟེན། ཅོ། གསེར་པེ་གཉིས་སུ་མེད། གོང་དུ་རྒྱ་དཔེ་དང་མཐུན་པར་བཀོད་ཡོད།

འགྲོའི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་དེ་གོ་སྤྱོད། །ནལ་འབྱོར་མ་བདུན་ནི་ཉེ་བར་མཆོན་
པ་སྟེ། རྒྱག་གི་མཆོན་ཉིད་ཀྱང་ངོ་། ༡༥-༡༩ །

ནལ་འབྱོར་མ་བདུན་གསུམ་གྱི་མཆོན་ཉིད་ནི་མཆོན་མའོ། །བདུན་པོ་ནམས་དང་
རྒྱག་པོའི་ནལ་འབྱོར་མ་ནམས་གྱི་མཆོན་ཉིད་ཡོངས་སུ་བརྟག་པ་ལ་ནལ་འབྱོར་མ་
བདུན་གྱི་མཆོན་ཉིད་བརྟག་པ་ཞེས་བྱ་སྟེ། བར་གྱི་ཆོག་ཕྱིས་པ་བརྩུ་བའོ། །དེ་རྫོང་
པར་བྱེད་པ་ནི་ལེའུ་བརྩུ་བྱག་པ་སྟེ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དཔལ་འཁོར་ལོ་སྟོམ་པའི་ལེའུ་བརྩུ་
བྱག་པའི་དཀའ་འགྲེལ་ལོ། །

ནལ་འབྱོར་མ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་གཟུགས་ཡོངས་སུ་བརྗེ་བ་དང་ཕྱག་
མཆན་དང་ཕྱག་རྒྱ་བཞུག་པའི་ཆོ་གའི་ལེའུ།

དེ་ནས་རྗེད་དཀའ་ནལ་འབྱོར་མ། 1

དེ་བཞིན་མཁའ་འགྲོ་མ་ནམས་ཀྱི། 1

བདུད་ཅི་ལྟ་ནམས་¹ཡང་དག་འབྱུང་། 1

ཡ་མི་རྒྱུ་²དང་སྒྲག་བྱེད་མ། 9 1

འདོད་མ་དང་ནི་³དེ་བཞིན་འཇིགས། 1

གཟུགས་ཀྱན་སྦྱོད་མ་མངོས་མ་དག 1

ལྷ་སུ་ར་མཁའ་འགྲོ་ནམས་བདུན། 1

བསྐྱས་མ་རང་མཆན་ཉིད་འདིར་བཤད། ༡།

མཆན་ཉིད་བཞུག་པའི་རྗེས་སུ་ལེའུ་བཅུ་བདུན་པ་⁴བརྗེད་དེ། དེ་ནས་རྗེད་དཀའ་
ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། ནལ་འབྱོར་མ་ནམས་ནི་མཁའ་འགྲོ་མ་ལ་
སོགས་པ་དེ་དང་པོའི་དོན་ལ་རྒྱག་པའོ། །དེ་ཡང་ནལ་འབྱོར་མ་ནི་ལྷ་མོ་སྟེ། ཅི་ནི་
བྱད་པར་གྱི་དོན་ཏོ། །ནལ་འབྱོར་མ་ནམས་ཞེས་པ་ནི་མཁའ་འགྲོ་མའི་ནལ་འབྱོར་

1. བདུད་ཅི་ནམས་ལ་ ལ།

2. ཡ་མི་ནའི་ ལ།

3. ཀྱན་སྦྱོད་(ནགས་ཆལ་མ་) བོད་དཔེ། མོང་དུ་རྒྱ་དཔེ་དང་འགྲེལ་ལྟར་བཞག་ཡོད།

4. ལེའུ་བཅུ་དྲུག་པ་ བོད་འབྲུར་པར་མ། མོང་དུ་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་བཀོད་ཡོད།

མ་སྟེ། རྣལ་འབྱོར་མའི་ཡོན་ཏན་རྗེས་སུ་འཇུག་པའི་དོན་དོ། །དེ་ལྟ་བུ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་
དམ་ཆོག་གོ། །ཅི་ཞེས་པ་ལ་དེ་ནས་རྗེད་དཀའ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ།
གང་གི་ཕྱིར་རྩ་མོའི་ཡོན་ཏན་དང་ལྡན་པའི་མཁའ་འགྲོ་མ་དེ་དགའ་བས་²རྗེད་དཀའ་
ཞེས་དགོངས་སོ། །གལ་ཏེ་དེ་ལྟ་བུ་རྩ་ལ་ཉེ་བར་བསྟེན་པ་ཞེས་པ་ལ། བདུད་ཅི་ལྟ་
ལས་ཡང་དག་འབྱུང་། །ཞེས་གསུངས་ཏེ། དེའི་ཐབས་ཀྱིས་རྣལ་འབྱོར་མ་⁴གྲུབ་
པའི་གནས་སོ་ཞེས་དགོངས་སོ། །མཁའ་འགྲོ་མ་རྣམས་ཀྱི་མཆོན་ཉིད་གསུངས་པ།

ཡ་མི་ནི་དང་སྐྱག་བྱེད་མ་¹། །

འདོད་མ་དང་ནི་འཇིག་དང་གཟུགས། །

ཀུན་དུ་སྤྱོད་དང་རྩ་སུ་ར། །

མཁའ་འགྲོ་མ་ནི་བདུན་དུ་བྱ། །

ཞེས་པ་ནི་ཡ་མི་ནི་ལ་སོགས་པ་འདི་རྣམས་བསྟུས་པ་སྟེ། མདོར་བསྟུས་ནས་བདུན་དུ་
བྱས་པའི་ཞེས་དགོངས་སོ། །རང་གི་མཆོན་ཉིད་འདིར་བཅོད་བྱ། །ཞེས་དགོངས་སོ། །
མིང་དང་རྗེས་སུ་མཐུན་པའི་མཆོན་ཉིད་གང་ཡིན་པ་དེ་བསྟན་པའི་སྟོན་ནས་བཅོད་
པའི་ཞེས་པའི་དོན་དོ། ། ༡-༣ །

-
1. ཆོག་ཀང་ངོ་ རྩ་དཔེ།
 2. གདུང་བས་(དུལ་ཁེན) རྩ་དཔེ།
 3. ཉེ་བར་བསྟེན་ གསེར། དེ། ཉེ་བར་རྗེད་ རྩ་དཔེ།
 4. དེའི་ཉེ་བར་ཡན་པའམ་འབྱོར་བ་ རྩ་དཔེ།
 5. སྐྱ་བྱེད་མ་ དེ།
 6. བསྟེན་ གསེར།

གཟུགས་ཅན་མ་དང་ཚུམ་བེ་ཀྱ ¹ །	1
ལཱ་མ་ཡོངས་གྱུར་བྱིས་བཅས་མོ།	1
མི་ལྷོག་ཨེ་དེ་ཀ་ལྷོ་མོ།	1
མཁའ་འགྲོ་མ་རྣམས་བདུན་དུ་བཤད། ༩	1
མངོན་པར་ཞེན་པས་ ² ལྷ་བ་དང་།	1
སྒྲིན་མ་འདེགས་པར་གར་བྱེད་ཅིང་།	1
སྒྲོན་གྱི་གཟུགས་ནི་སྤྱག་བྱེད་གང་།	1
བྱིས་ནི་འཇིག་པར་བྱེད་པ་ཡིན། ༥	1
དེ་ནི་ ³ གཟུགས་ཅན་མར་གཤམ་བྱ།	1
དཔའ་བོ་གཉིས་མེད་བརྟེན་པར་བྱ ⁴ །	1
གྲུང་བའམ་ཡང་ན་མི་གྲུང་བ ⁵ །	1
བྱིས་པ་འབྱུང་ཅིང་ཚུམ་བེ་ན། ༥	1

དེ་རྣམས་རྗེས་སུ་མཐུན་⁷པའི་མིང་གཞན་གྱི་སྒྲོན་སྤྱང་སྒྲོན་དེ།

1. ཚུམ་བེ་ ལྷ། ཚུམ་བེ་ག་ བེ། ལྷ།
2. ཞེན་པས་ ལྷ།
3. དེར་ན་ བེ།
4. བརྟེན་པར་བྱ་ བོད་དཔེ་འི་རྩ་བ། གོང་དུ་སྤྱད་པེ་དང་འགྲེལ་པ་ལྷར་བཞག་ཡོད།
5. གྲུང་བའམ་ཡང་ན་མི་གྲུང་བ། ལྷ། བེ། འདོད་པའམ་ཡང་ན་མི་འདོད་པ། རྩ་དཔེ།
6. མཐུན་ བེ།
7. འཐུན་ གཤམ་ བེ།

གཟུགས་ཅན་མ་དང་འོ་བྱེད་མ། 1

ལུ་མ་ཡོངས་གྱུར་བྱིས་བཅས་མོ། 1

མི་ཚྭ་ག་ལྟ་མོ་ཨེ་དྲི་ཀ། 1

མཁའ་འགྲོ་མ་ནི་བདུན་དུ་དྲན། 1

ཞེས་གསུངས་ཏེ། གཟུགས་ནི་གཞན་ནོ། །གཟུགས་ཅན་མར་བཟོད་པའི་མཆན་ཉིད་
མངོན་པར་ཞེན་པས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། དཔལ་བོ་གཉིས་སུ་མེད་པར་
བསྟེན། །ཞེས་པ་ནི་དཔལ་བོ་གཉིས་སུ་མེད་པར་བསྟེན་ནོ་ཞེས་པའི་དོན་དོ། །མིང་ནི་²
གཞན་འོ་བྱེད་མ་བཟོད་པའི་མཆན་ཉིད་ནི་སྤྱག་པའམ་³ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་
གསུངས་སོ། ༡-༥ །

དེ་ནི་ཙུ་མ་བི་ཀར་ཤེས་བྱ་⁴། 1

མཁའ་འགྲོ་སྤྲིག་པ་འཛོམས་མ་ཡིན། 1

ཟུར་བཏུ་གདོང་ལ་བློ་གཉེར་ལྡན། 1

སྒྲིན་མ་སྦྱར་ཞིང་སྤྲིགས་མཛུབ་དང་⁶། ༦ །

1. ཨེ་དྲི་ཀྱི་ ཀླུ་དཔེ།

2. མི་ནི་ གསེར། དེ།

3. ཨིལྷཱ་ ལྷ་ ཀླུ་དཔེ།

4. ཙུ་མ་བི་ཀར་ཤེས་བྱ་ ལྟ།

5. ཟུར་ཏུ་ ལྟ། ལྟ།

6. སྒྲིན་མ་སྦྱར་ཞིང་སྤྲིགས་མཛུབ་དང་། དེ། སྒྲིན་མ་སྦྱར་ཞིང་བསྤྲིགས་མཛུབ་དང་། ལྟ།

མཁའ་འགོ་ཞེས་པ་ནི་མཁའ་འགོ་མས་སྒྲིག་པ་ཟད་པར་བྱེད་དོ་ཞེས་དགོངས་
སོ། །དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་ཡ་མ་ནི་དེ་ཡང་དག་པར་བག་ཡོད་པ་སྟེ། དེ་ཉིད་ཡ་མ་ལ་རང་
གི་དོན་དུ་ཨ་ཁའི་རྒྱུན་འབྲེལ་པ་ལོ། །དེ་གང་ལ་ཡོད་པ་དེ་ནི་ཡ་མ་སྟེ། ཟད་པར་བྱེད་
པ་གང་ཡིན་པ་ལོ། །སྒྲིག་བྱེད་མ་ནི་གཞན་ལ་མར་བཞེད་པའི་མཚན་ཉིད་སྟོན་ཏེ།
ཟུར་གྱི་བརྒྱ་དང་ཞེས་གསུངས་སོ། །སྒྲིགས་མཛུབ་ཅེས་པ་ནི་གཅིག་ཉིད་ལ་མང་པོའི་
ཆོག་གི་དེ་ཉིད་ཀྱི་དོན་ཏེ། ༥ །

དབུགས་འབྲེན་འཇིག་པར་བྱེད་གང་ཡིན། །

འདི་ན་གཞན་ཡང་དབུགས་མི་འབྲེན། །

འཇིགས་པར་བྱེད་པ་གང་ཡིན་པ་། །

དེ་ནི་ལུ་མ་ཡིན་པར་བསྟན། །

ཕག་དང་བྱེད་དང་བྱི་ལ་དང་། །

ཅེ་སྤང་ར་⁴དང་རྟ་དག་དང་། །

གཞན་དུ་དབུགས་འབྲེན་པ་ཡང་འདོད་པར་ཞེན་པའི་ཡང་འཇིགས་པར་བྱེད་
པའི་བྱེད་པར་གྱིས་ངལ་བའི་ཕྱིར་རོ། །ནི་ནི་བྱེད་པར་རོ། །དེའི་ཕྱིར་བྱེད་པར་ལ་

1. ཨ་ཁའི་རྒྱུན་ བོད་འགྱུར་པར་མ། གོང་དུ་སྒྲུབ་པའི་མཚན་བཞེད་ཡོད།

2. དོན་སྟོན་ བཤུ་ གསེར།

3. འདི་ན་གཞན་ཡང་.....གང་ཡིན་པ། ཞེས་པའི་ཆོག་ཀྱང་འདི་གཉིས་ཀྱི་དཔེར་མ་གསལ།

4. ཅེ་སྤང་རིགས་ བཤུ་ སྤྱི་ ཅེ་སྤང་ར་ སྤྱི།

5. ཞེས་པའི་ བོད་འགྱུར་པར་མ། གོང་དུ་སྒྲུབ་པའི་མཚན་བཞེད་ཡོད།

དགའ་བས་ན་རྒྱལ་¹སྟེ། ར་ལར་བྱས་པས་ན་ལྷམ་(ལྷམ་)འོ། །མཆན་ཉིད་²གཉིས་
 གྱི་སྒྱུར་བས་འཛིགས་པ་ཉིད་ནི་ལྷམ་(ལྷམ་)འོ། །སྐྱག་བྱེད་མ་ནི་གཞན་ཡོངས་སུ་
 འགྱུར་བའི་མངོན་པར་བརྗོད་པའི་མཆན་ཉིད་སྟོན་ཏེ། བག་དང་³ཞེས་བྱ་བ་ལ་
 སོགས་པ་གསུངས་སོ། །ཤར་རྩ་⁴ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཐུགས་ཀྱི་བྱེད་པར་རོ། །ཤར་མ་⁵ཞེས་
 བྱ་བའི་གཞུང་ཡོད་དེ། དེར་ཡང་ཐུགས་ཞེས་སོ། །⁶ ༥ །

ཐམས་ཅད་དེར་ནི་འཛིགས་བྱེད་པ། །

ཡོངས་སུ་གྱུར་པར་དེ་བཤད་དོ། །

ཤེན་རྩ་དགའ་བས་སྟོན་པ་⁷དང་། །

སོང་ནས་སྐར་ཡང་མི་ཚྲོག་པ། ། ༩ །

ཐམས་ཅད་དེར་ནི་འཛིགས་བྱེད་པ། །ཞེས་པ་ནི་དེ་མཐོང་བས་འཛིགས་པར་
 བྱེད་དོ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །དེའི་ཕྱིར་དེ་ནི་ཡོངས་སུ་གྱུར་རོ། །དེ་བས་ན་ནི་དེའི་ཕྱིར་
 བྱེད་ཏོ། །གཞན་དེ་ཡོངས་སུ་གྱུར་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་གང་གི་ཕྱིར་དེ་བཞེན་ནོ། །
 ཀུན་དུ་སྒྱུད་པ་གཞན་བྱིས་བཅས་མར་⁸མངོན་པར་བརྗོད་པའི་མཆན་ཉིད་སྟོན་ཏེ།

1. ལྷ་མ་ བོད་འགྱུར་པར་མ། མོང་དུ་བཀོད་པ་ནི་ཕྱི་དཔེ་ལྟར་རོ། །

2. རྩ་དགའ་དང་ཙ་ཞེས་པར་མའི་ནང་‘ཉིད་’མ་གསལ།

3. བག་དང་ བེ།

4. སར་རྩ་ བོད་འགྱུར་པར་མ།

5. ཤར་མར་ བེ།

6. ཤེས་སོ་ གསེར། བེ།

7. དགོད་པ་ ལྷ། བེ། ལྷ།

8. བྱིས་བཅས་མང་པོར་ བེ། གསེར།

ཤིན་ཏུ་དགའ་བ་ཞེས་གསུངས་སོ། །སྤང་ནས་སྒྲར་མི་ལྷོག་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་ཀྱན་ཏུ་
སྦྱོང་དགོ། ༩ །

རྗེས་སུ་ཆགས་པས་གསལ་བར་འདོད་²། །

ཁྲུ་རྩོ་རྩོ་³དེ་བཤད་དོ། །

ཡིད་ནི་བྱང་བས་ལག་པའམ། །

བོང་བའམ་⁴ནི་ཀང་པས་སམ། །

གོས་མཐའམ་⁵ཡང་ན་ཤིང་དག་གིས། །

དེས་རེག་པ་ནི་འཆོ་མི་འགྱུར། །

མི་ལྷོག་པར་ནི་ཤེས་བྱ་སྟེ། །

བསྐྱབ་བྱ་མིན་པར་དེ་ལ་བརྟེན། ༡༠ །

འདོད་མ་ནི་གཞན་ཨེ་ཉི་ཀྱི་⁶མདོན་པར་གྱུར་པའི་མཆན་ཉིད་སྟོན་ཏེ། རྗེས་སུ་
ཆགས་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །ཁྲུ་རྩོ་⁷ཁྲུ་རྩོ་དེ་ཕྱིར་མེད་པའི་
ཕྱོགས་གཅིག་⁸ལོ། །རྩོ་ནི་ཡང་དང་ཡང་དུ་གནས་པ་དེ་དེ་བཞིན་ནོ། །དེ་ནི་གང་གི་

1. ཀྱན་སྦྱོང་དགོ། བཤ། ཀྱན་ཏུ་སྦྱོང་བའོ་(སྟུར་ཅེ།) རྒྱ་དཔེ།

2. གསེལ་བར་འདོད་ བཤ། གསེལ་བར་འདོད་ རྟེ། རྟེ། གསལ་བར་གོད་ རྒྱ་དཔེ།

3. ཁྲུ་རྩོ་ རྟེ། ཁྲུ་རྩོ་ བཤ།

4. བོང་བའམ་ བཤ།

5. གོས་མཐའམ་ བཤ། རྟེ།

6. ཨེ་ཉི་རྩོ་ བོད་འགྱུར་པར་མ།

7. ཁྲུ་རྩོ་ གསེར། ཁྲུ་རྩོ་ རྟེ། བཤ། ཅོ།

8. ཕྱོགས་གཅིག་ གསེར། བཤ།

ཕྱིར་རོ། །འདིར་ཕྱོགས་གཅིག་དུ་ཡུན་རིང་དུ་གནས་པས་ནི་ཨིདྱཱའོ། །འོད་
 ལྷན་མ་ནི་གཞན་མི་ལྷོག་པར་མངོན་པར་བརྗོད་པའི་མཆན་ཉིད་སྟོན་དེ་ཡིད་ནི་ཀུན་
 དུ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ་འོད་ལྷན་མ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་གཞན་མི་ལྷོག་པའི་མིང་
 ཅན་ནོ། །དེ་ཡིད་སྟོབ་ཡིན་ནོ། །དེ་ལྟར་གྱུར་པས་རྒྱུ་པ་དང་པོར་བ་ལ་སོགས་
 པས་རེག་པའི་སེམས་ཅན་མི་འཆོའོ། །མི་ལྷོག་པ་ནི་བཞྱོག་པ་ཉིད་དུ་མི་རྒྱས་པའི་
 ཕྱིར་རོ། །ཅི་ཞེས་པ་ལ། གྲུབ་མེན་པར་ནི་དེ་བཤད་དོ་ཡི། །ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་
 གསུངས་ཏེ། དེ་ནི་གང་གི་ཕྱིར་རོ། ༧-༡༠ །

གོད་³སྤྱ་རྒྱ་མེད་པ་རུ་ནི། །

དུ་ཞིང་རབ་དུ་བྱོས་པ་སྟེ། །

དེ་ནི་ཨི་དྱཱའོ་ཀར་བན་བྱ། །

སྤྱ་མོ་གསོང་པོར་སྤྱ་བ་ཡིན། ༡༡ །

སངས་རྒྱས་པ་དང་ཉག་དུ་སྤྱ། །

དེ་ཉིད་དོ་རྗེའི་རིགས་ལས་བྱུང་⁴། །

མཁའ་འགྲོ་མ་ཡི་རིགས་ཕྱག་རྒྱ། །

དཔལ་བོས་བསྟེན་ཕྱིར་མཆོན་པར་བྱ། ༡༢།

1. ཨི་དྱཱའོ་ སྟེ། ཅོ།

2. བསྐྱབ་བྱ་མེན་པར་དེ་ལ་བརྗོད། ཙ་བ།

3. དགོད་ ལ། ལ།

4. ‘སྤྱ་མོ་གསོང་པོར་.....རིགས་ལས་བྱུང་།’ ཞེས་པའི་བར་གྱི་ཆོག་རྒྱུ་གསུམ་པོ་རྒྱ་དཔེར་མེད།

མཁའ་འགྲོ་མ་ཙམས་ཀྱི་རིགས་ནི་འདིར་དཔའ་བོས་དང་པོར་མཚོན་པ་དེ་རྒྱང་
གི་ཤུགས་ཅན་མ་ལ་སོགས་པ་ནས་བཙོན་ཆེན་མའི་བར་ནལ་འབྱོར་མ་ཙམས་ཡམིན་
ལ་སོགས་པ་ནས་ཨེར་ཀའི་¹ བར་ཀྱི་རིགས་ཙམས་ནི་མཁའ་འགྲོ་མ་ཙམས་ཏེ། ནལ་
འབྱོར་མའི་ཞེས་པ་ནི་བྱན་མོང་གི་དོན་དོ། །མཁའ་འགྲོ་མ་ཙམས་ཀྱི་རིགས་ཀྱི་ཕྱག་
རྒྱ་དཔའ་བོས་བསྟེན་ཅིང་མཚོན་པར་བྱའོ་ཞེས་པ་ནི་གཞུང་གཞན་ནོ། །མཁའ་འགྲོ་
མ་ཙམས་སུ་བསྟེན་པའི་རིགས་ཙམས་ནི་རིགས་ཙམས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཉིད་ནི་ནལ་འབྱོར་
མ་ཁོ་ན་སྟེ། རྒྱང་གི་ཤུགས་ཅན་མ་ལ་སོགས་པའོ། དེ་མཚན་² པ་ནི་ཤེས་པར་བྱའོ། །
དཔའ་བོས་བསྟེན་པ་ནི་དཔའ་བོས་³ བསྟེན་པ་སྟེ། དཔའ་བོས་བསྟེན་ནོ་ཞེས་བྱ་བའི་
དོན་དོ། །གཉིས་པ་མང་པོའི་ཆོག་ཕྱི་བའོ་⁴ ༡༡-༡༣ །

ཐོད་པ་དག་སྟེ་མཆེ་བ་དང་། །
འཁོར་ལོ་ནི་རྗེ་རྒྱལ་མཚན་དང་། །
རལ་གྱི་ཀླན་དུ་སྐྱག་བྱེད་ཉིད། །
དུང་དང་བརྒྱད་དུ་ཤེས་པར་བྱ། །
རིགས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཡིན་པར་བཤད། ༡༣།

དཔལ་ཉེར་ཀའི་ངས་པར་བརྗོད་པ་ལས་ནལ་འབྱོར་མ་ཙམས་ཅད་ཀྱི་

1. སོགས་པ་ཨེར་ཀའི་ གསེར། དེ། སོགས་པ་ནས་ཨེར་ཀའི་ རྟེན། ཅོ།
2. དེ་མཚོན་ དེ། གསེར།
3. དཔའ་བོས་ དེ། གསེར།
4. ཆོག་ཕྱི་བའོ་ རྟེན། ཅོ།

གཟུགས་ཡོངས་སུ་བརྗེ་བ་དང་ཕྱག་མཆན་དང་ཕྱག་རྒྱ་བསྟན་པའི་ཆོ་གའི་
ལེའུ་སྟེ་བརྒྱ་བདུན་པའོ། །

ཐོད་པ་དང་། དག་སྟ་དང་། མཆེ་བ་དང་། འཁོར་ལོ་དང་། རྒྱ་སྤྱོད་གྱི་ཀྱལ་
མཆན་¹དང་། རལ་གྱི་དང་། སྐྱག་བྱེད་ཉིད་དང་²དུང་། འདའ་ཞི་བསྟུ་བའོ། །རྒྱ་
སྤྱོད་ཀྱལ་མཆན་ནི་སྐྱ་གྲོལ་བའོ། །མཆེ་བ་ནི་ཕག་པའི་སོའོ། །བརྒྱད་ནི་ཕྱག་རྒྱ་
བརྒྱད་དེ་ཕྱག་རྒྱ་འདི་ནམས་ཀྱི་ནང་ནས་གང་ཡང་རུང་བ་ཅིག་³གང་དུ་ནི་མཁའ་
འགོ་མ་ནམས་ཀྱི་འོ། །ཐོད་པ་དག་སྟ་མཆེ་བ་དང་། རལ་གྱི་དང་སྐྱག་བྱེད་ཉིད་ཅེས་
པ་ནི་གཞུང་གཞན་ལོ། །རལ་གྱི་ནི་སྐྱའི་རྒྱུ་མེད་པའོ། །སྐྱག་བྱེད་ནི་གྱི་གྲུག་གོ། །
ཕྱག་རྒྱ་ནི་ལྗེ་ཉིད་དོ་⁴། ༡༩ །

ནལ་འབྱོར་མ་འདི་ནམས་ཀྱང་གཟུགས་ཡོངས་སུ་གྱུར་པ་ལ་མངོན་པར་དགའ་
བས་བཞུ་བ་ལ་སོགས་པའོ། །ཐོད་པ་ལ་སོགས་པའི་ཕྱག་རྒྱའི་ཆོ་གས་དགོངས་པ་⁵
ནི་ནལ་འབྱོར་མ་གཤམ་པར་བྱེད་པའི་མཆན་ཉིད་དོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི། དཔལ་འཁོར་ལོ་
སྒོ་མ་པའི་ལེའུ་བརྒྱ་བདུན་པའི་དཀའ་འགྲེལ་ལོ། །

✽

-
1. དོ་རྗེ་ཀྱལ་མཆན་ ཙུང་།
 2. སྐྱག་བྱེད་དུ་འགོ་བའོ། ཐོད་འགྱུར་འགྲེལ་པ། གོང་དུ་ཙུང་བར་གསལ་བ་ལྟར་བཞག་ཡོད།
 3. གཅིག་ ཅོ།
 4. ཕྱག་རྒྱ་ནི་ལྗེ་མ་ཉིད་དོ། ཐོད་དཔེ། གོང་དུ་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་བཞོད་པའོ།
 5. དགོས་པ་(ཕྱོད་ཅན་སྟེ) རྒྱ་དཔེ།

ཀླུ་འབྱོར་མ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཁ་དོག་གི་མཆན་ཉིད་དང་མཆན་
མའི་ངེས་པའི་ཆོག་གི་ལེན།

དེ་ནས་གཞན་ཡང་བཤད་བྱ་བ།

མཁའ་འགྲོ་མཆོག་གི་གོ་འཕང་ནི།

གང་གིས་ཡང་དག་ཤེས་པ་ཡིས།

མཁའ་འགྲོའི་དམ་ཚིག་ལ་གནས་པའོ། ༡ །

དེ་ནས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་གཟུགས་ཡོངས་སུ་བརྗེས་པ་ལ་སོགས་པ་བརྟན་པའི་རྗེས་
སུའོ། །དེ་ནས་ཆོག་གཞན་གྱི་མཆོན་མ་རུ་བཤད་དོ་ཞེས་སྟུང་འོ། །འགྲོ་ཁིང་ལྷོག་
པས་ན་མཁའ་འགྲོ་མ་སྟེ། དེ་ནི་ཆོག་གང་གིས་སོ། །དི་རྩ་བུ་ཞེས་པ་ལ་གང་གིས་
ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །མཁའ་འགྲོ་མ་ཞེས་པ་ནི་གཉིས་པའི་དོན་ལས་
དང་པོའོ། ༡ །

དམར་ཞིང་སེར་བའི་བྱད་མེད་གང་། །

པདྨའི་པྱི་ནི་རྣམ་པར་གཏོང་།

ལྷ་ལྷངས་³རང་བཞིན་ཞི་བ་དང་།

ཞེན་པར་བརྟུ་བའི་⁴རྩེས་འགྲོ་བ། ༣

1. 'བརྟུན་པ་ལ་མོགས་པ་བརྟན་པའི་' ཙོ་རྩེ་གཉིས་སུ་མི་རྒྱུད། རྟུན་པ་.....བརྟན་པའི་ གཞིར།

2. བད་མའི་ རེ།

3. བུལ་སྒྲུངས་ གྲི།

4. ལྟ་བུའི་ དེ། ལྟ།

ཆོག་ནི་དམར་ཞིང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། བསྐྱེད་ཀྱི་ནི་ནམ་པར་
གཏོང་། ཞེས་པ་ནི་ལུས་ལས་བསྐྱེད་ཀྱི་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །བརྟམས་དང་རང་བཞིན་
ཞི་བ་དང་། ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཁྲོ་གཉེར་ལ་སོགས་པ་སྤངས་པའི་ཕྱིར་རོ། ཞེན་པར་
བརྟམ་བའི་རྗེས་སྟོན་པ། ཞེས་པ་ནི་གིན་ཏུ་རྗེས་སུ་ཆགས་པའི་ཐུད་པར་གྱི་ཕྱིར་རོ། །
ཡང་དག་ཆགས་པའི་མིག་ཅེས་པའི་གཞུང་ཡང་ངོ་། །ཆགས་པ་དང་ཡང་དག་པར་
ལྷན་པའི་མིག་གོ་ ༡ །

བྱད་མེད་གང་ཞིག་སེར་མོ་དམར། །

དེ་བཞིན་སྐྱེ་བོ་ཀུན་ལ་བཙུང་། །

བྱིས་དུ་བསྐྱེད་འབྲི་བ་ནི། །

བསྐྱེད་གར་དབང་རིགས་བྱུང་ཡིན། ༡ །

སེར་མོ་ཞེས་པ་ནི་གང་གིས་ལྷག་པའི་དོན་དུ་སྐྱེ་བོ་མོ་གིན་ཏུ་དམར་བ་ཞེས་
པའི་དོན་ཏོ། །ཡང་དག་པར་ཆགས་པའོ། །གནས་སྐབས་ཀྱི་མཆན་མའོ། །བསྐྱེད་
འབྲི་ཞེས་བྱ་བའི་གཞུང་ནི་རྟོགས་པར་སྤོ། །བསྐྱེད་གར་དབང་ཞེས་པ་ནི་དཔལ་པོ་
འོད་དཔག་ཏུ་མེད་པའོ། །དེའི་རིགས་ལས་བྱུང་བ་ཞེས་པ་ནི་ཤེས་པར་བྱའོ། ༡ །

1. ལྷངས་ རྟེ།

2. དེ་བཞིན་སྐྱེ་བོ་ཀུན་ལ་ཙུང་། བེ། དེ་བཞིན་མིག་ཡང་དམར་པོ་ཡི། ཐུད་པོ།

3. བད་མ་འབྲི་ བེ། བསྐྱེད་འབྲི་ རྟེ། ལྷ།

4. བད་མ་ བེ།

5. 'སྐྱེ' གསེར་བྱིས་དང་བེ་ཀིང་གཉིས་སུ་མེད།

6. བསྐྱེད་འབྲི་ གསེར། བེ།

སྒྲིན་མའི་དབུས་ན་ཅེ་གསུམ་ཡོད། |
 ལུས་ཀྱི་མདོག་ནི་སྐྱ་བསངས་དང་། |
 ཏག་ཏུ་དོ་རྩེ་རིགས་སྒྲིམ་པ། |
 གང་གི་བྱིམ་དུ་དོ་རྩེ་འབྲི། |
 ཏག་པར་མཆོད་པ་བྱེད་པ་ཡི། ༤ |

སྒྲིན་མའི་དབུས་ཀྱི་ཅེ་གསུམ་གྱི་ནམ་པའི་མཆོན་མའོ། །ལུས་ནི་སྐྱ་བསངས་སྐྱ་
 བ་དང་། །ཞེས་པ་ནི་གང་ལ་སྐྱ་བསངས་དང་སྐྱ་བ་འཡོད་པ་ནི་དེའི་ལུས་སོ། །དེ་ལས་
 རང་གི་བྱིམ་དུ་དོ་རྩེ་བྲིས་ནས་བྱིམ་དུ་མཆོད་པའོ། །གང་གིས་ནི་ངས་པའོ། ༤ །

མཁའ་འགྲོ་མ་དེ་དཔལ་ལྷན་ནི། |
 ཏེ་རུ་ཀ་ཡི་²རིགས་བྱང་ཡིན། |
 གང་གི་དཔལ་³བར་ཅེ་གསུམ་ནི། |
 མདུང་བྱང་དག་ཀྱང་སྣང་འགྱུར་ཞིང་⁴། ༥ །

དེ་ནི་ངས་པར་དཔལ་ཏེ་རུ་ཀའི་རིགས་ལས་བྱང་བར་གཤམ་པར་བྱའོ། །ནི་ནི་ངག་
 གི་བྱན་ཏོ། །འམ་ནི་ཕྱོག་གཞན་ནོ། །ཡང་ནི་སྤྲོད་ཆད་དོ། །ཕྱིར་ནི་ཞིན་ཏུ་འོ། ༥ །

-
1. སྐྱ་བ་ རྩེ། སྐྱ་བོ་ བེ།
 2. ཏེ་རུ་ཀའི་ བེ།
 3. གང་གི་དཔལ་ ལྷ། གང་གིས་དཔལ་ ལྷ།
 4. འགྱུར་ཅིང་ ལྷ།
 5. ནི་ནི་ཞིན་ཏུ་ བྱེད་པ།

མིག་དམར་མདོག་ནི་དམར་སེར་ཡང་། 1

དེ་བཞིན་རྒྱང་པ་ལག་པ་དམར། 1

ར་སྒྲེས་བྲིས་བྱ་དག་ལ་ཡང་། 1

རྟག་ཏུ་ཡིད་ནི་དགར་གྱུར་ཅིང་། 6 1

དེ་ཡི་བྲིས་དུ་དོ་རྩེའི་མཆོན། 1

རྟག་ཏུ་གང་ཞིག་མཆོད་བྱེད་པ། 1

སྒྲེ་དེ་རུ་ཀའི་གཟུགས་ལས་²བྱུང་། 1

མཁའ་འགྲོ་ཡིན་པར་གདོན་མི་བ། 2 1

འཁོར་ལོ་³གང་གི་དཔལ་བའམ། 1

ལག་པར་ཡང་ནི་སྒྲུང་གྱུར་པ། 1

སྒྲིན་སྒྲིན་དག་དང་འདྲ་བ་སྟེ། 1

རྟག་ཏུ་དཔལ་བར་དར་འཆིང་བ། 4 1

སྐལ་བ་ཆེན་པོར་ཀུན་ཆོག་གས་གིང་། 1

མཆོག་ཏུ་བདེ་བ་གང་ཡིན་དང་། 1

བྲིས་དུ་འཁོར་ལོ་འབྲི་བྱེད་ཅིང་། 1

རྟག་ཏུ་དེ་ལ་མཆོད་བྱེད་པ། 7 1

1. ཡོད་ན་དགར་ ལྟ། ཡིད་ནི་དགར་ བཤ།

2. གཟུགས་ལག་ ལྟ། རིགས་ལས་ རྒྱ་དཔེ།

3. ཕྱད་ཕྱི་མའི་ཕྱ་དཔེར་ ‘དོ་རྩེ’ ཞེས་འཁོད་འདུག

4. འབྲི་བྱེད་ བཤ། ལྟ། ལྟ།

དོ་རྩེ་ཕག་མོའི་རིགས་བྱུང་བའི།	།
མཁའ་འགྲོ་མ་ཡི་སྟོབས་ཀྱིས་རྟེན།	།
གང་ཞིག་སྒྲིན་མ་སྟག་འཕྲུལ་ཞིང་།	།
སོ་ནི་དཀར་ཞིང་མཐོ་བ་དང་།	༡༠ །
གཡོན་པ་རྟག་ཏུ་མ་རུངས་པ།	།
སྟོང་སྟོབས་ལྡན་པར་གྱུར་པ་དང་།	།
རྟག་ཏུ་བྱས་ལ་དགའ་བ་དང་།	།
མང་དུ་སྒྲིབ་པར་མི་བྱེད་ཅིང་།	༡༡ །
བྱིས་དུ་དོ་རྩེ་འབྲི་བ་དང་།	།
རྟག་ཏུ་དགའ་བས་མཆོད་བྱེད་པ།	།
དོ་རྩེ་ཕག་མོའི་རིགས་བྱུང་བ།	།
སྟོང་ཕྱག་བཙུག་ལྡན་པ་ཡིན།	༡༢ །

དམར་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ་ར་སྟེས་ཉིད་ནི་རའོ། ། རྟག་ཏུ་ནི་རྟག་ཏུ་འོ། །
 མཁའ་འགྲོ་མ་ཞེས་པ་ནི་མཁའ་འགྲོ་མའོ། ། དཔལ་བ་ལ་ཞེས་པ་ནི་དཔལ་བའི་དབུས་
 སུ་ཞེས་ཤེས་པར་བྱའོ། ། བྱི་ནི་སྒྲིས་སོ། ། གང་གི་ཕྱིར་ནི་ངས་པར་གཟུང་བའོ། །

1. མིག་སྒྲིན་ནག་ རྩེ་དཔེ།

2. ར་བར་‘བཙུག་དང་’ ཞེས་ཡོད་ཀྱང་གོང་དེར་རྩེ་དཔེ་དང་འབྲེལ་པ་ལྟར་བཞག་པ་ཡིན།

3. སོགས་པ་ལ་ར་སྟེས་ཉིད་ནི་རའོ་ བེ།

དཔལ་བའི་སྐྱུ་ཞི་དཔལ་བའི་དར་དབྱངས་¹སོ། །ལེགས་པ་ཞེས་པ་ནི་རང་གི་བག་
མའོ། །མཆོག་ཅས་པ་ནི་མཆོག་ཏུ་མཛེས་པའོ། །སོ་མཐོ་བ་ནི་སོ་རིང་ཞིང་མཐོ་
བའོ། །གཡོན་པ་ནི་བྱ་བ་ཡིན་པའི་ལས་ལ་དགའ་བའོ། །དོ་རྩེ་ལག་མོའི་རིགས་ལས་
བྱང་བར་གྱུར་པའོ། །དི་ཙམ་ཞེས་པ་ལ། ལྟོང་ཕྱག་བཙུ་ལྟ་ལྟ་པ་ཡིན། །ཞེས་
གསུངས་ཏེ། རྣལ་འབྱོར་མ་ལྟོང་ཕྱག་བཙུ་ལྟ་ཞེས་པའི་དོན་ཏེ། ༥-༡༣ །

སེར་ཞིང་གསེར་གྱི་མདོག་འབྲར་སྒྲང་། །

མིག་མི་གཡོ་ཞིང་ཁ་སྐྱ་སེར། །

དོ་རྩེ་གང་གི་དཔལ་བའམ། །

ལག་པར་ཡང་ནི་སྒྲང་གྱུར་པ། ༡༣ །

རྟག་ཏུ་ཐུལ་སྤྱད་དག་ལ་གནས། །

བསྐྱེམས་²ཞིང་བདེན་པར་སྐྱ་བ་དང་། །

མ་ལེ་ཀའི་འདྲི་བྱང་ཞིང་། །

གང་གི་⁴བྱིམ་དུ་དོ་རྩེ་ནི། །

རྟག་ཏུ་འབྲི་ཞིང་ཆེར་མཆོད་པ། ༡༤ །

1. དར་དབྱངས་ གསེར།

2. བསྐྱེམས་ བེ། སྐྱ།

3. མ་ལེ་ཀའི་ རྟེ། སྐྱ། རྟ།

4. གང་གིས་ སྐྱ།

5. རྟག་ཏུ་འབྲི་ རྟེ། བེ། སྐྱ།

དགར་ཞིང་ཞེས་བྱ་བ་ནས་མཆོག་ཅེས་པའི་བར་གྱིས་དུམ་སྐྱེས་མའི་¹རིགས་
ལས་བྱང་བའི་མཆོན་ཉིད་དོ། །མ་ལི་ཀ་ཏྲ་བུའི་དྲི་གང་ལ་ཡོད་པ་ནི་མ་ལི་ཀའི་དྲི་
ཞིམ་པོ་དང་ལྡན་པ་ནི་དེ་བཞིན་ནོ། ༡༣-༡༤ །

ཁར་རོ་དྲུའི་²རིགས་ལས་བྱང་། །
ནལ་འབྱོར་མ་ཡི་དབང་ལྷག་མཆོག་ །
གང་ཞིག་ཏྲ་ག་པར་ག་ལ་དགའ། །
སྐྱེམ་ཞིང་མིག་སྒྲན་³ནག་པོའི་མདོག་ ༡༥ །
དཔལ་བར་མདུང་ཅེ་ཏྲ་བུ་ཡོད། །
གང་ཞིག་ག་དུག་པའི་ལས་ལ་དགའ། །
ཏྲ་ག་དྲུ་དྲུར་ཁྲོད་དག་དྲུ་འགྲོ་ །
འཇིགས་པ་མེད་ཅིང་ཚོག་མེད་⁴དི། ༡༦ །
གང་གི་དཔལ་བར་ཐིག་ལེ་དང་། །
བྱིམ་དུ་ཐོད་པ་འབྲི་⁵ཞིང་མཆོད། །
དཔལ་ལྡན་དེ་རུ་ཀ་དེ་ཡི། །
མཁའ་འགྲོའི་རིགས་ལས་བྱང་བ་ཡིན། ༡༧ །

-
1. དུམ་སྐྱེས་མའི་ གསེར།
 2. ཁར་རོ་དྲུའི་ བེ། ཁར་རོ་དྲུའི་ ལྷ།
 3. སྐྱེན་མ་ བེ། ལྷ། ལྷ།
 4. ཚོག་མེད་ ལྷ། བེ།
 5. ཐོད་པ་འབྲི་ ལྷ། བེ། ལྷ། ཐད་པ་འབྲི་ ལྷ།

གང་ཞིག་རྟག་པར་གལ་དགའ། །ཞེས་པ་ནས། མཁའ་འགྲོ་མ་ཡི་རིགས་བྱང་
ཡིན། །ཞེས་པའི་བར་ནི་དཔལ་ཉེར་ཀའི་རིཊ་ལས་བྱང་བའི་མཆོན་ཉིད་དོ། ༡༥-༡༥ །

སྤྱིན་གྱི་མདོག་འདྲའི་བྱད་མེད་གང་། །

སོ་ནི་མི་མཉམ་པར་གནས་གིང་། །

རྟག་དུ་གདུག་པའི་ལས་ལ་དགའ། །

གཡོན་གྱི་མཆེ་བ་གཅིགས་པ་³དག ༡༦ །

དེ་ཡི་⁴བྱིམ་དུ་དག་སྟེ། །

འབྲི་ཞིང་⁵རྟག་དུ་མཆོད་བྱེད་པ། །

ནམ་པར་འདྲེན་པའི་རིགས་བྱང་བའི། །

མཁའ་འགྲོ་ཡིན་པར་ཐེ་ཆོམ་མེད། ༡༧ །

སྤྱིན་གྱི་མདོག་འདྲ་ཞེས་པ་ནས་ཐེ་ཆོམ་མེད་ཅེས་པའི་བར་གྱིས་ཆོགས་བདག་གི་
རིགས་ལས་བྱང་བའི་མཆོན་ཉིད་དོ། །སོ་ནི་མི་མཉམ་པར་གནས་གིང་། །ཞེས་པ་ནི་
སོ་རིང་དུ་འདུག་ཅེས་པའི་དོན་དོ། །ཆོགས་བདག་ནི་བགེགས་དགའོ། ༡༦-༡༧ །

1. མཁའ་འགྲོ་མའི་གསེར། བེ།

2. སྤྱིན་ བེ། ལྷ། ལྷ།

3. བཅུགས་པ་ བེ།

4. དེའི་ བེ།

5. འདྲི་ཞིང་ རྟེ། བེ། ལྷ།

མཁའ་འགྲོ་མ་ཡི་ཆོགས་འདི་དག 1

སྤྱི་ཏེ་རུ་ཀའི་རིགས་ལས་བྱུང་། 1

སྐྱབ་པ་པོ་ལ་ཕན་པའི་བྱིར། 1

གསང་བའི་མཆན་ཉིད་སྐྱུ་ལ་པ་ཡིན། ༣༠ 1

དཔལ་ཏེ་རུ་ཀའི་ངེས་པར་བརྗོད་པ་ལས་ནལ་འབྱོར་མ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཁ་
དོག་གི་མཆན་ཉིད་དང་། མཆན་མའི་ངེས་པའི་ཆོག་འདི་ལེའུ་སྟེ་བཙུ་བརྒྱད་
པའོ།། ॥

མཁའ་འགྲོ་མ་ཡི་ཆོགས་འདི་དག 1

དཔལ་ཏེ་རུ་ཀའི་རིགས་ལས་བྱུང་། 1

སྐྱབ་པོ་ནམས་ལ་ཕན་པའི་བྱིར། 1

མཆན་ཉིད་ཡང་དག་བཤད་པ་ཡིན། 1

ཞེས་པ་ནི་མཆན་ཉིད་ནམས་དང་ལྡན་པ་ནི་མཁའ་འགྲོ་མའི་ཆོགས་དང་འབྲེལ་
བའོ། རི་ལྗང་བྱུར་བྱུར་ཞེས་པ་ལ། དཔལ་ཏེ་རུ་ཀའི་རིགས་ལས་བྱུང་། ཞེས་པ་སྟེ།
ཀྱེན་མེད་པའི་དཔལ་ཏེ་རུ་ཀའི་རིགས་ལས་བྱུང་བ་ནི་རིང་པོར་བརྗོད་པའོ། དང་ལ་
སོགས་པའི་སྐྱས་ནི་བསྐྱབ་པ་ལ་སོགས་པའི་དོན་དུ་གེས་པར་བྱའོ། མཆན་ཉིད་དང་
རིགས་བསྐྱས་པའི་ཡིད་ཀྱིས་རི་ལྗང་བར་འངས་པ་ཡོད་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། ལེའུ་བརྒྱ

1. མཁའ་འགྲོ་མ་ནི་ བཤ། ལྟ། ལྟ།

2. བརྒྱ་བརྒྱད་པའོ་ བཤ། ལྟ།

3. རི་ལྗང་ གསེར།

དུག་པར་མདོག་དང་དྲི་ལ་སོགས་པས་ནལ་འབྱོར་མ་བདུན་གྱི་རིགས་ཀྱི་དུག་པའོ། །
 བརྩ་བདུན་པར་མིང་ལ་སོགས་པ་བཟུང་བ་¹དང་ཐོད་པ་ལ་སོགས་པའི་རྟགས་ཀྱིས་
 བདུན་ནོ། །འདིར་ཡང་²མདོག་དང་དྲི་ལ་སོགས་པའི་རྟགས་ཀྱིས་བརྩད་དུ་འགྲེལ་བའོ།
 རྩོམ་ནི་ཉི་ཤུ་ཙུ་བརྩད་དེ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྒྲ་ནི་ཕྱོགས་གཅིག་མ་ལུས་པའོ། ༣༠ །

བརྩད་པོ་ཐམས་ཅད་ནི་ནལ་འབྱོར་མ་ནམས་ཏེ་མདོག་དང་མཆན་ཉིད་དང་
 རྟགས་བརྗོད་པ་ནི་སྒྲུབ་པ་སྟེ། གང་གིས་དེ་ཡང་ཡིན་ལ་ལེའུ་ཡང་དེ་ཡིན་ནོ། །ནལ་
 འབྱོར་མ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་མདོག་དང་མཆན་མའི་ཆོ་གའི་ལེའུ་སྟེ་བཙོ་བརྩད་པའི་ཞེས་
 བྱ་བ་ནི། དཔལ་འཁོར་ལོ་རྩོམ་པའི་ལེའུ་བཙོ་བརྩད་པའི་དཀའ་འགྲེལ་ལོ། །

✱

-
1. གཟུང་བ་ གསེར། བེ།
 2. འདི་ཡང་ རྟེན། ཙུ་
 3. རྩོམ་ན་ བེ། གསེར།

ནལ་འབྱོར་མ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་དང་ཕྱག་རྒྱའི་ལན་ བསྟན་པའི་ལུ་

དེ་ནས་ཡང་དག་བཤད་བྱ་བ། |
ལུ་མ་ཡིན་ཀྱི་ཁྱད་པར་དུ་། |
སྐྱབ་པོ་གང་གིས་ཡན་ལག་གི |
ཆ་གས་ཡང་དག་ཤེས་པའོ། ༥།

དེ་ནས་ཞེས་པ་ནི་མཆན་ཉིད་བསྐྱབ་པ་སྟེ། གཞན་ཞེས་པ་ནི་མཆན་ཉིད་དོ། །ལུ་མ་
ནི་ལུ་མའི་རིགས་ཀྱི་ནལ་འབྱོར་མ་ཞེས་པའི་དོན་དོ། །ནི་ནི་ངག་གི་རྒྱན་ཅོ། །ཁྱད་
པར་ཞེས་པ་ནི་ལུ་མ་ལ་སོགས་པའི་རིགས་ལས་བྱུང་བ་རྣམས་ཀྱི་ཐུན་མོང་གི་མཆན་
ཉིད་བཟོད་ནས་ད་ནི་ལུ་མའི་རིགས་རྣམས་ཁོ་ན་སྟོན་ཏེ་ཞེས་པ་ནི་ཁྱད་པར་རོ། །ཡན་
ལག་དུ་གྱུར་པ་ཉིད་ཀྱི་སྤྱིར་ཡན་ལག་གི་མཆན་ཉིད་དོ། །དེ་ཡང་དག་པར་བཤད་དོ་
ཞེས་སྐྱར་རོ། །སྐྱབ་པོ་ཞེས་པ་ནི་བཞི་པ་སྤྱི་བའོ། །དེའི་དོན་དུ་སྐྱབ་པ་པོ་ཞེས་
གཞུང་ཡང་རོ་༦། །དེ་ཡང་དང་པོ་ནི་བཞི་པའི་དོན་ཉིད་དོ། ། ༥ །

-
1. ཁྱད་པར་ནི་ བེ།
 2. ཡང་དག་པར་ བེ། ལྷ། ལྷ།
 3. ནལ་འབྱོར་ལ་ བོད་དཔེ། གོང་དུ་རྒྱ་དཔེ་ལྷར་བཞག་པ་ཡིན།
 4. བྱབ་པོ་ རྟེ། ཅོ།
 5. བཞི་པའི་སྤྱི་བའོ་ གསེར། བེ། བཞི་པ་སྤྱི་བའོ་ རྟེ། ཅོ།
 6. གཞུང་མང་རོ་ བོད་དཔེ། གོང་དུ་རྒྱ་དཔེ་ལྷར་བཞག་པ་ཡིན།

གང་གི་བཞིན་ནི་ཡོངས་ཀྱས་པར། 1

ཀུན་ནས་ལྷུ་མ་པོར་སྤང་འགྱུར་ཞིང་། 1

ཁ་ཡི་སྤྲ་ར་ཏྟག་པར་ཡོད། 1

སྤྱད་པ་སྤྲིན་མ་རིང་བ་དང་། 3 1

གོས་བཟང་གཙང་ཞིང་ཞི་བ་དང་། 1

མི་གཡོ་བདེན་པར་སྤྲ་བ་དང་། 1

ཏྟག་ཏུ་དམ་པའི་ཆོས་ལ་དགའ། 1

དེ་ནི་དཔལ་བོའི་སྤྱང་མོར་བཤད་པ། 3 1

མཆན་ཉིད་ནི་བཞིན་གྱི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །དཀྱིལ་འཁོར་ནི་
 ལྷུ་མ་པོའོ། །སྤྱི་ནི་བ་སྤྱི་མང་བ་ཡིན་ནོ། །གོས་བཟང་ཞེས་པ་ནི་དྲི་མ་མེད་པའི་
 གོས་སོ། །གཙང་མ་ནི་དྲི་མ་མེད་པའོ། །མི་བསྐྱོད་པར་ངེས་པར་བྱ་བའི་དཔལ་བོའི་
 སྤྱང་མོ་རང་ཞེས་པ་ནི་ནལ་འགྱུར་མ་ཞེས་པའི་དོན་དོ། །དཔལ་བོའི་ཆ་མོ་ཞེས་པ་
 ནི་གཞུང་གཞན་ནོ། །གཅིག་ཉིད་ལ་མང་པོའི་ཆོག་གོ། 3-3 །

པརྟའི་⁴ཕྱག་ཀྱི་སྤྲིན་བྱ་བ། 1

ཡང་ན་རུ་སྤྲལ་ཕྱག་ཀྱི་བྱ། 1

1. སྤང་གྱུར་ཅིང་ ལ།

2. སྤྱང་མོར་ཤེས་ ཀྱ་དཔེ།

3. མཆན་མོ་ གསེར།

4. པད་མའི་ པ།

ལེའུ་བཙུངས་པ།

པགས་པ་འཇིག་བསྐྱེ་བྱུགས་ཉིད། 1

ཕྱག་ཀྱི་ལན་དུ་བརྗོད་པ་ཡིན། ༥

དེ་མཐོང་ནས་ཕྱག་ཀྱི་བྱ་བའི་ཞེས་པ་ལ་པར་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་
གསུངས་ཏེ། ཐལ་མོར་གཏོགས་པའི་སོར་མོ་བཀྲུག་པ་ནི་པར་ཞེས་ཕྱག་ཀྱི་ལྟོ། །ཡང་ན་
ཞེས་པ་ནི་ཕྱོགས་གཞན་ནོ། །ཡང་ན་ནི་དག་གི་ཀྱན་ནོ། །ལག་པ་གཡས་པ་བརྒྱུང་
སྟེ་བརྟེན་པར་བྱས་པ་དེའི་སྟེང་དུ་གཡོན་པ་བསྐྱུམ་སྟེ་བཞག་པ་ནི་རུས་སྐལ་གྱི་ཕྱག་
ཀྱི་ལྟོ། །པགས་པ་དང་ནི་སྐྱེ་བྱུགས་ཉིད། །ཅེས་པ་ནི་གཡོན་པའི་ཕྱག་པ་ནས་འཕྲང་
བའི་གཡོ་བའི་གོས་གཡོན་པའི་ལག་པས་འཛིན་པའི་ཚུལ་དུ་བྱེད་པ་ནི་པགས་པའོ། །
ཁ་ཅིག་ན་རེ་མཆོད་ཕྱིར་ཐོགས་པའི་ཙ་རུ་འགོ་བར་བྱེད་པའི་ཚུལ་དུ་བྱེད་པའི་ཞེས་
ཟེར། སྐྱེ་བྱུགས་འཆང་བའི་ཚུལ་དུ་བྱེད་པ་ནི་སྐྱེ་བྱུགས་སོ། །དང་ཉིད་ཀྱིས་ནི་ངེས་
པར་བརྒྱུང་བའོ། །པར་ཞེས་ཕྱག་ཀྱི་བྱེད་པ་ལ་པགས་པའི་ཕྱག་ཀྱི་བརྟེན་པར་བྱའོ། །
རུས་སྐལ་གྱི་ཕྱག་ཀྱི་བྱེད་པའི་སྐྱེ་བྱུགས་བརྟེན་པར་བྱའོ། །ནལ་འཕྱོར་མས་ཕྱག་ཀྱི་
བརྟེན་ན་ནལ་འཕྱོར་པས་ཕྱག་ཀྱི་བྱ་བ་ནི་ཕྱག་ཀྱི་ལན་ནོ། ༥

དེ་ནི་ཆོས་བཙུའི་དུས་ཆོགས་ལ། 1

བྱིས་དུ་པར་འབྱེད་པར་འགྱུར། 1

1. ཕྱགས་པ་ ལྟ།

2. ཀྱོན་པར་བྱེད་པའི་(པར་རྒྱན) ཀྱི་དཔེ།

3. ངེས་པར་གཟུང་ གསེར། དེ།

4. པད་མ་འདྲི་ དེ། པར་འདྲི་ རྟེན། ལྟ། རྟེན།

ལཱ་མའི་བྱད་མེད་ནམས་ཀྱི་ནི། 1
 མཚན་ཉིད་གྱུར་པ་འདི་དག་ཡིན། ༥ 1
 མཆུ་གཉིས་ཚྭ་ཞིང་མིག་དཀྱུས་རིང་། 1
 མིག་ནི་དམར་ཞིང་སེར་སྐྱར་གནས། 1
 ཐུག་ཅིང་སྐལ་བཟང་དཔལ་ཡོན་²ཅན། 1
 དཀར་ཞིང་ཙམ་པ་ལྟ་བུར་སྒྲང་། ༦ 1
 བྱིན་ཏུ་རིང་མིན་ཐུང་བའང་མིན། 1
 ལྷ་ཆོགས་པ་ཡི་³གོས་ལ་དགའ། 1
 དབྲལ་བར་རི་མོ་གསུམ་ཡོད་ཅིང་། 1
 མཚམས་ན་གྲེན་དུ་བསྟེན་པ་ལས་⁴ ༧ 1
 དགོད་ཅིང་དགའ་བ་ཉིད་དག་དང་། 1
 ལམ་ནི་རྣམ་པར་གཞོན་ཅིང་གནས། 1
 གཡུལ་དུ་འཆི་བ་རྣམས་ཀྱི་ནི། 1
 གཏམ་དག་ལ་ནི་རྟག་ཏུ་དགའ། ༨ 1

1. མཆུ་གཉིས་ཚྭ་ ལྟ། མཆུ་གཉིས་ཚྭ་ བེ། ལྟ།
2. སྐལ་བཟངས་ཕན་ཡོན་ བེ། སྐལ་བཟང་ཕན་ཡོན་ ལྟ། ལྟ།
3. ལྷ་ཆོགས་པའི་ བེ།
4. བསྟེན་པ་ལ་ ལྟ། བསྟེན་པ་ལས་ ལྟ།
5. གོད་ རྟེ། བེ།
6. གནན་ ལྟ།

ལེའུ་བརྩ་དག་པ།

དེ་ལྟར་རབ་དྲེགས་མཐོང་ནས་ནི། |
 མདུང་གི་ཕྱག་རྒྱ་བརྟན་པར་བྱ། |
 ཀླང་པ་གཡོན་པ་བསྐྱམ་པ་ཡི། |
 གར་ནིད་ཀྱང་ནི་བརྟན་པར་བྱ། " |
 གཡོན་པ་དག་ནས་ཡོངས་བརྒྱུག་པ། |
 ཕྱག་རྒྱའི་ལན་ནི་ཡིན་པར་བཤད། |
 བརྩ་བཞི་དང་ནི་ཆོས་བརྒྱད་ནི། |
 དེ་ཡི་དུས་ཆོག་སྤྱོད་ཡིན་པར་བཤད། ༡༠ |

དགའ་ཞིང་²ཞེས་པ་ནི་ཡི་གེའི་ལུང་གིས་སོ། །དཔལ་དོན་རྩེ་ལག་མོ་དང་ལྷན་པ་ནི་
 ཉེ་རུ་ཀ་སྟེ་དེ་ལས་བྱུང་བའི་ནལ་འཕྱོར་མ་ནམས་ཉེ་དཔལ་ལོ། །མཆུ་ནི་འཕྱང་ཞིང་
 ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གཞན་ཀླང་པ་གཡོན་པ་བསྐྱམ་པ་ནི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་
 གསུངས་ཉེ། རྒྱལ་ཀྱང་ཕྱེད་མའི་གར་བརྟན་ནོ། །ཞེས་པའི་དོན་ཉེ་³ཡོངས་བརྒྱུག་
 པའོ། །ཁ་ཕྱིར་བརྟན་པའི་རང་བཞིན་ནི་གཉིས་པོ་འདི་ནི་ཕྱག་རྒྱའི་ལན་ནོ། །དུས་
 ཆོག་སྤྱོད་ནམས་ཀྱི་དུས་སོ། །བརྩ་བཞི་པ་ལ་སོགས་པའི་དུས་སུ་དེ་བཞིན་
 གཤེགས་པ་དང་སྒྲོབ་དཔོན་ལ་སོགས་པ་མཆོད་པའོ། ། ༥-༡༠ །

1. དེའི་ བེ།

2. བྱད་མེད་ནམས་ཀྱི་ རྒྱ་དཔེ། ཅ་བ།

3. དོན་ཉེ་ གསེར། བེ།

བྱིས་དུ་མདུང་ཅི་གསུམ་པ་ཡང་།	།
བྲིས་ནས་དེ་ནི་རྟག་དུ་མཆོད་།	།
འཇིག་རྟེན་དབང་ཕྱག་ལུ་མ་ཡི་༥།	།
མཚན་ཉིད་གྱུར་པ་འདི་དག་ཡིན།	༡༡ །
གང་གི་མཁུར་ཆོས་དག་དུ་ནི།	།
ཁུང་བུར་སྒྲུང་བའང་གནས་གྱུར་ཅིང་།	།
དེ་བཞིན་རྟག་དུ་དམར་ཞིང་མེར།	།
མིག་ནི་ལྡང་མེར་དག་དུ་སྒྲུང་།	༡༢ །
སྒྲ་ནི་དེ་བཞིན་འབྲེལ་བ་དང་།	།
མགོ་དང་དཔལ་བར་དར་བཅིངས་སྒྲུང་།	།
རི་མོ་གཅིག་པར་རབ་དུ་གནས།	༡༣ །
དེ་བཞིན་མགྲིན་པ་རིང་བ་དང་།	།
རྟག་དུ་གོས་དམར་ལ་དགའ་ཞིང་།	།
དགོད་ཅིང་སྒྲ་ནི་ལེན་པ་ཉིད།	།
སྒྲོ་བུར་དུ་ནི་ཁྲོ་བ་དང་།	༡༤ །

-
1. རྟག་དུ་མཆོག་ ལྷ། ལྷ།
 2. ལ་མ་ཡི་ ལྷ།
 3. གང་གིས་ཁུར་ཆོས་ ལྷ། གང་གིས་མཁུར་ཆོས་ ལྷ།
 4. རྟེན་ ལྷ། ལྷ།

ལེའུ་བཙུ་དགུ་པ།

སེམས་ནི་ནམ་པར་གཡོ་བ་དང་། །
 ཚོད་པ་ལ་ནི་དགའ་བ་སྟེ། །
 འདི་འདྲའི་རབ་དྲེགས་མཐོང་ནས་ནི། །
 མདུང་གི་ཕྱག་རྒྱ་རབ་སྦྱིན་བྱ། ༡༥ །

འཇིག་རྟེན་དབང་ཕྱག་ནི་འོད་དཔག་ཏུ་མེད་པའི་རིགས་སོ། །ཁྲུང་བུ་¹ལྟ་བུ་རྟག་
 ཏུ་མཁྲུར་ཚོས་ལ་ཡོད་པ་དེ་ནི་ཁྲུང་བུ་སྟེ། གཞུང་ཁ་ཅིག་ལས་མཁྲུར་ཚོས་ལ་ནི་བྱེད་
 འབྲས་སོ་²ཟེར་རོ། །དེ་ལ་མཁྲུར་ཚོས་ཀྱི་ཁྲུང་བུ་ཞེས་བྱའོ། །མཐེ་བོང་སོར་མོ་
 ཐམས་ཅད་ཡང་དག་པར་མཚན་ནས་སྒྲིགས་མཛུབ་ཏུ་བྱས་ནས་སྦྱར་བ་ནི་མདུང་གི་
 ཕྱག་རྒྱའོ། ༡༡-༡༥ །

གཉིས་པ་ཉིད་ནི་འབད་པ་ཡིས་³། །
 དེ་ལ་བུའི་ཕྱག་རྒྱ་རབ་སྦྱིན་བྱ། །
 གཡོན་གྱི་ཕྱོགས་སུ་བསྒྲོག་པ་ནི་⁴། །
 ཕྱག་རྒྱའི་ལན་ནི་ཡིན་པར་བཤད། ༡༦ །
 མུང་ཞིང་བྱིན་པ་སྦྲུམ་པ་⁵དང་། །
 རྟག་ཏུ་གོས་སེར་ལ་དགའ་ཞིང་། །
 ཕྱག་པ་དག་ནས་གོས་ཀྱང་འཕྱང་། ༡༧ །

-
1. ཁྲུང་བུ་ གསེར། བེ།
 2. བྱེད་འབྲས་སོ་ཞེས་ གསེར། བེ།
 3. འབད་པ་ཡིན་ བེ།
 4. བསྒྲོག་པ་ཡིན་ ལྷ། ལྷ།
 5. སྦྲུམ་པ་ ལྷ།

དེ་འབྲེལ་བྱུང་མེད་མཐོང་ནས་ནི། 1

འཁོར་ལོའི་ཕྱག་རྒྱ་བསྟན་བྱ་ཞིང་། 1

འབད་པ་འཁྱིལ་ནི་གཉིས་པ་ཡང་། 1

དུང་གི་ཕྱག་རྒྱ་བསྟན་པར་བྱ། 11 1

དེའི་བྱུང་གྲོལ་བར་བྱེད་པ་ལྟ་བུའི་དེའི་བྱུང་གི་ཕྱག་རྒྱའོ། །ཕྱག་རྒྱ་གཉིས་ལས་
གཅིག་སྦྱིན་པར་བྱ་། བྱུང་ཞིང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ་གཞན་སྟོན་ཏེ། ཕྱག་པ་
གཅིག་ནས་གོ་སྐྱོད་འབྲུང་བའི་ཚུལ་ཅན་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་ཕྱག་པ་ནས་གོས་འབྲུང་
བའོ། །དེ་རྗེས་ཐལ་མོ་བྱས་ལ་གྲུང་མོ་གཉིས་བསྐྱང་སྟེ་སྒྲིགས་མཛུགས་གཉིས་ཀྱིས་མིང་
མེད་གཉིས་ལ་དཀྱིས་ལ་མཐེ་བོང་གཉིས་གཤིབ་པར་བྱ་སྟེ་ཁ་ལ་ཉེ་བར་བཞག་པ་ནི་
ཁའི་ཕྱག་རྒྱའོ། །གཡོན་པའི་ལག་པ་བཀུན་ཏེ། མཐེའི་ཚུང་ལ་སོགས་པ་གསུམ་
བསྐྱམ་ལ་མཛུགས་མོ་དང་མཐེབ་ཆེན་གཉིས་བརྒྱུད་པ་ནི་དུང་གི་ཕྱག་རྒྱའོ། 12-13 1

གཡོན་ནས་ཡོངས་སུ་བསྐྱོག་པ་ནི། 1

ཕྱག་རྒྱའི་ལན་ནི་ཡིན་པར་བཤད། 1

བརྩུ་བཞི་དེ་ཡི་དུས་ཡིན་ཏེ། 1

དེ་ཡི་བྱིམ་དུ་དོ་རྩེ་འབྲེལ། 14 1

1. འབད་པོ་ བེ།

2. 'ཕྱག་རྒྱ་གཉིས་ལས་གཅིག་སྦྱིན་པར་བྱའོ།' (མུའྲལྲེལ་དེ་ཡུ) ཆོག་རྒྱུད་འདི་བོད་དཔེར་མ་
གསལ་གྱིང་ལེགས་སྒྱུར་ལས་བསྐྱུར་གང་ཐུབ་བྱས་ཏེ་གོང་དུ་བཀོད་པ་ཡིན།

3. ཕྱག་པ་ཅིག་ གསེར།

4. དེའི་བྱིམ་དུ་དོ་རྩེ་འབྲེལ་ བེ། དེ་ཡི་བྱིམ་དུ་དོ་རྩེ་འབྲེལ་ རྟེ། སྤྱ།

ལེའུ་བཙུངས་པ།

སྤྱི་ཏེ་རུ་ཀ་ལུ་མ་ཡི།	།
མཚན་ཉིད་གྱུར་པ་འདི་དག་ཡིན།	།
ལུས་ཀྱན་ལ་ནི་བ་སྤྱི་ཡོད་།	།
མིག་ནི་ནག་ཅིང་མེར་བ་དང་།	༣༠ །
སྒྲོམ་ཞིང་རྣམ་འགྱུར་མི་བཟད་པ།	།
བཞིན་འཕེལ་ཆེ་ཞིང་ཁ་ཆེ་ལ།	།
གསུམ་པ་སྒྲོ་ཞིང་ཁ་དོག་གནག་	།
མིག་ལྷུ་སྒྲོ་སྤྱི་ཉམས་པ་དང་།	༣༡ །
ཏག་ཏུ་སྤྱི་ལ་མཁས་པ་དང་།	།
སྤྱི་གྱི་མདོག་ཅན་ཡིད་འཕྲོག་པ།	།
འདི་འདྲའི་རབ་དྲེགས་མཐོང་ནས་ནི།	།
སྤྱི་ཡི་ཕྱག་རྒྱ་བསྟན་པར་བྱ།	༣༢ །

གཡོན་པའི་ལག་པ་བསྐྱངས་ཏེ་དེའི་སྤྱི་དུ་གཡས་པའི་ལག་པའི་གྱི་མོ་བཞག་པ་
 དེ་མཐེབ་ཆེན་དང་མཐུབ་མོ་གཉིས་བསྐྱང་ལ་མོར་མོ་གསུམ་བསྐྱུམ་པར་གཡས་པའི་
 ལག་པ་བཞག་པ་ནི་སྤྱི་ཕྱག་རྒྱའོ། ༣༢-༣༣ །

-
1. བ་སྤྱི་ཡོད་ ལ།
 2. མིག་ནི་གནག་ ལ། ལ།
 3. གསུམ་པ་སྒྲོ་ ལ། གསུམ་པ་སྒྲོ་ ལ། གསུམ་པ་སྒྲོ་ ལ།
 4. སྤྱི་ཡི་ ལ། ལ།
 5. ལག་པ་བསྐྱངས་ གཞེས་ ལ།

གཉིས་པ་ཡང་ནི་འབད་པ་ཡིས། 1

མདྲང་གི་ཕྱག་རྒྱ་བཞུག་པར་བྱ། 1

གཡོན་ནས་ཡོངས་སུ་བཞོག་པ་ནི། 1

ཕྱག་རྒྱའི་ལན་ནི་ཡིན་པར་བཤད། ༡༩ 1

དེ་ཡི་དུས་ཚོགས་བཙུག་ཅིག་སྟེ། 1

ཁྱིམ་དུ་མཆེ་བ་འབྲི་བར་བྱེད་ཀྱི། 1

དོ་རྩེ་ཡག་མོ་ལྷ་མ་(ལྷ་མེ)ཡི། 1

མཆོན་ཉིད་གྱུར་པ་འདི་དག་ཡིན། ༢༠ 1

དཔལ་ཉེར་ཀྱའི་ངེས་པར་བཟོད་པ་ལས་ནལ་འབྱོར་མ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཕྱག་
རྒྱ་དང་ཕྱག་རྒྱའི་ལན་བཞུག་པའི་ལེའུ་སྟེ་བཙུང་གྱུ་པའོ། ॥

གཉིས་པ་ཞེས་བྱ་བའི་ཕྱག་རྒྱའི་ལན་ནི། །དེའི་ཕྱིར་གསུངས་པ་ཕྱག་རྒྱའི་ལན་
ཞེས་པ་ནི་གཉིས་པ་ལན་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་རྣམས་ཀྱིས་སོ། །རྣམ་གྲངས་ལྡེ་པོ་ལྷ་མའི་རིགས་
ཀྱི་ནལ་འབྱོར་མ་རྣམས་ཀྱི་མཆོན་ཉིད་བཟོད་པའི་བསྐྱུས་པས་ནལ་འབྱོར་མ་སུམ་ཙུ་
ཙ་གཉིས་ཀྱི་མཆོན་ཉིད་དོ། །དེ་རྣམས་ཕྱག་རྒྱའི་མཆོན་ཉིད་བཞུག་ན་ཕྱག་རྒྱའི་ལན་
བྱའི་ཞེས་པ་ནི་ཁྱད་པར་རོ། །ཞིའི་སྒྲ་ནི་ལ་སོགས་པས་དེ་མ་བཟོད་པའི་དོན་ཡང་
རང་ཉིད་ཀྱིས་གོ་བར་བྱའོ། ༢༡-༢༢ 1

1. འདི་བར་བྱེད་ སྟེ། སྟེ། བེ།

2. 'ཕྱག་རྒྱ་དང་' སྟེ་ཐང་པར་མའི་ནང་མེད།

ཕུག་ཀྱང་དང་ཕུག་ཀྱི་ལན་གྱི་སྒོ་ནས་ལེའུ་བཙུ་སྒོ་ནས་པ་ནི་ཐམས་ཅད་
 ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྒྲ་ནི་རྩ་མ་བཞིན་ནོ། །དེ་ལ་
 ཐམས་ཅད་ནི་ནལ་འབྱོར་མ་ནམས་ཏེ། །ནལ་འབྱོར་མ་དེ་ནམས་ཀྱི་ཕུག་ཀྱང་
 །ནལ་འབྱོར་པ་ནམས་ཀྱི་ཕུག་ཀྱི་ལན་སྒོ་ནས་ཅིང་བརྗོད་པའི་ཚེ་ག་གང་ཡིན་པ་དེ་གང་
 །གིས་དེ་ཡང་ཡིན་ལ་ལེའུ་ཡང་ཡིན་པས་དེ་དེ་བཞིན་ནོ། །བཙུ་དགུ་ནི་བཙུ་དགུ་པའོ། །
 ཏའི་རྒྱུ་ཕྱི་བའོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དཔལ་འཁོར་ལ་སྒྲིམ་པའི་ལེའུ་བཙུ་དགུ་པའི་དཀའ་
 འགྲེལ་ལོ། །



1. །ནལ་འབྱོར་མ་རྩ་ནམས་ཏེ་ ཀྱང་དཔེ།

ནལ་འབྱོར་མ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ལག་པའི་ཕྱག་རྒྱའི་བདེ་ ཆོ་གའི་ལེན།

དེ་ནས་གཞན་ཡང་བཤད་བྱ་བ། 1

ལག་པ་གཡོན་ཀྱི་བད་1 རྒྱལ་ཞི། 1

གང་གིས་ཤེས་པས་ཡང་དག་པར། 1

མིང་སྲིང་2 ཞི་དེ་བཞིན་འགྱུར། ༡ 1

ལེན་བཅོ་ལྔ་པར་3 ཡི་གའི་བད་བརྟན་ནས་འདིར་ནི། ལག་པའི་བད་བརྟན་པའི་
ཕྱིར་དེ་ནས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །དེ་ནས་ཞེས་པ་ནི་ཕྱག་རྒྱ་དང་
ཕྱག་རྒྱའི་ལན་བརྟན་པའི་རྗེས་སུ་ལོ། །གཞན་ཡང་ཞེས་པ་ནི་ཡི་གའི་བད་བརྟན་པའི་
རྗེས་ལ་ལག་པའི་བད་བརྟན་པར་བྱའོ་ཞེས་སྒྲུར་རོ། །གཡོན་པའི་ལག་པ་ཞེས་པ་
ནི་གཡོན་པའི་ལག་པས་བསྐྱབ་4 པར་བྱ་བ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་གཡོན་པའི་ལག་པ་ཉིད་ཀྱི་
བདའོ། །ནིའི་སྐྱ་ནི་གཡས་པའི་ལག་པ་བསྐྱབ་པར་བྱ་བ་ཡང་བཤད་དོ་ཞེས་ཤེས་པར་
བྱའོ། །མཁའ་འགྲོ་རྒྱལ་ཀྱི་མཆན་ཉིད་ནི། །དེའི་ཕྱིར་གཞན་ཡང་བཤད་པར་བྱ། 1
ཞེས་པ་ནི་གཞུང་གཞན་ཉེ་ཉོགས་པར་སྒྲུབ། ༡ 1

-
1. བདའ་ བཤད།
 2. མིང་སྲིང་ སྒྲ།
 3. བཅོ་ལྔ་པ་ལ་ རྒྱ།
 4. ལག་པ་སྐྱབ་ བཤད། ལག་པ་བསྐྱབ་ གསེར།

ལེའུ་ཉི་གུ་ཐམ་པ།

གང་གིས་ལག་གཡོན་སྟོན་པ་ནི། 1
 གསོང་པོར་སྐྱ་ཞེས་སྟོན་པ་ཡིན། 1
 གང་ཞིག་སྤྱན་ལག་སྟོན་པ་ནི། 1
 གསོང་པོར་སྐྱ་བའི་ལན་འགྱུར་ཡིན། ༡ 1
 གང་ཞིག་སྟོ་བ་དེབ་²པ་ནི། 1
 བདག་ཉིད་བཀའ་པར་སྟོན་པ་ཡིན། 1
 གང་ཞིག་དབྱལ་བ་³སྟོན་པ་ནི། 1
 རམ་མཁའ་ལ་ནི་འོངས་ཞེས་པའོ།⁴ ༡ 1

བད་ནི་ལག་གཡོན་⁵ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། ཅི་ནི་ཉེ་བར་བརྒྱུང་⁶
 བའོ། །གསོང་པོར་སྐྱ་བ་ནི་ཕྱག་འཆལ་བའོ་ཞེས་དེ་ཡིས་བརྗོད་པ་ཡིན་ནོ། །སྤྱན་
 ལག་ཅེས་པ་ནི་གཡོན་པའི་ལག་པ་ཉིད་དོ། ཅི་ནི་⁷བྱུང་བར་གྱི་དོན་ཏེ། དེབ་པ་⁸
 ཡིན་ཞེས་བྱ་བ་ནི་སྟོ་བ་དང་ཕྱེ་ཡང་ནི་ཞེས་པ་ནི། ཅི་⁹སྐྱའི་དོན་ནི་སྟོན་པར་བྱེད། །

-
1. སྟོན་པ་ནི་ བཤ།
 2. སྟོ་བ་སྐྱེབས་ བཤ། སྟོ་བ་དེབས་ སྐྱ། སྐྱ།
 3. དབྱལ་བར་ བཤ།
 4. རམ་མཁའ་ལས་ནི་འོངས་ཞེས་པའོ། སྐྱ།
 5. བད་ནི་གཡོན་ སྐྱ། ཅོ།
 6. ཉེ་བར་གརྒྱུང་ གསེར། བཤ།
 7. འདི་ནི་ སྐྱ། ཅོ།
 8. འདེབས་ སྐྱ། ཅོ།
 9. སྐྱ་དགེ་དང་ཅི་ནི་གཉིས་སྐྱ་ 'ནི་' མེད།

ཅེས་པ་ཡང་རྟོགས་པར་བྱའོ། །དེ་ཡིས་དེ་ཉིད་བརྗོད་པར་བྱ། །ཞེས་པ་ནི་ཐམས་
ཅད་དུ་སྦྱར་རོ། །ནམ་མཁའ་ལས་ཀྱང་འོངས་པ་ཡིན། །ཞེས་པ་ནི་བརྗོད་པར་
འགྱུར་པའི་རྗེས་སུ་འདུག་པའོ། ༣-༩ །

གང་ཞིག་ཁར་ནི་སོར་མོ་འདུག །

ཟོས་ཟེན་ཞེས་ནི་སྦྱ་བ་ཡིན། །

གང་ཞིག་ཕྱེ་ནི་བསྐྱོད་པ་དག །

ཟེའི་ཞེས་ནི་སྦྱ་བ་ཡིན། ། ༤ །

གང་ཞིག་ཕུས་མོ་²ལ་རེག་པ། །

ངལ་ལོ་ཞེས་ནི་སྟོན་པ་ཡིན་³། །

གང་ཞིག་སོར་མོའི་རྩེ་⁴ལ་རེག །

ངལ་སོར་ཞེས་ནི་སྦྱ་བ་ཡིན། ། ༥ །

གང་ཞིག་སོ་ནི་འཆའ་བྱེད་པ། །

བཟའ་ཡི་ཞེས་ནི་སྟོན་པ་ཡིན་⁵། །

གང་ཞིག་པ་ཏི་ས་སྟོན་པ། །

དེ་ལྟར་གྱིས་ཞེས་སྟོན་པ་ཡིན་⁶། །

1. 'བྱ' གསེར་བྱིས་དང་པེ་ཀིང་གཉིས་སུ་མེད།

2. ངར་མདུང་(རྩྭ་) རྒྱ་དཔེ།

3. སྟོན་པ་ནི་ ལྷ།

4. སོར་མོའི་རྩེ་ ལྷ།

5. བཟའ་ཡིས་ཞེས་ནི་སྟོན་པ་ཡི། ལྷ། བཟའ་ཡིས་ཞེས་ནི་སྟོན་པ་ཡིན། པེ། ལྷ།

6. 'གང་ཞིག་པ་ཏི་ས་སྟོན་པ་ཡིན།' ཆོག་ཀྱང་འདི་གཉིས་སྟར་ཐང་དང་རྒྱ་དཔེ་གཉིས་ཀྱི་ནང་མི་འདུག།

ལེའུ་ཉི་ཤུ་ཐམ་པ།

གང་ཞིག་ཁྲི་གཉེར་¹་སྟོན་པ་ནི། །

བཅེངས་སོ་ཞེས་ནི་སྟོན་པ་ཡིན། །

སོར་མོ་འཇུག་པ་ཞེས་པ་ནི་ཁ་རུ་ཞེས་ཤེས་པར་བྱའི་ནི་ནི་སྒྲིའི་དོན་དོ། །ཕུས་
མོ་ལ་ནི་རེག་ཅེས་པ་ནི་ནི་བྱད་པར་རོ། །གང་གི་ཕྱིར་ཅུང་ཟད་འགོ་བས་ཕུས་མོ་ལ་
རེག་ན་²འདིར་ངལ་ལོ་ཞེས་དེ་བཅོད་པ་ཡིན་ནོ། །འདིར་ངལ་ལོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་
པ་³ཡུལ་གྱི་བྱད་པར་དང་འབྲེལ་པར་གསུངས་སོ། །དེ་བཞིན་དུ་ཡང་བྱད་མེད་གྱི་
ཉགས་དང་སྒྲིས་པའི་ཉགས་དག་གི་དགོངས་པས་མཐུ་གང་ལ་སོགས་པ་⁴ཡང་དག་
པར་བཅོད་པའོ། །སོར་མོའི་ཕྱི་མོ་ཞེས་པ་ནི་སོར་མོའི་ཕྱི་མོར་རེག་པ་ཞེས་པའི་སྒྲི་ནི་
དོན་འགའ་ལ་བྱད་པར་དུ་བཅོད་པའོ། །དེ་ཡང་འདིར་དེ་ཉིད་གྱི་དོན་དོ། ། ༥-༦ །

གང་ཞིག་མཁའ་ལྡིང་སྟོན་པ་ནི། །

གྲོ་ལ་ལོ་ཞེས་ནི་སྟོན་པ་ཡིན། །

གང་ཞིག་ཁྲ་ཚུར་སྟོན་པ་ནི། །

དེ་ལ་པ་ཏི་ས་⁷བཞུན་བྱ། །

-
1. མཁྲི་གཉེར་ བཅ།
 2. རེག་ནས་(སྤྲུལ་ཏུ) རྒྱ་དཔེ།
 3. 'གསུངས་' རྒྱ་དག་དང་ཅི་ནི་གཉེས་སུ་ལྟག
 4. སྤྲུལ་ཏུ་རྒྱ་དཔེ།
 5. མ་བཅོད་པའོ་(མོ་ལྟེ) རྒྱ་དཔེ།
 6. བཞུན་ བཅ།
 7. པ་ཏི་ས་ བཅ། ལྟ། ལྟ།

ནམ་པར་འགྱུར་བ་བཏུས་ནས་ནི། 1

གང་ཞིག་སྐྱ་ནི་སྟོན་པ་ལ། 1

²ཁྲུག་ནི་དེ་ལ་བཏུན། 1

མཁའ་ཁྲིང་ཞེས་པ་ནི་སྒྲུང་ཙ་མོའོ། |པའི་སྒྲུང་ཞེས་བྱ་བའི་དཔལ་བོའི་དར་
དབྱངས་བཅིངས་པའི་ནམ་པར་གཡོན་པའི་ལག་པས་དབྱལ་བར་སྟོན་པའོ། |སྐྱ་
ཞེས་པ་ནི་དེ་ལ་གཡོན་པའི་ལག་པའི་བྱ་བ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། |ནམ་བཟུར་ཞེས་པ་ནི་
ཁྲོག་ཉེར་ལ་སོགས་པ་བཏུ་ཞིང་ནམ་པར་བཟུར་བ་ཉིད་དོ། |དང་གིས་ནི་རྒྱ་གི་ནམ་
པར་གེས་པར་བྱའོ། |ཁྲུག་འཛིན་པའི་ཚུལ་དུ་བྱེད་པ་ནི་ཁྲུག་སྟོན་པའོ། 2-1

གང་ཞིག་ཡན་ལག་བསྟོད་པ་⁶དང་། 1

དེ་ལ་མཆེ་བ་གཉིས་བཏུན་བྱ། 1

གང་ཞིག་ལག་པས་ལག་པ་སྟོན་⁷། 1

གཏོར་མ་ཟ་ཞེས་སྐྱ་བ་ཡིན། 1

1. ཐུ་ནི་སྟོན་པ་ཡི་ སྐ། ལ། ཐུ་ནི་སྟོན་པ་ལ་ རྟེ། དེ། གོང་དུ་ཐུ་དཔེ་ལྟར་བཞག་ཡོད།
2. ཐུ་དཔེར་གང་ཞིག་སོར་མོ་སྟོན་པ་ལ། ཞེས་པའི་ཆོག་ཀླང་གཅིག་དེར་ལྷག་པ་འཁོད་འདུག
3. པའི་སྒྲུང་ ཙ་
4. ཐུ་ཞེས་པ་ རྟེ། ཙ་
5. རྒྱ་གིས་ དེ།
6. སྟོད་པ་ དེ།
7. ལག་པ་དེབ་ ཐུ་དཔེ།

ལེའུ་ཉི་ཤུ་ཐམ་པ།

ཡན་ལག་ནམ་པར་གཡོ་བ་ལ་བདར་བྱས་པའོ། །འདིར་གཡོན་པའི་ལག་པའི་བྱ་
 བ་མེད་པའི་མཐེ་ཚུང་གཉིས་བསྐྱེད་སྟེ་ཁའི་འགམ་གཉིས་སུ་རྩི་རྩིའི་ཁྲ་ཚུར་གཉིས་
 བཞག་པ་ནི་མཆེ་བ་གཉིས་སོ། །མཆེ་བ་གཉིས་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་མཆེ་བ་གཉིས་ཀྱི་
 ཕྱག་ཀྱའོ། །གཏོར་མ་ཟ་ཞེས་སྒྲ་ཞེས་པ་ནི་གཏོར་མའི་མཆོད་པ་ལ་གཏོར་མ་ཟ་ཞེས་
 པའི་དོན་རྟོ། །གཡོན་པའི་ལག་པ་ཉིད་ཀྱིས་ཐམས་ཅད་དུ་བྱ་བའོ། ། ༩ །

གང་ཞིག་ལག་པ་གཡས་པ་སྟོན། །

དེ་ལྟར་གྱིས་ཞེས་སྒྲ་བ་ཡིན། །

གང་ཞིག་ན་བ་ལ་རེག་པ། །

གནས་པར་བྱ་ཞེས་སྟོན་པ་ཡིན། ། ༡༠ །

གང་ཞིག་སེན་མོས་སེན་མོ་རེག། །

ཞི་ཡིས་ཁྱེར་ཞེས་སྒྲ་བ་ཡིན། །

གང་ཞིག་ས་འབྲི་དྲུག་ལ་འཁོར་དུ། །

དེ་རིང་འཇུག་ཅེས་སྒྲ་བ་ཡིན། ། ༡༡ །

གང་ཞིག་རྒྱ་མ་ལ་རེག་པ། །

བདག་གི་བྱ་ནི་སྤངས་ཞེས་སྒྲ་བ་ཡིན། །

1. རྐྱེད་སྟེ་ བཤ།

2. ཞི་ཡི་ཁྱེར་ ལ།

3. ས་འབྲི་ ལ། ལ། ས་འབྲི་ ལ། བཤ།

4. སྤངས་ཞེས་བྱ་ ལ། ལ། བསྤངས་ཞེས་སྒྲ་ བཤ།

གང་ཞིག་གཡོན་མཐེབ་ས་ལ་འབྲི། 1

ཐ་མའི་སྐྱེ་བོས་ང་སྤྲངས་²སྒྲ། 13 1

གང་ཞིག་མིག་ནི་ནམ་འཛུམས་³བྱེད། 1

དེ་ལྟར་བྱོས་ཞེས་སྒྲ་བ་ཡིན། 1

གང་ཞིག་ཆོག་ས་ལ་རེག་པ་ནི། 1

བདེ་བར་ཉལ་ཞེས་སྒྲ་བ་ཡིན། 14 1

ཕོ་ཉ་མོ་ནི་གང་ཡང་རུང་། 1

དེ་དག་ཀྱན་གྱིས་ཡང་དག་སྤྱད་⁵། 15 1

དཔལ་ཉེ་རུ་ཀའི་ངེས་པར་བརྗོད་པ་⁶ལས་ནལ་འབྱོར་མ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་
ལག་པའི་ཕྱག་རྒྱའི་བདེ་འཛི་ཆོ་གའི་ལེའུ་སྒྲེ་ཉི་ཤུ་པའོ། ॥

གཡས་པའི་ལག་པའི་བདེ་སྟོན་ཏེ། གང་ཞིག་ལག་གཡས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་
གསུངས་ཏེ་གོ་སྒྲོལ། །གཡོན་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གཡོན་པའི་མཐེ་བོང་གིས་
མིག་གཉིས་ཞེས་པ་ནི་བདར་བྱས་པའོ། །འདི་གཉིས་ནི་གང་རུང་ཟད་ཀྱི་བྱ་བའོ། 1

1. གང་ཞིག་གཡོན་མཐེབ་ས་ལ་འབྲི། བེ། སྒྲ། གང་ཞིག་གཡོན་མཐེབ་ས་ལ་འབྲི། སྒྲ།

2. ང་བསྤྲངས་ བེ། སྒྲ།

3. རྣམ་འཛུམས་ སྒྲ།

4. བཟླ་བ་(ལེན་ལེན་) རྒྱ་དཔེ།

5. རབ་ཏུ་བསྟན་ རྒྱ་དཔེ།

6. ངེས་པར་རྗོད་པ་ བེ།

ལེའུ་ཉི་ཤུ་ཐམ་པ།

གང་ཡང་རུང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པའི་གང་རུང་ཟད་མོ་ཉི་ཤུ་ག་ཀྱི་གཟུགས་
 བསྟན་པ་དེ་ནམས་ན་ལ་འབྱོར་མས་བྱས་པ་ལ་ན་ལ་འབྱོར་པས་ཤུག་ཀྱི་ལན་བུའོ་
 ཞེས་པའི་དོན་དོ། །དེ་ཐམས་ཅད་བཙུམ་བྱ་ཞེས་པ་ནི། ཤུག་ཀྱི་ལན་ཞེས་པའི་
 དོན་དོ། ༡༠-༡༩།

གང་གི་ཕྱིར་འདི་ནི་དངོས་པོ་ཡོངས་སུ་བཟུང་བར་¹ བྱད་པར་གྱི་ཆོག་དུ་གོ་བར་
 བྱའི་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྒྲ་ནི་བྱན་མོང་གི་ཆོག་གི་ན་ལ་འབྱོར་མ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ལག་པའི་
 ཤུག་ཀྱི་ལག་པའི་ཤུག་ཀྱི་བདར་བྱས་པའི་ཆོག་ཡིན་པ་དེ་སྟོན་པའང་ཡིན་ལ་ལེའུ་
 ཡང་ཡིན་པས་ན་ན་ལ་འབྱོར་མ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ལག་པའི་ཤུག་ཀྱི་བདར་ཆོག་གི་²
 ལེའུ་ཉི་ཤུ་པ་སྟེ་ཉི་ཤུ་པའོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི། དཔལ་འཁོར་ལོ་སྔོན་པའི་ལེའུ་ཉི་ཤུ་པའི་
 དཀའ་འགྲེལ་ལོ། །



1. གཟུང་པར་ གསེར། དེ།

2. ‘བདར་ཆོག་’ རྟེན་གྱི་དང་ཆོན་མེད།

ཡན་ལག་གི་ཕྱག་རྒྱའི་མཆན་ཉིད་ཀྱི་ཆོ་གའི་ལེན།

དེ་ནས་གསང་བ་ཆེན་པོ་ཡི། 1

ལྷ་བ་ང་ཡིས་བཤད་པར་བྱ། 1

བྱད་མེད་¹སྤྱི་གཙུག་རེག་བྱེད་པ། 1

མགོ་བོ་དེ་ལ་བསྟན་པར་བྱ། 2 1

དེ་ནས་ཞེས་པ་ནི་ལག་པའི་ཕྱག་རྒྱ་བསྟན་པའི་རྗེས་ཐོགས་སུ་ང་ཡིས་བཤད་དེ་
 ཞེས་སྒྱུར་རོ། །དེ་ཡང་ནལ་འཕྱོར་མ་ནམས་ཇི་ལྟར་²གྱུར་པ་ཡིན་ཞེས་པ་ལ། 1
 གསང་བ་ཆེན་པོ་མཐོང་བ་ཡིན། །ཞེས་པ་ནི་³གསང་བ་ཆེན་པོའི་ནལ་འཕྱོར་མ་
 ནམས་ཏེ། གང་གི་སྤྱིར་དེ་ལྷ་བྱའི་བྱ་བའི་དོན་ཡིན་ཏེ། དེ་དེ་ལྷ་བྱར་མཆོན་པ་ནི་སྤྱི་
 གཙུག་ལ་སོགས་པ་རེག་པའི་⁴རང་བཞིན་ནོ། །དེ་ནས་ཡན་ལག་ཕྱག་རྒྱ་⁵ནམས། 1
 ཞེས་པ་ནི་གཞུང་ཁ་ཅིག་གོ། །དེ་ནས་ཞེས་པ་ནི་སྤྱིར་བཞིན་ནོ། །གང་གི་སྤྱིར་
 མཆན་ཉིད་ཤེས་པའི་ནལ་འཕྱོར་མ་ཞེས་པ་ནི་གཞན་ཡང་ཞེས་པའི་སྤྱིར་དོན་ཏོ། །དེ་
 ནི་ཉི་ཤར་གཟུང་བའི་ཡན་ལག་རེག་པ་ལ་སོགས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡན་ལག་ཕྱག་

-
1. བྱད་གང་ རྟེན། བཅ།
 2. ཇི་ལྟར་གསེར། བཅ།
 3. གསང་བ་ཆེན་པོ་མཐོང་བ་ཡིས། །ཤེས་པ་ནི་ གསེར། བཅ།
 4. རེག་པའི་ རྟེན། ཅོ།
 5. རྟེན་པའི་ཕྱག་རྒྱ་(རྟེན་ཡ་ལྟར) རྒྱ་དཔེ།

ལུ་ཉི་ཤུ་ཙ་གཅིག་པ།

ཐུའི་ན་ལ་འབྱོར་མའོ། །སྤྱི་གཙུག་རེག་བྱེད་པ་ཞེས་པ་སྤྱི་པོའི་གཙུག་ཕྱད་རེག་པ་
 ཅམ་ཉིད་ཀྱི་མཆན་ཉིད་དོ། །མགོ་ཞེས་པ་ནི་¹ལག་པས་རེག་པ་ཉིད་རབ་ཏུ་བརྟན་
 པ་སྟེ། དེ་ལྟར་²གཞན་ཡང་དོ། ༡ །

གང་ཞིག་དཔལ་བ་སྟོན་པ་ན། །

དེ་ལ་མཐུར་ཆོས་བརྟན་པར་བྱ། །

གང་ཞིག་སོ་ནི་སྟོན་པ་ལ³། །

དེ་ལ་ཕྱེ་ནི་བརྟན་པར་བྱ། ༡ །

གང་ཞིག་མཚུ་ནི་སྟོན་བྱེད་པ། །

དེ་ལ་ཀོ་སྟོ་⁴བརྟན་པར་བྱ། །

གང་ཞིག་མགིན་པ་སྟོན་བྱེད་པ། །

སྟོ་ནི་དེ་ལ་བརྟན་པར་བྱ། ༡ །

སོ་ནི་སྟོན་ལ་ཞེས་པ་ནི་ལག་པས་མཚུ་གཉིས་སྤྱེ་བའོ། །ཕྱེ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དེ་བཞིན་
 དུ་སྤྱིར་སྤྱང་བའོ། ༡-༡།

གང་ཞིག་ལག་པ་སྟོན་བྱེད་པ། །

དེ་ལ་དཔུང་པ་བརྟན་པར་བྱ། །

1. 'ནི' གསེར་པེ་གཉིས་སྤྱེ་མེད།

2. དེ་ལྟར་ གསེར། བཤ།

3. སྟོན་པ་ནི་ རྟེ། རྟེ། བཤ།

4. ཀོས་ཀོ་ རྟེ། སྟོ་སྟོ་ བཤ།

གང་ཞིག་སུམ་ཤེད་སྟོན་བྱེད་པ། 1

དེ་ལ་ས་ནི་¹བསྟན་པར་བྱ། ༤ 1

ཤེད་ཐུབ་ཅེས་པ་ནི་འཕྲོངས་ཀྱི་²ཡན་ལག་དང་ཉིང་ལག་གི་མདོ་དག་དང་³
འབྲེལ་བའོ། །ས་ཞེས་པ་ནི་ས་གནོན་གྱི་ཕྱག་ཐུ་བསྟན་ཞེས་པའི་དོན་མོ། ༤ 1

གང་ཞིག་ཐུ་མ་སྟོན་བྱེད་པ། 1

དེ་ལ་ཀོ་སྟོ་⁴བསྟན་པར་བྱ། 1

གང་ཞིག་སྟོ་བ་སྟོན་བྱེད་པ། 1

དེ་ལ་སྟོ་བ་བསྟན་པར་བྱ། ༥ 1

གང་ཞིག་གསང་བ་སྟོན་བྱེད་པ། 1

དེ་ལ་ལིང་ག་བསྟན་པར་བྱ། 1

གང་ཞིག་བཟུང་ནི་སྟོན་བྱེད་པ། 1

དེ་ལ་འཕྲོངས་ནི་བསྟན་པར་བྱ། ༦ 1

གང་ཞིག་ཕུས་མོ་སྟོན་བྱེད་པ། 1

དེ་ལ་བྱིན་པ་བསྟན་པར་བྱ། 1

1. ཐུབ་ནི་ བོད་དཔེ། མོང་དུ་ཐུ་དཔེའི་ཙ་བ་དང་འབྲེལ་པ་ལྟར་བཞག་ཡོད།

2. འཕྲོངས་ཀྱི་ རྟེན། ཅོ།

3. མདོ་དག་དང་ རྟེན། ཅོ།

4. ཀོས་ཀོ་ ལྟ། སྟོ་སྟོ་ བེ།

5. ཟུང་ནི་ བེ།

ལེའུ་ཉི་ཤུ་ཙ་གཅིག་པ།

གང་ཞིག་རྒྱང་པ་སྟོན་བྱེད་པ། 1

དེ་ལ་རྒྱང་མཐིལ་བསྟན་པར་བྱ། 2 1

གསང་བ་ཞེས་པ་ནི་ཆོས་འབྱུང་རྒྱུ། །འོག་ཅེས་པ་ནི་བཤང་བའི་ལམ་མོ། 1
མཐིལ་ནི་རྒྱང་མཐིལ་ལོ། །རྒྱང་མཐིལ་ཞེས་པ་གོ་སྟོན་ལོ། 4-2 1

གང་ཞིག་སྤོང་ཆོག་སྟོན་བྱེད་པ། 1

དེ་ལ་སྤོང་མོ་བསྟན་པར་བྱ། 1

གང་ཞིག་ས་ནི་སྟོན་པ་ལ། 1

དེ་ལ་ནམ་མཁའ་བསྟན་པར་བྱ། 1 1

ས་གཞི་ཞེས་པ་ནི་ས་གནོན་གྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཉིད་བསྟན་པ་ལོ། །ནམ་མཁའ་ནི་བཞིན་
ནམ་མཁའ་ལས་འོག་ཏུ་བསྟན་པ་ནི་དེ་བསྟན་པ་ཡིན་ནོ། 1 1

གང་ཞིག་ནམ་མཁའ་སྟོན་བྱེད་པ། 1

དེ་ལ་ཉི་མ་བསྟན་པར་བྱ། 1

གང་ཞིག་འབབ་ཁུ་སྟོན་བྱེད་པ། 1

དེ་ལ་རྒྱ་མཚོ་བསྟན་པར་བྱ། 1 1

འདི་དག་མཁའ་འགྲོ་མ་ཡི་ནི། 1

ལུས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱར་ཐེ་ཆོམ་³མེད། 1

1. དེ་ལ་སྤོང་མོ་ རྒྱ་དཔེ།

2. སྟོན་པ་ན་ ལ།

3. ཕྱག་རྒྱ་ཐེ་ཆོམ་ ལ། ལ། ཕྱག་རྒྱར་ཐེ་ཆོམ་ ལ།

འདི་དག་ཏྲག་བསྟན་གསང་བ་སྟེ། །

ཡང་དག་སྟོན་པར་འགྲོ་བར་འགྱུར། ༡༠ །

དཔལ་ཉེ་རུ་ཀའི་ངེས་པར་བརྗོད་པ་¹ལས་ཡན་ལག་གི་ཕྱག་ཀྱི་²མཆོན་
ཉིད་ཀྱི་ཆོ་གའི་ལེའུ་ཉི་ཉི་ཤུ་ཅ་གཅིག་པའོ། །

ཉི་མ་ནི་སྟེང་དུ་བརྟུ་བའོ། །ལག་པས་ནམ་མཁའ་ལ་ཕྱི་ནམ་པའི་རི་མོའི་ཕྱི་
བྱེད་པ་ནི་ཕྱི་བའི་ཕྱག་ཀྱི་ལོ། །ལག་གཉིས་ནམ་མཁའ་ལ་གཡོ་བ་ནི་ཕྱི་མཆོའི་ཕྱག་
ཀྱི་ལོ། ༧-༡༠ །

ལྟ་བས་ནི་ཡན་ལག་ཕྱག་ཀྱི་མཆོན་ཉིད་ནི་ལྟ་བའི་ཡན་ལག་གི་ཕྱག་ཀྱི་
མཆོན་ཉིད་དོ། །དེ་སྟོན་པ་གང་ཡིན་པ་ཡང་དེ་³ཡིན་ལ་དེ་ལེའུ་ཡང་ཡིན་པས་ལྟ་
བའི་ཡན་ལག་གི་ཕྱག་ཀྱི་མཆོན་ཉིད་ལེའུ་ཉི་ཉི་ཤུ་ཅ་གཅིག་པའོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དཔལ་
འཁོར་ལོ་སྟོམ་པའི་ལེའུ་ཉི་ཉི་ཤུ་ཅ་གཅིག་པའི་དཀའ་འགྲེལ་ལོ། །



1. ངེས་པར་རྗོད་པ་ བེ།

2. 'ཕྱག་ཀྱི་' ཅ་གཞུང་དུ་མེད་ཀྱང་འགྲེལ་པར་གསལ་བ་ལྟར་བཞག་ཡིད།

3. གང་ཡིན་པ་ཡང་ གསེར། གང་ཡིན་པ་དེ་ཡང་དེ་ བེ།

བྱད་པར་གྱི་ཡན་ལག་གི་ཕྱག་རྒྱའི་མཆན་ནི་ད་ཀྱི་ཆོ་གའི་ལཱ།

དེ་ནས་གཞན་ཡང་བཤད་པར་བྱ། |

ཡན་ལག་ཕྱག་རྒྱའི་ཆོ་ག་བཞིན། |

གང་ཞིག་ཤེས་པས་མིང་པོ་འཕ། |

སྤང་མོར་ཐེ་ཆོམ་མེད་འགྱུར་བའོ། ༡ |

དེ་ནས་གཞན་ཡང་ཞེས་བྱ་བ་ནི།། སྤྱི་པོར་རེག་པ་ལ་སོགས་པའི་ཕྱག་རྒྱ་བརྟན་
པའི་རྗེས་སུ་ཡན་ལག་གི་ཕྱག་རྒྱ་བརྟན་པར་བྱའོ་ཞེས་སྒྲུར་རོ། །འདྲུས་པ་དེ་ནི་ད་ཅི་
བྱེད་ཅེས་པ་ལ་བྱད་པར་ཞེས་གསུངས་ཏེ། བྱད་པར་ཅན་གྱི་ཡན་ལག་གི་ཕྱག་རྒྱ་
ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། |ཡན་ལག་ཕྱག་རྒྱའི་ཆོ་ག་གང་། |དེ་ནས་ཡང་དག་རབ་
བཤད་བྱ། |ཞེས་པ་ནི་གཞུང་གཞན་ནོ། |དེ་ནས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་བསྐྱུ་བའོ། |དེའི་
སྤྱིར་ཞེས་བྱ་བ་ནི་བྱད་པར་གྱིས་སོ། ༡ |

སོར་མོ་གཅིག་ནི་སྟོན་པ་ཡིས། |

ལེགས་པར་འོངས་ཞེས་སྒྲུབ་པ་ཡིན། |

སོར་མོ་གཉིས་ནི་བརྟན་པ་ཡིས། |

ལེགས་འོངས་ལན་ནི་སྒྲུབ་པ་ཡིན། ༡ |

སོར་མོ་གཉིས་ཀྱིས་ནི་བརྟན་པའོ། །ལེགས་འོངས་ཞེས་པ་ནི་མཐུ་བ་མོ་དང་གུང་
མོ་གཉིས་བརྟན་པའོ། ༡ |

འདི་ནི་ནལ་འཕྱོར་མ་ཀྱན་གྱི།	1
ཡན་ལག་ཕྱག་རྒྱ་རབ་དུ་བཤད།	1
1གཡོན་གྱི་གྲང་མོ་བརྒྱུང་བ་ལ།	1
ཅུང་ཟད་མཇུག་མོ་བསྐྱམ་ ² པ་ནི།	3 1
མིག་གི་ཕྱག་རྒྱ་རྒྱུ་ཤེས་པར་བྱ།	1
སྐྱགས་པས་དེ་ལ་དེ་བསྟན་ཏེ།	1
དོ་མོད་ཇི་སྲིད་འཆོ་བའི་བར།	1
དབང་དུ་འགྱུར་བར་ཐེ་ཆོམ་མེད།	5 1
གང་ཞིག་གྲང་མོ་སྟོན་བྱེད་པ།	1
དེ་ལ་མཇུག་མོ་ ³ བསྟན་པར་བྱ།	1
གང་ཞིག་སྲིན་ལག་སྟོན་བྱེད་པ།	1
དེ་ལ་ཕྱེ་ནི་བསྟན་པར་བྱ།	4 1
གང་ཞིག་པ་ཏི་ས་ ⁴ སྟོན་པ།	1
དེ་ལ་མདུང་ ⁵ ནི་བསྟན་པར་བྱ།	1

1. ཆོག་ཀྱང་འདི་མན་ནས་ལེན་ 37 པའི་བར་གྱི་ཐུ་དཔེའི་ཙ་འབྲེལ་དཔེ་ནམས་ཙ་བཟླག་དུ་སོང་སྟེ་
མ་ཐོབ་པར་བརྟེན་དེ་དག་པོད་འགྱུར་ཙ་བ་དང་ལེགས་སྒྱུར་སྐད་དུ་ཐོབ་པའི་འབྲེལ་པ་དང་།
མདོན་བྱང་ཕྱི་མའི་ཐུད་བཅས་ལ་གཞི་བྱས་ནས་ལེགས་སྒྱུར་དུ་བསྐྱར་གསོ་བྱས།
2. འཇུག་མོ་བཀྲམ་ བེ། མཇུག་མོ་བཀྲམ་ ལྷ།
3. འཇུག་མོ་ བེ།
4. པ་ཏིའི་ས་ བེ། པ་ཏིའི་ས་ ལྷ། ལྷ།
5. མདུད་ བེ། མདུན་ ལྷ། ལྷ།

གང་ཞིག་སྤྱི་པོ་སྟོན་བྱེད་པ། 1

དེ་ལ་མཆོམས་ཀྱི་མཐའ་བསྟན་བྱ། 6 1

འདི་ནི་¹ནལ་འབྱོར་མ་ཀུན་གྱི་ཡན་ལག་དང་ཕྱག་རྒྱ་རབ་དུ་བཤད། ཅེས་
པ་ནི་ཡན་ལག་གི་ཕྱག་རྒྱ་ནི་ནལ་འབྱོར་མ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཐུན་མོང་དུ་ཡིན་ཞེས་པའི་
དོན་དོ། །པོ་ཏང་གི་ཕྱག་རྒྱ་ནི། ཡན་ལག་ཕྱག་རྒྱ་རབ་དུ་གྲགས། ཞེས་པ་ནི་
གཞུང་གཞན་ནོ། །པོ་ཏང་གི་ཞེས་བྱ་བའི་མིང་ཅན་གྱི་ཕྱག་རྒྱ་དེ་ནི།

མཐེ་བོང་མཇུབ་མོ་ཅེ་སྐྱར་ལ། 1

མཇུབ་མོ་བག་བཀུག་མིག་གི་རྒྱ། 1

སྐགས་པས་གང་ལ་དེ་བསྟན་ཏེ། 1

དེ་ཡི་མོད་ལ་ཇི་སྲིད་འཆོའི། 1

གསང་བའི་དབང་འགྱུར་ཐེ་ཆོམ་མེད།

ཅེས་པ་ནི་མཐེ་བོང་དང་མཇུབ་མོ་གཉིས་ལག་²གཉིས་སུ་གཏོགས་པ་ཅེ་མོ་སྐྱར་
བ་ནི་ཁབ་ལྷ་བྱར་བྱས་ལ། མོར་མོ་ལྷག་མ་རྣམས་བསྐྱུམ་སྟེ་མཇུབ་མོ་ཅུང་ཟད་
བསྐྱུམ་པ་³གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་དེ་བཞིན་ཏེ་ཕྱག་རྒྱ་དོ། །དེ་ནི་མིག་གི་ཕྱག་རྒྱ་རྟེན་གསུང་
པར་བྱའོ། །གང་ལ་ཞེས་པ་ནི་གང་ཡིན་པ་རྣམས་ལ་ཕྱག་རྒྱ་འདི་ནལ་འབྱོར་པས་
བསྟན་པ་དོ། །དེ་ཞེས་པ་ནི་དེ་གསང་བའི་ནལ་འབྱོར་མ་རྣམས་དེ་ཉིད་ཀྱི་དབང་དུ་
འགྱུར་རོ་ཞེས་པའི་དོན་དོ། །པོ་ཏང་གི་མིག་གི་ཕྱག་རྒྱ་ནི། ཇི་སྲིད་འཆོའི་

1. འདི་ནི་ གསེར།

2. མཇུབ་མོ་གཉིས་ལ་ གསེར།

3. ཅུང་ཟད་བཀུག་པ་ གསེར། ཡེ།

བར་ཁྱེ་ཆོམ་མེད་ཅེས་པ་ནི། མེག་གི་ཕྱག་རྒྱ་འདི་ལ་པོ་ཏང་གི་མིང་དུ་བྱས་པ་འོ། །
 དེ་ལ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་མང་པོའི་ཆོག་དུ་བརྟན་པ་ནི་ནལ་འབྱོར་མ་སོ་སོའི་ཡན་
 ལག་ཐ་དད་པ་དང་སྦྱར་རོ། པོ་ཏང་ནི་²ཕྱ་མ་བཞིན་ནོ། ༡-༤ །

གང་ཞིག་ས་ནི་སྟོན་བྱེད་པ། །

དེ་ལ་མཁའ་ནི་བརྟན་པར་བྱ། །

གང་ཞིག་ཁྲོ་གཉེར་སྟོན་བྱེད་པ། །

དེ་ལ་མཆོམས་ཀྱི་མཐའ་བརྟན་བྱ། ^༡ །

གང་ཞིག་སོ་ནི་སྟོན་བྱེད་པ། །

དེ་ལ་མཆུ་ནི་བརྟན་པར་བྱ། །

གང་ཞིག་མགྱིན་པ་སྟོན་བྱེད་པ། །

དེ་ལ་ཁ་ནི་བརྟན་པར་བྱ། ³ །

གང་ཞིག་དཔལ་བ་སྟོན་བྱེད་པ། །

དེ་ལ་མེག་ནི་བརྟན་པར་བྱ། །

འདི་ནི་ནལ་འབྱོར་མ་ཀྱན་གྱི། །

རིམ་བཞིན་ཡན་ལག་ཕྱག་རྒྱ་ཡིན། ༧ །

1. འཆོ་བར་གསེར། བེ།

2. པོ་ཏང་གི་བེ། པཱིཤི་རྒྱ་དཔེ།

3. བརྟན་པར་བྱ། ལྷ།

ལེའུ་ཉི་ཤུ་ཙ་གཉིས་པ།

འདི་དག་ཏྲག་འབྲས་གསང་བ་པ། །

ཡང་དག་ཏྲ་བར་འགྲོ་བར་འགྱུར། ༡༠།

དཔལ་དེ་རུ་ཀའི་ངེས་པར་བཟོད་པ་ལས་བྱུང་པར་གྱི་ཕྱག་རྒྱའི་མཚན་ཉིད་
གྱི་ཆོ་གའི་ལེའུ་ཉི་ཤུ་ཙ་གཉིས་པའོ། །

སྤྱི་བོ་སྟོན་བྱེད་པ་ཞེས་པ་ནི་སྤྱི་བོ་བསྟན་པ་ཙམ་མོ། །ས་ཞེས་པ་ནི་བཤད་ཟིན་ཏོ། །
ཁ་ནི་ཁའི་ཕྱག་རྒྱའོ། །འདི་ནི་ནལ་འབྱོར་མ་ཀུན་གྱི། །ཡན་ལག་ཕྱག་རྒྱར་རབ་ཏུ་
བྱགས། །ཞེས་པ་ནི་ཐམས་ཅད་ཉིད་ནི་ནལ་འབྱོར་མའི་ཡན་ལག་གི་ཕྱག་རྒྱ་ཁོ་ན་སྟེ།
ཐ་དད་པ་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ཐམས་ཅད་ཉིད་གྱི་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །འདི་
དག་ཅེས་པ་ནི་ཕྱག་རྒྱའི་ལན་ནོ། །ལས་གྱི་རྒྱའི་གསུམ་པ་སྟེ། ཏྲགས་ངེས་པ་
མེད་པའོ། ༥-༡༠ །

བྱུང་པར་གྱི་ཡན་ལག་གི་ཕྱག་རྒྱའི་མཚན་ཉིད་བཟོད་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡང་
ཡིན་ལ། ལེའུ་ཡང་དེ་ཡིན་པས་བྱུང་པར་དུ་ཡན་ལག་ཕྱག་རྒྱའི་མཚན་ཉིད་གྱི་ཆོ་
གའི་ལེའུ་ཉི་ཤུ་ཙ་གཉིས་པ་སྟེ་ཉི་ཤུ་ཙ་གཉིས་པའོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི། དཔལ་འཁོར་ལོ་
སྟོམ་པའི་ལེའུ་ཉི་ཤུ་ཙ་གཉིས་པའི་དཀའ་འགྲེལ་ལོ། །

*

མཁའ་འགྲོ་མའི་བྱ་པར་གྱི་མཚན་མའི་ཕུག་ཀྱི་མཚན་ ཉིད་ཀྱི་ཆོ་གའི་ལུ་།

དེ་ནས་ཡང་དག་བཤད་བྱ་བ། ༡

མཁའ་འགྲོ་མ་ཡི་ཀླུ་རྩེ་ལ་པ། ༡

གང་གིས་རིག་ནས་རིང་ནས་ཀྱང་། ༡

དཔའ་བོ་དཔའ་བོའི་སྤྲིང་མོ་རུ་འོ། ༡

དེ་ནས་ཞེས་པ་ནི་ཡན་ལག་གི་ཕུག་ཀྱི་མཚན་ཉིད་བསྟན་པའི་རྗེས་སུ་འོ། ༡
 ཡང་དག་པར་རབ་བཤད་ཅེས་པ་ནི་མཚན་ཉིད་ཁོ་ན་རྗེས་སུ་འདུག་སྟེ། འོན་ཀྱང་
 ལས་ཀྱི་ཆོག་གིས་སྤྲུམ་བས་བྱུང་པར་དུ་གྱུར་པའོ། །དེའི་ཕྱིར་གྱི་སྤྲུམ་ནི་བྱུང་པར་
 གྱི་དོན་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །དེའི་བྱུང་པར་གྱི་མཚན་ཉིད་ཅི་ཞེས་པ་ལ་ཤེས་པར་གྱུར་པ་
 ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །མི་རིང་བ་ཞེས་པ་ནི་སྤྱིར་བཏོན་པའོ། །དཔའ་བོ་
 ཞེས་པ་ནི་དཔའ་བོ་རྣམས་ཀྱི་ཞེས་པའི་དོན་དོ། །དཔའ་བོའི་སྤྲིང་མོ་ཞེས་པ་ནི་དཔའ་
 བོ་ཁོ་ནར་ཤེས་པར་རྟུན་པའི་ཕྱིར་རམ། དཔའ་བོས་དངོས་གྲུབ་ལེན་པའི་ཕྱིར་
 རམ། དམ་ཆོག་མཚུངས་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ནས་གཞན་ཡང་རབ་བཤད་པ། ༡
 མཁའ་འགྲོ་ཀྱན་གྱི་མཚན་ཉིད་དེ། ཞེས་པའི་གཞུང་ནི་གོ་སྟོན་པའོ། ༡

1. མཁའ་འགྲོ་མའི་ བཤ།
2. དཔའ་བོའི་ རྟེན། ལྟ།
3. དཔའ་བོ་རྣམས་ཀྱིས་ གསེར། བཤ།
4. དཔའ་བོའི་ བཤ།

དམ་ཚིག་ཅན་གང་རྗེས་ཆགས་པ། |

དཔའ་པོའི་ལོངས་སྤྱོད་ས་གཞི་ཡིན། |

གཞི་ནི་ས་གཞིར་བྱས་ནས་སུ། |

ནལ་འབྱོར་པ་ཡི་སྒྲིམ་པ་མཆོད། ༡ |

དེ་དངོས་གྲུབ་ཇི་ལྟར་སྟེར་ཞེས་པ་ལ་རྗེས་ཆགས་པ་ཞེས་གསུངས་ཏེ། དམ་
 ཚིག་ཅན་ནི་མཚུངས་པར་དམ་ཚིག་ཅན་གྱི་ནལ་འབྱོར་མ་གང་ཡིན་པ་ནལ་འབྱོར་
 པས་མགྲུབ་བར་བྱས་ནས་དེ་དཔའ་པོའི་ལོངས་སྤྱོད་པའི་ས་གཞིར་འགྱུར་རོ། |དཔའ་པོ་
 ནི་སུལྟར་¹རིམ་པ་སྟེ། དེ་ཉིད་ཀྱི་ལོངས་སྤྱོད་ནི་དཔའ་པོའི་ལོངས་སྤྱོད་དོ། |ཁོར་
 འཛིན་ནི་རིན་པོ་ཆེ་འཆང་བ་སྟེ། ས་གཞི་ནི་རིན་པོ་ཆེས་གང་པའི་²སྒྲིབས་ཀྱིས་
 མངས་ནས་ལོངས་སྤྱོད་དོ་ཞེས་དགོངས་སོ། |འོན་ཀྱང་གཞན་ཡང་གཞི་ནི་ས་གཞི་
 ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། འདིས་བདེ་བ་གཟུང་བར་བྱ་བ་ནི་གཞིའོ་³། |ས་
 ནི་བརྟེ་བ་⁴སྟེ། གང་གི་ཆེ་དེ་བརྟེ་བར་གྱུར་པ་དེའི་ཆེ། དེ་མཁའ་འགྲོ་མ་གཞིར་⁵
 བྱས་པ་ནི་ངེས་པར་གནས་སུ་བྱས་པ་ནལ་འབྱོར་པའི་སྒྲིམ་པ་མཆོད་ཅེས་སྒྱུར་རོ། |

1. སུལྟར་ གྱུ་དཔེ།

2. གང་བ་ གསེར། པེ།

3. འདིས་གཟུང་བར་བྱ་བ་ནི་གཞིའོ་ གསེར། པེ། འདིས་གཟུང་བར་བྱ་བ་ནི་བཞིའོ་ ལྷོ། ཅོ།
 གོང་དུ་གྱུ་དཔེ་བཞིན་བཞག་ཡོད།

4. ཅེ་བ་ གསེར། པེ།

5. མཁའ་འགྲོ་མ་བཞིར་ ལྷོ། ཅོ།

ནལ་འབྱོར་ནི་ཐབས་དང་ཤེས་རབ་པོ། །མི་མཐུན་པའི་མོད་ལ་འདིས་ཡང་དག་པར་
 སྒྲིམ་པས་¹ན་ཞེས་སྒྱུར་རོ། །ཡང་དག་ནི་བདེ་བ་སྟེ་ནལ་འབྱོར་སྒྲིམ་པ་སྟེ། ནལ་
 འབྱོར་སྒྲིམ་དེ་མཆོད་པ་ནི་ལེན་པ་²སྟེ། མཆོག་ཏུ་དགའ་བའི་³རྗེས་སུ་ཡུལ་ནམས་
 ལས་དབང་པོའི་གོང་ཁྱེར་ལོག་སྟེ། ཡིད་ཙམ་བདེ་བ་ཙམ་དམིགས་པ་གང་ཡིན་པ་⁴
 དེ་དགའ་བྱལ་ལོ། །དེ་ཡང་ཡུལ་ནམས་ལས་དབང་པོ་སྒྲོག་པ་⁵སྟེ། ཡུལ་གྱི་དགའ་བ་
 དང་བྱལ་བའོ། །དེ་ཉིད་མཐར་ཐུག་པར་གྱུར་པས་ནམ་པར་མི་རྟོག་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱི་
 རང་བཞིན་རང་གི་ངོ་བོ་གིན་ཏུ་བདེ་བས་ཡོངས་སུ་གང་བ་དེ་ལས་སྐྱེས་པའི་ལྷན་ཅིག་
 སྐྱེས་པའི་དགའ་བ་སྒྲང་ངོ་ཞེས་པ་ནི་བསྐྱེས་པའི་དོན་དོ། །དེ་ཡང་ནོར་བུའི་ནང་དུ་
 གཏོགས་པའི་བྱང་ཚུབ་ཀྱི་སེམས་བདུན་པར་བྱས་པས་ཉམས་སུ་སྦྱོང་བཞིན་པ་ནི་
 གདམས་ངག་ཆེན་པོ་ལ་སྟོས་ནས་⁶རང་གིས་རྟོགས་པའོ། །དེའི་དོན་དུ་གྲ་མ་དམ་པ་
 རྗེ་བཙུན་ཞབས་ཀྱི་པདྨའི་བྱིན་དགོས་པ་ཉིད་དོ། །དེའི་བྱིར་ནམ་པར་རྟོག་པའི་ཡིད་
 ལ་ཡང་དག་པར་བསྒྲིམས་པ་⁷ནི་སྒྲིམ་པ་སྟེ། ལྷན་ཅིག་སྐྱེས་པའི་དགའ་བས་ཐབས་
 ཤེས་རབ་སྒྱོར་བས་དེ་གཉིས་ཉིད་ལ་དེ་ལྟ་བུའི་ཡེ་ཤེས་སྐྱེ་ཞེས་བྱའོ། །གང་དག་ལས་

-
1. སྒྲིམས་པས་ གསེར།
 2. ཡིན་པ་ ཙ།
 3. མཆོག་ཏུ་མཆོག་ གསེར། བེ།
 4. གང་ཡིན་ གསེར། བེ།
 5. བསྒྲོག་པ་ གསེར། བེ།
 6. བསྟོས་ནས་ གསེར། བེ།
 7. བསྒྲིམ་པ་ བེ།

རིན་ཐང་མེད་པའི་ཡེ་ཤེས་སྤྱི་བས་ན་ཐབས་དང་ཤེས་རབ་དེ་ཁོ་ན་ལ་རིན་པོ་ཆེར་
གྱུར་པ་¹ཤེས་པར་བྱའོ། ༡ །

འདི་དག་ན་ལ་འགྱུར་མ་ནམས་གྱི། །

གོ་བོ་སྤྱོད་པ་ཡིས་ལྟ་བཞི་²། །

བཞིན་ནི་ནམ་པར་འགྱུར་བ་ཉིད། །

བདེ་བ་ཏུ་ག་པ་སྤྱིན་མ་གཡོ། ༣ །

མཁའ་འགྲོ་མའི་མཆན་ཉིད་སྟོན་ཏེ། གོ་བོ་སྤྱོད་³ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་
གསུངས་སོ། །མདུན་དུ་བལྟ་བ་⁴སྤངས་ནས་སྤྱིར་བལྟ་བཞི་གོ་བོ་སྤྱོད་པའི་ལྟ་བའོ། །
འདིས་བཞིན་གྱི་གཟུགས་མི་སྤྱུག་པ་ཉིད་དུ་གསལ་བར་བྱས་པའོ། །ཏུ་བཞིན་གྱི་
སྤྱིན་མ་ནི་གཡོ་ཞེས་བྱ་བ་ཏུ་སྤྱིན་མ་གཡོ་⁵ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏེ། ༤ །

སྤྱི་ཆོགས་སྤྱུར་དུ་ཤེས་བྱ་བ། །

དེ་བཞིན་མཁའ་འགྲོ་ལས་བྱུང་བའོ། །

ནམ་འགྱུར་བསྐྱོར་བར་⁶ཤེས་བྱ་སྟེ། །

རི་མོ་གསུམ་པ་ཡོངས་སུ་བྱུང་། ༥ །

1. གྱུར་པ་ལ་ རྟེན་ ཅི།

2. གོ་བོ་སྤྱོད་པ་ཡིས་ལྟ་བ་དང་། དེ། གོ་བོ་སྤྱོད་པ་ཡིས་ལྟ་བཞི། རྟེན་ ལ།

3. གོ་བོ་སྤྱོད་ རྟེན་ ཅི།

4. མདུན་དུ་ན་ལྟ་བ་ རྟེན་ ཅི།

5. ཡོ་ཞེས་.....སྤྱིན་མ་གཡོ་ རྟེན་ ཅི།

6. སྐྱོར་བར་ དེ།

སྒྲུ་ཆོག་སྒྲུར་བྱ་ཤེས་བྱ་བ། །དེ་བཞིན་མཁའ་འགྲོ་མ་ལས་བྱུང་། །ཞེས་བྱ་བ་
 ཞི་སྒྲུ་ཆོག་སྒྲུ་ཞི་ཤེས་པར་བྱ་བའོ། །སྒྲུར་བཞི་ཤིན་ཏུ་སྒྲུར་བའོ། །མཁའ་འགྲོ་མ་ཞི་
 དེའི་བསམ་པ་མེད་པའོ། །བྱུང་བཞི་འགྲོ་བའོ། །དེ་དེ་བཞིན་ཞེས་པ་ཞི་དེ་ལྟ་བུར་
 བྱུར་པ་ངག་གི་སྒྲིད་ཡུལ་མ་ཡིན་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །སྒྲུ་ཆོག་སྒྲུ་ཉིད་སྒྲོན་པ་ཞི་ནམ་
 འགྱུར་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །གང་གིས་ལམ་ནས་འགྲོ་ཞིང་དེ་ནས་
 གཞན་ཡང་སྤྱིར་འོང་བཞི་འབྲེལ་བ་སྟེ། འཁོར་ལོ་ལྟ་བུར་འབྲེལ་བའོ། །དེའི་
 སྤྱིར་ནམ་པ་བསྐྱུར་ཞིང་རི་མོ་གསུམ་ཞི་འགྲོ་བ་དང་འོང་བའི་ངོ་བོ་ཉིད་གང་ཡིན་པ་²
 དེ་བཞིན་ཏེ་འབྲེལ་བའོ། །ཡང་ངེ་ལྟ་བུར་ཞེས་བྱ་བ་ལ་ཡོངས་སུ་བླུ་ཞེས་³ཏེ་བླུ་
 བོར་བསྐྱོར་བ་ཉིད་ཀྱི་སྤྱིར་རོ། ལ །

མཁའ་འགྲོ་མ་ནམས་ངེས་འགྲོ་བའི། །

དེ་ཡི་མཆོན་མར་ཀྱན་ཤེས་བྱ་⁴། །

སྒྲོ་བུར་ནམ་པར་བསྐྱོག་⁵འགྱུར་ཏེ། །

སྤྱིར་བཞིན་གཤོང་ནི་འཇིག་གྱུར་པ་⁶། ཡ །

1. ཤེས་པར་བྱའོ་ གསེར། བེ།

2. གསུམ་ཞི་འོང་བ་དང་འོང་བའི་ངོ་བོ་ཉིད་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་ གསེར། བེ།

3. ཞེས་ཞེས་ བེ།

4. མཆོན་མ་ཀྱན་ཤེས་བྱ་ ལ། མཆོན་མ་ཀྱན་ཤེས་པ་ བེ།

5. སྒྲོ་བུར་ནམ་པར་སྐྱོག་ བེ།

6. སྤྱིར་བཞིན་ཆོག་(མཚན)ནི་ཉམས་པར་བྱེད། ཐུ་དཔེ་དང་འབྲེལ་པ།

མཁའ་འགྲོ་མ་ནམས་ངེས་འགྲོ་བ། །ཞེས་བྱ་བ་ནི་ངེས་པ་ནི་གིན་དུ་ངེས་པའི་
 འབད་ཚྲོལ་ཅན་གྱི་མཚན་མ་ཐམས་ཅད་བཏུ་བའོ་ཞེས་བཏུན་པའི་ཕྱིར་དེའི་མཚན་
 མ་ཐམས་ཅད་མཚན་པར་བྱ་ཞེས་གསུངས་སོ། །སྒྲོ་བྱར་དུ་ནི་བཞེས་པར་འགྱུར། །
 ཞེས་པ་ནི་རྒྱ་མཚན་མེད་པར་དགོས་པ་ཡོད་བཞིན་དུ་སྒྲུས་པ་ཐོབ་པས་ཁྱད་པར་དུ་
 བཞེས་པ་ཞེས་པ་ནི་འགྲོ་བའི་མཚན་ཉིད་དོ། །སྤར་བཙོང་ཆོག་ནི་ཉམས་པར་བྱེད། །
 ཅེས་པ་ནི་སྡོན་དུ་ཆོག་བཙོང་པ་དེ་ཉམས་པ་ནི་བྱེད་པའོ། །སྤ་ཕྱིའི་ཆོག་ལ་འབྲེལ་
 བ་མེད་པའི་ཆོག་གི་མཚན་ཉིད་ཅེས་བྱ་བའོ། །དོན་མེད་ཆོག་ནི་ཉམས་པར་བྱེད། །
 ཅེས་པའི་གཞུང་ཡོད་དེ་གོ་སྒྲུབ། ༥ །

ནམ་པ་དེ་ལྟ་དེ་ཡི་ནི་༥།	།
གང་གི་དོ་རྩེ་ལྟ་བུར་གསལ།	།
སྒྲི་ནི་ཁུ་བྱུག་སྐད་ལྟ་བུར།	།
མཚན་དུ་གསལ་བར་དེའི་དེ་ཉིད།	༥ །
འདི་ཡི་ ³ མཚན་མ་བྱིས་དུ་ནི།	།
དོ་རྩེ་ལྟ་བུར་མེ་ལོང་བཅས།	།
གཉིས་པར་ཡང་ནི་གྱུར་པ་ཡང་།	།
རལ་གྱི་འདྲ་བར་མེ་ལོང་བཅས།	པ །

-
1. བཙོང་པ་དེ་ཉམས་པ་ནི་འབྲེལ་པའོ་ བཙོང་པ་ཉིད་ཉམས་པ་ནི་འབྲེལ་པའོ་ གསེར།
 2. དེ་ཡི་དེ་ རྩེ། བཙོང་།
 3. འདིའི་ བཙོང་།

དོན་རྒྱ་ལྷ་ལྷ་གསལ་བ་ནི། །ཞེས་པ་དཔལ་བའི་²མཆོན་ཉིད་དོ། །ཐུ་ནི་ཁྱུ་ལྷ་གསལ་གསལ་གསལ་བ་ཞེས་པ་ནི་དག་གི་མཆོན་ཉིད་དོ། །ཁྱེལ་དུ་ནི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པས་ནི་ཁྱེལ་གྱི་མཆོན་ཉིད་སྟོན་དོ། ། ༤-པ །

ཐུལ་མཆོན་མདུང་འདྲར་དག་ཏུ་འབྱུང་། །

མེ་ལོང་ཁ་སྐྱར་བར་གཤེས་བྱ། །

མཆོན་མར་བྱས་པའི་གཟུགས་རྣམས་ནི། །

མདོར་བསྐྱས་རྣམ་པར་གཤེས་བྱ་སྟེ། ། ༥ །

མཆོན་ཉིད་འདི་དག་དང་ལྡན་པ། །

མཁའ་འགྲོ་མ་མཆོག་ཡིན་ཞེས་བྱ། ། ༦ །

དཔལ་ཉེས་ཀྱི་འདི་ལས་པར་བཞེད་པ་ལས་མཁའ་འགྲོ་མའི་བྱུང་པར་གྱི་མཆོན་མའི་ཐུག་ཐུག་མཆོན་ཉིད་ཀྱི་ཆོག་ཀྱི་ལེའུ་སྟེ་ནི་ལྷ་ཙུང་གསུམ་པའོ། །

ཐུལ་མཆོན་རྣམས་པར་དག་ཏུ་འབྱུང་། །ཞེས་པ་ནི་ཐུལ་མཆོན་ནི་དབང་པོ་འོ། །
དེའི་རྣམས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་དེ་བཞིན་ཞེས་བྱ་བ་སྟེ་མེ་ལོང་གིས་མཆོན་³པའོ། །ཁ་
སྐྱར་མེ་ལོང་ཡིན་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཁ་སྐྱར་ཉིད་ནི་མེ་ལོང་ལ་དག་ཏུ་བཞུགས་པ་ཞེས་བྱ་བའི་
དོན་དོ། །དེ་ནི་མེ་ལོང་གིས་མཆོན་པའོ། །མཆོན་མ་དེ་རྣམས་གཤེས་པར་བྱ་བ་ནི་ནི་

1. གསལ་བར་ནི་ གསེར། བཤ།

2. གསལ་བའི་ སྟེ། ཚོ།

3. མེ་ལོང་གི་མཆོན་ གསེར། བཤ།

བར་བསྐྱ་བའོ། །དེའི་སྤྱིར་དེ་ནི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། དེ་ལྟ་བུར་གྱུར་
 པའི་མཚན་མ་ནམས་སྤྱིར་བས་ཅི་ལྟར་གཤམ་ཞེས་པ་ལ་གང་གཟུགས་སུ་བྱས་པའི་
 མཁའ་འགྲོ་མའི་མཚན་མའི་¹རང་བཞིན་ལ་གོམས་པས་དེའི་སྤྱིར་དེ་ནི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་
 སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། ལྡན་པ་ཞེས་པ་ནི་ངེས་པར་རོ། །མཁའ་འགྲོ་མ་ནམས་ཀྱི་
 མཚན་ཅེས་པ་ནི་བྱད་པར་གྱི་མཚན་ཉིད་དང་ལྡན་པས་སོ། །གང་ཡིན་པ་ཅིག་ཉིད་
 ལ་མཚན་ཉིད་འདི་²ནམས་ཏེ་གང་རུང་བ་ལའོ། ༤-༧ །

མཁའ་འགྲོ་མ་འགྲོ་བ་ལ་སོགས་པའི་བྱད་པར་གྱི་ཕྱག་རྒྱའི་མཚན་མ་བྱིམ་དུ་མེ་
 ལོང་ལ་སོགས་པའི་མཚན་ཉིད་དེ་གཉིས་³མཚན་པར་བྱ་བར་བརྗོད་པ་ཡང་དེ་ཡིན་
 ལ་ལེའུ་ཡང་དེ་ཡིན་པས་ན་མཁའ་འགྲོ་མའི་ཕྱག་རྒྱའི་མཚན་མ་མཚན་པའི་ལེའུ་དེ་
 ནི་⁴ཉི་ཤུ་ཙུམ་པ་སྟེ་ཉི་ཤུ་ཙུམ་པའི་ཞེས་བྱ་བ་ནི། དཔལ་འཁོར་ལོ་སྟོམ་
 པའི་ལེའུ་ཉི་ཤུ་ཙུམ་པའི་དཀའ་འགྲེལ་ལོ། །



-
1. མཚན་མའི་གསེར། བེ།
 2. 'འདི་' གསེར་བེ་གཉིས་སུ་མེད།
 3. 'དེ་གཉིས་' རྟེན་གཤམ་ཅི་ནི་གཉིས་སུ་ཆད་པ་ལྟར་སྒྲུབ།
 4. 'ནི་' གསེར་བྲིས་སུ་མེད།

སྤྱི་བཞིའི་མཆན་ཉིད་ཐམས་ཅད་ཀྱི་བདེ་ཆོག་གི་བདར་ བཏགས་པའི་ཆོ་གའི་ལེན།

དེ་ནས་གཞན་སྐད་བད་¹ རྣམས་ནི། |
སྐྱབ་པོ་ལ་འདིར་བཤད་བྱ་བ། |
གང་གིས་མིང་པོ་འཇ་སྤང་མོ་ནི། |
ཐེ་ཆོམ་³མེད་པར་ཤེས་འགྱུར་བའོ། ༡ |

དེ་ནས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་བསྐྱབ་པོ། །སྐྱ་གཞན་གྱིས་ནི་བད་བཟོད་དེ། ཞེས་སྐྱར་རོ། །
ཡི་གེ་བཙུ་ལ་པའི་བད་བཟོད་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །ནི་ནི་ངག་གི་བྱ་བ་ཏེ། སྐྱབ་པ་པོས་
བད་ཤེས་པར་བྱའོ། །སྐྱར་དང་ཞེས་པ་སྐྱབ་པ་པོའི་བྱད་པར་རོ། །སྤང་མོ་ཞེས་པ་ནི་
རྣལ་འབྱོར་མའི་འོ། །དེ་ནས་གཞན་ཆོག་བད་ཡིན་ཏེ། ཞེས་བྱ་བ་ནི་གཞན་ཡིན་ཏེ་
གོ་སྤྱོད། ༡ |

པོ་ཏྲ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་གསོང་པོར་སྐྱབ་པོ། །པྱཏི་པོ་ཏྲ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་གསོང་
པོར་སྐྱབ་པའི་ལན་ནོ། །གམ་ཞེས་བྱ་བ་འགྱུར་ཞེས་སྐྱབ་པ་ཡིན་ནོ། ། ལུས་⁷ཞེས་

-
1. བདའ་ ལ།
 2. སྤང་མོར་ ལ། བ།
 3. ཐེ་ཆོམ་ བ།
 4. གཞུང་གཞན་ཡིན་(ལུས་ལྡན་ཏེ་) བྱ་དཔེ།
 5. པོ་ཏྲ་གི་ཞེས་ བ། པོ་ཏྲ་གི་ཤེས་ ལ།
 6. པྱཏི་པོ་ཏྲ་གི་ ལ།
 7. ལུས་པ་ བ། ལ། ལ།

བྱ་བ་ནི་འོང་ངོ་ཞེས་བརྗོད་པ་ཡིན་ནོ། །དེ་ཉི་ཞེས་བྱ་བ་ནི་གྲོང་ཁྱེར་ཞེས་སྒྲ་
བའི་ལན་ནོ། །ཅད་ཀྱི་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཟུང་ཞིག་ཅེས་སྒྲ་བ་ཡིན་ནོ། །བྱི་རྒྱུ་ཞེས་
བྱ་བ་ནི་སྤྱང་ཉིད་དོ། །སྒྲ་རྒྱུ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་སྒྲ་ངན་ནོ། །ཀའི་ཀ་ནི་དྲི་ལ་བུའོ། །
ཤི་རོ་ནི་དགྲིག་ས་པའི་མིང་ངོ་³། །ཀར་རྒྱུ་ནི་ཕག་པའི་ཟེ་བའོ་⁴། །ཤུ་བའི་
ན་བའོ། ⁵ །

པོ་ཏང་གི་ནི་གསོང་པོར་སྒྲ་བའོ་ཞེས་པ་ནི་གསོང་པོར་སྒྲ་བ་ནི་པོ་ཏང་གི་འོ་སྒྲའོ། །
པོ་ཏང་པོ་ཏང་གི་ནི་གསོང་པོར་སྒྲ་བའི་ལན་ནོ་ཞེས་བྱ་བ་འི་ཁྱེར་གསོང་པོར་སྒྲ་བ་ནི་ལན་
ལ་ཡང་ཕུག་འཆ་ལ་བའི་ཁྱད་པར་རོ། །གམ་ཞེས་པ་ནི་འགྲོ་བ་ཡིན་ནོ་ཞེས་པ་ནི་དེ་
སྟོན་པའོ། །ལུ་ལུ་འི་སྒྲ་བརྗོད་པས་ནི་འོང་བར་སྟོན་པའོ། །ཁ་ཅིག་ནི་ལུ་ལུ་བྱ་ཞེས་
ཟེར་རོ། །དེ་ཉི་ནི་བརྗོད་པ་སྟེ་ཞེས་པ་ནི་ལུ་ལུ་⁷སྒྲ་བརྗོད་པའོ། །གྲི་རྒྱུ་ཙ་ནི་ཁྱིམ་དུ་
བརྗོད། །ཅེས་པ་ནི་ཁང་པའི་མིང་ངོ་། །ཁ་ཅིག་ན་རེ་⁸ཁང་པ་ཞེས་ཟེར་དེ་ཁང་པ་
ཞེས་པ་ནི་སྟོད་དུ་གྱུར་པའི་མིང་ངོ་། །སྒྲ་བརྗོད་པ་ཡིན་ཞེས་པ་ནི་ཐམས་ཅད་དུ་

1. ཟུང་ཅིག་ བཤ། ཟུང་ས་ཅིག་ ལ།
2. ཀར་ནི་ཀ་ནི་ བཤ། ཀའི་ཀ་ནི་ ལ།
3. ཤི་རོ་ནི་.....མིང་ངོ་ ཙ་བར་མ་གསལ་གྱིང་འགྲེལ་པ་ལྟར་བཞོད་པ་ཡིན།
4. ཀར་རྒྱུ་ ལ། ཀར་ནང་ ལ།
5. ཕག་པའི་ཟེ་བའོ་ ལ། ལ།
6. ལུ་ལུ་སྒྲ་ གསེར། བཤ།
7. གྲོང་ཁྱེར་ ལྟ་དཔེ། ཙ་བ།
8. གྲི་རྒྱུ་ ལ། ཅོ། གྲི་རྒྱུ་ གསེར།
9. ཁ་ཅིག་ནི་རེ་ གསེར། བཤ།

འདུག་པའོ། བྲིར་ཆོ་ནི་སྟིང་ཉིད་དོ། ཞེས་པ་ནི་སྟིང་ཞེས་པ་ལ་བྲིར་ཆའི་མིང་བྱས་
པའོ། གཞུང་ཁ་ཅིག་ལས་ཀླར་ཆའི་སྟིང་ཉིད་དོ་ཞེས་ཟེར་རོ། སྟིང་ནི་ཀླར་ཆའོ། །
ཉིད་ཀྱི་སྐྱས་ནི་བསྐྱས་པ་དང་ཉེ་བར་གཟུང་བའོ། ཀློང་བྲུ་ནི་གསོད་པ་ཡིན། ཞེས་
པ་ནི་གསོད་པ་ལ་ཀློང་ཞེས་བརྗོད་པ་ཡིན་ནོ། ཀློང་བྲུའི་སྐྱས་ནི་བྱད་མེད་ཀྱི་
ཏྲགས་སོ། ལྷ་ཆུ་ཞེས་པ་ནི་པ་ཆུའི་ལྷ་བ་²ཀ་ཆེ་ཀླ་ཆུའི་མིང་བཏགས་པའོ་³། བེར་
འགྲིགས་པ་སྟེ་ཞེས་པ་ནི་དགྲིཌ་པའི་མིང་⁴བེར་བྱས་པའོ། ཀླར་ཆ་ཡི་⁵ཕག་གི་སྐྱ། །
ཞེས་པ་ནི་ཕག་པའི་སྐྱ་ལ་ཀླར་ཆའི་མིང་བྱས་པའོ། འབྲུ་ཆ་ནི་ན་བའོ། ཞེས་པ་ནི་
དོན་ཇི་ལྷ་བ་བཞིན་བྱ་བྱས་པའོ། ༡ །

ཨ་ཕྱི་ཏཱ་ཞི་ཞི་བདུད་བཙུང་གནས་སོ། ལས་ལྷ་གསུ་ནི་མེའོ། ཀྲུ་ལིག་ནི་
མཁའ་འགོ་མེའོ། རར་ཀོ་ནི་དགྲིལ་འཁོར་རོ། ལས་ལྷ་ཀོ་ནི་དུར་ཁྲིད་དོ། །
ཀླུ་ལིལ་ནི་སྟོའོ། ལྷ་ས་ཀྱི་ནི་⁷བྲམ་ཟེའི་རིགས་སོ། ལའི་དེ་⁸ནི་ཐུལ་རིགས་སོ། །

1. ཀློང་བྲུའི་གསེར། བེ།
2. 'ཞེས་པ་ནི་པ་ཆུའི་ལྷ་བ་' གསེར་པེ་གཉིས་ཀྱི་ནང་བསྐྱར་བ་ལྷ་བ་བྱས་ཏེ་འཁོད་འདུག
3. ཀླར་ཆའི་ལྷ་ལིལ་མིང་བཏགས་པའོ་ བོད་དཔེ། ཀོང་དུ་ཐུ་དཔེ་ལྷ་བ་བཀོད་ཡོད།
4. དགྲིགས་པའི་མི་ རྟེ། ཅོ།
5. ཀླར་ཆའི་གསེར། བེ།
6. ཨ་ཕྱི་ཏཱ་ཞི་ བེ།
7. ལྷ་ས་ཀྱི་ བེ།
8. ལའི་དེ་ བེ། ལའི་དེ་ ལྷ། ལའི་དེ་ འགྲེལ་པ།

བེར་ཏི་ཉི་རྩེ་རིགས་སོ། །ཀྱར་ནི་དམངས་རིགས་སོ། །ཡམ་ཆུ་ཉི་མེ་ག་
ཅན་ཉོ། །པལ་ལུ་ལུ་ཉི་མེ་སོ། །ལྷག་ཉི་མེ་མཁའ་འགྲོ་མའོ། ༡ །

ཡམ་ཆུ་ཉི་མེ་བསྐྱབ་པའོ་ཞེས་པ་ནི་བདུད་ཅི་འབྱུང་བའི་གནས་ལ་བསྐྱབ་པའི་
སྐྱབ་པའི་⁶སྐྱབ་བརྗོད་པའོ། །སུ་གསུ་ཉི་མེ་མེ་ཞེས་པ་ནི་མེ་ཞེས་ཅན་གྱི་སྐྱ་ཉི་
མེ་⁷བརྗོད་པའོ། །དུ་ལུ་ག་ཉི་མེ་མཁའ་འགྲོ་མ། །ཞེས་པ་ནི། དུ་ལུ་ག་ཉི་མེ་མཁའ་འགྲོ་
མར་བརྗོད་པའོ། །ནར་ག་ཉི་¹⁰དུ་ལུ་འཁོར་རོ། །ཞེས་པ་ནི་དུ་ལུ་འཁོར་ལ་
ནར་གར་བརྗོད་པའོ།¹¹ །ཡམ་ཆུ་ཉི་ཤུ་ཙུ་ཙོ། །ཞེས་པ་ནི་དུ་ཙུ་ཙོ་ལ་¹²མེང་
བྱས་པའོ། །ཀྱུ་ལུ་ལུ་ཉི་མེ་ཞེས་ཅན་¹³གྱི་སྐྱ་ཉི་མེ་ཡང་སྐྱེ་ཞེས་པའོ། །ལྷག་ཉི་མེ་

1. བེར་ཏི་ ལྷ། ལྷ།

2. ཀྱར་ནི་དམངས་རིགས་ ལྷ།

3. ཡམ་ཆུ་ཉི་མེ་ག་ཅན་ བེ། ཡམ་ཆུ་ཉི་མེ་ག་ཅན་ ལྷ། ལྷ། ཞོང་བཞོད་ཀྱི་དཔེ་ལྷར་ཡིན།

4. ལྷག་ ལྷ། ལྷག་ཉི་ བེ།

5. ཡམ་ཆུ་ཉི་ ལྷ། ཅོ།

6. 'སྐྱབ་པའི་' གསེར་བྱིས་དང་པེ་ཀིང་གཉིས་ཀྱི་ནང་མ་གསལ།

7. མེང་ ལྷ། ཅོ།

8. དུ་ལུ་ བོད་འབྱུར་འགྲེལ་པ། དུ་ལུ་ རྒྱ་ལྷ། རྒྱ་ལྷ། ཞོང་དུ་ཙུ་ཙོ་ལྷར་བཞོད་ཡོད།

9. དུ་ལུ་ལུ་ གསེར་ བེ། དུ་ལུ་ རྒྱ་ལྷ། རྒྱ་ལྷ།

10. རྒྱ་ལྷ། གསེར་ རྒྱ་ལྷ། རྒྱ་ལྷ། བེ།

11. རྗོད་པའོ་ བེ།

12. དུ་ཙུ་ཙོ་ལས་ བེ།

13. མེ་ཞེས་ཅན་ ལྷ།

མེད་ཀམ་ནི་ཁྱེ་ཞེས་པ་ནི་ཁྱེ་མིང་རྡོ་། །གྲི་ཏུ་ཆ་འི་ཕུག་ཁྱེ་ཞེས་པ་ནི་ཕུག་
 ཁྱེ་མེ་ནི་གྲི་ཏུ་ན་འི་ཞེས་བྱའོ། །སྤྱེ་སོ་ལ་རིག་པ་ནི་རྟོགས་པའི་དོན་རྟོན་པའི་ཞེས་པ་ནི་
 རྟོགས་པར་གྱུར་པས་ཟས་སྦྲང་རྡོ་ཞེས་པའི་དོན་རྟོ། །དྲི་ཆེ་ནི་དྲི་བ་སྒོ་བ་ནི་དྲི་ཆེ་མིང་
 བྱས་པའོ། །ཀྱུ་ཏུ་ནི་འོངས་པའི་ཞེས་བྱ་བ་ནི་བད་ཞེས་བྱའོ། །གནས་ཆེ་གེ་མོ་
 ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཁྱེ་པའི་མཐའ་ཅན་གྱི་ཆོག་ཏུ་རང་བཞིན་གྱིས་གྲུབ་པ་ནི་ལན་བྱིན་པའི་
 མིང་རྡོ་། །ཀེར་ཆ་ནི་མེ་རྟོག་ཅེས་པ་ནི་ཀེར་ཆས་པ་མཛོད་པའོ། །དུལ་མཐ་ནི་དགོད་པའོ། །
 ཞེས་པ་ནི་དགོད་ཅིང་བཞད་པ་ཞེས་པའི་དོན་རྟོ། །ནི་ནི་བསྐྱུས་པའོ། །ད་རོ་ནི་སོའ་
 ཞེས་པ་ནི་སོར་བཛོད་པའོ། །བྲི་ཆེ་ནི་འགོག་པ་ནི་ཞེས་པ་ནི་འགོག་པ་ལ་བཛོད་པའོ། །
 དྲི་པ་དྲི་ནི་ཆམ་པར་རིག་བྱེད་ཅེས་པ་ནི་དྲི་པ་དྲི་བཛོད་པའོ། །རྒྱུར་ཡུ་ནི་བྱི་རོལ་
 ཞེས་པ་ནི་བྱི་རོལ་གྱི་གནས་སུ་བཛོད་པའོ། །མེ་ཁྱ་ནི་བདུག་སྒོས་ལ་དགའོ་ཞེས་པ་
 ནི་གོ་སྒྲའོ། ༤ །

སྐུ་ནི་མི་བོའོ། །སར་ཏུ་ནི་འབབ་ཁྱེའོ། །ཨ་རྒྱུ་ལ་ནི་ཡན་ལག་གོ། །

1. གྲི་ཏུ་ཆ་ ཅོ། གྲི་དྲེ་ཆེ་ རྒྱ་དཔེ།
2. ཕུག་ཁྱེ་མེ་ནི་གྲི་ཏུ་ན་ ཅེ། ཕུག་ཁྱེ་མེ་ནི་གྲི་ཏུ་ན་ ཅོ། ཕུག་ཁྱེ་མེ་ནི་གྲི་དྲེ་ རྒྱ་དཔེ།
3. ཞེས་བྱ་བའོ་ གསེར། བེ།
4. ཀེར་ཆ་.....ཀེར་ཆས་ བོད་དཔེ། གོང་དུ་ཅ་བ་དང་རྒྱ་དཔེ་རྩམ་བཞག་པ་ཡིན།
5. དུལ་མཐ་ནི་གོད་པའོ། ཞེས་པ་ནི་གོད་ཅིང་གཞད་པ་ གསེར། བེ།
6. རིགས་བྱེད་ བེ།
7. དགའ་ལོ་ གསེར། བེ།
8. སྐུ་ནི་ ལྷ།
9. ཨང་གུ་ལི་ནི་ བེ། ཨ་རྒྱུ་ལི་ནི་ ལྷ། ལྷ།

བདན་ནི་གདོང་ངོ་། །རངྩ་ནི་ཕྱེའོ། །ཡདན་ནི་སེའོ། །པཎྜི་ནི་³ཐུལ་
 མཆན་ནོ། །ཆན་དོ་ནི་⁴ཐེང་བའོ། །ཅལ་ནི་རྩུང་ངོ་། །བྲབད་ནི་གྲུའོ། །པག་
 ནི་རི་དྲགས་སོ། །ཡདྱི་ནི་དགྱིལ་འཁོར་རོ། །སྲུམ་ནི་བཞི་མདོའོ། །
 བལག་ཤི་ནི་⁸སྐྱེ་བའོ། །མདྲུལ་རམ་ནི་ཐུགས་ཆེན་པོའོ། །མདྲུལ་སུར་ནི་ར་
 སྐྱེས་སོ། ། ༥ །

སྐུ་ནི་རི་བོ་ཞེས་བརྗོད་པའོ། །སརྩ་¹⁰ཐུ་བོ་ཞེས་བྱའོ། །ཨྱིག་ལ་ནི་ཡན་
 ལག་གོ་ཞེས་པ་ནི་སོར་མོའི་གྲངས་སོ། །བདན་¹¹ནི་གདོང་ཞེས་པ་ནི་དོན་ངེ་ལྟ་བ་
 བཞིན་ནོ། །རངྩ་ནི་ཕྱེའི་ཞེས་པ་ནི་ཕྱེ་རུ་བརྗོད་པའོ། །ཡདན་¹²ནི་སེའོ། །

1. རྩུལ་ བཤ། རྩུལ་ ལ། འགྲེལ་པར་‘རངྩ་’ཞེས་ཡོད་ཀྱང་དེར་ཙ་བ་དང་མཆུངས་པར་བཞག
2. ཡདན་ནི་ ལ། ཡདན་ནི་ ལ། ལ།
3. པཎྜི་ནི་ ལ། ལ། པག་དི་ནི་ བཤ།
4. ཅན་དོ་ནི་ ལ། ཆན་ནི་ ལ། ཆན་ནི་ ལ།
5. བྲབད་ནི་གྲུའོ་ ཞེས་པའི་འགྲེལ་པ་མི་སྤང་།
6. འགྲེལ་པར་‘ཡུལྱེ་’ ཞེས་གསལ།
7. སསམ་ནི་ བཤ། སོ་སེ་ནི་ ལ། ས་སྐྱེ་ནི་ ལ། སམྱི་ རྒྱ་དཔེ།
8. བལག་ཤམ་ནི་ བཤ། པལག་ཤི་ནི་ ལ།
9. ཙ་བར་‘ག’ཞེས་སྤང་ཡང་གོང་དེར་འགྲེལ་པར་གསལ་བ་ལྟར་བཞག་པ་ཡིན།
10. པརྩ་ གསེར། བཤ།
11. བོད་དཔེ་ནམས་སུ་‘བདན་’ཞེས་གསལ་ཀྱང་གོང་དུ་ནི་ཙ་བ་ངེ་བཞིན་བཞག
12. འགྲེལ་པར་‘ཡདན་’ཞེས་སྤང་ཡང་གོང་དེར་ཙ་བར་གསལ་བ་ལྟར་བཞག་པའོ།

དརིཡཔོ་ནི་སོ་ཞེས་པ་ནི་བསམ་མྱོ་འདྲས་པ་ལོ། །པྲི་ནི་²ཀྱལ་མཆན་ཞེས་པ་ནི་ཀྱལ་
 མཆན་ལ་བཟོད་པ་ལོ། །ཆན་དོ་ནི་³ཕྱང་བའོ་ཞེས་པ་ནི་ཕྱང་བ་ལ་བཟོད་པ་ལོ། །ཙལ་
 ཉི་རྒྱུང་ངོ་ཞེས་པ་ནི་རྒྱུང་ལ་བཟོད་པ་ལོ། །པལ་ནི་རི་དགས་སོ་ཞེས་པ་ནི་རི་དགས་ལ་
 བཟོད་པ་ལོ། །པལ་ནི་སྒྲ་ལས་དང་པོའི་མང་པོའི་⁴ཆོག་ཕྱིས་པ་ལོ། །ཡཏི་ནི་དགྲིལ་
 འཁོར་ཞེས་པ་ནི་དགྲིལ་འཁོར་ལ་བཟོད་པ་སྟེ་ནར་ག་ཡང་ངོ་། །སྤྲི་བཞི་མདོ་ཞེས་
 པ་ནི་བཞི་མདོ་ལ་བཟོད་པ་ལོ། །པལ་གྱི་པྲི་ནི་སྒྲེ་འགྲོ་ཞེས་པ་ནི་⁷སྒྲེ་འགྲོ་ལ་བཟོད་པ་ལོ། །
 སྒྲེ་དགས་ལ་རང་དབང་མེད་པ་ལོ། །མདྲུམ་ལྷུ་ར་ནི་རོ་ཆེན་པོ་ཞེས་པ་ནི་མེད་རོ་ལ་
 བཟོད་པ་ལོ། །མདྲུམ་སུ་རའི་ཞེས་པ་ནི་ར་ཉིད་ནི་ར་སྟེ་དེ་ཡང་མི་བཟོད་ཅེས་པ་ནི་
 ཐམས་ཅད་དུ་སྒྲེ་འགྲོ་ཞེས་པར་གོ་བར་བྱའོ། ། ༥ །

རྒྱ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་མེད། གོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་བྱ་མཆོག་གོ། མ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་མ་
 ཉེད། ལྷ་ནི་ཟ་བའོ། །དུ་⁸ནམ་གངས་སོ། །ཨལ་ག་⁹ནི་ཀྱལ་པོའི་སྒྲེས་བྱའོ། །

1. དརིཡཔོ་ནི་ཞེས་པ་ནི་བསམ་མྱོ་འདྲས་པ་ གསེར། དརིཡཔོ་ནི་ཞེས་པ་ནི་བསམ་མྱོ་འདྲས་ བེ།
2. པྲི་གཏི་ནི་ བེ། པྲི་གཏི་ནི་ རྟེ། ཅོ། གསེར། གོང་དུ་ཙུ་བ་ལྷུ་ར་བཞག་པ་ཡིན།
3. ཆན་དོན་ རྟེ། ཅོ།
4. 'མང་པོའི་' གསེར་བྱིས་སུ་མེད།
5. འགྲེལ་པར་'ཡུན་ཏི' ཞེས་གསལ་གྱང་དེར་ཙུ་བ་བཞིན་དུ་བཞོད་པ་ལོ། །
6. བོད་དཔེར་'སའམ' ཞེས་ཡོད་གྱང་གོང་དེར་ཙུ་བ་ལྷུ་ར་བཞག་པ་ཡིན།
7. 'སྒྲེ་འགྲོ་ཞེས་པ་ནི་' རྟེ་དགེ་དང་ཅི་ནི་གཉིས་སུ་མ་གསལ།
8. ལྷ་ནི་ཟ་བའོ། །དུ་ བོད་དཔེ། གོང་དུ་ཙུ་བ་དཔེ་དང་འགྲེལ་པ་ལྷུ་ར་བཞོད་ཡོད།
9. ཨལ་བ་ག་ བེ།

བྲང་ལ་རེག་པ་ནི་ནགས་ན་གནས་པའོ། །ཁ་ལ་རེག་པ་ནི་ཟོས་སོ་ཞེས་པའོ། །
སོ་ལ་རེག་པ་ནི་ངོམས་སོ་ཞེས་པའོ། ། ༤ །

རྒྱ་ནི་མའོ་ཞེས་པ་ནི་རྒྱའི་སྒྲིལ་བྱའི་ཆོག་སྟེ། སྒྲ་མོ་རྟགས་ཅན་ནོ། །ཁ་
ཅིག་ལས་ནི་²ཞེས་ཟེར་རོ། །གོ་ནི་སྒྲུང་ངོ་ཞེས་པ་ནི་ཡང་གསུམ་འོ་³སྒྲ་དོན་མེད་པའོ། །
མ་ནི་མདའི་ཞེས་པ་ནི་མདའ་འོ་སྒྲ་ནི་ཕྱོགས་གཅིག་པའོ། །རྒྱ་ནི་⁴ཟ་བའོ་ཞེས་པ་ནི་
འདི་ཡང་བྱད་མེད་རྟགས་ཅན་ནོ། །ཟན་ནི་ད་ལྟར་བཟའ་བར་བྱའོ་ཞེས་བྱ་བའི་ཆོག་
གིས་སོ། །དྲ་ནི་རྣམ་གྲངས་སོ་ཞེས་བྱ་བ་དང་། ཁ་ཅིག་དུ་ཡའོ་འོ་ཞེས་⁵པ་ནི་རའི་
སྒྲ་ནི་ཟ་བའི་རྣམ་གྲངས་ཏེ། འདི་བྱད་མེད་ཀྱི་རྟགས་ཅན་གྱི་སྒྲའོ། །དྲ་རྒྱ་ནི་རྒྱས་པ་
ལས་སོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཆོག་གིས་སོ། །ཨཐུག་ནི་⁷ཐུལ་པོ་ལ་རེག་པ་ཞེས་པ་ནི་ཐུལ་པོའི་
མི་ཡུལ་མ་ཡིན་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །ཨཐུག་ཡང་ངེས་པར་ཞུགས། །ཞེས་བསྟན་⁸
པའི་ཕྱིར་རོ། །བ་ནི་གནས་པ་ཞེས་པ་ནི་རྒྱུན་མེད་པའི་གནས་པའི་ཆོག་དུ་བརྗོད་
པའོ། །ཁ་ལ་རེག་པ་ནི་ཟོས་སོ་ཞེས་པ་ནི་ཁ་ལ་རེག་པས་ཟོས་སོ་ཞེས་པར་བསྟན་
པའོ། །སོ་ལ་རེག་པས་ནི་ངོམ་མོ་ཞེས་པ་ནི་གོ་སྟེ། ། ༥ །

1. ཁ་ལ་རེག་པ་ བེ། ཁ་རེག་པ་ སྟེ།
2. རྒྱ་ གསེར། བེ། རྒྱ་ ཐུ་དཔེ།
3. གསུམ་ གསེར།
4. རྒྱ་ནི་ སྟེ། ཙ་
5. ཁ་ཅིག་དུ་ཡའོ་འོས་ གསེར། བེ།
6. དྲ་ཡུ་ བོད་དཔེ། གོང་དུ་ཐུ་དཔེ་ལྟར་བཞག་པ་ཡིན།
7. ཨཐུག་ནི་ བོད་དཔེ། གོང་དུ་ཙ་བ་བཞིན་བཞོད་ཡོད།
8. བསྟན་བསྟན་ གསེར། བེ།

དོ་ཞེས་པ་ནི་རྣམ་གྲངས་ཏེ་ཁ་ཅིག་དུའོ། །རྒྱ་ནི་ངོ་ཆ་བའོ། །སྟོང་པ་ལ་
 རེག་པ་ནི་མེད་དོ་ཞེས་པའོ། །བརྒྱ་ལ་རེག་པ་ནི་མེ་ཐུན་²གྱིས་ཁྱིག་པའོ། །
 སྟོང་ཉིད་ནི་དེ་བཞིན་ནོ་ཞེས་པའོ། །ཞེས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་འོག་ན་མེད་པའོ། །
 ཐུག་བྱ་དང་ཐུག་བྱའི་ལན་གསང་བའི་བད་ཉིད་དེ་དཔལ་བོས་གསུངས་པ་སྟེ་
 བཞིའི་མཆན་ཉིད་དོ། བ །

དཔལ་དེ་རྟུག་འི་ངས་པར་བརྗོད་པ་ལས་སྟེ་བཞིའི་མཆན་ཉིད་ཐམས་ཅད་
 གྱི་བདའི་ཆོག་གི་བདར་བ་ཏགས་⁴པའི་ཆོག་འི་ལེའུ་སྟེ་ཉི་ཤུ་ཅུ་བཞི་པའོ། །

དོ་ནི་རྣམ་གྲངས་སོ་ཞེས་པ་ནི་ཁ་ཅིག་ན་རེ་ཆོམ་པའི་རྣམ་གྲངས་སོ། །རྒྱ་ནི་ངོ་
 ཆ་བའོ་ཞེས་པ་ནི་རྩ་བ་ལ་བརྗོད་དོ། །སྟོང་པ་ལ་རེག་པ་ནི་འདོད་པ་སྟོད་ཅིག་⁶
 ཅས་པ་སྟེ་གོ་སྟོའོ། །བརྒྱ་ལ་རེག་པ་ནི་སྟོང་ཉིད་དུ་ཞེས་པ་ནི་སྟོན་གྱི་དུས་ཉིད་དུ་
 བྱས་སོ་ཞེས་དགོངས་སོ། །འོག་ན་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ་འདི་ལས་གཞན་དུ་
 ལྟར་པ་ཐུག་བྱ་དང་ཐུག་བྱའི་ལན་མེད་ཅིང་བད་ཡང་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་པའི་
 དོན་དོ། བ །

1. རྒྱ་ནི་ངོ་ཆའོ་ ཟླ། ཟླ། རྒྱ་ནི་ངོ་ཆའོ་ ཟླ།

2. མེ་ཐུན་ བ།

3. བདར་ ཟླ།

4. ཏགས་ བ།

5. འགྲེལ་པར་“རྒྱ་ཞེས་སྟོང་ཡང་གོང་དུ་ཅུ་བར་འཁོད་པ་བཞིན་བཞག་ཡོད།

6. འདོད་པ་ལ་སྟོད་ཅིག་ ཟླ། ཅོ།

མཁའ་འགྲོ་དེ་བཞིན་ལུ་མ་དང་། །དུམ་སྤྱེས་མ་དང་གཟུགས་ཅན་མ། །སྤྲེ་ཆོན་
 བཞི་པོ་དེ་ཐམས་ཅད་ཀྱང་བདེའི་ཆོག་གོ། །ཐུ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་སྤྱེས་བྱར་བྱན་ཞེས་བྱ་བ་
 ལ་སོགས་པ་འོ། །དེ་ཉིད་དང་པོར་གྱུར་པ་གང་ཡིན་པའི་ཡི་གེ་²ལ་སོགས་པའི་ཆོག་ས་
 སྤྲེ་ཆོན་བཞི་པོ་དེ་ཡང་ཐམས་ཅད་བདེ་བྱས་པའི་ཆོག་གིས་ཐམས་ཅད་བདེར་བྱས་
 པ་འོ། །དེ་ཉིད་རྗེས་པར་བྱེད་པའི་ཆོག་གང་ཡིན་པ་ནི་ལེའུ་དགུ་སྤྲེ་སྤྲེ་ཆོན་བཞི་པོ་³
 ཀྱན་གྱིས་བདེར་བྱས་པའི་ཆོག་གིས་བདེ་ལ་སོགས་པ་བརྗོད་པས་དེ་རྣམས་ཀྱི་མཐའ་
 མར་གྱུར་པའི་ལེའུ་འོ། །དང་པོའི་ལེའུ་ལ་སྤྲོས་⁴ནས་ཉི་ཤུ་ཙ་བཞི་པ་འོ། །ལེའུ་བཙོ་
 རྩ་ལ་སྤྲོས་⁵ནས་བཙུ་པ་ཡང་ངོ་། །དེ་པོར་བྱའི་རྣལ་འབྱོར་དཔལ་དེར་ཀར་བྱེད་པའི་
 ཆོག་འི་ལེའུ་བཞག་སྤྲེ་ལེའུ་བཙུ་པོའི་བསྐྱས་པའི་དོན་བསྐྱན་པ་འོ། །ལྷགས་ལས་བྱུང་
 བ་དང་⁶། ལྷགས་ལས་བརྒྱུག་པའི་ཞེས་པ་ནི་དོན་གཞན་ནོ། །དཀར་པོའི་ཕྱོགས་ཀྱི་
 ཆོས་གཅིག་གི་རིམ་པས་འཁོར་ལོ་གསུམ་ལ་སོགས་པའི་རྣལ་འབྱོར་མ་རྣམས་གནས་
 རི་ལྟར་བསྒྲུབ་ཞིང་གཡོན་སྒྲོར་དང་གཡས་སྒྲོར་དུ་དགོད་དོ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཉི་ཞེས་
 བྱ་བ་ནི། དཔལ་འཁོར་ལོ་སྒྲུབ་པའི་ལེའུ་ཉི་ཤུ་ཙ་བཞི་པའི་དཀར་འགྲེལ་ལོ། ། ॥

✱

-
1. གཟུགས་ཅན་མ་དང་གསེར། བེ།
 2. ཡེ་གེས་སྤྲེ། ཙོ།
 3. བཞི་པ་གསེར།
 4. བསྤྲོས་གསེར། བེ།
 5. བསྤྲོས་གསེར། བེ།
 6. བྱུང་དང་གསེར།

ཙ་པའི་སྐྱགས་ཀྱི་གསང་པའི་ཆོ་གའི་ལེན།

དེ་ནས་དོན་ཀྱན་འདོད་པ་ཡི། 1

སྐྱས་པ་བརྒྱད་མཐར་སྐྱར་བ་¹སྟེ། 1

མོས་པ་དམན་པའི་སེམས་ཅན་དག 1

མྱོངས་ཤིང་མི་ཤེས་སེམས་ལྡན་ལའོ། ༡།

སྟོན་དུ་བསྐྱས་པའི་ཙ་པའི་སྐྱགས་ནི་ངེ་ཏྲ་བྱ་ཅིའི་དོན་དུ་སྐྱས་ཞེས་རང་གི་
 དོགས་པ་བསུ་བའི་དོན་དུ་དེ་ནས་ཀྱི་སྐྱོའོ། །དེའི་ཕྱིར་དོན་ཀྱན་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་
 པ་གསུངས་སོ། །དེ་ལ་འདིར་སྐྱགས་སྐྱ་བྱ་ཞེས་སྐྱར་རོ། །གང་གི་དོན་དུ་སྐྱས་ཞེས་
 པ་ལ་ཐམས་ཅད་དུ་དོན་ནམས་ཀྱི་ཡུལ་ལ་ཆགས་ཤིང་འདོད་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་དེ་
 བཞིན་ནོ། །ཡུལ་དོན་དུ་གཉེར་བས་དོན་ལྟོས་³ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །དེ་ཡིས་འཕུལ་དུ་
 བསྐྱབ་པར་མི་རྒྱས་ཏེ་དེའི་ཕྱིར་བདུད་ཀྱིས་⁴བྱིན་ཀྱིས་སྒྲོབ་པོ་ཞེས་དགོངས་སོ། །
 དེ་ངེ་ཙམ་ཞེས་པས་བརྒྱད་ཅེས་གསུངས་ཏེ། ཀྱང་པ་བརྒྱད་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་སྐྱགས་
 བརྒྱད་དོ། །སྐྱས་པའི་སྐྱ་ལས་དང་པོའི་མང་པོའི་ཆོག་ཕྱིས་པའོ། །མཐའ་རྩ་རང་གི་
 ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱི་སྐྱར་སྐྱར་རོ། །མོས་པ་དམན་པའི་སེམས་ཅན་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་དེ་

1. མཐར་སྐྱར་བྱ་ བཤ།
2. སེམས་ལྡན་པའོ་ བཤ།
3. དོན་བལྟོས་ གསེར། བཤ།
4. བདུད་ཀྱི་ བཤ།

བཞིན་ནོ། །ཉན་ཐོས་ཀྱི་དོན་ལ་ཡང་ལྟོས་སོ་¹ཞེས་པའི་དོན་དོ། །དེ་ཡང་རང་ཉིད་
 དུལ་བ་དང་ཞི་བ་ཙམ་དོན་དུ་གཉེར་བའི་ཕྱིར་དམན་པ་ལ་མོས་པའོ། །མུ་ཆེགས་
 འན་པས་ཀྱང་མི་ཤེས་པར་བསྟན་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེའི་སེམས་ནི་དེའི་དོན་གྱི་ཆོའོ། །
 དེ་ནི་མིང་དེ་ལས་སྤང་²བའི་དོན་དེ་སྤས་སོ་ཞེས་དགོངས་སོ། ། ༡ །

དེ་ལ་དཔལ་བོ་དང་ནལ་འབྱོར་མ་ནམས་ཀྱིས་³གསལ་བར་གསུངས་པའི་
 གསང་སྔགས་ནི་འདི་ཡིན་དེ། ཨོྃ མཛོ རྟག་ཤད་ སྤྱི་རེ་གྲུལ། མདུག་ལྷུ་ཆེ
 ས་ཆེ་གྲུལ་⁴། རྫོའམ་གྱུ་ཏྲ་ཀྲུལ་⁵། དེ་ལྟར་ལྷུ་གྲུ་ཁྲུ་ཁྲུ་ལྲུལ། སད་སྤྱུང་
 རྟུ་སྤྱུལ་⁶། པར་གྲུ་ཤོ་བྱུང་གྲུལ་ཁྲུ་གྲུ་རེ་ཆེ་⁷། བྲུ་ཆེ་རྟུ་ཆུ་རྟུ་སྤྱུལ་⁸
 མདུ་ཆུ་ཆུ་ཆུ་རམ་པུ་ལྲུལ་⁹། ཀར་ ཀར། ཀྱར་ ཀྱར་¹⁰། བཟླ་ བཟླ། རྟུ་སྤྱུལ་

-
1. བཟླ་སོ་ བེ། གསེར།
 2. དེས་ནི་མིང་དེ་ལས་བསྤང་ བེ། གསེར།
 3. ནལ་འབྱོར་མ་ནམས་ཀྱི་ སྟེ། ལྟེ། ནལ་འབྱོར་ནམས་ཀྱིས་ བེ།
 4. མདུག་ལྷུ་ཆེ་སེ་ཆེ་གྲུལ་ སྟེ། མདུག་ལྷུ་ཆེ་སེ་ཆེ་གྲུལ་ བེ། མདུག་ལྷུ་ཆེ་སེ་ཆེ་གྲུལ་ ལྟེ།
 5. རྫོའམ་གྱུ་ཏྲ་ཀྲུལ་ བེ།
 6. རྟུ་སྤྱུལ་ ལྟེ།
 7. པར་གྲུ་ཤོ་བྱུང་གྲུལ་ཁྲུ་གྲུ་རེ་ཆེ་ བེ།
 8. བྲུ་ཆེ་རྟུ་ཆུ་རྟུ་སྤྱུལ་ ལྟེ། ལྟེ། ལྟེ།
 9. མདུ་ཆུ་ཆུ་ཆུ་རམ་པུ་ལྲུལ་ བེ། མདུ་ཆུ་ཆུ་ཆུ་རམ་པུ་ལྲུལ་ ལྟེ།
 10. ལྟེ་ཐང་པར་མར་ཀྱར་གཅིག་ལས་འཁོད་མིན་འདུག

གསུངས་ཏེ། དཔལ་བོ་དང་ནལ་འབྱོར་མ་ནམས་གསལ་པོར་ཡོད་པ་ལ་མི་གསལ་བ་
ནི་གསལ་བར་བྱས་པ་སྟེ། སློབ་དཔོན་མེད་པར་འདུག་པར་མི་རིགས་ཏེ། རྒྱགས་ཀྱི་
ཚུལ་ལ་ནི་དངོས་གྲུབ་ཉམས་པར་གྱུར་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །རྒྱགས་ནི་ཡོན་མོ་ཞེས་བྱ་
བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། རྒྱགས་ཀྱི་ཐུལ་པོ་དང་བསྐྱེས་པར་གྱུར་པའི་ཙུང་བའི་
རྒྱགས་གཉིས་འདིར་སྐྱས་པའོ། །རྟོ་རྟོ་པཌ་གཉིས་དང་སྐྱར་རོ། །གཉིས་པོ་ཡང་
འདིར་རྟོ་རྟོ་པཌ་ཅེས་གསུངས་སོ། ། ༡ །

དེའི་ཕྱིར་ཙུང་བའི་རྒྱགས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །ཙུང་བའི་རྒྱགས་
ཀྱི་བདག་ཉིད་ཐམས་ཅད་ནི་ཙུང་བའི་རྒྱགས་ཀྱི་བདག་ཉིད་ཐམས་ཅད་དེ། དེ་སྐྱས་
པ་ནི་གསང་བར་གྱུར་པའོ། །ངོ་བོ་ཉིད་ལ་རྒྱུ་འབྱེད་ཀྱི་ཕྱིན་པའོ། །ཡི་གེ་རེ་རེ་
བརྟུས་པ་ནི་སྐྱས་པའི་དེ་རྫོང་པར་བྱེད་པ་²གང་ཡིན་པ་དེ་འཇགས་གང་ལ་དེ་ཡང་ཡིན་
ལེའུ་ཡང་ཡིན་པས་ཙུང་བའི་རྒྱགས་ཐམས་ཅད་སྐྱས་པའི་ཆོ་གའི་ལེའུ་སྟེ་བར་གྱི་ཆོག་
ཕྱིས་པའོ། །ནི་གྲུ་ལྔ་པའི་ཞེས་པ་སྟེ་དཔལ་འཁོར་ལོ་སྟོམ་པའི་ལེའུ་ནི་གྲུ་ལྔ་པའི་
དཀའ་འབྲེལ་ལོ། ། ༥ །

✱

1. རྒྱུ་འབྱེད་ཀྱི་ནི་ བོད་དཔེ། གོང་དུ་རྒྱ་དཔེ་བཞིན་བཀོད་ཡོད།
2. བརྫོང་པར་བྱེད་དེ་ གསེར། པེ།

